

महाभारत,

का

कर्णपर्व

श्रीवेदव्यास रचित संस्कृतमूल
हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद सहित

THE MAHABHARAT

KARANPARAV

The Sanskrit text of Maharshi Vyas
with complete English and Hindi translations

जिसको

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबादने
"लक्ष्मीप्रभाकर प्रेस" में छपाकर प्रकाशित किया

Published by
Ram Krishn & Co. of Moradabad.

पुस्तक मिलनेका पता—
रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद.

To be had of the publishers
Ram Krishn & Co.
Moradabad

महाभारतम्

कर्णपर्व

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

वैशम्पायन उवाच । ततो द्रोणे हते राजन् दुर्योधन मुखानृपाः । भृशमुद्विग्न मनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥ १ ॥ ते द्रोणमनुशोचन्तः कश्मलाभिहतौजस । पर्युपास्य शोकार्त्तास्ततः शारद्वतीसुतम् ॥ २ ॥ ते मुहूर्त्तं समाश्वास्य हेतुभिः शास्त्रसंमितैः । रात्र्यागमे महीपालाः स्वानि स्वानि वेश्मानि भेजिरे ॥ ३ ॥ तेषु वेश्मसु कौरव्य पृथ्वीशा नाप्नुवन् सुखम् । चिन्तयन्तः क्षयं तीव्रं दुःखशोक समन्विताः । ४ ॥ विशे

वैशपायन बोले कि हे राजा इसके अनन्तर द्रोणाचार्य के मरनेसे अत्यन्त व्याकुलचित्त दुर्योधनादिक राजालोग अश्वत्थामा के पासगये । १ । फिर द्रोणाचार्य के शोचकरनेवाले मूर्च्छावान् महाघायल पराक्रमों से थकहुये शोक से पीड़ितहोकर वह सब राजालोग अश्वत्थामा के चारों ओर बैठगये । २ । फिर एकमहूर्त्ततक शास्त्रके अनुसार अनेक हेतुओं से अश्वत्थामा को समाश्वासन करके सब राजालोग सायंकालके समय अपने डेरोंको गये । ३ । हेकौरव फिर दुःख शोकमें भरे कठिननाश को शोचतेहुये उन राजाओंने डेरों में भी जाकर सुख नहीं पाया । ४ । विशेष करके कर्ण वा राजादुर्योधन वा दुश्शासन और सुवल के पुत्र

KARAN PARV

Vaishampayan said, "Full of sorrow at the death of Drona, Duryodhan and other princes went to Ashwathama. Lamenting the loss of Drona, losing courage and unconscious with grief, they all sat round him. Having comforted him with various reasoning in accordance with the religious writings, they went at evening to their respective tents. Full of grief and sorrow at the great destruction, they found no peace even in their tents. Karan, Duryodhan, Dushasan and brave Shakuni the son of Suval specially were much dejected.' 5. All those kings, thinking of the wrongs suffered by the Pandvas, staid in the tent of Duryodhan. They thought of the sufferings of Draupadi in gambling and were much dejected on that

ततः प्रववृते युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । कुरूणां पाण्डवानाञ्च परस्परजयैषिणाम् ॥ १४ ॥ ततोद्विदिवसं युद्धं कुरुपाण्डवसेनयोः । कर्णे सेनापतौ राजन् बभूवातीव दारुणम् ॥१५॥ ततः शत्रुक्षयं कृत्वा सुमहान्तं रणे वृषः । पश्यतां धार्तराष्ट्राणां फाल्गुनेन निपातितः ॥ १६ ॥ ततस्तु सञ्जयः सर्वं गत्वा नागपुरं प्रति । आचष्ट धृतराष्ट्राय यद्वृत्तं कुरुजाङ्गले ॥ १७ ॥ जनमेजय उवाच । आपगेयं हतं श्रुत्वा द्रोणञ्चापि महारथम् । जगाम परमामार्त्तिं वृद्धो राजाम्बिकासुतः ॥ १८ ॥ स श्रुत्वा निहतं कर्णं दुर्य्योधनहितैषिणम् । कथं द्विजवर प्राणानधारयत दुःखितः ॥ १९ ॥ यस्मिन् जयाशां पुत्राणामसमन्यत पार्थिवः । तस्मिन् हते स कौरव्यः कथं प्राणानधारयत् ॥ २० ॥ दुर्मरं तदहं मन्येऽहं नृणां कृच्छ्रेऽपि वर्त्तताम् । यत्र कर्णं हतं श्रुत्वा नात्यजज्जीवितं नृपः ॥ २१ ॥ तथा शान्तनवं वृद्धं ब्रह्मन् बाह्लीकमेव च द्रोणञ्च सोमदत्तञ्च भूरिश्रवसमेव च ॥ २२ ॥ तथैव चान्यान् सुहृदः पुत्रान् पौत्रांश्च

परस्पर में विजयाभिलाषी कौरव और पाण्डवोंका महा रोमहर्षण युद्ध आरम्भ हुआ । १४ । हे राजा कर्ण के सेनापतिहोने से उस कौरवी और और पाण्डवी सेनाओंका देखने के योग्य दो दिनतक अपूर्व्व युद्धहुआ । १५ । इसकेपीछे हजारों शत्रुओंको मारकर कर्ण धृतराष्ट्र के पुत्रोंके देखतेही देखते अर्जुन के हाथसे मारागया । १६ । फिर शीघ्रही हस्तिनापुर जाकर यह सबवृत्तान्त लोगोंने धृतराष्ट्र से कहा यह वृत्तान्त कुरु जांगल देशों में प्रसिद्ध हुआ । १७ । जन्मेजय बोले कि भीष्म और महारथी द्रोणाचार्यजी कोभी मृतकहुआ सुनकर अंबिकाके पुत्र वृद्ध राजाधृतराष्ट्रने बड़ा खेदकिया । १८ । हे ब्राह्मण फिर उस दुःखी धृतराष्ट्र ने दुर्य्योधन के हितकारी कर्ण कोभी माराहुआ सुनकर कैसे अपने प्राणों को धारण किया । १९ । जिसने कि अपने पुत्रों के विजयकी इसी कर्ण में आशा निश्चय करके कररक्खी थी ऐसे कर्ण के मरने पर इस कौरव ने अपने कैसे जीवन को रक्खा । २० । ऐसे स्थानमें कर्णका मृतक सुनकर जो राजाने अपने प्राणोंका त्याग नहीं किया इससे मैं निश्चय जानताहूं कि दुःखमें वर्त्तमान मनुष्य बड़ी कठिनतासे मरताहै । २१ । हे राजा इसीप्रकार वृद्धभीष्म बाह्लीक द्रोणाचार्य सोमदत्त और भूरिश्रवा को । २२ । और अन्य मित्रों समेत गिरा

Kauravas fought a wonderful fight with the Pandavas for two days. 15. Then having slain thosands of foes, Karan was slain by Arjun in the presence of the sons of Dhritrashtra. Then the people went to Hasthinapur and the news spread throughout the country" Janmejaya said, "Hearing of the death of Bhishm and Drona, Dhritrashtra was much dejected; how could he sustain his life on hearing of the death of Karan the darling of Duryodhan? How could he manage to live on hearing of the death of Karan on whom depended his hope of victory to his sons? I believe that man is capable of suffering great hardships. 21. Similarly, old Bhishm, Vahlik, Som

ततः सूतपुत्रो राजा चैव सुयोधनः । दुःशासनश्च शकुनिः सौबलश्च महाबलः ॥ ५ ॥
उषितास्ते निशां तां तु दुर्योधननिवेशने चिन्तयन्तः परिक्लेशान् पाण्डवानां महात्म
नाम् ॥६॥ यत्ते द्यूतपरिक्लिष्टाः कृष्णा चानायिता सभाम् । तत् स्मरन्तोऽनुशोचन्तो
भृशमुद्विग्नचेतसः ॥ ७ ॥ तथा तेषां चिन्तयतां तान् क्लेशान् द्यूतकारितान् । दुःखेन
क्षणदा राजन् जगामाब्दशतोपमा ॥ ८ ॥ ततः प्रभातसमये स्थिता दिष्टस्य शासने ।
चक्रुरावश्यकं सर्वे विधिदृष्टेन कर्मणा ॥ ९ ॥ ते कृत्वा ह्यवश्यकार्याणि समाश्वास्य च
भारत । योगमाज्ञापयामासुर्युद्धाय च विनिर्ययुः ॥ १० ॥ कर्णं सेनापतिं कृत्वा कृतकौ
तुकमङ्गलाः । वाचयित्वा द्विजश्रेष्ठान् दधिपात्रघृताक्षतैः ॥ ११ ॥ निष्कैर्गोभिर्हिरण्यैश्च
वासोभिश्च महाधनैः वन्द्यमाना जयाशीर्भिः सूतमागधवन्दिभिः ॥ १२ ॥ तथैव
पाण्डवा राजन् कृतपूर्वाह्णिकक्रियाः । शिबिरान्निर्ययू राजन् युद्धाय कृतनिश्चयाः ॥१३॥

महाबली शकुनि ने महाखेद किया । ५ । इन सब राजालोगों ने महात्मा पांडवों के कष्टोंकी चिन्ता करतेहुये रात्रिको दुर्योधन केही डेरेमें निवास किया । ६ । जो द्रौपदी को द्यूतमें कष्ट दिया गया और सभामेंभी लाई गई उसको स्मरणकरते और शोचतेहुये अत्यन्त व्याकुल चित्तहुये । ७ । हे राजा इस प्रकार द्यूत में प्रत्यक्षहोनेवाले उन दु खोंको चिन्ता करनेवाले उनलोगों की रात्रि सैकड़ों वर्षके समान व्यतीतहुई उसकेपीछे निर्मल प्रभातके होतेही वेदोक्तरीतिके अनुसार आवश्यक नित्यकर्म्मोंको करके दैवकी आज्ञामें नियत हुये । ९ । अर्थात् आवश्यक कर्मों से निवृत्तहोकर बड़ी सावधानी से सेनाको तैयारहोजानेकी आज्ञादी और युद्धकरने के निमित्त बाहर निकले । १० । मंगल कौतुक करनेवाले कर्णको अपना सेना पतिकरके दधिपात्र घृतआदि पदार्थोंसे ११।और सुवर्णमाला युक्त उत्तम वस्त्रादिकों से उत्तम ब्राह्मणों की पूजनकरते हुये सूत, मागध वन्दीजन आदिसेभी स्तूयमानहुये । १२ । और हे राजा इसी प्रकार से प्रातःकालके कर्मकरनेवाले युद्धमें निश्चय करनेवाले पाण्डवलोगभी शीघ्र अपने डेरोंसे तैयारहोकर बाहर निकले।१३।इसकेपीछे

account. Thus thinking of the wrongs done to the Pandavas in the gambling match, they were much dejected and their night appeared to them like a century of years. In the morning they were ready to go by their fate. *Having performed their usual rites*, they ordered their armies to be ready and came out to fight. 10. *Having made Karan their commander, with auspicious rites, curds* of milk and ghee, and having gratified the Brahmans with gold garlands and good clothes, they were adored by bards. The Pandavas too, having performed their morning rites came out of their tents. Then desirous of gaining victory over one another, the Pandavas and the Kauravas fought a hard fight. Led by Karan, the

ततः प्रववृते युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । कुरूणां पाण्डवानाञ्च परस्परजयैषिणाम्
॥ १४ ॥ ततोऽद्विदिवसं युद्धं कुरुपाण्डवसेनयोः । कर्णे सेनापतौ राजन् बभूवातीव दारु
णाम् ॥१५॥ ततः शत्रुक्षयं कृत्वा सुमहान्तं रणे वृषः । पश्यतां धार्त्तराष्ट्राणां फाल्गुनेन
निपातितः ॥ १६ ॥ ततस्तु सञ्जयः सर्वं गत्वा नागपुरं प्रति । आचष्ट धृतराष्ट्राय
यद्वृत्तं कुरुजाङ्गले ॥ १७ ॥ जनमेजय उवाच । आपगेयं हतं श्रुत्वा द्रोणञ्चापि महार
थम् । जगाम परमामार्त्ति वृद्धो राजाम्बिकासुतः ॥ १८ ॥ स श्रुत्वा निहतं कर्णं दुर्यो
धनहितैषिणम् । कथं द्विजवर प्राणानधारयत् दुःखितः ॥ १९ ॥ यस्मिन् जयाशां पुत्रा
णाममन्यत पार्थिवः । तस्मिन् हते स कौरव्यः कथं प्राणानधारयत ॥ २० ॥ दुर्मरं
तदहंमन्येऽहं नृणां कृच्छ्रेऽपि वर्त्तताम् । यत्र कर्णं हतं श्रुत्वा नात्यजज्जीवितं नृपः
॥ २१ ॥ तथा शान्तनवं वृद्धं ब्रह्मन् वाह्लीकमेव च द्रोणञ्च सोमद
त्तञ्च भूरिश्रवसमेव च ॥ २२ ॥ तथैव चान्यान् सुहृदः पुत्रान् पौत्रांश्च

परस्पर में विजयाभिलाषी कौरव और पाण्डवोंका महा रोमहर्षण युद्ध प्रारम्भ हुआ । १४ । हे राजा कर्ण के सेनापतिहोने से उस कौरवी और और पाण्डवी सेनाओंका देखने के योग्य दो दिनतक अपूर्व युद्धहुआ । १५ । इसकेपीछे हजारों शत्रुओंको मारकर कर्ण धृतराष्ट्र के पुत्रोंके देखतेही देखते अर्जुन के हाथसे मारागया । १६ । फिर शीघ्रही हस्तिनापुर जाकर वह सवृत्तान्त लोगोंने धृत राष्ट्र से कहा वह वृत्तान्त कुरु जांगल देशों में प्रसिद्ध हुआ । १७ । जन्मेजय बोले कि भीष्म और महारथी द्रोणाचार्यजी कोभी मृतकहुआ सुनकर अंबिकाके पुत्र वृद्ध राजाधृतराष्ट्रने बड़ा खेदकिया । १८ । हे ब्राह्मण फिर उस दुःखी धृतराष्ट्र ने दुर्योधन के हितकारी कर्ण कोभी मराहुआ सुनकर कैसे अपने प्राणों को धारण किया । १९ । जिसने कि अपने पुत्रों के विजयकी इसी कर्ण में आशा निश्चय करके कररक्खी थी ऐसे कर्ण के मरने पर इस कौरव ने अपने कैसे जीवन को रक्खा । २० । ऐसे स्थानमें कर्णको मृतक सुनकर जो राजाने अपने प्राणोंका त्याग नहीं किया इससे मैं निश्चय जानताहूं कि दुःखमें वर्त्तमान मनुष्य बड़ी कठिनतासे मरताहै । २१ । हे राजा इसीप्रकार वृद्धभीष्म वाह्लीक द्रोणाचार्य सोमदत्त और भूरिश्रवा को । २२ । और अन्य मित्रों समेत गिरा

Kauravas fought a wonderful fight with the Pandavas for two days. 15. Then having slain thosands of foes, Karan was slain by Arjun in the presence of the sons of Dhritrashtra. Then the people went to Hasthinapur and the news spread throughout the country" Janmejaya said, "Hearing of the death of Bhishm and Drona, Dhritrashtra was much dejected; how could he sustain his life on hearing of the death of Karan the darling of Duryodhan? How could he manage to live on hearing of the death of Karan on whom depended his hope of victory to his sons? I believe that man is capable of suffering great hardships. 21. Similarly, old Bhishm, Vahlik, Som-

पातितान् । श्रुत्वा यन्नाजहात् प्राणांस्तन्मन्ये दुष्करं द्विज ॥ २३ ॥ एतानि सर्वाण्यशेषेण विस्तरेण महामुने । न हि तृप्यामि पूर्वेषां शृण्वानश्चरितं महत् ॥ २४ ॥

इति कर्णपर्वणि जनमेजयवाक्ये प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैशम्पायन उवाच । हते कर्णे महाराज निशि गावल्गणिस्तदा । दीनो ययौ नागपुरमश्वैर्वातसमैर्जवे ॥ १ ॥ स हास्तिनपुरं प्राप्तो भृशमुद्विग्नमानसः । जगाम धृतराष्ट्रस्य क्षयं प्रक्षीणबान्धवम् ॥ २ ॥ समुद्वीक्ष्य स राजानं कश्मलाभिहतौजसम् । ववन्दे प्राञ्जलिर्भूत्वा मूर्ध्ना पादौ नृपस्य ह ॥ ३ ॥ सम्पूज्य च यथान्यायं धृतराष्ट्रं महीपतिम् । हा कष्टमिति चोक्त्वा स ततो वचनमाददे ॥ ४ ॥ सञ्जयोऽहं क्षितिपते

हुये पुत्र और पौत्रों को भी सुनकर जो प्राणोंका त्याग नहीं किया इसी से हे ब्राह्मण मैं उसको महा कठिन मानताहू । २३ । हे महामुने इससब वृत्तान्त को आप मूल समेत वर्णन कीजिये मैं अपने प्राचीन वृद्ध लोगों के चरित्रों के सुनने से तृप्त नहीं होताहू २४ ॥

अध्याय २ ॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज कर्ण के मृतक होनेसे महादुःखी संजय सायंकाल के समय वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारीसे हस्तिनापुरको गया । १ । और बड़ी व्याकुलता से हस्तिनापुरमें पहुचकर उस धृतराष्ट्रके स्थानको गया जो बान्धवों का नाशकारी था । २ । वहा मूर्च्छा से शोभाहीन राजाको देखकर बड़ी नम्रतापूर्वक हाथजोड मस्तक से चरणों में दण्डवत् करके । ३ । न्यायके अनुसार राजा धृतराष्ट्रको पूजके हाय बडाखेदहै ऐसा वचन कहकर वार्त्तालाप करना प्रारम्भ किया । ४ । और कहनेलगा कि हे राजा मैं संजयहू क्या आप प्रसन्नतासे हैं और आपत्तिपाकर अपने अपराधों से आप विस्मरण तो नहीं होतेहो । ५ ।

da Drona, Bhurshrava and his sons and grandsons were slain, yet Dhritrashtra did not die. This was very hard. Pray give me an account of all that happened, O Brahman, for I am not yet tired of hearing about my ancestors. 24

CHAPTER II

Vaishampayan said, 'Exceedingly grieved at the death of Karan, Sanjaya went to Hasthinapur in the evening, on horses swift like the wind. Having reached there in great confusion, he went to king Dhritrashtra the cause of the destruction of friends. Seeing the king splendourless and confused he bowed down at his feet with

कच्चिद्वासि सुखमवान । स्वदोषैरापदम्प्राप्य कच्चिन्नाद्य विमुह्यसि ॥ ५ ॥ हितान्युक्तानि विदुरद्रोणगांगेय केशवैः । न गृहीतान्यनुस्मृत्य कच्चिन्न कुरुषे व्यथाम् ॥ ६ ॥ रामनारदकण्वाद्यैर्हितमुक्तं सभातले । न गृहीतमनुस्मृत्य कच्चिन्न कुरुषे व्यथाम् ॥७॥ सुहृदस्त्वद्धिते युक्तान् भीष्मद्रोणमुखान् परैः । निहतान् युधि संस्मृत्य कच्चिन्न कुरुषे व्यथाम् ॥ ८ ॥ तमेव वादिनं राजा सूतपुत्रं कृताञ्जलिम् । सुदीर्घमुष्णं निश्वस्य दुःखार्त इदमब्रवीत् ॥९॥ धृतराष्ट्र उवाच । आपगेये हते शूरे दिव्यास्त्रवति सञ्जय । द्रोणे च परमेष्वासे भृशं मे व्यथितं मनः ॥ १० ॥ यो रथानां सहस्राणि दंशितानां दशैव ह । अहन्यहनि तेजस्वी निजघ्ने वसुसम्भवः ॥ ११. ॥ स हतो यज्ञसेनस्य पुत्रेणेह शिखण्डिना । पाण्डवेयाभिगुप्तेन भृशं मे, व्यथितं मनः ॥ १२ ॥ भार्गवः प्रददौ

विदुर द्रोणाचार्य भीष्मपितामह और केशवजी के महाउपकारी वा हितकारी वचनों को जो तुमने अंगीकार नहीं किया उनको स्मरण करके तो आप पीड़ित नहीं होतेहो । ६ । सभाके मध्य में परशुराम नारद और कण्वादिक मुनियों के हितकारी वचनोंको भी स्वीकार नहीं किया उसको स्मरणकरके तो तुम दुःखी नहींहोतेहो । ७ । आपके हितकरने में प्रवृत्त भीष्म द्रोणाचार्य आदि मित्रों को युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मरेहुये स्मरणकरके तो खेद नहीं करते हो । ८ । तबतो दुःख से महापीड़ित राजाधृतराष्ट्र बहुत लम्बी स्वास लेलेकर इसप्रकारसे कहने वाले संजयसे बोले । ९ । कि हे संजय दिव्यअस्त्रों के ज्ञाता भीष्म पितामह और बड़े बाणप्रहारी द्रोणाचार्य्यके मरनेपर मेराचित्त अत्यंत पीड़ित है ।१० । और वसुदेवताओं के अंशसे उत्पन्नहोनेवाले महातेजस्वी पितामहने प्रति दिन दशहजार शस्त्रधारी रथियों को मारा ।११ पाडव अर्जुनसे रक्षित द्रुपदके पुत्र शिखंडी के हाथ से मरेहुये उस भीष्मपितामहको सुनकर मेरा चित्त पीड़ामानहुआ १२ जिसके

joined hands and began his conversation with a cry of alas! Saying, "I am Sanjaya. Are you happy? Having fallen into difficulty, do you forget your own faults? Do you not feel remorse at your disregarding the advice of Vidur, Drona, Bhishm and Keshav? 5. Are you unhappy, because you paid no heed to the advice of Parashuram, Narad, Kanwa and other munis? Are you grieved at the loss of your well-wishers, Bhishm, Drona and others, at the hands of enemies." Dhritrashtra, much grieved, heaved deep sighs of grief, and thus made reply to the questions of Sanjaya;—"I am much grieved, O Sanjaya, at the loss of Bhishm the grandfather and Drona the great archer. Bhishm, who was born of the portion of the Vasus, slew ten thousand warriors each day. 11. Protected by Arjun, Shikhandi the son of Drupad slew Bhishm, and my mind is much grieved to hear this. I am very unhappy at the death of Drona who had

यस्मै परमास्त्रं महात्मने। साक्षाद्रामेण यो बाल्ये धनुर्वेदे उपाकृतः ॥१३॥ यस्य च प्रसादात् कौन्तेया राजपुत्रा महारथाः। महारथत्वं सम्प्राप्तास्तथान्ये वसुधाधिपाः ॥१४॥ तं द्रोणं निहतं श्रुत्वा धृष्टद्युम्नेन संयुगे। सत्यसन्धं महेष्वासं भृशं मे व्यथितं मनः ॥ १५ ॥ ययोर्लोके पुमानस्त्रेण समोऽस्ति चतुर्विधे। तौ द्रोणभीष्मौ श्रुत्वा तु हतौ मे व्यथितं मनः ॥ १६ ॥ त्रैलोक्ये यस्य चास्त्रेषु न पुमान् विद्यते समः। तं द्रोणं निहतं श्रुत्वा किमकुर्वत मामकाः ॥१७॥ संशप्तकानां च बलं पाण्डवेन महात्मना। धनञ्जयेन विक्रम्य गमितं यमसादनम् ॥ १८ ॥ नारायणास्त्रे च हते द्रोणपुत्रस्य धीमतः। विप्रद्रुतेष्वनीकेषु किमकुर्वत मामकाः ॥ १९ ॥ विप्रद्रुतानहं मन्ये निमग्नान् शोकसागरे।

लिये भार्गव परशुरामजी ने महायुद्धमें परम अस्त्रदिया और बाल्यावस्थामें उन्हों साक्षात् परशुरामजी ने अपने शिष्य करने केलिये अंगीकार किया ।१३। औरजिसकी कृपासे महारथी राजपुत्र पांडवों ने और अन्य राजाओं ने महारथीपने को पाया ।१४। उस सत्यसंकल्प महाधनुर्बाणधारी द्रोणाचार्यको धृष्टद्युम्न के हाथसे मराहुआ सुनकर मेराचित्त अत्यन्त पीड़ित होरहाहै । १५ । इस लोक में चारों प्रकारकी विद्या और अस्त्रविद्या भीष्म और द्रोणाचार्य्य के सिवाय और किसीमें नहींहै उन दोनों महात्माओंके मरने से मैं महा खेदितहूं ।१६। तीनोंलोकों में अस्त्रविद्या का ज्ञाता जिसके समान कोई नहीं ऐसे महात्मा द्रोणाचार्य्यको मृतक सुनकर मेरे पुत्रों ने क्या किया । १७ । महात्मा अर्ज्जुनने पराक्रमकरके संसप्तकों की सेनाको मारकर यमलोक में पहुंचाया ।१८। बुद्धिमान् अश्वत्थामाके नारायणास्त्र के निष्फलहोने औरसेनाके भागनेपर मेरे पुत्रोंने क्या कामकिया । १९ । मैं द्रोणाचार्य्य के मरने पर सबको भागा हुआ वा शोकसमुद्र में डूबाहुआ जीवन की आशामें ऐसा चेष्टा करनेवाला देखताहूं जैसेकि समुद्र में नौकाको

recieved weapons and education in arms from Parashuram himself; who had taught archery to the Pandavas and other princes; who observed true vows and was the greatest of archers. 15. There is no *scholar of the four sciences and weapons better than Bhishm and* Drona. I am very unhappy at the death of those two great men. What did my sons do on hearing of the death of Drona the best of warriors? Valiant Arjun, by his prowess, slew the Sansaptaks and sent them to the region of Yam. What did my sons do when the Narayan weapon was made futile and the warriers fled! I believe that at the death of Drona all the warriors fled away and lost all hope of life like one who is riding a broken boat in the midst of the

प्लवमानाम् हते द्रोणे भिन्ननौकानिवार्णवे ॥ २० ॥ दुर्य्योधनस्य कर्णस्य भोजस्य कृतवर्मणः । मद्रराजस्य शल्यस्य द्रौणेश्चैव कृपस्य च ॥ २१ ॥ मत्पुत्रस्य शेषस्य तथान्येषाञ्च सञ्जय । विप्रद्रुतष्वनीकेषु मुखवर्णोऽभवत् कथम् ॥ २२ ॥ एतत् सर्वं यथा वृत्तं तथा गावल्गणे मम । आचक्ष्व पाण्डवेयानां मामकानाञ्च विक्रमम् ॥ २३ ॥ सञ्जय उवाच । तवापराधाद्यद्वृत्तं कौरवेयेषु मारिष । तच्छ्रुत्वा मा व्यथांकार्षीर्दिष्टेन व्यथते बुधः ॥ २४ ॥ तस्माद्भावो भावी वा भवेदर्थो नरं प्रति । अप्राप्तौ तस्य वा प्राप्तौ न बुध. कुरुते व्यथाम् ॥ २५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । न व्यथाऽभ्यधिका काचिद्विद्यते मम सञ्जय । दिष्टमेतत्परं मन्ये कथयस्व यथेच्छकम् ॥ २६ ॥

इति श्री कर्ण-पर्वणि सञ्जय धृतराष्ट्रसंवादे
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

टूटजाने पर उसपर चढ़ेहुये मनुष्यों की चेष्टाहोती है । २० । हे संजय सेना के भागजानेपर दुर्य्योधन कर्ण भोजवंशी कृतवर्मा मद्रदेश का राजा शल्य अश्वत्थामा कृपाचार्य और मेरे शेष बचेहुये पुत्रादि और समेत अन्यलोगों के मुखका वर्ण कैसा होगया । २२ । हे संजय इस वृत्तान्तको और पाण्डव वा मेरे पुत्रोंके पराक्रमको यथार्थ जैसाहुआ वैसा मुझसे वर्णन करो । २३ । संजय बोले हे श्रेष्ठ कौरव लोगोंमें आप के अपराधसे जोदेखने में आया उसको सुनकर तुम खेद मतकरो क्योंकि बुद्धिमान मनुष्य होनहार विषय में दुखी नहीं होते हैं। २४। जैसा कि मनुष्य में सुखदुख संबंधी प्रयोजन होताहै उसकी प्राप्ति वा अप्राप्ति में कोई बुद्धिमान दुखी नहीं होताहै । २५ । धृतराष्ट्र ने कहा कि हे संजय इससे अधिक मुझको कोइ पीड़ा नहीं है मैं उसको प्राचीनहोनहार मानताहूं इस से तुम अपनी इच्छाके अनुसार वर्णन करो । २६ ।

---

ocean. 20. What was the colour of the faces of Duryodhan, Karan, Kritvarma, Shalya and Ashwathama when the warriors had fled. 22 Pray let me know in detail the warlike deeds of the Pandavas and my sons." Sanjaya said, "Best of Kauravas, do not be grieved at the calamity which is the result of your own misdeeds, for the wise are not grieved at the decrees of fate A wise man is not grieved at the woe and weal which befall him" Dhritrashtra said, "Regarding all this to be the result of destiny, I shall be grieved no longer. You may proceed with your narrative at your pleasure." 26.

सञ्जय उवाच । हते द्रोणे महेष्वासे तव पुत्रा महारथाः ॥ बभूवुरस्वस्थमुखा विषण्णा गतचेतसः ॥ १ ॥ अवांमुखाः शस्त्रभृतः सर्व एव विशाम्पते । अवेक्षमाणाः शोकार्त्ता नाभ्यभाषन् परस्परम् ॥ २ ॥ तान् दृष्ट्वा व्यथिताकारान् सैन्यानि तव भारत । ऊर्ध्वमेव निरैक्षन्त दुःखत्रस्तान्यनेकशः ॥ ३ ॥ शस्त्राण्येषान्तु राजेन्द्र शोणिताक्तान्यनेकशः । प्राभ्रश्यन्त कराग्रेभ्यो दृष्ट्वा द्रोणं हतं युधि ॥ ४ ॥ तानि बद्धान्यरिष्टानि लम्बमानानि भारत । अदृश्यन्त महाराज नक्षत्राणि यथा दिवि ॥ ५ ॥ तथा तु स्तिमितं दृष्ट्वा गतसत्वमवस्थितम् । बलं तव महाराज राजा दुर्योधनोऽब्रवीत् ॥ ६ ॥ भवतां बाहुवीर्यं हि समाश्रित्य मया युधि । पाण्डवेयाः समाहूता युद्धचेदं प्रवर्त्तितम् ॥ ७ ॥ तदिदं निहते द्रोणे विषण्णमिव लक्ष्यते । युध्यमानाश्च समरे योधा वध्यन्ति

॥ अध्याय ३ ॥

संजय बोले कि बड़े बाणधारी महातेजस्वी द्रोणाचार्य के मरनेपर आपके महारथी पुत्रों के मुख शोभासे रहित हुये और चित्तमें व्याकुल होकर वह सब अचेतभी होगये । १ । हे राजा उस समय सब नीचामुख करनेवाले शोचग्रस्त महापीड़ित उन शस्त्रधारियों ने परस्पर में वार्त्तालाप भी नहीं की । २ । अनेक प्रकारसे दुःखसे पीड़ित आपकी सेनाओं को और उनलोगों को व्याकुल चित्त देखकर सबने स्वर्ग जानेकाही विचार किया । ३ । हे राजेंद्र फिर युद्ध में द्रोणाचार्य को मराहुआ देखकर इन सबलोगों के रुधिर से भरेहुये शस्त्र हाथों से गिरपड़े । ४ । उस समय वह बँधे लटके और गिरेहुये शस्त्र ऐसे देखने में आते जैसे कि आकाश में नक्षत्र दिखाई देतेहैं । ५ । इसके पीछे उस आपकी सेनाको हटाहुआ पराक्रमहीन देखकर राजा दुर्योधन बोला । ६ । कि मैंने आप लोगोंके पराक्रम में राक्षित होकर पाण्डवों से युद्धकरना प्रारम्भ किया । ७ । अब द्रोणाचार्य

CHAPER III

Sanjaya said, "At the fall of Drona the great archer, the faces of your sons became destitute of splendour and they lost their senses with grief. With downcast heads on account of grief and distress, they kept silent. Seeing them beset with grief and distress, the warriors desired death. Seeing Dronacharya slain in battle, all the warriors dropped their blood-stained weapons from their hands. Then the weapons, tied, hanging or fallen, looked like stars in the sky. 5. Seeing your army routed and discouraged, Prince Duryodhan said, "Relying upon your prowess, I began the war with the Pandavas, I see that all the army has lost heart at the fall of Drona and they

सर्वशः ॥ ८ ॥ जयो वापि वधो वापि युध्यमानस्य संयुगे । भवेत् किमत्र चित्रं वै युध्यध्वं सर्वतोमुखाः ॥ ९ ॥ पश्यध्वञ्च महात्मानं कर्णं वैकर्त्तनं युधि । प्रचरन्तं महेष्वासं दिव्यैरस्त्रैर्महाबलम् ॥ १० ॥ यस्य वै युधि सन्त्रासात् कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः । निवर्त्तते सदा मन्दः सिंहात् क्षुद्रमृगो यथा ॥ ११ ॥ येन नागायुतप्राणो भीमसेनो महाबलः । मानुषेणैव युद्धेन तामवस्थां प्रवेशितः ॥ १२ ॥ येन दिव्यास्त्रविद् शूरो मायावी स घटोत्कचः । अमोघया रणे शक्त्या निहतो भैरवं नदन् ॥ १३ ॥ तस्य दुष्पारवीर्य्यस्य सत्यसन्धस्य धीमतः । बाह्वोर्द्रविणमक्षय्यमद्य द्रक्ष्यथ संयुगे ॥ १४ ॥ द्रोणपुत्रस्य विक्रान्तं राधेयस्यैव चोभयोः । पश्यन्तु पाण्डुपुत्रास्ते विष्णुवासवयोरिव ॥ १५ ॥ सर्वे एव भवन्तश्च शक्ताः प्रत्येकशोपि वा । पाण्डुपुत्रान् रणे हन्तुंससैन्यान् किमु संहता । वीर्य्यवन्तः कृतास्त्राश्च द्रक्ष्यथाद्य परस्परम् ॥ १६ । सञ्जय उवाच ।

के मरने से वह सब सेना व्याकुलहुईसी दिखाई देती है और युद्ध में युद्धकर्त्ता लोग सबप्रकार से मरते हैं । ८ । युद्धमें युद्ध करनेवाले की विजय और पराजय दोनों होती हैं इसमें क्या आश्चर्य है आपलोग सब ओरको मुखकरके युद्धकरो ।९। बाणविद्यामें अद्वितीय दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता महाबली सूर्य के पुत्र महात्माकर्ण को देखो । १० । कि युद्धमें जिसके पराक्रम को देखकर कुन्तीका पुत्र अल्पबुद्धी अर्जुन ऐसे भाग जाताहै जैसे कि सिंह को देख छोटा मृग । ११ । जिसने दशहजारहाथी के समान बली भीमसेन को मानुषी युद्ध कर के परास्त किया । १२ । और उसी कर्णने दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले शूर मायावी भयानक गर्जना करनेवाले घटोत्कचको अपनी अमोघ शक्तीसे युद्धमें मारा । १३ । अब युद्धमें उस दुर्जय पराक्रमी सत्यसंकल्पी महाबुद्धिमान के भुजाओं के बलको देखोगे । १४ । विष्णु के वा इन्द्रके समान अश्वत्थामा और कर्ण इन दोनों के पराक्रमको पाण्डवलोग देखेंगे ।१५। तुम सबलोग युद्धमें सब सेना समेत पांडवों के मारने को समर्थ हो फिर सबके साथ मिलकर कैसे समर्थ नहोगे, अब पराक्रमी

lie dead everywhere in the battle field. Warriors either win or lose in a battle and this war is no exception. You must fight in all directions. Look at Karan the matchless warrior who uses his celestial weapons, and before whom Arjun the son of Kunti vanishes like a deer before a lion. He vanquished Bhim who possesses the strength of ten thousand elephants and, with his infallible spear, he slew Ghatotkach the possessor of celestial weapons and illusion, roaring dreadfully. 13. You will now see in battle the prowess of that invincible man of great wisdom and true vows. The Pandavas will see the prowess of Ashwathama and Karan like that of Vishnu and Indra. 15. You have the power to slay the Pandavas and their armies in battle; why can you not do it when you are united together? Full of pro-

एवमुक्त्वा मतः कर्णं चक्रे सेनापतिं तदा । तव पुत्रो महावीर्यो भ्रातृभिः सहितोऽनघ
॥ १७ ॥ सैनापत्येऽथ राज्याथ कर्णो राजन् महारथः । सिंहनादं विनद्योच्चैः प्रायुध्यत
रणोत्कटः ॥ १८ ॥ स सृञ्जयानां सर्वेषां पाञ्चालानाञ्च मारिष । केकयानां विदेहानामक
रात् कदनं महत् ॥ १९ ॥ तस्येषुधाराः शतशः प्रादुरासन् शरासनात् । अग्रे पुंखेषु
संसक्ता यथा भ्रमरपंक्तयः ॥ २० ॥ स पीडयित्वा पाञ्चालान् पाण्डवांश्च तरस्विनः ।
हत्वा सहस्रशो योधानर्जुनेन निपातितः ॥ २१ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि सञ्जयवाक्ये तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

वैशम्पायन उवाच । एतत् श्रुत्वा महाराज धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः । शोकस्यान्तम
पश्यन् वै हतं मेने सुयोधनम् ॥ १ ॥ विह्वलः पतितो भूमौ नष्टचेता इव द्विपः ।

और प्रसन्न तुमलोग परस्पर में देखोगे । १७ । संजय बोले कि हे निष्पाप आपके
महाबली पुत्रने अपने भाइयोंको इसप्रकारसे समझाकर कर्णको सेनापति
बनाया । १७ । हे राजा युद्धदुर्मद महाबली कर्णने सेनापति होकर बड़े शब्द से
सिंहनादों को कर करके युद्ध करना प्रारंभ किया । १८ । और सब संजय
पाञ्चाल विदेह और केकय लोगोंको विध्वंस करके युद्धमें अपने धनुषसे भौंरोंकी
पंक्तियों के समाने बाणोंकी वर्षा करी कि सबको व्याकुल करदिया । १९ ।
फिर वह वेगवान पाण्डव और पांचाल लोगों को पीड़ित करता युद्ध में अर्जुन
के हाथ से मारागया । २१ ।

॥ अध्याय ४ ॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज अम्बिकाका पुत्र धृतराष्ट्र यह सुनकर दुर्यो
धनको मृतकके ही समान मानताहुआ । १ । महा व्याकुलता से अचेत होकर हाथी

---

wes and knowing the use of weapons, you will look at one another to day." Sanjaya said, "Having thus exhorted his brothers, O sinless one, your son made Karan the commander of his armies. *Being installed as Commander of the armies, invincible Karan, with* leonine roars, began, fighting and having destroyed the Srinjayas, Panchals, Videhas and Kaikayas, he upset all the army with the flights of his arrows like the swarms of bees. Having afflicted the great warriors of the Pandavas and Panchals, he was at last slain by Arjun." 21.

CHAPTER IV

Vaishampayan said, "Having heard this, Dhritrashtra the son of Amvica, thinking Duryodhan as already dead, became very un-

तस्मिन्निपतिते भूमौ विह्वले राजसत्तमे ॥ २ ॥ आर्त्तनादो महानासीत् स्त्रीणां भरतसत्तम । स शब्दः पृथिवीं कृत्स्नां पूरयामास सर्वशः ॥३॥ शोकार्णवे महाघोरे निमग्ना भरतस्त्रियः । रुरुदुर्भृशसन्तप्ता अतावोद्विग्नमानसाः ॥ ४ ॥ राजानञ्च समासाद्य गान्धारी भरतर्षभ । निसंज्ञा पतिता भूमौ सर्वाण्यन्त पुराणि च ॥ ५ ॥ ततस्ताः सञ्जयो राजन् समाश्वासयदातुराः । मुह्यमानाः सुबहुशो मुञ्चन्त्योवारिनेत्रजम् ॥ ६ ॥ समाश्वस्ता स्त्रियस्तास्तु वेपमाना मुहुर्मुहुः । कदल्य इव वातेन धूयमानाः समन्ततः ॥ ७ ॥ राजानं विदुरश्चापि प्रज्ञाचक्षुषमीश्वरम । आश्वासयामास तदा सिञ्चंस्तोयेन कौरवम ॥ ८ । स लब्ध्वा शनकैः संज्ञां ताश्च दृष्ट्वा स्त्रियो नृपः । उन्मत्त इव राजा तु स्थितस्तूष्णीं विशाम्पते ॥ ९ ॥ ततो ध्यात्वा चिरं कालं निश्वस्य च पुनः पुनः । स्वान् पुत्रान् गर्हयामास बहुमेने च पाण्डवान् ॥ १० ॥ गर्हयन्नात्मनो बुद्धिं

के समान पृथ्वीपर गिरपड़ा उस राजाको अचेत होकर पृथ्वीपर गिरने से । २ । रन ।समें से स्त्रियोंका बड़ा शोककारी शब्दहुआ उसशब्दस सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होगई । ३ । दुःख शोक से पीड़ित अत्यन्त व्याकुलचित्त भरतवंशियों की स्त्रियां महाघोर शोकसागर में डूबकर रुदन करने लगीं । ४ । हे भरतर्षभ गांधारी और दूसरी स्त्रियें राजाके पास आकर मूर्छित हो भूमिपर गिरगईं । ५ । इसके पीछे संजय ने उन शोकसे मूर्छित नेत्रों से अश्रुपात डालनेवाली स्त्रियोंको विश्वास देकर समझाया । ६ । जैसे कि केलेके वृक्ष चारोंओरकी वायुसे कंपायमान होते हैं इसी प्रकार वारंवार कंपतीहुई वह सब स्त्रियां विश्वास युक्त हुईं । ७ । तब जलसे कौरव के भी सींचनेवाले विदुरजीने उस बुद्धिरूपी नेत्र रखनेवाले राजाधृतराष्ट्र को विश्वास कराया । ८ । हे राजेंद्र उनके वचनों से वह राजाधृतराष्ट्र धीरेधीरेपनेसे सचेत होकर उनस्त्रियों को देखके उन्मत्त के समान फिर मौनहोगया । ९ । फिर वारंवार श्वासलेतेहुये धृतराष्ट्र ने बहुतसमयतक ध्यानकरके अपने पुत्रोंकी निन्दा करी और पाण्डवोंकी प्रशंसा करी । १० । फिर अपने और सौबैल के

easy and fell down insensible like an elephant. The women of the palace raised a tremendous wailing at his fall. Distressed with grief and sorrow and immersed in the deep ocean of woe, the women of the descendents of Bharat wept loudly. Then Gandhari, with other, women of the household, came to the king and fell down on earth in a swoon. 5. Sanjaya consoled those weeping women Trembling like plantains by the wind, all the women were comforted.. Then sprinkling water over the Kaurav, Vidur comforted the king who had wisdom for his eyes. Thus comforted, the king slowly regained consciousness and, like an insane man, again became silent at the sight of those women. Then heaving sighs, he meditated for a long time, blaming his sons and praising the Pandavas. Then blaming

शकुने सौबलस्य च । ध्यात्वा च सुचिरं कालं वेपमानो मुहुर्मुहुः ॥ ११ ॥ संस्तभ्य च मनोभूयो राजा धैर्यसमन्वितः । पुनर्गावल्गणिं सूतं पर्यपृच्छत सञ्जयम् ॥ १२ ॥ त्वया यत् कथितं वाक्यं श्रुतं सञ्जय तन्मया । कच्चिद्दुर्योधनः सूत न गतो वै यमक्षयम् ॥ १३ ॥ जये निराशः पुत्रो मे सततं जयकामुकः । ब्रूहि सञ्जय तत्त्वेन पुनरुक्तां कथामिमाम् ॥ १४ ॥ एवमुक्तो ब्रवीत् सूतो राजानं जनमेजय । हतो वैकर्तनो राजन् सह पुत्रैर्महारथः । भ्रातृभिश्च महेष्वासैः सूतपुत्रैस्तनुत्यजैः ॥ १५ ॥ दुःशासनश्च निहतः पाण्डवेन यशस्विना । पीतञ्च रुधिरं कोपात् भीमसेनेन संयुगे ॥ १६ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि धृतराष्ट्रशोके चतुर्थोऽध्यायः

पुत्र शकुनी की बुद्धिका निंदा करताहुआ वारंवार कांपकर ध्यानको करके ।११। मनको थांभकर धैर्यतासे धृतराष्ट्रने संजयसे पूछा कि । १२ । हे संजय तुमने जो वचन कहा वह तो मैंने सुना परन्तु यह तो बताओ कि दुर्योधन तो यमपुर नहीं गया । १३ । सदैव विजयाभिलाषी मेरापुत्र विजयसे निराश होगया है हे संजय इस कहीहुई कथाको फिर भी सुलभता से वर्णनकरो । १४ । हे जन्मेजय धृतराष्ट्र के इस वचनको सुनकर संजय बोले हे राजा सूर्यका पुत्र महारथी कर्ण बड़े बाणधारी शरीरके त्यागनेवाले पुत्रों और भाइयोंसमेत मारागया और यशस्वी पाण्डवके हाथसे आपकापुत्र दुश्शासन भी मारागया और उसी युद्ध में भीमसेन ने उस के रुधिर को भी पान किया । १६ ।

Shakuni and himself, he was plunged in meditation and shook again and again, and controlling his mind with fortitude he thus questioned Sanjaya:—"I have heard all that you said, Sanjaya. Now tell me if Duryodhan be dead. Always desirous of victory, he has now lost all hope of it. Tell me again your story, Sanjaya." Having heard the words of Dhritrashtra, O Janmajaya, Sanjaya said, "Karna the mighty warrior has been slain along with his brothers and valiant sons. Your son Dushasan too, was slain by Bhim who also drank his blood in the field of battle." 16.



वैशम्पायन उवाच । एतत् श्रुत्वा महाराज धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः । अब्रवीत् सञ्जयं सूतं शोक संविग्नमानसः ॥ १ ॥ दुष्प्रणीतेन मे तात पुत्रस्यादीर्घदर्शिनः । हतं वैकर्त्तनं श्रुत्वा तन्मे मर्माणि कृन्तति ॥ २ ॥ तस्य मे संशयं छिन्धि दुःखपारं तितीर्षतः । कुरूणां पाण्डवानाञ्च के नु जीवन्ति के मृताः ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच । हतः शान्तनवो राजन् दुराधर्षः प्रतापवान् । हत्वा पाण्डवयोधानामर्बुदं दशभिर्दिनैः ॥ ४ ॥ तथा द्रोणो महेष्वासः पाञ्चालानारथव्रजान् । निहत्य युधि दुर्द्धर्षः पश्चाद्रुक्मरथो हतः ॥ ५ ॥ हतशेषस्य भीष्मेन द्रोणेन च महात्मना । अर्द्धं निहत्य सैन्यस्य कर्णो वैकर्त्तनो हतः ॥ ६ ॥ विविंशतिर्महाराज राजपुत्रो महाबलः । आनर्त्तयोधान् शतशो निहत्य

अध्याय ५ ॥

वैशम्पायन बोले कि हे जन्मेजय ! शोकसे महाव्याकुल अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र इस बातको सुनकर संजय से बोला । १ । हे तात थोड़ी बुद्धि वाले मेरे पुत्रकी दुर्बुद्धी से कर्ण के मरणको सुनकर मेरा प्रवल शोक मेरे अङ्गोंको काटे डालता है सो हे सूत मुझ दुःखसे पारहोनेके इच्छावान् के सन्देहोंको निवृत्तकरो । २ । अब कौरव और सृंजियों में कौन२ जीवते बाकी हैं और कौन २ मरगये । ३ । संजय बोले हे राजा महाप्रतापी अजेय भीष्मजी दश दिनमें पांडवों के एक अरव शूरवीरों को मारकर मारेगये । ४ । इसीप्रकार बड़े धनुर्धारी दुराधर्ष सुवर्ण के रथपर चढ़नेवाले द्रोणाचार्य युद्ध में पांचालों के असंख्य रथ समूहोंको मारकर आपभी मारेगये । ५ । महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य के मरने से शेष बचीहुई सेना के अर्धभागको मारकर सूर्यकापुत्र कर्णभी मारागया । ६ । और

CHAPTER V

Vaishampayan said to Janmejaya, "Beset with grief, Dhritrashtra the son of Amvica, said to Sanjaya, "The news of Karan's death on account of the evil policy of my unwise son, is cutting my limbs with sorrow. Remove my doubts as I am desirous of crossing the ocean of grief. Who among the Kauravas and Srinjayas are alive and who are dead!" Sanjaya said, "Invincible Bhishm of great prowess died after slaying a thousand millions of the Pandav warriors in his ten days of fighting. Like wise Drona the mighty archer, who rode his golden car and slew numerous carwarriors of the Panchals, is slain. Karan too, killed half of what remained after the death of Bhishm and Drona and then he was himself slain. The mighty prince, Vivinshati too, was slain after extirpating hundreds of Anart

निहतो युधि ॥ ७ ॥ अथ पुत्रो विकर्णस्ते क्षत्रधर्ममनुस्मरन् क्षीणवाहायुधः शूरः स्थितो ह्यभिमुखः परान् ॥ ८ ॥ घोररूपान् परिक्लेशान् दुर्योधनकृतान् बहून्। प्रतिज्ञां स्मरता चैव भीमसेनेन पातितः ॥ ९ ॥ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ राजपुत्रौ महाबलौ। कृत्वा त्वसुकरं कर्म गतौ वैवस्वतक्षयम् ॥ १० ॥ सिन्धुराष्ट्रमुखानीह दशराष्ट्राणि यानि ह। वशे तिष्ठन्ति वीरस्य यः स्थितस्तव शासने ॥ ११ ॥ अक्षौहिणीर्दशैकाञ्च निर्जित्य निशितैः शरैः। अर्जुनेन हतो राजन् महावीर्यो जयद्रथः ॥ १२ ॥ तथा दुर्योधनसुतस्तरस्वी युद्धदुर्मदः। वर्त्तमानः पितुः शास्त्रे सौभद्रेण निपातितः ॥ १३ ॥ तथा दौःशासनिः शूरो बाहुशाली रणोत्कटः। द्रौपदेयेन विक्रम्य गमितो यमसादनम् ॥ १४ ॥ किरातानामधिपतिः सागरानूपवासिनाम्। देव

महाबली राजपुत्र विविंशति भी भानर्थदर्शी सैकड़ों शूरवीरोंको मारकर युद्ध में मारागया। ७। इसीप्रकार आपकापुत्र महाबली विकर्णभी घोड़े और शस्त्रों के नाश होजाने से क्षत्रीवर्ण को स्मरणकरता शत्रुओं के सन्मुख नियत हुआ। ८। दुर्योधन के किये हुये घोररूप अनेक क्लेशों को और अपनी प्रतिज्ञाके स्मरण करनेवाले उसी भीमसेनके हाथसे युद्धमें मारागया। ९। और अवन्ति देशके राजा राजकुमार विन्द अनुविन्द बड़े २ कठिन कर्म्मोंको करके यमलोक को गये। १०। सिन्धके देशों में बड़ेउत्तम जो दशदेश वीरजयद्रथके स्वाधीन है और वह जयद्रथ आपके आधीनहोकर आपका आज्ञावर्तीथा। ११। उस महापराक्रमी जयद्रथ को तीक्ष्णबाणों से ग्यारह अक्षौहिणी सेना विजय करके अर्जुनने विजय किया और इसीप्रकार दुर्य्योधनका पुत्र महावेगवान युद्धमें वीरोंका मर्दन करनेवाला और शास्त्रका ज्ञाता अभिमन्युके हाथसे मारागया। १३। इसीप्रकार दुश्शासनका पुत्र बाहुशाली रणमें उत्कट द्रौपदीके पुत्रके साथ लड़कर मृत्युके वशहुआ। १४। सागर और अनुपदेशवासी किरातोंका राजाधर्मात्मा देवराज इन्द्रका प्यारा और अंगीकार

warriors. 7. Similarly your son Vikarn deprived of horses and weapons, but remembering his duty as a warrior, stood in the field of battle and was slain by Bhim who remembered the wrongs done to him by Duryodhan. Vind and Anuvind, the princes of Avanti, performed great deeds of prowess and were slain. Brave Jayadrath, the lord of the ten kingdoms of Sindhu, was slain by Arjun who vanquished the eleven *akshauhinis* of your army with his sharp arrows. Duryodhan's mighty son, the destroyer of foes and skilful in the knowledge of weapons, was slain by Abhimanyu. Dushasan's brave son was slain in battle by the mighty son of Draupadi. The virtuous king of the kirats of Sagar of Anup dear friend Indra, ever lover of warlike deeds, Bhagdatta was sent to the region of Yam by

राजस्य धर्मात्मा प्रियो बहुमतः सखा ॥ १५ ॥ भगदत्तो महीपालः क्षत्रधर्मरतः सदा । धनञ्जयेन विक्रम्य गमितो यमसादनम् ॥ १६ ॥ तथा कौरवदायादः सौमदत्तिर्महायशाः । हतो भूरिश्रवा राजन् शूरः सात्यकिना युधि ॥ १७ ॥ श्रुतायुरपि चाम्बष्ठ क्षत्रियाणां धुरन्धरः । चरन्नभीतवत् संख्ये निहतः सव्यसाचिना ॥ १८ ॥ तव पुत्रः सदामर्षी कृतास्त्रो युद्धदुर्मदः । दुःशासनो महाराज भीमसेनेन पातितः ॥ १९ ॥ यस्य राजन् गजानीकं बहुसाहस्रमद्भुतम् । सुदक्षिणः स संग्रामे निहतः सव्यसाचिना ॥२०॥ कोशलानामधिपतिर्हत्वा बहुशतान् परान् । सौभद्रेणेह विक्रम्य गमितो यमसादनम् ॥ २१ ॥ बहुशो योधयित्वा च भीमसेनं महारथम् । चित्रसेनस्तव सुतो भीमसेनेन पातितः ॥ २२ ॥ मद्रराजात्मजः शूरः परेषां भयवर्द्धनः । असिचर्मधरः श्रीमान् सौभद्रेण निपातितः ॥ २३ ॥ समः कर्णस्य समरे यः स कर्णस्य पश्यतः । वृषसेनो महातेजाः शीघ्रास्त्रो दृढविक्रमः ॥ २४ ॥ अभिमन्योर्वधं स्मृत्वा प्रतिज्ञामपि चात्मनः ।

किया हुआ मित्र । १५ । सदैव क्षत्री धर्म में प्रीति रखनेवाला राजा भगदत्त अर्जुनके पराक्रमसे यमलोकमें पहुँचायागया । १६ । हे राजा इसीप्रकार कौरव वंशी बड़ायशी शूर वीर भूरिश्रवा युद्धमें सात्यकी के हाथ से मारागया । १७ । और क्षत्रियों के भारके धारण करनेवाले श्रुतायु और अम्बष्ट भी युद्धमें निर्भयता से घूमतेहुये अर्जुन के हाथ से मारेगये । १८ । हे महाराज सदैव क्रोधरूप अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद आपका पुत्र दुश्शासन भीमसेनके हाथसे मारागया । १९ । और जिसकी हाथियों की सेना अपूर्व और असंख्यथी वह सुदक्षिण खड्गके युद्धमें अर्जुनके हाथसे मारागया । २० । कोशल देशियों का राजा बड़े २ शत्रुओं को मारकर अभिमन्यु से महापराक्रम करने के द्वारा यमलोकवासी हुआ । २१ । और आपका पुत्र चित्रसेन महारथी भीमसेन से अच्छी रीतिसे युद्धको करके उसी के हाथसे मारागया ।२२। शत्रुओं के भयको बढ़ानेवाला महा शूर जयद्रथ का पुत्र पृथ्वी पर ढाल तरवारका रखनेवाला श्रीमान अर्जुन के हाथ से मारा गया । २३ । युद्ध में कर्णकी समान बड़े तेजस्वी अस्त्रोंको शीघ्रता से चलानेवाले दृढ़ पराक्रमी वृषसेन को । २४ । बड़ापराक्रम करके अर्जुनने अभिमन्यु

Arjun. 16. Similarly, brave Bhurishrava of the Kaurav family was slain by Satyaki. Shrutayu and Amvasht, firm in the duties of kshatryas, were slain by Arjun who roamed fearlessly in battle. Your son Dushasan the invincible warrior, skilful in the use of arms, was slain by Bhim. udakshin the possessor of an innumerable army of elephants, was slain by Arjun's sword. 20. The warrior king of Kosal was slain by Abhimanyu. Your son Chitrasen fought very hard and was slain by Bhim. The brave son of Jayadrath, terror of foes with his sword and shield, was slain by mighty Arjun. Vrishasen of great prowess like that of Karan, dexterous in the use of arms, was

धनञ्जयेन विक्रम्य गमितो यमसादनम् ॥ २५ ॥ नित्यं प्रसक्तवैरो यः पाण्डवैः पृथिवीपतिः। विश्राव्य वैरं पार्थेन श्रुतायुः स निपातितः ॥ २६ ॥ शल्यपुत्रस्तु विक्रान्तः सहदेवेन मारिष। हतो रुक्मरथो राजन् भ्राता मातुलजो युधि ॥ २७ ॥ राजा भगीरथो वृद्धो बृहत्क्षत्रश्च कैकयः। पराक्रमन्तौ विक्रान्तौ निहतौ वीर्यवत्तरौ ॥ २८ ॥ भगदत्तसुतो राजन् कृतप्रज्ञो महाबलः। श्येनवच्चरता संख्ये नकुलेन निपातितः ॥ २९ ॥ पितामहस्तव तथा बाह्लीकः सह बाह्लिकैः। निहतो भीमसेनेन महाबलपराक्रमः ॥ ३० ॥ जयत्सेनस्तथा राजन् जारासन्धिर्महाबलः। मागधो निहतः संख्ये सौभद्रेण महात्मना ॥ ३१ ॥ पुत्रस्ते दुर्मुखो राजन् दुःसहश्च महारथः। गदया भीमसेनेन निहतौ शूरमानिनौ ॥ ३२ ॥ दुर्मर्षणो दुर्विषहो दुर्जयश्च महारथः। कृत्वा नसुकरं कर्म गता वैवस्वतक्षयम् ॥ ३३ ॥ उभौ कलिङ्गवृषभौ भ्रातरौ युद्धदुर्मदौ। कृत्वा चासुकरं

के वधको सुनकर अपनी प्रतिज्ञाको स्मरण करके मारा जो राजा सदैव पांडवों से शत्रुता करताथा वह श्रुतायु शत्रुताको सुनाकर अर्जुन के हाथसे मारागया। २६। हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र सहदेव ने अपने मामा शल्यके पुत्र पराक्रमी भाई रुक्मरथ नामको युद्धमें मारा।२७। वृद्ध राजा भगीरथ और बृहच्छत्र केकय यह दोनों बड़े बली महाप्रतापी भी मारेगये।२८।हेराजा बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान् भगदत्त का पुत्र युद्धमें बाजकी समान घूमनेवाले नकुलके हाथसे मारागया।२९।इसीप्रकार महाबली शस्त्रधारी आपके पितामह बाह्लीक अपने बाह्लीक लोगों समेत भीमसेन के हाथ से मृत्यु वश कियेगये। ।३०। और जरासन्धका पुत्र महाबली जयत्सेन मगध का राजा युद्धमें महात्मा अभिमन्यु के हाथसे मारागया। ।३१। हे राजा आपके पुत्र महारथी दुर्मुख और दुस्सह शूरोंमें प्रशंसनीय भीमसेनकी गदा से मारेगये।३२। और महारथी दुर्मर्षण दुर्विष और महारथी दुर्जय यह तीनों कठिनकर्मों को करके यम के स्थानको गये ।३३। और युद्धमें दुर्मद कलिंग और वृषक दोनोंभाई

slain by Aajun who, at the death of Abhimanyu, had made a vow to slay him. Shrutayu, who always bore an enmity towards the Pandavas, was slain by Arjun. 26. Sahadev slew Rukmarath, the son of his maternal uncle Shalya. The old kings Bhagirath and Vrihachatra of Kaikaya, powerful princes of great prowess, were also slain. Bhagdatta's son, wise and full of prowess, was slain by Nakul who was roaming fearlessly in the field of battle. Similarly, your grandfather Vahlik of great prowess and skill in arms, with his people bearing his own name, was slain by Bhim. 30. Brave Jayatsen a son of Jarasandh, king of Magadh, was slain by Abhimanyu. Your brave sons, Durmukh and Dussah, worthy of praise among the warriors, were slain by the mace of Bhim. Mighty Durmarshan, Durvish and Durjaya went to the region of Yam after performing prodigies of valour.

कर्म गतौ वैवस्वतक्षयम् ॥३४॥ सचिवो वृषवर्मा ते शूरः परमवीर्य्यवान् । भीमसेनेन विक्रम्य गमितो यमसादनम् ॥ ३५ ॥ तथैव पौरवो राजा नागायुतबलो महान् । समरे पाण्डुपुत्रेण निहतः सव्यसाचिना ॥ ३६ ॥ वशातयो महाराज द्विसाहस्रा प्रहारिणः । शूरसेनाश्च विक्रान्ताः सर्वे युधि निपातिताः ॥ ३७ ॥ अभीषाहः कवचिनः प्रहरन्तो रणोत्कटाः । शिवयश्च रथोदाराः कलिंगसहिता हताः ॥ ३८ ॥ गोकुले नित्यसंवृद्धा युद्धे परमकोपनाः । तेपावृत्तकवीराश्च निहताः सव्यसाचिना ॥ ३९ ॥ श्रेणयो बहुसाहस्राः संशप्तकगणाश्च ये । ते सर्वे पार्थमासाद्य गता वैवस्वतक्षयम् ॥ ४० ॥ स्यालौतव महाराज राजानौ वृषकाचलौ । त्वदर्थमतिविक्रान्तौ निहतौ सव्यसाचिना ॥ ४१ ॥ उग्रकर्मा महेष्वासो नामतः कर्मतस्तथा । शाल्वराजो महाबाहुर्भीमसेनेन पातितः ॥ ४२ ॥ ओघवांश्च महाराज वृहन्तः सहितौ रणे । पराक्रमन्तौ मित्रार्थे गतौ वैवस्वतक्षयम्

कठिन कर्मी होकर यमलोकको सिधारे । ३४ । आपका शूरवीर पराक्रमी मन्त्री वृषवर्मा भीमसेन के हाथसे कालके वशीभूत हुआ । ३५ । इसीप्रकार दशहजार हाथीके समानपराक्रमी महाराजपौरव युद्धमें वड़ेपराक्रमी अर्जुनके हाथ से मारागया ।३६। और प्रहार करनेवाले दो हजार वशातय और पराक्रमी शूरसेन यहसव युद्धमें मारेगये । ३७ । कवचधारी प्रहारकरनेवाले युद्धमें उत्कट महारथी अभीसाह शिवय यह दोनों कालिंग देशियों समेत मारेगये । ३८ । जोकि गोकुलमें सदैव बढ़ेहुये युद्धमें महाक्रुद्धरूप युद्धसे मुख न मोड़नेवाले वीरथे वहभी अर्जुन के हाथ से मारेगये । ३९ । हजारों संसप्तकों समेत घूमनेवाले जो श्रेणिथे यह सब भी अर्जुन के हाथसे यमलोकको गये । ४० । हे महाराज आपके निमित्त बड़ा पराक्रम करनेवाले आपके साले वृषक और अचल भी अर्जुन के हाथसे मारेगये । ४१ । इसीरीतिसे नाम और कर्मसे उग्रकर्मी बड़ा धनुर्धारी महाबाहु राजा शाल्व भीमसेन के हाथसे मारागया । ४२ । हे राजा मित्रके निमित्त युद्धमें पराक्रम करनेवाले ओघवान और वृहन्त दोनों एकसाथही यमलोकको गये । ४३ । इसीरीतिसे

The great warrior brothers, invincible Kaling and Vrishak died fighting bravely. Your valiant counsellor, Vrishavarma was slain by Bhim. Similarly, Prince Paurva, who possessed the prowess of ten thousands of elephants, was slain by valiant Arjun. 36. Two thousands of valiant Vashatayas and brave Shursenas were all slain in battle. Brave Avishahas and Shivayas, great warriors, were slain in battle along with the warriors of Kaling, clad in mail. The wrathful warriors of Gokul, invincible in battle, were also slain by Arjun. Thousands of Shrenis and Sansaptaks, coming in contact with Arjun, were slain in battle. 40. Your brothers-in-law, Vrishak and Achal, who performed great deeds of valour for your sake, were slain in battle by Arjun. King Shalwa the great archer of renown was slain by Bhim. Both Oghwan and Vrahant, doing deeds of valour

॥ ४३ ॥ तथैव रथिनां श्रेष्ठः क्षेमधूर्त्तिर्विशाम्पते। निहतो गदया राजन् भीमसेनेन संयुगे ॥ ४४ ॥ तथा राजन्महेष्वासो जलसन्धो महाबलः। सुमहत्कदनं कृत्वा हतः सात्यकिना रणे ॥४५॥ अलम्बुषो राक्षसेन्द्रः खरयुग्दुरयानवान्। घटोत्कचेन विक्रम्य गमितो यमसादनम् ॥ ४६ ॥ राधेयाः सूतपुत्राश्च भ्रातरश्च महारथाः। कैकेयाः सर्वे चापि निहताः सव्यसाचिना ॥ ४७ ॥ मालवा मद्रकाश्चैव, द्रविडाश्चोग्रविक्रमाः। यौधेयाश्च ललित्याश्च क्षुद्रकाश्चाप्युशीनराः ॥ ४८ ॥ मावेल्लकास्तुण्डिकेराः सावित्रीपुत्रकाश्च ये। प्राच्योदीच्याः प्रतीच्याश्च दाक्षिणात्याश्च मारिष ॥ ४९ ॥ पत्तीनां निहताः संघा हयानां प्रयुतानि च। रथव्रजाश्च निहता हताश्च वरवारणाः ॥ ५० ॥ सध्वजाः सायुधाः शूराः सवर्माम्बरभूषणाः। कालेन महता यत्ताः कुलशीलविवर्धिताः ॥ ५१ ॥ ते हताः समरे सर्वे पार्थेनाक्लिष्टकर्मणा। अन्ये तथा मितबलाः

महाधनुर्धर रथियों में श्रेष्ठ क्षेमधूर्तिभी युद्ध में भीमसेनके हाथकी गदासे मारेगये। ४४। ऐसेही बड़ा धनुषधारी महाबली जलसन्ध युद्धमें कठिन कर्मोंको करके बड़े शब्दोंको करताहुआ सात्यकीके हाथसे मारागया। ४५। गधोंका रथ रखने वाला राक्षसोंका राजाअलबुष पराक्रमकरके घटोत्कचके हाथसे यमलोकको पहुँचा। ४६। कर्णके पुत्र और भाई महारथी और सब केकय लोगभी अर्जुन के हाथसे मारेगये। ४७। बड़े कठिन कर्मी मालव मद्रक और द्राविड़ यौधेय ललित्य क्षुद्रक उशीनर। ४८। मावेल्लक तुंडकेर सावित्री के पुत्र और पश्चिमोत्तरीय वा पूर्वीय दक्षिणीय राजालोग। ४९। पत्तियों के और घोड़ों के लाखों समूह रथ हाथियों के झुंडों समेत मारडालेगये। ५०। ध्वजा शस्त्र कवच और वस्त्रों से अलंकृत शूरवीर जो बहुतकालसे बुद्धिमान लोगोंके द्वारा सववातों में कुशल और पोषण कियेगये। ५१। वह सुगमकर्मी युद्धमें अर्जुन के हाथसे मारेगये इसीप्रकार अन्य सेनाके

for the sake of friendship, were slain at the same time. Similarly the great archer, best of warriors, Kshemdhurti was slain by Bhim's mace Brave Jalsandh, a great archer, doing great deeds of valour with loud roars, was slain by Satyaki. Alamvush the prince of rakshases, whose car was drawn by donkeys, was slain in battle by Ghatotkach. 46. Karan's sons and brothers of great prowess were slain by Arjun, along with the Kaikaya warriors. The valient Malawas, Madraks and Dravidian warriors, with Lalithas, Kshudraks, Ushinars, Mavellaks Tundikers, the sons of Savitri, the kings of the North, West, East and south, with numerous armies consisting of footsoldiers, horsemen car-warriors and elephants, were slain in battle. 50. The warriors equipped with banners, weapons, armour and clothes, who had got good training in arms from skilful masters, fell an easy prey to Ar-

परस्परवधैषिणः ॥ ५२ ॥ एते चान्ये च बहवो राजानः सगणा रणे । हताः सहस्रशो राजन् यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ ५३ ॥ एवमेव क्षयो वृत्तः कर्णार्जुनसमागमे । महेन्द्रेण यथा वृत्रो यथा रामेण रावणः ॥ ५४ ॥ यथा कृष्णेन नरको मुरश्च निहतो रणे कार्तवीर्यश्च रामेण भार्गवेण बलीयसा ॥ ५५ ॥ सज्ञाति बान्धवः शूरः समरे युद्धदुर्मदः । रणं कृत्वा महद्युद्धं घोरं त्रैलोक्य मोहनं ॥ ५६ ॥ यथा स्कन्देन महिषो यथा रुद्रेण चान्धकः । तथार्जुनेन निहतो द्वैरथे युद्धदुर्मदः ॥ ५७ ॥ सामात्यबान्धवो राजन् कर्णः प्रहरतांवरः । जयाशा धार्तराष्ट्राणां वैरस्य च मुखं यतः ॥ ५८ ॥ तीर्णं तत् पाण्डवैरद्य यत् पुरा नावबुध्यसे । उच्यमानो महाराज बन्धुभिर्हितवादिभिः ।

लोग जो परस्पर मारनेकी इच्छा रखतेथे मारेगये । ५२ । हे राजा इनके विशेष बहुतसे अन्य हजारों राजालोग अपनी सेनाओं समेत युद्धमें मारेगये । ५३ । इस रीतिसे कर्ण और अर्जुनकी सम्मुखतामें ऐसा यहघोर नाशहुआ जैसे कि इन्द्रकेसाथ वृत्तासुर औरश्रीरामचन्द्रजी के हाथसे रावण मारागया । ५४ । और जैसे श्री कृष्णजी के हाथसे नरक और मुरनाम दैत्य युद्धमें मारेगये और जैसे भी भार्गव परशुरामजी के हाथसे राजा कार्तिवीर्य अर्थात् सहस्राबाहु मारागया । ५५ । इसी प्रकार वह युद्धमें दुर्मद शूरवीर कर्ण अपनी जाति और बांधवोंसमेत युद्धमें तीनों लोकों के मोहन करनेवाले महाघोर संग्राम को करके मारागया । ५६ । जैसे स्वातिकार्त्तिकजी ने महिषको रुद्रजी ने अन्धकको माराथा उसीप्रकार युद्ध में दुर्मद प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ द्वैरथकर्ण अर्जुनके साथ युद्ध करके मन्त्री और बांधवों समेत मारागया जिससे धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी विजयकी आशा और शत्रुताका मुख उत्पन्न हुआ था । ५८ । हे राजा पाण्डव लोग उस कर्म से निवृत्तहुये जो पूर्व समय में भलाई चाहनेवाले बांधवों के समझाने से तुमनहीं

jun like other warriors who were eager for fighting. Besides these thousands of other kings, possessing large armies, were slain in battle. The fighting between Karan and Arjun was dreadful like that of Indra and Vritasur, Ram and Rawan, Shri Krishn and Narak or Mur, or Parashuram and Kartvirya or Sahasravahu. 55. Invincible Karan, with his kinsmen and allies, stupefied the three worlds with his dreadful fighting and was at last slain in battle. Mighty Karan, the best of warriors with his counsellors and friends, was slain in battle by Arjun, as Mahish was slain by Kartik, or Andhak, by Rudra. In him lay the hope of victory to the sons of Dhritrashtra and he was the root of all enmity. The Pandavas have performed a deed which you did not think them capable of doing, although you were admonished by your friends and well-wishers.

तदिदं समनुप्राप्तं व्यसनं सुमहाभयम् ॥ ५९ ॥ पुत्राणां राज्यकामानां त्वया राजन् हितैषिणा । अहितान्येव चीर्णानि तथा तत्फलमागतम् ॥ ६० ॥

इति श्री कर्ण पर्वणि सञ्जयवाक्ये पञ्चमोऽध्याय ॥ ५ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । आख्याता मामकास्तात निहता युधि पाण्डवैः निहतान् पाण्डवेयानां मामकैर्ब्रूहि सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । कुन्तयो युधि विक्रान्ता महासत्त्वा महाबला । सानुबन्धा सहामात्या भीष्मेण युधि पातिता ॥ २ ॥ नारायणा बलभद्राश्च रामाश्च शतशो रणे । अनुरक्ताश्च वीरेण भीष्मेण युधि पातिता ॥३॥ समं किरीटिना ।

समझे । ५९ । इसीकारण राज्य के चाहनेवाले पुत्रों की वृद्धिके चाहनेवाले तुमने बड़ा नाशकारी यह महाघोर दुःखपाया और जो दुष्कर्म किये उनका यह याग्य फल पाया ६० ॥

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात संजय युद्ध में पाण्डवों के हाथसे मारे हुये मेरे शूर वीर लोग वर्णन किये अब हमारे शूर वीरों के हाथसे मरेहुये पाण्डवों के शूरवीरों का वर्णनकरो । १ । सजय बोले युद्धमें बडे पराक्रमी बलवान कुतदेशी मन्त्री और बान्धवों समेत श्री गांगेय भीष्मजी के हाथसेमारेगये । २ । और नारायण वा बालभद्रनाम अन्य शूरवीरलोग जो बड़े भक्त थे युद्धमें वह सबभी वीर भीष्म के हाथसे मारेगये । ३ । और वह सत्यजित जोकि बड़ाबली युद्धमें सत्य सकल्प

Desirous of securing kingdom for your covetous sons you have brought about all this ruin and misery and have got a proper reward of your wicked deeds. 60

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, You have given, O Sanjaya, an account of our warriors slain by the Pandavas now tell me the names of the Pandav warriors slain by ours ' Sanjaya said "The brave warriors of Kunti, with their advisers and kinsmen, were slain by Bhishm Narayans and Balbhadras great warriors devoted to the Pandavas.

सवये वीर्य्येण च बलेन च । सत्यजित् सत्यसन्धेन द्रोणेन निहतो युधि ॥ ४ ॥-पाञ्चालानां महेष्वासाः सर्वे युद्धविशारदाः । द्रोणेन सह संगम्य गता वैवस्वतक्षयम् ॥५॥ तथा विराटद्रुपदौ वृद्धौ ससुतौ नृपौ । पराक्रमन्तौ मित्रार्थे द्रोणेन निहतौ रणे ॥ ६ ॥ यो बाल एव समरे सम्मितः सव्यसाचिना । केशवेन च दुर्धर्षो बलदेवेन चा विभो ॥ ७ ॥ परेषां कदनं कृत्वा महद्रणविशारदः। परिवार्य्य महामात्रैः षड्भिः परमकै रथैः ॥ ८ ॥ अशक्नुवद्भिर्बीभत्सुमभिमन्युर्निपातितः । तं कृतं विरथं वीरं क्षत्रधर्मे व्यवस्थितम् ॥ ९ ॥ दौःशासनिर्महाराज सौभद्रं हतवान्रणे । सपत्नानां निहन्ता च महत्या सेनया वृतः ॥ १० ॥ अम्बष्ठस्य सुतः श्रीमान् मित्रहेतोः पराक्रमन् । आसाद्य लक्ष्मणं वीरं दुर्य्योधनसुतं रणे ॥ ११ ॥ सुमहत् कदनं कृत्वा गतो वैस्वतक्षयम् । बृहन्तस्तु महेष्वासः कृतास्त्रो युद्धदुर्मदः ॥ १२ ॥ दुःशासनेन विक्रम्य गमितो यमसादनम् ।

अर्जुन के समान था लड़ाई में द्रोणाचार्य के हाथसे मारागया । ४ । और युद्धमें कुशल बड़े धनुषधारी सब पांचाल देशीलोग युद्धमें सम्मुख होकर द्रोणाचार्य के हाथसे यमलोककोगये । ५ । इसीप्रकार मित्रके लिये पराक्रम करनेवाले राजा विराट और द्रुपद दोनों वृद्धभी युद्धमें द्रोणाचार्यके हाथ से मारेगये । ६ । हे समर्थ धृतराष्ट्र जो अर्जुन केशवजी और बलदेवजी केसमान अजेय महारथियों में श्रेष्ठ मन्दमुसकान करनेवाला बालक अभिमन्यु शत्रुओं के बड़ेभारी नाशको करके मुख्य उत्तमरथी जो अर्जुनके पराजय करने में असमर्थ थे उन छः महारथियों ने घेरकर मारडाला है महाराज क्षत्रीधर्म में वर्त्तमान रथ से हीन शत्रुहन्ता वीर अभिमन्यु को युद्धमें दुश्शासन के पुत्रनेमारा शत्रु हननेवाली सेना संयुक्त राजा अम्बष्ठ का पुत्र श्रीमान मित्रके निमित्त पराक्रम करता हुआ युद्धमें दुर्योधन के पुत्र वीर लक्ष्मणको पाकर । ११ । और बड़े भारी नाशको करके यमलोक को गया बड़ाधनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्म्मद बृहन्त दुश्शासन के साथ पराक्रम करके यमलोक को सिधारा और युद्ध में दुर्म्मद राजा मणिमान और दण्डधार । १२ ।

were slain by Bhishm. Satyajit of great prowess and true vows like Arjun, was slain by Drona. The Panchals, great archers and skilful warriors, were slain by Drona. Doing deeds of valour for the sake of their friends, the old kings Virat and Drupad too, were slain by Drona. Abhimanyu, who was invincible like Arjun, Vasudev and Baldev, having destroyed a large number of our warriors, was at last slain by six of our warriors who found it impossible to slay Arjun. Doing the duty of a warrior, careless Abhimanyu the destroyer of foes was slain by Dushasan's son. Accompanied by a warlike army the son of king Amvasht, doing deeds of valour for his friends was slain by Lakshman the son of Duryodhan. 11. The great archer and skilful warrior Vrihant was slain by Dushasan. Brave kings

मणिमान् दण्डधारश्च राजानो युद्धदुर्मदौ ॥ १३ ॥ पराक्रमन्तौ मित्रार्थे द्रोणेन विनिपातितौ । अंशुमान् भोजराजश्च सहसैन्यो महारथः । १४ ॥ भारद्वाजेन विक्रम्य गमितो यमसादनम् । सामुद्रश्चित्रसेनश्च सह पुत्रेण भारत । १५ ॥ समुद्रसेनेन बलात् गमितो यमसादनम । अनूपवासी नीलश्च व्याघ्रदत्तश्च वीर्य्यवान् ॥ १६॥ अश्वत्थाम्ना विकर्णेन गमितो यमसादनम् । चित्रायुधश्चित्रयोधी कृत्वा तौ कदनं महत् ॥ १७ ॥ चित्रमार्गैश्च विक्रम्य विकर्णेन हतो मृधे । वृकोदरसमो युद्धे वृतः केकययोधिभिः ॥ १८ ॥ केकयेन स विक्रम्य भ्राता भ्राता निपातितः । जनमेजयो गदायोधी पार्वतीयः प्रतापवान् ॥१९॥ दुर्मुखेन महाराज तव पुत्रेण पातितः । रोचमानो नरश्रेष्ठौ रोचमानो ग्रहाविव ॥ २० ॥ द्रोणेन युगपद्राजन् दिवं संप्रापितौ शरैः । नृपाश्च प्रतियुध्यन्तः पराक्रान्ता विशाम्पते

यह दोनों मित्रके निमित्त पराक्रम करनेवाले युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथसे मारेगये और महारथी अंशुमान और भोजराज सेना समेत । १४ । पराक्रम करके द्रोणाचार्य्य के हाथसे कालवशहुये और पुत्रसमेत । १५ । सामुद्र चित्रसेन के पराक्रम से यमलोक को पहुँचाया गया अनूपवासी राजा नील और पराक्रमी व्याघ्रदत्त । १६ । यह दोनों अश्वत्थामा और विकर्ण के हाथसे यमपुरको गये चित्रायुध चित्रयोधी यह दोनों भी बड़े नाशको करके । १७ । और चित्रमार्ग से पराक्रम करते हुये युद्धमें विकर्ण के हाथसे मारेगये युद्धमें भीमसेन के समान केकयदेशी शूरबीरों से संयुक्त । १८ । महापराक्रम करके अपने भाई केकेय के हाथसे मारागया है महाराज गदासे युद्ध करनेवाला पर्वत निवासी महाप्रतापवान तेजस्वी जनमेजय । १९ । आपके पुत्र दुर्मुखके हाथसे मारागया ग्रहों के समान प्रकाशित नरोत्तम नाम दोनों भाई । २० । एकबार में द्रोणाचार्य के बाणों से स्वर्ग को पठायेगये हे राजा सम्मुख युद्धकरनेवाले पराक्रमी राजालोग । २१ । कठिन कर्मको करके

Maniman and Dandadhar, exerting for the sake of their friends were slain by Drona. Mighty Anshuman and Bhojraj fought with Drona and were slain by him. Chitrasen the king of the sea coast was slain in battle by Samudrasen. King Nil of Anup and valiant Vyaghradatta were slain by Ashwathama and Vikarn. Chitrayudh and Chitrayodhi slew many warriors in a wonderful manner and were slain by Vikarn. Full of prowess like Bhim and accompaniedby Kaikaya warriors the Kaikya prince was slain by his own brother Glorious Janmejaya, the king of the hilly country, who fought with mace, was slain by your son Durmukh. The two Rachman brothers, glorious like stars were slain by Dronacharya. 20. The kings

॥ २१ ॥ कृत्वा नसुकरं कर्म गता वैवस्वतक्षयम् । पुरुजित् कुन्तिभोजश्च मातुलौ सव्यसाचिनः ॥ २२ ॥ संग्रामे निर्जितांल्लोकान् गमितौ द्रोणसायकैः । अभिभूः काशिराजश्च बहुभिः काशिभिर्वृतः ॥ २३ ॥ वसुदानस्य पुत्रेण न्यासितो देहमाहवे । अमितौजा युधामन्युरुत्तमौजाश्च वीर्यवान् ॥ २४ ॥ निहत्य शतशः शूरानस्मदीयैर्निपातिताः । मित्रवर्मा च पाञ्चाल्य क्षत्रधर्मा च भारत ॥ २५ ॥ द्रोणेन परमेष्वासौ गमितौ यमसादनम् । शिखण्डितनयो वीरः क्षत्रदेवो युधाम्पतिः ॥ २६ ॥ लक्ष्मणेन हतो राजंस्तव पौत्रेण मारिष । सुचित्रश्चित्रवर्मा च पितापुत्रौ महाबलौ २७ । प्रचरन्तौ रणे वीरौ द्रोणेन विनिपातितौ । वार्द्धक्षेमिर्महाराज समुद्र इव पर्वणि ॥ २८ ॥ आयुधक्षयमासाद्य प्रशान्तिं परमां गतः । सेनाबिन्दुसुतश्रेष्ठ शास्त्रवान् प्रहरन्युधि॥२९॥बाह्लिकेन

यमके लोकोंको सिधारे हे राजा सम्मुख युद्ध करने वाले सव्यसाची अर्जुन के मामा पुरजित और कुन्तभोज युद्ध में पराजय होकर द्रोणाचार्य के बाणों से यमके लोकों को प्राप्त हुये । २२ । अभिभूनाम काशीका राजा काशी के अनेक शूर वीरों समेत युद्ध में वसुदान के पुत्र के हाथसे मारागया और बड़ा तेजस्वी युधामन्यु और महापराक्रमी उत्तमौजा । २४ । युद्धमें सैकड़ों शूरवीरों को मारकर हमारे वीरों के हाथसे मारेगये और पांचाल देशी मित्रवर्मा और क्षत्रवर्मा यह दोनों महाधनुषधारी द्रोणाचार्य के हाथसे यमलोकको भेजेगये । २६ । शूरवीरों में प्रधान सिखंडी का पुत्र क्षत्रदेव आपके पौत्र लक्ष्मणके हाथसे मारागया चित्रवर्मा और सुचित्र महारथी महाबली दोनों पिता पुत्र युद्ध में घूमतेहुये महावीर द्रोणाचार्य के हाथसे मारेगये । २७ । हे महाराज जैसे कि पर्व में समुद्र होताहै उसीप्रकार वार्धक्षेमी ने शस्त्रों के नाश होनेपर परमशांती को पाया । २८ । हे राजा शस्त्रधारी युद्धमें श्रेष्ठ सेनाबिन्दुका पुत्र कौरवेन्द्र बाह्लीकके हाथ से मारागया और

encountering in battle did great deeds of valour and went to the region of Yam. The maternal uncles of Arjun, Purujit and Kuntbhoj were defeated in battle and sent to the region of Yam by Drona's arrows. Avibhu the prince of Kashi, with many warriors of Kashi was slain in battle by Vasudan's son. Glorious Yudhamanyu and valiant Uttamaunja, having slain hundreds of warriors in battle were at last slain by your own warriors. Mitravarma and Kshatravarma of Panchal were sent to the region of Yam by Dronacharya the greatest of archers. 26. Shikhandi's son Kshatradev, the prince of warriors, was slain by your grandson Lakshman. Chitravarma and Suchitra, the two great warriors, father and son, were slain by Drona. At the destruction of all his weapons, Vardhakshemi, like the Ocean at full tide, became tranquil. Senavindu's son a great warrior, was slain by Vahlik the prince of Kauravas. Dhrishtaketu the best of Panchal warriors, having done deeds of valour,

हता द्रोणे । विक्रम्य यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ ३९ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि सञ्जयवाक्ये षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । मामकस्यास्य सैन्यस्य हतोत्सेधस्य सञ्जय । अवशेषं न पश्यामि ककुदे मृदिते सति ॥ १ ॥ तौ हि वीरौ महेष्वासौ मदर्थे कुरुसत्तमौ । भीष्म द्रोणौ हतौ श्रुत्वा को मार्थो मे जीविते सति ॥ २ ॥ न च शोचामि राधेयं हतम इव शालिनम । यस्य बाह्वोर्बलं तुल्यं कुञ्जराणां शतं शतम ॥ ३ ॥ हतप्रवीरसैन्यं मे यथा शंससि सञ्जय । अहतानपि मे शंस येऽत्र जीवन्ति केचन । ४ ॥ एषु हि मृतेष्वद्य ये त्वया परिकीर्तिताः । येऽपि जीवन्ति ते सर्वे मृता इति मतिर्मम ॥ ५ ॥ सञ्जय

करके पांडवों के अनेक महारथीमारे ३९ ॥

अध्याय ७ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय प्रधान पुरुषों का नाश होजानेसे उस मरने से शेष बचीहुई अपनी सेनाको नहीं देखताहूं ।१। मेरे प्रयोजन से मरनेवाले उन दोनों महाधनुषधारी अतुलपराक्रमी कौरवों में श्रेष्ठ भीष्म और द्रोणाचार्य को सुनकर जीवनको मैं नहीं चाहताहूं । २ । मैं युद्धको शोभित करनेवाले मरेहुये कर्णकोनहीं सहसक्ताहूं जिसकी भुजाओंका पराक्रम दशहजार हाथीका था । ३ । हे संजय इस हेतुसे जैसे कि मेरी सेनाके मरेहुओंका तुमने वर्णन किया वैसेही यहभी कहो कि मेरी सेनामें कौन २ जीवताहै । ४ । अब आपके वर्णन कियेहुये इन बड़े शूरवीरों के मरजाने से शेष बचेहुये भी मरेके सदृश मुझको जानपड़ते हैं । ५ । संजय

Drona." 39.

CHAPTER VII

Dhritrashtra said," At the destruction of the principal warriors, I think the rest cannot be safe. Hearing of the death of the two best of Kaurav warriors, Bhishm and Dronacharya who died for my sake, I have no desire to live any longer. I cannot brook the death of Karan, the ornament of battle, whose prowess was like that of ten thousands of elephants. You have given, Sanjaya, an account of our warriors slain, now let me know who are alive. I think that the warriors remaining now are like dead men." 5. Sanjaya said,

उवाच । यस्मिन्महास्त्राणि समर्पितानि चित्राणि शुभ्राणि चतुर्विधानि । दिव्यानि राजन्विहितानि चैव द्रोणेन धीरेण द्विजसत्तमेन ॥ ६ ॥ महारथः कृतिमान् क्षिप्रहस्तो दृढायुधो दृढमुष्टिर्दृढेषुः । स वीर्यवान् द्रोणपुत्रस्तरस्वी व्यवस्थितो योद्धुकामस्त्वदर्थे ॥ ७ ॥ आनर्त्तवासी हृदिकात्मजोऽसौ महारथः सात्वतानां वरिष्ठः । स्वयं भोजः कृतवर्मा कृतास्त्रो व्यवस्थितो योद्धुकामस्त्वदर्थे ॥ ८ ॥ आर्त्तायनिः समरे दुष्प्रकम्प्य सेनाग्रणीः प्रथमस्तावकानाम् । यः स्वस्रीयान् पाण्डवेयान् विसृज्य सत्यां वाचं तां चिकीर्षुस्तरस्वी ॥ ९ ॥ तेजोवधं सूतपुत्रस्य संख्ये प्रतिश्रुत्याजातशत्रोः पुरस्तात् । दुराधर्षः शक्रसमानवीर्य्यः शल्यः स्थितो योद्धुकामस्त्वदर्थे ॥ १० ॥ आजानेयैः सैन्धवैः पार्वतीयैर्नदीजकाम्बोजवनायुजैश्च । गान्धारराजः स्वबलेन युक्तो व्यवस्थितो योद्धुकामस्त्वदर्थे ॥ ११ ॥ शारद्वतो गौतमश्चापि राजन्महाबलो बहुचित्रास्त्रयोधी । धनुश्चित्रं सुमहद्भारसाहं व्यवस्थितो योद्धुकामः प्रगृह्य ॥१२॥ महाधनः केकयराजपुत्रः सदश्व

वोले हे राजा ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने जिसको अपने उत्तम दिव्य अस्त्र समर्पण करादिये ६ । वह महारथी कर्मकर्त्ता हस्त लाघव करनेवाला दृढ़ धनुष बाणों से युक्त पराक्रमी वेगवान् तेरे निमित्त युद्धाभिलाषी अश्वत्थामा अटल होकर विद्यमान है । ७ । यह आनर्त्त देश वासी हृदिक का पुत्र यादवों में श्रेष्ठ महारथी भोजवंशी कृतवर्मा आपकेही निमित्त युद्धकी इच्छा करनेवाला अभी विद्यमान है । ८ । युद्धमें दुराधर्ष आपके पुत्रोंका सेना पति शल्य जो अपना वचन सत्य करने को अपने भानजे पाण्डवों को त्यागकर । ९ । जिसने युधिष्ठिर के आगे युद्धमें कर्ण के पराक्रम के नाश करने की प्रतिज्ञा को पूर्ण किया वह अजेय इन्द्र के समान पराक्रमी आपके निमित्त लड़ने की इच्छा करनेवाला नियत है । १० । और अपने कुल समेत राजा गान्धार, आजानेय, सिन्धदेशी, पर्वती काम्बोज देशी सिंधी वनायुजनदीज इत्यादि । ११ । अनेकप्रकार के घोड़ों समेत तेरे लिये युद्धाकांक्षी वर्तमान है । १२ । हे कौरवेन्द्र राजा केकय का पुत्र महा-

"He whom Drona bequeathed his weapons, the dreadful man of great prowess, having hard bow and arrows, dexterous Ashwathama, desirous of fighting for you, is still in the field of battle. Valiant Kritvarma the son of Hridik, best of the Yaduvas, of the family of Bhoj, a native of Anart, is ready to fight for your sake. The great warrior, commander of the armies of your sons, who left his sister's sons, the Pandavas, to keep his word, who fulfilled his vow of destroying Karan for the sake of Yudhishthir, that invincible warrior of Indra like prowess stands desirous of battle for your sake. 10. The king of Gandhar, together with his kinsmen and horses of Ajaneya, Sindh hill, Comboj, Banayuj and other breeds, stands in the field to fight for your sake. The valiant son of the king of Kaikaya, with good

युक्तं पताकिनश्च । रथाग्र्यमारुह्य नरप्रवीरो व्यवस्थितो योद्धुकामस्त्वदर्थे ॥ १३ ॥ तथा सुतस्ते ज्वलनार्कतुल्यं रथं समास्थाय कुरुप्रवीरः । व्यवस्थितः पुरुमित्रो नरेन्द्र काशे सूर्यो भ्राजमानो यथा खे ॥ १४ ॥ दुर्योधनो नागकुलस्य मध्ये व्यवस्थितः सिंह इवा बभासे । रथेन जाम्बूनदभूषणेन व्यवस्थितः समरे योत्स्यमानः ॥ १५ ॥ स राजमध्ये पुरुषप्रवीरो रराज जाम्बूनदचित्रवर्मा । पद्मप्रभो वह्निरिवाल्पधूमो मेघान्तरे सूर्य इव प्रकाशः ॥ १६ ॥ तथा सुषेणोऽप्यसिचर्मपाणिस्तवात्मजः सत्यसेनश्च वीरः व्यवस्थितौ चित्रसेनेन सार्द्धं हृष्टात्मानौ समरे योद्धुकामौ ॥ १७ ॥ ह्रीनिषेधो भारतराजपुत्रउग्रायुधः क्षणभोजी सुदर्शः । जारासन्धिः प्रथमश्चादृढश्च चित्रायुधः श्रुतवर्मा जयश्च ॥१८॥ शलश्च सत्यव्रतदुःशलौ च व्यवस्थिताः समरे योद्धुकामाः । कैतव्या

रथी उत्तम घोड़ों समेत पताका युक्त रथपर चढ़कर आपके निमित्त युद्धका अभिलाषी अभी वर्त्तमान है । १३ । इसी प्रकार कौरवों में बड़ावीर पुरुमित्रनाम आप का पुत्र अग्नि और सूर्य्य के वर्ण रथपर सवार होकर ऐसा वर्त्तमान है जैसे कि बादलों से रहित स्वच्छ आकाश में सूर्य्य प्रकाशमान होता है । १४ । भाइयों में नियत दुर्योधन सिंहके समान स्वभाववाला युद्धाभिलाषी सुवर्ण जटित रथकी सवारी में नियत है । १५ । वह पुरुषों में बड़ावीर सुवर्ण जटित कवचधारीकमल के समान प्रकाशित निर्धूम अग्नि के समान तुल्य राजाओं में ऐसा शोभायमान हुआ । १६ । जैसे कि बादलों में सूर्य्यका प्रकाश होताहै इसीप्रकार प्रसन्न चित्त युद्धाभिलाषी ढाल तलवार धारण किये आपके पुत्र सुषेण चित्रसेन और सत्यसेन यह तीनों नियत हैं । १७ । हे भरतर्षभ श्रीमवान् उग्रशस्त्रधारी शीघ्र भोजी राजकुमार जरासन्धका प्रथमपुत्र अदृढ़ चित्रयुध श्रुतवर्मा जय शल्य सत्यव्रत दुःशल यह सब नरोत्तम सेनासमेत नियत हैं । १८ । और प्रत्येक युद्धमें शत्रुओं

horses, is ready to fight in your cause. 13. Likewise Purumitra, your son the best of the Kaurav warriors, stands in his car brilliant like the Sun. Standing among his brothers, of lion like prowess, he stands in his gold bedecked car 15. That brave warrior with gold armour, brilliant like smokeless fire, is glorious among kings like the Sun in the midst of clouds. Similarly your sons Shureen, Chitrasen and Satyajit of cheerful mind, armed with sword and shield, are ready to fight for your sake. Of good manners, possessed of powerful weapons, the eldest son of Jarasandh, Adririh, with Chitrayudh, Shrutvarma, Jaya, Shalya Satyavrat and Dushal, all these warriors are ready to fight. The revered king of Kaitavas, destroyer of foes, with princes, car-warriors, elephant men and foot-soldiers, desirous of fighting, and brave Shrutayu, Dhritayudh, and Chitravarma too, are

नानाविधाः शूराः रथेष्वन्ये सहराजपुत्रः । पत्ती हयी नागरथश्च तथैव व्यवस्थितो
युद्धकामस्त्वदर्थे ॥ १९ ॥ वीरः अनायुश्च धृतायुधश्च चित्राङ्गदो ऽनवमा तथैव ।
वरसंस्थितो योद्धुकामा नरप्रजाः सह द्विषो मानिनः सत्यसन्धा ॥ २० ॥ कर्णात्मजः
सत्यसन्धो महात्मा व्यवस्थितः समरे योद्धुकामः ॥ २१ ॥ अथापरौ कर्णसुतौ वराश्वौ
व्यवस्थितौ लघुहस्तौ नरेन्द्र । बलं महद्दुर्निवमल्पवीर्यैः समाश्रितौ वा स्वयमानौ त्वदर्थे
॥ २२ ॥ एतैश्च मुख्यैरपरैश्च राजन् योधप्रवीरैरमितप्रभावैः व्यवस्थितो नागकुलस्य
मध्ये यथा महेन्द्रः कुरुराजो जयाय ॥ २३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । आख्याता जीवमाना
ये परेभ्योऽपि यथातथम् । इतीदमवगच्छामि व्यक्तमर्थाभिपत्तितः ॥ २४ ॥ वैशम्पायन
उवाच । एवं शृण्वन्नेव तदा धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः । हतप्रवीरभूयिष्ठं किञ्चिच्छेषं बलं
हतक्रम ॥ २५ ॥ श्रुत्वा तु ... कुरुश्रेष्ठः । मुह्यमानो ... मुहूर्त

का हना शूरों में प्रतिष्ठित कैतवोंका राजा राजकुमार रथ घुड़चढ़े हाथी और पत्तियों समेत चढ़ाई करनेवाले । १९ । और आपके निमित्त युद्धाभिलाषी वीर अनायु धृतायुध चित्रांगद और चित्रवर्मा भी अभी युद्धमें नियत हैं यहसब युद्धाभिलाषी महारकर्त्ता प्रतिष्ठावान् सत्यप्रतिज्ञ नरोत्तम नियत हैं और कर्णकापुत्र सत्यप्रतिज्ञ युद्ध करने का वत्तनहमी अभी नियत है । २१ । और कर्णके दूसरे दो पुत्र उत्तम शस्त्रधारी हस्तलाघवी महाबली हैं वह आपके निमित्त युद्धाभिलाषी वीरोंके बँधेहुये व्यूहमें वर्त्तमान हैं वह भी साधारण अल्प पराक्रमियों से कठिनता पूर्वक विजय होनेवाले हैं । २२ । हेराजा इन अनेक असंख्य प्रभाववाले मुख्य२ वीरोंसे संयुक्त कौरवों का राजा दुर्योधन हाथियों के समूहों के बीच महेंद्रके समान विजय करने के निमित्त उपस्थित है । २३ । धृतराष्ट्र बोले कि हमारे और पांडवों के जो शूरवीर शेष बचेहुये जीवते हैं उनका तुमने वर्णन किया इसको सुनकर मुझको बड़ा शोक होताहै परन्तु जो होनहारहै वह मिट नहींसक्ती । २४ । वैशम्पायन बोले कि इसरीति से वचनों को कहता हुआ अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र अपनी उस सेना को जिसके बड़े२ वीर मारेगये और नाशको प्राप्तहुये वह में से कुछ

ready to fight. All these warriors, desirous of fighting, respectful, of true vows, best of men are ready for battle, 20. Karan's son, of true vows, desirous of fighting, is ready to fight. Two other sons of *Karan, great warriors, skillful and powerful, stand in battle array for* your sake. They are invincible by ordinary men These chief warriors, with numerous others, accompany Duryodhan, who surrounded by a large army of elephants stands ready to win like Indra." Dhritrashtra said, "I have heard, O Sanjaya, the names of the warriors who are alive. I am much grieved to hear all this; but Fate must have her way." Vaishampayan said, "Thus hearing of the destruction of his great warriors of whom only a few were

तिष्ठ सञ्जय ॥ २६ ॥ व्याकुलं मे मनस्तात श्रुत्वा सुमहदप्रियम् । मनो मुह्यति चाङ्गानि न च शक्नोमि धारितुम् ॥ २७ ॥ इत्येवमुक्त्वा वचनं धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः । नष्टचित्तस्तदा सोऽथ पपात जगतीपतिः ॥ २८ ॥

इति श्री कर्ण पर्वणि सञ्जयवाक्ये सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

जनमेजय उवाच । श्रुत्वा कर्णं हतं युद्धे पुत्रांश्चैव निपातितान् । नरेन्द्रः किमब्रवीत् द्विजश्रेष्ठ किमब्रवीत् ॥ १ ॥ प्राप्तवान् परमं दुःखं पुत्रव्यसनजं महत् । तस्मिन् यदुक्तवान् काले तन्ममाचक्ष्व पृच्छतः ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । श्रुत्वा कर्णस्य निधनमश्रद्धेयमिवाद्भुतम् । भूतसम्मोहनं भीमं मेरोः प्रपतनं यथा ॥ ३ ॥ चित्त

शेष वचनोंको सुनकर । २५ । दुःखी व्याकुल होकर महाशोकके वशी भूत हुआ और मोहित होकर बोला कि हे संजय एक मुहूर्त ठहरो । २६ । हे तात इन बड़ी अप्रिय वार्ताके सुनकर मेरा चित्त व्याकुल है और मैं अंगों से भी शिथिल होगया हूं । २७ । वह अम्बिका सुत धृतराष्ट्र ऐसे वचन को कहकर भ्रान्ति से युक्त होगया । २८ ।

अध्याय ८ ।

जनमेजयने कहा हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ वैशम्पायनजी युद्धमें कर्णको मृतक और पुत्रोंको निधन वर्तमान सुनकर उसदह व्याकुल राजा धृतराष्ट्रने क्या कहा । पुत्रकी आपत्तियों से उत्पन्न होनेवाले महाकष्टको प्राप्त होकर जो वर्णनकिया उसको मुझसे ब्योरेवार कहिये । २ । वैशम्पायन बोले हे महाराज उस कर्णके मरनेको सुनकर जोकि श्रद्धा के अयोग्य और जीवोंके अपूर्व मोहका करनेवाला महाभयानक था जिसप्रकार कि मेरुगिरिका चलायमान होना । ३ । और जैसे भार्गव परशुरामजी का अनुचित

1f, Dhritrashtra the son of Amvica was much agitated and with a confused mind asked Sanjaya to stay a while, saying that he was not then in a fit state of mind to hear more and felt tired. Having said this, Dhritrashtra the son of Amvica lost his senses."28.

CHAPTER VIII

Janmejaya said to Vaishampayan, "Best of Brahmans! what did Dhritrashtra say on hearing of the death of Karan and the readiness of his sons for fighting. Tell me what he said when he was grieved at the calamities of his son. Pray tell me all in detail." Vaishampayan said, "Hearing of Karan's death which was beyond belief, dreadful and stupefying, like the motion of mount Meru, or the undue unconsciousness of Parashuram, or the defeat of Indra the terror

विद्विषां जयकांक्षया । दुर्य्योधनो करोद्वैरं पाण्डुपुत्रैर्महारथैः ॥ १३ ॥ स कथं रथिनां श्रेष्ठः कर्णः पार्थेन संयुगे । निहतः पुरुषव्याघ्रः प्रसह्यासह्यविक्रमः ॥ १४॥ यो नामन्यत वै नित्यमच्युतञ्च धनञ्जयम् । न वृष्णीन्नाहितानन्यान् स्वबाहुबलमाश्रितः ॥ १५ ॥ शार्ङ्गगाण्डीवधन्वानौ सहितावपराजितौ । अहं दिव्याद्रथादेकः पातयिष्यामि संयुगे ॥ १६ ॥ इति यः सततं मन्दमवोचल्लोभमोहितम् । दुर्य्योधनमवाचीनं राज्यकामुकमातुरम् ॥ १७ ॥ योजयत्सर्व काम्बोजा नावंत्यान् केकयैसह । गान्धारान्मद्रकान् मत्स्यांस्त्रिगर्त्तांस्तंगणान् खशान् ॥ १८ ॥ पाञ्चालांश्च विदेहांश्च कुलिन्दान् काशिकोशलान्सुह्मानङ्गांश्चवङ्गांश्च निषादान्पुण्ड्रकीचकान्॥१९॥वत्सान् कलिंगास्तरलानश्मकानृषिकानपि । यो जित्वा समरे वीराश्चक्रे बलिभृतः पुरा ॥ २० ॥ शरव्रातैः सुनिशितैः सुतीक्ष्णैः कङ्कपत्रिभिः । दुर्य्योधनस्य वृद्ध्यर्थं राधेयो रथिनाम्वरः ॥ २१ ॥ सेनागोपश्च

विजय की इच्छासे जिस महाबाहुकी शरण लेकर पाण्डवों से शत्रुताकरी ।१३। वह असह्य पराक्रमी रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तमकर्णयुद्धमें अर्जुनके हाथसे कैसे मरागया । १४ । जिसअहंकारीने अपनेही भुजबल से श्रीकृष्ण अर्जुन और अन्य किसी क्षत्री को ध्यान नहींकिया अर्थात् किसी को कुछमाल नहींजाना । १५ । अर्थात् यही कहताथा कि मैं अकेलाही युद्धमें उन अजेय शार्ङ्गधन्वा और गांडीव धनुषधारीको एक साथही उनको दिव्य रथसेगिराऊंगा यह अपनी प्रतिज्ञा उस लोभ से विस्मर्णचिन्तासेअधोमुख राज्य के लोभी रोगग्रस्त दुर्य्योधनसे वारम्वार वर्णनकरी ।१७।और उस कर्णने पूर्व्व समय में काम्बोज देशी अवन्तदेशी कैकयदेशी गान्धार मद्रक मत्स्य त्रिगर्त्त तगण खश ।१८। पाञ्चाल विदेह काशी कोशल सुम्हल अंग वंग निषाद पुण्ड्र कीचक । १९ । वत्स, कलिंग, तरल,अश्मक और ऋषिक देशियों को भी युद्ध में जीतकरवलिभृत अर्थात् कर देनेवाला करदिया।२०। वह रथियों में श्रेष्ठ दिव्य अस्त्रोंकाज्ञाता महातेजस्वी धर्मरूप परम अस्त्रज्ञ अत्यन्त तीक्ष्णधार कंकपक्षसे युक्तबड़ों बाणोंकी वर्षासे दुर्य्योधनकी वृद्धिकेलिये सेनाका रक्षक सूर्य्यका

the Paudavas; how was that best of warriors of matchless prowess slain by Arjun? 14. The proud man, who, by his own prowess, looked down upon Krishn, Arjun and other kshatryas and who said that he would bring down the wielders of Sharang and Gandiv bows from their car, had often repeated his vaunts before Duryodhan, covetous of kingdom, who casts down his head with sorrow like a sick man. Karan had already vanquished and made tributary the kingdoms of Camboj, Avanti, Kaikaya, Gandhar, Madrak, Matsya, Trigart, Tagan, Khash, Panchal, Videu, Kashi, Kosal, Samhal, Ang, Bang, Nishad, Pundra, Kichak, Vats, Kaling, Taral, Ashmak and Rishik. 20. That best of warriors, skilful in the use of celestial weapons, glorious and virtuous, protected Duryodhan's army with

स कथं शत्रुभिः परमास्त्रवित् । घातितः पाण्डवैः शूरैः समरे; बलशालिभिः ॥ २२ ॥ वृषो महेन्द्रो देवेषु वृषः कर्णो नरेष्वपि । तृतीयमन्यं लोकेस्मिन् वृषं नैवानुशुश्रुम ॥ २३॥ उच्चैःश्रवा वरोऽश्वानां राज्ञां वैश्रवणो वरः । वरो महेन्द्रो देवानां कर्णः प्रहरतांवरः ॥ २४ ॥ योजितः पार्थिवैः शूरैः समर्थैर्वीर्य्यशालिभिः । दुर्य्योधनस्य वृद्ध्यर्थं कृतस्ना मुर्वीमथाजयत् ॥ २५ ॥ यं लब्ध्वा मागधोराजा सान्त्वमानार्थं सौहृदैः । अरौत्सीद् पार्थिवं क्षत्रमृते कौरवयादवान् ॥ २६ ॥ तं श्रुत्वा निहतं कर्णं द्वैरथे सव्यसाचिना । शोकार्णवे निमग्नोहं समुद्रे भिन्ननौरिव ॥२७॥ नृषभं निहतं श्रुत्वा द्वैरथे रथिनां वरम् । शोकार्णवे निमग्नोहमप्लवः सागरे यथा ॥२८॥ ईदृशैर्यद्यहं दुःखैर्न विनश्यामि,सञ्जय । वज्रादृढतरं मन्ये हृदयं मम दुर्भिदम् ॥ २९ ॥ ज्ञातिसम्बन्धिमित्राणामिमं श्रुत्वा परा

पुत्र कर्ण कैसे२ युद्धों को करके पाडव अर्जुन के हाथसे मरागया । २२ । और जैसे कि देवताओंमें इन्द्र वर्षा करनेवाला है उसीप्रकार कर्ण भी धनकी वृष्टिसे मनुष्यों पर वर्षा करनेवालाहै इनदोनों के सिवायलोकमें किसी तीसरे वर्षा करनेवालेको नहीं सुनेतेहैं जैसे घोड़ोंमें उच्चैश्रवा. राजाओंमेंकुबेर । २४। देवताओं में महाइन्द्र उत्तम है इसीप्रकार शस्त्र प्रहार करने में पृथ्वीपर कर्ण सब से उत्तम है ऐसेसमर्थ पराक्रमसे शोभित शूरवीर राजाओं से अजयकर्ण ने दुर्य्योधनकी वृद्धिकेलिये संपूर्णपृथ्वीको विजय किया।२६।और जिसको प्राप्तहोकर मगधके राजा जरासन्धने यादव और कौरवों के सिवाय अन्य सब राजाओं कोआधीनकरलिया उसकर्णको द्वैरथ युद्धमें अर्जुनके हाथसेमराहुआ सुनकर मैं शोकसमुद्रमें ऐसे डूबरहाहुं जैसे कि समुद्रमें टूटी नौका डूबती है । २७ । उस वृष्टि करनेवाले और रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णको द्वैरथ युद्धमें मराहुआ सुनकर मैं शोकसमुद्रमें ऐसेडूबनेको होरहाहूं जैसे कि समुद्रमें बिना नौकाके मनुष्यहोताहै।२८। हेसंजय जो मैं ऐसे २ दुःखोंसेभी नहींमरूंगा तोनिश्चय करके मेराहृदय वज्रसे भी कठोर शोकचिन्तासे फटजाने के योग्यहै । २९ । और हे सूत संजय ज्ञातवाले

hundreds of arrows fitted with Kank feathers; how was Karan the son of Surya slain in battle by Arjun? He showered wealth on men as Indra pours forth rain. Except Karan and Indra, we hear of no third party's shower. Karan is the best of warriors, as Uchaishrava is the best of horses, Kuver, the best of kings and Indra, the best of gods. Karan the best of warriors, invincible by warrior princes, conquered the whole land for the sake of Duryodhan. 25. With his help Jarasandh the king of Magadh conquered all the kings, with the exception of the Kauravas and the Yadavas. Hearing that Karan was slain by Arjun, I sink in the ocean of grief like a broken boat. Hearing the death of generous Karan in a duel, I am plunged in sorrow like a man without a boat in the midst of the sea. My heart

भयम । को मद्न्यः पुमान् लोके न जह्यात् सूतजीवितम् ॥ ३० ॥ विषमग्नि प्रपातं वा पर्वताग्रादहं वृणे । न हि शक्यामि दुःखानि सोढुं कष्टानि सञ्जय ॥३१॥

इति श्री कर्णपर्वणि सञ्जयवाक्ये अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

सञ्जय उवाच । श्रिया कुलेन यशसा तपसा च श्रुतेनच । त्वामद्य सन्तो मन्यन्ते ययातिमिव नाहुषम् ॥१॥ श्रुते महर्षिप्रतिमः कृतकृत्योसि पार्थिव । पर्यवस्थापयात्मानं मा विषादे मनः कृथाः ॥ २ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । दैवमेव परं मन्ये पौरुषन्तु निरर्थकम्।

और मित्रोंको इस पराजयको सुनकर मेरेसिवाय कौनसा पुरुषहै जो प्राणों को नहीं त्यागकरे।३०।मैं विषखाना अग्निमें प्रवेशहोना वा पर्वतके ऊपरसे गिरना चाहताहूं परन्तु मैं इन कठिन दुःखों के सहनेकोसमर्थ नहीं होसक्ता । ३१ ।

अध्याय ९ ॥

संजय बोले कि अब सन्तलोग तुमको लक्ष्मीसे कुलसे यशसे तपसे और शास्त्रज्ञता से नहुषकेपुत्र ययातिके समान मानते हैं ।१। हे राजा शास्त्रमें तुम महर्षि के समान कृतकृत्यहो आप अपनेको सावधान करो और व्याकुलताको त्यागो । २ । धृतराष्ट्र बोले मैं दैवको श्रेष्ठ मानताहूं निरर्थक उपायकरने को धिक्कारहै जहां कि शालवृक्षके

is surely harder than vajra as it does not break under such grief. Hearing the defeat of friends and kinsmen, O Sanjaya, who except me will remain alive? I wish to commit suicide by taking poison, entering fire, or falling down from a mountain cliff, for I cannot bear this sorrow." 31.

CHAPTER IX

Sanjaya said, "Saints compare you with Yayati the son of Nahush in wealth, family, fame, asceticism and learning. You are blessed with religous learning like a great rishi. Control yourself, and set aside your grief." Dhritrashtra said, "I hold destiny to be above all and exertion as useless, as valiant Karan, huge as a *sal* tree has been slain in battle. Having slain the armies of the Pandavas and Panchals, he filled all the directions with his arrows. He

यत्र शालप्रतीकाशः कर्णोवधयत संयुगे ॥ ३ ॥ हत्वा युधिष्ठिरानीकं पाञ्चालानां रथव्रजान् । प्रताप्य शरवर्षेण दिशःसर्वा महारथः ॥ ४॥ ॥मोहयित्वा रणे पार्थान् वज्रहस्त इवासरान् । कथं स निहतःशेते वातरुग्ण इव द्रुमः ॥ ५ ॥ शोकस्यान्तं न पश्यामि समुद्रस्येव विप्लुतः । चिन्ता मे वर्द्धते तीव्र मुमूर्षा चापि जायते ॥ ६ ॥ कर्णस्य निधनं श्रुत्वा विजयं फाल्गुनस्य च । अश्रद्धेयमहं मन्ये वधं कर्णस्य सञ्जय ॥ ७ ॥ वज्रसारमयं नूनं हृदयं सुदृढं मम । यत् श्रुत्वा निहतं कर्ण न दीर्य्यति सहस्रधा ॥ ८ ॥ आयुर्नूनं सुदीर्घं मे विहितं दैवतैः पुरा । यत्र कर्णं हतं श्रुत्वा जीवाम्यद्य सुदुःखितः ॥ ९ ॥ धिग्जीवितमिदञ्चैव सुहृद्धीनस्य सञ्जय । अद्य चाहं दशामेतां गतः सञ्जय गर्हिताम ॥ १० ॥ कृपणं वर्त्तयिष्यामि शोच्यः सर्वस्य मन्दधीः । अहमेव पुरा भूत्वा सर्वलोकस्य सत्कृतः ॥११॥ परिभूतः कथं सूत परैः शक्ष्यामि जीवितुम । दुःखात् सुदु:ख

समान उन्नत महाबली कर्ण युद्ध में मारागया ।३। वह महारथी युधिष्ठिर की सेना और पाञ्चालोंके रथसमूहों को मारकर और बाणों कीवर्षा से सब दिशाओं को सन्तप्त करताहुआ ।४। जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों को मोहित करता है उसी प्रकार युद्ध में पाण्डवों को मोहित कर के इस प्रकार से मृतक होकर सोता है जैसे कि वायु से टूटाहुआ वृक्ष पृथ्वीपर पड़ा होता है । ५ । मैं शोक समुद्र के अन्त को नहीं देखता हूं मेरी चिन्ता की वृद्धि और मरने की इच्छाभी उत्पन्न होतीहै ।६। हे संजय मैं कर्ण के मरने को और अर्ज्जुनकी विजयको सुनकर कर्ण के मारेजाने को श्रद्धा विश्वाससे अयोग्य जानताहूं ।७। निश्चयकरके मेराहृदय वज्रके समान दुःखसे फटनेवाला है जो पुरुषोत्तम कर्ण को मृतक सुनकर भी नहीं फटता है । ८। पूर्व्वसमय में देवताओं ने मेरी आयु बहुतबड़ी विचारकरीहै इससेतुसे कि कर्णको भी मृतक सुनकर अभी पृथ्वीपर महादुःखी जीवताहुआ वर्त्तमानहूं । ९ । हे संजय मुझ सुहृदजनों से रहित के इस जीवनको धिक्काहै जिससेकि मैंने इस दुर्दशाको पाया ।१०। मैं निर्बुद्धी सबके शोचकेयोग्य होकर दुःखी रहूंगा और पूर्व्वकाल में सबलोक में मान्य होकर ।११। शत्रुओं से तुच्छ कियाहुआ मैंकैसे जीवनको समर्थहुंगा हे सूत संजय मैंने भीष्म

stupefied the Paudavas in battle as Indra the wielder of vajra does the asurs: yet he lies dead on the ground like a tree struck down by the wind. 5. I see no bound to the ocean of my grief; the excess of sorrow prompts me to die. I do not believe in the death of Karan and the conquest of Arjun. Surely my heart is hard like vajra as it does not break on hearing the news of Karan's death Fie on my living without friends as I have fallen down very · ! - 10. A fool and distressed, I am worthy of pity by all men. Bei respected by all the world, how shall I be able to live any longer a life of contempt Already suffering sorrow at the death of Bhisl

व्यसनं प्राप्तवानस्मि सञ्जय । १२ ॥ भीष्मद्रोणवधेनैव कर्णस्य च महात्मनः । नात्र शेषं प्रपश्यामि सूतपुत्रे हते युधि ॥१३॥ स हि पारं महानासीत् पुत्राणां मम सञ्जय । युद्धे विनिहतः शूरो विसृजन् सायकान् बहून् को हि मे जीविते नार्थस्तमृते पुरुषर्षभम् ॥१४॥ रथाद्धाधिरथिर्नून व्यपतत्सायकार्दितः पर्वतस्येव शिखरं वज्रपाताद्विदारितम् ॥१५॥ स शेते पृथिवीं नूनं शोभयन्रुधिरोक्षितः । मातङ्ग इव मत्तेन द्विपेन्द्रेण निपातितः ॥ १६ ॥ यद्बलं धार्त्तराष्ट्राणां पाण्डवानां यतो भयम् । सोऽर्ज्जुनेन हतः कर्णः प्रतिमानं धनुष्मताम् ॥ १७ ॥ स हि वीरो महेष्वासो मित्राणां मे भयङ्करः । शेते विनिहतो वीरो देवेन्द्रेण इवाचलः ॥ १८ ॥ पंगोरिवाध्वगमनं दरिद्रस्येव कामितम् । दुर्योधनस्य चाकूतं तृषितस्येव विप्रुषः ॥ १९ ॥ अन्यथा चिन्तितं कार्य्यमन्यथा तत्तु

द्रोणाचार्य्य के मरण से उत्पन्न होनेवाले शोक से महा दुःखदायी आपत्तिको पायाहै । १२ । युद्धमें कर्ण के मरनेपर भीष्म द्रोणाचार्य और महात्मा कर्ण के मरनेसे मैं शेष बचीहुई सेनाको नहीं देखताहूं । १३ । क्योंकि वह शूरवीर कर्ण मेरे पुत्रोंको युद्धरूपी नदी में नौकारूप होकर वीरोंकी लड़ाई में अनेक शायकों को बरसाताहुआ मारागया ।१४। उस पुरुषोत्तमके विना मेरा जीवन वृथा है निश्चय करके शायकों से पीड़ित होकर अतिरथी कर्ण रथसे ऐसे गिर पड़ा जैसे कि वज्रके पातसे पर्व्वतका टूटाहुआ शिखर पृथ्वीपर गिरता है । १५ । निश्चय करके वह रुधिर में भराहुआ पृथ्वीको शोभित करके ऐसा सोता है जैसे कि मतवाले हाथीसे गिराहुआ हाथी होता है यही धृतराष्ट्र के पुत्रका बलथा जिस से कि पांडवों को बड़ा भयथा वह धनुषधारियों का ध्वजारूप कर्ण अर्जुन के हाथ से मारागया । १७ । हाय वह धनुषधारी मित्रोंका निर्भय करनेवाला वीर कर्ण मराहुआ ऐसा सोताहै जैसे कि देवताओं के इन्द्रका घात किया हुआ पर्व्वत होता है । १८ । जैसे कि पंगु मनुष्यका मार्ग चलना और कंगाल निर्द्धनकी धनकी इच्छा करना वृथाहै इसीप्रकार दुर्योधन के मनकी इच्छा कठिनतासे प्राप्तहोने के योग्यहै । १९ । सोचा कुछ जाता है होता कुछ है दैव और काल उल्लंघनके

and Drona, I am fallen into fresh trouble. I believe that the rest of the warriors cannot live when Bhishm, Drona and Karan are slain. Brave Karan was like a boat to carry my sons through the ocean of war; but sending forth a shower of arrows, he has been slain. My life is useless without him. Pierced by arrows he lies down dead like a cliff struck down by lightning. 15. Surely, with his blood stained body, he looks glorious in his sleep like an elephant struck down by another. He was the strength of the sons of Dhritrashtra and the terror of the Pandavas. That prince of warriors has been slain in battle by Arjun. Alas! that great archer, Karan who freed his friends from fear, lies dead on the ground like a cliff struck down by vajra.

मत् कार्मुकं शितैः ॥४४॥ यश्च नागायुतप्राणं वज्ररंहसमच्युतम् । विरथं सहसा कृत्वा भीमसेनमथाहसत् ॥ ४५ ॥ सहदेवञ्च निर्जित्य शरैः सन्नतपर्वभिः । कृपया विरथं कृत्वा नाहमद्धर्मचिन्तया ॥ ४६ ॥ यश्च मायासहस्राणि विकुर्वाणं जयैषिणम् । घटोत्कचं राक्षसेन्द्रं शक्रशक्त्या निजघ्निवान् ॥ ४७ ॥ एतांश्च दिवसान् यस्य युद्धे भीतो धनञ्जयः । नागमद्द्वैरथं वीरः स कथं निहतो रणे ॥ ४८॥ रथभङ्गो न चेतस्य धनुर्वा न व्यशीर्य्यत । न चे दस्त्राणि निर्णेशुः स कथं निहतः परैः ॥ ४९ ॥ को हि शक्तो रणे कर्णं विधुन्वानं महद्धनु । विमुञ्चन्तं शरान् घोरान् दिव्यान्यस्त्राणि चाहवे । जेतुं पुरुषशार्दूलं शार्दूलमिव वेगिनं ॥५०॥ ध्रुवं तस्य धनुश्छिन्नं रथो वापि महीं गतः । अस्त्राणि वा प्रनष्टानि यथा शंससि मे हतम् । न ह्यन्यदपि पश्यामि कारणं तस्य नाशने ॥ ५१ ॥

किया और श्रीपरशुरामजी से महाघोर ब्रह्मास्त्रको सीखा और जिस महाबाहु ने द्रोणाचार्य्य आदिको मुख मुड़ाहुआ बाणों से पीड़ित देखकर अभिमन्यु के धनुषको अपने तीक्ष्णबाणोंसे काटा ।४४। और जिसप्रकार दशहजार हाथी के समानबली वज्रके समान वेगवान् दुराधर्ष भीमसेनको अकस्मात रथसे विरथकरके ।४५। हँसताहुआ गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से सहदेव को विजयकर धर्म और कृपालुताके ध्यान. से विरथकरके नहीं मारा । ४६ । जिसने विजयाभिलाषी महा मायावी राक्षसोंके राजा घटोत्कचको इन्द्रकी शक्ती से मारा। ४७ । इतने दिनतक उसने यमभीत अर्जुनने युद्धमें जिसके द्वैरथ संग्रामको प्राप्त नहीं किया वह वीरपुरुष कैसे युद्ध मारागया ।४८। जिसका न रथटूटा न धनुषटूटा और. अस्त्रोंकाभी नाश न हुआ वह कर्ण शत्रुओं के हाथसे कैसे मारागया। ४९ । उस बड़े धनुषके चढ़ानेवाले घोरबाण और दिव्य अस्त्रोंको युद्धमें छोड़नेवाले सिंहके समान वेग वान् पुरुषोत्तम कर्ण के विजय करनेका कौन समर्थ है ' ५० । उसका धनुष अवश्य टूटा वा पृथ्वीपर गिरा अथवा शस्त्रों का नाश होगयाथा जिससे कि उसको मराहुआ मुझसे वर्णन करता है उसके नाश होने से मैं अन्य सबको भी नाशमान देखता हूं । ५१ । उसका प्रणथा कि जबतक अर्जुनको नहीं मारलूंगा

battle, cut down the bow of Abhimanyu with his arrows, who destroyed the car of Bhim the possessor of the strength of ten thousand elephants, who having conquered and made Sahadev deprived of his car, did not slay him out of mercy, who slew Ghatotkach the possessor of a thousand tricks with the spear of Indra and whom Arjun durst not meet in duel—how was it that he was slain in battle? 48. How was Karan slain in battle when his car was not broken and his weapons not exhausted? Who could conquer Karan the possessor of huge bow, dreadful arrows and divine weapons, and full of prowess like a lion? 50. Surely his bow broke, or the car was upset or his weapons were exhausted, since you say that he is slain. Others are not safe,

न हांम फाल्गुनं यावत् तावत् पादौ न धावये । इति यस्य महद्घोरं व्रतमासीन्महात्मनः ॥ ५२ ॥ यस्य भीतो वने निद्रां धर्मराजो युधिष्ठिरः । त्रयोदशसमा नित्यं नालभत् पुरुषर्षभः ॥ ५३ ॥ यस्य वीर्य्यवतो वीर्य्यं समाश्रित्य महात्मनः । मम पुत्रः सभां भार्य्यां पाण्डूनां नीतवान् बलात् ॥ ५४ ॥ तत्रापि च सभामध्ये पाण्डवानाञ्च पश्यतां दासभार्य्येति पाञ्चालीमब्रवीत् कुरुसन्निधौ ॥ ५५ ॥ न सन्ति पतयः कृष्णे सर्वे षण्ढतिलैः समाः । उपतिष्ठस्व भर्त्तारमन्यं वा वरवर्णिनी ॥ ५६ ॥ इत्येवं य पुमान् वाचो रूक्षाः संश्रावयत्तदा । सभायां सूतजः कृष्णां स कथं निहतः परैः ॥ ५७ ॥ यश्च गाण्डीवमुक्तानां स्पर्शमुग्रमचिंतयन् । अपतिर्ह्यसि कृष्णेति ब्रुवन् पार्थानवैक्षत ॥ ५८ ॥ यस्य नासीद्भयं पार्थैः सपुत्रैः सजनार्दनैः । तस्य नाहं वधं मन्ये देवैरपि सवासवैः ॥ ५९ ॥ प्रतीपमभिधावद्भिः किं पुनस्तात पाण्डवैः ॥ ६० ॥ न हि ज्यां संस्पृशानस्य तलत्रे

तवतक नतो अपने चरणों को धाऊंगा न युद्धमें पैदलहोकर चलूंगा। जिसमहात्मा का यह महाघोर प्रणथा । ५२ । कि जिसके भयसे भयभीत धर्मराज पुरुषोत्तम युधिष्ठिर ने वनमें तेरहवर्षतक निद्रा नहीं आई । ५३ । जिस पराक्रमी महात्माके पराक्रम में मेरेपुत्रने आश्रयलेकर पांडवों की स्त्री द्रौपदी को बड़े बलसे सभामें बुलाया । ५४ । वहांभी सभाके मध्य में पांडवोंके देखते हुये कौरवों के सम्मुख द्रौपदी से बोला हे दासकी भार्या कृष्णा तेरे पति नहीं हैं किन्तु सबके सब षंढ तिल अर्थात् थोथे तिलके समान हैं हे सुन्दरी तू दूसरेपति के पास वर्तमानहो । ५६ । जिस कर्णने सभाके मध्य में ऐसे असभ्य और रूखे दुर्वचन द्रौपदी से कहे वह शत्रुओंके हाथसे कैसे मारागया ।५७। जिसने गांडीव धनुषसे छूटेहुये बाणों के उग्रस्पर्शकी चिन्तारहित द्रौपदी से यहकहतेहुये कि हेकृष्णा तू विनापतिकी है जिस कर्ण ने पांडवों को देखा और अपने भुजाका आश्रयलेकर जिसको श्रीकृष्ण समेत सपुत्र पांडवों से जराभी भयनहींहुआ हे संजय उसका मारना देवताओं समेत इन्द्रसेभी कठिनथा । ५९ । हे तात उसको सम्मुख दौड़नेवाले पाण्डव लोग कैसे मारसक्ते हैं । ६० । धनुषज्याके स्पर्श करनेवाले अथवा हस्तत्राणकेद्वारा पकड़नेवाले

when he is dead. He had made a dreadful vow that he would not wash his feet without slaying Arjun. Yudhisthir the just could not sleep *soundly for thirteen years*. *Relying on his strength*, *my son* had dragged Draupadi, the wife to the Pandavas, in the court, and in the presence of the Pandavas, he had said, "Krishna, thou art the wife of slaves. Thy husbands are no more. They are like husks of seeds. Thou must select another husband. How was Karan, who said such harsh and impolite words, slain by the enemies? Karan who was not in the least afraid of the arrows shot from the Gandiv bow, who told Krishna that her husbands were no more, who looked fearlessly upon Shri Krishn and the Paudavas and their sons, was difficult be slain even by gods; how could the Pandavas slay him? 60.

चापि गृह्णतः । पुमानाधिरथेः स्थातुं कश्चित् प्रमुखतोऽर्हति ॥ ६१ ॥ अपि स्यान्मेदिनी हीना सोमसूर्य्यप्रभांशुभिः । न वधः पुरुषेन्द्रस्य संयुगेष्वपलायिनः ॥ ६२ ॥ येन मन्दः सहायेन भ्राता दुःशासनेन च । वासुदेवस्य दुर्बुद्धिः प्रत्याख्यानमरोचय ॥ ६३ ॥ स नूनं वृषभस्कन्धं कर्णं दृष्ट्वा निपातितम् । दुःशासनञ्च निहतं मन्ये शोचति पुत्रकः ॥ ६४ ॥ हतं वैकर्त्तनं दृष्ट्वा द्वैरथे सव्यसाचिना । जयतः पाण्डवांश्चापि किंस्विद्दुर्योधनोऽब्रवीत् ॥ ६५ ॥ दुर्मर्षणं हतं दृष्ट्वा वृषसेनञ्च संयुगे । प्रभग्नञ्च बलं दृष्ट्वा वध्यमानं महारथैः ॥ ६६ ॥ पराङ्मुखांश्च राज्ञस्तु पलायनपरायणान् । विद्रुतान् रथिनो दृष्ट्वा मन्ये शोचति पुत्रकः ॥ ६७ ॥ अनेयश्चाभिमानी च दुर्बुद्धिरजितेन्द्रियः । हतोत्साहं बलं दृष्ट्वा किंस्विद्दुर्योधनोऽब्रवीत् ॥ ६८ ॥ स्वयं वैरं महत् कृत्वा वार्य्यमाणः सुहृद्गणैः । प्रधने हतभूयिष्ठः किंस्विद्दुर्योधनोऽब्रवीत् ॥ ६९ ॥ भ्रातरं निहतं

कोई धनुषधारी मनुष्य कर्ण के सम्मुख होनेको समर्थ नहीं है ।६१। पृथ्वी चन्द्र और सूर्य्य चाहो अपनी किरणों से रहितहोजायँ परन्तु युद्धमें मुख न मोड़ने वाले पुरुषोत्तमका मरण नहीं है । ६२ । जिसके कारण मारब्धहीन दुर्बुद्धी दुर्योधनने सदैव भाई दुश्शासन समेत वासुदेवजी के उत्तरहीको अंगीकार नहीं किया ।६३। मैं यह जानताहूं कि यह मेरा पुत्र दुर्योधन बड़े दोषयुक्त कर्णको पराजय और दुश्शासनको मराहुआ देखकर सोचको करताहै । ६४ । हे संजय द्वैरथ युद्धमें अर्जुन के हाथसे कर्णको मराहुआ सुनकर और विजय करनेवाले पाण्डवों को देखकर दुर्योधनने क्या कहा ।६५। वा दुर्मर्षण और वृषसेनको युद्धमें मृतकदेखकर और अपनी सेनाको महारथियोंसे घायल होकर भागतीहुई देखकर और भागनेकी इच्छावान मुखमोड़नेवाले राजाओं और रथियों को घायल देखकर शोचकरता है । ६७ । अथवा दुर्योधनने उस शासना के अयोग्यपालायमान इन्द्रियों वशीभूत सेना को उत्साह से रहित देखकर क्या कहा ।६८।और जिनकेबहुत मनुष्य मारेगये उन राजाओं से घिरेहुये आप शत्रुता करनेवाले दुर्योधनने क्याकहा । ६९ । और युद्ध में रुधिर पीनेवाले भीमसेनकेहाथसे मरेहुये भाईदुश्शासन को देखकर क्याकहा

archer could oppose Karan, so long as he had grasp of the *bowstring* and had hand-guards on his hands. The earth, the moon *and the* Sun might lose their splendour, but none could slay unflinching *Karan* in battle. Unlucky and unwise Duryodhan with his *brother* Dushasan, relying upon the prowess of Karan, paid no heed *to the advice* of Krishn. Seeing Karan's fall and Dushasan's death, *my* son, foolish Duryodhan is no doubt plunged in grief. *What did* Duryodhan say at the fall of Karan and the victory of *all the Pandavas!* 65. Is he sorry for the death of Durmarshan and Vrish*sen, his* warriors of the army wounded and flying, the princely *warriors turning* back and wounded? What did Duryodhan say when *he saw his armies* rout-

न हन्मि फाल्गुनं यावत् तावत् पादौ न धावये। इति यस्य महद्घोरं व्रतमासीन्महात्मनः ॥ ५२॥ यस्य भीतो वने निद्रां धर्मराजो युधिष्ठिरः। त्रयोदशसमा नित्यं नाल भत् पुरुषर्षभः ॥ ५३ ॥ यस्य वीर्य्यवतो वीर्यं समाश्रित्य महात्मनः। मम पुत्रः सभां भार्य्यां पाण्डूनां नीतवान् बलात् ॥ ५४ ॥ तत्रापि च सभामध्ये पाण्डवानाञ्च पश्यतां दासभार्य्येति पाञ्चालीमब्रवीत् कुरुसन्निधौ ॥ ५५ ॥ न सन्ति पतयः कृष्णे सर्वे षण्ढ तिलैः समाः। उपतिष्ठस्व भर्त्तारमन्यं वा वरवर्णिनी ॥ ५६ ॥ इत्येवं यः पुमान् वाचो रूक्षाः संश्रावयन्‌ सभायां सूतजः कृष्णां स कथं निहतः परैः ॥ ५७ ॥ यस्य गाण्डीव मुक्तानां स्पर्शमुग्रमचिंतयन् । अपतिर्ह्यसि कृष्णेति ब्रुवन् पार्थानवैक्षत ॥ ५८ ॥ यस्य नासीद्भयं पार्थैः सपुत्रैः सजनार्दनैः। तस्य नाहं वधं मन्ये देवैरपि सवासवैः ॥ ५९ ॥ प्रतीपमभिधावद्भिः किं पुनस्तात पाण्डवैः ॥ ६० ॥ न हि ज्यां संस्पृशानस्य तलत्रे

तवतक नतो अपने चरणों को धोऊंगा न युद्धमें पैदलहोकर चलूंगा। जिसमहात्मा का यह महाघोर प्रणथा । ५२ । कि जिसके भयसे भयभीत धर्मराज पुरुषोत्तम युधिष्ठिर ने वनमें तेरहवर्षतक निद्रा नहीं आई । ५३ । जिस पराक्रमी महात्माके पराक्रम में मेरेपुत्रने आश्रयलेकर पांडवों की स्त्री द्रौपदी को बड़े बलसे सभामें बुलाया । ५४ । वहांभी सभाके मध्य में पांडवोंके देखते हुये कौरवों के सम्मुख द्रौपदी से बोला हे दासकी भार्या कृष्णा तेरे पति नहीं हैं किन्तु सबके सब षंड तिल अर्थात् थोथे तिलके समान हैं हे सुन्दरी तू दूसरेपति के पास वर्त्तमानहो । ५६ । जिस कर्णने सभाके मध्य में ऐसे असभ्य और रूखे दुर्वचन द्रौपदी से कहे वह शत्रुओंके हाथसे कैसे मारागया ।५७। जिसने गांडीव धनुषसे छूटेहुये बाणों के उदगस्पर्शकी चिन्तारहित द्रौपदी से यहकहतेहुये कि हेकृष्णा तू विनापतिकी है जिस कर्ण ने पांडवों को देखा और अपने भुजाका आश्रयलेकर जिसको श्रीकृष्णा समेत सपुत्र पांडवों से जराभी भयनहींहुआ हे संजय उसका मारना देवताओं समेत इन्द्रसेभी कठिनथा । ५९ । हे तात उसको सम्मुख दौड़नेवाले पाण्डव लोग कैसे मारसक्ते हैं । ६० । धनुषज्याके स्पर्श करनेवाले अथवा हस्तत्राणकेद्वारा पकड़नेवाले

when he is dead. He had made a dreadful vow that he would not wash his feet without slaying Arjun. Yudhisthir the just could not sleep soundly for thirteen years. Relying on his strength, my son had dragged Draupadi, the wife to the Pandavas, in the court, and in the presence of the Pandavas, he had said, "Krishna, thou art the wife of slaves. Thy husbands are no more. They are like husks of seeds. Thou must select another husband. How was Karan, who said such harsh and impolite words, slain by the enemies? Karan who was not in the least afraid of the arrows shot from the Gandiv bow, who told Krishna that her husbands were no more, who looked fearlessly upon Shri Krishn and the Pandavas and their sons, was difficult to be slain even by gods; how could the Pandavas slay him? 60. No

चापि गृह्णतः। पुमानाधरथेः स्थातुं कश्चित् प्रमुखतोऽर्हति ॥ ६१॥ अपि स्यान्मेदिनी हीना सोमसूर्य्यप्रभांशुभिः। न वधः पुरुषेन्द्रस्य संयुगेष्वपलायिनः॥ ६२॥ येन मन्दः सहायेन भ्रात्रा दुःशासनेन च। वासुदेवस्य दुर्बुद्धिः प्रत्याख्यातमरोचत॥ ६३॥ स नूनं वृषभस्कन्धं कर्णं दृष्ट्वा निपातितम्। दुःशासनञ्च निहतं मन्ये शोचति पुत्रकः॥ ६४॥ हतं वैकर्त्तनं दृष्ट्वा द्वैरथे सव्यसाचिना। जयतः पाण्डवांश्चापि किंस्विद्दुर्योधनोऽब्रवीत्॥ ६५॥ दुर्मर्षणं हतं दृष्ट्वा वृषसेनञ्च संयुगे। प्रभग्नञ्च बलं दृष्ट्वा वध्यमानं महारथैः॥ ६६॥ पराङ्मुखांश्च राजस्तु पलायनपरायणान्। विद्रुतान् रथिनो दृष्ट्वा मन्ये शोचति पुत्रकः॥ ६७॥ अनेयश्चाभिमानी च दुर्बुद्धिरजितेन्द्रियः। हतोत्साहं बलं दृष्ट्वा किंस्विद्दुर्योधनोऽब्रवीत्॥ ६८॥ स्वयं वैरं महत् कृत्वा वार्य्यमाणः सुहृज्जनैः। प्रधने हतभूयिष्ठः किंस्विद्दुर्योधनोऽब्रवीत्॥ ६९॥ भ्रातरं निहतं

कोई धनुषधारी मनुष्य कर्ण के सम्मुख होनेको समर्थ नहीं है।६१। पृथ्वी चन्द्र और सूर्य चाहो अपनी किरणों से रहितहोजायँ परन्तु युद्धमें मुख न मोड़ने वाले पुरुषोत्तमका मरण नहीं है। ६२। जिसके कारण भारब्धहीन दुर्बुद्धी दुर्योधनने सदैव भाई दुश्शासन समेत वासुदेवजी के उत्तरहीको अंगीकार नहीं किया।६३। मैं यह जानताहूं कि वह मेरा पुत्र दुर्योधन बड़े दोषयुक्त कर्णको पराजय और दुश्शासनको मराहुआ देखकर सोचको करताहै। ६४। हे संजय द्वैरथ युद्धमें अर्जुन के हाथसे कर्णको मराहुआ सुनकर और विजय करनेवाले पाण्डवों को देखकर दुर्योधनने क्या कहा।६५। वा दुर्मर्षण और वृषसेनको युद्धमें मृतकदेखकर और अपनी सेनाको महारथियोंसे घायल होकर भागतीहुई देखकर और भागनेकी इच्छावान मुखमोड़नेवाले राजाओं और रथियों को घायल देखकर शोचकरता है। ६७। अथवा दुर्योधनने उस शासना के अयोग्यपालायमान इन्द्रियों वशीभूत सेना को उत्साह से रहित देखकर क्या कहा।६८।और जिनकेबहुत मनुष्य मारेगये उन राजाओं से घिरेहुये आप शत्रुता करनेवाले दुर्योधनने क्याकहा। ६९। और युद्ध में रुधिर पीनेवाले भीमसेनकेहाथसे मरेहुये भाईदुश्शासन को देखकर क्याकहा

archer could oppose Karan, so long as he had grasp of the bowstring and had hand-guards on his hands. The earth, the moon and the Sun might lose their splendour, but none could slay unflinching Karan in battle. Unlucky and unwise **Duryodhan** with his brother Dushasan, relying upon the prowess of Karan, paid no heed to the advice of Krishn. Seeing Karan's fall and Dushasan's death, my son, foolish Duryodhan is no doubt plunged in grief. What did **Duryodhan** say at the fall of Karan and the victory of all the Pandavas? 65. Is he sorry for the death of Durmarshan and Vrishasen, his warriors of the army wounded and flying, the princely warriors turning back and wounded? What did Duryodhan say when he saw his armies rout-

दृष्ट्वा भीमसेनेन संयुगे रुधिरे पीयमाने च किंस्विद् दुर्योधनोऽब्रवीत् ॥ ७० ॥ सह गान्धारराजेन सभायां यदभाषत । कर्णोऽर्जुनं रणे हन्ता हते तस्मिन् किमब्रवीत् । द्यूतं कृत्वा पुरा हृष्टो वञ्चयित्वा च पाण्डवम् । शकुनिः सौबलस्तात हते कर्णे किमब्रवीत् ॥ ७२ ॥ कृतवर्मा महेष्वासः सात्वतानां महारथः । हतं वैकर्तनं दृष्ट्वा हार्दिक्यः किमभाषत ॥ ७३ ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या यस्य शिक्षामुपासते । धनुर्वेदं चिकीर्षन्तो द्रोणपुत्रस्य धीमतः ॥ ७४ ॥ युवा रूपेण सम्पन्नो दर्शनीयो महायशाः । अश्वत्थामा हते कर्णे किमभाषत सञ्जय ॥ ७५ ॥ आचार्यो यो धनुर्वेदे गौतमो रथसत्तमः । कृपः शारद्वतस्तात हते कर्णे किमब्रवीत् ॥ ७६ ॥ मद्रराजो महेष्वासः शल्यः समितिशोभनः । दृष्ट्वा विनिहतं कर्णं सारथ्ये रथिनांवरः ॥ ७७ ॥ किमभाषत सौवीरो मद्राणामधिपो बली । दृष्ट्वा विनिहतं सर्वे योधा वा रणदुर्जयाः ॥ ७८ ॥ ये च केचन राजानः पृथिव्यां

। ७० । और सभा में जो राजा गान्धारके सम्मुख कहाथा कि कर्ण युद्धमें अर्जुन को अवश्य मारेगा उस कर्णके मरनेपर क्या कहा । ७१ । पूर्वसमयमें सौबलके पुत्र शकुनीने द्यूतरचकर पाण्डवोंको ठगकर कर्णके मरनेपर क्या कहा । ७२ । यादवों में महारथी हार्दिक्यकेपुत्र बड़े धनुषधारी कृतवर्माने कर्णको मृतक देखकर क्या कहा । ७३ । क्षत्रिय वैश्य धनुर्वेद के जाननेके आकांक्षी जिस बुद्धिमान अश्वत्थामा की शिक्षाको प्राप्तकरते हैं उस बड़े प्रतापी यशस्वी तरुण वयवाले धनुर्द्धारी अश्वत्थामा ने कर्ण के मरनेपर क्या कहा । ७५ । जो गौतमकेपुत्र महाधनुर्द्धारी धनुर्वेद के आचार्य कृपाचार्य हैं हे तात उन्होंने कर्ण के मरनेपर क्या कहा । ७६ । और रथियों में श्रेष्ठ मद्र देशाधिपति पराक्रमी युद्धमें शोभायमान राजा शल्यने अपने सारथीपने में कर्णको मृतक देखकर क्याकहा । ७७ । इनके सिवाय और सब दुराधर्ष धनुषधारी राजाओं ने युद्ध में कर्णको मरा देखकर क्या कहा । ७८

ed and losing heart? What did Duryodhan say, when he was surrounded by kings without their armies? What did he say, when Bhim slew Dushasan and sipped his blood? 70. What did he say at the fall of Karan who boasted in the court that, he was sure to slay Arjun? What did Shakuni who cheated the Pandavas of their wealth, say at the fall of Karan? What did Kritvarma, the great Yadav warrior, say at the fall of Karan? What did glorious, famous and youthful archer Ashwathama who teaches archery to Brahmans, Kshatryas and Vaishyas, say at the fall of Karan? 75. What did Kripacharya, the teacher of archery, say at the death of Karan? What did Shalya the king of Madra, the best of warriors, say at the death of Karan? What did the other great warriors, besides these, and the princes who have come to fight, say at the fall of Karan, Sanjaya? Who became the leaders of the army after the fall of K

यादृशमागताः । वैकर्तनं हतं दृष्ट्वा कान्यभाषन्त सञ्जय ॥ ७९ ॥ द्रोणे तु निहते वीरे रथयाग्रे नरर्षभे । कं वा मुखमनीकानामासन् सञ्जय भागशः ॥८० ॥ मद्रराजः कथं शल्यो नियुक्तो रथिनांवरः । वैकर्त्तनस्य सारथ्ये तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ ८१ ॥ केरक्षन् दक्षिणं चक्रं सूतपुत्रस्य युध्यतः । वामं चक्रं ररक्षुर्वा के वा वीरस्य पृष्ठतः ॥ ८२ ॥ के कर्णं न जहुः शूराः के क्षुद्राः प्राद्रवंस्ततः । कथञ्च वः समेतानां हतः कर्णो महारथः ॥ ८३ ॥ पाण्डवाश्च कथं शूराः प्रत्युद्ययुर्महारथाः । सृजन्तः शरवर्षाणि वारिधारा इवाम्बुदाः ॥ ८४ ॥ स च सर्पमुखो दिव्यो महेषुप्रवरस्तदा । व्यर्थः कथं समभवत्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय । ८५ ॥ मामकस्यास्य सैन्यस्य हतोत्सेधस्य सञ्जय । अवशेषं न पश्यामि ककुदे मृदिते सति ॥ ८६ ॥ तौ हि वीरौ महेष्वासौ मदर्थे त्यक्तजीवितौ । भीष्मद्रोणौ हतौ श्रुत्वा कोन्वर्थो जीवितेन मे ॥ ८७ ॥ पुनः पुनर्न मृष्यामि हतं कर्णञ्च पाण्डवैः । यस्य बाह्वोर्बलं तुल्यं कुञ्जराणां

और जो २ इसपृथ्वीके राजा यहां युद्धकरने को आये उन सबोंने कर्णको मराहुआ देखकर कौनसे वचनकहे हेसंजय ।७९। उस रथियोंमें श्रेष्ठ नरोत्तमवीर कर्णके मरनेपर कौन २ सेनाके सेनाध्यक्षहुये ।८०। और रथियोंमें श्रेष्ठ मद्रदेश का राजा शल्य कर्णके सारथ्य कर्ममें कैसे नियत कियागया यह सब वृत्तान्त मुझसे ब्यारे समेत वर्णनकरो ।८१। युद्धकरनेवाले कर्णके दहिनेरथ के चक्रकी किसने रक्षाकरी और बायें चक्रकी और पृष्ठभागकी किस ने रक्षाकरी । ८२ । किसने कर्ण का संग न छोड़ा और कौनसे नीच भागगये और तुम्हारे भाग जाने से महारथी कर्ण कैसे मरागया ८३। और जिसप्रकार बादलों से जल की धारा गिरती हैं उसीप्रकार बाणोंकी वर्षाकरते हुये महारथी शूरवीर पाण्डव कैसे सन्मुखहुये ।८४। हेसंजय उसयुद्धमें बाणोंमें श्रेष्ठ कर्णका वहदिव्य बाण कैसे निष्फलहुआ उसको मुझसे कहो । ८५ । प्रधान पुरुषके न होनेसे मैं अपनी शेष बचीहुई सेनाको नहीं देखताहूं ।८६ । उन वीर धनुर्धारी मेरेलिये जीवनके त्यागने वाले भीष्म और द्रोणाचार्य्यको मृतक देखकर अब मेरा जीवना निरर्थकहै ।८७ ।

80. How was Shalya the king of Madra appointed to be the driver of Karan? Prey tell me all this in detail. Who protected Karan's car on the right and who protected it on the rear? Who stood with and who were the men that fled away from and thus helped in the deathof Karan.83. How did the Pandavas encounter Karan who sent forth his arrows like a shower of rain. How was the divine arrow of Karan made futile? Pray tell me all. 85. I think the rest of the army connot be safe when the leader is slain. Seeing Bhishm and Drona slain for my sake, I have no desire to live any longer. Remembring again and again the death of Karan, I find no peace of mind. He had the strength of ten thousands of elephants. Tell me

शतं शतैः ॥८८॥ द्रोणे हते च यद्वृत्तं कौरवाणां परैः सह । संग्रामे नरवीराणां तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ ८९ ॥ यथा कर्णश्च कौन्तेयैः सह युद्धमयोजयत् । यथा च द्विषतां हन्ता रणे शान्तस्तदुच्यताम् ॥ ९० ॥

इति श्री कर्णपर्वणि धृतराष्ट्रानुतापे नवमोऽध्यायः ९ ॥

सञ्जय उवाच हते द्रोणे महेष्वासे तस्मिन्नहनि भारत । कृते च मोघसङ्कल्पे द्रोणपुत्रे महारथे ॥ १ ॥ द्रवमाणे महाराज कौरवाणां बलार्णवे । व्यूह्य पार्थः स्वकं सैन्यमतिष्ठद्भ्रातृभिः सह ॥ २ ॥ तमवस्थितमाज्ञाय पुत्रस्ते भरतर्षभ । विद्रुतं स्वबलं दृष्ट्वा पौरुषेण न्यवारयत् ॥ ३ ॥ स्वमनीकमवस्थाप्य बाहुवीर्य्यमुपाश्रितः । युद्धा च

मैं पाण्डवों के हाथसे मरेहुये कर्णको बारम्बार स्मरण करके शान्तीको नहींपाताहूं जिसकी कि भुजाओंका बल दशहजार हाथियों के समान था ।८८। हे संजय द्रोणाचार्य्य के मरनेपर युद्धमें शत्रुओं के हाथसे नरोत्तम कौरवोंका जो वृत्तांत हुआ वह मुझसेकहो ।८९। और जैसे कर्ण कुन्तीके पुत्रोंसे युद्ध करने को प्रवृत्त हुआ और युद्धमें जैसे मारागया उसको भी ठीक२कहो । ९० ।

अध्याय १० ॥

सञ्जय बोले हे भरतवंशी महाराज उस बड़े दिन धनुर्धारी द्रोणाचार्य्य के मरने और महारथी अश्वत्थामा के निष्फल संकल्प करने ।१। और कौरवों की समुद्ररूपी सेनाके भागनेपर अर्जुन अपनी सेनाको व्यूहितकरके भाइयोंसमेत युद्धमें नियतहुआ ।२। उस समय आपके पुत्र ने उस सम्मुख नियत होनेवाले अर्जुनको जानकर अपनी भागीहुई सेनाको भागनेसेरोका ।३। और अपने

O Sanjaya, what was the state of the Kauravas after the death of Drona and how Karan was ready to fight against the sons of Kunti and met his death. *Pray tell me all this exactly as it happened."* 90.

CHAPTER X

Sanjaya said, "At the death of Drona that day, the futility of Ashwathama's weapon and the rout of the ocean like army of the Kauravas, Arjun formed his army into battle array and stood with his brothers in the field. Then your son, seeing Arjun ready to fight, checked his army from running away, and fighting a hard fight with

सुचिरं कालं पाण्डवैः सह भारत ॥ ४ ॥ लब्धलक्ष्यैः परैर्हृष्टैर्व्यपवृत्ते दिवाकरे तदा। सन्ध्याकालं समासाद्य प्रत्याहारमकारयत् ॥ ५॥ कृत्वापहारं सैन्यानां प्रविश्य शिबिरं स्वकम्। कुरवः स्वहितं मन्त्रं मन्त्रयाञ्चक्रिरे मिथः ॥ ६ ॥ पर्यङ्केषु परार्ध्येषु स्पर्द्ध्यास्तरणवत्सु च। वरासनेषूपविष्टाः सुखशय्यास्विवामराः ॥ ७ ॥ ततो दुर्योधनो राजा साम्ना परमवल्गुना। तानाभाष्य महेष्वासान् प्राप्तकालमभाषत ॥८॥ दुर्योधन उवाच। मतं मतिमतां श्रेष्ठाः सर्वे प्रब्रूत माचिरम्। एवं गते तु किं कार्यं किञ्च कार्यतरं नृपाः ॥ ९ ॥ सञ्जय उवाच। एवमुक्ते नरेन्द्रेण नरसिंहा युयुत्सवः। चक्रुर्नानाविधाश्चेष्टाः सिंहासनगतास्तदा ॥ १० ॥ तेषां निशाम्येङ्गितानि युद्धे प्राणान् जुहूषताम्। समुद्वीक्ष्य मुखं राज्ञो बालार्कसमवर्चसम् ॥ ११ ॥ आचार्य

भुजबल से सेनाको रोककर पाण्डवों के साथ विलम्बतक युद्ध कर के। ४। संध्यासमय जानकर विजयी और विलम्बकृत विचारनेवाले शत्रुओंसमेत अपनी सेनाको विश्राम कराया। ५। सेनाके विश्रामको कर अपने डेरे में पहुँच कर कौरवों ने परस्परकी निर्विघ्नता का विचार किया।६। बहुमूल्य आस्तर्ण वा शय्या और आसनों पर बैठेहुये उन लोगों ने ऐसे सलाहकरी जैसे कि देवता लोग सुखशय्याओं पर बैठेहुये सलाहों को करतेहैं।७। इसके पीछे राजादुर्योधन प्यार और मृदुभाषणसे उन धनुषधारियों के सुम्मुखहोकरसमयके अनुसार इन बचनों को बोला। ८। कि हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ तुम सब अपनी राय शीघ्रता से कहो विलम्ब मतकरो हे राजालोगों ऐसी दशा में क्या करना उचित है और कौनसी बात अवश्यकरने के योग्यहै।९। संजयनेकहा कि इसप्रकार महा राज दुर्योधन के कहने पर सिंहासनों पर वर्त्तमान युद्धाभिलाषी नरोत्तमों ने अनेक प्रकारकी चेष्टाओं को किया।१०। युद्ध में प्राणों के होमकरने के अभिलाषी उन लोगोंकी चेष्टाओंको देखकर और बालसूर्य के समान तेजस्वी राजा के स्वरूपको देखकर।११।शास्त्रोंके ज्ञाता बुद्धि के स्वामी वार्त्तालापके जानने वाले अश्वत्थामाजी ने कहनाप्रारंभकिया स्वामीकी भक्ति और देशकालका पहिचानना और बल वा नीति से प्रयोजन की सिद्ध करने वाले उपाय

the Pandavas, for a long time, he ordered his army to take rest towards the evening and went to his camp to consult with the Kauravas. 9. Seated on valuable seats, they consulted together like gods. Prince Duryodhan kindly and affectionately addressed the archers, saying, "Give your opinions, princes, without delay. What is to be done under the circumstances?" Sanjaya continued that being thus addressed by Prince Duryodhan, the warriors, desirous of fighting, made movements of various sorts. 10. Seeing the attitudes of those warriors, who were ready to lay down their lives, and seeing the king glorious like the morning sun, Ashwathama the wise speaker

पुत्रो मेधावी वाक्यज्ञो वाक्यमाददे । रागो योगस्तथा दाक्ष्यं नयश्चेत्यर्थसा
धका । उपायाः पण्डितैः प्रोक्तास्ते तु दैवमुपाश्रिताः ॥ १२ ॥ लोकप्रवीरा येऽस्माकं
देवकल्पा महारथाः । नीतिमन्तस्तथा युक्ता दक्षा रक्ताश्च ते हताः ॥ १३ ॥ न त्वेव
कार्यं नैराश्यमस्माभिर्विजयं प्रति । सुनीतैरिह सर्वार्थैर्दैवमप्यनुलोम्यते ॥ १४ ॥ ते वयं
प्रवरं नृणां सर्वैर्गुणैर्युतम् । कर्णमेवाभिषेक्ष्यामः सैन्यापत्येन भारत ॥ १५ ॥ कर्णं सेना
पतिं कृत्वा प्रमथिष्यामहे रिपून् : एषो ह्यतिबलः शूरः कृतास्त्रो युद्धदुर्मदः । वैवस्वत
इवासह्यः सक्तो जेतुं रणे रिपून् ॥ १६ ॥ एतदाचार्य्यतनयात् श्रुत्वा राजंस्तवात्मज ।
आशाञ्च महतीञ्चक्रे कर्णं प्रति स वै तदा ॥ १७ ॥ हते भीष्मे च द्रोणे च कर्णो जेष्यति
पाण्डवान् । तामाशां हृदये कृत्वा समाश्वास्य च भारत ॥ १८ ॥ ततो दुर्योधनः प्रीत
प्रियं श्रुत्वास्य तद्वचः । प्रीतिसत्कारसंयुक्तं तथ्यमात्महितं शुभम् ॥ १९ ॥ स्व मनः

पण्डितों ने कहे है वह उपाय दैवके आधीन है । १२ । हमारे जो महारथी वीर देवताओं के समान नीतिमान भक्तिमान और सावधनता में योग्यथे वह तो मारेगये ।१३। परन्तु हमलोगोंको विजय से निराश होना भी न चाहिये इस लोक में अच्छी रीति से कियेहुये नीत आदि सब अर्थों से दैव भी अनकुल किया जाता है ।१४ हेराजा यह लोग हम सबों में अत्यन्त श्रेष्ठ गुणों से भरेहुये कर्णकोही सेनापति के अधिकार पर अभिषेक करावेंगे ।१५। और कर्ण को सेनापतिकरके शत्रुओं को मारेंगे निश्चय करके यह बड़ा पराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्म्मद यमराज के समान असह्य लड़ाई में शत्रुओं के विजय करनेको इन्द्रकेही समान है ।१६। हे राजा अश्वत्थामाके इस वचनको सुनकर आपके पुत्रने कर्णमें यह बड़ा भरोसाकिया ।१७। कि भीष्म औरद्रोणाचार्य के मरनेपर यही पाण्डवोंको मारेगा इसआशा को हृदय में धारण करके बड़ा विश्वासयुक्त होकर । १८ । प्रसन्नचित्त दुर्योधन उस प्रीति सत्कारसे युक्त प्रियतम अपनी वृद्धि करनेवाले वचनको सुनकर ।१९। अपने मनको अच्छीरीतिसे दृढ़करके

said, "Wise men have pointed out the ways of faithfulness towards masters, knowing of time of place and success in enterprises by strength and policy; but these all depend upon Destiny. Our great warriors who were faithful, careful and masters of policy like gods, are all slain, but we should not despair of victory. Even Destiny can be propitiated by acts done in a proper manner. Those warriors were full of good qualities. Let us instal Karan on the post of the commander of armies. With Karan as our leader, we shall slay our enemies. Surely this great warrior is uncontrollable like Yam, and like Indra in conquering foes." Having heard Ashwatthama's words, your son looked up to Karan to be able to slay the Pandavas after the Bhishm and Drona. With this hope firm in his mind, Duryodhan, pleased

समवस्थाप्य बाहुवीर्य्यमुपाश्रितः। दुर्योधनो महाराज राधेयमिदमब्रवीत् ॥ २० ॥ कर्ण जानामि ते वीर्यं सौहृदंच परं मयि। तथापि त्वां महाबाहो प्रवक्ष्यामि हितं वचः ॥ २१ ॥ भीष्म द्रोणावतिरथौ हतौ सेनापतीमम। सेनापतिर्भवानस्तु ताभ्यां द्रविणवत्तरः॥२२॥ वृद्धौ हि तौ महेष्वासौ सापेक्षौ च धनञ्जये। मानितौ च मया वीरौ राधेय वचनात्तव ॥ २३॥ पितामहत्वं संप्रेक्ष्य पाण्डुपुत्रा महारणे। रक्षितास्तात भीष्मेण दिवसानि दशैव च ॥ २४ ॥ न्यस्तशस्त्रे च भवति हतो भीष्म प्रतापवान्। शिखण्डिनं पुरस्कृत्य फाल्गुनेन महाहवे ॥२५॥ हते तस्मिन् महेष्वासे शरतल्पगते तदा त्वयोक्तं पुरुषव्याघ्र द्रोणो ह्यासीत् पुरः सरः ॥२६॥ तेनापि रक्षिताः पार्थाः शिष्यत्वा दिति मे मतिः। सचापि निहतो वृद्धो धृष्टद्युम्नेन सत्वरम् ॥ २७ ॥ निहताभ्यां प्रधा

अपनी भुजाओं के बल में रक्षितहोकर कर्ण से यह वचन बोला। २०। कि हे कर्ण मैं तेरे पराक्रम को और अपने ऊपर जो तेरी प्रीति है उसको अच्छी रीति से जानता हूं हे महाबाहो मैंभी तुमसे सुन्दर फलयुक्त वचनकहूंगा। २१। मेरेसेनापति अतिरथी भीष्म और द्रोणाचार्य मारेगये उनसेभी अधिक आप पराक्रमी होकर सेनापति हूजिये। २२। वह दोनों वृद्ध महा धनुषधारी अर्जुन से मेलरखते थे हे कर्ण मैंने तेरेकहने से दोनों की बड़ीमतिष्ठा करीथी। २३। हेतात भीष्मजी ने अपनेको बाबा समझकर बड़ेयुद्ध में दशों दिनतक पांडवोंकी रक्षाकरी। २४। आपके शस्त्ररहित होने पर शिखण्डी को आगेकरके अर्जुन के हाथ से भीष्मपितामह मारेगये २५ हेपुरुषोत्तम उस पुरुष सिंह के मरने और शरसय्यापर विराजमान होनेपर तेरेकहने से द्रोणाचार्य्य संग्राम में सन्मुख हुये २६ उन्होंने भी अपना शिष्य जानकर पांडवों की रक्षाकरी वह वृद्धभी शीघ्रताही धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये। २७। इन दोनों प्रधान पुरुषोंके मरनेसे चिन्ता युक्त होकर

to hear the predictions of his success, made a firm resolve and relying on the strength of his arms, thus addressed Karan, (20) "I know well your prowess in battle as well as the love you bear towards me, O Karan. I give you my blessings, brave man. You will do greater deeds of prowess than those of valiant Bhishm and Drona, who have been slain. The two old warriors were friendly towards Arjun, although, by your advice, I treated them with great respect. Being the grandfather of the Pandavas, Bhishm protected them during the ten days of his tenure, and because you desisted from fighting, Arjun led by Shikhandi, succeeded in slaying him. 25. At the fall of that lion on the bed of arrows, I appointed Drona in his place by your advice. He spared the Pandavas, because they were his pupils and was soon killed by

नाऽयां ताऽयाममितविक्रमम् । त्वत्समं समरे योधं नान्यं पश्यामि चिन्तयन् ॥ २८ ॥
भवानेवाद्य नः शक्तो विजयाय न संशयः । पूर्वं मध्ये च पश्चाच्च नथैव विहितं
हितम् । २९ ॥ स भवान् धुर्य्यवत् संख्ये धरमुद्वोढुमर्हति । अभिषेचय सेनान्ये स्वयं
मात्मानमात्मना ॥ ३० ॥ देवतानां यथा स्कन्दः सेनानीः प्रभुरव्ययः । तथा भवानिमां
सेनां धार्त्तराष्ट्रीं बिभर्तु वै ॥ ३१ ॥ जहि शत्रुगणान्सर्वान् महेन्द्रो दानवानिव ॥ ३२ ॥
व्यवस्थितं रणे दृष्ट्वा पाण्डवास्त्वां महारथाः । द्रविष्यन्ति च पाञ्चालाः विष्णुं
दृष्ट्वेव दानवाः ॥ ३४ ॥ तस्मात्त्वं पुरुषव्याघ्र प्रकर्षेतां महाचमूम् ॥ ३५ ॥ भवत्य
वस्थिते यत्ते पाण्डवा मन्दचेतसः द्रविष्यन्ति सहामात्या, पाञ्चालाः सृञ्जयाश्च ह
॥ ३६॥ यथा ह्यभ्युदितो सूर्यः प्रतपन् स्वेन तेजसा । व्यपोहति तमस्तीव्रं तथा शत्रून्
प्रतापय ॥ ३७ ॥ सञ्जय उवाच । आशा बलवती राजन् पुत्रस्य तव। याभ

मैं तुम्हारे पराक्रमी के समान किसी शूरवीरको नहीं देखताहूं । २८ । हमलोगों के बीचमें आपही आदि मध्य और अन्त में विजय करनेको समर्थहो और जिसरीति आपने सदैव मेरा हित किया है । २९ । उसीप्रकार आप बैलके समान धुरके उठाने के योग्यहो मैं आपको सेनापति के अधिकारपर अभिषेक करूंगा । ३० । जैसेकि देवताओं के सेनापति प्रभु अविनाशी स्वामिकार्तिक जी हैं उसीप्रकार आप मेरी सेनाकी रक्षाकरो । ३१ । जैसे कि महाइन्द्र युद्धमें दानवों को मारता है । ३२ । उसीप्रकार आपभी हमारे शत्रुओंको मारिये तुमको सम्मुख देखकर महारथी पांडव और पांचाललोग ऐसे युद्धमें से भागेंगे जैसे कि विष्णुजी को देखकर दानव भागते हैं इसहेतुसे हे पुरुषोत्तम तुम इस बड़ी सेनाको अपनी रक्षा में करो । ३५ । आपको युद्धमें उपाय करताहुआ देखकर मंत्रियों समेत पांडव सृंजय औरपांचाल देशी यह सब भागेंगे । ३६ । जैसे उदयहुआ सूर्य अपने तेजसे तपाताहुआ महाघोर अन्धकारको विध्वंश करता है उसीप्रकार तुमभी शत्रुओंको तपाओ ।३७ ।

Dhrishtadyumn. *Sorrowing for the death of those two grand men*, I see no warrior to be your equal. Whether in the beginning or middle or end, you alone are capable of conquering the enemy. You have always been my well wisher and are capable of bearing the burden like an ox; I shall annoint you as the commander of my armies. 30. Like immortal lord Kartik the leader of gods, you will protect my army. You will slay my enemies as Indra does the danavas. The Panchals and the Pandavas shall run away from your presence as the Danavas do from Vishnu. Take the huge army in your protection. 35. The Pandavas with the Srinjayas and Panchals will *scamper away from your presence.* You will scorch and rout the enemies as the Sun dispels darkness by his light." Sanjaya continued,

यत् । हते भीष्मे च द्रोणेच कर्णो जेष्यति पाण्डवान्॥३८॥तामाशां हृदये कृत्वा कर्णमेवं तदाब्रवीत् । सूतपुत्र न ते पार्थः स्थित्वाग्र संयुयुत्सति ॥ ३९ ॥ कर्ण उवाच । उक्त मेतन्मया पूर्वं गान्धारे तव सन्निधा । जेष्यामि पाण्डवान्सर्वान् सपुत्रान् सजनार्दनान् ॥४०॥ सेनापतिर्भविष्यामि तवाहं नात्र संशयः । स्थिरो भव महाराज जितान् विद्धि च पाण्डवान् ॥ ४१ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तस्ततो महाराज ततो दुर्योधनो नृपः । उत्तस्थौ राजभिः सार्द्धं देवैरिव शतक्रतुः । सेनापत्येन सत्कर्तुं कर्णं स्कन्दमिवामराः ॥ ४२॥ ततोऽभिषिषिचुः कर्णं विधिदृष्टेन कर्मणा । दुर्योधनमुखा राजन् राजानो विजयैषिणः ॥ ४३ ॥ शातकुम्भमयैः कुम्भैर्माहेन्द्रैश्चैवाभिमन्त्रितैः । तोयपूर्णैर्विषाणैश्च द्विपखड्गमहर्षभैः ॥ ४४ ॥ मणिमुक्तामयैश्चान्यैः पुण्यगन्धैस्तथौषधैः । औदुम्बरे सुखासी

संजयबोले हे राजा आपके पुत्रकी यही आशा प्रबलहुई कि भीष्म और द्रोणके मरनेपर यह कर्ण पाण्डवोंको अवश्य मारेगा । ३८ । इस आशाको हृदय में धरकर इसप्रकार कर्ण से बोला हे कर्ण वह अर्जुन तेरे सम्मुख युद्ध करने की इच्छा नहीं करताहै । ३९ । कर्ण बोला हे गांधारी के पुत्र मैंने प्रथमही यह तुझसे कहा है कि मैं पुत्र पौत्र और श्रीकृष्णजीसमेत सबपांडवोंको विजयकरूंगा । ४० । मैं निस्सन्देह तेरा सेनापति बनूंगा हे महाराज आप तय्यार हूजिये और पाण्डवोंको विजय कियाजानो । ४१ । संजय बोले हे महाराज इसबातके सुनते ही राजादुर्योधन अपने राजाओंसमेत ऐसा उठा जिसप्रकार देवताओं समेतइन्द्र उठताहै । ४२। अर्थात् सेनापति बनाने के लिये कर्ण के सत्कार करनेको ऐसा उठा जैसे कि स्वामिकार्तिक के अभिषेक कराने को देवताओं समेत इन्द्र उठाथा इसके पीछे विजयाभिलाषी उन सब राजाओं ने जिनका अग्रगामी दुर्योधनथा सुवर्णके कलश और अभिमंत्रित मृत्तमयपात्र हाथी के दांतके पात्र गैंडेके सींगके पात्र वा अन्य यज्ञपशुओं के दांतों के पात्र मणि मोतियों से आच्छादित वा बहुतसी सुगन्धित द्रव्यों से युक्त जलपूरित पात्र और गंधाक्षत आदि अभिषेक की वस्तुओं सेवेदोक्त

"Your son, O king, had strong hope, after the death of Bhishm and Drona, that Karan would destroy the Pandavas. With that hope strong in his mind, he said to Karan, "Arjun has no desire to come on to oppose you." Karan said, "I have already told you that I shall conquer the Pandavas together with their sons, grandsons and Shri Krishn. 40. I am willing to lead your armies. Be ready, Prince, and regard the Pandavas as vanquished." Sanjaya said, "On hearing these words Duryodhan rose up like Indra accompanied by gods. He stood up to annoint him as Indra had done when he annointed Kartik as commander of the army of gods. Then all the princes, desirous of victory, led by Duryodhan, sprinkled over Karan

नमासने क्षौमसंवृते । शास्त्रदृष्टेन विधिना सम्भारैश्च सुसंभृतैः ॥ ४५ ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्यास्तथा शूद्राश्च सम्मताः । तुष्टुवुस्तं महात्मानमभिषिक्तं वरासने ॥ ४६ ॥ ततोऽभिषिक्ते राजेन्द्र निष्कैर्गोभिर्धनेन च । वाचयामास विप्राग्र्यान् राधेयः परवीरहा ॥ ४७ ॥ जय पार्थान् सगोविन्दान् सानुगांस्तान्महाहवे । इति ते वन्दिनः प्राहुर्द्विजाश्च पुरुषर्षभम ॥ ४८ ॥ जहि पार्थान् सपाञ्चालान् राधेय विजयाय नः । उद्यन्निव सदा भानुस्तमांस्युग्रैर्गभस्तिभिः ॥ ४९ ॥ न ह्यलं त्वद्विसृष्टानां शराणां वै सकेशवाः । उलूकाः सूर्यरश्मीनां ज्वलतामिव दर्शने ॥ ५० ॥ न च पार्थाः सपाञ्चालाः स्थातुं शक्तास्तवाग्रतः । आत्तशस्त्रस्य समरे महेन्द्रस्येव दानवाः ॥ ५१ ॥ अभिषिक्तस्तु

मन्त्रों के द्वारा कर्णका अभिषेक कराया । ४५ । ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और अंगीकार कियेहुये शूद्रोंने भी उस महात्मा कर्णको प्रसन्न किया जो स्नान किये हुये उत्तम आसनपर विराजमानथा । ४६ । हे राजेंद्र फिर अभिषेक होजानेपर शत्रुहन्ता कर्ण ने निष्क और गोधन देकर ब्राह्मणों से स्वस्ति वाचन कराया।४७। उस समय वन्दीजन और ब्राह्मणों ने उस पुरुषोत्तमसे यह कहाकि तुम गोविन्दजी आदि सब साथियोंसमेत पाण्डवोंको विजयकरो । ४८ । हेकर्ण तुमहमारी विजयके निमित्त पांचालोंसमेत सब पांडवोंको ऐसेमारो जैसे कि सदैव होनेवाला सूर्य बड़े अन्धकार को दूर करता है । ४९ । आप के बाणोंको केशवजी समेत पाण्डवलोग देखने को भी ऐसे समर्थ न होंगे जैसे कि सूर्य्य की प्रकाशित किरणों के देखने को उलूक पक्षी नहीं समर्थ होसक्ता है ।५०। युद्धमें तुम शस्त्रधारी के सन्मुख पाण्डव नियत होनेको ऐसेसमर्थ नहींहैं जैसे कि महाइन्द्र के सम्मुख दैत्य दानव नियत नहीं होसक्ते । ५१ । अभिषेक किया हुआ वह कर्ण बड़े

water from the vessels of gold, earth, inory, horn of rhinoceros and the tusks of other sacrificial animals, decked with pearls and jewels and mixed with odorous things and rice, with incantations of Vedic hymns. 45. Brahmans, kshatryas Vaishyas and Shudras praised Karan who sprinkled over with holy water sat on a precious seat. After the ceremony of Abhishek, Karan the destroyer of foes *gave gold coins and cows to Brahmans and recieved benedictions* in return. The bards and Brahmans said "You will conquer the Pandavas and their allies together with Govind. Destroy the Pandavs and Panchals as the sun does the darkness. Keshav and the Pandavas will be unable to look at your arrows as owls are to look at the Sun. 50. The Pandavas will not be able to withstand you in fight as the Daityas and Danavas are to withstand Indra. Sprinkled over with holy water, Karan looked glorious like a second Sun.

राधेयः प्रभया सोमितप्रभः । अत्यरिच्यत रूपेण दिवाकर इवापरः ।। ५२ ॥ सैन्यापत्ये तु राधेयमभिषिच्य सुतस्तव । अमन्यत तदात्मानं कृतार्थं कालचोदितः॥५३॥ कर्णोऽपि राजन् संप्राप्य सेनापत्यमरिन्दमः । योगमाज्ञापयामास सूर्यस्योदयनं प्रति ॥ ५४ ॥ तव पुत्रैर्वृतः कर्णः शुशुभे तत्र भारत । देवैरिव यथा स्कन्दः संग्रामे तारकामये ॥५५॥

इति श्री कर्णपर्वणि कर्णाभिषेके दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

धृतराष्ट्र उवाच । सेनापत्यन्तु संप्राप्य कर्णो वैकर्तनस्तदा । तथोक्तश्च स्वयं राज्ञा स्निग्धं भ्रातृसमं वचः ॥ १ ॥ योगमाज्ञाप्य सेनानामादित्येऽभ्युदिते तदा । अकरोत् किं महाप्राज्ञस्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । कर्णस्य मतमाज्ञाय

तेजसे दूसर सूर्य्य के समान प्रकाशमान हुआ । ५२ । तब काल से प्रेरित आपके पुत्र ने कर्ण को सेनापति के अधिकार पर अभिषेक करा के अपने को सिद्ध मनोरथ समझा । ५३ । हे राजा विजयी कर्णने भी सेनापति होकर सूर्य्योदय के समय सेना के तय्यार होनेकी आज्ञादी । ५४ । फिर वहां आपके पुत्रों समेत वह कर्ण ऐसा शोभित हुआ जैसे कि तारकासुर के युद्धमें देवताओंसमेत स्वामि कार्तिक जी शोभित हुये थे । ५५ ।

अध्याय ॥ ११ ॥

धृतराष्ट्रबोले कि जब सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने सेनापति पदवीको पाकर राजा दुर्य्योधन से भाई के समान मृदुभाषणको सुनके ।१। सूर्य्योदय समय असंख्य सेनाकी तैयारीकेलिये आज्ञादेकर क्या काम किया हे संजय उसको मुझे समझाके कहो ।२। संजयबोले हे भरतर्षभ आपके पुत्रोंने कर्णके अभिप्रायको जानकर

Then your son, moved by Destiny, having installed Karan as commander of his armies, thought that had got the desire of his heart. Karan the conquerer too, ordered the armies to be ready at day break. Surrounded by your sons, Karan looked glorious like Kartik in the war of Tarakasur," 55.

CHAPTER XI

Dhritrashtra said, "Being installed as commander of the armies and hearing sweet, brotherly words of prince Duryodhan, what was

पुत्रास्ते भरतर्षभ । योगमाज्ञापयामासुर्नन्दितूर्यपुरःसरम् ॥ ३ ॥ महत्यपररात्रे च तव सैन्यस्य पार्थिव । योगो योगेति सहसा प्रादुरासीन्महास्वनः ॥ ४ ॥ कल्पतां नागमुख्यानां रथानाञ्च वरूथिनाम् । सन्नह्यतां पदातीनां वाजिनाञ्च विशाम्पते ॥५॥ क्रोशताञ्चापि योधानां त्वरितानां परस्परम् । बभूव तुमुलः शब्दो दिवस्पृक् सुमहांस्तनः ॥ ६ ॥ ततः श्वेतपताकेन बलाकावर्णवाजिना । हेमपृष्ठेन धनुषा नागकक्षेण केतुना ॥ ७ ॥ तूणीरशतपूर्णेन सगदेन वरूथिना । शतघ्नी किङ्किणी शक्तिशूलतोमर धारिणा ॥ ८ ॥ कार्मुकैरुपपन्नेन विमलादित्यवर्चसा । रथेनातिपताकेन सूतपुत्रोऽभ्यदृश्यत ॥ ९ ॥ ध्मापयन् वारिजं राजन् हेमजालविभूषितम् । विधुन्वानो महच्चापं कार्त्तस्वरविभूषितम् ॥ १० ॥ दृष्ट्वा कर्णं महेष्वासं रथस्थं रथिनाम्वरम् भानुमन्त मिवोद्यन्त तमोघ्नन्तं दुरासदम् ॥ ११ ॥ न भीष्मव्यसनं केचिन्नापि द्रोणस्य मारिष ।

सेनाकी तैयारी के लिये आज्ञा करी जिसमें आनन्दमंगल सुचक बाजे आगे चले ।३। और पिछलीरात्रि में अकस्मात् आपकी सेनामें तैयारी करनेका शब्द अधिकपतासे हुआ ।४। इसकेपीछे अलंकृत उत्तम हाथी रथ मनुष्य पदाती घोड़े ।५। और शीघ्रता करनेवाले और परस्परमें बोलनेवाले शूरवीरों के महाकठिन शब्द आकाशतक व्याप्तहुये ।६। इसके पीछे श्वेतपताका और हंसके वर्ण घोड़े सुवर्ण पृष्ठी धनुष नागकक्षीध्वजा ।७। सैकड़ों तूणीरों से युक्त बाजूबन्द और कवचों को धारणकरनेवाले शतघ्नी किंकणी शक्ति शूल और तोमरोंसे भरेहुये धनुषोंसे युक्त निर्मल सूर्यके समान प्रकाशमान वायु के विपरीत होनेसे सम्मुख पताकावाले रथ की सवारियों से । ९ । और स्वर्णमयी जालों से अलंकृत शंखको बजाता स्वर्णमयी धनुषको हिलाताहुआ कर्ण चला हे श्रेष्ठ नरोत्तम वहां कौरवों ने उस बड़े धनुष-धारी रथारूढ़ सूर्य्य के समान प्रकाशित असह्य तेजसे अन्धकार को दूरकरते हुये कर्णको देखकर । ११ । किसीने भी भीष्म द्रोणाचार्य और अन्य वीरोंके दुःखों

the next deed of Karan, when he had ordered the armies to be ready at the break of day; tell me all this, Sanjaya." Sanjaya said, "Knowing the desire of Karan, your sons ordered the armies to be prepared, with the cheerful musical instruments. Towards the end of the night there was a great noise of preparations in your army. Then good elephants, cars, foot, and horse, well-decked, made together a tremendous noise reaching to the sky. 6. With white the banner, swan-coloured horses, gold-backed bow and standard with device of the rope of an elephant, followed by the warriors having hundreds of quivers, arm-guards, armours, Shataghnis, kinkinis, spears, darts, tomars and bows, glorious like the sun, with banners fluttering in the air, blowing conchs covered with gold nets, Karan went on moving his bow. The Kauravas seeing Karan the great

नान्येषां पुरुषव्याघ्रं मेनिरे तत्र कौरवाः ॥ १२ ॥ ततस्तु त्वरयन् योधान् शंखशब्देन मारिष। कर्णो निष्कर्षयामास कौरवाणां महद्बलम् ॥ १३ ॥ व्यूहं व्यूह्य महेष्वासो मकरं शत्रुतापनः। प्रत्युद्ययौ तदा कर्णः पाण्डवान् विजिगीषया ॥ १४ ॥ मकरस्य तु तुण्डे वै कर्णो राजन् व्यवस्थितः। नेत्राभ्यां शकुनिः शूर उलूकश्च महारथः ॥१५॥ द्रोणपुत्रस्तु शिरसि ग्रीवायां सर्वसोदराः। मध्ये दुर्योधनो राजा बलेन महतावृतः ॥ १६ ॥ वामे पादे तु राजेन्द्र कृतवर्मा व्यवस्थितः। नारायणबलैर्युक्तो गोपालैर्युद्धदुर्मदैः ॥ १७ ॥ पादे तु दक्षिणे राजन् गौतमः सत्यविक्रमः। त्रिगर्तैश्च महेष्वासैर्दाक्षिणात्यैश्च संवृतः ॥ १८ ॥ अनुपादेतु यो वामस्तत्र शल्यो व्यवस्थितः। महत्या सेनया सार्द्धं मद्रदेशसमुत्थया ॥ १९ ॥ दक्षिणे तु महाराज सुषेणः सत्यसङ्गरः। वृतो रथसहस्रेण दन्तिनाञ्च त्रिभिः शतैः ॥ २० ॥ पुच्छेऽभवतां महावीर्यौ भ्रातरौ पार्थिवौ

को नहीं माना । १२ । इसके पीछे शंखध्वनि के द्वारा शूरवीरों को चैतन्य करते हुये कर्ण ने कौरवों की बड़ीसेना को निकाला । १३ । इसरीति से महाधनुषधारी शत्रुसंतापी कर्ण मकरव्यूह को रचकर पाण्डवों के विजय की इच्छासे सम्मुखचला । १४ । हे राजा उस मकरव्यूह के मुखपर तो कर्ण नियत हुआ नेत्रों के समीप महारथी शकुनी और शूरवीर उलूक नियतहुये । १५ । शिरपर अश्वत्थामा और ग्रीवापर सब सगेभाई और मध्य में बड़ी सेना समेत आप राजा दुर्योधन नियत हुआ । १६ । और वामपादपर नारायण और गोपाल नाम सेनासे युक्त दुर्मद कृतवर्मा नियत हुआ और बड़े धनुषधारी त्रिगर्त्तदेशी सत्य पराक्रमी कृपाचार्य जी दक्षिण चरणके समीप नियत हुये । १८ । और मद्रदेशी बड़ी सेना समेत राजा शल्य बांये चरण के पीछे और हजाररथ और तीनसौ हाथियों समेत सत्यसंकल्प सुषेण दक्षिण चरणके पीछे हुआ । २० । बड़ी सेना समेत बड़े पराक्रमी

archer mounted on a car bright like the sun, dispelling darkness, none felt sorrow for the death of *Bhishm* and *Drona*. Then urging the warriors with the sounds of his conch, Karan the destroyer of foes arranged the array into the crocodile army and went on to conquer the Pandavas. Karan stood at the mouth of the array, Shakuni and Uluk at the eyes, Ashwathama at the head, Duryodhan's own brothers at the neck and Duryodhan himself, with a large army, stood in the middle. 16. Brave Kritvarma, with the Narayans and Gopals, stood at the left foot, and the great archers of Trigart, led by Kripacharya, stood at the right foot. King Shalya of Madra, with a large army, stood behind the left foot, and Sushen of true prowess, with a thousand elephants and three hundreds of cars, was behind the right foot. 20. The two brother princes, Chitra and

तदा । चित्रश्च चित्रसेनश्च महत्या सेनया वृतौ ॥ २१ ॥ तथा प्रयाते राजेन्द्र कर्णे नर
वरोत्तमे । धनञ्जयमभिप्रेक्ष्य धर्मराजो ऽब्रवीदिदम् ॥ २२ । पश्य पार्थ यथा सेना
धार्त्तराष्ट्रीह संयुगे । कर्णेन विहिता वीरः गुप्ता वीरैर्महारथैः ॥ २३ ॥ हतवीरतमा
ह्येषा धार्त्तराष्ट्री महाचमूः । फल्गुशेषा महाबाहो तृणैस्तुल्या मता मम ॥२४ ॥ एको
ह्यत्र महेष्वासः सूतपुत्रो विराजते । सदेवासुरगन्धर्वैः स किन्नरमहोरगैः ॥ २५ ॥
चराचरैस्त्रिभिर्लोकैरजय्यो रथिनाम्वरः । तं हत्वाद्य महाबाहो विजयस्तव फाल्गुन
॥ २६ ॥ उद्धृतश्च भवेच्छल्यो मम द्वादशवार्षिकः । एवं ज्ञात्वा महाबाहो व्यूहं व्यूह
यथेच्छसि ॥ २७ ॥ भ्रातुस्तद्वचनं श्रुत्वा पाण्डव श्वेतवाहनः । अर्द्धचन्द्रेण व्यूहेन प्रत्य
व्यूहत तां चमूम् ॥ २८ ॥ वामपार्श्वे तु तस्याथ भीमसेनो व्यवस्थितः । दक्षिणे च

दोनों भाई राजा चित्र और चित्रसेन पुच्छपर नियत हुये । २१ । हे राजेन्द्र इसरीति से नरोत्तम कर्ण के चलने पर धर्मराज युधिष्ठिर अर्जुनकी ओर देखकर यहबोले । २२ । कि हे वीर अर्जुन देखो जैसे जस इस युद्ध में शूरवीर महारथियों से रक्षित दुर्योधनकी सेना कर्णने अलंकृतकरी । २३ । वह दुर्योधनकी बड़ी सेना वही है जिसके बड़े वीर मारेगये हे महाबाहो यहशेष बचीहुई है आशय यहहै कि यह सेना मेरी बुद्धिसे तृणोंकी समान है । २४ । इस सेना भर में अकेला धनुषधारी कर्णही प्रकाशित है यह रथियों में श्रेष्ठ कर्ण देवता असुर किन्नर गंधर्व नाग और । २५ । तीनों लोकोंके स्थावर जंगमों से महादुर्जय है हे महाबाहु अर्जुन अब इसकेही मारनेपर तेरी पूर्ण विजयहै । २६ । इसके मरनेपर बारहवर्षका मेरा कंटक उखड़जायगा हे महाबाहु ऐसा जान और समझकर व्यूहको जैसा चाहो वैसा तैयार करो । २७ । पाण्डव अर्जुनने भाई के उस वचनको सुनकर अपनी सेनाको अर्द्धचन्द्र व्यूहसे अलंकृतकिया । २८ । उसके बामभागपरभीमसेन

Chitrasen, with a large army, stood at the tail. When Karan had thus arrayed his army in the above-mentioned way, Yudhishthir looked at Arjun and said, "Look at the army of Duryodhan see how it is arrayed by Karan. It is the army of which the great warriors are slain. I think the rest of the army is like a straw Karan's is the only prominent figure in the whole army. Karan the best of warriors is hard to be vanquished by gods, *asurs*, *kinnars*, *gandharvas* and the moveable and immoveable things in the three worlds. You will gain a complete victory after slaying him. 26. My grief of twelve years standing will be effaced by his death. Remembering all this, you may arrange the army as you like. Hearing his brother's words Arjun the Pandava formed his army into a crescent-shaped array. Bhimsen was on the left wing and

महेष्वासो धृष्टद्युम्नो व्यवस्थितः ॥२९॥ मध्ये व्यूहस्य राजातु पाण्डवश्च धनञ्जयः । नकुलः सहदेवश्च धर्मराजस्य पृष्ठतः ॥ ३० ॥ चक्ररक्षौतु पाञ्चाल्यौ युधामन्यूत्तमौजसौ । नार्जुनं जहतुर्युद्धे पालयमानौ किरीटिना ॥ ३१ ॥ शेषा नृपतयो वीराः स्थिता व्यूहस्य दंशिताः । यथाभागं यथोत्साहं यथायत्नञ्च भारत ॥ ३२ ॥ एवमेतन्महाव्यूहं व्यूह्य भारत पाण्डवा । तावकाश्च महेष्वासा युद्धायैव मनो दधुः ॥ ३३॥ दृष्ट्वा व्यूढां तव चमूं सूतपुत्रेण संयुगे । निहतान् पाण्डवान् मेने धार्त्तराष्ट्रः सबान्धवः॥३४॥ तथैव पाण्डवीं सेनां व्यूढां दृष्ट्वा युधिष्ठिरः । धार्त्तराष्ट्रान् हतान् मेने सकर्णान् वै जनाधिपः ॥ ३५ ॥ ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवा नकदुन्दुभिः। डिण्डिमाश्चाप्यहन्यन्त झर्झराश्च समन्ततः ॥ ३६ ॥ सेनयो रुभयो राजन् प्रावाद्यन्त महास्वनाः : सिंहनादश्च

और दाहिने भागपर बड़ा धनुषधारी धृष्टद्युम्न वर्त्तमान हुआ । २९ । और व्यूह के मध्य में राजा युधिष्ठिर और अर्जुन नियत हुये और धर्मराज के पीछे नकुल सहदेव हुये । ३० । और पांचाल देशी उत्तमौजा और युधामन्यु रथके पाहियोंके रक्षकहुये अर्जुनसे रक्षित उन दोनोंनेभी युद्धमें अर्जुन को नहीं त्यागा । ३१ । हे राजा शेषशूरवीर राजा लोग शस्त्रादि से अलंकृत अपनी २ युक्तिके अनुसार व्यूहमें नियतहुये । ३२ । पांडव और अन्य शूरवीरों ने इसरीति से अपनेव्यूहको रचकर तैयार किया हे राजा इसरीति से पांडव और आपके पुत्रोंने अपने व्यूहों को रचकर युद्ध करनेको उत्साहकिया । ३३ । दुर्य्योधन ने कर्णकी रचितकी हुई अपनी सेनाको युद्धमें देखकर भाई बन्धुओं समेत पांडवोंको मृतक रूप जाना । ३४ । उसी प्रकार राजा युधिष्ठिर ने भी अपनी पांडवी सेनाको अलंकृत देखकर कर्ण समेत धृतराष्ट्र के पुत्रोंको मृतक रूपमाना । ३५ । इसके पीछे शंखभेरी ढोल दुन्दुभी डिमडिम आदि बाजेभी चारोंओर से बजे ।३६। हे राजा उस समय दोनों सेनाओं में बड़े शब्दायमान बाजे बजे और युद्धाभिलाषी शत्रुहन्ता शूर वीरों के भी

the great archer Dhrishtadyumn on the right. In the middle of the array stood Prince Yudhishthir and Arjun and behind Yudhishthir were Nakul and Sahadev. 30. Uttamanja and Yudhamanyu of Panchal protected the right and left wheels of Arjun and were always with him. The rest of the princes, armed with arms and armour, stood in ranks. The Pandavas and Kauravas, having thus arranged their armies, stood ready to fight. Seeing his army arrayed by Karan, Duryodhan took the Pandav brothers for dead. Yudhishthir too, seeing the Pandav army well arranged, thought that Karan and the sons of Dhritrashtra would die. 35. Conchs, trumpets, tomtoms and other musical instruments sounded. There was a great noise of musical instruments in both the armies and

भेभ्यो यथा क्षीणे पुण्य स्वर्गसदस्तदा ॥ ७ ॥ गदाभिरन्ये गुर्वीभिः परिधैर्मुसलैरपि ।
पोथिताः शतशः पेतुर्वीरा वीरतरै रणे ॥ ८ ॥ रथा रथैर्विमथिता मत्ता मत्तैर्द्विपैः द्विपैः
सादिनः सादिभिश्चैव तस्मिन् परमसंकुले ॥ ९ ॥ रथैर्नरा रथा नागैरश्वारोहाश्च
पत्तिभिः । अश्वारोहैः पदाताश्च निहता युधि शेरते ॥ १० ॥ रथाश्वपत्तयो नागै
रथाश्वेभाश्च पत्तिभिः । रथपत्तिद्विपाश्चाश्वै रथैश्चापि नरद्विपाः ॥ ११ ॥ रथाश्वेभन
राणान्तु नराश्वेभरथैः कृतम । पाणिपादैश्च शस्त्रैश्च रथैश्च कदनंमहत् ॥ १२ ॥ तथा
तस्मिन् बले शूरैर्वध्यमाने हतेपि च । अस्मानभ्याययुः पार्था वृकोदरपुरोगमाः ॥ १३ ॥
धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च द्रौपदेयाः प्रभद्रकाः । सात्यकिश्चेकितानश्च द्राविडैः सैनिकैः
सह ॥ १४ ॥ वृता व्यूहेन महता पाण्ड्याश्चोलाः सकेरलाः । व्यूढोरस्का दीर्घभुजा
प्रांशवः पृथुलोचनाः ॥ १५ ॥ आपीडिनो रक्तदन्ता मत्तमातङ्गविक्रमाः । नानाविरागव

पुण्य होनेसे स्वर्गवासी जीव अपने अपने विमानों से गिरते हैं । ७ । युद्धमें बड़े २ वीरों की भारी गदा परिघ और मूसलों से भी मारेहुये अन्य हजारों वीर पृथ्वी पर गिरे । ८ । रथी रथियों से मतवाले हाथी मतवाले हाथियों से अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ोंसे उस कठिन युद्धमें मर्दित कियेगये । ९ । रथोंसे मनुष्य और हाथियों से रथ वा पत्तियों से रथी और हाथियोंसे रथपति घोड़े और सवार और हाथी दोनों रथों से मथेगये । ११ । मनुष्य घोड़े हाथी और रथियों ने हाथ पांव शस्त्र रथों से रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों का बड़ा विनाशकिया । १२ । इसरीति से शूरवीरों के हाथसे सेनाके घायल और मारे जाने सेवह पाण्डव जिनमें अग्रगामी भीमसेन था हमारे सम्मुख आये । १३ । धृष्टद्युम्न शिखंडी द्रौपदी के पुत्र प्रभद्रक नामक्षत्री सात्यकि चेकितान द्रविड़ देशी सेना समेत । १४ । बड़े व्यूहसे युक्त और बड़े वक्षस्थल लम्बी भुजा दीर्घनेत्री वेगवान् आभूषणों से अलंकृत । १५ ।

---

phants and cars, like the denizens of heaven falling down at th. exhaustion of their merits. The heavy maces, clubs and musals, discharged in battle, killed many warriors. The elephants were sl by mad elephants, car warriors by car warriors and horsemen b horsemen. Men were crushed by cars, cars by elephants, car war riors by footsoldiers, and horses and elephants by car warriors an elephants. 11. Men, horses, elephants and car warriorr, with their hands, feet, weapons and cars, destroyed cars, horses, elephanas, and men in large numbers. Thus wounded and slain by warriors, we were opposed by that part of the army which was led by Bh Dhrishtadyumn, Shikhandi, the Prabhadraks, Chekitan, the Drav dians, with a large army of warriors having broad chests, long large eyes and great prowess and decked with ornaments, 15. full

सना गन्धचूर्णावचूर्णिताः ॥ १६ ॥ बद्धासयः पाशहस्ता वारणप्रतिवारणाः । समान
मृत्यवो राजन् नात्यजन्त परस्परम् ॥१७॥ कलापिनश्चापहस्ता दीर्घकेशाः प्रियम्वदाः ।
पत्तयः सादिनश्चान्ये घोररूपपराक्रमाः ॥१८॥ अथापरे पुनः शूराश्चेदिपाञ्चालकैकयाः ।
कारूषा कोशलाः काञ्च्या मागधाश्चापिदुद्रुवुः ॥ १९ ॥ तेषां रथाश्वनागाश्च प्रवरो
श्चोग्रपत्तय । नानावाद्यधरैर्हृष्टा नृत्यन्ति च हसन्ति च ॥ २० ॥ तस्य सैन्यस्य महतो
महामात्रवरैर्वृतः । मध्ये वृकोदरोऽभ्यायात्त्वदीयान्नागधूर्गतः ॥२१॥ स नागप्रवरोत्युग्रो
विधिवत्कल्पितो बभौ । उदयाग्र्याद्रिभवनं यथाऽभ्युदितभास्करम् ॥ २२ ॥ तस्यायसं

रक्तदंत मतवाले हाथी के समान पराक्रमी नाना प्रकार के रंगोंकी पोशाकों से भूषित चन्दनादि से चर्चित देहवाले खड्ग भिंदिपालों को हाथमें लिये हाथियों के हटानेवाले एकसी मृत्युवाले पांड्य चौल और केरल लोगोंने परस्परमें त्याग नहीं किया । १७ । तूणीर धनुष भिंदि हाथ में लिये लम्बे केश रखने वाले प्रियभाषी घोर पराक्रमवाले अन्य पति और अश्वारूढ़ोंनेभी परस्परमें त्याग नहीं किया इसके पीछे दूसरे शूर चन्देर पांचाल केकय कारूप कौशल कांच्य और मगधशूरवीर सम्मुखदौड़े । १९ । उनके रथघोड़ हाथी और अत्यन्त भयानक पतिलोग नाना-प्रकार के बाजे बजाने वालों के साथ में बड़े प्रसन्न चित्त हँसते नाचते और गातेथे ।२०। अत्यन्तउत्तमरथोंसे युक्तहाथीके कन्धोंपरसवार भीमसेन बड़ीसेनाकेमध्यमेंआपके शूरवीरोंके सम्मुखगये ।२१। अत्यन्तउत्तम महाभयानक बुद्धिके अनुसार अलंकृतकिया हुआ वहहाथी ऐसाशोभायमानहुआ जैसेकि सूर्योदयवाला उदयाचलका भवन शोभा यमान होताहै । २२ । उसका लोहमयी रत्नोंसेजटित कियाहुआकवच इसप्रकारका प्रकाशमान था जैसे कि नक्षत्रों समेत शरद ऋतुका आकाश शोभित होता है

prowess like mad elephants, clad in various sorts of clothes with their bodies decked with sandal paste, armed with swords and bhindipals that could withstand elephants, dying in the same cause, the warriors of Pandya, Chola and Keral stood firmly by one another. Armed with quivers, bows and bhindipals, wearing long hair, speaking in a mild tone, of dreadful prowess, the other foot soldiers and, horsemen did not desert one another. The other warriors of Chanderi, Panchal, Kaikaya, Karush, Kosal, Kanchi and Magadh pushed on. Their cars, horses, elephants and dreadful foot soldiers, with musical instuments, laughed, danced and sang cheerfully. 20. Followed by excellent cars, mounted on the back of an elephant, Bhimsen, with a large army, opposed your warriors. Decked with great precision, the dreadful elephant looked glorious like the mountain from behind which the sun rises. His iron panoply, inlaid with

वर्मवरं वररत्नविभूषितम् । ताराव्याप्तस्य नभसः शारदस्य समत्विषम् ॥ २३ ॥ स तोमरव्यग्रकरश्चारुमौलिः स्वलंकृतः । शरन्मध्यन्दिनार्काभस्तेजसा व्यदहद्रिपून् ॥ २४ ॥ तं दृष्ट्वा द्विरदं दूरात् क्षेमधूर्त्तिर्द्विपस्थितः । आह्वयन्नाभिदुद्राव प्रमनाः प्रमनस्तरम् ॥ २५ ॥ तयोः समभवद्युद्धं द्विपयोरुग्ररूपयोः । यदृच्छया द्रुमवतोर्महापर्वतयोरिव ॥ २६ ॥ संसक्तनागौ तौ वीरौ तोमरैरितरेतरम् । बलवत् सूर्यरश्म्याभैर्भित्वान्योन्यं विनेदतुः ॥ २७ ॥ अपसृत्य तु नागाभ्यां मण्डलानि विचेरतुः । प्रगृह्य चोभौ धनुषी जघ्नतुर्वै परस्परम् ॥ २८ ॥ क्ष्वेडितास्फोटितरवैर्बाणशब्दैश्च सर्वतः । तौ जनं हर्षयन्तौ च सिंहनादं प्रचक्रतुः ॥२९॥ समुद्यतकराभ्यां तौ द्विपाभ्यां कृतिनावुभौ । वातोद्धूतपताकाभ्यां युयुधाते महाबलौ ॥ ३० ॥ तावन्योन्यस्य धनुषी

तोमर संयुक्त चपलभुज और सुन्दर मुकुटधारण कियेहुये महा अलंकृत सूर्य के समान प्रकाशमान वहभीमसेन अपने तेजसे शत्रुओंको भस्मकरताहुआ युद्ध में नियतहुआ । २४ । वहां हाथीपर चढ़ाहुआ क्षेमधूर्त्ती दूसरे उसहाथीपर सवार बड़े साहसी भीमसेनको देखकर पुकारता और बुलाताहुआ सम्मुखगया । २५ । प्रथम तो इनदोनोंके हाथियोंमेंही परस्पर ऐसायुद्धहुआ जैसे कि दैवइच्छासे वृक्षों समेत दो पर्व्वतोंका युद्धहोताहै । २६ । उनहाथियोंके बड़े युद्ध होनेकेपीछे वहदोनों वीर सूर्यकी किरणरूप तोमरों से परस्पर एकएकको घायल करतेहुये बड़े वेगसे गर्जे । २७ । फिर वहदोनों हाथियोंके द्वारा हटकरके मण्डलोंमें घूमे और धनुषोंको पकड़कर परस्परमें एकने दूसरे को घायल किया । २८ । फिर उनदोनों ने भुजा और बाणोंकेशब्दोंसे मनुष्योंको प्रसन्नकरके बड़े सिंहनादोंको किया । २९ । और फिर वहदोनों महाबली ऊंची सूंडवाले हाथियों और वायुसे उड़तीहुई पताकाओं समेत युद्ध करनेलगे । ३० । उनदोनोंने परस्परमें एकने दूसरेके धनुष को काटकर शक्ति और तोमरों की वर्षासे परस्पर में ऐसे घायलकिया जैसे कि वर्षाऋतु में

gold, looked like the winter sky studded with stars. Armed with tomar, dexterous, wearing an excellent diadem, Bhim stood in the field of battle scorching the enemies. Kshemdhurti, riding on elephant, seeing Bhimsen from a distance, came on challenging and daunting him. 25. The two elephants opposed each other like mountains overgrown with trees. Then both the warriors wounded each other with tomars bright like the rays of the sun and roared loudly. They moved in circles with their elephants and wounded each other with arrows from their bows. They pleased the warriors with the sounds of their arms and arrows and roared leonine roars. Then their elephants with upraised trunks and banners fluttering with air, came in contact 30. They cut each other's bow and wounded with spears

छित्वाऽन्योन्यं विनेदतुः । शक्तितोमरवर्षेण प्रावृण्मेघाविवाम्बुभिः ॥ ३१ ॥ क्षेमधू
र्त्तिस्तदा भीमं तोमरेण स्तनान्तरे । निर्बिभेदातिवेगेन षड्भिश्चाप्यपरैर्नदन्
॥ ३२ ॥ स भीमसेनः शुशुभे तोमरैरङ्गमाश्रितैः । क्रोधदीप्तवपुर्मेघैः सप्तसप्तिरि
वांशुमान् ॥ ३३ ॥ ततो भास्करवर्णाभमञ्जोगतिमयस्मयम् । ससर्ज तोमरं भीमः
प्रत्यमित्राय यत्नवान् ॥ ३४ ॥ ततः कुलूताधिपतिश्चापमानम्य सायकैः । दशभिस्तोमरं
छित्वा षष्ट्या विव्याध पाण्डवम् ॥ ३५ ॥ अथ कार्मुकमादाय भीमो जलदनिस्वनम्
रिपोरभ्यर्दयन्नागमुन्नदन् पाण्डवः शरैः ॥ ३६ ॥ स शरौघार्दितो नागो भीमसेनेन
संयुगे । गृह्यमाणोऽपि नातिष्ठद्वातोद्धूत इवाम्बुदः ॥ ३७ ॥ तमभ्यधावद्द्विरदं भीमो
भीमस्य नागराट् । महावातेरितं मेघं वातोद्धूत इवाम्बुदः ॥ ३८ ॥ संनिवार्यात्मनो नाग
क्षेमधूर्त्तिः प्रतापवान् । विव्याधाभिद्रुतं बाणैर्भीमसेनस्य कुञ्जरम् ॥ ३९ ॥ ततः साधु

वादल जलोंसे व्यथित करतेहैं । ३१ । उससमय महागर्जना करते हुये क्षेमधूर्त्ती ने अत्यन्त वेगवान् दूसरे छः तोमरों से भीमसेन को छातीपर घायल किया । ३२ । क्रोध से भराहुआ भीमसेन शरीर में लगेहुये तोमरों से ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि वादलोंसे सूर्य्य शोभितहोता है । ३३ । इसके अनन्तर उपाय करनेवाले भीमसेनने सूर्य्य के समान मकाशित सीधा चलनेवाला लोहेका तोमर उसशत्रु के ऊपर फेंका । ३४ । फिर राजा कुलूतने धनुषको नवाकर दशबाणोंसे तोमरको काटकर भीमसेनको घायलकिया । ३५ । इसके अन्तर गर्जना करते भीमसेन ने बादलके समान शब्दायमान धनुषको लेकर बाणोंसे शत्रुके हाथीको घायल और पीड़ित किया । ३६ । युद्धमें भीमसेनके बाणोंसे वह हाथी पीड़ितहोकर थँभाहुआ भी ऐसे नहीं ठहरसका जैसे कि वायुसे उड़ाहुआ बादल नहीं ठहरसक्ताहै । ३७ । और भीमसेनका गजराज उसहाथीपर ऐसा दौड़ा जैसे कि वायु से उड़ा हुआ वादल बड़ीवायुसे उड़ेहुये बादलके पीछे दौड़ताहै । ३८ । फिर मतापी क्षेमधूर्त्तीने अपने हाथीको अच्छी रीतिसे रोककर शीघ्रही अपने बाणोंसे भीमसेन के हाथी

---

and tomars like showers of rain. Then Kshemdhurti, with loud roars, wounded Bhimsen with six sharp tomars on the breast. Bhim's body pierced through with the tomars looked glorious like the Sun overcast with clouds. Then Bhimsen hurled an iron tomar, bright like the sun, at his adversary. The king of Kulut, cut down the tomar with ten arrows and wounded Bhim, 35. Then Bhim, with a loud roar, took up his bow and wounded his adversary's elephant with arrows. The elephant wounded by the arrows could not be controlled and fled like a cloud blown up by the wind. Bhim's elephant chased the other like one cloud chasing another. Valiant Kshemdhurti then checked his elephant and with his arrows wounded the elephant of Bhim, and having cut down his bow with sharp

विसृष्टेन क्षुरेणानतपर्वणा । छित्वा शरासनं शत्रोर्नागमाभिश्चमार्दयत् ॥ ४० ॥ ततः क्रुद्धो रणे भीम क्षेमधूर्त्तिः पराभिनत् । जघान चास्य द्विरदं नाराचैः सर्वमर्मसु ॥ ४१॥ स पपात महानागो भीमसेनस्य भारत । पुरा नागस्य पतनादवप्लुत्य स्थितो महीम् ॥ ४२ ॥ तस्य भीमोपि द्विरदं गदया समपोथयत् तस्मात् प्रमथिताद्नागात् क्षेमधूर्त्तिमवप्लुतम । उद्यतायुधमायान्तं गदयाहन् वृकोदरः ॥ ४३ ॥ स पपात हतः सासिर्व्यसुस्तमभितो द्विपम् । वज्रभग्न मवाचलं सिंहो वज्रहतो यथा ॥ ४४ ॥ तं हतं नृपतिं दृष्ट्वा कुलूतानां यशस्करम । प्राद्रवद्व्यथिता सेना त्वदीया भरतर्षभ ॥४५ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि क्षेमधूर्त्तिवधे द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

को घायल किया इसके पीछे अच्छे प्रकार से छोड़ेहुये टेढ़ेपर्ववाले छुरमसे शत्रुके धनुषको काटकर प्रतिपक्षवाले शत्रुको पीड़ामान किया । ४० । इसके अनन्तर क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्तीने भीमसेनको घायल करके उसके हाथीको सब मर्मों में अपने नाराचोंसे घायलकिया । ४१ । हे भरतवंशी उसघायल करनेसेवह भीमसेनकाहाथी पृथ्वीपर गिरपड़ा और भीमसेन हाथीके गिरनेसे पूर्वहीं हाथी से कूदकर पृथ्वी पर नियतहुआ । ४२ । फिर भीमसेनने भी उसकेहाथीको को गदासे मारातब उस गदा से मथेहुये हाथीसे उतरेहुये और शस्त्र उठाकर आनेवाले क्षेमधूर्त्ती को भीमसेननेगदासे मारा । ४३ । और गदाकेलगतेही मृतकहोकर खड्गसमेत पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे टूटाहुआ पर्व्वत या वज्रसे मराहुआ सिंह पृथ्वी पर गिरता है । ४४ । हे भरतर्षभ उसकुलूतों के यशस्वी राजाको मृतकहुआ देखकर आपकी सेना भयभीत और पीड़ितहोकर भागी । ४५ ।

---

pointed arrows, wounded him severel y.40. Then Kshemdhurti, in a rage, wounded Bhim and his elephant in the vital parts. The elephant fell down on earth with the wounds, but Bhim jumped down from it before its fall and stood on the ground. Then Bhim slew his adversary's elephant with his mace and with the same he slew Kshemduarti too, who had come down from his elephant and was coming on towards him with his weapon upraised. Kshemdhurti, with his sword, fell down by the blow like a mountain or a lion struck down by lighting. Seeing the fall of the king of Kuluts, your army fled away terrified and distressed." 45.



सञ्जय उवाच । ततः कर्णो महेष्वासः पाण्डवानामनीकिनीम् । जघान समरे शूरः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ १ ॥ तथैव पाण्डवा राजं स्तव पुत्रस्य वाहिनीम् । कर्णस्य प्रमुखे क्रुद्धा निजघ्नुस्ते महारथाः ॥ २ ॥ कर्णोऽपि राजन् समरे व्यहनत् पाण्डवीं चमूम् । नाराचैरर्करश्म्याभैः कर्मारपरिमार्जितैः ॥ ३ ॥ तत्र भारत कर्णेन नाराचैस्ताडिता गजाः । नेदुः सेदुश्च मम्लुश्च बभ्रमुश्च दिशो दश ॥ ४ ॥ वध्यमाने बले तस्मिन् सूतपुत्रेणमारिष । नकुलोऽभ्यद्रवत्तूर्णं सूतपुत्रं महारथम् ॥ ५ ॥ भीमसेनस्तथा द्रौणिं कुर्वाणं कर्म दुष्करम् । विन्दानुविन्दौ कैकयौ सात्यकिः समवारयत् ॥ ६ ॥ श्रुतकर्माणमायान्तं चित्रसेनो महीपतिः । प्रतिविन्ध्यस्तथा चित्रं चित्रकेतनकार्मुकम् ॥ ७ ॥ दुर्योधनस्तु राजानं धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् । संशप्तकगणान् क्रुद्धान् अभ्यधावद्धनञ्जयः ॥ ८ ॥ धृष्टद्युम्नः कृपेणाथ तस्मिन् वीरवरक्षये । शिखण्डी कृतवर्माणं समादयदच्युतः

अध्याय ॥ १३ ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे बड़ेधनुषधारी शूरवीर कर्णने टेढ़ेपरूवाले बाणों से युद्धमें पांडवों की सेनाको मारा । १ । हे राजा उसीप्रकार क्रोधयुक्त उनपांडवों के महारथियों ने कर्णके देखते हुये आपके पुत्रकी सेना को मारा । २ । हे राजा फिर कर्ण नेभी सूर्यकी किरण के समान प्रकाशित चतुर कारीगरोंके साफ किये हुये नाराचों से उस युद्धमें पांडवी सेनाको मारा । ३ । तबतो कर्ण के नाराचों से घायल हुये हाथी चिग्घारैं मारनेलगे और महापीड़ित होकर दशोंदिशाओं में घूमने लगे । ४ । हे श्रेष्ठ कर्ण के हाथसे उस सेनाके घायल होनेपर शीघ्रही नकुल उस युद्धमें कर्ण के सम्मुखगया । ५ । उसीप्रकार भीमसेन ने कठिन कर्म करनेवाले अश्वत्थामा को और सात्यकीने विन्द अनुविन्दनाम केकयों को रोका । ६ । और राजा चित्रसेन ने आतेहुये श्रुतकर्माको और प्रतिविन्ध्यने अपूर्वध्वजाधारी राजा चित्रको रोका फिर राजा दुर्योधन ने धर्मपुत्र युधिष्ठिरको रोका और क्रोधयुक्त अर्जुन ने संशप्तक गणों को रोका । ८ । उस उत्तम वीरों के नाश में धृष्टद्युम्न

CHAPTER XIII

Sanjaya said, "Then great archer, Karan slew the Pandav army with his sharp arrrows. The Pandavas too, in their rage, slew the army of your sons in the presence of Karan. Karan too, slew the Pandav army with his well polished arrows bright as the rays of the Sun. The elephants wounded by Karan's arrows, shrieked loudly and fled away in all directions with pain. When Karan was thus destroying the armies, Nakul opposed him. 5. Bhimsen checked valiant Ashwathama and Satyaki opposed Vind and Anuvind the Kaikaya princes. Prince Chitrasen checked advancing Shrutkarma, while Prativandhya opposed Chitra the possessor of a

॥ ९ ॥ श्रुतकीर्तिस्तथा शल्यं माद्रीपुत्रः सुतं तव । दुःशासनं महाराज सहदेवः प्रतापवान् ॥ १० ॥ केकयौ सात्यकिं युद्धे शरवर्षेण भास्वता । सात्यकिः केकयौ चापि छादयामास भारत ॥ ११ ॥ तावेनं भ्रातरौ वीरौ जघ्नतुर्हृदये भृशम् । विषाणाभ्यां यथा नागौ प्रतिनागं महावने ॥ १२ ॥ शरसंभिन्नवर्माणौ तावुभौ भ्रातरौ रणे । सात्यकिं सत्यकर्माणं राजन् विव्यधतुः शरैः ॥ १३ ॥ तौ सात्यकिर्महाराज प्रहसन् सर्वतो दिशः । छादयन् शरवर्षेण वारयामास भारत ॥ १४ ॥ वार्यमाणौ ततस्तौ हि शैनेयशरवृष्टिभिः । शैनेयस्य रथं तूर्णं छादयामासतुः शरैः ॥ १५ ॥ तयोस्तु धनुषी छित्त्वा शौरिर्महायशाः । अथ तौ सायकैस्तीक्ष्णैर्वारयामास संयुगे ॥ १६ ॥ अथान्ये धनुषी चित्रे प्रगृह्य च महाशरान् । सात्यकिं छादयन्तौ तौ चेरतुर्लघु सुष्ठु च ॥ १७ ॥ ताभ्यां

कृपाचार्य से लड़नलगा और शिखण्डी के सम्मुख अजेय कृतवर्मा नियत हुआ ।९। हे महाराज इसीप्रकार श्रुतकीर्ति ने शल्यको और माद्रीके पुत्र सहदेवने आपके पुत्र दुश्शासनको रोका ।१०। दोनों केकयोंने युद्धमें प्रकाशित बाणों की वर्षासे सात्यकी को आघेरा सात्यकी ने बाणों से केकयों को ढक दिया । ११ । हे भरतवंशी उन दोनों वीर भाइयों ने उसको हृदय पर ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि बन में सम्मुख आनेवाले दो हाथी अकेले हाथीको अपने दांतों से घायल करते हैं । १२ । हे राजा बाणों से टूटेहुये कवचवाले सात्यकी को दोनों भाइयों ने बड़ा घायल किया । १३ । फिर सात्यकी ने हँसतेहुये बाणों की वर्षा करके उन दोनोंको सब ओरसे रोका । १४ । इसके पीछे सात्यकी के बाणों से रुके हुये उनदोनों ने शीघ्रही बाणोंसे सात्यकिके रथको ढक दिया ।१५। फिर इसबड़े यशस्वी सूर्यवंशी सात्यकि ने उन दोनों के छत्र और धनुषों को काटकर उन दोनों को अपने तीक्ष्ण सायकों से रोका । १६ । तबतो उनदोनों ने दूसरे धनुषों को लेकर को ढकदिया और बहुत शीघ्रही शोभायुक्त होकर फिरनेलगे । १७ । और कंक

wonderful standard. Prince Duryodhan encountered Yudhishthir the just and Arjun fell upon the Sansaptaks. During the destructive battle Dhrishtadyumn fought with Kripacharya and Shikhandi with invincible Kritvarma. Similarly, Shrutkirti opposed Shalya, and Sahadev the son of Madri opposed your son Dushasan. 13. The two Kaikaya princes showered bright arrows over Satyaki. The two brave warriors wounded him hard on the breast as two furious elephants wound a single elephant in a forest with their tusks. The armour of Satyaki was pierced by their arrows. Then Satyaki, a smile, checked the two brothers with his arrows. Checked by Satyaki's arrows, they soon covered his car with their darts. 15. Then glorious Satyaki of Sur family, cut down their umbrellas and and wounded them with his sharp arrows. They took up other

मुक्ता महाबाणाः कङ्कबर्हिणवाससः । द्योतयन्तो दिशः सर्वाः संपेतुः स्वर्णभूषणाः ॥ १८ ॥ बाणान्धकारमभवत् तयो राजन्महामृधे । अन्योन्यस्य धनुश्चैव चिच्छिदुस्ते महारथाः ॥ १९ ॥ तत क्रुद्धो महाराज सात्वतो युद्धदुर्मदः । धनुरन्यत् समादाय सज्यं कृत्वा च संयुगे । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन अनुविन्दशिरोऽहरत् ॥ २० ॥ अपतत्सच्छिरो राजन्कुण्डलोपाचितं महत् ॥ २१ ॥ शम्बरस्य शिरो यद्वन्निहतस्य महारणे । शोचयन्केकयान् सर्वान् जगामाशु वसुन्धराम् ॥ २२ ॥ तं दृष्ट्वा निहतं शूरं भ्राता तस्य महारथः । सज्यमन्यद्धनुः कृत्वा शैनेयं पर्यवारयत् ॥ २३ ॥ स षष्ट्या सात्यकिं विद्ध्वा स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः । ननाद बलवन्नादं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ २४ ॥ सात्यकिञ्च ततस्तूर्णं केकयानां महारथः । शरैरनेकसाहस्रैर्बाहूोरसि चार्पयत् ॥ २५ ॥ स शरैः क्षतसर्वाङ्गः सात्यकिः सत्यविक्रमः । रराज समरे राजन् सपुष्प इव किंशुकः

और मोरपंखों से शोभित दोनों के छोड़हुये प्रकाशित बाण सब ओरको गिरे । १८ । हे राजा उस महाभारी युद्धमेंउनदोनों के बाणों से अन्धकार सा छागया उस समय उन महारथियों ने परस्पर में एकने दूसरे के धनुषको काटा ।१९। इसके पीछे क्रोधभरे युद्ध में दुर्मदसात्यकि ने दूसरे धनुषको लेकर और तय्यारी करके युद्धमें बड़े तीक्ष्णक्षुरप्र से अनुविन्द के शिरको काटा । २० । हे राजा वह कुंडलों से अलंकृत महाभारी शिर । २१ । बड़े युद्धमें मरेहुये शम्बर के शिरके समान सब केकय लोगों को शोचताहुआ पृथ्वीपर गिरा ।२२। उस शूरवीर को मृतक देखकर उसके भाई महारथी ने दूसरे धनुष को तैयार करके सात्यकी को रोका । २३ । वह सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधारवाले साठबाणों से सात्यकी को घायल करके तिष्ठ तिष्ठ वचन के साथ बड़े वेगसे गर्जा । २४ । इसके पीछे केकयों के महारथी ने हजारों बाणों से बहुत शीघ्रता पूर्वक भुजा और छातीपर घायल किया । २५ । हे राजा बाणों से विदीर्ण सर्वांग सात्यकी युद्धमें ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूला हुआ किंशुकका वृक्ष होता है । २६ । युद्धमें महात्मा केकय के हाथसे घायल और

and covered Satyaki with their arrows and walked hither and thither gloriously. Decked with vulture and peacock feathers, their arrows fell on all sides and spread darkness in all directions. Then they cut down each other's bows. Then valiant Satyaki, much enraged, having prepared another bow, cut off the head of Anuvind with a sharp arrow. 20. The huge head, decked with rings, fell down like Samvar's head to the grief of all. Seeing that warrior dead, his brother prepared another bow and checked Satyaki. Having wounded Satyaki with sixty arrows of golden feathers and sharp edges, he said to him, "Stay, stay," and roared loudly. Then the Kaikaya warrior, wounded him with many arrows on the arms and breast. 25. With his body pierced through by arrows, Satyaki looked glorious

॥ ९ ॥ श्रुतकीर्त्तिस्तथा शल्यं माद्रीपुत्रः सुतं तव । दुःशासनं महाराज सहदेवः प्रत्य-
वारयत् ॥ १० ॥ केकयौ सात्यकिं युद्धे शरवर्षेण भास्वता । सात्यकिः केकयौ चापि
छादयामास भारत ॥ ११ ॥ तावेनं भ्रातरौ वीरौ जघ्नतुर्हृदये भृशम् । विषाणाभ्यां यथा
नागौ प्रतिनागं महावने ॥ १२ ॥ शरसंभिन्नवर्माणौ तावुभौ भ्रातरौ रणे । सात्यकिं
सत्यकर्माणं राजन् विव्यधतुः शरैः ॥ १३ ॥ तौ सात्यकिर्महाराज प्रहसन् सर्वतो दिशः ।
छादयन् शरवर्षेण वारयामास भारत ॥ १४ ॥ वार्यमाणौ ततस्तौ हि शैनेयशरवृ-
ष्टिभिः । शैनेयस्य रथं तूर्णं छादयामासतुः शरैः ॥ १५ ॥ तयोस्तु धनुषी छित्त्वा
शौरिर्महायशाः । अथ तौ सायकैस्तीक्ष्णैर्वारयामास संयुगे ॥ १६ ॥ अथान्ये धनुषी चित्रे
प्रगृह्य च महाशरान् । सात्यकिं छादयन्तौ तौ चेरतुर्लघु सुष्ठु च ॥ १७ ॥ तावा

कृपाचार्य से लड़नलगा और शिखण्डी के सम्मुख अजेय कृतवर्मा नियत हुआ ।९।
हे महाराज इसीप्रकार श्रुतकीर्ति ने शल्यको और माद्रीके पुत्र सहदेवने आपके पुत्र
दुश्शासनको रोका ।१०। दोनों केकयोंने युद्धमें प्रकाशित बाणों की वर्षासे सात्यकी
को आघेरा सात्यकी ने बाणों से केकयों को ढक दिया । ११ । हे भरतवंशी उन
दोनों वीर भाइयों ने उसको हृदय पर ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि वन में
सम्मुख आनेवाले दो हाथी अकेले हाथीको अपने दाँतों से घायल करते हैं । १२ ।
हे राजा बाणों से टूटेहुये कवचवाले सात्यकी को दोनों भाइयों ने बड़ा घायल
किया । १३ । फिर सात्यकी ने हँसतेहुये बाणों की वर्षा करके उन दोनोंको सब
ओरसे रोका । १४ । इसके पीछे सात्यकी के बाणों से रुके हुये उनदोनों ने शीघ्रही
बाणोंसे सात्यकीके रथको ढक दिया ।१५। फिर इसबड़े यशस्वी सूरवंशी सात्यकि
नें उन दोनों के छत्र और धनुषों को काटकर उन दोनों को अपने तीक्ष्ण
शायकों से रोका । १६ । तबतो उनदोनों ने दूसरे धनुषों को लेकर सात्यकि
को ढकादिया और बहुत शीघ्रही शोभायुक्त होकर फिरनेलगे । १७ । और कंक

wonderful standard. Prince Duryodhan encountered Yudhishthir the just and Arjun fell upon the Sansaptaks. During the destructive battle Dhrishtadyumn fought with Kripacharya and Shikhandi with invincible Kritvarma. Similarly, Shrutkirti opposed Shalya, and Sahadev the son of Mádri opposed your son Dushasan, 13. The two Kaikaya princes showered bright arrows over Satyaki. The two brave warriors wounded him hard on the breast as two furious elephants wound a single elephant in a forest with their tusks. The armour of Satyaki was pierced by their arrows. Then Satyaki, ... a smile, checked the two brothers with his arrows. Checked by Satyaki's arrows, they soon covered his car with their darts, 15. Then glorious Satyaki of Sur family, cut down their umbrellas and bows and wounded them with his sharp arrows. They took up other bo-

मुक्ता महाबाणाः कङ्कबर्हिणवाससः । द्योतयन्तो दिशः सर्वाः संपेतुः स्वर्णभूषणाः ॥ १८ ॥ बाणान्धकारमभवत् तयो राजन्महामृधे । अन्योन्यस्य धनुश्चैव चिच्छिदुस्ते महारथाः ॥ १९ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज सात्वतो युद्धदुर्मदः । धनुरन्यत् समादाय सज्यं कृत्वा च संयुगे । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन अनुविन्दशिरोऽहरत् ॥ २० ॥ अपतत्सच्छिरो राजन् कुण्डलोपचितं महत् ॥ २१ ॥ शम्बरस्य शिरो यद्वन्निहतस्य महारणे । शोचयन् केकयान् सर्वान् जगामाशु वसुन्धराम् ॥ २२ ॥ तं दृष्ट्वा निहतं शूरं भ्राता तस्य महारथः । सज्यमन्यद्धनुः कृत्वा शैनेयं पर्यवारयत् ॥ २३ ॥ स षष्ट्या सात्यकिं विद्ध्वा स्वर्णपुंखैः शिलाशितैः । ननाद बलवन्नादं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ २४ ॥ सात्यकिं च ततस्तूर्णं केकयानां महारथः । शरैरनेकसाहस्रैर्बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ २५ ॥ स शरैः क्षतसर्वाङ्गः सात्यकिः सत्यविक्रमः । रराज समरे राजन् सपुष्प इव किंशुकः

और मोरपक्षों से शोभित दोनों के छोड़हुये प्रकाशित बाण सब ओरको गिरे । १८ । हे राजा उस महाभारी युद्धमेंउनदोनों के बाणों से अन्धकार सा छागया उस समय उन महारथियों ने परस्पर में एकने दूसरे के धनुषको काटा । १९ । इसके पीछे क्रोधभरे युद्ध में दुर्मदसात्यकि ने दूसरे धनुषको लेकर और तय्यारी करके युद्धमें बड़े तीक्ष्णक्षुरप्र से अनुविन्द के शिरको काटा । २० । हे राजा वह कुंडलों से अलंकृत महाभारी शिर । २१ । बड़े युद्धमें मरेहुये सम्बर के शिरके समान सब केकय लोगों को शोचताहुआ पृथ्वीपर गिरा । २२ । उस शूरवीर को मृतक देखकर उसके भाई महारथी ने दूसरे धनुष को तैयार करके सात्यकी को रोका । २३ । वह सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधारवाले साठबाणों से सात्यकी को घायल करके तिष्ठ तिष्ठ वचन के साथ बड़े वेगसे गर्जा । २४ । इसके पीछे केकयों के महारथी ने हजारों बाणों से बहुत शीघ्रता पूर्वक भुजा और छातीपर घायल किया । २५ । हे राजा बाणों से विदीर्ण सर्वांग सात्यकी युद्धमें ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूला हुआ किंशुकका वृक्ष होता है । २६ । युद्धमें महात्मा केकय के हाथसे घायल और

and covered Satyaki with their arrows and walked hither and thither gloriously. Decked with vulture and peacock feathers, their arrows fell on all sides and spread darkness in all directions. Then they cut down each other's bows. Then valiant Satyaki, much enraged, having prepared another bow, cut off the head of Anuvind with a sharp arrow. 20. The huge head, decked with rings, fell down like Samvar's head to the grief of all. Seeing that warrior dead, his brother prepared another bow and checked Satyaki. Having wounded Satyaki with sixty arrows of golden feathers and sharp edges, he said to him, "Stay, stay," and roared loudly. Then the Kaikaya warrior, wounded him with many arrows on the arms and breast. 25. With his body pierced through by arrows, Satyaki looked glorious

॥ २६ ॥ सात्यकिः समरे विद्धः कैकेयेन महात्मना । कैकेयं पञ्चविंशत्या विव्याध प्रहसन्निव ॥ २७ ॥ तावन्योन्यस्य समरे सञ्छिद्य धनुषी शुभे । हत्वा च सारथिं तूर्णं हयांश्च रथिनांवरौ । विरथावसियुद्धाय समाजग्मतुराहवे ॥ २८ ॥ शतचन्द्रचितं गृह्य चर्मणी सुभुजौ तथा ॥ २९ ॥ व्यरोचेतां ममाऽऽक्रे निस्त्रिंशवरधारिणौ । यथा देवासुरे युद्धे जम्भशक्रौ महाबलौ ॥ ३० ॥ मण्डलानि ततस्तौ तु विचरन्तौ महारणे । अन्योन्यमभितस्तूर्णं समाजग्मतुराहवे । अन्योन्यस्य वधे चैव चक्रतुर्यत्नमुत्तमम् ॥ ३१ ॥ कैकेयस्य द्विधाचर्म ततश्चिच्छेद सात्वतः । सात्यकेस्तु तथैवासौ चर्म चिच्छेद पार्थिवः ॥ ३२ ॥ चर्म छित्वा तु कैकेयस्तारागणशतैर्वृतम् । चचार मण्डलान्येव गत प्रत्यागतान्यपि ॥ ३३ ॥ तं चरन्तं महारङ्गे निस्त्रिंशवरधारिणम् । अपहस्तेन चिच्छेद शैनेयस्त्वरयान्वितः ॥ ३४ ॥ सवर्मा कैकयो राजन् द्विधा छिन्नो महारणे । निपपात

हँसते हुये सात्यकी ने कैकेयको पचीस बाणों से घायल किया । २७ । वह रथियों में श्रेष्ठ युद्धमें एक दूसरे के शुभ धनुषको काटकर बड़ी शीघ्रतासे घोड़े और सारथियों को मारकर रथसे उतरकर युद्धमें खड्गों से प्रहार करने के लिये सम्मुख हुए । २८ । वह सुन्दर भुजा और उत्तम खड्ग धारण करनेवाले दोनों शूरवीर चन्द्रसूर्य्य के चिह्नवाली ढालोंको लेकर उस महायुद्ध में ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि देवासुर युद्धमें महाबली इंद्र और जंभशोभित हुयेथे । ३० । इसके पीछे युद्धमें मंडलों को घूमते शीघ्रही परस्पर में सम्मुख हुये । ३१ । और एक २ ने दूसरे के मारने में बड़े २ उपायकिये इसके पीछे सात्यकि ने कैकेयकी ढालके दो खंडकिये । ३२ । इसी प्रकार वह राजाभी सात्यकि की सैकड़ों नक्षत्रों से चिह्नित ढालको काटकर दाहिने और बायें मंडलों से घूमा । ३३ । फिर सात्यकि ने उस बड़ेयुद्धमें शीघ्रता से घूमने वाले कैकेयको तिरछेहाथ से मारडाला । ३४ । हे राजा वह कैकेय उस घोरयुद्ध में कवच समेत दो खंड होकर ऐसे पृथ्वी में गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे

like a *kinshuk* tree in bloom. Wounded by the Kaikaya warrior, Satyaki, with a smile, wounded his adversary with twentyfive arrows. They cut and killed each other's bows, horses and drivers, and then coming down from their cars they stood ready to fight with swords. Possessing goodly arms and swords, they took up shields having the figures of suns and moons on them and looked glorious like Indra and Jambh in the war between the gods and asurs. 30. Then moving in circles, they opposed each other, each trying to slay the other. Satyaki broke the Kaikaya's shield into two parts. Similarly that king too, having cut down Satyaki's shield, with moons and stars on it, moved in right and left circles. Then Satyaki slew that prince with a slanting sword thrust. His mailed body was

महेष्वासो वज्राहत इवाचलः ॥ ३५ ॥ ते निहत्य रणे शूरः शैनेयो रथिनां वरः । युधामन्युरथं तूर्णमारुरोह परन्तपः ॥ ३६ ॥ ततोऽन्यं रथमास्थाय विधिवत् कल्पितं पुनः । कैकेयानां महत् सैन्यं व्यधमत् सात्यकिः शरैः । ३७ ॥ सा वध्यमाना समरे कैकेयानां महाचमूः । तमुत्सृज्य रणे शत्रुं प्रदुद्राव दिशो दश ॥ ३८ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि विन्दानुविन्दवधे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

सञ्जय उवाच । श्रुतकर्मा ततो राजंश्चित्रसेनं महीपतिम् । आजघ्ने समरे क्रुद्धः पञ्चाशद्भिः शिलीमुखैः ॥ १ ॥ अभिसारस्तु तं राजन्नवभिर्निशितैः शरैः । श्रुतकर्माण माहत्य सूतं विव्याध पञ्चभिः ॥ २ ॥ श्रुतकर्मा ततः क्रुद्धश्चित्रसेनं चमूमुखे । नाराच

घायल पर्वत गिरताहै। ३५। इसरीतिसे रथियों मेंश्रेष्ठ शूरवीर सात्यकिने उस युद्ध में उसको मारा फिर वह शत्रुहन्ता शीघ्रही युधामन्यु के रथपर सवार हुआ । ३६ । और थोड़े समय पीछे सात्यकि ने बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर बाणों से कैकेयों की बड़ी सेनाको मारा । ३७ युद्ध में वह कैकेयों की बड़ी सेना महाघायल होकर उस सात्यकि को छोड़कर दशोंदिशाओं को भागी । ३८ ।

अध्याय ॥ १४ ॥

सञ्जय बोले कि हेराजा इसके पीछे युद्धमें क्रोधभरे श्रुतकर्मा ने राजाचित्रसेन को पचास बाणों से घायल किया । १ । फिर चित्रसेन ने टेढ़ेपुंखवाले नौ बाणों से श्रुतकर्मा को घायल करके पांच बाणों से उसके सारथी को घायल किया । २ । इसके अनन्तर सेनामुखपर क्रोधयुक्त श्रुतकर्मा ने चित्रसेनको अत्यन्त

out into two and he fell down like a hill struck down by lightning. Thus Satyaki the best of warriors, having slain his adversary, mounted the car of Yudhamanyu. Mounted on another car, he slew other Kaikaya warriors. The great army of Kaikayas left Satyaki and fled away in all directions. 38 .

CHAPTER XIV

Sanjaya said, "Then Shrutkarma, much enraged, wounded Prince Chitra with fifty arrows. Chitrasen wounded him with nine arrows and his adversary with five. Then Shrutkarma, much enraged, wounded Chitrasen with many arrows in the vital parts.

चेन सुतीक्ष्णेन मर्मदेशे समार्पयत् ॥ ३ ॥ सोतिविद्धो महाराज नाराचेन महात्मनः ।
मूर्च्छामभिययौ वीरः कश्मलञ्च विवेश ह ॥ ४ ॥ एतस्मिन्नन्तरे चैनं श्रुतकीर्तिर्महा
यशाः । नवत्या जगतीपालं छादयामास पत्रिभिः ॥ ५ ॥ प्रतिलभ्य ततः संज्ञां चित्र
सेनो महारथः । धनुश्चिच्छेद भल्लेन तञ्च विव्याध सप्तभिः ॥ ६ ॥ सोन्यत् कार्मुक
मादाय वेगघ्नं रुक्मभूषणम् । चित्ररूपधरं चक्रे चित्रसेनं शरोर्मिभिः ॥ ७ ॥ स शरै
श्चित्रितो राजा चित्रमाला धरो युवा । युवेव समरे शोभद्गोष्ठीमध्ये स्वलंकृतः ॥ ८ ॥
श्रुतकर्माणमथ वै नाराचेन स्तनान्तरे । बिभेद तरसा राजंस्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ९ ॥
श्रुतकर्मापि समरे नाराचेन समर्पितः । सुस्राव रुधिरं तत्र गैरिकार्द्र इवाचलः ॥ १० ॥
ततः स रुधिराक्ताङ्गो रुधिरेण कृतच्छविः । रराज समरे वीरः सपुष्प इव किंशुकः
॥ ११ ॥ श्रुतकर्मा तदा राजन् शत्रुणा समभिद्रुतः । शत्रुसंवारणं क्रुद्धो द्विधा चिच्छेद

तीक्ष्ण बाणों से मर्मस्थल में घायल किया । ३ । हे महाराज उस महात्माके नाराच
से अत्यन्त घायल होकर वह वीर मूर्च्छायुक्त होकर निश्चेष्ट होगया । ४ । इसी
अन्तरमें बड़े यशस्वी श्रुतकीर्ति ने नब्बे बाणों से इस राजाको भी ढकदिया ।५।
इसके पीछे महारथी चित्रसेनने सावधान होकर भल्लसे उसके धनुषको काटकर
सातबाणों से उसको घायल किया । ६ । फिर उसने वेगके नाशकरने वाले
स्वर्ण से भूषित दूसरे धनुषको लेकर बाणों की तरंगों से चित्रसेनको विचित्ररूप
धारी किया । ७ । वह युवावस्थावाला सुन्दरमाला युक्त बाणों से वेधित होकर
ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि सभामें अच्छा अलंकृत मनुष्य होता है । ८ । फिर
उस शूरनेवेगसे श्रुतकर्माको नाराचसे छातीपर विदीर्णकर तिष्ठतिष्ठ शब्द उच्चा
रणकिया । ९ । वहां नाराचसे घायल होकर श्रुतकर्मा ने भी युद्ध में रुधिरको
ऐसे गिराया जैसे कि पर्वतीय धातुओं से संयुक्त पर्वत रक्तवर्ण के जलकोडालता
है ।१० । इसकेपीछे वह रुधिरसे रक्तशरीरसे युद्धमें ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि
फूलाहुआ किंशुकका वृक्षहोता है । ११ । इसके पीछे शत्रुसे आघात पानेवाले क्रोध-

Wounded by those arrows, the prince fell into a swoon and became motionless. In the meantime Shrutkirti covered him with ninety arrows. 5. Chitra regaining consciousness, cut down his bow and wounded him with seven arrows. He took another wonderful bow and made the body of Chitrasen a study, with the flight of his arrows. That youth, decked with garland, looked glorious like a great man surrounded by a multitude. Then he wounded Shrutkarma with an arrow on the breast and said "Stay, stay." Wounded with that arrow, Shrutkarma dropped blood as a mountain of red stone flows red water from its sides. 10. With his body red on account of the oozing of blood, he looked glorious like a kinshuk tree in bloom. Wounded by the enemy, Shrutkarma cut into two the bow of his

चैव सुतीक्ष्णेन मर्मस्वेव समार्पयत् ॥ ३ ॥ सोतिविद्धो महाराज नाराचेन महात्मना । मूर्च्छामभिययौ वीरः कश्मलञ्च विवेश ह ॥ ४ ॥ एतस्मिन्नन्तरे चैव श्रुतकीर्तिर्महायशाः । नवत्या जगतीपालं छादयामास पत्रिभिः ॥ ५ ॥ प्रतिलभ्य ततः संज्ञां चित्रसेनो महारथः । धनुश्चिच्छेद भल्लेन तञ्च विव्याध सप्तभिः ॥ ६ ॥ सोन्यत् कार्मुकमादाय वेगघ्नं रुक्मभूषणम् । चित्ररूपधरं चक्रे चित्रसेनं शरोर्मिभिः ॥ ७ ॥ स शरैश्चित्रितो राजा चित्रमाल्यधरो युवा । युवेव समरे शोभद्गोष्ठीमध्ये स्वलंकृतः ॥ ८ ॥ श्रुतकर्माणमथ वै नाराचेन स्तनान्तरे । बिभेद तरसा राजंस्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ९ ॥ श्रुतकर्मापि समरे नाराचेन समर्पितः । सुस्राव रुधिरं तत्र गैरिकाद्रिरिवाचलः ॥ १० ॥ ततः स रुधिराक्ताङ्गो रुधिरेण कृतच्छविः । रराज समरे वीरः सपुष्प इव किंशुकः ॥ ११ ॥ श्रुतकर्मा ततो राजन् शत्रुणा समभिद्रुतः । शत्रुसंवारणं क्रुद्धो द्विधा चिच्छेद

तीक्ष्ण बाणों से मर्मस्थल में घायल किया । ३ । हे महाराज उस महात्माके नाराच से अत्यन्त घायल होकर वह वीर मूर्च्छायुक्त होकर निश्चेष्ट होगया । ४ । इसी अन्तरमें बड़े यशस्वी श्रुतकीर्त्ति ने नब्बे बाणों से इस राजाको भी ढकदिया ।५। इसके पीछे महारथी चित्रसेनने सावधान होकर भल्लसे उसके धनुषको काटकर सातबाणों से उसको घायल किया । ६ । फिर उसने वेगके नाशकरने वाले स्वर्ण से भूषित सोम धनुषको लेकर बाणों की तरंगों से चित्रसेनको विचित्ररूप धारी किया । ७ । वह युवावस्थावाला सुन्दरमाला युक्त बाणों से वेधित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि सभामें अच्छा अलंकृत मनुष्य होता है । ८ । फिर उस शूरनेवेगसे श्रुतकर्माको नाराचसे छातीपर विदीर्णकर तिष्ठतिष्ठ शब्द उच्चारणकिया । ९ । वहां नाराचसे घायल होकर श्रुतकर्मा ने भी युद्ध में रुधिरको ऐसे गिराया जैसे कि पर्वतीय धातुओं से संयुक्त पर्वत रक्तवर्ण के जलकोडालता है ।१०। इसकेपीछे वह रुधिरसे रक्तशरीरसे युद्धमें ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि फूलाहुआ किंशुकका वृक्षहोता है । ११ । इसके पीछे शत्रुसे भयात पानेवाले क्रोध-

Wounded by those arrows, the prince fell into a swoon and became motionless. In the meantime Shrutkirti covered him with ninety arrows. 5. Chitra regaining consciousness, cut down his bow and wounded him with seven arrows. He took another wonderful bow and make the body of Chitrasen a study, with the flight of his arrows. That youth, decked with garland, looked glorious like a great man surrounded by a multitude. Than he wounded Shrutkarma with an arrow on the breast and said "Stay, stay." Wounded with that arrow, Shrutkarma dropped blood as a mountain of red stone flows red water from its sides. 10. With his body red on account of the oozing of blood, he looked glorious like a kinshuk tree in bloom. Wounded by the enemy, Shrutkarma cut into two the bow of his

द्रोणपुत्रमयस्ताय सिंहनाद ममुञ्चत ॥ ४ ॥ वारैः शरांस्ततो द्रौणिः संवार्य्य युधि पाण्डवम् । ललाटेऽभ्यहनद्राजन् नाराचेन स्मयन्निव ॥ ५ ॥ ललाटस्थं ततो बाणं धारयामास पाण्डवः । यथा शृङ्गं वने दृप्तः खड्गी धारयते नृप ॥ ६ ॥ ततो द्रौणिं रणे भीमो यतमानं पराक्रमी । त्रिभिर्विव्याध नाराचैर्ललाटे विस्मयन्निव ॥ ७ ॥ ललाटस्थैस्ततो बाणैर्ब्राह्मणोऽसौ व्यशोभत । प्रावृषीव यथा सिक्तस्त्रिशृङ्गः पर्वतोत्तमः ॥ ८ ॥ ततः शरशतैर्द्रौणिरर्दयामास पाण्डवम् । न चैनं कम्पयामास मातरिश्वेव पर्वतम् ॥ ९ ॥ तथैव पाण्डवो युद्धे द्रौणिं शरशतैः शितैः । नाकम्पयत संहृष्टो वार्य्योघ इव पर्वतम् ॥ १० ॥ तावन्योन्यं शरैर्घोरैश्छादयानौ महारथौ । रथचर्य्यागतौ वीरौ शुशुभाते बलोत्कटौ ॥ ११ ॥ आदित्याविव संदीप्तौ लोकक्षयकरावुभौ । स्वरश्मिभिरिवान्योन्यं तापयन्तौ शरोत्तमैः ॥ १२ ॥ ततः प्रतिकृते यत्नं कुर्वाणौ तौ महारणे । कृतप्रतिकृते यत्नौ

। ४ । इसके अनन्तर मंदमुसकान करतेहुये अश्वत्थामा ने बाणों को रोककर भीमसेनको नाराचों से ललाटपर घायलकिया । ५ । तब भीमसेनने ललाटपर वर्त्तमान बाणों को ऐसे धारणकिया जैसे कि गेंडा सींग को धारणकरता है । ६ । फिर मन्दमुसकान करते पराक्रमी भीमसेनने युद्धमें उपाय करने वाले अश्वत्थामाको तीन नाराचों से ललाटपर वेधा । ७ । तब वह ब्राह्मण ललाट पर नियतहुये बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि जलसे सींचा हुआ तीन शिखर रखनेवाला उत्तम पर्वत होता है । ८ । इसके पीछे अश्वत्थामा ने सैकड़ों बाणों से भीमसेन को पीड़ित किया परन्तु उसको ऐसे कम्पायमान न करसका जैसे कि वायु पर्व्वतको नहीं कंपासक्ता । ९ । फिर अत्यन्त प्रसन्न पांडुनन्दन भीमसेन ने भी इसको ऐसे कंपायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्व्वत को कंपायमान नहीं करसक्ता । १० । परस्पर घोर बाणों से ढकतेहुये उत्तम रथोंपर सवार पराक्रम से मतवाले वह दोनों महारथी शूरवीर महा शोभायमान हुये । ११ । फिर वह दोनों सूर्य्य के समान प्रकाशित लोकके नाशक अपने तेजों समेत उत्तम २ बाणों से परस्पर

smiling slowly, checked Bhim's arrows and wounded him on the forehead. The arrow stuck to the forehead of Bhim like the horn of a rhinoceros. 6. Then he wounded Ashwathama with three arrows on the forehead. The Brahman, with the arrows stuck to his forehead, looked like a three peaked mountain with its waterfalls. Then Ashwathama wounded Bhim with hundreds of arrows, but could not shake him as the wind cannot shake a mountain. Similarly, Bhimsen of cheerful mind could not shake him as a stream of water is unable to shake a mountain. 10. Hiding each other with dreadful arrows, mounted on excellent cars, proud of their prowess, the two brave warriors, were very glorious to behold. Bright like the Sun the two

माने समन्ततः । द्रौणिरेकोऽप्ययात्तूर्णं भीमसेनं महाबलम् ॥ ३८ ॥ ततः समागमो घोरो बभूव सहसा तयोः । यथा देवासुरे युद्धे वृत्रवासवयोरिभूत् ॥ ३९ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि चित्रवधे चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

सञ्जय उवाच । भीमसेनं ततो द्रौणी राजन् विव्याध पत्रिणा । परया त्वरया युक्तो दर्शयन्नस्त्रलाघवम् ॥ १ ॥ तथैव पुनराजघ्ने नवत्या निशितैः शरैः । सर्वमर्माणि संप्रेक्ष्य मर्मज्ञो लघुहस्तवत् ॥ २ ॥ भीमसेनः समाकीर्णो द्रौणिना निशितैः शरैः । रराज समरे राजन्रश्मिमानिव भास्करः ॥ ३ ॥ ततः शरसहस्रेण सुप्रयुक्तेन पाण्डवः ।

से घायल होकर भागजाने पर अकेले अश्वत्थामा शीघ्रही महाबली भीमसेन के सम्मुख गये । १८ । इसके पीछे अकस्मात् उन दोनोंका परस्पर में भिड़ना ऐसा महा भयकारी हुआ जैसा कि देवासुरोंके युद्धमें वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा ।१९।

अध्याय ॥ १५ ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे बड़ी शीघ्रतायुक्त अस्त्रोंकी तीव्रता दिखाते हुये अश्वत्थामा ने बाणसे भीमसेन को घायल किया । १ । फिर मर्मज्ञ हस्तलाघवी अश्वत्थामा ने सबमर्मों को जानकर तीक्ष्ण धारवाले नब्बे बाणों से भीमसेन को घायल किया । २ । हे राजा अश्वत्थामा के तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे छिदाहुआ भीमसेन युद्धमें सूर्यके समान शोभायमान हुआ । ३ । इसके पीछे भीमसेनने अच्छी रीति से फेंके हुये हजारबाणों से अश्वत्थामा को ढककर बड़ाभारी सिंहनाद किया

the wind. At the dispersion of that army Ashwathama, alone encountered Bhim and their fighting was dreadful, like that of Vritrasur and Indra." 39.

CHAPTER XVI

Sanjaya continued, "Then Ashwathama, showing his wounded Bhim with his arrows. Dexterous Ashwathama, who the vital parts well, wounded Bhimsen with ninety arrows. P by Ashwathama's sharp arrows, Bhimsen looked glorious like Sun. Then Bhim covered Ashwathama with a thousand discharged arrows and roared a loud roar. Then

द्रोणपुत्रमथस्माय सिंहनाद मसुञ्चत ॥ ४ ॥ शरैः शरांस्ततो द्रौणिः संवार्य्य युधि पाण्डवम् । ललाटेऽभ्यहनद्राजन् नाराचेन स्मयन्निव ॥ ५ ॥ ललाटस्थं ततो बाणं धारयामास पाण्डवः । यथा शृङ्गं वने दृप्तः खड्गी धारयते नृप ॥ ६ ॥ ततो द्रौणिं रणे भीमो यतमानं पराक्रमी । त्रिभिर्विव्याध नाराचैर्ललाटे विस्मयन्निव ॥ ७ ॥ ललाटस्थैस्ततो बाणैर्ब्राह्मणोसौ व्यशोभत । प्रावृषीव यथा सिक्तस्त्रिशृङ्गः पर्वतोत्तमः ॥ ८ ॥ ततः शरशतैर्द्रौणिरर्दयामास पाण्डवम् । न चैनं कम्पयामास मातरिश्वेव पर्वतम् ॥ ९ ॥ तथैव पाण्डवो युद्धे द्रौणिं शरशतैः शितैः । नाकम्पयत संहृष्टो वार्य्योघ इव पर्वतम् ॥ १० ॥ तावन्योन्यं शरैर्घोरैश्छादयानौ महारथौ । रथचर्य्यागतौ वीरौ शुशुभाते बलोत्कटौ ॥ ११ ॥ आदित्याविव संदीप्तौ लोकक्षयकरावुभौ । स्वरश्मिभिरिवान्योन्यं तापयन्तौ शरोत्तमैः ॥ १२ ॥ ततः प्रतिकृते यत्नं कुर्वाणौ तौ महारणे । कृतप्रतिकृते यत्तौ

। ४ । इसके अनन्तर मंदमुसकान करतेहुये अश्वत्थामा ने बाणों को रोककर भीमसेनको नाराचों से ललाटपर घायलकिया । ५ । तब भीमसेनने ललाटपर वर्त्तमान बाणों को ऐसे धारणकिया जैसे कि गेंडा सींग को धारणकरता है । ६ । फिर मन्दमुसकान करते पराक्रमी भीमसेनने युद्धमें उपाय करने वाले अश्वत्थामाको तीन नाराचों से ललाटपर वेधा । ७ । तब वह ब्राह्मण ललाट पर नियतहुये बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि जलसे सींचा हुआ तीन शिखर रखनेवाला उत्तम पर्वत होता है । ८ । इसके पीछे अश्वत्थामा ने सैकड़ों बाणों से भीमसेन को पीड़ित किया परन्तु उसको ऐसे कम्पायमान न करसका जैसे कि वायु पर्व्वतको नहीं कंपासक्ता । ९ । फिर अत्यन्त प्रसन्न पांडुनन्दन भीमसेन ने भी इसको ऐसे कंपायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्व्वत को कंपायमान नहीं करसक्ता । १० । परस्पर घोर बाणों से ढकतेहुये उत्तम रथोंपर सवार पराक्रम से मतवाले वह दोनों महारथी शूरवीर महा शोभायमान हुये । ११ । फिर वह दोनों सूर्य्य के समान प्रकाशित लोकके नाशक अपने तेजों समेत उत्तम २ बाणों से परस्पर

smiling slowly, checked Bhim's arrows and wounded him on the forehead. The arrow stuck to the forehead of Bhim like the horn of a rhinoceros. 6. Then he wounded Ashwathama with three arrows on the forehead. The Brahman, with the arrows stuck to his forehead, looked like a three peaked mountain with its waterfalls. Then Ashwathama wounded Bhim with hundreds of arrows, but could not shake him as the wind cannot shake a mountain. Similarly, Bhimsen of cheerful mind could not shake him as a stream of water is unable to shake a mountain. 10. Hiding each other with dreadful arrows, mounted on excellent cars, proud of their prowess, the two brave warriors were very glorious to behold. Bright like the Sun the two

शरसंघैरमीतयत् ॥ १३ ॥ व्याघ्राविव च संग्रामे चेरतुस्तौ नरोत्तमौ । शरदंष्ट्रौ दुरा
धर्षौ चापवक्त्रौ भयङ्करौ ॥ १४ ॥ अभूतां तावदृश्यौ च शरजालैः समन्ततः । मेघ
जालैरिवच्छन्नौ गगने चन्द्रभास्करौ ॥ १५ ॥ प्रकाशेते मुहूर्तेन ततस्तावप्यरिन्दमौ ।
विमुक्ताबभ्रजालेन अङ्गारकबुधाविव ॥ १६ ॥ अथ तत्रैव संग्रामे वर्त्तमाने सुदारुणे ।
अपसव्य ततश्चक्रे द्रौणिस्तत्र वृकोदरम् ॥ १७ ॥ किरञ्छरशतैरुग्रैर्धाराभिरिव पर्वतम् । न
तु तन्ममृषे भीमः शत्रोर्विजयलक्षणम् ॥ १८ ॥ प्रतिचक्रे ततो राजन् पाण्डवोऽप्यप
सव्यतः । मण्डलानां विभागेषु गतप्रत्यागतेषु च ॥ १९ ॥ बभूव तुमुलं युद्धं तयोः
पुरुषसिंहयोः । चरित्वा विविधान् मार्गान् मण्डलस्थानमेव च ॥ २० ॥ शरैः पूर्णा
योत्सृष्टैरन्योन्यमभिजघ्नतुः । अन्योन्यस्य वधे चैव चक्रतुर्यत्नमुत्तमम् ॥ २१ ॥ ईषतु

संतप्त करनेवाले हुये । १२ । इसके पीछे वह दोनों युद्धमें निडर के समान बदलालेने में उपाय करनेवाले हुये । १३ । वह दोनों नरोत्तम युद्धमें व्याघ्रों के समान भ्रमण करनेवाले हुये बाणरूप जिनकी डाढ़ें और भयानक धनुषही जिन का मुखथा । १४ । वह दोनों बाणों के जालसे सब ओर से ऐसे गुप्तहोगये जैसे कि बादल के जालोंसे ढकेहुये आकाश में चन्द्रमा और सूर्य्य होते हैं । १५ । इसके पीछे वह शत्रुहंता दोनों एकमुहूर्त्त मेंही ऐसे प्रकाशमानहुये जैसे कि बादलों के जाल से निकले हुये मंगल और बुध होते हैं । १६ । इसके पीछे अत्यंत भयकारी युद्ध जारी होने पर वहां अश्वत्थामा ने भीमसेन को सैकड़ों उग्रबाणों से ऐसे ढकदिया । १७ । जैसे कि धाराओं से बादल पर्व्वतको ढकदेता है फिर भीमसेनने भी शत्रुके उस विजय के लक्षण को नहीं सहा । १८ । इसके पीछे पाण्डवनेभी दाहिने और बायें मंडलों के भागों में जाना आनाकिया । १९ । और दोनों पुरुष सिंहों में बड़ातुमुल युद्धहुआ और विविध मार्गों से मंडल किये । २० । फिर हरएक ने कानतक खैंचेहुये बाणों से परस्पर में एकने दूसरे को घायल किया और एकने दूसरे के मारने में बड़े २ उत्तम उपाय किये । २१ । युद्धमें एकने दूसरेका विरथ

destroyers of the world, scorched each other with their good arrows. *Fearlessly fighting*, each desired to be revenged on the other. They roamed there like tigers, having arrows for their fangs and dreadful bows for mouths. Hidden with arrows they looked like the Sun and *the moon hidden by clouds. 15. Shortly after they shone brightly* like Mangal and Budh coming out from clouds. Then the battle was dreadful and Ashwathama hid Bhim by *numerous arrows*, like the rain pouring over a mountain. Bhimsen could not *bear that demonstrat*ion of his foe's victory and moved in right and left circles. The battle was very severe between those two lions among men who moved in various sorts of circular movements. 20. Then they wounded each other by arrows drawn to the ear and tried to kill

विरथं च कर्तुमन्योन्यमाहवे । ततो द्रौणिर्महास्त्राणि प्रादुश्चक्रे महारथः ॥ २२ ॥
तान्यस्त्रैरेव समरे प्रतिजघ्नेऽथ पाण्डवः । ततो घोरं महाराज अस्त्रयुद्धमवर्त्तत ॥ २३ ॥
ग्रहयुद्धं यथा घोरं प्रजासंहरणे ह्यभूत् । ते बाणाः समसज्जन्त मुक्तास्ताभ्यान्तु भारत
॥ २४ ॥ द्योतयन्तो दिशः सर्वास्तच्च सैन्यं समन्ततः । बाणसंघैर्वृतं घोरमाकाशं सम
पद्यत ॥ २५ ॥ उल्कापाताकृतं युद्धं प्रजानां संक्षये नृप । बाणाभिघातात् सञ्जज्ञे तत्र
भारत पावकः ॥ २६ ॥ सविस्फुलिङ्गो दीप्तार्चिर्योऽदहद्वाहिनीद्वयम् । तत्र सिद्धा
महाराज संपतन्तोऽब्रुवन् वचः ॥ २७ ॥ युद्धानामति सर्वेषां युद्धमेतदिति प्रभो । सर्व
युद्धानि चैतस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ २८ ॥ नैदृशञ्च पुनर्युद्धं भविष्यति कदा
चन । अहो ज्ञानेन संपन्नावुभौ ब्राह्मणक्षत्रियौ ॥ २९ ॥ अहो शौर्येण संयुक्तावुभौ चोग्र
पराक्रमौ । अहो भीमबलो भीम एतस्य च कृतास्त्रता ॥ ३० ॥ अहो वीर्यस्य सारता

करना चाहा इसके पीछे महारथी अश्वत्थामा ने युद्धमें महाअस्त्रों को प्रकट किया ।२२। पाण्डवने उन अस्त्रों को अपने अस्त्रों सेही दूरकिया इसके पीछे अस्त्रोंका ऐसा घोरयुद्ध जारीहुआ जैसे कि जीवोंकी प्रलय में ग्रहोंका घोर युद्ध हुआथा।२३। हेभरतवंशी उनदोनोंके छोड़ेहुए वह बाण चारोंओरसे सब दिशा और आपकीसेनाको मन्छिन्नकारसे प्रकाशित करनेलगे और बाण समूहोंसे व्याप्त आकाश महाभयानक रूप हुआ ।२५। हे राजा जैसे जीवों के प्रलय में उल्कापातों से संयुक्त युद्ध हुआ था वैसेही वहां बाणों के आघातसे ऐसी अग्नि उत्पन्न हुई जैसे कि फुलिंगरखने वाली प्रकाशमान अग्निकी ज्वाला होती है ।२६। फिर अग्नि ने दोनों सेनाओं को भस्म किया तब वहां सिद्धलोग आकर कहने लगे ।२७। कि सबयुद्धों में यहभी युद्धबड़ा है और सबयुद्ध इस युद्ध के षोड़शांश कलाके भी समान नहीं हैं ।२८। ऐसा युद्ध फिरकभी न होगा बड़ा आश्चर्यहै कियह ब्राह्मण और क्षत्री दोनों ज्ञानसे पूर्णहैं ।२९। यह दोनों पराक्रमी अग्नी २ उग्रशूरताओंसे संयुक्तहैं और भीमसेन भयानक पराक्रमीहै और इसकी अस्त्रज्ञताभी पूर्णहै ।३०। इन दोनोंकी प्रतिष्ठा और बड़े •

each other. They tried to destroy each other's car. Then Ashwathama made use of his celestial weapons; but the Pandav destroyed them with his own. The two heroes fought like the planets in pralaya. The arrows discharged by them illumined the directions,' and the sky, overcast with those luminous arrows, looked ominous. 25. The arrows fell down like meteors and shed lustre like the flames of fire, burning both armies. Then the *sidhas* said, "This battle surpasses all, others are not equal to the sixteenth part of it. There is no likelihood of such a battle recurring again. The Brahman and the kshatrya are both masters of the art; both are brave and Bhim is dreadful in prowess and a perfection of the knowledge of weapons. 30.

महोत्सैष्वमेतयोः । स्थितावेतौ हि समरे कालान्तकयमोपमौ ॥ ३१ ॥ रुद्राविव
संभूतौ यथा द्वाविव भास्करौ । यमौ वा पुरुषव्याघ्रौ घोररूपावुभौ रणे ॥ ३२ ॥ इतिवाचा
स्म श्रूयन्ते सिद्धानां वै मुहुर्मुहुः । सिंहनादश्च सञ्जज्ञे समेतानां दिवौकसाम् ॥ ३३ ॥
अद्भुतञ्चाप्यचिन्त्यञ्च दृष्ट्वा कर्म तयो रणे । सिद्धचारणसंघानां विस्मयः समप
द्यत ॥ ३४ ॥ प्रशंसन्ति तदा देवाः सिद्धाश्च परमर्षयः । साधु द्रौणे महाबाहो साधु
भीमेति चाब्रुवन् ॥ ३५ ॥ तौ शूरौ समरे राजन् परस्परकृतागसौ । परस्परमुदीक्षेतां
क्रोधादुद्वृत्य चक्षुषी ॥ ३६ ॥ क्रोधरक्ते क्षणौतौतु क्रोधात्प्रस्फुरिताधरौ । क्रोधात् संद
ष्टदशनौ तथैवदशनच्छदौ ॥ ३७ ॥ अन्योन्यं छादयन्तौ स्म शरवृष्ट्या महारथौ । शरां
म्बुधारौ समरे शस्त्रविद्युत्प्रकाशिनौ ॥ ३८ ॥ तावन्योन्यं ध्वजं विध्वा सारथिञ्च महा
रणे । अन्योन्यस्य हयान् विध्वा बिभिदाते परस्परम् ॥ ३९ ॥ ततः क्रुद्धौ महाराज

साहस अपूर्व्वहैं यहकाल और मृत्युकेसमान दोनों युद्धमें नियतहैं । ३१ । यहदोनों रुद्रकेसमान प्रकटहुये दोनों सूर्य्य के समान हैं अथवा दोनों पुरुषोत्तम घोररूप यमराज के रूपहैं । ३२ । यह सिद्धोंके वचन वारम्वार सुनेगये और भागनेवाले देवताओं के सिंहनाद प्रारम्भहुये । ३३ । युद्धमें उन दोनोंके अपूर्व्व बुद्धिसे वाहर कर्म को देखकर सिद्ध और चारण लोगोंके समूहको बड़ा आश्चर्य हुआ । ३४ । तब देवता सिद्ध और परमऋषियों ने प्रशंसाकरी कि हे महाबाहु अश्वत्थामा और हे महाबाहु भीमसेन तुमदोनोंको धन्यहै । ३५ । हे राजा परस्पर अपराधकरनेवाले उन दोनों शूरोंने युद्धमें क्रोध से आंखोंको फाड़कर परस्पर में देखा । ३६ । वह दोनों क्रोधसे रक्त नेत्रहो क्रोधसेही ओठोंके चाबनेवाले होकर दांतों के किटकिटा ने वाले हुये । ३७ वाणरूप जलधारा और शस्त्ररूप विजली से प्रकाश करनेवाले दोनों महारथियों ने बाणोंकी वर्षा से परस्पर में ढकदिया । ३८ । फिर उनदोनों ने परस्पर की ध्वजा और सारथीको वेधकर प्रत्येकने दूसरे के घोड़ोंको घायल करके परस्पर में घायल किया । ३९ । हे महाराज इसके पीछे परस्पर मारने के

Their courage is worthy of respect. They stand like Death in the field. They are like Rudra and Surya, or they may be compared to Yam." Such were the words of the Sidhas, while the gods ran away roaring. *The Sidhas and charans wondered at their wonderful* prowess. The gods, Sidhas and rishis praised their work and gave them cheers. They looked at each other with angry, staring eyes. With eyes red in anger, they bit their lips and gnashed their teeth. Pouring forth showers of arrows and flashing out their weapons, both the warriors covered each other with arrows.38. They pierced each other's standards and drivers and wounded their horses and themselves. Then desirous of slaying each other, both of them discharged

बाणौ गृह्य महाहवे । उभौ चिक्षिपतुस्तूर्णमन्योन्यस्य वधैषिणौ ॥ ४० ॥ तौ सायकौ महाराज द्योतमानौ चमूमुखे । आजघ्नतुः समासाद्य वज्रवेगौ दुरासदौ ॥ ४१ ॥ तौ परस्परवेगाच्च शराभ्याञ्च भृशाहतौ । निपेततुर्महावीर्यौ रथोपस्थे तयोस्तदा ॥४२॥ ततस्तु सारथिर्ज्ञात्वा द्रोणपुत्रमचेतनम् । अपोवाह रणाद्राजन् सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ ४३ ॥ तथैव पाण्डवं राजन् विह्वलं तं मुहुर्मुहुः । अपोवाह रथेनाजौ सारथिः शत्रुतापनम् ॥ ४४ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि अश्वत्थामायुद्धे पंचदशोऽध्यायः १५ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । यथा संशप्तकैः सार्द्धमर्जुनस्याभवद्रणः । अन्येषाञ्च महीपानां

इच्छावान् क्रोध भरेहुये उन दोनों ने युद्ध में बाण को लेकर शीघ्रही एकने दूसरे के ऊपर फेंका । ४० । उनवज्रके समान वेगवान विजयी और सेनामुखपर प्रकाश मान दोनों ने सम्मुख पाकर परस्पर में शायकों से घायल किया । ४१ । तब परस्परकी तीव्रता और बाणों से घायल बड़े पराक्रमी वह दोनों रथों के बैठने के स्थानों में गिरपड़े । ४२ । इसके अनन्तर सारथी अश्वत्थामा को अचेत जानकर सब सेनाके देखतेहुये युद्धसे दूर लेगया । ४३ । हे राजा इसीप्रकार भीमसेनका सारथीभी उस वारम्वार शत्रुओंके तपानेवाले पाण्डव भीमसेनको युद्धमें रथकेद्वारा दूरले गया ४४ ॥

अध्याय १६ ॥

धृतराष्ट्र बोले जिसप्रकार अर्जुनका युद्ध संशप्तक लोगोंकेसाथ और अन्य राजाओंका युद्ध पाण्डवोंके साथहुआ उसको मुझसेकहो । १ । हेसंजय अश्वत्थामा

---

arrows in anger, 40. Swift like vajra, the two conquering warriors stood at the entrance of the array and wounded each other. Wounded by each other's arrows they fell down in a swoon on their seats in the cars. Seeing that Ashwathama had fainted, the driver took him far away from the scene of action. Similarly, Bhimsen the destroyer of foes was removed by the driver." 44.

CHAPTFR XVI

"Tell me" said Dhritrashtra, "how Arjun fought with the Sansaptaks and how other kings fought with the Pandavas. Tell me, O

मिषकुञ्जमभिद्रुत्यमतोत्कटाः ॥ १० ॥ निघ्नन्तमभिजघ्नुस्ते शरैः श्रृंगैरिवर्षभाः । तस्य
तेषाञ्च तद्युद्धमभवल्लोमहर्षणम । त्रैलोक्यविजये यद्वद्दैत्यानां सह वज्रिणा ॥ ११ ॥
अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य्य द्विषतां सर्वतोऽर्जुन । इषुभिर्बहुभिस्तूर्णं विध्वा प्राणान् जहार
सः ॥ १२ ॥ छिन्नत्रिवेणुचक्राक्षान् हतयोधाश्वसारथीन् । विध्वस्तायुधतूणीरान्
समुन्मथितकेतनान् ॥ १३ ॥ संछिन्नयोक्त्ररश्मीकान् विवरूथान् विकूबरान् । विस्रस्त
बन्धुरयुगान् विस्रस्ताक्षप्रमण्डलान् ॥ १४ ॥ रथान् विशकलीकुर्वन् महाभ्राणीव
मारुतः ॥ १५ ॥ विस्मापयन् प्रेक्षणीयं द्विषतां भयवर्द्धनं । महारथसहस्रस्य समं कर्म्म
करोज्जयः ॥ १६ ॥ सिद्ध देवर्षिसंघाश्च चारणाश्चापि तुष्टुवुः । देव दुन्दुभयो नेदुः
पुष्पवर्षाणि चापतन् ॥ १७ ॥ केशवार्जुनयोर्मूर्द्धिन प्राहवागशरीरिणी । चन्द्रार्क्ययनि

निमित्त सम्मुख जाकर प्रहार करें उसी प्रकार उन क्रोध से भर बड़े शूरवीरों ने उस क्रोधयुक्त और प्रहार करनेवाले को बाणों से घायल किया उसका और सब लोगोंका वह घोरयुद्ध ऐसा रोमहर्षण करनेवाला हुआ जैसे कि तीनोंलोकों के विजयके लिये दैत्योंका युद्ध इन्द्रकेसाथ हुआथा । ११ । उस अर्जुन ने अपने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रों को रोककर बहुत शीघ्र बाणों से विदीर्ण करके प्राणों का हरण किया जिनके तूणीर चक्र और रथके अंग टूटगये और सारथियों समेत घोड़े भी मारेगये और धनुष वा ध्वजाटूटीं और रथकी बागडोरें टूटीं रथसे कूबर जुदेहुये और स्पन्दनोंके जुये पहिये आदि भी गिरपड़े ।१४। उन रथोंको खण्डर करताहुआ ऐसे चला जैसे कि बड़े बादलों को खण्ड २ करता वायुचलताहै।१५ आश्चर्य उत्पन्न करानेवाले अर्जुन ने शत्रुओं को भय करनेवाले दर्शनीय हजारों महारथियों के समान बल किया । १६ । सिद्ध देवर्षि और चारण लोगों ने भी इसकी प्रशंसाकरी देवताओं ने दुन्दुभी बजाकर पुष्पों की वर्षाकरी । १७ । वह पुष्प श्रीकृष्ण और अर्जुन के मस्तकपर गिरे और आकाशवाणी ने कहा कि श्री·

arrows. Similarly, with thousands of his arrows, he cut and slew cars, elephants, horses and their riders and sent them to the region of Yam..They rushed npon that destroyer of foes like angry bulls, bellowing after a cow and wounded him. His battle with them was very severe like Indra, desirous of conquering the three worlds, with the Daityas. He checked the weapons of the enemies and wounded and slew them with his arrows. 12. He went on dispersing the car-warriors as the wind does the clouds, breaking, cutting off the quivers, wheels and other parts of cars, horses, drivers, bows, standards, traces, yokes and spokes of wheels. 15. Exciting wonder, Arjun the terror of foes, worked as if he had the strength of thousands of warriors. 'The Sidhas, rishis and Charans praised his work, while the gods showered on him flowers with the beat of drums. Flowers fell down

कसूर्य्याणां कान्तिदीप्तिबलद्युतीः ॥ १८ ॥ यौ सदा बिभ्रतुर्वीराविमौ तौ केशवार्जुनौ ।
ब्रह्मेशानाविवाजेयौ वीरावेकरथे स्थितौ । सर्वभूतवरौ वीरौ नरनारायणाविमौ ॥१९॥
इत्येतन्महदाश्चर्यं दृष्ट्वा श्रुत्वा च भारत । अश्वत्थामा ससंयत्तः कृष्णावभ्यद्रवद्रणे
॥ २० ॥ अथ पाण्डवमस्यन्तममित्रघ्नकरान् शरान् । जेपुणा पाणिनाहूय प्रहसन् द्रौणि
रब्रवीत् ॥ २१ ॥ यदि मां मन्यसे वीर प्राप्तमर्हमिवातिथिम् । ततः सर्वात्मनाद्य त्वं
युद्धातिथ्यं प्रयच्छ मे ॥२२॥ एवमाचार्य्यपुत्रेण समाहूतो युयुत्सया । बहुमेनेऽर्जुनोऽऽत्मा
नमितिचाह जनार्दनम् ॥ २३ ॥ संशप्तकाश्च मे वध्या द्रौणिराह्वयते च माम् । यदत्रा
नन्तरं प्राप्तं शंस मे तद्धि माधव ॥ २४ ॥ आतिथ्यकर्माभ्युत्थाय दीयतां यदि मन्यसे
॥ २५ ॥ एवमुक्तोवहत् पार्थं कृष्णो द्रोणात्मजान्तिके । जैत्रेण विधिनाहूतं वायुरिन्द्र
मिवाध्वरे ॥ २६ ॥ तमामन्त्र्यैकमनसं केशवो द्रौणिमब्रवीत् । अश्वत्थामन् स्थिरो

कृष्ण और अर्जुन सदैव चन्द्रमा वायु अग्नि और सूर्यकी कान्ति और तेजको पुष्ट करते हैं । १८ । वह ब्रह्मा और शिवजी के समान श्रीकृष्ण और, अर्जुन एक रथ पर नियत सबजीवों में श्रेष्ठ दोनों नर नारायण रूप वीर हैं । १९ । हे भरतवंशी इस बड़े आश्चर्यको देखकर बड़े सावधान अश्वत्थामा युद्धमें श्रीकृष्णजी के सम्मुखगया । २० । फिर जिनकी नोकें शत्रुओं के मारने वाली थीं उन बाणों के चलानेवाले पांडव अर्जुन से बाण पकड़ने वाले हाथके द्वारा बुलाकर यह वचन बोला । २१ । हे वीर जो यहां वर्त्तमान मुझ अतिथि रूपको पूजनके योग्य मानता है तो तुम सब आत्मासे युद्धरूप अतिथि मुझको जानो । २२ । इसप्रकार युद्धाभिलापी आचार्य्य के पुत्र से बुलायेहुये अर्जुन ने अपने को बहुत कुछ माना और श्रीकृष्णजी से कहा । २३ । कि मैं संसप्तकों को मारसक्ताहूं और अश्वत्थामा मुझको बुलाते हैं इस स्थानपर जो उचित होय वह आप मुझसे कहिये । २४ । जो आप मानते हैं तो उठकर अतिथि कर्म कीजिये । २५ । ऐसे कहेहुये श्रीकृष्णजी ने बुद्धिके अनुसार बुलायेहुये अर्जुनको विजयी रथकी सवारीकेद्वारा अश्वत्थामा के समीप ऐसे पहुँचाया जैसे कि वायु इन्द्रको यज्ञमें पहुँचाता है । २६ । केशवजी

---

on the heads of Shri Krishn and Arjun and the heavenly voice said, "They are the glory and power to the moon, wind, fire and Sun. Shri Krishn and Arjun, mounted on the same car, like Brahma and Shiv are Nara and Narayan the best of beings." Seeing this great wonder Ashwathama carefully approached Shri Krishn. 20. He beckoned Arjun the destroyer of foes and said, 'Show me the respect due to an untimely guest, if you think me worthy of it. Thus challenged by the son of Acharya, Arjun thought highly of himself and said to Krishn, "I would destroy the Sanspataks, but I am challenged by Ashwathama. Pray let me know what is proper to be done under the circumstance. Honour the guest if you would." Thus addressed

भूत्वा प्रहराशु सहस्व च ॥ २७ ॥ निर्वेष्टुं भर्तृपिण्डं हि कालोऽयमुपजीविनाम्। सूक्ष्मो विवादो विप्राणां स्थूलौ क्षात्रौ जयाजयौ ॥ २८ ॥ यामर्थयसे मोहाद्दिव्यां पार्थस्य सत्क्रियाम्। तामाप्तुमिच्छन् युध्यस्व स्थिरो भूत्वाद्य पाण्डवम् ॥ २९ ॥ इत्युक्तो वासुदेवेन तथेत्युक्त्वा द्विजोत्तमः। विव्याध केशवं षष्ट्या नाराचैरर्जुनं त्रिभि ॥ ३० ॥ तस्यार्जुनः सुसंक्रुद्धस्त्रिभिर्भल्लैः शरासनम्। चिच्छेद चान्यदादत्त द्रौणिर्घोरतरं धनुः ॥ ३१ ॥ सज्यं कृत्वा निमेषाच्च विव्याधार्जुनकेशवौ। त्रिभिः शतैर्वासुदेवं सहस्रेण च पाण्डवम् ॥ ३२ ॥ ततः शरसहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च। ससृजे द्रौणिरायत्तः संस्तभ्य च रणेऽर्जुनम् ॥ ३३ ॥ इषुधेर्धनुषश्चैव ज्यायाश्चैवाथ मारिष। बाह्वोः कराभ्यामुरसो वदनघ्राणनेत्रतः ॥ ३४ ॥ कर्णाभ्यां शिरसोऽङ्गेभ्यो लोमवर्मभ्य

उस एक चित्त अश्वत्थामा को सम्बोधन करके बोले कि हे अश्वत्थामा शीघ्र नियत होकर घात करो और क्षमा करो । २७ । स्वामी के अर्थ नमकहलाली करने का यह समय है ब्राह्मणों का सम्वाद बड़ा सूक्ष्म है और क्षत्री, सम्बन्धी विजय और पराजय योग्य है । २८ । तुम अज्ञानता से अर्जुन के, जिस दिव्य और उत्तम कर्म को चाहते हो अब उसके अभिलाषी होकर तुम नियत होकर पाण्डवों से युद्ध करो । २९ । श्रीकृष्णजी के इसप्रकार के वचनों को सुनकर अश्वत्थामाजी ने बहुत अच्छा कहकर आठ नाराचों से केशवजी को और तीन बाणों से अर्जुनको घायल किया । ३० । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने उसके धनुष को तीनबाणों से काटा । ३१ । तब अश्वत्थामा ने बड़े घोर दूसरे धनुषको लिया और क्षणभर मेंही श्रीकृष्ण और अर्जुन को घायल किया तीनसै बाणों से वासुदेवजी को और हजार बाणों से अर्जुन को घायलकिया । ३२ । इसके पीछे उपाय करनेवाले अश्वत्थामा ने युद्धमें अर्जुनको रोककर हजारों बाणोंकी वर्षाकरी । ३३ । हेश्रेष्ठ उसब्रह्मवादी

Shri Krishn drove the car of invincible Arjun towards Ashwathama and brought him near his adversarry as the wind brings Indra to a sacrifice. Krishn then addressed Ashwathama, intent on fighting, in the following words:—"Be pleased to begin your work at once. This is the time of showing your faithfulness towards your master. The meeting of Brahmans is very difficult, while the kshatryas are born to conquer or be defeated. The celestial work of Arjun which you foolishly desire to witness, will come to your experience in your encounter with the Pandavas." On hearing the words of Krishn, Ashwathama said, "Very well," and wounded Keshav with eight darts and Arjun with three. 30. Then Arjun much enraged, cut down his bow with three darts. Ashwathama took up another dreadful bow and at once wounded Shri Krishn and Arjun. With three hundred he wounded Vasudev and Arjun with a thousand. Then Ashwatha.

एव च । रथध्वजेभ्यश्च शरा निष्पेतुर्ब्रह्मवादिनः ॥ ३५ ॥ शरजालेन महता विध्वा माधवपाण्डवौ । ननाद मुदितो द्रौणिर्महामेघौघनिस्वनम् ॥ ३६॥ तस्य तं निनदं श्रुत्वा पाण्डवोऽच्युतमब्रवीत् । पश्य माधव दौरात्म्यं गुरुपुत्रस्य मां प्रति ॥ ३७ ॥ वधं प्राप्तौ मन्यते नौ प्रवेश्य शरवेश्मनि । एषोऽस्मि हन्मि सङ्कल्पं शिक्षया च बलेन च ॥ ३८ ॥ अश्वत्थाम्नः शरानस्तांश्छित्त्वैकैकं त्रिभिस्त्रिभिः । व्यधमद्भरतश्रेष्ठो नीहारमिव मारुतः ॥ ३९ ॥ ततः संशप्तकान् भूयः साश्वसूतरथद्विपान् । ध्वजपत्तिरथानुग्रैर्बाणैर्विव्याध पाण्डवः ॥४०॥ ये ये ददृशिरे तत्र यद्यद्रूपास्तदा जनाः । ते ते तत्र शरैर्व्याप्तं मेनिरेऽऽत्मानमात्मना ॥ ४१ ॥ ते गाण्डीवप्रमुक्तास्तु नानारूपाः पतत्रिणः । क्रोशे साग्रे स्थितान् घ्नन्ति द्विपांश्च पुरुषान् रणे ॥ ४२ ॥ भल्लैश्छिन्नाः कराः पेतुः करिणां मदवर्षिणाम् ।

अश्वत्थामाके तूणीर धनुष कवच ध्वजा हाथ छाती । ३४ । नाक मुखनेत्र कान शिर और अंग देहकेरोम और रथसे बहुतसे बाण निकले । ३५ । प्रसन्नचित्त वीर अश्वत्थामा बाण समूहों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को घायल करके बड़े बादलों के समान शब्दों से गर्जा । ३६ । उसके शब्दको सुनकर अर्जुन श्रीकृष्ण जी से बोले कि हे माधवजी गुरुपुत्र के आत्मीयद्वेषको मेरेऊपर देखो । ३७ । यह हम दोनोंको बाण पिंजरमें प्रविष्टकरके मराहुआ जानताहै मैं इसके बाण पिंजर को अपने पराक्रमसे नाश करूंगा । ३८ । फिरउस भरतर्षभने अश्वत्थामा के चलाये हुये बाणोंको तीन तीन खण्डकरके इधर उधर करदिया जैसे वायुकुहरको । ३९ । इसकेपीछे अर्जुनने उग्रबाणोंसे घोड़े सारथी रथ हाथी ध्वजा और पत्तियों समेत संसप्तकों को घायलकिया । ४० । उससमय जिस २ रूपके जोमनुष्य वहां दिखाई दिये वहां उन्होंने अपनेको बाणों से घायलमाना । ४१ । और युद्धमें गांडीवधनुष से छूटे हुये वह नानाप्रकारके बाण एककोस से अधिक दूरपर वर्त्तमान हाथी और मनुष्यों को भी मारतेथे । ४२ । मदोन्मत्त हाथियोंकी सूंड़ भल्लोंसे कटकर ऐसेगिर

---

ma checked Arjun and showered numberless arrows. Countless arrows appeared coming out of the quiver, bow, armour, standard, hands, breast, nose, mouth, eyes, ears, head, limbs, pores of hair and car. 35. Brave Ashwathama, with a cheerful mind, having wounded Krishn and Arjun, roared like thunder. Arjun on hearing that noise, said to Shri Krishn, "*Do you see the enmity which the preceptor's son bears towards me. Having imprisoned us in an arrowy cage, he thinks that he has slain us; but I shall destroy it.*" Then Arjun cut asunder Ashwathama's arrows and broke them in three parts as the wind disperses the mist. Then Arjun, with his dreadful arrows, cut and slew the drivers, cars, elephants, standards and foot soldiers of the Sansaptaks. 40. All the people there found themselves beset with Arjun's arrows. The arrows discharged from

यथा वने परशुभिर्निकृत्ताः सुमहाद्रुमाः ॥ ४३ ॥ पश्चात्तु शैलवत् पेतुस्ते गजाः सहसा
दिभिः । वज्रिवज्रप्रमथिता यथैवाद्रिचयास्तथा ॥ ४४ ॥ गन्धर्वनगराकारान्रथांश्चापि
सुकल्पितान् । विनीतजवनैर्युक्तानास्थितान् युद्धदुर्मदैः ॥ ४५ ॥ शरैर्विशकलीकुर्वन्न
मित्रानभ्यवीवृषत् । स्वलंकृतानश्वसादीन् पत्तींश्चाहन् धनञ्जयः ॥ ४६ ॥ धनञ्जय
युगान्तार्कः संशप्तकमहार्णवम् । व्यशोषयत दुःशोषं तीक्ष्णैः शरगभस्तिभिः ॥ ४७ ॥
पुनर्द्रौणिं महाशैलं नाराचैर्वज्रसन्निभैः । निर्बिभेद महावेगैस्त्वरन् वज्रीव पर्वतम्
॥ ४८ ॥ तमाचार्यसुतः क्रुद्धः साश्वयन्तारमाशुगैः । युयुत्सुरागमद्योद्धुं पार्थस्तानच्छि
नच्छरान् ॥ ४९ ॥ ततः परमसंक्रुद्धः पाण्डवेऽस्त्राण्यवासृजत् । अश्वत्थामाभिरूपाय
गृहानतिथये यथा ॥ ५० ॥ अथ संशप्तकांस्त्यक्त्वा पाण्डवो द्रौणिमभ्ययात् । अपांक्ते

पड़ी जैसे कि फरसोंसे कटेहुये वनके बड़े वृक्षहोते हैं । ४३ । इसकेपीछे सवारों समेत वह हाथी ऐसे गिरपड़े जैसे कि इन्द्रके वज्रसे कटेहुये पर्वतोंके समूह गिरपड़ते हैं । ४४ । युद्धमें दुर्मद अर्जुन गन्धर्व नगरके समान अच्छे अलंकृत शीघ्रगामी सुशिक्षित घोड़ों से युक्त रथपर नियतहोकर । ४५ । बाणोंकी वर्षा करताहुआ शत्रुओंके सम्मुखगया वहांजाकर अर्जुनने अश्वारूढ़ोंको और पतियोंको मारा ।४६। अर्जुनरूपी प्रलयकालीन सूर्यने कठिनतासे सूखनेवाले संसप्तक रूप समुद्र को अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त शोषण किया फिर बड़ी शीघ्रता करनेवाले ने अश्वत्थामाको वड़ेवज्रके समान वेगवान बाणोंसे घायलकिया ।४८। क्रोधयुक्त युद्धाभिलाषी आचार्यकापुत्र अश्वत्थामा बाणोंके द्वारा घोड़े और सारथीसमेत अर्ज्जुनसे लड़नकोआया अर्ज्जुनने उसके बाणों को काटा । ४९ । इसके पीछे बड़े क्रोधसे भरे अश्वत्थामाने अर्ज्जुनके ऊपर अस्त्रोंको ऐसे छोड़ा जैसे अतिथि की शिष्टाचारी करते हैं फिर अर्ज्जुन संसप्तकों को छोड़कर अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गया जैसे दान करने वाला मनुष्य पंक्तिके अयोग्य लोगोंको छोड़कर पंक्ति के योग्य मनुष्यों के पास

Gandiv killed elephants and men at the distance of a mile. The trunks of the mad elephants, cut down by those arrows, fell down on the ground like trees felled by an axe. Then the elephants with their riders fell down like mountain peaks struck by lightning. Invincible Arjun, mounted on a car, like the city of gandharvas, *drawn by* swift horses, showering arrows, faced the foe and killed the horsemen and foot soldiers. 46. Like the Sun of Pralaya, Arjun soaked the ocean of the Sansaptak army by means of his arrows, and, at the same time checked Ashwathama. The enraged son of the preceptor desirous of fighting, encountered Arjun with his arrows; but the latter cut down his arrows. Then Ashwathama showered on Arjun his weapons as they shower blessings on a guest. Leaving the Sansaptaks, Arjun opposed Ashwathama as a donor proceeds towards

यानिव त्यक्त्वा दाता पांक्ते यमर्थिनम् ॥ ५१ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि अश्वत्थामार्जुन संवादे षोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सञ्जय उवाच । ततः समभवद्युद्धं शुक्राङ्गिरसवर्चसोः । नक्षत्रमभितो व्योम्नि शुक्राङ्गिरसयोरिव ॥ १ ॥ सन्तापयन्तावन्योन्यं दीप्तैः शरगभस्तिभिः । लोकत्रासकरावास्तां विमार्गस्थौ ग्रहाविव ॥ २ ॥ ततोविध्यत् भ्रुवोर्मध्ये नाराचेनार्जुनो भृशम् । स तेन विबभौ द्रौणिरूर्ध्वरश्मिर्यथा रविः ॥ ३ ॥ अथ कृष्णौ शरशतैरश्वत्थाम्नार्दितौ

जाता है ॥ ५१ ॥

अध्याय १७ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शुक्र और बृहस्पतिजी के समान तेजस्वी उन दोनोंका युद्ध ऐसे अच्छेप्रकार से हुआ जैसे कि नक्षत्रमंडल के पास आकाश में शुक्र और बृहस्पतिका युद्ध हुआथा । १ । एकने दूसरेको प्रकाशित बाणों की किरणों से अच्छीरीति से संतप्त किया और अपने मार्ग से हटकर चलनेवाले ग्रहों की समान लोकोंका भयउत्पन्न करनेवालेहुये । २ । उसके पीछे अर्जुननेनाराच से दोनों भ्रुकुटियों के मध्य कठिन घायल किया वह अश्वत्थामा उस घाव से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि ऊपरकी ओर किरण रखनेवाला सूर्य्य होता है । ३ ।

the line of persons worthy of his charity and turns from unfit ones." 51.

CHAPTER XVII.

Sanjaya continued, "Then the battle between those warriors, glorious like Shukra and Vrihaspati, was like the two above named luminaries in the sky. Each scorched the other with his rays of bright arrows. They excited fear among the people, like planets deviating from their course. Then Arjun wounded his adversary hard between his eyebrows, and the latter looked glorious like the Sun. Shri Krishn and Arjun too, wounded with the arrows of Ashwathama, looked glorious like the two Suns of Pralaya. Seeing Vasudev afflicted with the wounds, Arjun showered his arrows on all

नृधरा निपेतुः ॥१०॥ पद्मार्कपूर्णेन्दुनिभाननानि किरीटमालाभरणोज्वलानि । भल्लार्द्ध
चन्द्रक्षुरहिंसितानि प्रपेतुरुर्व्यां नृशिरांस्यजस्रम् ॥ ११ ॥ अथ द्विपैर्देवरिपुद्विपाभैर्देवा
रिदर्पापहमत्यदृभम । कलिंगवंगांगनिपादवीरा जिघांसवः पाण्डवमभ्यधावत ॥ १२॥
तेषां द्विपानां निचकर्त्त पार्थो वर्माणि मर्माणि करान् नियन्तॄन् । ध्वजाः पताकाश्च ततः
प्रपेतुर्वज्राहतानीव गिरेः शिरांसि ॥ १३ ॥ तेषु प्रभग्नेषु गुरोस्तनूजं बाणैः किरीटी
नवसूर्य्यवर्णैः । प्रच्छादयामास महाभ्रजालैर्वायुः समुद्यन्तमिवांशुमन्तम् ॥ १४ ॥ ततो
र्जुनेषूनिषुभिर्निरस्य द्रौणिः शरैरर्जुनवासुदेवौ । प्रच्छादयित्वा दिवि चन्द्रसूर्य्यौ ननाद
घोऽम्भोद इवातपान्ते ॥ १५ ॥ तमर्जुनस्तांश्च पुनस्त्वदीयानभ्यर्दितस्तैरभिद्रुत्य शस्त्रैः ।
बाणान्धकारं सहसैव कृत्वा विव्याध सर्वानिषुभिः सुपुंखैः ॥ १६॥ नाप्यावहत सन्दध

समेत निपत और अलंकृत सैकड़ों शूरवीरों को भी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से से गिराया तब उनके साथ बड़े २ उत्तम मनुष्यभी गिरपड़े । १० । कमल सूर्य और पूर्णचन्द्रमा के समान विशाल मुख मुकुटमाला और आभूषणों से प्रकाशमान। शिर और भल्ल अर्द्धचंद्र और क्षुरप्र नाम बाणों से घायल मनुष्यों के भी शिर वारम्बार पृथ्वीपर गिरे । ११ । फिर कलिंग अंगवंगदेशी निषाद जातिके असुरों के गर्व महारी वीरलोग जो बड़े उग्ररूप अर्जुन के मारने के अभिलाषी थे उनके गज और असुरोंके समान हाथियों के कवच सूंड़ सारथी ध्वजा और पताकाओं को काटा इसके पीछे वह ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्रके प्रहार से पर्व्वतों के शिखर गिरते हैं । १३ । उनके पराजय और छिन्न भिन्न होने पर अर्जुन ने सूर्य वर्ण के बाणजालोंसे गुरुके पुत्रको ऐसा ढकदिया जैसेकि बड़े बादलोंके जालोंसे वायु उदयहुये सूर्य को ढकता है । १४ । इसके पीछे अश्वत्थामा अपने बाणों से अर्जुनके बाणों को काटकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को ढककर ऐसा गर्जा जैसे कि वर्षाऋतु में चन्द्रमा और सूर्यको ढककर बादलगर्जता है । १५ । फिर अर्जुन ने भी अश्वत्थामा और अन्यलोगों को ढककर शस्त्रों से घायलहुये ने

Many a great warrior fell with them. 10. With beautiful faces like the lotus, the Sun or the full moon, with heads shining with jewels, the warriors lay down on the earth, slain by the arrows of various hapes. 11. The warriors of Kaling, Ang, Bang and Nishad, troyers of the pride of asura and desirous of slaying Arjun, were cut down by the latter along with their elephants cased in mail, drivers, standards and banners, and they fell down like mountain peaks struck down by lightning. At their destruction and defeat, Arjun hid acharya's son with his golden arrows as the clouds blown by the wi hide the Sun. Ashwathama cut down Arjun's arrows, and havi covered Krishn and Arjun with his own arrows, roared like cl which thunder after hiding the sun and the moon. 15. Then Arj

श्चैव मुञ्चन् वाणानथेददयत सव्यसाची। रथांश्च नागांस्तुरगान् पदातीन् संस्यूतदेहान्
ददृशुर्हतांश्च ॥ १७ ॥ सन्धाय नाराचवरान् दशाशु द्रौणिस्त्वरन्नेकमिवोत्ससर्ज।
तेषां तु पञ्चार्जुनमभ्यविध्यन्पञ्चाच्युतं निर्विभिदुः सुपुङ्खाः ॥ १८ ॥ तैराहतौ सर्व
मनुष्यमुख्यावसृक् स्रवन्तौ धनदेन्द्रकल्पौ। समाप्तविद्येन तथाभिभूतौ हतौ रणे
ताविति मेनिरेन्ये ॥ १९ ॥ अथार्जुनं प्राह दशार्हनाथः प्रमाद्यसे किं जहि योधमेतम्।
कुर्य्याद्धि दोषं समुपेक्षितोयं कष्टो भवेद्व्याधिरिवाक्रियावान् ॥ २० ॥ तथेति चोक्त्वा
च्युतमप्रमादी द्रौणिं प्रयत्नादिषुभिस्ततक्ष। भुजौ वरौ चन्दनसारदिग्धौ वक्षः शिरो
थाप्रतिमौ तथोरू ॥ २१ ॥ गाण्डीवमुक्तैः कुपितो विकर्णैर्द्रौणिं शरैः संयति निर्बिभेद।
छित्वा तु रश्मींस्तुरगानविध्यत्ते तं रणाद्दूहुरतीव दूरम् ॥ २२ ॥ स तैर्हतो वातजवै

समीप जाकर शीघ्रही वाणों के अन्धकार को दूरकर सुन्दर पुङ्खवाले वाणों से सबको घायल किया । १६ । फिर अर्जुन रथ के ऊपर वाणों को लेता चढ़ाता और मारता हुआ भी युद्धमें दृष्ट न पड़ा फिर वाणों से छिदेहुये रथ हाथी घोड़े और पदातियों को अर्जुन से मृतक देखा । १७ । तब शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने शीघ्रही दश उत्तम नाराचों को चढ़ाकर एकही के समान छोड़ा उनमें से पांच उत्तम वाणों ने श्रीकृष्णजी को और पांचने अर्जुनको घायल किया । १८ । अन्य मनुष्यों ने ऐसे धनुर्वेदके ज्ञाता अश्वत्थामा से पराजित और रुधिर डालने वाले नरोत्तम इन्द्रके समान श्रीकृष्ण और अर्जुनको युद्धमें मृतकसमझा । १९ । इसके पीछे श्रीकृष्णजी अर्जुनसे वोले कि क्या भूलमें पड़ा है इस युद्धकर्त्ता को मार नहींतो यह वीर अपूर्व दोषको उत्पन्न करेगा और इसका बदला न लेनेवाला शूरवीर कठिन रोगीके समान होगा । २० । फिर सावधान अर्जुनने श्रीकृष्णजी से बहुत अच्छा यह शब्द कहकर बड़े उपायके साथ अश्वत्थामा को घायल किया चंदन से शोभायमान दोनों भुजाओं भुजा छाती शिर और जंघावोंको । २१ ।

too, covered Ashwathama and others, and approaching him, though wounded, cleared the darkness produced by Ashwathama and wounded him with arrows having golden feathers. Arjun's work of taking and discharging of arrows was not seen by the warriors; they could only see the cars, elephants, horses and foot, cut and killed by his arrows. Dexterous Ashwathama took up ten darts and shot them all at once. Five of them wounded Krishn and the other five wounded Arjun. The people who saw them wounded took them for dead. Then Shri Krishn said to Arjun, "What a mistake are you ... ng? Slay this matchless warrior, or he will throw you into ifficulty. You will be like a sick man, if you donot give him unishment. 20. "Very well," said Arjun to Krishn and wounded ... athama with great care on his beautiful arms, breast and

सञ्जय उवाच । अथोत्तरेण पाण्डूनां सेनायां ध्वनिरुत्थितः । रथनागाश्वपत्तीनां दण्डधारेण वध्यताम् ॥ १ ॥ निवर्त्तयित्वा तु रथं केशवोर्जुनमब्रवीत् । वाहयन्नेव तुरगान् गरुडानिलरंहसः ॥ २ ॥ मागधोप्रतिविक्रान्तो द्विरदेन प्रमाथिना । भगदत्तादनवर: शिक्षया च बलेन च ॥ ३ ॥ एनं हत्वा निहन्तासि पुनः संशप्तकानिति । वाक्यान्ते प्रापयत् पार्थं दण्डधारान्तिकं प्रति ॥ ४ ॥ स मागधानां प्रवरोंकुशग्रहे ग्रहेष्वसह्यो विकचो यथा ग्रहः सपत्नसेनां प्रममाथ दारुणां महीं समग्रां विकचो यथा ग्रहः ॥ ५ ॥ सुकल्पितं दानवनागसन्निभं महाभ्रनिर्ह्रादममित्रमर्द्दनम् । रथाश्वमातङ्गगणान् सहस्रशः समास्थितो हन्ति शरैर्नरानपि ६ ॥ रथानधिष्ठाय सवा

अध्याय ॥ १८ ॥

संजय बोले इसके पीछे पाण्डवोंकी सेनामें उत्तर दिशाकी ओर दण्डधार के हाथसे घायल रथी हाथी घोड़े और पतियों के शब्द उठे । १ । तब गरुड़ और वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको चलाते केशवजी रथको लौटाकर अर्जुनसे बोले । २ । कि बल और शिक्षामें भगदत्त के समान मगध देशी दण्डधार भी नाश करनेवाले हाथी समेत कठिन युद्ध करनेवालाहै । ३ । इसको मारकर तू फिर संसप्तकोंको मारेगा श्रीकृष्णजीने यह कहकर अर्जुनको दण्डधारके समीपपहुंचाया । ४ । वह मगधदेशियों के मध्यमें अंकुश धारण हाथियोंके युद्धमें ऐसा अत्यन्त उत्तम और असह्यथा जैसे कि ग्रहोंकेमध्यमें धूम्रकेतु ग्रहहोताहै उस भयानकरूपने शत्रुकी सेनाको ऐसा मर्दनकिया जैसे कि धूम्रकेतु उपग्रह सम्पूर्ण पृथ्वीको मर्दन करताहै । ५ । फिर वहराजा अच्छेप्रकार से अलंकृत गजासुरके समान बड़े बादल की समान शब्द करनेवाले शत्रुहन्ता हाथीपर सवार बाणोंसे हजारों हाथी घोड़े और रथोंके समूहों को मारताहै । ६ । वह श्रेष्ठ हाथी घोड़े सारथी मनुष्य और

CHAPTER XVIII

Sanjaya continued, "In the northern side of the Pandav army, there was a great noise made by car warriors, horse and foot wounded by Dandadhar. Turning round the fleet horses, Keshav said to Arjun, "Dandadhar of Magadh, like Bhagdatta in training and power, is fighting, accompained by an army of elephants. You must slay him before extipating the Sansaptaks." Having said this, Shri Krishn took Arjun near Dandadhar. Surrounded by the warriors of Magadh, mounted on elephants, he was an excellent and unbearable fighter like a comet among lumanaries, and like that planet he overran the hostile armies. Mounted on a large, well-decked elephant, roaring like thunder, he was slaying with his arrows thousands of elephants, horses and car warriors. 6. Trampling down the drivers, men and cars and slaying with his trunk, the huge ele-

जित्सारथीश्वरांश्च पादैर्द्विरदो व्यपोथयत् । द्विपांश्च पद्भ्यां मृद्नन् करेण द्विपोत्तमो हन्ति च कालचक्रवत् ॥ ७ ॥ नरांश्च कार्ष्णायसवर्मभूषणान् निपात्य साश्वानपि पत्तिभिः सह । व्यपोथयद्दन्तिवरेण शुष्मिणा सशब्दवत् स्थूलनलं यथा तथा ॥ ८ ॥ अथार्जुनो ज्यातलनेमिनिःस्वने मृदङ्गभेरी बहुशंखनादिते । रथाश्वमातंगसहस्रसंकुले रथोत्तमे नाभ्यपतद्द्विपोत्तमम् ॥ ९ ॥ ततोऽर्जुनं द्वादशभिः शरोत्तमैर्जनार्दनं षोडशभिः समार्पयत्तान् दण्डधारस्तुरगांस्त्रिभिस्त्रिभिस्ततो ननाद प्रजहास चासकृत् ॥ १० ॥ ततोऽस्य पार्थः सगुणेषुकार्मुकं चकर्त भल्लैर्भुजमप्यलंकृतम् । पुनर्नियन्तॄन् सहपादगोप्तृभिस्ततः स चुक्रोध गिरिव्रजेश्वरः ॥ ११ ॥ ततोऽर्जुनं भिन्नकटेन दन्तिना घनाघनेनानिलतुल्य वर्चसा । अतीव चुक्षोभयिषुर्जनार्दनं धनञ्जयं चाभिजघान तोमरैः ॥ १२ ॥ अथास्य

रथोंको दबाकर चरणों से हाथियों को मलता सूंड़से मारताहुआ चक्रके समान भ्रमण करनेलगा । ७ । फिर उसने महाबली पराक्रमी उत्तम हाथीके द्वारा लोहके कवचोंसे अलंकृत मनुष्यों को और पतियों समेत घोड़ोंकोभी गर्जना पूर्वक ऐसे शब्दायमान स्थूल नर्सलके समान गिराकर मारा । ८ । इसकेपीछे अर्जुन धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द मृदंग भेरी और बहुत से शंखोंसे शब्दायमान हजारों घोड़े रथ और हाथियों से संकुलित युद्ध भूमि में उत्तम रथकी सवारी से उत्तम हाथी के सम्मुख गया । । ९ । वहां उस दण्डधारने अर्जुनको बारह उत्तमबाणों से और श्रीकृष्णजीको सोलह बाणोंसे व्यथित करके तीन २ बाणों से घोड़ोंको घायल किया इनको घायल करके बड़े शब्दको करके बारंबार हँसा और गर्जा॥१०॥इसके पीछे अर्जुन ने भल्लों से प्रत्यंचा समेत उसके धनुषको काटकर उसकी अलंकृत भुजाकोभी काटा फिर रक्षकों समेत सारथियों को मारा इस कारण वह महा क्रोधित हुआ ।११। इसके अनन्तर उस मतवाले घातक वायु के समान तेजस्वी हाथी के द्वारा अत्यन्त व्याकुल करने के अभिलाषी उस राजाने तोमरों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को घायलकिया । १२ । इसके पीछे इसकी हाथीकी सूंड के समान

phant turned like a wheel. *By means of that elephant, he slew* men cased in armour, horse and foot, and trampled them down like grass. Then Arjun, accompained by the noise of twangs, drums, trumpets and conchs and *followed by elephants, drove his car to face* that elephant. Dandadhar, having wounded Arjun with twelve arrows, Shri Krishn with sixteen and the horses with three arrows each, laughed and roared again and again. 10. *Then cutting his* bow, bowstring and well decked arm with his arrows, Arjun slew his guards and driver. The Prince was much enraged at this, and urging on his dreadful elephant he *wounded Arjun and Vasudev with* tomars. Arjun cut off his arms resembling the trunk of an ele-

बाहू द्विपहस्तसन्निभौ शिरश्च पूर्णेन्दु निभाननं त्रिभिः क्षुरैः प्रचिच्छेद सहैवपाण्डव
स्ततो द्विपं बाणशतै समार्पयत् ॥ १३ ॥ स पार्थबाणैस्तपनीय भूषणैः समाचितः
काञ्चनवर्मभृद्द्विपः । तथा चकाशे निशि पर्वतो यथा दावाग्निना प्रज्वलितौषधिद्रुमः
॥ १४ ॥ स वेदनार्तोम्बुदनिस्वनो नदंश्चरन् भ्रमन् प्रस्खलितान्तरोद्रवन् । पपात रुग्णः
सनियन्तृकस्तदा यथा गिरिर्वज्रविदारितस्तथा ॥ १५ ॥ हिमावदातेन सुवर्णमालिना
हिमाद्रिकूटप्रतिमेन दन्तिना । हते रणे भ्रातरि दण्ड आव्रजज्जिघांसुरिन्द्रावरजं
धनञ्जयम् ॥ १६ ॥ स तोमरैरर्ककरप्रभैस्त्रिजनार्दनं पञ्चभिरर्जुनं शितैः । समर्पयित्वा
विननाद नर्दयंस्ततोस्य बाहू विचकर्त पाण्डवः ॥ १७ ॥ क्षुरप्रकृत्तौ सुभृशं सतोमरौ
शुभांगदौ चन्दनरूषितौ भुजौ । गजात्पतन्तौ युगपद्विरेजतुर्यथाद्रिशृंगाद्रुचिरौ महो

भुजाओं को और पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखको तीनक्षुरप्रसे एकवार में छेदा और सैकड़ों बाणोंसे हाथीको घायल किया । १३ । स्वर्णमयी अर्जुन के बाणोंसे संयुक्त वह स्वर्णमयी कवचधारी हाथी सायंकाल के समय ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि दावानल अग्नि से ज्वलित औषधियों समेत वृक्षोंवाला पर्व्वत प्रकाशित होता है । १४ । वह बादलके समान गर्जता चलता घूमता दुःखसे पीड़ित चलते २ सवार समेत ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे टूटाहुआ पर्व्वत गिरपड़ता है । १५ । उसके मरने के पीछे उसका दूसरा भाई दन्द युद्धमें भाई के मरने पर श्रीकृष्ण अर्जुन के मारने का अभिलाषी स्वर्णमयी मालाधारी हिमाचल के शिखर के समान हाथी की सवारी से सम्मुख आया । १६ । वह सूर्य्यकी किरण के समान प्रकाशित तीक्ष्ण तीन तोमरों से श्रीकृष्णजी को और पांचसे अर्जुनको घायल करता हुआ गर्जा इस के अनन्तर अर्जुन ने उसकी भुजाओं को काटा । १७ । सुन्दर तोमर और बाजूबंद रखनेवाले चन्दन से चर्चित और क्षुरप्रबाण से कटीहुई दोनों भुजा हाथीपर से गिरतीहुई ऐसी शोभायमान हुईं जैसे कि अत्यन्त सुन्दर दो बड़े सर्प पर्व्वत से

phant and his head having face like the full moon, with three sharp darts, and wounded the elephant with hundreds of arrows. Pierced by the golden shafts of Arjun, the elephant cased in golden mail, shone bright in the evening like a hill with a burning forest. Thundering like clouds, the wounded elephant, with his rider, fell down like a mountain peak struck by lightning. 15. At his death his brother desirous of slaying Shri Krishn and Arjun, mounted on a huge elephant decked gith gold garlands, encountered Arjun. Wounding Shri Krishn with three tomars, bright as the Sun, and Arjun with five, he roared loudly. Then Arjun cut down his arms, which decked with ornaments and sandal paste, fell down on the ground like two serpents falling down from a mountain. Similarly, Danda's head,

रतौ ॥ १८ ॥ तथार्द्धचन्द्रेण हृतं किरीटिना पपात दण्डस्य शिरः क्षितिं द्विपात् । स्वशोणितार्द्रोऽस्तगिरेर्दिवाकरोऽस्तादिव पश्चिमां दिशम् ॥ १९ ॥ अथ द्विपं श्वेतवराभ्रसन्निभं दिवाकरांशुप्रतिमैः शरोत्तमैः । बिभेद पार्थः स पपात नादयन् हिमाद्रिकूटं कुलिशाहतं यथा ॥ २० ॥ ततोऽपरे तत्प्रतिमा गजोत्तमा जिगीषवः संयति सव्यसाचिना । तथा कृतास्ते च यथैव तौ द्विपौ ततः प्रभग्नं सुमहद्रिपोर्बलम् ॥ २१ ॥ गजा रथाश्वाः पुरुषाश्च संघशः परस्परघ्नाः परिपेतुराहवे । परस्परं प्रस्खलिताः समाहता भृशं निपेतुर्बहुभाषिणो हताः ॥ २२ ॥ अथार्जुनं स्वे परिवार्य्य सैनिकाः पुरन्दरं देवगणा इवाब्रुवन् । अभैष्म यस्मान्मरणादिव प्रजाः स वीर दिष्ट्या निहतस्त्वया रिपुः ॥ २३ ॥ न चेत्परित्रास्य इमान् जनान् भयाद्द्विषद्भिरेवं बलिभिः प्रपीडितान् । तथाभविष्यद्द्विषतां प्रमोदनं यथा हतेष्वेष्विह नोऽरिसूदन ॥ २४ ॥ इतीव

गिरतेहों । १८ । इसीप्रकार अर्जुनके अर्द्धचन्द्र बाणसे कटाहुआ दंडका शिर हाथी के ऊपरसे पृथ्वीपर गिरते समय ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य्य अस्ताचल से पश्चिम दिशामें गिरताहै । १९ । इसके पीछे अर्जुनने सूर्य्यकी किरणरूप उत्तम बाणों से उसके श्वेत हाथीको भी छेदा वहभी शब्द करताहुआ ऐसे गिरा जैसे वज्रसे टूटा हिमाचलका शिखर गिरता है । २० । उसके सिवाय उसीके समान अन्य उत्तम हाथी विजयाभिलाषी हुये और वह भी उसीप्रकार से अर्जुन के हाथसे मरे जैसे कि वह दोनों हाथी मारेगये थे इसके पीछे शत्रुओंकी बड़ीभारी सेना छिन्नभिन्न होगई । २१ । युद्धमें परस्पर मारने वाले हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूह चारों ओरसे परस्पर में अत्यन्त घायलहोकर गिरपड़े और बहुतसे अत्यन्त बकनेवाले मनुष्यभी मारेगये । २२ । इसके पीछे पाण्डवी सेनाके मनुष्य अर्जुनको घेरकर ऐसे बोले जैसे कि देवताओं के समूह इन्द्रको घेरकर बोलतेथे कि हे वीर अर्जुन हमलोग जिस से कि मृत्युके समान भयभीत थे वह शत्रु प्रारब्ध से तुम्हारे हाथसे मारागया । २३ । जो इसप्रकार पराक्रमी शत्रुओं से पीड़ामान इन मनुष्यों को तुम रक्षानहीं करते तो शत्रुओं की वैसीही प्रसन्नताहोती जैसी कि हम लोगों

cut down by Arjun's crescent shaped arrow, looked glorious in its fall like the Sun when he sets in the west. Then with arrows bright like the rays of the Sun, Arjun pierced his elephant which fell down with a crash like a peak of the Himalayas struck by lightning. 20. Other elephants like those already slain, came on to conquer Arjun, but were slain by him in a similar way. Then the great army of the enemies was dispersed. Elephants, horses and men fighting together, fell down wounded in large numbers, and many boasters were slain. Then the warriors of the Pandav army came round Arjun like gods round Indra, saying, "Brave Arjun, you have slain the foe who terrified us like Death. Our enemies would be happy like us

भूयश्च सुहृद्भिरीडिता निशम्य वाचः सुमनास्ततोऽर्जुनः। यथानुरूपं प्रतिपूज्य तं जनं जगाम संशप्तकसंघहा पुनः ॥ २५॥

इति श्री कर्णपर्वणि दण्डधारवधे अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

सञ्जय उवाच। प्रत्यागत्यं पुनर्जिष्णुर्जघ्ने संशप्तकान् बहून्। वक्रातिवक्रगमनादङ्गारक इव ग्रहः॥१॥पार्थबाणहता राजन्नराश्वरथकुञ्जराः। विचेलुर्बभ्रमुर्नेदुः पेतुर्म्लुश्च भारत ॥ २ ॥ धुर्य्यान् धुर्य्यगतान् सूतान् ध्वजांश्चापानि सायकान्। पाणीन् पाणिगतं शस्त्रं बाहूनपि शिरांसि च ॥ ३ ॥ भल्लैः क्षुरैरर्द्धचन्द्रैर्वत्सदन्तैश्च

की हुई है। २४। इसके अनन्तर शुभचिन्तकों के इन वचनों को सुनकर वह प्रसन्न चित्त संसप्तकों का मारनेवाला अर्जुन प्रत्येक को उनकी योग्यता के अनुसार प्रसन्न करके चलदिया। २५।

अध्याय ॥ १९॥

संजय बोले कि इसके पीछे अर्जुन ने वहां से लौटकर मंगल ग्रह के समान वक्र औ अतिवक्र गतियों से हजारों संसप्तकों को मारा। १। हे भरतवंशी अर्जुन के बाणों से घायल मनुष्य घोड़े रथ हाथी सब के सब इधरको तितिर वितर होकर घूमने लगे और घूमकर गिरे और मृतक होकर नष्ट होगये। २। युद्ध में सम्मुख लड़नेवाले वीरों के उत्तम घोड़े रथ हाथी रथी ध्वजा धनुष शायक हाथ वा हाथ में लिये शस्त्र भुजा और शिरों को अर्जुन ने अपने भल्ल क्षुरप्र अर्द्धचन्द्र

if you had not protected us." Well pleased to hear the words of his well-wishers, Arjun the slayer of Sansaptaks, pleased them as they deserved and moved onward." 25.

CHAPTER XIX

Sanjaya continued, "Turning round from that place, Arjun, *moving zigzag like the planet Mangal*, slew the Sansaptaks. Wounded by Arjun's arrows, men, horses, cars and elephants dispersed in all directions or fell down and died. The horses, cars, drivers, banners, bows arrows, hands, arms holding weapons in hands, and heads of the fighting warriors were cut down by Arjun's arrows of various shapes.

पाण्डवः । चिच्छेदामित्रवीराणां समरे प्रतियुध्यताम् ॥ ४ ॥ वासितार्थे युयुत्सन्तो
वृषभा वृषभं यथा । निपतन्त्यर्जुनं शूराः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ५ ॥ तेषां तस्य च
तद्युद्धमभवल्लोमहर्षणम् । त्रैलोक्यविजये यादृग्दैत्यानां सह वज्रिणा ॥६॥ तमविध्यत्
त्रिभिर्बाणैर्दन्दशूकैरिवाहिभिः । उग्रायुधसुतस्तस्य शिरः कायादपाहरत् ॥७॥ तेऽर्जुनं
सर्वतः क्रुद्धा नानाशस्त्रैरवीवृषन् । मरुद्भिः प्रेषिता मेघा हिमवन्तमिवोष्णगे ॥ ८ ॥
अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य द्विषतां सर्वतोऽर्जुनः । सम्यगस्तैः शरैः सर्वान्सहितानहनद्बहून्
॥ ९ ॥ छिन्नत्रिवेणुसंघातान् हताश्वान् पार्ष्णिसारथीन् । विस्रस्तहस्ततूणीरान् विचक्र
रथकेतनान् ॥ १० ॥ संछिन्नरश्मियोक्त्राक्षान् व्यनुकर्षयुगान्रथान् । विध्वस्तसर्वसन्ना
हान् बाणैश्चक्रेऽर्जुनस्तदा ॥ ११ ॥ ते रथास्तत्र विध्वस्ताः परार्ध्या भान्त्यनेकशः ।

और वत्सदन्तनाम बाणों से काटा । ४ । जैसे कि गौके निमित्त युद्धाभिलाषी अनेक बैल दूसरे बैलके सम्मुख जाते हैं उसी प्रकार हजारों शूरवीर अर्जुन के ऊपर गिरते थे।५। उन सब वीरों के साथ अर्जुनका युद्ध ऐसा बड़ा भयकारी रोमहर्षण करनेवाला हुआ जैसे कि तीनोंलोकों की विजय के वास्ते दैत्योंका युद्ध इन्द्रके साथ में हुआ था । ६ । उग्रायुधके पुत्रने सर्पों के समान तीन बाणों से उस अर्जुन को घायल किया और अर्जुन ने उसके शिरको धड़से जुदा किया । ७। फिर क्रोधित होकर उन लोगों ने सब ओर से अर्जुन के ऊपर नानाप्रकार के शस्त्रों की ऐसी वर्षाकी जैसे कि वर्षा ऋतु में मरुत् देवता के प्रेरित किये हुये बादल हिमालयपर जलकी वृष्टिको करते हैं । ८ । अर्जुनने शत्रुओं के अस्त्रोंको सब ओरसे अपने अस्त्रोंसे रोककर अच्छीरीतिसे चलायेहुये बाणोंसे अनेक शत्रुओं को मारा । ९ । और उनके रथोंको भी बाणों से रथियों समेत ऐसी दशाका करदिया कि जिनके घोड़े और सारथि मरजाने से हाथों से तरकस और ध्वजा पताका गिरपड़ीं बागडोर हाथसे छुटगई पहिये टूटे दांतुये और जुये और शरीर के कवच भी टूटे । ११ । वहां टूटेहुये बहुमूल्य रथ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि

Like the bulls fighting for a cow, thousands of warriors fell upon Arjun. 5. Their fighting with Arjun was like that of the Daityas desirous of getting the mastery of the three worlds, with Indra. Ugrayudha's son wounded Arjun with three sharp arrows like serpents, but he was beheaded by the latter. Then those warriors showered their arrows over Arjun as clouds pour forth rain over a mountain. Checking their weapons with his own, Arjun slew the enemies with his well discharged arrows. He destroyed the cars and riders together with the horses and drivers. Their quivers and standards fell down; the traces went away from their grasp and the wheels and other parts of their cars were broken down. 11. The

धनिनामिव वेश्मानि हतान्यग्न्यनिलाम्बुभिः ॥ १२ ॥ द्विपाः सम्भिन्नवर्माणो वज्राशनिसमैः शरैः । पेतुर्गिर्य्यग्रवेश्मानि वज्रपाताग्निभिर्यथा ॥ १३ ॥ सारोहास्तुरगाः पेतुर्बहवोऽर्जुनताडिताः निर्जिह्वान्त्राः क्षितौ क्षीणाः रुधिरार्द्राः सुदुर्दृशः ॥ १४ ॥ नराश्वनागा नाराचैः संस्यूताः सव्यसाचिना । बभ्रमुश्चस्खलुः पेतुर्नेदुर्म्लुश्च मारिष ॥ १५ ॥ अनेकैश्च शिलाधौतैर्वज्राशनिविषोपमैः । शरैर्निजघ्निवान् पार्थो महेन्द्र इव दानवान् ॥ १६ ॥ महार्हवर्माभरणा नानारूपा वरायुधाः । सरथाः सध्वजा वीरा हताः पार्थेन शेरते ॥ १७ ॥ विजिताः पुण्यकर्माणो विशिष्टाभिजनश्रुताः । गताः शरीरैर्वसुधामूर्जितैः कर्मभिर्दिवम् ॥ १८ ॥ अथार्जुनं रथवरं त्वदीयाः समभिद्रवन्

अग्नि वायु और जलसे टूटेहुये धनीलोगों के घर होते हैं । १२ । फिर वज्र और बिजली के समान बाणों से टूटेहुये हाथियों के कवच ऐसे टूटपड़े जिसप्रकार वज्रपात और अग्निसे पर्व्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं । १३ । फिर अर्जुन के हाथसे घायल होकर बहुत से घोड़े सवारों समेत गिरपड़े उन घोड़ों की जीव और नेत्र निकल पड़े थे इसहेतु से वह पृथ्वी पर पड़ेहुये रुधिर से लिप्त देखनेके अयोग्य मालूम होते थे । १४ । हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र अर्जुन के नाराचों से छिदे हुये मनुष्य घोड़े और हाथी गर्ज २ कर घूमते और मलिन मन होकर पृथ्वीपर गिरपड़े ।१५। अर्जुन ने बड़े स्वच्छ बिजली और विषके समान बहुतसे बाणों से उनको ऐसेमारा जैसे कि महाइन्द्र दानवों को मारताहै । १६ । अर्जुनके हाथसे मरेहुये जो वीर रथ और ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर शयन करनेवाले हुये वह वीर बड़े मूल्य के कवच भूषण और नाना प्रकारकी पोशाकों समेत शस्त्रोंके धारण करनेवाले थे । १७ । वह पवित्रकर्मी वा उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ युद्धकर्त्ता अर्जुनके बाणों से पराजयहोकर पृथ्वी पर गिरपड़े और अपने उत्तम कर्मके द्वारा स्वर्ग को गये । १८ । इसकेपीछे

precious cars, broken down, looked like the houses of wealthy men, shattered by fire, water and wind. The armours of the elephants, broken by arrows like vajra and lightning, looked like the peaks of mountains broken down by lightning and fire. Wounded dy Arjun, many horses fell down with their riders; their tongues and eyes came out, and with blood-stained bodies they were hideous to behold. Pierced by Arjun's arrows, men, horses and elephants shrieked hither and thithor and fell down on earth with diseased minds. 15. With many poisonous arrows, bright like lightning, Arjun slew them as Indra does the Danavas. The warriors slain by him, lay on the earth, along with their cars and standards, decked with precious armours, ornaments clothes and weapons. The virtuous warriors of noble families, learned in books and warfare, fallen down by Arjun's arrows, lay on earth and went to heaven as a result of

नानाजनपदाध्यक्षाः सगणा जातमन्यवः ॥ १९ ॥ उह्यमाना रथाश्वेभैः पत्तयश्च जिघांसवः । समाभ्ययाधन्नस्यन्तो विविध क्षिप्रमायुधम् ॥ २० ॥ तदायुधमहावर्षं मुक्तं योधमहाम्बुदैः । व्यधमन्निशितैर्बाणैः क्षिप्रमर्ज्जुनमारुतः ॥ २१ ॥ साश्वपत्तिद्विपरथं महाशस्त्रौघमप्लवम् । सहसा सन्तितीर्षन्तं महाशस्त्रास्त्रसेतुना ॥ २२ ॥ अथाब्रवीद्वासुदेवः पार्थं किं क्रीडसेनघ । संशप्तकान् प्रमथ्यैतान् ततः कर्णवधे त्वर ॥ २३ ॥ तथेत्युक्त्वाऽर्ज्जुनः कृष्णं त्रिप्रान् संशप्तकांस्तदा । आक्षिप्य शस्त्रेण बलात् दैत्यानिन्द्र इवावधीत् ॥२४ ॥ आददत् सन्दधन्नेषून् दृष्टः कैश्चिद्रणेऽर्ज्जुनः । विमुञ्चन् वा शरान् शीघ्रं दृश्यतेवहितैरपि ॥ २५ ॥ आश्चर्य्यमिति गोविन्द्रः सममन्यत भारत । हंसांशुगौराः

भिन्न देशोंके स्वामी क्रोधयुक्त शूरवीर आपके युद्धकर्त्ता अपने समूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके सम्मुख गये । १९ । रथ घोड़े और हाथियों पर सवार मारने के अभिलाषी वह पतिलोगभी नाना प्रकारके शस्त्रोंको चलातेहुये शीघ्र सम्मुख दौड़े । २० । जिनको अर्जुनरूपी वायुने शीघ्रता पूर्व्वक छोड़ेहुये बाणोंसे उस शस्त्ररूपी बड़ी वर्षाको जोकि युद्धकर्त्तारूपी बड़े बादलोंसे छोड़ी हुईथी पृथक् २ करदियाथा । २१ । वहघोड़े हाथी और पतियों से युक्त बड़े २ शस्त्रों से पूर्ण अर्ज्जुन ने अस्त्र और अस्त्र रूपी पुलसे पारकी । २२ । इसके अनन्तर वासुदेवजी ने कहा कि हे निष्पाप अर्जुन क्या खेल करताहै इनसंसप्तकों को मारकर फिर कर्ण के मारनेका उपाय शीघ्रता से कर । २३ । तब अर्जुनने श्रीकृष्णजी से बहुत अच्छा यह कहकर श्रेष्ठ संसप्तकोंको तुच्छ करके शस्त्रों के बलसे ऐसामारा जैसे कि दैत्योंको इन्द्रमारताहै । २४ । अर्जुन बाणों को लेता चढ़ाता और मारताहुआ किसी को दिखाई नहीं दिया और सावधान वीरों ने उसको शीघ्रतासे बाणोंको छोड़ताहुआ भी देखा । २५ । हे भरतवंशी उन श्रीकृष्णजीने बड़ा आश्चर्य किया कि हंसोंके

their good deeds. Then the kings of various countries, enraged warriors, fighting for you, went on to face Arjun. Mounted on cars, horses and elephants as well as those on foot, desirous of slaying, they went forward discharging weapons of various sorts. 20. The wind of Arjun's arrows dispersed the clouds of their weapons. The army consisting of horse, foot and elephant riders was crossed over by Arjun by means of the bridge of his weapons. In the meantime Vasudev said, "Why are you playing, sinless Arjun? Slay the Sansaptaks without delay; for you have Karan to cope with." Saying "Very well," In reply, Arjun slew the Sansaptaks as Indra does the Danavas. None could mark the time spent by Arjun in the taking up, putting to the bow and discharging of arrows, though the warriors looked at him with the closest attention. 25. Shri Krishn

सेनां हंसाः सर इवाविशन् ॥ २६ ॥ ततः संग्रामभूमिञ्च वर्त्तमाने जनक्षये। अवेक्ष माणो गोविन्दः सव्यसाचिनमब्रवीत् ॥ २७ ॥ एष पार्थ महारौद्रो वर्त्तते भरतक्षयः। पृथिव्यां पार्थिवानां वै दुर्य्योधनकृते महान् ॥ २८ ॥ पश्य भारत चापानि रुक्मपृष्ठानि धन्विनाम। महताञ्चापविद्धानि कलापानिषुधींस्तथा ॥ २९ ॥ जातरूपमयैः पुंखैः शरां श्चानतपर्वणः। तैलधौतांश्च नाराचान् निर्म्मुक्तानिव पन्नगान् ॥ ३० ॥ आकीर्णांस्तोम रांश्चापि विचित्रान् हेमभूषितान्। वर्माणि चापविद्धानि रुक्मपृष्ठानि भारत ॥ ३१ ॥ सुवर्णविकृतान् प्रासान् शक्तीः कनकभूषिताः। जाम्बुनदमयैः पट्टैर्वद्धाश्च विपुला गदा ॥ ३२ ॥ जातरूपमयीश्चर्ष्टीः पट्टिशान् हेमभूषितान्। दण्डैः कनकचित्रैश्च विप्रविद्धान् परश्वधान् ॥ ३३ ॥ परिघान् भिन्दिपालांश्च भुशुण्डीः कुणपानपि। अयः कुन्तांश्च पात तान् मुषलानि गुरूणि च ॥ ३४ ॥ नानाविधानि शस्त्राणि प्रगृह्य जयगृद्धिनः। जीवन्त

समान उज्ज्वल वह बाण सेनामें ऐसे पहुँचे जैसे कि सरोवरमें हंसपक्षी पहुँचतेहैं २६। इसके अनन्तर मनुष्यों की प्रलय वर्त्तमान होनेपर युद्धभूमिको देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले । २७ । हे अर्जुन दुर्य्योधन के कारणसे यह भरतवंशी और अन्य राजाओं की प्रलय पृथ्वीपर वर्त्तमानहै । २८ । हे भरतवंशी बड़े धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठवाले धनुषधारियों को वा आभूषणों समेत तूणीरोंको टूटाहुआ देखो २९ और टेढ़ेपर्व और सुनहरी पुंखवाले तेलसे सच्चिक्कण कांचलीसे छूटे सर्पोंके समान नाराचनाम बाणोंकोदेखो । ३० । हे भरतवंशी सुवर्ण से अलंकृत चित्र विचित्र तोमरोंको भी देखो और धनुषसे टूटेहुये सुवर्ण पुंखवाले बाणोंको देखो । ३१ । सुवर्ण से अलंकृत बाण वा कंचनसे शोभित शक्तियों को वा सुनहरी वस्त्रोंसे मढ़ी हुई गदाओंको देखो । ३२ । सुनहरी दुधारे खड्ग पट्टिश और डंडोंसमेत कटेहुये फरसों को देखो । ३३ । और बहुमूल्यके पड़ेहुये परिघ भिन्दिपाल भुशुंडी कुणप और अयःकुन्तोंको देखो । ३४ । विजयाभिलाषी वेगवान शूरवीर नानाप्रकार के

wondered at the swan like flight of arrows which fell down in the army as swans do in a lake. Then at the great destruction of men, Shri Krishn looking at the field of battle said to Arjun, "These warriors of the earth are being destroyed for the fault of Duryodhan. Looked at the gold-backed bows, ornaments and quivers of the warriors, fallen down on earth. Look also at the oiled and polished arrows like serpents freed from their skins. 30. Look at the gold-bedecked tomars and the broken shafts with gold feathers. Look at the golden arrows, golden spears and the maces covered with gold cloth. Look at the double-edged swords, pattishes and battle axes with broken staffs. Look at the precious clubs, *bhindipals*, *bhushundis*, *kunaps* and *ayahkunts*. The warroirs desirous of fighting, lying

इव दृश्यन्ते गतसत्वास्तरस्विनः ॥ ३५ ॥ गदाभिर्मथितैर्गात्रैर्मुशलैर्भिन्नमस्तकान् । गज
वाजिरथैः क्षुण्णान् पश्य योधान् सहस्रशः ॥ ३६ ॥ मनुष्यगजवाजीनां शरचापनृष्टितो
मरैः । निस्त्रिंशैः पट्टिशैः प्रासैर्नखरैर्लगुडैरपि ॥ ३७ ॥ शरीरैर्बहुधाच्छिन्नैः शोणितौघ
परिप्लुतैः । गतासुभिरमित्रघ्न संवृता रणभूमयः ॥ ३८ ॥ बाहुभिश्चन्दनादिग्धैः साङ्गदैः
शुभलक्षणैः । सतलत्रैः सकेयूरैर्भाति भारत मेदिनी ॥ ३९ ॥ साङ्गुलित्रैर्भुजाग्रैश्च विम
विद्धैरलंकृतैः । हस्तिहस्तोपमैश्छिन्नैरूरुभिश्च तरस्विनाम ॥ ४० ॥ बद्धचूडामणिवरैः
शिरोभिश्च सकुण्डलैः । रथांश्च बहुधा भग्नान् हेमकिङ्किणिनः शुभान् ॥४१॥ अश्वांश्च
बहुधा पश्य शोणितेन परिप्लुतान् । अनुकर्षानुपासङ्गान् पताका विविधान् ध्वजान्
॥ ४२ ॥ योधानाञ्च महाशङ्खान् पाण्डुरांश्च प्रकीर्णकान् । निरस्तजिह्वान्मातङ्गान्
शयानान् पर्वतोपमान ॥ ४३ ॥ वैजयन्तीर्विचित्राश्च हतांश्च गजयोधिनः । वारणानां

शस्त्रोंको लेकर निर्जीवहोकर जीवतेसे दिखाई देतेहैं । ३५ । गदाओं से मथित अंग वाले हाथी घोड़े और रथों समेत मूशलोंसे कूटेहुये मस्तकवाले हजारों युद्धकर्त्ताओं को देखो । ३६ । हे शत्रुहन्ता बाण शक्ति दुधारे खड्ग तोमर पट्टिश प्रास नखर लगुडआदि अनेक शस्त्रोंसे अत्यन्त घायल मनुष्य हाथी घोड़ोंके समूह रुधिरमें भरे हुये निर्जीव देहों से पड़े युद्धभूमि में वर्त्तमान हैं । ३८ । और बाजूबंद आदि शुभ भूषण हस्तत्राण और केयूरको धारण करनेवाली चन्दनसेलिप्त भुजाओंसे पृथ्वी शोभायमानहै ।३९। और वेगवान् शूरवीरोंकी टूटीहुईउत्तम भुजाओंसे वा हाथीकी सूंड़के समान टूटीहुई जंघाओं से और उत्तम चूड़ा बांधनेवाले कुंडलधारी शिरों से युद्धभूमि अत्यन्त शोभादेरही है सुनहरी घंट रखनेवाले उत्तम रथों को भी अनेक प्रकारसे टूटाहुआ देखो । ४१ । और रुधिर में भरेहुये बहुत से घोड़ोंको देखो वा अनुकर्ष उपासंग पताका और नानाप्रकारकी ध्वजाओं को देखो । ४२। युद्धकर्त्ताओं के फैलेहुये श्वेतरंग के महाशंखों को और जिह्वा निकले पर्व्वत के समान पड़े सोतेहुये हाथियों को देखो । ४३ । वैजयन्तीनाम विचित्र मालाओं से

with various sorts of weapons, look like living ones. 35 . The elephants, horses and cars, shattered by maces and clubs are lying along with thousands of warriors with broken heads. Wounded by spears, swords, *tomars, pattishes, prases, nakhars,* staves etc., the men, elephants and horses are lying dead on earth with blood stained bodies The beautiful ornaments, hand guards and the arms decked with sandal paste beautify the land. With the arms of the warriors or with their thighs like the trunks of elephants and with the head-jewels, the field of battle looks beautiful. Look at the broken cars having beautiful, golden bells. 41 . Look at the numerous horses, with gold trappings, banners and standards. Look at the white conchs of the warriors and the elephants, huge like hills,

परिस्तोमान् संयुक्तानेककम्बलान् ॥ ४४ ॥ विपाटिता विचित्राश्च रूपचित्राः कुथा
स्तथा । भिन्नाश्च बहुधा घण्टाः पतद्भिश्चूर्णिता गजैः ॥ ४५ ॥ वैदूर्य्यमणिदण्डांश्च पति
तानंकुशान्भुवि । अश्वानाञ्च युगापीडान् रत्नचित्रानुरश्छदान् ॥ ४६॥ पताः सादि
ध्वजाग्रेषु सुवर्णविकृताः कुथाः । विचित्रान् मणिचित्रांश्च जातरूपपरिष्कृतान् ॥ ४७॥
अश्वास्तरपरिस्तोमान् राङ्कवान् पतितान्भुवि । चूडामणीन् नरेन्द्राणां विचित्राः काञ्च
नस्रजः ॥ ४८ ॥ छत्राणि चापविद्धानि चामरव्यजनानि च । चन्द्रनक्षत्रभासैश्च वदनै
श्चारुकुण्डलैः ॥ ४९ ॥ क्लृप्तश्मश्रुभिराकीर्णां पूर्णचन्द्रनिभैर्महीम् ॥ ५० ॥ कुमुदोत्पल
पद्मानां षण्डैः फुल्लं यथा सरः । तथा मही भृता चन्द्रैः कुमुदोत्पलसन्निभैः ॥ ५१ ॥
तारागणविचित्रस्य निर्मलेन्दुद्युतित्विषः । पश्येमां नभसस्तुल्यां शरन्नक्षत्रमालि
नीम् । एतत्त्वैवानुरूपं कर्मार्जुन महाहवे ॥ ५२ ॥ दिवि वा देवराजस्य त्वया यत्

और मरेहुये हाथियों के सवार और अनेक कालेकमलों से युक्त परिस्तोमों से । ४४ । अच्छी कृष्ण और विचित्र अद्भुतरूप कुथाओं से और हाथियों से टूटकर गिरेहुये घंटाओं के चूर्णोंको देखो । ४५ । वैदूर्य्य मणिके दण्डेवाले पृथ्वीपर पड़े हुये अंकुशों को और घोड़ों के जुये पीठ और रत्नजटित छिद्रों को देखो । ४६ । सवारों की ध्वजाओं की नोकोंपर टूटेहुये सुवर्ण से चित्रित घंटाओं को और विचित्र मणियों से जटित सुवर्ण अलंकृत । ४७ । पृथ्वीपर पड़ेहुये मृगचर्म्म से बने हुये घोड़ों के जीनपोशों को और राजाओं की चूड़ामणि और सुनहरी विचित्र मालाओं को देखो । ४८ । धनुषसे छिदेहुये छत्र चामर और वैजयन्तियों को देखो चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशित सुन्दर कुंडलधारी । ४९ । अलंकार युक्त दाढ़ी मूछों से संयुक्त पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखों से बिछीहुई पृथ्वी को देखो ५० इसी प्रकार कुमुद उत्पल नाम कमलों के समान रूपी राजाओं के मुखों से इस पृथ्वी को नक्षत्र समूहों समेत निर्मल चन्द्रमा से शोभित आकाश के समान सदैव बाणरूप नक्षत्रों की मालाओं के रखनेवाली को देखो हे अर्जुन इस महायुद्ध में यह कर्म तेरेही योग्य है । ५२ । वा देवराज इन्द्रके योग्य है इस रीतिसे वह युद्-

scattered here and there, with their tongues lolling out. Wonderful garlands, the riders of the elephants slain, blankets of black and variegated colours and the bells of elephants, are lying broken and scattered. Look at the goads with handles studded with lapis lazuli, yokes of horses and the studded armours. Look at the bells separated from the banners and beautiful, jewelled and golden trappings of horses, made of deer skins. Look the head jewels and garlands of kings. Look at the ground covered with broken umbrellas, chamars and vaijayantis, and the faces bright like the moon and stars, decked with ear-rings, beards and moustaches, beautiful like the full moon.50, With the lotus like faces of the kings, the ground looks like the sky

कृतमघ.धै। एवं तां दर्शयन्कृष्णो युद्धभूमिं किरीटिने ॥ ५३ ॥ गच्छन्नेवाशृणोत् शब्दं दुर्योधनबले महत् । शंखदुन्दुभिनिर्घोषं भेरीपटहनिःस्वनम् ॥ ५४ ॥ रथाश्वगजनादांश्च शस्त्रशब्दांश्च दारुणान् । प्रविश्य तद्बलं कृष्णस्तुरगैर्वातिवेगितैः । पाण्ड्येनार्दितं सैन्यं त्वदीयं वीक्ष्य विस्मितः ॥ ५५ ॥ स हि नानाविधैर्बाणैरिष्वस्त्रप्रवरो युधि । न्यहनद्द्विषतां पूगान् गतासूनन्तको यथा ॥ ५६ ॥ गजवाजिमनुष्याणां शरीराणि शितैः शरैः । भित्वा प्रहरतांश्रेष्ठो विदेहासूनपातयत् ॥ ५७ ॥ शत्रुप्रवीरैरस्तानि नाना शस्त्राणि सायकैः । छित्वा तानवधीत् शत्रून् पाण्ड्यः शक्र इवासुरान् ॥ ५८ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे एकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

भूमि अर्जुनको दिखाते । ५३ । और चलते हुये श्रीकृष्णजी ने दुर्योधन की सेना में शंख दुन्दुभी भेरी और पणवों के बड़े शब्दों को सुना । ५४ । और रथ घोड़े हाथी और शस्त्रों के भयानक शब्दों को भी सुना फिर श्रीकृष्णजी ने वायु के समान घोड़ों के द्वारा उस सेना में प्रवेशकरके राजा पाण्ड्य के हाथसे आपकी सेनाको पीड़ित देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया । ५५ । बाण और अस्त्रविद्या में अत्यन्त श्रेष्ठ उस पांड्यने युद्धमें अनेक प्रकारके बाणों से शत्रुओं के समूहों को ऐसे मारा जैसे कि मृत्यु निर्जीव मनुष्यों को मारती है । ५६ । घात करने वालों में श्रेष्ठ पांड्यने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा हाथी घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को छेदकर उन निर्जीवों को गिराया ।५७। फिर पाण्डयने शत्रुओंके चलाये अस्त्र और नानाप्रकार के शस्त्रों को शायकों से काटकर उन शत्रुओं को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र असुरों को मारता है । ५८ ।

studded with the moon and stars and the arrows shine like stars. The work done by you in this battle was worthy of you or of Indra the chief of gods in heaven." Thus showing the field of battle to Arjun on his way back, Krishn heard a great noise of drums and trumpets in the army of Duryodhan. The sounds of cars, horses, elephants and weapons were also heard there. Then entering the army by means of the horses swift like the wind, Shri Krishn was amazed to see your army grinded by Pandya. Skilful in the use of arrows and other weapons, Pandya slew the enemies with his arrows as Yam slays those whose periods of life come to an end. Pandya the best of warriors, pierced the bodies of men, elephants and horses with his arrows and slew them. Then having cut down the arrows and other weapons of the enemies, Pandya slew them as Indra does the asurs." 58 .

धृतराष्ट्र उवाच । प्रोक्तस्त्वया पूर्वमेव प्रवीरो लोकविश्रुतः । न त्वस्य कर्म संग्रामे त्वया सञ्जय कीर्तितम् ॥ १ ॥ तस्य विस्तरशो ब्रूहि प्रवीरस्याद्य विक्रमम् । शिक्षां प्रभावं वीर्यञ्च प्रमाणं दर्पमेव च ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । भीष्मद्रोणकृपद्रौणिकर्णार्जुनजनार्दनान् । समाप्तविद्यान्धनुषि श्रेष्ठान् यान्मन्यसे रथान् ॥ ३ ॥ क्षेप्ताक्षिपति वीर्य्येण सर्वानेतान्महारथान् । न मेने चात्मना तुल्यं कञ्चिदेव जनेश्वरम् ॥ ४ ॥ तुल्यतां कर्णभीष्माभ्यामात्मनो यो न मृष्यते । वासुदेवार्जुनाभ्याञ्च । न्यूनतां नैच्छदात्मनि ॥ ५ ॥ स पाण्ड्यो नृपतिश्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृतांवरः । कर्णस्यानीकमहनत् परा भूत इवान्तकः ॥ ६ ॥ तदुदीर्णरथाश्वञ्च पत्तिप्रवरसंकुलम् । कुलालचक्रवत् भ्रान्तं

अध्याय २० ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तुमने प्रथमही लोक में विख्यात पाण्ड्य बड़ा बीर वर्णन किया परन्तु तुमने युद्धमें इसके कर्म को वर्णन नहीं किया । १ । अब उस बड़े वीर के पराक्रम और शिक्षा के प्रभाव बल बड़प्पन और अहंकारको ब्यौरेवार कहो । २ । संजय बोले कि तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य अश्वत्थामा कर्ण अर्जुन और श्रीकृष्ण आदि जिन रथियों को सर्व्व विद्या सम्पन्न और धनुष विद्या में सबसे श्रेष्ठ मानते हो और जो इन सब महारथियों को भी अपने पराक्रम से तुच्छ समझता है जिसने अन्य किसी राजाको अपने समान नहीं माना । ४ । और जो भीष्म द्रोणाचार्य्य के साथ में अपनी समानताको भी नहीं सहता है और जिस ने अपनेको वासुदेवजी और अर्जुन से कम नहीं जाना । ५ । उस राजाओं में और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ राजापांड्य ने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर यमराजके समान कर्णकी बड़ी सेनाको मारा । ६ । बड़े रथ घोड़ों समेत अत्यन्त उत्तम पतियों से व्याप्त और पांडयके पराक्रमसे घायल होकर वह सेना कुम्हार के चक्रके समान

CHAPTER XX

Dhritrashtra said, "You spoke of the famous warrior Pandya, but you did not mention his deeds in battle. Now tell me in detail, of his prowess, training, strength, greatness and pride." Sanjaya replied, "King Pandaya, who looked down upon the prowess of your great warriors, Bhishm, Drona, Krip, Ashwathama, Karan, Arjun, Krishn and other princes, who did not think Bhishm and Drona to be his equals, and who did not think himself less than Vasudev and Arjun, that best of warriors, enraged like Yamraj, destroyed the great army of Karan. 6. Full of large numbers of cars, horse and foot, the great army wounded by the prowess of Pandaya, turned round like a potter's wheel and was dispersed in all directions. Mak-

पाण्ड्येनाश्वाहतं बलात् ॥ ७ ॥ हयध्वजसूतरथान् विप्रविद्धायुधद्विपान् । सम्य
ग्मुक्तैः शरैः पाण्ड्यो वायुर्मेघानिवाक्षिपत् ॥ ८ ॥ द्विरदान् द्विरदारोहान् विपताकायुधध्व
जान् । सपादरक्षानहनत् वज्रेणाद्रीनिवाद्रिहा ॥ ९ ॥ स शक्तिप्रासतूणीरानश्वारो
हान् हयानपि । पुलिन्दखसबाह्लीकनिषादान्धकतङ्गणान् ॥ १० ॥ दाक्षिणात्यांश्च
भोजांश्च क्रूरान्संग्रामकर्कशान् । विशस्त्रकवचान्बाणैः कृत्वा चैवाकरोद्व्यसून् ॥ ११ ॥ चतु
रङ्गबलं हत्वा निघ्नन्तं पाण्ड्यमाहवे । दृष्ट्वा द्रौणिरसम्भ्रान्तमसम्भ्रान्तस्ततोऽभ्ययात् ॥ १२ ॥
आभाष्य चैनं मधुरमभीतं तमभीतवत् । प्राह प्रहरतां श्रेष्ठः स्मितपूर्वं समाह्वयन्
॥ १३ ॥ राजन् कमलपत्राक्ष विशिष्टाभिजनश्रुत । वज्रसंहननप्रख्य प्रख्यातबलपौरुष
॥ १४ ॥ मुष्टिश्लिष्टायतज्यञ्च व्यायताभ्यां महद्धनुः । दोर्भ्यां विस्फारयन् भासि महा

घूमतीहुई इधर उधर फिरनेलगी । ७ । पाड्यने घोड़े ध्वजा और सारथियोंसे रहित रथोंको और कठिन युद्धसे मारेहुये हाथियों को अच्छीरीति से चलाये बाणों से ऐसे हटादिया जैसे कि वायु बादलोंको हटाताहै । ८ । पताका ध्वजा और शस्त्रों से रहित हाथियों को हाथियों के सवारों समेत पीछे के रक्षकों को ऐसे माराजैसे कि शत्रुहन्ता इन्द्र अपने वज्रसे पर्वतोंको विदीर्ण करता है । ९ । उसने शक्तिप्रास और तूणीरों समेत अश्वारूढ़ और घोड़ों कोभी मारकर पुलिंद खश, बाह्लीक, निषाद अंधक तंगण । १० । दाक्षिणात्य और भोजोंको और युद्धमें निर्दयी शूरों को बाणोंके द्वारा शस्त्र और कवचोंसे रहित करके निर्जीव किया । ११ । युद्धमेंबाणों मारनेवाले रुधिर से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से पृथक् पाण्ड्य को देखकर अश्वत्थामाजी भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित चतुरंगिणी सेना समेत उस के सम्मुख गये । १२ । वहां महारथियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ने निर्भय के समान इसको मीठे वचनों से समझाकर कहा । १३ । कि हे कमलदल लोचन उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ वज्र के समान दृढ़ शरीर और बल में

ing the cars destitute of horses, standards and drivers, and slaying elephants, Pandaya, with the flights of his well-discharged arrows, routed the army as the wind disperses the clouds. He cut and killed the standards, banners, weapons, elephants, their riders and rear guards, as Indra the destroyer of foes does the mountains. Having cut down the horsemen and horses, along with their spears, *prases* and quivers, with his arrows, he slew and deprived of arms and armour the warriors of Pulind, Khash, Vahlik, Nishad, Andhak, Tangan, Southern country, Bhoj and other hard-hearted warriors. 11. Seeing Pandya fearlessly shed blood with his arrows, Ashwathama free from fear, and accompanied by an army of four denominations, opposed him. Ashwathama the best of warriors fearlessly addressed him in sweet words, saying, Lotus eyed one, of the noblest family, of

जासदृवज्रदृशम् ॥ १५ ॥ शरवर्षैर्महावेगैरमित्रानभिवर्षतः । मदन्यं नानुपश्यामि प्रति
वीरं तवाहवे ॥१६॥ रथद्विरदपत्त्यश्वानेकः प्रमथसे बहून । मृगसंघानिवारण्ये विभी
र्भीमबलो हरिः ॥ १७ ॥ महता रथघोषेण दिवं भूमिञ्च नादयन् । वर्षान्ते शस्यहा
मेघो भासि ह्रादीव पार्थिव ॥ १८ ॥ संस्पृशानः शरांस्तीक्ष्णास्तूणादाशीविषोपमान् ।
मयैवैकेन युध्यस्व ऽप्यम्बकेनान्धको यथा ॥ १९ ॥ एवमुक्तस्तथेत्युक्त्वा प्रहरेति च
ताडितः । कर्णिना द्रोणतनयं विव्याध मलयध्वजः ॥ २० ॥ मर्मभेदिभिरत्युग्रैर्बाणैरग्नि
शिखोपमैः । स्मयन्नभ्यहनद्द्रौणिः पाण्ड्यमाचार्य्यसत्तमः ॥ २१ ॥ ततोपरान् सुतीक्ष्णा

विख्यात राजापाण्ड्य । १४ । आपके धनुप की प्रत्यञ्चा पृष्ठस्थान में चिपटीहुई
दिखाईदेती है और बड़े भुजदण्डों से बहुत बड़े धनुपको बड़े बादल के समान
कठिन टंकारतेहुये दृष्टि पड़तेहो । १५ । बड़े वेगवान् बाणों की वर्षा से शत्रुओं के
सम्मुख मुझ बाणवर्षा करनेवाले के सिवाय आपके सम्मुख होनेवाला शूरवीर
युद्धमें नहीं देखताहूं । १६ । तुम अकेलेही बहुतसे हाथी घोड़े रथ और पत्तिलोगों
को ऐसे मथतेहो जैसे कि निर्भय और भयानकरूप पराक्रमी सिंह वन में मृगों के
समूहों को मथन करताहै । १७ । हे राजा रथके बड़े शब्दसे पृथ्वी और आकाश
को शब्दायमान करतेहुये ऐसे दिखाई देतेहो जैसे कि वर्षाके अन्त में खेतीका
हानि करनेवाला गर्जताहुआ बादल होताहै । १८ । विषैले सर्पकी समान तीक्ष्ण
बाणोंको तूणीरसे निकाल कर मुझ अकेले से ऐसे युद्धकरो जैसे कि अन्धकने
शिवजीके साथ युद्धकियाथा । १९ । प्रहार करो ऐसे कहने से घायल हुये
उस मलयध्वजपांड्यने बहुत अच्छाऐसा शब्द कहकरकरणीनाम बाणसे अश्वत्थामा
को घायल किया । २० । आचार्य्यों में श्रेष्ठ मन्द मुसकानकरते अश्वत्थामाने
मर्मभेदी अत्यन्त उग्र अग्निशिखा के समान बाणों से पांड्यको घायलकिया इसके

body hard as vajra, famous in strength and prowess, Prince Pandya, you have your bow hanging by your side; with your mighty arms you are seen twanging your large bow like thunder. 15. None of the enemies, except myself, can cope with the shower of your arrows. Alone you overpower many elephants, horse and foot, as a powerful lion in a forest terrifies a herd of deer. Filling the heaven and earth with the rumbling of your car, you look like a thundering cloud which comes to destroy cultivation at the end of the rainy season. Take out poisonous arrows from pour quiver and fight with me alone, as Andhak had fought with Shiv." Enraged at the challenge, King Pandya said *"Very well,"* and wounded Ashwathama with his arrows. 20. With a slow smile, Ashwathama, the best of acharyas, wounded Pandya with his dreadful, fiery arrows, and then

मान् नाराचाश्ममर्मभेदिनः । गत्या दशम्या संयुक्तानश्वत्थामाप्यवासृजत् ॥ २२ ॥ तान् शराणश्छिनत् पाण्ड्यो नवभिर्निशितैः शरैः । चतुर्भिरर्दयच्चाश्वानाशु ते व्यसवोभवन् ॥ २३ ॥ अथ द्रोणसुतस्येषूंस्तांश्छित्वा निशितैः शरैः । धनुर्ज्यां विततां पाण्ड्यश्छिच्छेदादित्यतेजसः ॥ २४ ॥ विज्यं धनुरथाधिज्यं कृत्वा द्रौणिरमित्रहा । प्रेक्ष्य चाशु रथे युक्तान् नरैरन्यान् हयोत्तमान् ॥ २५ ॥ ततः शरसहस्राणि प्रेषयामास वै द्विजः । इषुसंबाधमाकाशमकरोद्दिशा एव च ॥ २६ ॥ ततस्तानस्यतः सर्वान् द्रौणेर्बाणान्महात्मनः । जानानोऽप्यक्षयान् पाण्ड्योऽशातयत् पुरुषर्षभः ॥ २७ ॥ प्रयुक्तांस्तान् प्रयत्नेन छित्वा द्रौणेरिपून्नरः । चक्ररक्षौ रणे तस्य प्राणुदन्निशितैः शरैः ॥ २८ ॥ अथारेर्लाघवं दृष्ट्वा मण्डलीकृतकार्मुकः । प्रास्यद्द्रोणसुतो बाणान् वृष्टिं पूषानुजो यथा ॥ २९ ॥

पीछे अश्वत्थामा ने अत्यन्त तीक्ष्ण मर्मभेदी अन्य नाराचों कोभी फेंका । २२ । पांड्यने उन बाणोंको अपने तीक्ष्ण धारवाले नौबाणों से काटा और चार बाणोंसे घोड़ों को घायलकिया और घायल होतेही वह शीघ्र मरगये । २३ । इसके पीछे सूर्यके समान तेजस्वी पांड्यने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे अश्वत्थामाके उन बाणोंको काटकर धनुषकी बड़ी मरयंचाको काटा । २४ । इसके पीछे शत्रुहन्ता अश्वत्थामा ने दिव्य धनुषको तैयार करके और शीघ्रही रथ में जुटेहुये दूसरे उत्तम घोड़ों को देखकर । २५ । उसमें बैठ हज़ारों बाणों को चलाया आकाश और दिशाओं को बाणों से व्याप्त करदिया । २६ । इसके पीछे बाण फेंकनेवाले अश्वत्थामा के उन सब बाणों को अविनाशी जानकर उस पुरुषोत्तम पांड्यने उनको काटकर गिराया । २७ । फिर पांड्य ने अश्वत्थामा के उन बाणों को काटकर युद्धमें अपने तीक्ष्ण धार बाणों से उनके दोनों चक्र रक्षकों को मारा । २८ । इसके पीछे शत्रुकी हस्तलाघवताको देखकर धनुषको मण्डलरूप करनेवाले अश्वत्थामा ने ऐसे बाणों को छोड़ा जैसे कि पूषाका छोटाभाई पर्जन्य नाम जलकी वर्षाको छोड़ताहै ।२९। हे श्रेष्ठ जिन शस्त्रों को आठ २ बैलवाले आठ छकड़े ले चलतेहैं उनकोअश्वत्थामा

shot other sharp arrows, wounding the vital parts. With nine sharp arrows, Pandya cut them down and slew his adversary's four horses with four arrows. Then prince Pandya, glorious like the Sun, having cut Ashwathama's arrows with his own, cut asunder his bowstring. Ashwathama the destroyer of foes then took up a celestial bow and soon getting another set of horses yoked to his car, filled the directions with thousands of his arrows. Seeing the indestructible arrows of Ashwathama, Pandya cut them all down and with his own arrows slew his adversary's guards. Seeing his dexterity, Ashwathama he moved his bow in a circle anl discharged arrows like rain. Ashwathama discharged in half an hour as many arrows as could be

अष्टावष्टगवान्यूहुः शकटानि यदायुधम् । अहुगजस्तदष्टभागेन द्रौणिक्षिप्तं मारिष ॥३०॥
तदन्तकमिव क्रुद्धमन्तकस्यान्तकोपमम् । ये ये ददृशिरे तत्र विसंज्ञाः प्रायशोऽभवन् ।
॥ ३१ ॥ पर्जन्य इव घर्मान्ते वृष्ट्या साद्रिद्रुमां महीम् । आचार्य्यपुत्रस्तां सेना बाण
वृष्ट्याभ्यवीवृषत् ॥३२॥ द्रौणिपर्जन्यमुक्तां तां बाणवृष्टिं सुदुःसहाम् । वायव्यास्त्रेण
संक्षिप्य मुदा पाण्ड्यानिलोऽनदत् ॥ ३३ ॥ तस्य नानदतः केतुं चन्दनागुरुरूषितम् ।
मलयप्रतिमं द्रौणिश्छित्वाश्वांश्चतुरोऽहनत् ॥ ३४ ॥ सूतमेकेषुणा हत्वा महाजलदनिःस्व
नम् । धनुश्छित्वार्द्धचन्द्रेण तिलशो व्यधमद्रथम् ॥३५॥ अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य छित्वा सर्वा
युधानि च । प्राप्तमप्यहितं द्रौणिर्न जघान रणेप्सया ॥ ३६ ॥ एतस्मिन्नन्तरे कर्णो
गजानीकमुपाद्रवत् । द्रावयामास सतदा पाण्डवानां महद्बलम् ॥३७॥ विरथान्रथिनश्चक्रे
गजानश्वांश्च भारत । योधान् बहुभिरानर्च्छत् शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ३८ ॥ अथ द्रौणि

ने आधीघड़ी में चलाया । ३० । उस यमराज के समान क्रोधरूप और मृत्यु के सदृश को जिन्हों ने वहां देखाथा वे अचेत होगये । ३१ । जैसे कि वर्षाऋतु में बादलों के समूह पर्वत वृक्ष रखनेवाली पृथ्वीपर वर्षाकरतेहैं उसी प्रकार आचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उस सम्पूर्ण सेनापर बाणों की वर्षा करी । ३२ । पांड्यरूपी वायुने उस अश्वत्थामा रूप बादलसे छोड़ेहुये बड़े दुःखसे सहनेके योग्य उस बाणरूपी वर्षा को बड़ी प्रसन्नतासे अपने वायु अस्त्रसे हटाकर नाश करदिया । ३३ । अश्वत्थामा ने उस गर्जनेवाले पांड्यके की ध्वजा को जो कि चन्दन अगुरसे चर्चित मलयाचलके स्वरूपथी काटकर चारों घोड़ोंको मारा ।३४। फिर एक बाणसे सारथी को मारकर और अर्धचन्द्रसे बड़े बादलकी समान शब्दायमान धनुषको काटकर रथको टुकड़े २ ।३५। अश्वत्थामा ने अस्त्रों से रोककर और सब शस्त्रों को काटकर आधीन होनेवाले शत्रुको युद्धाभिलाषी होकर युद्धमें नहीं मारा ।३६। इसीअन्तरमें कर्ण हाथियोंकी सेनामें गया और वहां उसने जाकर पाण्डवोंकी बड़ी सेनाको भगाया ।३७।हेभरतवंशी उसने टेढ़ेपर्ववाले बहुतसे बाणों से रथियों को विरथ करके हाथी और घोड़ों को अचेत करदिया । ३८ । इसके

---

carried on eight carts; each drawn by eight oxen. 30; Many of those who saw him angry, like Yamraj or Death; fainted with fear: Ashwathama the son of the acharya showered his arrows like rain: Pandaya; with a cheerful mind, checked the dreadful shower of arrows with his own weapon: Then Ashwathama cut down the fragrant standard and slew all the four horses of roaring Pandaya. Then killing the driver with one arrow and cutting asunder the thundering bow with another, he broke the car into pieces. 35. Checking the weapons with weapons and cutting them, Ashwathama; intending to fight again, spared the life of his weakened foe: In the meantime Karan entered the army of elephants and put the Pandav warriors

महेष्वासः पाण्ड्यं शत्रुनिवर्हणम् । विरथं रथिनां श्रेष्ठं नाहनद्युद्धकांक्षया ॥ ३९ ॥ हतेश्वरो दन्तिवरः सुकल्पितस्त्वराभिसृष्टः प्रति शब्दगो बली । तमाद्रवद्द्रौणिशराहतस्त्वरन् जवेन कृत्वा प्रतिहस्तिगर्जितम् ॥ ४० ॥ तं वारणं वारणयुद्धकोविदो द्विपोत्तमं पर्वतसानुसन्निभम् । समभ्यतिष्ठन्मलयध्वजस्त्वरन् यथाद्रिशृंगं हरिरुन्नदंस्तथा ॥ ४१ ॥ स तोमरं भास्कररश्मिवर्चसं बलास्त्रसर्गोत्तमयत्नमन्युभिः । ससर्ज शीघ्रं परिपीडयन् गजं गुरोः सुतायाद्रिपतीश्वरो नदन् ॥ ४२ ॥ मणिप्रवेकोत्तमवज्रहाटकैरलंकृतं चांशुकमाल्यमौक्तिकैः । हतो हतोसीत्यसकृन्मुदा नदन् पराभिनद्द्रौणिवराङ्गभूषणम् ॥ ४३ ॥ तदर्कचन्द्रग्रहपावकत्विषं भृशाभिपातात् पतितं विचूर्णितम् । महेन्द्रवज्राभिहतं महास्वनं यथाद्रिशृंगं धरणीतले तथा ॥ ४४ ॥ ततः प्रजज्वाल परेण

पीछे बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाने शत्रुहन्ता रथियोंमें श्रेष्ठ रथसे रहित पांड्यको युद्धकी इच्छाकरके नहीं मारा ।३९ । अच्छा अलंकृत शीघ्रगामी शब्द पर चलने वाला अश्वत्थामाके बाणोंसे घायल पराक्रमी हाथी जिसका कि स्वामी मारागयाथा वेगसे हाथियोंको मलता हुआ शीघ्र उस पांड्यकी ओर गया । ४० । हाथियों के कुशल मलयध्वज पांड्य बड़ी शीघ्रताको करता हुआ उस पर्वतके शिखरकी समान श्रेष्ठ हाथीपर ऐसे सवारहुआ जैसे कि गर्जताहुआ सिंह पर्वतके शिखरपर चढ़ता है ।४१।उस मलयाचलके स्वामी गर्जते और अंकुशसे हाथीको क्रोधयुक्त करवानेवाले पांड्यने पराक्रम और अस्त्रचलाने के उपाय जानने के अभिमान से शीघ्रही सूर्यकी किरण के समान तोमरको गुरुके पुत्रपर छोड़कर । ४२ । मारा है मारा है ऐसे आनंदपूर्वक शब्दों को करताहुआ बड़ेवेगसे गर्जा और अश्वत्थामा के उस मुकुटको तोमर से तोड़ा जोकि मणियों से जटित उत्तम हीरों से और सुवर्ण से शोभित बहुमूल्य के वस्त्र और मालाओं से अलंकृत था । ४३ । सूर्य चन्द्रमा ग्रह और अग्निके समान प्रकाशित वह मुकुट कठिन आघात से ऐसे चूर्णहोकर गिर-पड़ा जैसे कि इन्द्रके वज्रसे घात कियाहुआ बड़े शब्द युक्तहोकर पर्वतका शिखर पृथ्वीपर गिरे । ४४। उसके पीछे अश्वत्थामा ने यमराजदण्ड के समान शत्रुओं के

to flight. Depriving the warriors of cars, with his arrows, he made the elephants and horses insensible. Then the great archer Ashwathama spared the life of Pandya who was deprived of his car. Wounded by Ashwathama's arrows, a well-decked elephant whose rider was dead, came quickly along towards Pandya. 40. Skillful in elephant fighting, Pandya hastened to mount that huge elephant as a lion ascends a mountain. The Prince of Malaychal, making the elephant enraged with goads, hurled a tomar, bright like the rays of the sun, at the son of the acharya and roared cheerfully crying out "I have slain him; I have slain him." The tomar destroyed Ashwathama's diadem decked with jewels and gold. The diadem struck,

मन्युना पद्राहतो नागपतिर्यथा नथा। समाददे चान्तकदण्डसंनिभानिपूनामित्राचिंकरो श्चतुर्दश॥४५॥द्विपस्य पादामकरान् स पञ्चभिर्नृपस्य बाहू च शिरोथच त्रिभः। जघान षड्भिः षडनुसमन्वित: स पांड्यद जानुचरान्महारथान् ॥ ४६ ॥ सुदीर्घवृत्तौ वरचन्दनोक्षिता सुवर्णमुक्तामणिवज्रभूषणौ। भुजौ धरायां पतितौ नृपस्य तौ विचेष्टतुस्तार्क्ष्यहताविवोरगौ ॥४७॥ शिरश्च तत् पूर्णशशिप्रभाननं सरोषताम्रायतनेत्रमुन्नसम्। क्षितावपि भ्राजति तत् सकुण्डलं विशाखयोर्मध्यगतः शशी यथा॥ ४८॥ स तु द्विपः पञ्चभिरुत्तमेषुभिः कृतः षडंशश्चतुरो नृपस्त्रिभिः। कृतो दशांशः कुशलेन युध्यता यथा हविस्तद्दशदैवतं तथा॥ ४९॥ स पादशो राक्षसभोजनान् बहून् प्रदाय पाण्ड्यो

पीड़ा करनेवाले चौदह बाणों को हाथ में लिया । ४५ । तब उस उत्तम, तेजस्वीने हाथीके चारों पैर और सूंड़ पांच बाणों से राजाकी दोनों भुजा और शिरको तीन बाणोंसे और राजा पांड्यके पीछे चलनेवाले छ महारथियों को छःबाणोंसे मारडाला ।४६ राजाकी दोनों भुजा जो बहुत लम्बी चन्दन से चर्चित सुवर्ण मुक्ता हीरे और अन्य अन्य मणियों से अलंकृतथीं पृथ्वीपर गिरपड़ीं और गरुड़ से व्याकुल सर्पों की समान फड़फड़ाने लगीं ।४७। वह पूर्णचन्द्रमाके समान प्रकाशमान और क्रोधसे बड़ी २ लाल आंख रखनेवाला कुण्डलधारी शिरभी पृथ्वीपर गिराहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि दोनों विशाखों के मध्य में चन्द्रमा वर्त्तमान होता है । ४८ । फिर वह हाथी पांच उत्तम बाणों से छःभाग कियागया और राजाभी तीनबाणों से चार खंडकियागया उस सावधान युद्धकर्त्ता ने इसप्रकार से दशभाग किये जैसे कि दश देवताओं से संबंध रखनेवाला हव्यहोता है । ४९ । वह पांड्य घोड़े हाथी और मनुष्योंको जोकि राक्षसों के भोजन थे टुकड़े २ कराके अश्वत्थामा के बाणोंसे ऐसे शांतहोगया जैसे कि पितरों की प्रिय अग्नि मृतक देहरूप हव्यको

by the dreadful tomar, was broken into pieces with a crash like that of a peak of a moutain struck by lightning. Then Ashwathama took up fourteen foe-destroying arrows. 45. Then the glorious one cut the four feet and trunk of the elephant with five arrows, the king's two arms and head with three and the six rear guards with six arrows. Both the arms of the king, long, sandal-pasted and decked with gold, pearl and diamond ornaments, fell down on earth, trembling like sepents attacked by a *garur*. The head, with a face like the *full moon and large eyes red in anger, falling down on earth*, looked glorious like the moon between two *bishakh* stars. Then the elephant was split into six parts by six arrows and the king's body was divided into four parts by three. Thus the careful warrior divided the two into *ten parts like the sacrificial portions of ten gods*. Having caused the horses, elephants and men to be the food of rakshases,

लान्महाकुशान् प्रगृह्य क्षिपन्तुः परस्पराजघांसया ॥ १२ ॥ बाणज्यातलशब्देन
द्यां दिशः प्रदिशो वियत् । पृथिवीं नेमिघोषेण नादयन्तोऽभ्ययुः परान् ॥ १३ ॥ तेन
शब्देन महता संहृष्टाश्च कुरूद्वह । वीरा वीरैर्महाघोरं कलहान्तं तितीर्षवः
॥ १४ ॥ ज्यातलत्रधनुः शब्दं कुञ्जराणाञ्च बृंहताम् । पादातानाञ्च पततां
नृणां नादो महानभूत् ॥ १५ ॥ बाणशब्दांश्च विविधान् शूराणाञ्चाभिगर्जतां
नाम । श्रुत्वा तत्र भृशं त्रस्ताः पेतुर्मम्लुश्च सैनिकाः ॥ १६ ॥ तेषां निनदतामेव शरवर्ष
चैव मुञ्चताम् । बहून् रथिरथिवीरः प्रममाथ पृथक् परान् ॥ १७ ॥ पञ्च पञ्चालवीराणां
रथान् दश च पञ्च च । साश्वसूतध्वजान् कर्णः शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ १८ ॥ योध
मुख्या महावीर्याः पाण्डूनां कर्णमाहवे । शीघ्रास्त्रा स्तूर्णमावृत्य परिवव्रुः समन्ततः
॥ १९ ॥ ततः कर्णो द्विषत्सेनां शरवर्षैर्विलोडयन् । विजगाहाण्डजाकीर्णां पद्मिनीमिव
यूथपः ॥ २० ॥ द्विषन्मध्यमवस्कन्द्य राधेयो धनुरुत्तमम् । विधुन्वानः शितैर्बाणैः

तीक्ष्ण कुन्त भिन्दिपाल और बड़े बड़े अंकुशों को हाथ में लेकर परस्पर मारने की इच्छासे चढ़ाई करनेवाले हुये । १२ । बाण और धनुषों की प्रत्यञ्चाके शब्दों से दिशा विदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करतेहुये शत्रुओं के सम्मुख गये । १३ । बड़े शब्दों से अत्यन्त प्रसन्न युद्ध से पारहोने के अभिलाषी वीरोंने शत्रुओं के वीरों के साथ महाघोर युद्धकिया । १४ । तब धनुष की प्रत्यञ्चा के शब्द और चिघाड़ते हाथी और गिरतेहुये मनुष्यों का महाघोर शब्द हुआ । १५ । फिर वहां पर सेना के मनुष्य सम्मुख गर्जते हुये शूरवीरों के नानाप्रकारों के शब्दों को सुनकर अत्यन्त भयभीत और अचेत होकर गिरपड़े । १६ । उनके गर्जते और बाणों की वर्षा करतेहुये वीर कर्ण ने पाञ्चालदेशी वीरोंके वीसरथियों को घोड़े सारथी और ध्वजाओं समेत अपनेबाणों से स्वर्गको पठाया । १८ । युद्धमें पाण्डवों के बड़े पराक्रमी उत्तम युद्धकर्त्ताओं ने शीघ्रता पूर्वक अस्त्रों के चलाने से आकाशको व्याप्तकरके कर्णको चारोंओर से घेरलिया । १९ । इसके पीछे कर्णने बाणों की वर्षासे शत्रुओं की सेनाको छिन्न भिन्न करके ऐसा व्यथित किया जैसे कि पक्षियों से व्याप्त कमलों के वनोंको गजराज मथन करताहै । २० । कर्णने शत्रुओं में घिरकर उत्तम धनुषकोले तीक्ष्णबाणों से

discharged. Filling the directions with the sounds of bowstring, the two armies opposed. The great warriors, desirous of conquest, fought very bravely. Then the sounds of bowstrings, the shrieks of elephants and the falls of men were tremendous to hear.15. The men of the army, roared at one another and the timid became insensible on hearing them. While they were thus roaring, brave Karan sent twenty Panchal warrior to the region of Yam. Filling the air with his arrows, the warriors attacked Karan on all sides. Then Karan dispersed the army of the enemy as an elephant disperses the birds

शिरांस्युन्मथ्यपातयत् ॥ २१ ॥ चर्मवर्माणि संछिन्नान्यपतन् भुवि देहिनाम् । विषेहु नास्य संस्पर्शं द्वितीयस्य पतत्रिणः ॥ २२ ॥ मर्मदेहासुमथनैर्धनुषः प्रच्युतैः शरैः मौर्व्या तलत्रेष्वहनत् कशया वाजिनो यथा ॥ २३ ॥ पाण्डुसृञ्जयपाञ्चालान् शरगोचरमागतान् । ममर्द तरसा कर्णः सिंहो मृगगणानिव ॥ २४ ॥ ततः पाञ्चालराजश्च द्रौपदेयाश्च मारिष । यमौच युयुधानश्च सहिताः कर्णमभ्ययुः ॥ २५ ॥ तेषु व्यायच्छमानेषु कुरुपाञ्चालपाण्डुषु । प्रियानसून् रणे त्यक्त्वा योधा जघ्नुः परस्परम् ॥ २६ ॥ सुसन्नद्धाः कवचिनः सशिरस्त्राणभूषणाः । गदाभिर्मुसलैश्चान्ये परिघैश्च महाबलाः ॥ २७ ॥ समभ्यधावन्तभृशं कालदण्डैरिवोद्यतैः । नर्दन्तश्चाह्वयन्तश्च प्रवल्गन्तश्च मारिष ॥ २८ ॥ ततो निजघ्नुरन्योन्यं पेतुश्चान्योन्यताडिताः । वमन्तो रुधिरं गात्रैर्विमस्तिष्केक्षणा युधाः ॥ २९ ॥ दन्तपूर्णैः सवक्त्रैश्च... जीवन्त इव

उन, शत्रुओं के शिरों को काटकर दूरगिराया । २१ । तव मृतक वीरों की टूटीहुईढालें और कवच पृथ्वीपर गिरपड़ीं । २२ । धनुषसे छोड़ेहुये मर्म देह और प्राणों के घातक बाणोंसे धनुषोंकी प्रत्यंचा और तूणीरों को ऐसा घायल किया जैसे कि चाबुकसे घोड़ों को घायल करते हैं । २३ । कर्णने बाणके लक्षमें वर्त्तमान पांडव संजय और पांचालों को बड़े वेगसे ऐसे मर्दनकिया जैसे मृगोंके समूहों को सिंह मर्दन करता है । २४ । हे श्रेष्ठ इसके पीछे पांचाल और द्रौपदी के पुत्र नकुल और सहदेव सात्यकि समेत एक साथही कर्ण के सम्मुखगये । २५ । उन कौरव पांचाल और पांडवोंके उपाय करनेपर युद्धमें बड़े २ युद्ध करनेवालों ने अपने प्रियप्राणों को त्याग करके परस्पर घायलकिया । २६ । अच्छे अलंकृत कवचधारी आभूषणों से युक्त महाबली कालदण्डके समान गदा मूशल और परिघों को उठाये हुये गर्जते और एकएकको पुकारते शीघ्र सम्मुखगये । २८ । इसके पीछे एकने एकको घायल किया और घायलहो होकर गिरपड़े और कोई शूरवीर अङ्गों से रुधिर गेरते मस्तक नेत्र और शस्त्रोंसे हीनहोकर ।२९। शस्त्रोंसे युक्त और दांतों से

when he enters a lake full of lotuses. 20. Surrounded by enemies, Karan, by his sharp arrows, beheaded the warriors. Then the broken shields and armours of the warriors fell down on earth. Discharging piercing arrows from his bow, he cut the bowstrings and quivers as a horse is done by whips. Karan wounded the Pandyas, the Srinjayas and the Panchals who came within reach of his arrows, as a lion does a herd of deer. Then the Panchals, the sons of Draupadi Nakul, Sahadev and Satyaki united together, opposed Karan. 25. The Kauravas, the Panchals and the Pandav warriors fought very hard, without caring for their lives, and wounded one another. Decked with armours and ornaments, the warriors with maces and raised up like the staff of Yam, roaring and calling one another

चाप्येके तस्थुः शस्त्रोपबृंहिताः ॥ ३० ॥ परश्वधैश्चाप्यपरे पट्टिशैरसिभिस्तथा । शक्ति-
भिर्भिन्दिपालैश्च नखरप्रासतोमरैः ॥ ३१ ॥ ततक्षुश्चिच्छिदुश्चान्ये बिभिदुश्चिक्षिपुस्तथा
सञ्चकर्तुश्च जघ्नुश्च क्रुद्धा रणमहार्णवे ॥ ३२ ॥ पेतुरन्योन्यनिहता व्यसवो रुधिरो
क्षिताः । क्षरन्तः स्वरसं रक्तं प्रकृत्ताश्चन्दना इव ॥ ३३ ॥ रथै रथा विनिहता हस्तिभि
श्चापि हस्तिनः । नरैर्नरा हताः पेतुरश्वाश्चाश्वैः सहस्रशः ॥ ३४ ॥ ध्वजाः शिरांसि
छत्राणि द्विपहस्ता नृणां भुजाः । क्षुरैर्भल्लार्धचन्द्रैश्च छिन्नाः पेतुर्महीतले ॥ ३५ ॥
नरांश्च नागान् सरथान् हयान् ममृदुराहवे । अश्वारोहैर्हताः शूराश्छिन्नहस्ताश्च
दन्तिनः ॥ ३६ ॥ सपताका ध्वजाः पेतुर्विशीर्णा इव पर्वताः । पत्तिभिश्च समाप्लुत्य
द्विरदाः स्यन्दनास्तथा ॥ ३७ ॥ हताश्च हन्यमानाश्च पतिताश्चैव सर्वशः । अश्वारोहा
समासाद्य त्वरिताः पत्तिभिर्हताः ॥ ३८ ॥ सादिभिः पत्तिसंघाश्च निहता युधि शेरते ।

पूर्ण रुधिर में भरेहुये अनारके वृक्षकी समान मुखोंसे जीवते हुये से दिखाई दिये । ३० । इसीप्रकार दूसरोंने फरसा पट्टिश खड्ग शक्ति भिंदिपाल प्रास और तोमरोंसे । ३१ । काटा छेदा और घायलकरके फेंका गिराया मारा और क्रोधयुक्त वीरोंने युद्धरूपी महासमुद्रमें घायलकिया । ३२ । परस्पर में मारेहुये निर्जीव रुधिरसे भरेहुये सुन्दर रथवाले रुधिरको गिरातेहुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि चन्दन के कटेहुये वृक्ष गिराये जाते हैं । ३३ । रथोंसे रथीमारेगये हाथियोंसे हाथी मारेगये मनुष्योंसे मनुष्य और घोड़ों से मारेहुये हजारों घोड़े । ३४ । क्षुरप्र भल्ल और अर्द्धचन्द्रों से कटेहुये ध्वज शिर छत्र और हाथियों की सूंडोंसमेत मनुष्योंकी भुजा पृथ्वीपर गिरपड़ीं । ३५ । हाथियों ने रथोंसमेत घोड़े और मनुष्योंको मर्दनकिया अश्वारूढ़ोंके हाथसे शूर वीर मारेगये । ३६ । और पताका ध्वजाओं समेत कटीहुई सूंड़ों समेत हाथी ऐसे गिरे जैसे टूटेहुये पर्वत गिरते हैं वह हाथी रथ पतियों के सम्मुख जाकर मरे और मरकर गिरपड़े । ३७ । और शीघ्रता करनेवाले अश्वसवार सम्मुख होकर पत्तियों के हाथसे मारेगये । ३८ । और युद्धमें अश्वसवारोंके हाथसे मारेहुये पत्तियों

opposed one another. They wounded one another and fell down bleeding from their heads and eyes and deprived of weapons. With weapons and teeth reeking blood, they were seen standing like pomegranate trees. 30. Others cut and killed with axes, *patishes*, swords, spears, *bhindipals* and other weapons and ran a sea of blood. Slain and bleeding, the good car-warriors fell down like Sandal trees. Car-warriors slew car-warriors; elephant riders slew elephant riders and men slew men and horses. Cut down by arrows, the arms, heads, umbrellas, trunks of elephants and arms of men fell down on earth. 35. Horses and men were trampled down by elephants and horsemen slew warriors. The banners, standards and the trunks of elephants were cut and fell down like the broken pieces of mountains.

मृदितानीव पद्मानि प्रम्लाना इव च स्रजः ॥ ३९ ॥ हतानां वदनान्यासन् गात्राणि च महाहवे । रूपाण्यत्यर्थकान्तानि द्विरदाश्वनृणां नृप । समुन्नानीव वस्त्राणि पर्युदुष्टे शतां पराम् ॥ ४० ॥

इति श्री कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे एकविंशोऽध्यायः २१ ॥

सञ्जय उवाच । हस्तिभिस्तु महामात्रास्तव पुत्रेण चोदिताः । धृष्टद्युम्नं जिघांसन्तः क्रुद्धाः पार्षतमभ्ययुः ॥ १ ॥ प्राच्याश्च दाक्षिणात्याश्च प्रवरा गजयोधिनः । अङ्गाश्च पुण्ड्राश्च मागधास्ताम्रलिप्तकाः ॥ २ ॥ मेकलाः कोशला मद्रा दशार्णा निषधा

के समूह ऐसेनष्ट होगये जैसे कि मर्दन कियाहुआ कमल और मुरझाई हुई माला होवें । ३९ । इसी प्रकार उस बड़े युद्धमें मृतकोंके मुख भंगहोगये और मनुष्यों के अत्यन्त प्रकाशमान रूप और हाथियोंने ऐसे कुरूपताको पाया जैसे कि म्लान-वस्त्र होते हैं ॥ ४० ॥

अध्याय ॥ २२ ॥

संजय बोले कि आपके पुत्र के कहने से हाथियों के सवार अपने हाथियों के द्वारा मारनेक इच्छावान् पर्षत के पोते क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न के सम्मुखगये । १ । हे भरतवंशी अत्यन्त उत्तम हाथियों के सवार शूरवीर पूर्व दक्षिणकेवासी अंग वंग पुंड्र मागधताम्र लिप्तक । २ । मेकल कोशल मद्र दशार्ण निषध कलिंगों समेत गज

Elephants, car-warriors and foot soldiers fell down and died. Horsemen fell dowd struck by the foot soldiers and the latter were destroyed like lotuses and garlands trampled under foot. The heads of the dead warriors were crushed down and the bright faces crushed by elephants became disfigured like dirty clothes." 40.

CHAPTER XXII

Sanjaya said, "Many elephant riders, urged by your son, desirous of slaying, proceeded against enraged Dhrishtadyumn the grandson of Parshat. Mounted on excellent elephants, the warriors of the East and the South, of Ang, Bang, Pundra, Magadh, Tamraliptak,

स्तथा । गजयुद्धेषु कुशलाः कलिङ्गैः सह भारत ॥ ३ ॥ शरतोमरनाराचैर्वृष्टिमन्त
इवाम्बुदाः । सिषिचुस्ते ततः सर्वे पाञ्चालबलमाहवे ॥ ४ ॥ तान्संमिमर्दिषुर्
नागान् पार्ष्ण्यङ्गुष्ठाङ्कुशैर्भृशम् । चोदितान् पार्षतो बाणैर्नाराचैरभ्यवीवृषत् ॥ ५ ॥
एकैकं दशभिः षड्भिरष्टभिरपि भारत । द्विरदानभिविव्याध शिलैर्गिरिनिभान् शरैः
॥ ६ ॥ प्रच्छाद्यमानं द्विरदैर्मेघैरिव दिवाकरम् । प्रययुः पाण्डुपाञ्चाला नदन्तो निशिता
युधाः ॥ ७ ॥ तान्नागानभिवर्षन्तो ज्यातन्त्रीतलनादितैः । वीरनृत्यं प्रनृत्यन्तः शरताल
प्रचोदितैः ॥ ८ ॥ नकुलः सहदेवश्च द्रौपदेयाः प्रभद्रकाः । सात्यकिश्च शिखण्डी च
चेकितानश्च वीर्यवान् । समन्तात् सिषिचुर्वीरा मेघास्तोयैरिवाचलान् ॥ ९ ॥ ते

युद्धमें कुशल । ३ । वाण तोमर और नाराचों से बादलकी समान वाण वृष्टि करने वाले उन सबने पांचालदेशी सेनाको अपने वाणरूप वृष्टी से सींचा । ४ । एंडी अंगुष्ठ और अंकुशों से अत्यन्त तेज किये हुये उन हाथियों को मर्दन करने का अभिलाषी धृष्टद्युम्न वाण और नाराचों से वर्षा करनेवाला हुआ । ५ । हे भरतवंशी उन पर्व्वताकार हरएक हाथीको फेंके हुये दश छः और आठ वाणोंसे घायलकिया जैसे कि बादलों से सूर्य्य ढक जाता है उस रीति से धृष्टद्युम्नको हाथियों से घिरा हुआ देखकर तीक्ष्ण शस्त्रधारी पांडव और पांचाल लोग गर्जते हुये गये । ७ । प्रत्यञ्चा के शब्दों से शब्दायमान वाणोंसे हाथियोंके सम्मुख वाण वृष्टि करनेवाले नकुल और सहदेव और द्रौपदी के पुत्र वा प्रभद्रक । ८ । सात्यकी शिखंडी चेकितान नाम पराक्रमी वीरों ने चारोंओर से ऐसे सींचा जैसे कि जलकी धाराओं से बादल पर्वतोंको सींचता है । ९ । बरछों से भिदेहुये उन अत्यन्त क्रोधयुक्त हाथियों ने मनुष्य घोड़े और रथोंको भी सूंडों से पकड़ २ पटक पटक कर पैरों से

Mekal, Kosal, Madra, Dasharn, Nishadh and *Kaling*, skilful in elephant fighting, showered arrows and tomars like rain over the Panchals. Dhrishtadyumn, desirous of slaying those elephants urged by foot and goad, *showered arrows over them. He wounded each* of those huge elephants with six or even with eight arrows. Seeing Dhrishtadyumn surrounded by those elephants, like the Sun with clouds, the Pandavas and Panchals, possessors of sharp weapons, rushed against them with loud roars. With loud twangs of the bowstrings and hissing arrows, Nakul, Sahadev, the sons of Draupadi, the Prabhadraks, with Satyaki, Shikhandi, Chekitan and other warriors poured a shower of arrows like rain. Pierced by spears, the enraged elephants dashed *down men* horses and cars by *their trunks* and trampled them under their feet. They pierced some by points of their tusks and hurled them far away. 11. Satyaki pierced the elephant of the king of Ang with a sharp arrow and slew it. Then Sat

म्लेच्छैः प्रेषिता नागा नरानश्वान्रथानपि । हस्तैराक्षिप्य ममृदुः पद्भिश्चाप्यतिमन्यवः
॥ १० ॥ विभिद्य च विषाणाग्रैः समाक्षिप्य च चिक्षिपुः । विषाणलग्नाश्चाप्यन्ये परिपेतु
र्विभीषणाः ॥ ११ ॥ प्रमुखे वर्त्तमानन्तु द्विपमङ्गस्य सात्यकिः । नाराचेनोग्रवेगेन
भित्त्वा मर्माण्यपातयत् ॥ १२ ॥ तस्यावर्जितकायस्य द्विरदादुत्पतिष्यतः । नाराचेनाह
नद्वक्षः सात्यकिः सोऽपतद्भुवि ॥ १३ ॥ पुण्ड्रस्यापततो नागं चलन्तमिव पर्वतम् । सह
देवः प्रयत्नात्तैर्नाराचैरहनत्त्रिभिः ॥ १४ ॥ विपताकं वियन्तारं विवर्मध्वजजीवितम् ।
तं कृत्वा द्विरदं भूयः सहदेवोऽङ्गमभ्ययात् ॥ १५ ॥ सहदेवन्तु नकुलो वारयित्वाङ्गमा
र्दयत् । नाराचैर्यमदण्डाभैस्त्रिभिर्नागं शतेन तं ॥ १६ ॥ दिवाकरकरप्रख्यानङ्गश्चिक्षेप
तोमरान् । नकुलाय शतान्यष्टौ त्रिधैकैकन्तु सोऽच्छिनत् ॥ १७ ॥ तथार्द्धचन्द्रेण शिर
स्तस्य चिच्छेद पाण्डवः । स पपात हतो म्लेच्छस्तेनैव सह दन्तिना ॥ १८ ॥ अथाङ्गपुत्रे

मर्दनकिया और किसी २ को दांतोंकी नोकों से घायलकर कर के घुमाकर दूर फेंकदिया और दांतों में चिपटे हुये अन्य भयानकरूप जीवभी गिरपड़े । ११ । सात्यकि ने सम्मुख वर्त्तमान राजा अंगके हाथी को उग्रवेगी नाराच से मर्मस्थलों में छेदकर गिरादिया । १२ । फिर सात्यकि ने उन महारों से बचेहुये शरीरवाले हाथी से उछलने के अभिलाषी राजा अंगकी छातीको नाराच से घायल किया तब वह पृथ्वी पर गिरपड़ा । १३ । सहदेव ने पुण्ड्र के राजा के हाथी को चलायमान पर्वत के समान आतेहुये को बड़े उपाय से चलाये हुये तीन नाराचों से घायल किया । १४ । सहदेव उस हाथीको पताका हाथीवान कवच और ध्वजा समेत मार कर राजा अंगके सम्मुखगया । १५ । फिर नकुल ने सहदेवको रोककर यमराज के दण्डके समान तीन नाराचों से हाथी को और सौसे उस राजा अंगको घायल करके व्यथित किया । १६ । फिरराजा अंगने सूर्यकी किरणोंके समान प्रकाशित आठसौ तोमरों को नकुल के ऊपर फेंका तब नकुल ने प्रत्येक तोमरके तीन २ खंडकरादिये । १७ । और अर्द्धचन्द्रसे उसके शिरको काटा तब वह मृतक होकर अपने हाथी समेत गिरपड़ा । १८ । फिर हाथीकी शिक्षामें कुशल इस अंगदेशी

yaki pierced through the breast of the king desirous of escaping from the falling elephant and he lay dead on the ground. Sahadev wounded the huge elephant of the king of Pundra with three arrows. He slew the elephant and cut down the standard, driver, armour and banner. Then Sahadev was kept back by Nakul, who wounded the king of Ang with three arrows like the rod of Yam and the elephant with a hundred. 16. The king hurled at Nakul eight hundred tomars bright as the sun, but they were all cut into three by the latter. Nakul then cut off his head with a crescent shaped arrow and he fell down dead along with his elephant. At the death of the Prince of Ang, *skilful in training elephants, the warriors of Ang oppos-*

रथांश्चकुर्वासांस्याद्भुतुश्च ह ॥ २ ॥ ततो भारत क्रुद्धेन तव पुत्रेण धन्विना । पाण्डुपुत्र
स्त्रिभिर्बाणैर्वक्षस्यभिहतो बली ॥ ३ ॥ सहदेवस्ततो राजन् नाराचेन तवात्मजम् ।
विद्ध्वा विव्याध सप्तत्या सारथिञ्च त्रिभिः शरैः ॥ ४ ॥ दुःशासनस्ततश्चापं छित्वा
राजन् महाहवे । सहदेवं त्रिसप्तत्या बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ ५ ॥ सहदेवस्तु संक्रुद्धः
खड्गं गृह्य महाहवे । आविध्य प्रासृजत्तूर्णं तव पुत्ररथं प्रति ॥ ६ ॥ समार्गणगुणं चापं
छित्वा तस्य महानसिः । निपपात ततो भूमौ च्युतः सर्प इवाम्बरात् ॥ ७ ॥ अथान्य
द्धनुरादाय सहदेवः प्रतापवान् । दुःशासनाय चिक्षेप बाणमन्तकरं ततः ॥ ८ ॥ तमा
पतन्तं विशिखं यमदण्डोपमविषम् । खड्गेन शितधारेण द्विधा चिच्छेद कौरवः
। ९ ॥ ततस्तं निशितं खड्गमाविध्य युधि सत्वरः । धनुश्चान्यत् समादाय शरं जग्राह
वीर्यवान् ॥ १० ॥ तमापतन्तं सहसा निस्त्रिंशं निशितैः शरैः । पातयामास समरे

आपके पुत्र के तीन बाणों से महाबली सहदेव छाती पर घायल हुआ । ३ । हे राजा तबतो क्रोधकर के सहदेव ने नाराचसे आपके पुत्रको छेदकर सत्तरबाणों से पीड़ामान किया ।४। और तीन बाणोंसे सारथी को हे राजा इसके पीछे दुश्शासन ने उस बड़े युद्धमें धनुषको काटकर सहदेवकी दोनों भुजाओं को तिहत्तर बाणों से छाती समेत घायल किया । ५ । फिर अत्यंत क्रोधयुक्त सहदेव ने उस महायुद्ध में खड्ग को लेकर अत्यंत शीघ्रता से घुमाकर आपके पुत्रके ऊपर छोड़ा । ६ । वह बड़ा खड्ग उसके प्रत्यंचा समेत धनुषको काटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि आकाशसे सर्प गिरता है । ७ । उसके पीछे प्रतापवान् सहदेवने दूसरे धनुषको लेकर फिर नाश करने वाले बाणको दुश्शासन के ऊपर फेंका । ८ । तब उस कौरव दुश्शासन ने यमदंड के समान प्रकाशमान आतेहुये बाणको अपने तीक्ष्ण धारवाले खड्ग से दो टुकड़े करदिया इसके पीछे शीघ्रता करने वाले महापराक्रमी दुश्शासन ने उस तीक्ष्णधार खड्ग को घुमाकर और दूसरे धनुषको लेकर बाणको हाथमें लिया । १० । फिर युद्धमें हँसतेहुये सहदेवने उस अकस्मात् आतेहुये खड्ग

---

was wounded on the breast by three arrows of your son. At this enraged Sahadev wounded your son by seventy arrows and the driver with three. Then Dushasan cut down his huge bow and wounded his arms *and breast by seventy three arrows.* *Then Sahadev*, much enraged, took up his sword and hurled it at him with great force. The huge sword cut down his bow and bowstring and fell down on earth like a serpent from the sky. Then glorious Sahadev took up another bow and shot a fatal arrow at him. Dushasan the Kaurav cut down his arrow, coming like the staff of Yam, with his sword. Then Dushasan quickly hurled his sharp sword at him and took up another bow and set of arrows. 10. With a smile, Sahadev made the sword fall

सहदेवो हसन्निव ॥ ११ ॥ ततो वाणांश्चतुः षष्टिं तव पुत्रो महारणे । सहदेवरथे तूर्णं प्रेषयामास भारत ॥ १२ ॥ तान् शरान् समरे राजन् वेगेनापततो बहून् । एकैकं पञ्चभिर्वाणैः सहदेवो न्यकृन्तत ॥ १३ ॥ स निवार्य्य महावाणांस्तव पुत्रेण प्रेषितान् । अथास्मै सुबहून् वाणान् प्रेषयामास संयुगे ॥ १४ ॥ तान् वाणांस्तव पुत्रोपि छित्वैकैकं त्रिभिः शरैः । ननाद सुमहानादं नादयानो वसुन्धराम् ॥ १५ ॥ ततो दुःशासनो राजन् विध्वा पाण्डुसुतं रणे । सारथिं नवभिर्वाणैर्माद्रेयस्य समार्पयत् ॥ १६ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज सहदेवः प्रतापवान् । समाधत्त शरं घोरं मृत्युकालान्तकोपमम् ॥ १७ ॥ विकृष्य बलवच्चापं तव पुत्राय सोसृजत् । स तं निर्भिद्य वेगेन भित्वा च कवचं महत् ॥ १८ ॥ प्राविशद्धरणीं राजन् वल्मीकमिव पन्नगाः ततः स मुमुहे राजंस्तव पुत्रो महारथः ॥ १९ ॥ मूढञ्चैन समालोक्य सारथिस्त्वरितो रथम् । अपोवाह भृशं त्रस्तो वध्यमानः

को तीक्ष्ण वाणों से गिराया । ११ । हे भरतवंशी इसके पीछे उस महायुद्ध में आपके पुत्रने शीघ्रही चौंसठ वाणों को सहदेव के रथपर चलाया ।१२। उन वेगसे आतेहुये वाणों को देखकर सहदेव ने पांच वाणों से काटा । १३ । फिर उसने आपके पुत्रके चलायेहुये वेगवान् वाणों को हटाकर युद्धमें उसके ऊपर बहुत से वाणों की वर्षाकरी । १४ । आपका पुत्रभी उन प्रत्येक वाणको तीन वाणों से काटकर पृथ्वी को फाड़ता हुआ बड़े शब्दों से गर्जा । १५ । हे राजा इसके पीछे दुःशासन ने युद्धमें सहदेव को घायलकर के उसके सारथी को नौ वाणों से घायल किया । १६ । हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी सहदेव ने मृत्युकाल और कालदंड के समान घोर वाणको हाथ में लिया । १७ । और अपने पराक्रम से धनुपको खैंचकर आपके पुत्रपर फेंका वह वाण उसको छेद के कवचको काटकर पृथ्वी में ऐसे समागया । १८ । जैसे कि वामी में सर्प्प समाजाता है हे महाराज इसके पीछे आपका महारथी पुत्र अचेत होगया । १९ । अत्यंत भयानक तीक्ष्ण वाण से घायल रथको चलाता हुआ सारथी उसको अचेत जानकर शीघ्रही दूर

on the ground with his sharp arrows. Then your son shot at the car of Sahadev sixtyfour *arrows in quick succession.* Seeing those arrows coming with great force towards him, Sahadev, cut them down with five arrows. Having cut down your son's arrows, he showered many over him. Your son too, cut every arrow shot by him with three and roared loudly, rending the earth. 15. Then Dushasan, having wounded Sahadev, wounded his driver with his arrows. Then glorious Sahadev, much enraged, took up a fatal arrow in hand, and drawing the bow with great force, hurled it at your son. That arrow, having pierced through his armour and body entered the ground *as a serpent enters an ant hill.* Then your son became very insensible, Wounded by the dreadful arrows

वैरस्य कलहस्य च ॥ ३ ॥ त्वद्दोषात् कुरवः क्षीणाः समासाद्य परस्परम् । त्वामद्य समरे हत्वा कृतकृत्योऽस्मि विज्वरः ॥ ४ ॥ एवमुक्तः प्रत्युवाच नकुलं सूतनन्दनः । सदृशं राजपुत्रस्य धन्विनश्च विशेषतः ॥५॥ प्रहरस्व च मे वीर पश्यामस्तव पौरुषम् । कर्म कृत्वा रणे शूर ततः कत्थितुमर्हसि ॥ ६ ॥ अनुक्त्वा समरे तात शूरा युध्यन्ति शक्तितः । स युध्यस्व मया शक्त्या हनिष्ये दर्पमेव ते ॥ ७ ॥ इत्युक्त्वा प्राहरत्तूर्णं पाण्डुपुत्राय सूतजः । विव्याध चैनं समरे त्रिसप्तत्या शिलीमुखैः ॥ ८ ॥ नकुलस्तु ततो विद्धः सूतपुत्रेण भारत । अशीत्याशीविषप्रख्यैः सूतपुत्रमविध्यत ॥ ९ ॥ तस्य कर्णो धनुश्छित्वा स्वर्णपुंखैः शिलाशितैः । त्रिंशता परमेष्वासः शरैः पाण्डवमार्दयत् ॥ १० ॥ ते तस्य कवचं भित्त्वा पपुः शोणितमाहवे । आशीविषा यथा नागा भित्त्वा गां सलिलं पपुः ॥ ११ ॥ अथान्यद्धनुरादाय हेमपृष्ठं दुरासदम् । कर्णं विव्याध सप्तत्या सारथिञ्च

मूलहै । ३ । तेरेही अपराध से कौरव परस्पर सम्मुख होकर नाशवान् होगये अब मैं युद्धमें तुझको मारकर कृत्यकृत्यहोकर तपसे निहत्तहूं । ४ । इस प्रकार के वचनोंको सुनकर कर्णने नकुलको उत्तर दिया कि अधिकतर धनुषधारी राजकुमार के योग्यहै । ५ । हे वीर तू मुझपर प्रहार कर मैं तेरी बीरताको देखूंगा हे शूर प्रथम युद्धमें अपने शूरताख्पी कर्म को करके फिर अपनी प्रशंसा करने को योग्य है । ६ । हे तात शूरवीर युद्ध में कुछ न कहकर सामर्थ्य से लड़ते हैं तू अपनी सामर्थ्य से मेरे सग युद्धकर मैं तेरे अभिमान को दूरकरूंगा । ७ । कर्णने यह कहकर शीघ्रही नकुल पर प्रहार किया युद्धमें इसको तिहत्तरबाणोंसे घायल किया । ८ । हे भरतवंशी इसके पीछे कर्ण के हाथ से घायल नकुलने सर्प के समान अस्सी बाणों से सूर्य के पुत्रको छेदा । ९ । कर्णने सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधार वाले वाणों से उसके धनुप को काटकर तीस वाणों से नकुलको पीड़ित किया । १० । उन वाणों ने उसके कवच को काटकर रुधिर को ऐसे पान किया जैसेकि विषधर सर्प पृथ्वी को छेदकर जलको पीताहै । ११ । इसके पीछे नकुल ने सुवर्ण

Kauravas are fighting together and dying out. I shall now be happy after slaying thee and my fever shall abate." Karan on hearing this replied, " It is well for thee to speak like this. Discharge your weapons at me so that I may see your bravery. Brave men give themselves praises after doing deeds. They fight silently. Fight with all your might and I shall crush your pride." Having said this, he attacked Nakul and wounded him with seventy three arrows. Wounded by Karan, Nakul wounded him with eighty arrows like serpents. With sharp, gold-feathered arrows, Karan cut down his bow and wounded him with thirty arrows. 10. The arrows pierced through his armour and drank his blood as a serpent enters the ground to drink water. Then Nakul taking up another unbearable bow, wound-

त्रिभिः शरैः ॥ १२ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज नकुलः परवीरहा । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन कर्णस्य धनुराच्छिनत् ॥ १३ ॥ अथैनं छिन्नधन्वानं सायकानां शतैस्त्रिभिः । आजघ्ने प्रहसन् वीरः सर्वलोकमहारथम् ॥ १४ ॥ कर्णमभ्यर्दितं दृष्ट्वा पाण्डुपुत्रेण मारिष । विस्मयं परमं जग्मू रथिनः सह दैवतैः ॥ १५ ॥ अथान्यद्धनुरादाय कर्णो वैकर्त्तनस्तदा । नकुलं पञ्चभिर्बाणैर्जत्रुदेशे समार्पयत् ॥ १६ ॥ तत्रस्थैरथ बाणैस्तैर्माद्रीपुत्रो व्यशोभत । स्वरश्मिभिरिवादित्यो भुवने विसृजन् प्रभाम् ॥ १७ ॥ नकुलस्तु ततः कर्णं विध्वा सप्तभिराशुगैः । अथास्य धनुषः कोटिं पुनश्चिच्छेद मारिष ॥ १८ ॥ सोऽन्यत् कार्मुकमादाय समरे वेगवत्तरम् । नकुलस्य ततो बाणैः समन्ताच्छादयद्दिशः ॥ १९ ॥ संछाद्यमानः सहसा कर्णचापच्युतैः शरैः । चिच्छेद स शरांस्तूर्णं शरैरेव महारथः ॥ २० ॥ ततो बाणमयं जालं विततं व्योम्नि दृश्यते । खद्योतानामिव व्रातैः संपतद्भिर्यथा नभः

पृष्ठवाले असह्य दूसरे धनुष को लेकर कर्ण को सत्तर बाण से और सारथी को तीनबाण से घायल किया । १२ । फिर क्रोधयुक्त शत्रु के वीरों के मारनेवाले नकुलने बड़ेतीक्ष्ण क्षुरप्रसे कर्णके धनुषको काटा । १३ । फिर हँसतेहुये वीरनकुल ने इस टूटे धनुषवाले सब लोकके महारथी कर्ण को तीन सौ शायकों से घायल किया । १४ । हे श्रेष्ठ तब तो नकुल के हाथसे पीड़ामान कर्णको देखकर रथियों ने देवताओं समेत बड़ा भारी आश्चर्य किया । १५ । तब सूर्यके पुत्र कर्णनेदूसरे धनुषको लेकर नकुलको पांचबाणों से जत्रुस्थानपर घायल किया । १६ । वहां जत्रुस्थान में नियत होनेवाले बाणोंसे नकुल ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि संसार में प्रकाश करताहुआ सूर्य्य अपनी किरणों से शोभायमान होताहै । १७ । हे श्रेष्ठ इसके पीछे नकुलने शीघ्रगामी सातबाणों से कर्णको छेदकर फिर उसके धनुषकी कोटिकोकाटा । १८ । इसके पीछे उसने बड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें बाणों करके नकुलकी दिशाओं को ढकदिया । १९ । अकस्मात् कर्ण के बाणोंसे घिरेहुये उस महारथीने अपने बाणोंसे ही कर्णके बाणोंको काटा । २० । इसकेपीछे आकाश में बाणोंका जाल फैला हुआ ऐसा दिखाई दिया जिसप्रकार पटबीजनोंके

ed Karan with seventy arrows and the driver with three. Then Nakul the enraged warrior, destroyer of foes, cut Karan's bow. While the bow of mighty Karan was cut down, Nakul wounded him with three hundred arrows. Seeing Karan wounded by Nakul, the warriors and gods were much amazed. Then taking up another bow, Karan wounded Nakul with five arrows. Pierced through by those arrows, Karan looked glorious like the Sun with his rays. Nakul pierced Karan with seven arrows and again cut his bowstring. Then he took up another strong bow and covered Nakul with arrows from all sides. Thus surrounded by arrows, Nakul cut his adversary's arrows with his own. 20. The network of arrows in the air look-

॥ २१ ॥ तैर्विमुक्तैः शरशतैश्छादितं गगनं तदा । शलभानां यथाव्रातैस्तद्वदासीद्विशाम्पते ॥ २२ ॥ ते शरा हेमविकृताः सम्पतन्तो मुहुर्मुहुः । श्रेणीकृता व्यकाशन्त क्रौञ्चाः श्रेणी कृता इव ॥ २३ ॥ बाणजालावृते व्योम्नि छादिते च दिवाकरे । न स्म सम्पतते भूम्यां किञ्चिदप्यन्तरीक्षगम् ॥ २४ ॥ निरुद्धे तत्र मार्गे च शरसंघैः समन्ततः । व्यरोचतां महात्मानौ कालसूर्याविवोदितौ ॥२५॥ कर्णचापच्युतैर्बाणैर्बध्यमानास्तु सोमकाः । अवालीयन्त राजेन्द्र वेदनार्त्ता भृशार्दिताः ॥ २६॥ नकुलस्य तथा बाणैर्हन्यमाना चमूस्तव । व्यशीर्य्यत दिशो राजन् वातनुन्ना इवाम्बुदाः ॥ २७ ॥ ते सेने हन्यमाने तु ताभ्यां दिव्यैर्महाशरैः । शरपातमपाक्रम्य तस्थतुः प्रेक्षिके तदा ॥२८ ॥ प्रोत्सारिते जने तस्मिन् कर्णपाण्डवयोः शरैः । अविध्येतां महात्मानावन्योन्य शरवृष्टिभिः ॥ २९ ॥ विद

समूहोंसे व्याप्त आकाश होताहै । २१ । हे राजा उन छोड़ेहुये सैकड़ों बाणोंसे नकुल ऐसा ढकगया जैसे कि शलभाओं के समूहोंसे कोई ढक जाताहै । २२ । वह सुवर्ण से चित्रित बारम्बार गिरतेहुये पंक्तिरूप बाण ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि पंक्तिरूप क्रौंचनाम पक्षीहोते हैं । २३ । बाणजालसे आकाश को व्याप्त होजाने और सूर्य्य के ढकजानेसे कोई अन्तरिक्षगामी जीव पृथ्वीपर नहींगिरा । २४ । बाणोंकेसमूहों से चारोंओर के मार्गोंके रुकजानेपर दोनों महात्मा उदयमान काल सूर्य्यके समान शोभायमान हुये । २५ । हे राजेन्द्र कर्णके धनुषसे गिरेहुये बाणों के समूहों से घायल दुःखसे दुःखित और अत्यन्त पीड़ामान सब सोमक पृथक् २ होगये । २६ । इसीप्रकार नकुलके बाणोंसे घायल आपकी सेनाभी दिशाओं में ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे वायुके वेगसे बादलों के समूह तितिर्बितिर होजाते हैं । २७ । तब उन दोनों के दिव्य और बड़े बाणोंसे घायल वहदोनों सेना बाणोंकी अधिकता को विचारकर चित्रलिखीसी खड़ी रहगई । २८ । कर्ण और नकुलके बाणों से उन मनुष्यों के समूहों के हटजानेपर उनदोनों महात्माओंने बाणोंकी वर्षा से परस्पर में घायल किया । २९ । परस्पर मारने के अभिलाषी वह दोनों कसस्मात् सेनाके

ed like a swarm of glow-worms. The arrows covering Nakul looked like a flight of locusts. The golden arrows, falling down again and again, looked glorious like a flight of Krounch birds. The arrows spreading throughout the sky and hiding the rays of the Sun, left no room for any birds to come down on earth. The arrows making a barrier, the two great warriors looked like the rising sun in glory. Wounded by Karan's arrows, the Somaks scattered away in great distress. 26. Similarly, wounded by Nakul's arrows, your warirors were scattered in all directions. Wounded by their bright arrows, the two armies looked like pictures. At the dispersion of the armies by the arrows of Nakul and Karan, they wounded each other with their arrows. Each desirous of slaying the other, they discharged

र्शयन्तौ दिव्यानि शस्त्राणि रणमूर्द्धनि । छादयन्तौ च सहसा परस्परवधैषिणौ ॥३०॥
नकुलेन शरा मुक्ताः कङ्कबर्हिणवाससः । सूतपुत्रमवच्छाद्य व्यतिष्ठन्त इवाम्बरे ॥३१॥
तथैव सूतपुत्रेण प्रेषिताः परमाहवे । पाण्डुपुत्रमवच्छाद्य व्यतिष्ठन्ताम्बरे शराः ॥३२॥
शरवेश्मप्रविष्टौ तौ ददृशाते न केनचन । सूर्याचन्द्रमसौ राजंश्छाद्यमानौ घनैरिव
॥ ३३ ॥ ततः क्रुद्धो रणे कर्णः कृत्वा घोरतरं वपुः । पाण्डवं छादयामास समन्ताच्छर
वृष्टिभिः ॥ ३४ ॥ सोतिच्छन्नो महाराज सूतपुत्रेण पाण्डवः । न चकार व्यथां राजन्
भास्करो जलदैर्यथा ॥ ३५ ॥ ततः प्रहस्याधिरथिः शरजालानि मारिष । प्रेषयामास
समरे शतशोथ सहस्रशः ॥ ३६ ॥ एकच्छायमभूत् सर्वं तस्य बाणैर्महात्मनः । अभ्रच्छा
येव सञ्जज्ञे सम्पतद्भिः शरोत्तमैः ॥ ३७ ॥ ततः कर्णो महाराज धनुश्छित्वा महात्मनः ।
सारथिं पातयामास रथनीडाद्धसन्निव ॥ ३८ ॥ ततोश्वांश्चतुरश्चास्य चतुर्भिर्निशितैः

मस्तकपर दिव्य शस्त्रोंके दिखानेवाले और सेनाओं के ढकनेवाले हुये । ३० । नकुलके छोड़े कंकपक्षसे जटितवाण कर्णको ढककर आकाश में नियतहुये । ३१ । इसीप्रकार कर्णके चलाये हुये बाण नकुलको ढककर आकाश में नियतहुये । ३२ । हे राजा बादलों से ढकेहुये सूर्य्य और चन्द्रमा के समान बाणपिंजर में प्रविष्ट होकर वहदोनों किसीको दिखाई नहींदिये । ३३ । इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त कर्ण ने शरीरको बड़ाघोर करके बाणोंकी वर्षा से नकुलको चारों ओरसे ढकदिया । ३४ । हे महाराज कर्णके बाणोंसे ढकेहुये उस नकुलने ऐसे पीड़ाको नहीं माना जैसे कि बादलों से ढकाहुआ सूर्य्य पीड़ाको नहीं मानता है । ३५ । हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे कर्ण ने हँसकर युद्धमें हजारों बाणजालों को उत्पन्न किया । ३६ । उस महात्मा के बाणों से सब संसार छायामान हुआ और गिरतेहुये उत्तम बाणोंसे अभ्र के समान छाया उत्पन्न होगई । ३७ । हे महाराज इसके पीछे हँसते हुये कर्ण ने महात्मा नकुलके धनुष को काटकर सारथीको रथकी नीड़से गिरादिया । ३८ । हे

their divine weapons and hid the warriors. 30. Nakul's arrows, fitted with *kank* feathers, covered Karan and were spread in the air. Similarly, the arrows shot by Karan, covered the air over Nakul. Like the Sun and the moon hid by clouds, covered by the cages of arrows, they became invisible to all. Then Karan assuming a dreadful form in the battle field, covered Nakul with his arrows from all directions. Hid by Karan's arrows, Nakul was not afflicted like the Sun hidden under clouds. 35. Then Karan, with a smile, produced a network of thousands of arrows, covering the whole firmament with them like clouds. Then Karan, with a smile, cut down the bow of Nakul and made the driver fall down from his seat on the car. Then he sent his four horses to the region of Yam. Then he cut down into small pieces the car, standard, wheel guards, mace and sword, with

शरैः । यमस्य भवनं तूर्णं प्रेषयामास भारत ॥ ३९ ॥ अथास्य तं रथं दिव्यं तिलशो व्यधमच्छरैः । पताकां चक्ररक्षांश्च गदां खड्गञ्च मारिष ॥ ४० ॥ शतचन्द्रञ्च तच्चर्म सर्वोपकरणानि च । हताश्वो विरथश्चैव विवर्मा च विशाम्पते । अवतीर्य रथात्तूर्णं परिघं गृह्य विष्ठितः ॥ ४१ ॥ तमुद्यतं महाघोरं परिघं तस्य सूतजः । व्यहनत् सायकै राजन् सुतीक्ष्णैर्भारसाधनैः ॥ ४२ ॥ व्यायुधञ्चैवमालक्ष्य शरैः सन्नतपर्वभिः । आर्पयद्बहुभिः कर्णो न चैनं समपीडयत् ॥ ४३ ॥ स हन्यमानः समरे कृतास्त्रेण बलीयसा । प्राद्रवत् सहसा राजन् नकुलो व्याकुलेन्द्रियः ॥ ४४ ॥ तमभ्युत्य राधेयः प्रहसन् वै पुनः पुनः । सज्यमस्य धनुः कण्ठे व्यवासृजत भारत ॥ ४५ ॥ ततः स शुशुभे राजन् कण्ठासक्तमहद्धनुः ॥ ४६ ॥ परिवेषमनुप्राप्ते यथा स्याद्व्योम्नि चन्द्रमाः । यथैव चासितो मेघः शक्रचापेन शोभितः ॥ ४७ ॥

भरतवंशी इसके अनन्तर तीक्ष्णधार चार वाणों सेउसके चारों घोड़ों को शीघ्र ही। मारकर यमपुर को भेजा । ३९ । इसके पीछे फिर तीक्ष्ण वाणों से इसके उस दिव्यरथ पताका और चक्रके रक्षकों समेत गदा और खड्गको भी तिलके समान खंड २ करदिया । ४० । और सूर्य चन्द्रमा के चित्रवाली ढाल और अन्य सब प्रकार के भस्त्र शस्त्रोंको भी काटडाला हे राजा वह रथ और कवचसे विहीन शीघ्रही रथसे उतरकर परिघको लेकर नियत हुआ । ४१ । तब कर्ण ने उसके उठाये हुये उस महाघोर परिघ को अत्यन्त तीक्ष्ण भारवाहक वाणों से तोड़ डाला । ४२ । तबतो कर्णने उसको शस्त्रहीन देखकर टेढ़े पर्ववाले अनेक वाणोंसे उसको घायल किया परन्तु इसको अधिक पीड़ामान नहीं किया । ४३ । युद्धमें उस अस्त्रज्ञ पराक्रमी कर्णसे घायल होकर महाव्याकुल नकुल अकस्मात्भागा । ४४ । तबतो वारम्वार हंसते हुये कर्णने उसके पासजाकर अपनी प्रत्यंचा समेत धनुषको उसके कंठमें डालदिया । ४५। इस के पीछे वह नकुल कण्ठ में लगेहुये उस धनुष से ऐसाशोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें चन्द्रमा अपने मण्डलसे युक्त होता है और जैसे कि श्याममेघ इन्द्रधनुष से शोभित होता है । ४७ । इसकेपीछे कर्ण

his arrows. 40. He cut also the shield, decked with Suns and moons, as well as other weapons. Deprived of the car and armour, he at once jumped down from the car with a club. Then Karan broke his dreadful club, raised high, with his arrows. Seeing him destitute of arms, Karan wounded him with many arrows, without giving him much pain. Wounded by Karan, Nakul ran away all of a sudden; but Karan chased him and threw the bowstring round his neck. 45. With the bow and bowstring round his neck, Nakul looked glorious like the moon with her halo or a cloud with the rainbow. Then Karan said, "You told a lie; now tell it again while you are so wounded. Donot fight against the Kauravas, glorious Pandav. Fight with

॥६६॥ निहतान् वध्यमानांश्च वेपमानांश्च भारत । नानाङ्गावयवैर्हीनांस्तत्र तथैव भारत ॥ ६७ ॥ रथान् हेमपरिष्कारान् संयुक्तान् जवनैर्हयैः ॥ भ्राम्यमाणानपश्याम हतेषु रथिषु द्रुतम् ॥ ६८ ॥ भग्नाक्षकूबरान् कांश्चित् भग्नचक्रांश्च भारत । विपताकध्वजांश्चान्यांश्छिन्नेषायुगबन्धुरान् ॥ ६९ ॥ विहीनान्रथिनस्तत्र धावमानान् ततस्ततः । सूतपुत्रशरैस्तीक्ष्णैर्हन्यमानान्विशाम्पते ॥ ७० ॥ विशस्त्रांश्च तथैवान्यान् सशस्त्रांश्च हतान् बहून् । तारकाजालसंछन्नान् वरघण्टाविशोभितान् ॥ ७१ ॥ नानावर्णविचित्राभिः पताकाभिरलंकृतान् । वारणाननुपश्याम धावमानान् समन्ततः ॥ ७२ ॥ शिरांसि बाहूनूरूंश्च छिन्नानन्यांस्तथैव च । कर्णचापच्युतैर्बाणैरपश्याम समन्ततः ॥ ७३ ॥ महान् व्यतिकरो रौद्रो योधानामन्वपद्यत । कर्णसायकनुन्नानां युध्यतां च शितैः शरैः ॥ ७४ ॥ ते वध्यमानाः समरे सूतपुत्रेण सृञ्जयाः । तमेवाभिमुखं यान्ति पतङ्गा इव पावकम् ॥ ७५ ॥ तं दहन्तमनीकानि तत्र तत्र महारथम् । क्षत्रिया वर्जयामासुर्युगान्ताग्निमिव

नानाप्रकार के अंगों से रहित युद्ध करनेवालोंकोभी जहां तहां देखा । ६७ । हमने रथियों के मरनेपर सुवर्णसे जटित शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त शीघ्रघूमतेहुये रथों को देखा । ६८ । हे भरतवंशी हमने अक्ष कूबर और पताका ध्वजा से रहित कितने ही अन्य रथों को देखा । ६९ । वहां कर्णके तीक्ष्ण बाणों से घायल मृतक रूप जहां तहां दौड़नेवाले रथियोंको देखा । ७० । इसीप्रकार शस्त्रों से खाली बागुरखनेवाले बहुतसे मृतकोंको देखा और तारेके जालों से ढकेहुये उत्तम घण्टोंसे शोभायमान । ७१ । नानाप्रकार की विचित्र पताकाओं से अलंकृत चारों ओरसे दौड़नेवाले हाथियों को देखा । ७२ । इसीप्रकार चारों ओरको कर्णके धनुष से निकलेहुये बाणोंमे टूटेहुये शिर भुजा और जंघाओंको देखा । ७३ । कर्ण के बाणों से घायल और तेजबाणों से लड़नेवाले युद्धकर्त्ताओं का बड़ा भयानक दुःख वर्त्तमान हुआ । ७४ । युद्धमें कर्ण के हाथसे घायल वह सृंजय उसके सम्मुख ऐसे जातेथे जैसे कि अग्निके सम्मुख पतंग जाते हैं । ७५ । प्रलयकालकी अग्निके समान जहां तहां सेनाओं के भस्मकरनेवाले उस महारथी कर्णको

We saw the swift horses carry away riderless cars. Other cars that we saw, were deprived of standards, banners, yokes and other parts. Wounded by the sharp arrows of Karan, we saw the dead warriors being drawn hither and thither. 70. Similarly, we saw many dead warriors destitute of weapons. Decked with starred nets, garlands and banners the elephants were seen running away in all directions. We saw heads, arms and thighs cut away by Karan's arrows. The battle was very dreadful between Karan and other warriors using sharp arrows. Wounded by Karan in the field of battle, the Srinjayas fell upon him like insects falling upon fire. 75. Scorching here and there like the

बोलवणम् ॥ ७६ ॥ हतशेषास्तु ये वीराः पाञ्चालानां महारथाः । तान् प्रमग्नान् द्रुतान् वीरः पृष्ठतो विकिरञ्छरैः ॥ ७७ ॥ अभ्यधावत तेजस्वी विशीर्णकवचध्वजान् । तापयामास तान्बाणैः सूतपुत्रो महाबलः । मध्यंदिनमनुप्राप्तो भूतानीव तमोनुदः॥७८॥

इति श्री कर्णपर्वणि कर्णपराक्रमे चतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

सञ्जय उवाच । युयुत्सुं तव पुत्रस्य द्रावयन्तं बलं महत् । उलूकोऽभ्यपतत्तूर्णं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ १ ॥ युयुत्सुश्च ततो राजन् शितधारेण पत्रिणा । उलूकं ताड यामास वज्रेणेव महाचलम् ॥ २ ॥ उलूकस्तु ततः क्रुद्धस्तव पुत्रस्य संयुगे । क्षुरप्रेण

क्षत्रियों ने त्यागकिया । ७६ । जो पांचालोंके महारथी वीरलोग मरनेसे बाकी रहेथे उन शीघ्रगामी पृथक् २ होनेवाले महारथियों के पीछेसे बाणों को छोड़ता हुआ कर्ण सम्मुख दौड़ा । ७७ । उसमहाबली सूतपुत्रने उन टूटेकवच ध्वजावाले दुःखी वीरों को बाणों से ऐसे संतप्तकिया जैसे कि मध्याह्नके समय सूर्य जीव धारियों को तपाता है ७८ ॥

अध्याय २५ ॥

संजय बोले कि आपका पुत्र युयुत्सुकी सेनाका भगानेवाला उलूक उसके सम्मुखगया और तिष्ठतिष्ठ इस वचनको कहा । १ । हे राजा उसके पीछे युयुत्सु ने वज्रकी समान तीक्ष्ण धारवाले बाणों से महाबली उलूकको घायलकिया । २ ।

fire of pralaya, brave Karan was the terror of great warriors. Karan chased with his arrows the rest of the Panchal warriors and attacked them with great force. Brave Karan, with his arrows, scorched the warriors destitute of arms and armour, as the mid day Sun does all creatures." 78.

CPAPTER XXV

Sanjaya said, "Putting to flight your son's army, Yuyutsu, was encountered by Uluk. Yuyutsu wounded him with his arrows sharp as vajra. In his rage, Uluk cut down the bow of your son and

धनुश्छित्वा ताडयामास कर्णिना ॥ ३॥ तदपास्य धनुश्छिन्नं युयुत्सुर्वेगवत्तरम् । अन्य दादत्त सुमहच्चापं संरक्तलोचनः ॥ ४ ॥ शाकुनिन्तु ततः षष्ट्या विव्याध भरतर्षभ । सारथिं त्रिभिरानर्छेद् तञ्च भूयोऽभ्यविध्यत ॥ ५ ॥ उलूकस्तन्तु विंशत्या विद्ध्वा स्वर्ण विभूषितैः । अथास्य समरे क्रुद्धो ध्वजं चिच्छेद काञ्चनम् ॥ ६ ॥ स छिन्नयष्टि सुमहान् शीर्य्यमाणो महाध्वजः । पपात प्रमुखे राजन् युयुत्सोः काञ्चनध्वजः ॥ ७ ॥ ध्वजमुन्मथितं दृष्ट्वा युयुत्सुः क्रोधमूर्छितः । उलूकं पञ्चभिर्बाणैराजघान स्तनान्तरे ॥८॥ उलूकस्तस्य समरे तैलधौतेन मारिष । शिरश्चिच्छेद भल्लेन यन्तुर्भरतसत्तम ॥ ९ ॥ तच्छिन्नमपतद्भूमौ युयुत्सोः सारथेस्तदा । तारारूपं यथा चित्रं निपपात महीतले । १० ॥ जघान चतुरोऽश्वांश्च तञ्च विव्याध पञ्चभिः । सोऽतिविद्धो बलवता प्रत्यपायाद्रथान्तरम् ॥ ११ ॥ तं निर्जित्य रणे राजन्नुलूकस्त्वरितो ययौ । पाञ्चालान् सृञ्जयांश्चैव

फिर क्रोधयुक्त उलूकने युद्ध में आपके पुत्रके धनुषको क्षुरमसे काटकर कर्णीनाम बाणसे उसको घायलकिया । ३ । फिर लालनेत्र करनेवाले युयुत्सुने उस टूटे धनुष को डालकर दूसरे बड़े वेगवान् उत्तम धनुषको हाथमें लिया । ४ । उसके पीछे शकुनि के पुत्रको सात बाणोंसे और तीनबाणोंसे सारथीको घायल करके वारंवार छेदा । ५ । फिर उलूकने उसको सुवर्ण से चित्रित बीसबाणों से घायलकरके महा क्रोधमें भरकर उसकी सुनहरी ध्वज कोकाटा । ६ । हे राजा वह टूटीहुई बड़ीभारी सुवर्ण की ध्वजा युयुत्सुके सन्मुख गिरपड़ी । ७ । फिर क्रोधसे मूर्च्छित युयुत्सु ने ध्वजाको टूटीहुई देखकर पांच बाणों से उलूक को छाती पर घायल किया हे श्रेष्ठ राजा फिर उलूकने युद्धमें तेलसे स्वच्छ कियेहुये भल्लों से उसके सारथी के शिरको काटा । ९ । तब युयुत्सुके सारथी का वह कटाहुआ शिर पृथ्वीपर ऐसा गिरा जैसे अपूर्व तारा आकाशसे पृथ्वीपर गिरता है । १० । चारों घोड़ोंको मारा और उसको पांचबाणों से भेदा फिर इस पराक्रमी के हाथसे घायल वह युयुत्सु दूसरे रथपर चलागया । ११ । हे राजा युद्धमें उलूक उसको विजय करके शीघ्रता से तीक्ष्णबाणों को फेंकता पांचालों और सृंजियोंको मारताहुआ सृंजियों

wounded him. Then with eyes red, Yuyutsu put down his bow. He took up another bow and wounded Shakuni's son with seven arrows and the driver with three. 5. Then Uluk wounded him with twenty gold-decked arrows and cut down his standard in a rage. The huge golden standard fell down before Yuyutsu. Then losing his wits in anger at the fall of his standard, Yuyutsu wounded Uluk with five arrows on the breast. Uluk cut down the head of his car-driver with well cleaned and oiled arrows. The head of the driver fell down on earth like a heavenly star. 10. Then he slew his four horses and wounded him. Wounded by that brave warrior, Yuyutsu mounted another car. Having conquered him, Uluk went on discharging

विनिघ्नन्निशितैः शरैः ॥ १२ ॥ शतानीकं महाराज श्रुतकर्मा सुतस्तव । व्यश्वसूतरथं चक्रे निमेषाद्वसम्भ्रमः ॥ १३ ॥ हताश्वे तु रथे तिष्ठन् शतानीको महारथः । गदां चिक्षेप संक्रुद्धस्तव पुत्रस्य मारिष ॥ १४ ॥ सा कृत्वा स्यन्दनं भस्म हयांश्चैव ससारथीन् । पपात धरणीं तूर्णं दारयन्तीव भारत ॥ १५ ॥ तावुभौ विरथौ वीरौ कुरूणां कीर्त्तिवर्द्धनौ । अपाक्रमेतां युद्धात्तु प्रेक्षमाणौ परस्परम् ॥ १६ ॥ पुत्रस्तु तव सम्भ्रान्तो विविंशो रथमाविशत् । शतानीकोऽपि त्वरितः प्रतिविन्ध्यरथं गतः ॥ १७ ॥ सुतसोमन्तु शकुनिर्विध्वा सुनिशितैः शरैः । नाकम्पयत संक्रुद्धो वार्य्यौघ इव पर्वतम् ॥ १८ ॥ सुतसोमस्तु तं दृष्ट्वा पितुरत्यन्तवैरिणम् । शरैरनेकसाहस्रैश्छादयामास भारत ॥ १९ ॥ तान् शरान् शकुनिस्तूर्णं चिच्छेदान्यैः पतत्रिभिः । लघ्वस्त्रश्चित्रयोधी च जितकाशी च संयुगे ॥ २० ॥ निवार्य्य समरे चापि शरांस्तान्निशितैः शरैः । आजघान

के सम्मुखगया । १२ । हेमहाराज भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित आपके पुत्र श्रुतकर्माने अर्द्धनिमेष मारने में ही शतानीकको घोड़े रथ और सारथी से रहित करादिया । १३ । फिर मृतक घोड़ेवाले रथपर नियत अत्यन्त क्रोध युक्त शतानीकने आपके पुत्रके ऊपर गदाको फेंका । १४ । वह गदा रथ घोड़े सारथी समेत रथको भस्मकर कवचको फाड़तीहुई शीघ्र पृथ्वीपर गिरपड़ी । १५ । रथसे विहीन परस्पर में देखनेवाले कौरवों की कीर्त्ति के बढ़ानेवाले दोनों वीर युद्ध में हटगये । १६ । फिर भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित आपका पुत्र रथ पर सवार हुआ और शीघ्रता करनेवाला शतानीक भी प्रतिविन्ध्य के रथपर गया । १७ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनी ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सुतसोम को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्व्वतको कंपित नहीं करसक्ता । १८ । हे भरतवंशी सुतसोमने पिताके बड़े शत्रु शकुनीको देखकर बहुत हजारों बाणोंसे ढकदिया । १९ । तेज अस्त्र और मित्रके अर्थ कड़नेवाले विजयसे शोभायमान शकुनीने शीघ्रही दूसरे बाणोंसे उनबाणोंको काटा । २० । और क्रोध

sharp arrows at the Panchals and Srinjayas and faced the latter. Free from anxiety your son Shrutkarma deprived Shatanik of his horses, car and driver in an instant. Standing on his car of which the horses were dead, enraged Shatanik hurled his mace at your son. The mace smashed his car, horses and driver and fell down on earth rending his armour. 15. Destitute of cars, the two famous Kaurav warriors, turned their backs on each other. Free from anxiety, your son mounted another car and Shatanik too, mounted the car of Prativindhya. Then Shakuni, much enraged, shot sharp arrows at Sutsum but could not shake him like a current of water washing the side of a mountain. Seeing the great enemy of his father before him, Sustom hid him with thousands of arrows. Fighting for his friend,

सुसंक्रुद्धः सुतसोमं त्रिभिः शरैः ॥ २१ ॥ तस्याश्वान् केतनं सूतं तिलशो व्यधमच्छरैः स्यालस्तव महाराज तत उच्चुक्रुशुर्जनाः ॥ २२ ॥ हताश्वो विरथश्चैव छिन्नकेतुश्च मारिष । धन्वी धनुर्द्धरं गृह्य रथाद्भूमावतिष्ठत ॥ २३ ॥ व्यसृजत् सायकांश्चैव स्वर्णपुंखान् शिलाशितान् । छादयामास समरे तव स्यालस्य तं रथम् ॥ २४ ॥ शलभानामिव व्रातान्; शरव्रातान्महारथः । रथोपगान् समीक्ष्यैवं विव्यथे नैव सौबलः । २५ ॥ प्रममाथ शरांस्तांस्तु शरव्रातैर्महायशाः । तत्रातुष्यन्त योधाश्च सिद्धाश्चापि दिविस्थिताः ॥ २६ ॥ सुतसोमस्य तत् कर्म दृष्ट्वाश्रद्धेयमद्भुतम् । रथस्थं शकुनिं यस्तु पदातिः समयोधयत् ॥ २७ ॥ तस्य तीक्ष्णैर्महावेगैर्भल्लैः सन्नतपर्वभिः । व्यहनत् कार्मुकं राजंस्तूणीरांश्चैव सर्वशः ॥ २८ ॥ स छिन्नधन्वा विरथः खड्गमुद्यम्य चानदत् । वैदू

युक्तहोकर युद्धमें उन बाणोंकोभी तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे रोककर तीन बाणों से सुतसोमको घायलकिया । २१ । हे महाराज आपके सालेने बाणोंसे उसके घोड़े ध्वजा और सारथीको तिलके समान खण्ड खण्ड किया इस हेतुसे सब मनुष्य बड़े शब्दसे पुकारे । २२ । हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वह मृतक घोड़े और टूटी ध्वजावाला रथसेरहित होकर उत्तमरथको छोड़कर रथसे पृथ्वीपर खड़ाहुआ ।२३। सुनहरी पुंख वाले तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको छोड़ताहुआ युद्धमें आपके सालेके उसरथको ढकदिया । २४ । वह महारथी शकुनी शलभनाम पक्षी के समूहोंकी समान रथके समीप वर्त्तमान बाणोंके समूहोंको देखकर पीड़ामान नहीं हुआ । २५ । और बड़े यशस्वी ने अपने बाणों के समूहों से उसके बाणों को मथडाला उस स्थानपर युद्ध करनेवाले आकाशवासी सिद्ध भी प्रसन्न हुये । २६ । सुतसोम के उस अद्भुत और श्रद्धाके अयोग्य कर्मको देखकर प्रसन्न हुये और बहुत से पदाती और रथ सवार शकुनी के साथ युद्ध करनेवाले हुये । २७ । हे राजा तीक्ष्ण वा बड़े वेगवान् टेढ़ेपर्व्ववाले भल्लों से उसके धनुष और सब तूणीरोंको तोड़ा । २८ । फिर वह टूटे

with sharp arrows, S..akuni cut those arrows with his own. 20. Checking other arrows with his sharp-edged ones, he wounded Sutsom with three. Your brother-in-law, O king, cut into pieces his horses, banner and driver and the lookers on cried out in terror. Deprived of horses, standard and car, he left his good chariot and stood on earth; hiding your son-in-law's car with sharp arrows decked with gold. 25. Seeing the arrows near his car, like a flight of locusts, Shakuni was not frightened. The great warrior cut them down with his own arrows to the great joy of the heavenly *Sidhas.* Seeing the wonderful and extradinary deed of Sustom, the cheerful foot soldiers and car-warriors attacked Shakuni and cut down his bow and quivers with their sharp arrows. Destitute of bow and car, he took up

व्यौत्पयवर्णाभं हस्तिदन्तमयत्सरुम् ॥ २९ ॥ भ्राम्यमाणं ततस्तन्तु विमलाम्बरवर्चसम् । कालदण्डोपमं मेने सुतसोमस्य धीमतः ॥ ३० ॥ सोचरत् सहसा खड्गी मण्डलानि समन्ततः । चतुर्दश महाराज शिक्षाबलसमन्वितः ॥ ३१ ॥ भ्रान्तमुद्भ्रान्तमाप्लुतं प्लुतनिःसृतम् । सम्पातं समुदीर्णञ्च दर्शयामास संयुगे ॥ ३२ ॥ सौबलस्तु ततस्तस्य शरांश्चिक्षेप वीर्यवान् । तानापतत एवाशु चिच्छेद परमासिना ॥ ३३ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज सौबलः परवीरहा । प्राहिणोत् सुतसोमाय शरानाशीविषोपमान् ॥ ३४ ॥ चिच्छेद तांस्तु खड्गेन शिक्षया च बलेन च । दर्शयल्लाघवं युद्धे तार्क्ष्यतुल्यपराक्रमः ॥ ३५ ॥ तस्य सञ्चरतो राजन् मण्डलावर्त्तने तदा । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन खड्गं चिच्छेद सुप्रभम् ॥ ३६ ॥ स छिन्नः सहसा भूमौ निपपात महानसिः । अर्द्धमस्य स्थितं हस्ते त्सरुसंस्थस्य भारत ॥ ३७ ॥ छिन्नमाज्ञाय निस्त्रिंश

धनुष रथ स विहीन वैडूर्य और नाले कमलके वर्ण हाथीदांत के मूठ रखनेवाले खड्गको उठाकर बड़ी ध्वनि से गर्जा । २९ । उसके पीछे बुद्धिमान् सुतसोमके घुमायेहुये निर्मल आकाशके समान उस खड्गको कालदण्डके समान समझा ।३० । हे महाराज वह शिक्षायुक्त पराक्रमी खड्गधारी एकाएकी हजारों प्रकारसे चौदह मंडलोंको घूमा । ३१ । उनके नाम भ्रांत, उद्भ्रांत, आविद्ध आप्लुत विप्लुत सृतसंपात समुदीर्ण इन मंडलोंको युद्ध में दिखाया यह सातमंडल लोम विलोमके विभागसे द्विगुणितहोकर चौदह होजाते हैं । ३२ । फिर उसके पीछे पराक्रमी शकुनी ने अपने ऊपर आतेहुये बाणोंको उत्तम खड्गसे काटा ।३३ हेमहाराज इसके अनन्तर क्रोधयुक्त शकुनी ने फिरभी सर्पके विषके समान बाणों को सुतसोमके ऊपर फेंका । ३४ । युद्धमें गरुड़ के समान पराक्रमी सुतसोम ने अपनी हस्तलाघवता को दिखातेहुये खड्गकी शिक्षा के पराक्रमसे उन बाणों को काटा । ३५ । हे राजा तब दायेंबायें मण्डलों के घूमनेवाले उस सुतसोमके प्रकाशमान खड्गको बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे काटा और कटाहुआ खड्ग एकवारही पृथ्वीपर पड़ा और उस श्रेष्ठ खड्गका आधाभाग उसके हाथमें नियतरहा । ३७ । महारथी सुतसोमने

his sword with ivory handle, blue like lotus or lapis lazuli, and roared loudly. Then wise Sustom saw the sword hurled like Yam's rod. 30. The brave warrior, skilful in sword fighting, showed various movements, known as bhrant, udbhrant etc. Then valiant Shakuni cut down with the sword the arrows coming upon him. Then enraged Shakuni shot arrows, like venomous serpents, at Sutsom. Full of prowess like Garur, Sutsom skilfully cut down those arrows with his sword. 35. Then Shakuni cut with his arrow the sword of Sutsom. One part of the sword fell down on the ground and the other remained in the hand of Sutson. Seeing his sword thus broken down, Sutsom moved six paces and hurled the remaining half of the sword at the

मथप्लुत्य पदानि षट्। प्राविध्यत् ततः शेषं सुतसोमो महारथः ॥ ३८ ॥ स छित्वा सगुणश्चापं रणे तस्य महात्मनः। पपात धरणीं तूर्णं स्वर्णवज्रविभूषितम्॥३९॥ सुतसोमस्ततोगच्छत् श्रुतकीर्त्तेर्महारथम्। सौवलोपि धनुर्गृह्य घोरमन्यत् सुदुर्जयम् ।४०॥ अभ्ययात् पाण्डवानीकं निघ्नन् शत्रुगणान् बहून्। तत्र नादो महानासीत् पाण्डवानां विशाम्पते। सौवलं समरे दृष्ट्वा विचरन्तमभीतवत्॥ ४१ ॥ तान्यनीकानि दृप्तानि शस्त्रवन्ति महान्ति च। द्राव्यमाणान्यदृश्यन्त सौबलेन महात्मना ॥ ४२ ॥ यथा दैत्यचमूं राजन् देवराजो ममर्द ह। तथैव पाण्डवीं सेनां सौवलेयो व्यनाशयत्। ४३।

इति श्री कर्णपर्वणि सुतसोमसौवलयुद्धे पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

खड्ग को टूटा जानकर और छः चरण हटकर फिर उस आधे खड्ग को प्रहार किया। ३८। वह सुवर्ण और हीरों से अलंकृत खड्ग उस महात्माके डोरी समेत धनुषको काटकर शीघ्रही पृथ्वीपरगिरपड़ा। ३९। फिर सुतसोम श्रुतिकीर्त्तिके बड़े रथपर चलागया और शकुनिभी बड़े कष्टसे विजय होनेवाले दूसरे घोर धनुष को लेकर। ४०। शत्रुओं के बहुत से समूहों को मारताहुआ पाण्डवी सेनाके सम्मुख गया हे राजा युद्ध में निर्भय के समान घूमनेवाले शकुनीको देखकर पाण्डवोंके बड़े शब्द हुये महात्मा शकुनीके हाथ से वह अहंकारी शस्त्रों की धारण करनेवाली सेना भागतीहुई दृष्ट पड़ी जैसे कि देवराज इन्द्रने दैत्योंकी सेनाको मर्दन किया इसीप्रकार शकुनी ने भी पांडवों की सेना का नाशकिया ॥ ४१ ॥

foe. The sword, decked with diamonds and gold, cut the bow and bowstring and fell down on the ground. Then Satsom mounted the huge car of Shrutkirti. Shakuni took up another dreadful and invincible bow and faced the Pandav army, slaying many warriors. Seeing Shakuni move without fear, the Pandavas cied out loudly and the army was dispersed by him. Shakuni destroyed the Pandav army as Indra had done the army of Daityas." 43.



सञ्जय उवाच । धृष्टद्युम्नं कृपो राजन् वारयामास संयुगे । यथा दृप्तं वने सिंहं शरभो वारयेद्युधि ॥ १ ॥ निरुद्धः पार्षतस्तेन गौतमेन बलीयसा । पदात् पदं विचलितुं नाशकत्तत्र भारत ॥ २ ॥ गौतमस्य रथं दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नरथं प्रति । वित्रेसुः सर्वभूतानि क्षयं प्राप्तञ्च मेनिरे ॥ ३ ॥ तत्रावोचन् विमनसो रथिनः सादिनस्तथा । द्रोणस्य निधनान्नूनं संक्रुद्धो द्विपदां वरः ॥ ४ ॥ शारद्वतो महातेजा दिव्यास्त्रविदुदारधीः । अपि स्वस्ति भवेदद्य धृष्टद्युम्नस्य गौतमात् ॥ ५ ॥ अपीयं वाहिनी कृत्स्ना मुच्येत महतो भयात् । अप्ययं ब्राह्मणः सर्वान्न नो हन्यात् समागतान् ॥ ६ ॥ यादृशं दृश्यते रूपमन्तकप्रतिमं भृशम् । गमिष्यत्यद्य पदवीं भारद्वाजस्य गौतमः ॥ ७ ॥ आचार्य्यः क्षिप्रहस्तश्च विजयी च सदा युधि । अस्त्रवान् वीर्य्यसम्पन्नः क्रोधेन च समन्वितः ॥ ८ ॥ पार्षतश्च महायुद्धे विमुखोऽद्याभिलक्ष्यते । इत्येवं विविधा वाचस्तावकानां परैः

अध्याय २६ ॥

संजयबोले हे राजा कृपाचार्य्य ने युद्धमें धृष्टद्युम्नको ऐसे रोका जैसे कि वन में हाथीको सिंह रोकताहै । १ । हे भरतवंशी वहां उग्रपराक्रमी गौतम कृपाचार्यजी से रुकाहुआ धृष्टद्युम्न एकचरण चलनेकोभी समर्थ नहींहुआ । २ । कृपाचार्यके रथको धृष्टद्युम्न के रथके समीप देखकर सबजीवमात्र भयभीत होकर नाशकोमानने लगे । ३ । वहांपर चित्तसे उदासहोकर रथी और अश्वारूढ़ कहनेलगे कि निश्चय करके द्रोणाचार्य के मरने से द्विपादों में श्रेष्ठ । ४ । बड़े तेजस्वी दिव्यास्त्रों के जाननेवाले बड़े बुद्धिमान् शार्दूलरूप कृपाचार्य अत्यन्त क्रोधयुक्त हैं अब कृपाचार्य्य के हाथसे धृष्टद्युम्नकी कुशल । ५ । और इस सब सेनाकाभी भयसे निवृत्त होना और हम सब भागने वालोंकाभी इस ब्राह्मणसे बचना कठिन विदित होताहै । ६ । क्योंकि इस आचार्य्यका रूप कालके समान दृष्ट पड़ताहै कृपाचार्य्य अब द्रोणाचार्य्य के मार्गपर चलेंगे । ७ । यह कृपाचार्य्य सदैव हस्तलाघव युद्ध में विजयका पाने वाला अस्त्रज्ञ पराक्रमी होकर क्रोधयुक्त है । ८ । अब धृष्टद्युम्न युद्ध में मुखको

CHAPTER XXVI

Sanjaya said, "Kripacharya checked Dhrishtadyumn in battle as a lion in a forest checks an elephant. Checked by valiant Kripacharya, Dhrishtadyumn could not move a step. Seeing the car of Krip near that of him, all the people believed that he would die. With a distressed mind, the car warriors and horsemen remarked that glorious Kripacharya, enraged at the death of Drona, would not spare the lives of Dhrishtadyumn and all the army. 6. For the acharya looked like Death and would follow the footsteps of Drona. The great acharya, skilful in the use of weapons was always victorious in battle and full of prowess and rage, and Dhrishtadyumn was likely

सह । व्यश्रूयन्त महाराज तयोस्तत्र समागमे । विनिश्वस्य ततः क्रोधात् कृप शारद्वतो नृप ॥१०॥ पार्षतं चार्दयामास निश्चेष्टं सर्वमर्मसु । स हन्यमानः समरे गौतमेन महात्मना ॥ ११ ॥ कर्त्तव्यं न स्म जानाति मोहेन महता वृतः । तमब्रवीत्ततो यन्ता कच्चित् क्षेमं तु पार्षत ॥ १२ ॥ ईदृशं व्यसनं युद्धे न ते दृष्टं मया क्वचित् । दैवयोगात्तु ते बाणा नापतन्मर्मभेदिनः ॥ १३ ॥ प्रेषिता द्विजमुख्येन मर्माण्युद्दिश्य सर्वतः । व्यावर्त्तये रथं तूर्णं नदीवेगमिवार्णवात् ॥ १४॥ अवध्य ब्राह्मणं मन्ये येन ते विक्रमो हतः । धृष्टद्युम्न स्ततो राजन् शनकैरब्रवीद्वचः ॥ १५ ॥ मुह्यते मे मनस्तात गात्र स्वेदश्च जायते । वेप शुश्च शरीरे मे लोमहर्षश्च जायते ॥ १६ ॥ वर्जयन ब्राह्मणं युद्धे शनैर्याहि यतोऽर्जुनः। अर्जुनं भीमसेनं वा समरे प्राप्य सारथ । क्षेममद्य भवेदेवमेषा मे नैष्ठिकी मतिः ॥१७॥

फेरनेवाला दिखाई देताहै हे महाराज वहां उनदोनोंके सम्मुख होने में आपके पुत्रों के नानाप्रकारके शब्द दूसरों के साथमें कहे हुये सुनेगये । ९ । इसके पीछे शार्दूल कृपाचार्य्य ने क्रोधसे बड़ी २ श्वासें लेकर । १० । सदैव चेष्टाकरनेवाले धृष्टद्युम्नको सबअंगों पर पीड़ामान किया फिर महात्मा कृपाचार्य्यसे घायल होकर बड़े मोह में व्याकुल होके उसने युद्ध में करने के योग्य कर्म को नहीं जाना ।११। इस के पीछे सारथी ने कहा हे धृष्टद्युम्न कुशल है । १२ । मैंनेकहीं तेरे ऐसे समय को नहीं देखाथा दैवयोग से सब ओर में तेरे मर्म्मस्थलों को लक्ष करके इसउत्तम ब्राह्मणके फेंकेहुये वाण तेरे मर्म्मों के छेदने वाले मर्म्मों पर पड़े हैं जो तुमकहो तौ रथको शीघ्रही ऐसे लौटाऊं जैसे कि समुद्र से नदीके वेग को हटाते हैं । १४ । मैं ब्राह्मणको अवध्य मानताहूं इसीसे तेरा पराक्रम नष्टहोगया है हे राजा यह सारथी के वचन को सुनकर धृष्टद्युम्न वड़े धीरेपनेसे यहवचन बोला । १५ । हे तात मेरा चित्त अचेत होताहै और अंगोंपर पसीना उत्पन्न होताहै और शरीरमें कंप और रोमांच खड़े हैं । १६। युद्धमें ब्राह्मणको त्यागकरके उधरको वड़े धीरे २ चल जहां कि अर्ज्जुन है से सारथी अबयुद्धमें अर्ज्जुनको या भीमसेनको पाकर कुशलहोगी यही मेरादृढ़ विश्वासहै । १७ । हे महाराज इसकेपीछे वह सारथी घोड़ोंको मारता

to turn his face from fighting. These and other remarks like these were to be heard on all sides. Then brave Kripacharya, sighing again and again in anger, wounded Dhrishtadyumn in all the parts of his body. Wounded by Kripacharya, he did not know what to do. Then the driver said, "Are you safe Dhrishtadyumn? I never saw you in this plight before. The brahman's sharp arrows have pierced your vital parts. At a word from you I shall turn the car back as the sea turns back the water of a river. I think the Brahman is immortal and so your prowess is of no avail." On hearing the words of the driver, Dhrishtadyumn slowly said, "I am losing consciousness; my limbs sweat; my body is trembling and the hair stand on end. Leave

ततः प्रायान्महाराज सारथिस्त्वरयन् हयान् । यतो भीमो महेष्वासो युयुधे तव सैनिकैः ॥ १८ सुतश्च रथं दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नस्य मारिष । किरञ्छरशतान्येव गौतमोऽनुययौ तदा ॥ १९ ॥ शंखञ्च पूरयामास मुहुर्मुहुररिन्दम । पार्षतं त्रासयामास महेन्द्रो नमुचिं यथा ॥ २० ॥ शिखण्डिनन्तु समरे भीष्ममृत्युं दुरासदम् । हार्दिक्यो वारयामास स्मयन्निव मुहुर्मुहुः ॥ २१ ॥ शिखण्डी तु समासाद्य हृदिकानां महारथम् । पञ्चभिर्निशितैर्भल्लैर्जत्रुदेशे समाहनत् ॥ २१ ॥ कृतवर्मा तु संक्रुद्धो भित्वा षष्ट्या पतत्रिभिः । धनुरेकेन चिच्छेद हसन्राजन्महारथः ॥ २३ ॥ अथान्यद्धनुरादाय द्रुपदस्यात्मजो बली । तिष्ठ तिष्ठेति संक्रुद्धो हार्दिक्यं प्रत्यभाषत ॥ २४ ॥ ततोऽस्य नवतिं बाणान्रुक्मपुंखान् सुतेजनान् । प्रेषयामास राजेन्द्र तेऽस्याभ्रश्यन्त वर्मणः ॥ २५ ॥ वितथांस्तान् समालक्ष्य पतितांश्च महीतले । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन कार्मुकं चिच्छिदे भृशम् ॥ २६ ॥ अथैनं छिन्न

हुआ वड़ी शीघ्रता से वहांगया जहां वड़ा धनुर्द्धर भीमसेन आपकी सेनाके मनुष्यों से युद्ध कररहाथा ।१८। हेश्रेष्ठ तब गौतम कृपाचार्य्य धृष्टद्युम्नके रथको भागाहुआ देखकर सैकड़ों वाणों को छोड़ते हुये उसके पीछे गये । १९ । और शत्रुके विजय करनेवाले ने वारम्वार शंखको वजाया और धृष्टद्युम्न को ऐसे भयभीत किया जैसे कि इन्द्रने नमुचिको भयभीत कियाथा । २० । फिर भीष्मजी के मृत्युरूप विजयी शिखण्डीको वारम्वार मंद मुसकान करतेहुये कृतवर्मा ने रोका । २१ । तबतो शिखण्डी ने भी हार्दिक्यों के महारथी को पाकर तीक्ष्ण धारवाले पांचवाणों से जत्रुस्थानपर घायलकिया । २२ । फिर हँसते हुये महारथी कृतवर्माने साठवाणों से शिखण्डीको घायल करके एकवाणसे उसकेधनुषको काटा । २३ । फिर पराक्रमी द्रुपदके पुत्रने दूसरे धनुषको लेकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कृतवर्मासे तिष्ठ २ ऐसावचनकहा । २४ । हेराजा इसके अनन्तर सुनहरी पुंखवाले नब्बेवाणोंको उसके ऊपर चलाया वहवाण उसके कवचपर लगकरगिरपड़े । २५ । उन निष्फल पृथ्वी पर गिरेहुये वाणोंको देखकर अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र से धनुषको काटा । २६ ।

the Brahman and move on towards Arjun. My safety lies near Arjun or Bhim." At this the driver whipped the horses and drove the car to the place where Bhim was fighting with your army. Seeing Dhrishtadyumn run away in his car, Kripacharya chased him, discharging hundreds of arrows and sending forth victorious peals from his conch. He terrified Dhrishtadyumn as India had done Namuchi. With a smile, Kritvarma checked Shikhandi the destroyer of Namuchi. Shikhandi wounded him with arrows. 22. Kritvarma, with a smile, wounded him with sixty arrows and cut down his bow with one more. The valiant son of Drupad took up another bow and said "Stay, stay," in anger. Then he shot at him five arrows having gold feathers. The arrows did not penetrate his

धन्वानं भग्नशृङ्गमिवर्षभम् । अशीत्या मार्गणैः क्रुद्धो बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ २७ ॥ कृतवर्मा तु संक्रुद्धो मार्गणैः क्षतविक्षतः । ववाम रुधिरं गात्रैः कुम्भवक्त्रादिवोदकम् ॥२८॥ रुधिरेण परिक्लिन्नः कृतवर्मा व्यराजत । वर्षेण क्लेदितो राजन् यथा गैरिकपर्वतः ॥ २९॥ अथान्यद्धनुरादाय समार्गणगुणं प्रभुः । शिखण्डिनं बाणवरैः स्कन्धदेशे व्यताडयत् ॥ ३० ॥ स्कन्धदेशस्थितैर्बाणैः शिखण्डी तु व्यराजत । शाखाप्रशाखाविपुलः सुमहान् पादपो यथा ॥ ३१ ॥ तावन्योन्यं भृशं विद्ध्वा रुधिरेण समुक्षितौ । अन्योन्यशृङ्गाभिहतौ रेजतुर्वृषभाविव ॥ ३२ ॥ अन्योन्यस्य वधे यत्नं कुर्वाणौ तौ महारथौ । रथाभ्यां चेरतुस्तत्र मण्डलानि सहस्रशः ॥ ३३ ॥ कृतवर्मा महाराज पार्षतं निशितैः शरैः । रणे विव्याध सप्तत्या स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः ॥ ३४ ॥ ततोऽस्य समरे बाणं भोजः प्रहरतां वरः । जीवितान्तकरं घोरं व्यसृजत्त्वरयान्वितः ॥ ३५ ॥ स

फिर टूटे धनुषवाले कृतवर्मा को शिखण्डी ने कोधयुक्त होकर अस्सी बाणोंसे छाती और भुजापर घायल किया।२७।तब अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्माने अंगोंसेऐसे रुधिर को डाला जैसे कि मटके से जल डालाजाताहै । २८ । फिर रुधिरसे भराहुआ कृतवर्मा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वर्षा से धातु रखनेवाला पर्वतहोताहै ।२९। इसकेपीछे प्रभुकृतवर्मा ने बाणसमेत धनुषको लेकर बाणों के समूहों से शिखण्डी को स्कंधस्थान में घायल किया । ३० । फिर शिखण्डी स्कंधपर लगेहुये बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि छोटी बड़ीशाखाओं से वृक्ष शोभित होता है । ३१ । वह दोनों परस्परमें अत्यन्त घायल और रुधिर में भरेहुये ऐसे शोभित हुये जैसे कि परस्पर सींगों से घायल दो बैल होते हैं । ३२ । परस्पर में मारनेकी इच्छा करनेवाले वहदोनों महारथी वहां हजारों मंडलोंको घूमे।३३।हेमहाराज कृतवर्मा ने शिखण्डी को तीक्ष्णधार सुनहरी पुंख वाले सत्तर बाणों से घायल किया ।३४। इसके पीछे शीघ्रता युक्त युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ भोजवंशी कृतवर्मा ने युद्धमें मृत्युकारी घोरबाणको उसके ऊपर छोड़ा । ३५ । हे राजा वह शिखण्डी उस बाणसे

armour. Seeing his arrows fall ineffectually on earth, he cut down his adversary's bow with a sharp dart. Having cut down the bow, Shikhandi wounded him with eighty arrows on the breast and arms. Kritvarma, much enraged, dropped down *blood* like water from a pitcher. With his *bleeding body, Kritvarma looked* glorious like a hill. Then taking up his bow and arrow, he wounded Shikhandi on the shoulder. 30. With arrows stuck to the shoulder, Shikhandi looked like a tree with *branches.* *The two wounded* warriors looked like two bulls wounding each other with horns. Desirous of slaying each other, both the warriors moved in circles. Kritvarma wounded Shikhandi with seventy arrows. Then Kritvarma the best of warriors shot a fatal arrow at him. Wounded with it Shikhandi became

तेनाभिहतो राजन् मूर्च्छामाशु समाविशत्। ध्वजयष्टिञ्च सहसा शिश्रिये कश्मलावृतः॥३६॥अपोवाह रणात्तूर्णं सारथी रथिनां वरम्। हार्दिक्यशरसन्तप्ता निःश्वसन्ती पुनः पुनः॥ ३७॥ पराजिते ततः शूरे द्रुपदस्यात्मजे प्रभो। व्यद्रवत् पाण्डवी सेना वध्यमाना समन्ततः ॥ ३८॥

इति श्री कर्णपर्वणि शिखण्ड्यपयाने षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सञ्जय उवाच। श्वेताश्वोऽपि महाराज त्वदीयमद्रावयत् बलम्। यथा वायुः समासाद्य तूलराशिं समन्ततः ॥ १ ॥ प्रत्युद्ययुस्त्रिगर्त्तास्तं शिवयः कौरवैः सह। शाल्वाः संसप्तकाश्चैव नारायण बलञ्च यत् ॥ २ ॥ सत्यसेनश्चन्द्रदेवो मित्रदेवः श्रुतञ्जयः।

घायल होकर शीघ्र मूर्च्छायुक्त होगया और मूर्च्छासे अचेत होकर अकस्मात ध्वजा की यष्टीका आश्रयलिया। १७ । और सारथी इस महारथी को शीघ्रही युद्धसे दूर लेगया इस शूरवीर शिखण्डीके परास्तहोनेपर कृतवर्माके बाणसे दुःखी वारंवार श्वासलेनेवाली चारों ओरसे घायल वह पांडवी सेना भागी ॥ १८ ॥

अध्याय २७ ॥

सञ्जय बोले हे महाराज इनके पीछे अर्जुन ने आपकी सेना को पाकर चारों ओरसे छिन्न भिन्न ऐसा करदिया जैसे कि वायु रुईको तिर बिर कर देताहै । १ । तब त्रिगर्त्त, शिवी, शाल्व, संसप्तक और कौरवों की नारायणी सेना उसके सम्मुख गई हे भरतवंशी सत्यसेन, चन्द्रदेव, मित्रदेव, शत्रुञ्जय, सौश्रुति, चित्रसेन,

---

unconscious and took his rest on the banner staff. The driver soon took him far away from the field of battle. At the defeat of Shikhandi, the Pandav army, wounded by Kritvarma's arrows, scattered in all directions." 38.

CHAPTER XXVII

Sanjaya said, "Then, O king, Arjun having entered your army, dispersed it as the wind does cotton. Then the armies of Trigart, Shiv, Shalwa, Sansaptaks and the Naraini army of the Kauravas faced him. Satyasen, Chandersen, Mitradev, Shatrunjaya,

सौश्रुतिश्चित्रसेनश्च मित्रवर्मा च भारत ॥ ३ ॥ त्रिगर्त्तराजः समरे भ्रातृभिः परिवारितः । पुत्रैश्चैव महेष्वासैर्नानाशस्त्रविशारदैः ॥ ४ ॥ व्यसृजन्त शरव्रातान् किरन्तोऽर्जुनमाहवे । अभ्यवर्तन्त सहसा वार्य्योघा इव सागरम् ॥५॥ ते त्वर्जुनं समासाद्य योधाः शतसहस्रशः । अगच्छन् विलयं सर्वे तार्क्ष्यं दृष्ट्वेव पन्नगाः ॥ ६ ॥ ते वध्यमानाः समरे नाजहुः पाण्डवं रणे । दह्यमाना महाराज शलभा इव पावकम् ॥ ७ ॥ सत्यसेनस्त्रिभिर्बाणैर्विव्याध युधि पाण्डवम् । मित्रदेवस्त्रिषष्ट्या तु चन्द्रदेवश्च सप्तभिः ॥ ८ ॥ मित्रवर्मा त्रिसप्तत्या सौश्रुतिश्चापि सप्तभिः । शत्रुञ्जयस्तु विंशत्या सुशर्मा नवभिः शरैः ॥ ९ ॥ स विद्धो बहुभिः सङ्ख्ये प्रतिविव्याध तान् नृपान् । सौश्रुतिं सप्तभिर्विद्ध्वा सत्यसेनं त्रिभिः शरैः ॥ १० ॥ शत्रुञ्जयञ्च विंशत्या चन्द्रदेवं तथाष्टभिः । मित्रदेवं शतेनैव श्रुतसेनं त्रिभिः शरैः ॥११॥ नवभिर्मित्रवर्माणं सुशर्माणं तथाष्टभिः । शत्रुञ्जयञ्च

मित्रवर्म्मा और बड़े धनुर्द्धारी अपने पुत्र भाइयों समेत राजा त्रिगर्त्तने । ४ । बाणों के समूहों को छोड़ा और युद्धमें अर्जुन पर एकाएकी बाणोंकी वर्षा करते हुये सम्मुख वर्त्तमान होकर ऐसे विलायमान होगये जैसे कि गरुड़ को देखकर सर्प विलायमान होते हैं । ६ । हे महाराज युद्धमें घायल उन युद्धकर्त्ताओं ने पांडवोंको ऐसे त्याग नहीं किया जैसे कि घायलहुये शलभ अग्निको नहीं त्याग करते हैं ।७। सत्यसेन ने तीन बाणसे मित्रदेवने तिरसठ बाणों से चन्द्रसेन ने सात बाणोंसे युद्ध में पांडव को घायल किया । ८ । मित्रवर्मा ने तिहत्तर बाणों से सौश्रुतिने सात बाणों से शत्रुंजयने बीस बाणोंसे सुशर्माने नौबाणों से घायलकिया । ९ । बहुतोंके हाथसे घायल उस अर्जुनने इसक्रमसे युद्धमें उन राजाओंको घायल किया कि सौश्रुतिको सात बाणों से सुतसेनको तीन बाणों से शत्रुंजयको बीसबाणों से चन्द्रसेनको आठबाण से मित्रदेवको सौबाणसे श्रुतसेनको तीन बाणसे । ११ । मित्रवर्मा को नौबाणों से सुशर्मा को आठबाण से घायलकिया और राजा शत्रुंजय को

Soushruti, Chitrasen, Mitravarma and the king of Trigart, together with his sons and brothers, great archers, discharged their arrows like rain, but had to slink away like snakes at the sight of garur. Wounded in battle, the warriors did not desert the Pandavas as insects, though scorched, donot leave fire. Satyasen, Mitradev and Chitrasen wounded Arjun with three, sixtythree and seven arrows respectively. Mitravarma wounded him with seventythree arrows, Saushruti with seven, Shatrunjaya with twenty and Susharma with nine. Wounded by them, Arjun wounded them in return as follows:- Saushruti with seven, Sutsen with three, Shatrunjaya with twenty, Chandersen with eight, Mitradev with a hundred, Shrutsen with three, Mitravarma with nine and Susharma with eight. Having

राजानं हत्वा तत्र शिलाशितैः ।१२।सौश्रुतेः सशिरस्त्राणं शिरः कायादपाहरत् । त्वरित
श्चन्द्रदेवञ्च शरैर्निन्ये यमक्षयम ॥ १३ ॥ तथेतरान्महाराज यतमानान्महारथान् ।
पञ्चभिः पञ्चभिर्बाणैरेकैकं प्रत्यवारयत् ॥ १४ ॥ सत्यसेनस्तु संक्रुद्धस्तोमरं व्यसृ
जन्महत् । समुद्दिश्य रणे कृष्णं सिंहनाद ननादच ॥ १५ ॥ स निर्भिद्य भुजं सव्यं
माधवस्य महात्मनः । अयस्मयो हेमदण्डो जगाम धरणीं तदा ॥ १६ ॥ माधवस्य तु
विद्धस्य तोमरेण महारणे । प्रतोदः प्रापतद्धस्ताद्रश्मयश्च विशाम्पते ॥ १७ ॥ वासुदेवं
विभिन्नाङ्गं दृष्ट्वा पार्थो धनञ्जयः । क्रोधमाहारयत्तीव्रं कृष्णञ्चेदमुवाच ह ॥ १८ ॥
प्रापयाश्वान्महाबाहो सत्यसेनं प्रतिप्रभो । यावदेनं शरैस्तीक्ष्णैर्नयामि यमसादनम ॥ १९॥
प्रतोदं प्रगृह्यसोऽन्यत्तुरश्मीनपि यथा पुरा । वाहयामास तानश्वान् सत्यसेनरथं प्रति
॥ २० ॥ विष्वक्सेनन्तु निर्भिन्नं दृष्ट्वा पार्थो धनञ्जयः । सत्यसेनं शरैस्तीक्ष्णैर्वार
यित्वा महारथः ॥ २१ ॥ ततः सुनिशितैर्भल्लै राज्ञस्तस्य महच्छिरः । कुण्डलोपचितं

बाणों से मारकर । १२ । सौश्रुतिके शिरको धड़समेत शरीरसे जुदाकरदिया और शीघ्रही चन्द्रदेवको बाणोंकेद्वारा यमलोकमें पहुंचाया । १३ । हे महाराज इसीप्रकार उपाय करनेवाले अन्य महारथियों कोभी पांच २ बाणों से रोका । १४ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतिसेन युद्धमें श्रीकृष्णजीको लक्ष्यकर उनके ऊपर बड़े तोमर को फेंक सिंहनाद से गर्जा वह सुवर्ण दंडवाला लोहेका तोमर महात्मा माधवजीकी वाम भुजाको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । १६ । उससमय उस बड़ेयुद्ध में घायल माधवजीके हाथसे चाबुक और घोड़ोंकी रस्सियां छूटगईं । १७ । हे राजा तवकुंती के पुत्र अर्जुनने वासुदेवजी को अंगसे घायल देखकर बड़ा क्रोधकिया और श्रीकृष्णजी से कहनेलगा । १८ । हे महाबाहो प्रभु घोड़ोंको सत्यसेन के पास पहुंचाओ में उसको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे यमलोकमें पहुंचाऊंगा । १९ । फिर श्रीकृष्णजीने पूर्व्वके समान दूसरे चाबुक और घोड़ोंकी डोरीको पकड़कर उनघोड़ोंको सत्यसेन के रथपरचलाया । २० । कुन्तीकेपुत्र महारथी अर्जुनने श्रीकृष्ण को

---

slain Shatrunjaya with his arrows, he severed the head of Soushruti from the trunk and sent Chandrasen to the region of Yam. 13. He *checked the other warriors with five arrows each.* Then *Shrutsen*, much enraged, hit Shri Krishn with a tomar and roared a lion's roar. The tomar, with a gold handle, pierced Madhava's left arm and fell down on the ground. Then much wounded in the great battle, the whip and traces went out of Madhava's hand. Then the son of Kunti, seeing Vasudev wounded, was much enraged and said, "Take the car near that of Satyasen, mighty lord; I shall send him to the region of Yam with sharp arrows. Shri Krishn took up another set of whip and traces and drove the car towards Satyasen. 20. Seeing Shri Krishn

कायाच्चकर्त्त पृतनांतरे ॥ २२ ॥ तन्निकृत्य शितैर्बाणैश्चित्रवर्माणमाक्षिपत् । वत्सदंतेन तीक्ष्णेन सारथिञ्चास्य मारिष ॥ २३ । ततः शरशतैर्भूयः संशप्तकगणान् बली पातयामास सक्रुद्धः शतशोथ सहस्रशः ॥ २४ ॥ ततो रजतपुंखेन राजन् शीर्षं महात्मनः । मित्रसेनस्य चिच्छेद क्षुरप्रेण महारथः । सुशर्माणं सुसंक्रुद्धो जत्रुदेशे समाहनत् ॥ २५ ॥ ततः संशप्तकाः सर्वे परिवार्य्य धनञ्जयम् । शस्त्रौघैमंमृदुः क्रुद्धा नादयन्तो दिशो दश ॥ २६ । अभ्यर्दितस्तु तैर्जिष्णुः शक्रतुल्यपराक्रमः । ऐन्द्रमस्त्रममेयात्मा प्रादुश्चक्रे महारथः ॥ २७ ॥ ततः शरसहस्राणि प्रादुरासन् विशाम्पते । ॥२८॥ ध्वजानां छिद्यमानानां कार्मुकाणाञ्च मारिष । रथानां सपताकानां तूणीराणां युगैः सह ॥ २९ ॥ अक्षाणामथ चक्राणां योक्त्राणां रश्मिभिः सह । कूबराणां वरूथानां पृषत्कानाञ्च संयुगे ॥ ३० ॥ अश्वानां पततां चापि प्रासानामृष्टिभिः सह।

घायल देखकर तीक्ष्णवाणों से सत्यसेन को रोककर । २१ । सेनाकमध्यमें अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले भल्लों से उसराजाके कुंडलों समेत बड़ेशिरको देहसे काटा । २२ । उसको मारकर तीक्ष्ण वाणों से मित्रवर्माको और वत्सदन्तनाम तीक्ष्ण वाणों से उसके सारथीको मारा । २३ । हे श्रेष्ठ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी अर्जुनने सैकड़ों वाणों से संसप्तकों के हजारों समूहोंको गिराया ।२४। हेराजाउसके पीछे उस महारथी ने सुवर्ण पुंखवाले क्षुरमसे महात्मा मित्रसेनके शिरको काटा और अत्यन्त क्रोधसे सुशर्माको जत्रुस्थानपर घायलकिया । २५ । इसकेपीछे क्रोधमें भरे दशों दिशाओं को शब्दायमान करनेवाले सब संसप्तकों ने अर्जुन को घेरकर शस्त्रोंके समूहोंसे घायलकिया । २६ । इन्द्रकी समान पराक्रमी बड़े साहसी संसप्तकोंसे पीड़ामान महारथी अर्ज्जुन ने ऐन्द्रअस्त्रको प्रकट किया । २७ । हे राजा उस ऐन्द्रास्त्रसे हजारों वाण प्रकटहुये हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र जहांतहां टूटीहुई ध्वजा धनुष और पताकासमेत रथ बाजुओं के समेत तूणीरोंके बड़े शब्दसुनेगये । २९ । युद्धमें गिरनेवाले अक्ष चक्र बागडोर योक्त्र वरूथ और पार्षदोंके शब्द सुनेगये।३०।

wounded, Arjun checked Satyasen and cut off his head decked with earrings. Having slain him, he slew Mitravarma with sharp arrows and his driver with arrows known as calf-tooth. Then valiant Arjun much enraged, slew thousands of Sansaptaks with his arrows. Then the great warrior beheaded Mitrasen with arrows having gold feathers and wounded Susharma in the *shoulder joints*. 25. Then the Sansaptaks much enraged surrounded Arjun and wounded him with sharp arrows. Full of prowess like Indra, wounded by Sansaptaks, brave Arjun produced Aindra weapon. Thousands of arrows came out of the weapon, and broken banners, bows, standards, cars, arms and quivers fell down with a great crash. The falling yokes, wheels, traces and guards made a tremendous noise. 30. The falling horses,

गदानां परिघाणांच शक्तितोमरपट्टिशैः ॥३१॥ शतघ्नीनां सचक्राणां भुजानांचोरुभिः सह। कण्ठसूत्राङ्गदानांच केयूराणांच मारिष। ३२ ॥ हाराणामथ निष्काणां तनुत्राणांच भारत। छत्राणां व्यजनानांच शिरसां मुकुटैः सह ॥ ३३ ॥ अश्रूयत महाशब्दस्तत्र तत्र विशाम्पते। सकुण्डलानि स्वक्षीणि पूर्णचन्द्रनिभानि च।३४॥ शिरांस्युर्व्यामदृश्यन्त ताराजालमिवाम्बरे। सुस्रग्वीणि सुवासांसि चन्दनेनोक्षितानि च॥ ३५ ॥ शरीराणि व्यदृश्यन्त निहतानां महीतले। गन्धर्वनगराकारं घोरमायोधनं तदा ॥३६॥ निहतैराजपुत्रैश्च क्षत्रियैश्च महाबलैः। हस्तिभिः पतितैश्चैव तुरगैश्चाभवन्मही ॥ ३७ ॥ अगम्यरूपा समरे विशीर्णैरिव पर्वतैः। नासीच्चक्रपथस्तत्र पाण्डवस्य महात्मनः ॥ ३८॥ निघ्नतः शात्रवान् भल्लैर्हस्त्यश्वञ्चास्यतो महत्। आतङ्कादिव सीदन्ति रथचक्राणि मारिष ॥ ३९ ॥ चरतस्तस्य संग्रामे तस्मिँल्लोहितकर्दमे। सीदमानानि

गिरतेहुये घोड़े मास दुधारा खड्ग गदा परिघ शक्तितोमर और पट्टिशोंके भी बड़े२ शब्दसुनेगये । ३१ । चक्र शतघ्नी और जंघाओं समेत भुजा कंठसूत्र बाजूबन्द समेत केयूरों के शब्द सुनेगये । ३२ । हे भरतवंशी हार निष्क कवच छत्र व्यजन और शिरोंका मुकुटोंसमेत जहांतहां बड़ाभारी शब्द सुनागया सुन्दर कुण्डल नेत्रवाले पूर्णचन्द्रमाके समान मुखोंसेयुक्त शिरोंके समूह पृथ्वी में गिरेहुये ऐसे शोभायमानथे जैसे कि आकाशमण्डल में तारागण चमकते हैं सुन्दर माला वस्त्रालंकार आदि चन्दनोंसे लिप्त । ३५ । मृतकोंके शरीर पृथ्वीपर गिरेहुये दृष्टपड़े तब युद्ध भूमि गंधर्व नगरके समान घोररूपहोगई । ३६ । वह सबपृथ्वी राजकुमार और महाबली क्षत्री और पड़ेहुये हाथी घोड़ोंसे । ३७ । युद्धमें ऐसीदुर्गम होगई जैसे कि पर्वतोंके गिरनेसे होतीहै, वहां महात्मा पाण्डव अर्जुनके रथका मार्गनहींरहा । ३८। इससे हे राजा भल्लोंसे शत्रुओंको और घोड़े हाथियोंको मारतेहुये रथोंके पहिये बड़े पीड़ित होतेथे । ३९ । उन रुधिररूप कीच रखनेवाले युद्धमें उस घूमनेवाले अर्जुन

---

prases, swords, maces clubs, spears, *tomars* and pattishes made a great noise. The wheels, shataghnis, thighs, arms, necklaces, armlets and diadems fell down with a crash. Garlands *nishkas*, armours umbrellas fans and head gears were very noisy in their fall. With beautiful earrings, eyes, moonlike faces and heads fallen down, the ground looked glorious like star spangled heavens. The bodies of the warriors slain, decked with beautiful garlands, fine dresses and sandal paste were to be seen fallen on earth, and looked like the city of *gandharvas*. 36. The ground covered with the bodies of princes, powerful kshatryas, elephants and horses, became impregnable as if covered with hills, so that Arjun could find no way for his car. Killing the enemies, horses and elephants with his arrows, the

चक्राणि समूहुस्तुरगा भृशम् ॥ ४० ॥ श्रमेण महता युक्ता मनोमारुतरंहसः । बध्यमानं तु तत् सैन्यं पाण्डुपुत्रेण धन्विना ॥ ४१ ॥ प्रायशो विमुखं सर्वं नावातिष्ठत भारत । तान् जित्वा समरे जिष्णुः संशप्तकगणान् बहून् । विरराज तदा पार्थो विधूमोऽग्निरिवोज्ज्वलन् ॥ ४२ ॥

इति श्री कर्णपर्व्वणि अर्जुनविजये सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

सञ्जय उवाच । युधिष्ठिरं महाराज विसृजन्तं शरान् बहून् । स्वयं दुर्य्योधनो राजा प्रत्यगृह्णादभीतवत् ॥ १ ॥ तमापतन्तं सहसा तव पुत्रं महारथम् । धर्मराजो द्रुतं विद्ध्वा तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ २ ॥ स तु तं प्रतिविव्याध नवभिर्निशितैः शरैः ।

के पीड़ामान पहियोंको घोड़ोंने अच्छेप्रकारसे चलाया ।४०। मन और वायुकेसमान सदैव शीघ्रगामी वहघोड़े बहुत थकगये फिर धनुषधारी अर्जुनके हाथसे घायल वह सबसेना । ४१ । बहुधा मुखफेरकर सम्मुख नियत नहीं हुई तब वह कुन्तीनन्दन अर्जुन युद्धमें संसप्तकों के बहुत समूहों को विजय करके निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान होकर शोभायमान हुआ । ४२ ।

अध्याय २८ ॥

संजय बोले हे महाराज निर्भय होनेवाले के समान आप राजा दुर्योधनने बहुत बाणोंके छोड़नेवाले युधिष्ठिर को रोका । १ । धर्मराजने उस अकस्मात् आते हुये आपके पुत्र महारथीको शीघ्र घायलकरके तिष्ठ तिष्ठ इसवचनको कहा । २ ।

wheels of Arjun's car moved with difficulty. 40. The horses, swift like the mind or wind, were very mush tired. Wounded by Arjun's arrows, the great army could no longer face him. Having conquered the Sansaptak hosts, Arjun looked glorious like smokeless fire." 42.

CHAPTER XXVIII.

Sanjaya said, "Fearlessly your son Duryodhan checked Yudhishthir who was discharging many arrows. Dharmraj wounded the coming warrior and said, "Stay stay." Then he wounded him with

सारथिं चास्य भल्लेन भृशं क्रुद्धोऽभ्यताडयत् ॥ ३ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा स्वर्णपुङ्खान्
शिलीमुखान् । दुर्योधनाय चिक्षेप त्रयोदश शिलाशितान् ॥ ४॥ चतुर्भिश्चतुरो वाहां
स्तस्य हत्वा महारथः । पञ्चमेन शिरः कायात् सारथेस्तु समाक्षिपत् ॥ ५ ॥ षष्ठेन तु
ध्वजं राज्ञः सप्तमेन तु कार्मुकम् । अष्टमेन तथा खड्गं पातयामास भूतले ॥ ६ ॥ पञ्च
भिर्नृपतिश्चापि धर्मराजोऽर्दयद्भृशम् । हताश्वात्तु रथात्तस्मादवप्लुत्य सुतस्तव । उत्तमं
व्यसनं प्राप्तो भूमावेवावतिष्ठत ॥ ७ ॥ तन्तु कृच्छ्रगतं दृष्ट्वा कर्णद्रौणिकृपादयः ।
अभ्यवर्तन्त सहसा परीप्सन्तो नराधिपम् ॥८॥ अथ पाण्डुसुता सर्वे परिवार्य युधि
ष्ठिरम् । अन्वयुः समरे राजंस्ततो युद्धमवर्तत ॥ ९ ॥ ततस्तूर्यसहस्राणि प्रावाद्यन्त
महामृधे । ततः किलकिलाशब्दाः प्रादुरासन्महीपते ॥ १० ॥ यत्राभ्यगच्छन् समरे

फिर उसने तीक्ष्णधारवाले नौबाणोंसे उसको घायल किया और अत्यन्त क्रोध युक्त होकर उसने भल्लसे उसके सारथी को घायल किया । ३ । इसकेपीछे युधिष्ठिरने सुनहरी पुंखवाले तेरह बाणों को दुर्य्योधन केऊपर फेंका । ५ । फिर महारथीनें चारबाणों उसके चारों घोड़ो का मारकर पांचवें बाणसे उसके सारथी का शिर शरीरसे जुदाकरदिया । ५ । फिर छठे बाण से राजाकी ध्वजाको सातवें से धनुषको और आठवेंसे खड्गको पृथ्वीपर गिराया । ६ । फिरधर्मराजने पांचबाणों से राजा को अत्यन्त पीड़ित किया तब वह उस मरेसारथी और घोड़ेवाले रथसे कूदकर बड़ी आपत्तियों में फँसाहुआ आपकापुत्र पृथ्वीपरही नियतहुआ ।७। फिर कर्ण अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य आदि उस आपत्ति में फँसेहुये राजा को देख कर । ८ । उसको चाहतेहुये अकस्मात् सम्मुख आकर वर्त्तमान हुये फिर सब लोगोंने युधिष्ठिरको चारोंओरसे घेरकर युद्धमें पीछा किया हेराजा इसके पीछे युद्ध जारीहुआ । ९ । और उस महायुद्ध में हजारों बाजे बजे और कलकलो शब्द प्रकटहुआ । १० । जिसस्थानपर पांचाल कौरवोंसे युद्ध कररहे थे वहांमनुष्य

nine arrows and with another arrow, much enraged, wounded the driver. Then Yudhishthir shot thirteen gold backed arrows at Duryodhan. With arrows he slew the four horses and severed the head of the driver with the fifth. With the sixth, he cut down the prince's standard, the bow with a seventh and the sword with an eighth. 6. With five arrows Dharmraj wounded Duryodhan, who, destitute of horse and driver, jumped down from the car and stood on the ground. Seeing the king in distress, Karan, Ashwathama, Krip and others at once faced Yudhishthir and surrounded him from all sides. The battle was serve. Thousands of musical instruments were sounded and the noise was great. In the battle of the Panchals and Kauravas men fought with men, car-warriors with car-warriors and horsemen with horsemen. The duels were worth seeing, incerdible with

पाञ्चालाः कौरवैः सह । नरा नरैः समाजग्मुर्वारणा वरवारणैः ॥ ११ ॥ रथाश्च रथिभिः सार्द्धं हयाश्च हयसादिभिः । द्वन्द्वान्यासन्महाराज प्रेक्षणीयानि संयुगे । विविधान्यप्रचिन्त्यानि शस्त्रवन्त्युत्तमानि च ॥ १२ ॥ ते शूराः समरे सर्वे चित्रं लघु च सुष्ठु च । अयुध्यन्त महावेगाः परस्परवधैषिणः ॥ १३॥ अन्योन्यं समरे जघ्नुर्योधव्रतमनुष्ठिताः । न हि ते समरञ्चक्रुः पृष्ठतो वै कथञ्चन ॥ १४ ॥ मुहूर्त्तमेव तद्युद्धमासीन्मधुरदर्शनम् । तत उन्मत्तवद्राजन्निर्मर्य्यादमवर्त्तत ॥ १५ ॥ रथी नागं समासाद्य दारयन्निशितैः शरैः । प्रेषयामास कालाय शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ १६ ॥ नागा हयान् समासाद्य विक्षिपन्तो बहुधा रणे । दारयामासुरत्युग्रं तत्र तत्र तदा तदा ॥१७॥ हयारोहाश्च बहवः परिवार्य हयोत्तमान् । तलशब्दरवाञ्चक्रुः सम्पतन्तस्ततस्ततः ॥ १८ ॥ धावमानांस्ततस्तांस्तु द्रवमाणान् महागजान् । पार्श्वतः पृष्ठतश्चैव निजघ्नुर्हयसादिनः ॥ १९ ॥ विद्राव्य च बहू

मनुष्यसे हाथी हाथीसे रथी रथियों से घोड़े घोड़ेसे अश्वसवार अश्वसवारसे। ११ । हे महाराज उसयुद्ध में देखनेके योग्य बुद्धिसे बाहर शस्त्रों से संयुक्त नानाप्रकार से उत्तम द्वन्द्वयुद्ध हुये। १२ । युद्धमें बड़े वेगवान् परस्पर मारने के इच्छावान् उन सब सवारोंने अपूर्व तीव्रता पूर्वक चित्तरोचक युद्धकिया । १३ । और युद्धकर्त्ताओं की वृत्तिमें नियत होकर उन लोगोंने युद्धमें परस्पर शस्त्रों के प्रहारकिये और किसी दशामें भी मुखको न मोड़ा । १४ हे राजा वह युद्ध एकमुहूर्त्त पर्यन्त देखने में बड़ा प्यारा हुआ इसके अनन्तर उन्मत्तों के समान वेमर्याद युद्ध वर्त्तमान हुआ । १५ । तीक्ष्ण धारवाले बाणों से चीरते हुये रथी ने हाथी को पाकर टेढ़ेपर्व वाले बाणों से मारकर यमपुरको भेजा । १६ । युद्धमें बहुतसे युद्धकर्त्ताओं को फेंकते हुये हाथियों ने जहां तहां घोड़ों को सम्मुख पाकर अत्यन्त भयकारक दशा से चीरडाला । १७ । बहुतसे घोड़े रखनेवाले अश्वसवारों ने उत्तम घोड़ों को घेरकर इधर उधर दौड़कर तलके शब्द किये । १८ । इसकेपीछे अश्वसवारोंने उस दौड़ते और भागनेहुये हाथियोंको बगल और पीठकी ओरसे घायलकिया । १९ । हे राजा मतवाले हाथी बहुतसे घोड़ोंको भगाकर किसीने दांतों से किसी ने पैरों

the excess of weapons. The swift horsemen, desirous of slaying one another, fought a very interesting battle. The warriors discharged weapons and did not turn face. The battle was very interesting for some time and then they fought without rule like mad men. 15. Piercing with sharp edged arrows, the car warriors, with sharp arrows, sent elephants to the region of Yam. Throwing up many warriors, the elephants destroyed the horses that came against them. Many horsemen, surrounded other horses, and running hither and thither, made a noise with their palms. Then the horsemen wounded the running elephants from the sides and backs. Maddened elephants put the horses to flight and wounded them with tusks or

नद्धाश्चागा राजन्मदोत्कटाः । विषाणैश्चापरे जघ्नुर्ममृदुश्च परे भृशम् ॥ २० ॥ साश्वा रोहांश्च तुरगान् विषाणैर्विव्यधू रुषा । अपरे चिक्षिपुर्वेगात् प्रगृह्यातिबलास्तदा ॥ २१ ॥ पादातैराहता नागा विवरेषु समन्ततः । चक्रुरार्त्तस्वरं घोरं दुद्रुवुश्च दिशो दश ॥ २२ ॥ पदातीनान्तु सहसा प्रद्रुतानां महाहवे । उत्सृज्याभरणं तूर्णमवप्लुत्य रणाजिरे ॥ २३ ॥ निमित्तं मन्यमानास्तु परिणम्य महागजाः । जगृहुर्बिभिदुश्चैव चित्राण्याभरणानि च ॥ २४ ॥ तांस्तु तत्र पसक्तानवै परिवार्य्य पदातयः । हस्त्यारोहान्निजघ्नुस्ते, महावेगा बलोत्कटाः ॥ २५ ॥ अपरे हस्तिभिर्हस्तैः खे विक्षिप्ता महाहवे । निपतन्तो विषाणाग्रै र्भृशं विध्वाः सुशिक्षितैः ॥२६॥ अपरे सहसा गृह्य विषाणैरवसूदिताः । सेनान्तरं समासाद्य केचित्तत्र महागजैः । क्षुण्णगात्रा महाराज विक्षिप्य च पुनः पुनः ॥ २७ ॥ अपरे

से मलकर मारा । २० । और क्रोधयुक्त होकर सवारोंसमेत घोड़ोंको दांतों से घायल किया फिर दूसरे पराक्रमियों ने अत्यन्त वेगसे एकने एकको पकड़कर फेंक दिया । २१ । पदातियों के हाथसे इन्द्रियोंपर घायल हाथियों ने चारोंओरसे पीड़ा के घोर शब्द किये और दशों दिशाओंको भागे । २२ । फिर उस महायुद्ध में एकाएकी छोड़कर भागनेवाले पदातियों के आभूषणों को झुककर उस युद्धभूमि में से उठालिया । २३ । विजय के चिन्ह पानेवाले बड़े बड़े हाथियों के सवारोंने हाथीको झुकाकर अपूर्व भूषणोंको लेलिया और उनको छेदा । २४ । वहां उन बड़े वेगवान् पराक्रमसे मदोन्मत्त पदातियों ने उन युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारों को घेरकर मारा । २५ । बड़े युद्धमें अच्छे शिक्षित हाथियों की सूंड़ों से आकाश को फेंकेहुये अन्य युद्धकर्त्ता पृथ्वीपर गिरतेहुये दांतोंकी नोकोंसे अत्यन्त घायलहुये । २६ । कितनेही अकस्मात् पकड़कर दांतोंसे मारेगये और कितनेही पदाती सेनाके मध्यको पाकर बड़े हाथियों से वारम्वार उछालेहुये होकर घायल हुये । २७ । और कितनेही युद्धमें पंखेकेसमान घुमा कर मारेगये हे राजा कोईर मनुष्य जो हाथियों के सम्मुखथे उनके शरीर उस युद्धभूमि में जहां तहां अत्यन्त

crushed them under foot. 20. Much enraged, they wounded the horses and riders with their tusks; other warriors threw one another. *Wounded on the limbs by foot soldiers, the elephants shrieked with* pain and fled in all directions. The foot soldiers running away in battle, stooped down to pick up ornaments. Great elephant riders, with ensigns of victory, made the elephants pick up curious orna*ments, piercing them with goads.* The *foot soldiers*, proud of their strength, slew elephant riders. 25. Hurled up by the trunks of elephants, other warriors were pierced by the tusks of the elephants. Others were slain by tusks. The foot soldiers, entering in the midst of the army, were hurled up by elephants and wounded. Some were tossed like fans and slain. Some who came face to face

ध्वजनानीव विभ्रांस्य निहता मृधे । पुरः संरब्ध नागानामपरेषां विशाम्पते । शरी
राण्यतिविद्धानि तत्र तत्र रणाजिरे ॥ २८ ॥ प्रतिमानेषु कुम्भेषु दन्तवेष्टेषु चापरे ।
निगृहीता भृशं नागाः प्रासतोमरशक्तिभिः ॥ २९ ॥ निगृह्य च गजाः केचित् पार्श्वस्थै
र्भृशदारुणैः । रथाश्वसादिभिस्तत्र संभग्ना न्यपतन्भुवि ॥ ३० ॥ सहसा सादिनस्तत्र
तोमरेणमहामृधे । समाचमृद्नन्वेगेन सचर्माणं पदातिनम् ॥ ३१ ॥ तथा सावरणान् कांश्चि
त्तत्र तत्र विशाम्पते । रथान्नागाः समासाद्य परिगृह्य च मारिष । व्याक्षिपन् सहसा तत्र
घोररूपे भयानके ॥ ३२ ॥ नाराचैर्निहतश्चापि निपपात महागजः । पर्वतस्येव शिखरं
वज्रभग्नं महीतले ॥ ३३ ॥ योधा योधान् समासाद्य मुष्टिभिर्व्यहनन् युधि । केशेष्व
न्योन्यमाक्षिप्य चिक्षिपुर्बिभिदुश्च ह ॥ ३४ ॥ उद्यम्य च भुजानन्ये निक्षिप्य च मही
तले । पदा चोरः समाक्रम्य स्फुरतोपाहरञ्छिरः ॥ ३५ ॥ जीवतश्च तथैवान्यः शस्त्रकाये

घायलहुये । २८ । और कितनेही हाथी प्रास तोमर और शक्तियों से दोनों दांतोंके मध्यमें कुंभ और दन्तवेष्टोंपर कठिन घायलहुये । २९ । बगलमें नियत बड़े भयानकरूप युद्धकर्त्ताओं के हाथसे घायलहोकर कितनेही हाथी रथ और रथके सवार वहां शरीर से घायल होकर गिरपड़े । ३० । उस महायुद्धमें घोड़ोंसमेत सवारोंने ढाल बांधनेवाले पदातियों को बड़ी शीघ्रतासे अपने तोमरोंसे मर्दन किया । ३१ । हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र जहां तहां हाथियों ने आभूषणों से अलंकृत कितनेही रथियों को पाकर और पकड़कर । ३२ । अकस्मात् उस घोररूप युद्धमें फेंकदिया और नाराचों से घायल होकर बड़े पराक्रमी हाथी भी जहां तहां गिरपड़े । ३३ । युद्धमें शूरोंने शूरोंको पाकर मुष्टिकाओंसे व्यथितकिया और परस्पर शिरके बालोंको पकड़कर एकने दूसरे को गिरादिया । ३४ । और घायलकिया और किसीनें भुजाओंको उठाके पृथ्वीपर गिराकर चरणसे छातीको दबाकर फड़कतेहुये शिरोंको काटा । ३५ । इसीप्रकार दूसरोंनेभी शस्त्रको जीवते शरीरमें प्रवेश करदिया

---

with elephants, were much wounded. Some elephants were wounded by *prases*, *tomars* and spears in the middle of their tusks and front globes. Wounded by the warriors, standing in their sides, many elephants and car-warriors were wounded and lay dead. *30.* The horses and horsemen in that battle, wounded the shielded footmen with tomars. Elephants held car-warriors decked with ornaments and hurled them down all of a sudden. Wounded with arrows the brave elephants fell down here and there. Brave warriors, finding their adversaries in battle wounded them with fists and threw them by the hair of their heads. They wounded them or threw down their standards on the ground. Some put their feet on the breasts of their adversaries and cut down their heads. Others pierced their weapons in the bodies of the living warriors. The battle there was well fought.

न्यमज्जयत् । मुष्टियुद्धं महच्चासीद्योधानां तत्र भारत ॥ ३६ ॥ तथा केशग्रहश्चोग्रो बाहुयुद्धञ्च भैरवम् । समासक्तस्य चान्येन अविज्ञातस्तथापरः ॥ ३७ । अहार समरे प्राणान् नानाशस्त्रैरनेकधा । संसक्तेषु च योधेषु वर्त्तमाने च संकुले ॥ ३८ ॥ कबन्धान्युत्थितानि स्युः शतशोथ सहस्रशः । शोणितैः सिच्यमानानि शस्त्राणि कवचानि च ॥ ३९ ॥ महारागानुरक्तानि वस्त्राणीव चकाशिरे ॥ ४० ॥ एवमेतन्महायुद्धं दारुणं शस्त्रसंकुलम् । उन्मत्तगङ्गा प्रतिम शब्देनापूरयज्जगत् ॥ ४१ । नैव स्वे न परे राजन् विज्ञायन्ते शरातुराः । योद्धव्यमिति युध्यन्ते राजानो जयगृद्धिनः ॥ ४२ ॥ स्वान् स्वे जघ्नुर्महाराज परांश्चैव समागतान् । उभयोः सेनयो र्वीरैर्व्याकुलं समपद्यत ॥ ४३ ॥ रथैर्भग्नैर्महाराज वारणैश्च निपातितैः हयैश्च पतितैस्तत्र नरैश्च विनिपातितैः ॥ ४४ ॥ अगम्यरूपा पृथिवी क्षणेनसमपद्यत । क्षणेनासीन्महीपाल क्षतजौघप्रवर्त्तिनी ॥ ४५ ॥

हे भरतवंशी वहां युद्धकर्त्ताओं का मुष्टियुद्ध अच्छे प्रकार से हुआ । ३६ । इसी प्रकार शिरके बालों का पकड़ना उग्रहुआ और भुजाओं का महायुद्ध बड़ा भयकारीहुआ इसीरीति से एक दूसरे से भिड़ेहुये युद्धमें नानाप्रकार के शस्त्रों से बहुत प्रकार से एकने एकके प्राणोंको हरणकिया युद्धकर्त्ताओं के भिड़ने और संकुल युद्ध होनेपर । ३८ । हजारों कबंध अर्थात् धड़ उठखड़ेहुये और रुधिर से भरेहुये शस्त्र कवच । ३९ । ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि बड़े रंगोंसे रंगीनवस्त्र इन भयानक शस्त्रोंसे व्याकुल बड़े युद्ध में उन्मत्त गंगाके समान शब्दों से जगत् को पूर्ण किया । ४१ । बाणोंसे पीड़ामान अपने और दूसरोंके कुछनहीं जानेगये विजयके क्रोभी राजालोग युद्ध करना चाहिये ऐसा समझकर युद्ध करतेहैं । ४२ । हे महाराज भाइयों ने भाइयोंको और भिड़ेहुये शत्रुओं को भी दोनों सेना वीरों से व्याकुल युद्धमें वर्त्तमानहुईं । ४३ । हे राजा टूटेरथ और गिरायेहुये हाथियों से और वहांपर पड़ेहुये घोड़ों से वा गिरायेहुये मनुष्यों से । ४४ । वह पृथ्वी क्षण भरही में दुर्गम होगई हे राजा एकक्षणमेंही रुधिररूप जलकी बहनेवाली नदी हो

36. Some held others by hair and fought with arms. Fighting with various weapons with one another, they slew one another. When the battle had become general, thousands of headless bodies stood up and the blood-stained armours looked glorious like coloured clothes. In this great battle of weapons, an uproar like that of the waters of the Ganges filled the firmament. 41. Wounded by arrows the warriors of one side were not distinguishable from those of the other. The princes desirous of victory did their duty. Brothers slew brothers like enemies in that great battle. The two armies full of brave warriors met in combat. With broken cars and fallen elephants, as well as with the bodies of horses and men, the ground became impregnable and a river of blood flowed. Karan slew the Panchals

कथञ्चमें तस्यथा नृपतिः कथम्।३।।अपराह्णे कथं युद्धमवसमल्लोमहर्षणम् ।तन्ममाचक्ष्वतत्थेन कुशलो ह्यसिसञ्जय।४।।सञ्जयउवाच। संसक्तेषुचसैन्येषु युध्यमानेषुभागशः रथमन्यंसमास्थाय पुत्रस्तवविशाम्पते। क्रोधेन महतायुक्तःसविषो भुजगोयथा।।५।। दुर्योधनस्तु दृष्ट्वा वै धर्मराजं युधिष्ठिरम्। प्रोवाच सूतं त्वरितो याहि याहीति भारत ॥ ६ ॥ तत्र मां प्रापय क्षिप्रं सारथे यत्र पाण्डवः। ध्रियमाणातपत्रेण राजा राजति दंशितः ॥ ७ ॥ स सूतश्चोदितो राज्ञा राज्ञः स्यन्दनमुत्तमम्। युधिष्ठिरस्याभिमुखं प्रेषयामास संयुगे ॥ ८ ॥ ततो युधिष्ठिरः क्रुद्धः प्रभिन्न इव कुञ्जरः। सारथिञ्चोदयामास याहि यत्र सुयोधनः ॥ ९ ॥ तौ समाजग्मतुर्वीरौ भ्रातरौ रथसत्तमौ। समेत्य च महावीरौ संरब्धौ युद्धदुर्मदौ। ववर्षतुर्महेष्वासौ शरैरन्योन्यमाहवे ॥ ११ ॥ ततो दुर्योधनो राजा धर्मशीलस्य मारिष। शिलाशितेन भल्लेन धनुश्चिच्छेद संयुगे ॥ १२ ॥ तन्नामृष्यत संक्रुद्धो ह्यवमानं युधिष्ठिरः ॥ १३ ॥ अपविध्य धनुश्छिन्नं क्रोधसंरक्तलो

ने किसरीतिसे उससे युद्धकिया । ३ । उसके पीछे फिर तीसरी वार रोमहर्षण करनेवाला युद्ध कैसेहुआ हे संजय उसको मूलसमेत मुझसे वर्णनकर । ४ । संजय बोला हे राजा सेनाके भिड़ने वा विभागियों के घायल होनेपर विषैलेसर्प केसमान क्रोधयुक्त आपकेपुत्र दुर्योधनने दूसरेरथपर सवारहोकर धर्मराजयुधिष्ठिरको देखकर सारथीसे कहा कि शीघ्रतापूर्वक मुझको वहाँ पहुँचा जहांपर पांडवलोग हैं वहराजा युधिष्ठिर कवच और छत्र धारणकियेहुये शोभायमानहै । ७ । राजाकी आज्ञापातेही सारथीने उसके उत्तम रथको युद्ध में युधिष्ठिर के सम्मुख पहुँचाया । ८ । उसके पीछे मतवाले हाथीकी समान युधिष्ठिरने सारथीको आज्ञाकी कि जहां दुर्योधनहै वहीं चल।९। वह रथियोंमें श्रेष्ठ शूरवीर दोनों भाई परस्परमें सम्मुखहुये उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्म्मद महाधनुषधारी दोनों वीरोंने युद्धमेंपरस्पर बाणोंकी वर्षाकरी।११। तदनन्तर राजा दुर्य्योधन ने युद्ध में तीक्ष्णधारवाले भल्लसेउस धर्माभ्यासी युधिष्ठिर के धनुष को काटा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने उस अपने अपमानको नहीं सहा इसहेतु से क्रोधयुक्त लालनेत्र होकर दूसरे धनुषको लेकर सेना मुखपर

latter was deprived of car. How was the dreadful battle fought for a third time. Tell me all this in detail." Sanjaya said, "At the meeting of the armies, when both sides were wounded, your son Duryodhan mounted another car, looking at Yudhishthir, he said to the driver, "Take me at once to the Pandavas, where Prince Yudhishthir stands decked with umbrella and armour." At the word of the king, the driver took him before Yudhishthir. Then like a mad elephant, Yudhishthir ordered his driver to face Duryodhan. The two brave cousins faced each other and sent forth a shower of arrows.11. Then Duryodhan cut down the bow of Yudhishthir the just with an arrow. The latter could not bear that insult and taking another bow, with

शरैः । त्रिभिश्छिच्छेद सहसा तञ्च विव्याध पञ्चभिः ॥ २३ ॥ निपपात ततः शक्तिः
स्वर्णदण्डा महास्वना । निपतन्ती महोल्केव व्यराजत् शिखिसन्निभा ॥ २४ ॥ शक्तिं
विनिहतां दृष्ट्वा पुत्रस्तव विशाम्पते । नवभिर्निशितैस्तीक्ष्णैर्निजघान युधिष्ठिरम् ॥ २५ ॥
सोतिविद्धो बलवता शत्रुणा शत्रुतापनः । दुर्य्योधनं समुद्दिश्य बाणं जग्राह सत्वरः
॥ २६ ॥ समाधत्त च तं बाणं धनुर्मध्ये महाबलः । चिक्षेप च महाराज ततः क्रुद्धः
पराक्रमी ॥ २७ ॥ स तु बाणः समासाद्य तव पुत्रं महारथम् । व्यामोहयत राजानं
धरणीञ्च जगाम ह ॥ २८ ॥ ततो दुर्य्योधनः क्रुद्धो गदामुद्यम्य वेगितः । विधित्सुः
कलहस्यान्तं धर्मराजमुपाद्रवत् ॥ २९ ॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा दण्डहस्तमिवान्तकम् ।
धर्मराजो महाशक्तिं प्राहिणोत्तव सूनवे । दीप्यमानां महावेगां महोल्कां ज्वलितामिव
॥ ३० ॥ रथस्थः स तया विद्धो मर्म्मभित्त्वा स्तनान्तरे । भृशं संविग्नहृदयः पपात च
मुमोह च ॥ ३१ ॥ भीमस्तमाह च ततः प्रतिज्ञामनुचिन्तयन् । नायं वध्यस्तव नृप

इधर आतीहुई शक्ति को देखकर धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरने तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा और उसको भी पांचबाणों से घायल किया । २३ । इसके पीछे सुनहरी दण्ड वाली महाशब्द करनेवाली वहशक्ति गिरपड़ी और अग्निरूप बड़ी उल्का के समान गिरकर शोभायमान हुई । २४ । हे राजा फिर आपके पुत्रने शक्तिको टूटा हुआ देखकर तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणोंसे युधिष्ठिरको घायलकिया । २५ । परा क्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल शत्रुहन्ता युधिष्ठिरने दुर्य्योधनको विचार करकेशीघ्रही बाणकोलिया । २६ । हे राजा उस क्रोधयुक्त महाबली युधिष्ठिर ने उसबाणको धनुषमें चढ़ाकर छोड़ा । २७ । फिर उसबाणने आपके महारथी राजा को पाकर अचेतकिया और पृथ्वी को फाड़ा । २८ । इस के पीछे युद्धका अन्त करने का अभिलाषी क्रोधयुक्त दुर्य्योधन शीघ्रतासे गदाको उठाकर धर्मराज के सम्मुख गया । २९ । धर्मराजने यमराजके समान गदाउठानेवाले दुर्य्योधन को देखकर आपके पुत्रपर उस शक्तिको चलाया जो कि बड़ी वेगवान् अग्निके समान दैदीप्यमान उल्काके समानथी । ३० । उसगदासे कवच कटकर हृदयपर घायल रथपर सवार अत्यन्त अचेतहोकर गिरपड़ा और अचेतहोगया । ३१ । उसके पीछे

him, Yudhishthir cut down the spear with three arrows and wounded his adversary with five. The spear then fell down with a crash, illumining like a meteor. Seeing his spear cut down, your son wounded Yudhishthir with nine sharp arrows 25. Exceedingly wounded by the valiant foe, Yudhishthir took up an arrow and aimed it at Duryodhan. He put it to his bow and discharged it. The arrow made the Prince unconcious and then entered the ground. Then Duryodhan, desiring to make an end of the battle took up his mace and faced Yudhishthir. Seeing Duryodhan, with his mace upraised, Yudhishthir hurled at him a spear bright like fire. 30. Wounded by the

द्विरदरथपदातिसादिसंघाः परिकुपिताभिमुखाः प्रजघ्निरे ते ॥ २॥ शितपरश्वधखासि पट्टिशैरिषुभिरनेकविधैश्च सूदिताः । द्विरदरथहया महाहवे वरपुरुषैः पुरुषाश्च वाहनैः ॥ ३ ॥ कमलदिनकरेन्दुसंनिभैः सितदशनैः सुमुखाक्षिनासिकैः । रुचिरमुकुटकुण्डलैर्मही पुरुषशिरोभिरास्तृता बभौ ॥ ४ ॥ परिघमुसलशक्तितोमरैर्नखरभुशुण्डिगदाशतैर्हताः । द्विरदनरहयाः सहस्रशो रुधिरनदीप्रवाहस्तदाभवन् ॥५॥ प्रहतरथनराश्वकुञ्जरं प्रतिभयदर्शनमुल्बणव्रणम् । तदहितहतमाबभौ बलं पितृपतिराष्ट्रमिव प्रजाक्षये ॥ ६ ॥ अथ तव नरदेव सैनिकास्तव च सुताः सुरसूनुसन्निभाः । अमितबलपुरःसरा रणे कुरुवृषभाः शिनिपुत्रमभ्ययुः ॥ ७ ॥ तदतिरुधिरभीममाबभौ पुरुषवराश्वरथद्विपाकु

रथ हाथी घोड़े और शंखोंके शब्दोंसे प्रसन्न नानाप्रकार के शस्त्रों की आधिक्यता से क्रोधयुक्तहो उन हाथी रथी और सवारों के समूहोंने सम्मुख होकर प्रहार किये । २ । उत्तम पुरुषों के श्वेत फरसे खड्ग पट्टिश और नानाप्रकार के भल्लों से हाथी रथ घोड़े उस महायुद्धमें मारेगये और अनेक प्रकारकी सवारियों से मनुष्य चूर्णहोगये । ३ । कमल सूर्य और चन्द्रमा के समान श्वेत दांत सुन्दर आंख नाकसमेत मुख और अद्भुतकुण्डल मुकुटवाले मनुष्योंके कटेहुये शिरोंसे आच्छादित वह युद्धभूमि बड़ीही शोभायमान हुई । ४ । तब सैकड़ों परिघ मूशल शक्ति तोमर नखर भुशुंडी और गदाओं से घायल हजारों हाथी घोड़े मनुष्य रुधिरकी नदीके जारी करनेवाले हुये । ५ । मृतक घायल भयानक और अत्यन्त घायल रथ मनुष्य घोड़े हाथीवाली शत्रुओं से घायल वह सेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि संसारके नाश करनेमें यमराजकादेश होताहै । ६ । हे राजा इसके पीछे आपकी सेनाके मनुष्य और देवकुमारों के समान आपके पुत्रोंसमेत उत्तम कौरवलोग जिनके आगे चलनेवाली असंख्य सेनाथी सब मिलकर सात्यकि के सम्मुखगये । ७ । रुधिर से

roar and the warriors, mounted on elephants and] cars, discharged various weapons. The white axes of the warriors, swords, *pattishes* and darts slew elephants, cars and horses and the cars were smashed. With beautiful white teeth, bright faces like lotus, the Sun or the moon, beautiful eyes and noses, wonderful ear-rings and diadems, the heads of the warriors beautified the land. Then hundreds of clubs, musals, spears, tomars, nakhars, bhushundis and maces wounded thousands of elephants, horses and men and made a river of blood to flow. 5. Dead and dreadfully wounded, the army consisting of cars, elephants, horses and men, looked like the city of Yam. Then the men of your army, with your god like sons, the best of the Kauravas, accompanied by innumerable armie, faced Satyaki. Making dreadful bloodshed, the army ;consisting of men, horses, cars and elephants, roaring like a stormy sea, looked glorious like an army

लम् । लवणजलसमुद्धतस्वनं बलमसुरामरसैन्यसन्निभम् ॥ ८ ॥ सुरपतिसमविक्रमस्स तस्त्रिदशावरावरजोपमं युधि । दिनकरकिरणप्रभैः पृषत्कै रवितनयोऽभ्यहनच्छिनिप्रवीरम् ॥ ९ ॥ तमपि सरथवाजिसारथिं शिनिवृषभो विविधैः शरैस्त्वरन् । भुजगविषसमप्रभै रणे पुरुषवरं समवास्तृणोत्तदा ॥ १० ॥ शिनिवृषभशरैर्निपीडितं तव सुहृदो वसुषेणमभ्ययुः । त्वरितमतिरथा रथर्षभं द्विरदरथाश्वपदातिभिः सह ॥ ११ ॥ तदुदधिनिभमाद्रवद्बलं त्वरिततरैः समभिद्रुतं परैः । द्रुपदसुतमुखैस्तदाभवत्पुरुषरथाश्वगजक्षयो महान् ॥ १२ ॥ अथ पुरुषप्रवरौ कृताह्निकौ भवमभिपूज्य यथाविधि प्रभुम् । अरिवधकृतनिश्चयौ द्रुतं तव बलमर्जुनकेशवौ सृतौ ॥ १३ ॥ जलदनिनदनिस्वनं रथं पवनविधूतपताककेतनम् । सितहयमुपयान्तमन्तिकं कृतमनसो ददृशुस्तदारयः ॥ १४ ॥ अथ

अत्यन्त भय उत्पन्न करनेवाले उत्तम पुरुष घोड़े रथ और हाथियों से व्याप्त और उठेहुये समुद्र की समान शब्दायमान वहसेना देवता और असुरोंकी सेनाके समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुई । ८ । इसके पीछे इन्द्रके समान पराक्रमी युद्धमें विष्णुके समान सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने सूर्य्य की किरणोंके समान प्रकाशित मपत्क् नाम बाणों से शूरों में बड़ेवीर सात्यकि को घायल किया । ९ । तब शीघ्रता करनें वाले सात्यकि ने विषैले सर्पकी समान नानाप्रकार के बाणों से पुरुषोत्तम कर्णको रथ घोड़े और सारथी समेत ढकदिया । १० । आपके शुभचिन्तक अतिरथी हाथी रथ घोड़े और पदातियों समेत शीघ्रही उस रथियों में श्रेष्ठ सात्यकि के बाणों से पीड़ामान सुषेणके पास गये । ११ । बड़े शीघ्रगामी शत्रुओं से दबाई हुई समुद्र के रूप वह सेना भागी तब धृष्टद्युम्न आदिके हाथसे मनुष्य घोड़ेरथ और हाथियों का बड़ा विनाश हुआ । १२ । इसके पीछे नित्यकर्म से निवृत्त होकर बुद्धि के अनुसार प्रभु शिवजी के पूजनेवाले और शत्रुओं के मारने में निश्चय करनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुन और केशवजी शीघ्रही आपकी सेनाके ऊपर चले । १३ । तब टूटेहुये चित्तवाले शत्रुओं ने बादल के समान शब्दायमान वायुसे कंपित पताका

of gods. Brave and full of prowess like Indra or Vishnu, Karan, with arrows bright as the rays of the sun, wounded Satyaki the best of warriors. Satyaki the best of warriors, hid Karan and his car, horses and drives, with arrows like venomons serpents. 10. Your well-wishers, with elephants, cars, horse and foot, wounded by the arrows of Satyaki, faced Sushen. Wounded by the great enemies, the ocean like army was destroyed by Dhrishtauyumn and others. Having performed their daily prayers and worshipped Shiv, Arjun and Keshav, desirous of slaying the enemies, attacked your army. The broken-hearted enemies saw the car with the banner fluttering by the air and making a noise like that of thunder. With a twang of the gan-

विस्फार्य्य गाण्डीवं रथे नृत्यन्निवार्जुनः । शरसंबाधमकरोत् खं दिशः प्रदिशस्तथा
॥ १५ ॥ रथान् विमानप्रतिमान् सज्जयन्त्रायुधध्वजान् । ससारथींस्तदा पार्थेष्वा
भीघानिवाधमत् ॥ १६ ॥ गजान् गजप्रयन्तॄंश्च वैजयन्त्यायुधध्वजान् । सादिनोऽश्वांश्च
पत्तींश्च शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ १७ ॥ ततन्तकमिव क्रुद्धमनिवार्य्यं महारथम् । दुर्य्यो
धनोऽभ्ययादेको निघ्नन् बाणैरजिह्मगैः ॥ १८ ॥ तस्यार्ज्जुनो धनुः सूतमश्वान् केतुञ्च
सायकैः । हत्वा सप्तभिरेकेन छत्रं चिच्छेद पत्रिणा ॥ १९ ॥ नवमंच समाधाय व्यसृ
जत् प्राणघातिनम् । दुर्य्योधनायेषुवरं तं द्रौणिः सप्तधाच्छिनत् ॥ २० ॥ ततो द्रौणे
र्धनुश्छित्वा हत्वा चाश्वरथान् शरैः । कृपस्यापि तद्वदुग्रं धनुश्चिच्छेद पाण्डवः ॥ २१ ॥
हार्द्दिक्यस्य धनुश्छित्वा ध्वजञ्चाश्वांस्तथावधीत् । दुःशासनस्येष्वसनं छित्वा राधेय

ध्वजावाले श्वेत घोड़ों से युक्त सम्मुख आनेवाले रथको देखा इसके पीछे रथपर
नाचतेहुये अर्जुनने गांडीव धनुष को टंकारकर आकाश और दिशा विदिशाओं
को बाणों से आच्छादित किया । १५ । और विमानरूप रथोंको शस्त्र ध्वजा और
सारथियों समेत बाणों से ऐसा मारा जैसे कि वायु बादलों को ताड़ित करता है
। १६ । फिर उसने हाथी हाथीवान और वैजयन्ती शस्त्र ध्वजा अश्वारूढ़ और
पत्तियोंको बाणों से यमलोक में पहुँचाया । १७ । सीधे बाणों से मारता हुआ
अकेला दुर्य्योधन उस यमराज के समान क्रोधयुक्त मुख न मोड़नेवाले महारथी
अर्जुन के सम्मुख गया । १८ । अर्जुनने सातबाणों से उसके धनुष और
ध्वजाको काटकर सारथी घोड़ोंको मारकर एकबाणसे उसके छत्रको काटा । १९ । और
प्राणों के नाशकरनेवाले उत्तम नवें बाणको धनुषपर चढ़ाकर दुर्य्योधन के ऊपर
छोड़ा उस बाणके अश्वत्थामा ने सात टुकड़े करडाले । २० । इसके पीछे अर्जुनने
बाणों से अश्वत्थामा के धनुषको काट रथके घोड़ोंको मारकर कृपाचार्य्य के उग्र
उग्रधनुषको भी काटा । २१ । तब कृतवर्मा के धनुष और ध्वजाको काटकर
घोड़ोंको मारा और दुश्शासनके धनुषको काटकर कर्ण के सम्मुख गया । २२ ।

div bow, Arjun tilled all the directions with his arrows. 15. He
destroyed the great cars, along with the weapons, banners and dri-
vers, as the wind does the clouds. He sent elephants and drivers,
decked with garlands, weapons and banners, horsemen and foot sol-
diers to the region of Yam, with his arrows. Killing with his straight
going arrows, Duryodhan alone faced Arjun. With seven arrows,
Arjun cut down his bow, standard, driver and horses and with one
more he cut his umbrella, Then putting the ninth arrows to the
bow he discharged it at Duryodhan, but it was cut into seven parts
by Ashwathama. 20. Then Arjun cut the bow of Ashwathama,
and having slain his horses, cut down the bow of Kripacharya, Then
cutting down the bow and bannes of Kritvarma, he slew his horses,
and having cut down the bow of Dushasan, he faced Karan. Then

मभ्ययात् ॥ २२ ॥ अथ सात्यकिमुत्सृज्य त्वरन् कर्णोऽर्जुनं त्रिभिः । विध्वा विव्याध विंशत्या कृष्णं पार्थं पुनः पुनः ॥ २३ ॥ न ग्लानिरासीत् कर्णस्य क्षिपतः सायकान् बहून् रणे विनिघ्नतः शत्रून् क्रुद्धस्येव शतक्रतोः ॥ २४ ॥ अथ सात्यकिरागत्य कर्णं विध्वा शितैः शरैः । नवत्या नवभिश्चोग्रैः शतेन पुनरार्पयत् ॥ २५ ॥ ततः प्रवीराः पार्थानां सर्वे कर्णमपीडयन् । युधामन्युः शिखण्डी च द्रौपदेयाः प्रभद्रकाः ॥ २६ ॥ उत्तमौजा युयुत्सुश्च यमौ पार्षत एव च । चेदिकारूषमत्स्यानां केकयानाञ्च यद्बलम् ॥ २७ ॥ चेकितानश्च बलवान् धर्मराजश्च सुव्रतः । एते रथाश्वद्विरदैः पत्तिभिश्चोग्रविक्रमैः ॥ २८ ॥ परिवार्य्य रणे कर्णं नानाशस्त्रैरवाकिरन् । भाषन्तो वाग्भिरुग्राभिः सर्वे कर्णवधे धृताः ॥ २९ ॥ तां शस्त्रवृष्टिं बहुधा कर्णश्छित्वा शितैः शरैः । अपोवाहास्त्रवीर्य्येण द्रुमं भंक्त्वेव मारुतः ॥ ३० ॥ रथिनः समहामात्रान् गजानश्वान् ससादिनः । पत्तिव्रा

इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कर्णने सात्यकि को छोड़कर तीन बाणसे अर्जुन को और बीसबाणसे श्रीकृष्णको घायल करके फिर अर्जुन को वारम्वार घायल किया । २३ । युद्धमें बहुत शायकों को छोड़ते शत्रुओं को मारतेहुये कर्णकी ऐसी ग्लानि नहीं हुई जैसे कि क्रोधयुक्त इन्द्रकी । २४ । इसके पीछे सात्यकि ने आकर तीक्ष्ण बाणों से कर्णको घायल करके एक सौनिन्नानवे उग्रबाणों से घायल किया ।२५। इसके पीछे पांडवों के इन सबवीरों ने कर्णको पीड़ामान किया जिनकेनाम युधामन्यु शिखण्डी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक । २६ । उत्तमौजा युयुत्सु नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न चंदेर कारुष मत्स्य और केकय देशियों की सेना । २७ । पराक्रमी चेकितान सुन्दर व्रतवाले धर्मराज युधिष्ठिर इनसबोंने उग्र पराक्रमी कर्ण को रथघोड़े हाथी और पत्तियों समेत घेरकर । २८ । युद्धमें नानाप्रकार के अस्त्रोंसे ढकदिया और उग्रवचनोंसे वार्त्तालाप करतेहुये सब कर्ण के मारनेमें प्रवृत्तचित्त हुये । २९ । कर्ण ने उनअस्त्रोंकी वर्षाको अपने तीक्ष्ण बाणों से अनेकरीतिसे काटकर अस्त्रों के बलसे ऐसे हटादिया जैसे वायुवृक्षको काटकाटकर हटादेताहै । ३० ।

Karan left Satyaki and having wounded Arjun with three arrows and Krishn with twenty, he wounded Arjun again and again. Dis charging many arrows and killing the enemies, Karan, like Indra, was not tired. Then Satyaki wounded Karan with sharp arrows. 25. The Pandav warriors, Yudhamanyu, Shikhandi the son of Draupadi, Uttamanja, Yuyutsu, Nakul, Sahadev, the warriors of Chedi, Karush, Matsaya and Kaikaya, valiant Chekitan and Yudhishthir of good vows, surrounded Karan with the army of horses, elephants and foot and hid him with weapons of various sorts and denuting him with hard words, they were all enraged in slaying Karan. Karan checked their weapons with his own and put them back is the wind fells down trees. 30 Mighty Karan, much enraged,

तांश्च संक्रुद्धो निघ्नन् कर्णो व्यदृश्यत ॥ ३१ ॥ तद्वध्यमानं पाण्डूनां बलं कर्णास्त्रतेजसा । विशस्त्रक्षतदेहास्तु प्राय आसीत् पराङ्मुखम् ॥ ३२ ॥ अथ कर्णास्त्रमस्त्रेण प्रतिहत्यार्जुनः स्मयन् । दिशः खञ्चैव भूमिञ्च प्रावृणोत् शरवृष्टिभिः ॥ ३३ ॥ मुषलानीव सम्पेतुः परिघा इव चेषवः । शतघ्न्य इव चाप्यन्ये वज्राण्युग्राणि चापरे ॥ ३४ ॥ तैर्वध्यमानं तत्सैन्यं सपत्त्यश्वरथद्विपम् । निमीलिताक्षमत्यर्थं बभ्राम च ननाद च ॥ ३५ ॥ निष्कैवल्यं तदा युद्धं प्रापुरश्वनरद्विपाः । हन्यमानाः शरैरार्त्तास्तदा भीताः प्रदुद्रुवुः ॥ ३६ ॥ त्वदीयानां तदा युद्धे संसक्तानां जयैषिणाम् । गिरिमस्तं समासाद्य प्रत्यपद्यत भानुमान् ॥ ३७ ॥ तमसा च महाराज रजसा च विशेषतः । न किञ्चित् प्रत्यपश्याम शुभं वा यदि वाशुभम् ॥ ३८ ॥ ते त्रस्यन्तो महेष्वासा रात्रियुद्धस्य भारत । अपयाने ततश्चक्रुः सहिताः सर्वं

अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णरथीऔर सवारों समेत हाथी घोड़ेऔर अश्वसवारों समेत सहायकों के समूहोंको मारताहुआ दिखाईदिया । ३१ । कर्णके अस्त्रोंसे घायल उस पाण्डवीसेना केबहुतलोग शस्त्रराण शरीर और प्राणों से रहितहोकर मुखोंको मोड़गये । ३२ इसके पीछेमन्द मुसकान करतेहुये अर्जुनने कर्णके अस्त्रको अपने अस्त्र से दूरकरके दिशाविदिशाओंसमेत पृथ्वी और आकाशको बाणोंकी वर्षासे ढकादिया।३३वह बाण फिर मुशल और परिघोंके समानगिरे कितनेही शतघ्नियोंके समान और कोई उग्रवज्रोंके समान आकाशसे पृथ्वीपर गिरे पति घोड़े रथ और हाथियोंसे संयुक्त वह सेना उन बाणोंसेघायल आंखोंको बंदकरनेवाली होकर बहुतघूमी । ३५ । तब घोड़ेहाथी और मनुष्योंने उसयुद्धको पाया जिसमें मरना निश्चय होगयाथा तब बाणोंसेघायल पीड़ामान और भयभीत होकर भागे । ३६ । युद्धमें प्रवृत्त विजयाभिलाषी आपके युद्धकर्त्ताओंके बाणोंसे ऐसी दशाहुई और सूर्य अस्ताचलको प्राप्तहुआ । ३७ । हे महाराज फिर हमने अधिक अंधकार और धूलीके गुब्बारोंसे अँधेरेमें कुछ अच्छा बुरा नहीं देखा । ३८ । हे भरतवंशी रात्रिके

was seen killing elephants, horses, horsemen and their helpers. Wounded by Karan, many warriors of the Pandav army were deprived of their weapons, arrows, limbs and life and the army turned back. Then Arjun, with a smile, checking his weapons with his own, spread arrows through all the directions. The arrows fell down like clubs, *shataghnis* or vajras. Wounded by arrows, the army consisting of horses, cars and elephants, shut their eyes and roamed hither and thither .35. Then the horses, elephants and men, in that destructive battle ran out of fear. The fighting men, desirous of conquest, were reduced to such a condition, and the Sun went down. We could see nothing there on account of darkness and dust. Afraid of the night battle, the great archers ran out of the field of battle. At

योधिभिः ॥ ३९ ॥ कौरवेष्वपयातेषु तदा राजन् दिनक्षये । अयं सुमनसः प्राप्य पार्थाः स्वशिबिरं ययुः ॥ ४० ॥ वादित्रशब्दैर्विविधैः सिंहनादैः सगर्जितैः । परानुहहसन्तश्च स्तुवन्तश्च्युतार्जुनौ ॥ ४१ ॥ कृतेऽवहारे तैर्वीरैः सैनिका सर्व एव ते । आशीर्वाचः पाण्डवेषु प्रायुज्यन्त नरेश्वराः ॥ ४२ ॥ ततः कृतेवहारे च प्रहृष्टास्तत्र पाण्डवाः । निशायां शिविरे गत्वा न्यवसन्त नरेश्वराः ॥ ४३ ॥ ततोरक्षः पिशाचाश्च श्वापदाश्चैव संघशः । जग्मुरायोधनं घोरं रुद्रस्याक्रीडसन्निभम ॥ ४४॥

इति श्री कर्णपर्वणि प्रथमदिवसयुद्धे त्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

युद्धसे भयभीत बड़े धनुषधारी वर्त्तमानलोग सब शूरवीरों समेत युद्ध भूमिसे अलग हुये । ३९ । हे राजा दिनके समाप्त होनेपर सायंकाल के समय कौरवों के हट जानेपर प्रसन्न चित्त पाण्डव विजयको पाकर अपने डेरोंकोगये । ४० । और नाना प्रकारके बाजे और सिंहनादों समेत गर्ज कर शत्रुओंका हास्यकरते अर्जुन और श्रीकृष्णजीकी प्रशंसा करते चलेगये । ४१ । उनवीरों के विश्राम करनेपर उन सब सेनाके लोगोंने और राजाओं ने पाण्डवोंको अशीर्वाद दिया । ४२ । उसके पीछे वहां विश्रामके करनेपर अत्यन्त प्रसन्नयुक्त होकर पाण्डव और अन्य राजा लोग रात्रिमें अपने डेरों में जाकर विश्राम युक्तहुये । ४३ । इसके पीछे राक्षस पिशाच और भेड़िये आदि मांसाहारी पशुओं के समूह उस युद्धभूमिमें गये जोकि रुद्रजी की क्रीड़ाके स्थानरूप थी ४४॥

---

the close of the day and the defeat of the Kauravas, the Pandavas returned victorious to their camp .40. With musical instruments and leonine rears, laughing at the foe and praising Krishn and Arjun. When the warriors had taken rest, the warriors of the army and the princes blessed the Pandavas. The Pandav warriors rested for the night in their tents, the Pandav warriors passed the night in their tents. Then crowds of rakshases, pishaches, wolves and other carnivorous animals entered the field of battle which was like the pleasure ground of Rudra." 44.

धृतराष्ट्र उवाच । स्वेन छन्देन नः सर्वानवधीद्व्यक्तमर्जुनः । न ह्यस्य समरे मुच्येदन्तकोऽप्याततायिनः ॥ १ ॥ पार्थश्चैकोऽहरद्भद्रामेकश्चाग्निमतर्पयत् । एकश्चेमां महीं जित्वा चक्रे बलिभृतो नृपान् ॥ २ ॥ एको निवातकवचानहनद्दिव्यकार्मुकः । एकः किरातरूपेण स्थितं शर्वमयोधयत् ॥ ३ ॥ एको ह्यरक्षद्भरतानेको भवमतोषयत् । तेनैकेन जिताः सर्वे महीपा ह्युग्रतेजसा ॥ ४ ॥ न ते निन्द्याः प्रशस्यास्ते यत्ते चक्रुर्ब्रवीहि तत् । ततो दुर्योधनः सूत पश्चात् किमकरोत्तदा ॥ ५ ॥ सञ्जय उवाच । हतप्रहताविध्वस्ता विवर्मायुधवाहनाः । दीनस्वरा दूयमाना मानिनः शत्रुनिर्जिताः ॥ ६ ॥ शिबिरस्थाः पुनर्मन्त्रं मन्त्रयन्तिस्म कौरवाः । भग्नदंष्ट्रा हतविषाः पादाक्रान्ता इवोरगाः ॥ ७ ॥ तानब्रवीत् ततः कर्णः क्रुद्धः सर्प इव श्वसन् । करं करेण निष्पीड्य प्रेक्षमाणस्तवात्म

अध्याय ३१ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि यह प्रत्यक्ष है कि अर्जुनने अपनी इच्छासे हम सबको मारा इसशस्त्रधारीके युद्धमें मृत्युभी मरनेसे न छूटे । १ । अकेले अर्जुन सुभद्रा को हरण किया अकेलेनेही अग्निको तृप्तकिया और अब इसी अकेले ने इसभारी पृथ्वी को विजयकरके करदेनेवाली किया । २ । दिव्य धनुषधारी अकेले ने किरात रूप धारी शिवजीसे युद्धकिया और निवात कवचोंको मारा । ३ । अकेले ने ही भरतवंशियों की रक्षाकरी अकेले नेही शिवजीको प्रसन्न किया उस उग्रतेजवाले ने सब राजालोगोंको विजयकिया । ४ । और हमारे शूरवीरभी निन्दाके योग्य नहीं हैं किंतु प्रशंसाके योग्य हैं जो उन्होंने किया उसको भी कहो हे सूत इसके पीछे दुर्योधनने क्याकिया । ५ । संजय बोले उन घायल और टूटेअंग सवारियोंसे गिरे हुये कवच शस्त्र और सवारियों से रहित दुःखित शब्दकरते शत्रुओं से कंपायमान पराजित अहंकारी उन कौरवोंने ।६ । जोकि टूटी डाढ़ विष से रहित पैरसे दबाये हुये सर्पों की संतान थे डेरोंमें सलाह की । ७ । उसके पीछे सर्प की समान श्वास

CHAPTER XXXI

Dhritrashtra said," It is plain that Arjun intends to destroy us. Even Death can not scape destructon from his arrows. Alone he absconded with Subhadra; alone he greatified Agni; and alone he conquered all the land and made it pay tribute. That possessor of divine bow was alone when he fought with Shiv disguised as a hunter and slew Nibat - Kabaches. Alone he protected the descendants of Bharat and gratified Shiv. That glorious one conquered all the kings. Our warriors too , are not worthy of blame. They are praiseworthy. Tell me of their deeds, Sanjaya. What did Duryodhan do ? " 5. Sanjaya said, " With wounded bodies, broken [armours and weapons,

जम् ॥ ८ ॥ यत्तो दृढश्च दक्षश्च धृतिमार्जुनस्तदा । संबोधयति चाप्येनं यथाकालमधोक्षजः ॥ ९ ॥ सहसास्त्रविसर्गेण वयं तेनाद्य वञ्चिताः । इषस्त्वहं तस्य सङ्कल्पं सर्वं हन्ता महीपते ॥ १० ॥ एवमुक्तस्तथेत्युक्त्वा सोनुजज्ञे नृपोत्तमान् । तेनज्ञाता नृपाः सर्वे स्वानि वेश्मानि भेजिरे ॥ ११ ॥ सुखोषितास्तां रजनीं हृष्टा युद्धाय निर्ययुः ॥ १२ ॥ तेपश्यन् विहितं व्यूहं धर्मराजेन दुर्जयम् । प्रयत्नात् कुरुमुख्येन बृहस्पत्युशनोमतम् ॥ १३ ॥ अथ प्रतीपकर्त्तारं प्रवीरं परवीरहा । सस्मार वृषभस्कन्धं कर्णं दुर्य्योधनस्तदा ॥ १४ ॥ पुरन्दरसमं युद्धे मरुद्गणसमं बले । कार्त्तवीर्य्यसमं वीर्य्ये कर्णं राज्ञोगमन्मनः ॥ १५ ॥ सर्वेषाञ्चैव सैन्यानां कर्णमेवागमन्मनः । सूतपुत्रं महेष्वासं बन्धुमात्ययिके

श्वेता हुआ आपके पुत्र को देखता क्रोधयुक्त कर्ण हाथ से हाथों को मलकर उनसे बोला कि अर्ज्जुन सदैव सावधान दृढ़ पराक्रमी और धैर्य्यमानहै और श्रीकृष्णजी भी समयके अनुसार उसको समझादेते हैं । ९ । अब हम उसके अस्त्रोंके छोड़ने से अकस्मात् ठगगये हे राजा अब कलके दिन में उसके संकल्पों नाश करूंगा । १० । यह कर्णके वचन सुनकर दुर्योधन ने बहुत अच्छा कहकर उत्तम राजाओं को आज्ञादी तब उसकी आज्ञा पाकर सब राजालोग अपने डेरों को गये । ११ । उस रात्रिमें सुखपूर्वक निवास करके मातःकाल बड़ी प्रसन्नतासे युद्ध करने के लिये निकले ।१२। उन्होंने कौरवोंमें श्रेष्ठ बृहस्पति और शुक्रजीके मतमें नियत धर्मराजके बड़े उपायसे रचेहुये कठिनतासे विजयहोनेवाले व्यूहकोदेखा ।१३। इसके पीछे शत्रुहन्ता दुर्योधनने उस शत्रुओं के मारनेवाले बड़े वीर पराक्रमी और उन्नत स्कन्धवाले कर्णको स्मरणकिया । १४ । जोकर्णयुद्ध में इन्द्रके समान पराक्रम में मरुद्गणों के सदृश बल में सहस्राबाहु के समानथा उसकर्णमें राजाका चित्तगया । १५ । सब सेनाओंका चित्तभी उसबड़े धनुषधारीकर्णमें ऐसागया जैसेकि प्राणोंके

destitute of conveyances, crying with pain and trembling with fear, the proud Kauravas, like serpents with broken fangs, deprived of venom and trodden under foot, held a consultation in their tents. Then sighing like a serpent and looking at your son, enraged Karan, rubbing his hands, spoke out, " Arjun is always careful, full of prowess and patient and *Shri Krishn too, gives him good advice in time.* We have been deceived by his weapons, but I shall prevent his advance tomorrow." 10. Duryodhan approved of Karan's proposal and ordered the assembly of princes to take rest for the night. Having slept well during that night, they came out cheerfully to fight at day break and saw the impregnable array of Yudhishthir's army, well arranged after the fashion of Vrihaspati and Suukra. Then Duryodhan the destroyer of foes wished to see mighty Karan of huge shoulders, like Indra in battle, like Maruttas in prowess and like Sahasra-

षिघ । धृतराष्ट्र उवाच । ततो दुर्य्योधनः सूत पश्चात्किमकरोत्तदा । यद्वोगमन्मनो मन्दा कर्णं वैकर्त्तनं प्रति । अप्यपश्यत राधेयं शीतार्त्त इव भास्करम् ॥ १७ ॥ कृतेव हारे सैन्यानां प्रवृत्ते " रणे पुनः । कथ वैकर्त्तनः कर्णस्तत्रायुध्यत सञ्जय ॥ १८ ॥ कथञ्च पाण्डवाः सर्वे युयुधुस्तत्र सूतजम् । कर्णो ह्येको महाबाहुर्हन्यात् पार्थान् ससृञ्जयान् ॥ १९ ॥ कर्णस्य भुजयोर्वीर्य्यं शक्रविष्णुसमं युधि । तस्य शस्त्राणि घोराणि विक्रमश्च महात्मनः । कर्णमाश्रित्य संग्रामे मत्तो दुर्य्योधनो नृपः ॥ २० ॥ दुर्य्योधनं ततो दृष्ट्वा पाण्डवेन भृशार्द्दितम् । पराक्रान्तान् पाण्डुसुतान् दृष्ट्वा चापि महारथः ॥ २१ ॥ कर्णमाश्रित्य संग्रामे मन्दो दुर्य्योधनः पुन. । जेतुमुत्सहते पार्थान् सपुत्रान् सहकेशवान् ॥ २२ ॥ अहोवत महद्दु.ख यत्र पाण्डुसुतान्रणे । नातरद्भसः

संकट में मन वन्दहोकर एक ओरको जाताहै । १६ । धृतराष्ट्र बोले हे सूत इसके पीछे दुर्य्योधन ने क्या किया हे हीन मारब्धी लोगो जो तुम्हारा मन सूर्य्य के पुत्र कर्ण में गया तो सेनाओं के विश्रामकरने के पीछे फिर युद्ध के जारी होने पर कर्णको ऐसे देखा जैसे कि शीतसे पीड़ित मनुष्य सूर्यको देखता है । १७ । वहां सूर्य का पुत्र कर्ण इस रीति से युद्ध में प्रवृत्तहुआ हे संजय फिर वहां सब पांडवों ने कर्ण से कैसे युद्ध किया ।१८ । अकेलाही महाबाहु कर्ण सृंजियों समेत सब पांडवों को मारसक्ता है । १९ । क्योंकि युद्धमें कर्ण की भुजाओं का पराक्रम इन्द्र और विष्णु के समान है उस महारथी के पराक्रम संयुक्त शस्त्र बड़े घोर हैं युद्ध में कर्णका आश्रय लेकर राजा दुर्योधन मदोन्मत्त है । २० । इसके पीछे पांडव के हाथसे अत्यन्त पीड़ामान दुर्य्योधनको देखकर और पाण्डवों कोभी पराक्रम करनेवाला देखकर महारथी कर्ण ने क्या किया ।• २१ । फिर अभागा दुर्य्योधन युद्धमें कर्णका आश्रय लेकर पाण्डवों को श्रीकृष्ण और उनके पुत्रों समेत विजय करने का अभिलाषा करता है ।२२। यह महाशोककारी दुःखहै जिस

vahu in strength.15. All the warriors looked towards the great archer Karan as the mind is concentrated in a matter of life and death. " Dhritrashtra said, " What did Duryodhan do, O Sut ? Unlucky fellow who, at the commencement of the battle after the night's rest, looked at Karan as people distressed with cold look at the Sun. How did the Pandavas fight with Karan ? Brave Karan can alone destroy the Pandavas and the Srinjayas; for the prowess of his arms is like that of Indra and Vishnu; his weapons are dreadful; and Duryodhan is puffed up with pride as he relies on Karan.20. What did Karan do on seeing Duryodhan wounded and defeated by the Pandavas? Again unlucky Duryodhan, relying on Karan, aspires to conquer Shri Krishn and the Pandavas and their sons. It is a pity that mighty Karan could not conquer the Pandavas; surely Destiny is supreme.

कर्णौ दैव नून परायणम् ॥ २३ ॥ अहो द्यूतस्य निष्ठेयं घोरा सम्प्राप्त वर्त्तते । अहो तीव्राणि दुःखानि दुर्य्योधनकृतान्यहम् । सोढा घोराणि बहुशः शल्यभूतानि सञ्जय ॥ २४ ॥ सौबलञ्च तथा तात नीतिमानिति मन्यते । कर्णश्च रभसो नित्यं राजानं चाप्यनुव्रतः ॥ २५ ॥ यदेवं वर्त्तमानेषु महायुद्धेषु सञ्जय । अश्रौषं निहतान् पुत्रान् नित्यमेव च निर्जितान् ॥ २६ ॥ न पाण्डवानां समरे कश्चिदस्ति निवारकः । स्त्रीमध्य मिव गाहन्ते दैवन्तु बलवत्तरम् ॥ २७ ॥ सञ्जय उवाच । राजन् पूर्वनिमित्तानि धर्मि ष्ठानि चिन्तितय ॥ २८ ॥ अतिक्रान्तं हि यत् कार्य्यं पश्चाच्चिन्तयतेनरः । तच्चास्य न भवेत् कार्य्यं चिन्तया च विनश्यति ॥ २९ ॥ तदिदं तव कार्य्यन्तु दूरप्राप्तं विजानता । न कृतं यत्त्वया पूर्वं प्राप्ताप्राप्त विचारणम् ॥ ३० ॥ उक्तोसि बहुधा राजन् मा युध्यस्वेति पाण्डवैः । गृह्णीषे न च तन्मोहाद्वच नञ्च विशाम्पते ॥ ३१ ॥ त्वया पापानि घोराणि समाचीर्णानि पाण्डुषु । त्वत्कृते

स्थानपर कि भगवान् कृष्ण ने युद्ध में पाण्डवों को नहीं विजय किया इस से निश्चयकरके दैव बड़ाहै । २३ । यह द्यूतकी निष्ठा वर्त्तमान है और शोकका स्थान है मैं दुर्य्योधनके उत्पन्न कियेहुये भालेके समान घोर कठिन दुःखों को सहरहाहूं हे तात संजय वह दुर्योधन शकुनी को नीतिज्ञ मानता है और सदैव राजा के आज्ञावर्त्ती वेगवान् कर्णको भी नीतिमान मानता है । २५ । हे संजय महा भारी युद्धों के वर्त्तमान होनेके कारण मैंने सदैव अपने पुत्रोंको घायल और मृतकसुना । २६ । और युद्धमें पाण्डवोंका कोई रोकनेवाला नहीं है जैसे कि स्त्रियोंमें फिरते हैं उसीप्रकार सेनाकोभी मथाते हैं इससे दैव अधिक बलवान् है । २७ । संजय बोले कि हे राजा पूर्व्व समयके धर्मसंबन्धी वार्त्ताओंको विचारो । २८ । जोमनुष्य असंभव कार्य्यको पीछेसे शोचता है उसका वह कार्य्य नहीं होताहै किन्तु शोचसे नाशको पाता है । २९ । हे राजा मुझ बुद्धिमान् के पूर्वयोग्य विचार को जो तुमने नहीं किया इसीसे वह कार्य्य तुम्हारे हाथसे जातारहा । ३० । हे राजा सदैव मैंनेसमझायाथा कि पाण्डवोंसे युद्ध मतकरो तुमने अपनीअज्ञानतासे उसवचनको नहीं माना।३१।तुमनेपाण्डवोंकेसाथमेंपरस्परमिलकरबड़ेघोरपापकियेऔरआपहीकेकारणसे

All this is the outcome of gambling. I am suffering the pangs of sorrow on account of Duryodhan. Duryodhan thinks Shakuni and his faithful friend Karan to be great politicians. 25. I have everg heard of my sons as wounded and slain in battle. The Pandavas roam among them unchecked as if it were among so many women. I hold therefore that Fate is powerful." Sanjaya said, "Think of the good advice given you in former days. He who tries to do an impossible deed fails in his enterprise and dies of grief. You have failed in achieving your object because you did not act upon my wise counsel. 30. I told you again and again not to fight with the Pandavas, but you were

वर्त्तते घोरः पार्थिवानां जनक्षयः ॥ ३२ ॥ तदिदानीमतिक्रान्त मा शुचो भरतर्षभ । शृणु सर्वं यथा वृत्तं घोरं वैशसमच्युत ॥ ३३ ॥ प्रभातायां रजन्यान्तु कर्णो राजान मभ्ययात् । समेत्य च महाबाहुर्दुर्य्योधनमथाब्रवीत् ॥ ३४ ॥ कर्ण उवाच । अद्य राजन् समेष्यामि पाण्डवेन यशस्विना । निहनिष्यामि तं वीरं स वा मां निहनिष्यति ॥ ३५ ॥ बहुत्वान्मम कार्य्याणां तथा पार्थस्य भारत । नाभूत् समागमो राजन् मम चै वार्जुनस्य च । ३६॥इदन्तु मे यथाप्रज्ञं शृणु वाक्यं विशाम्पते ।अनिहत्य रणे पार्थं नाह मेष्यामि भारत ॥ ३७ ॥ हतप्रवीरे सैन्येऽस्मिन् मयि चावस्थिते युधि । अभियास्यति मां पार्थः शक्रशक्त्या विनाकृतम् ॥ ३८ ॥ ततः श्रेयस्करं यच्च तन्निबोध जनेश्वर । आयुधानाञ्च मे वीर्य्यं दिव्यामर्जुनस्य च ॥ ३९ ॥ कार्य्यस्य महतो भेदे लाघवे दूरपा

अच्छेरहजारों राजाओंका नाश वर्त्तमान हुआ।३२। हेभरतवंशियोंमें श्रेष्ठ अब समय आगया शोचमतकरो हे अजेय जैसे कि यह घोर नाशहुआ उस सबको मुझ से सुनो । ३३ । प्रातःकालके समय कर्ण राजा दुर्य्योधनके पासगया और मिलकर दुर्य्योधन से कहनेलगा । ३४ । कि हे राजा अब मैं यशस्वी पांडवों से युद्धकरूंगा यातो मैं उस वीर अर्ज्जुन को मारूंगा या वही मुझको मारेगा । ३५ । हे भरत वंशी राजा दुर्य्योधन मेरे और अर्ज्जुनके कार्य्यों की अधिकता से मेरी और अर्ज्जुन की सम्मुखता नहीं हुई । ३६ । हे दुर्य्योधन मेरे इस वचन को तुम बुद्धि के अनुसार सुनो कि मैं युद्ध में अर्ज्जुन को मारकर न आऊंगा । ३७ । जिसके बड़े वीर मेरे वर्त्तमान होनेपर युद्धमें मारेगये वह अर्ज्जुन मेरे सम्मुख आवेगा जो किमैं इन्द्रकी शक्तिसे पृथक्हूं । ३८ । हे राजा जोअपनी रक्षा करनेवाली बात है उसको तुम समझो कि मेरे और अर्ज्जुन के अस्त्रों का पराक्रम और प्रताप समान है शत्रुके बड़े कार्य्यका नाश हस्तलाघवता बाणों का दूरफेंकना और अस्त्र

foolish enough to disregard my advice. You committed heinious sins against the Pandavas and have caused the destruction of thousands of good princes. The time has now come. Hear from me of the great destruction as it happened and be not grieved:-After day break Karan went to Duryodhan and said, " I shall fight with the Pandavas and shall either slay Arjun or be slain by him. I could not encounter him before, for I had many things to do. Hear me attentively, Duryodhana. I shall not be able to slay Arjun in battle, for Arjun, who has slain our great warriors in my presence, will encounter me while I am deprived of the spear given me by Indra. Hear from me, O king, in what lies our welfare. Arjun and I are both equal in the use of weapons. He is not my equal in destroying enemies, dexterity of hand, sending off arrows to a great distance and carefulness in using

तन । सौष्ठवे चास्त्रपाते च सव्यसाची न मे समः ॥ ४० ॥ प्राणे शौर्ये च ज्ञाने च विक्रमे चापि भारत । निमित्तज्ञानयोगे च सव्यसाची न मत्समः ॥ ४१ ॥ सर्वायुध महामात्रं विजयं नाम तद्धनुः । इन्द्रार्थं प्रियकामेन निर्मितं विश्वकर्मणा ॥ ४२ ॥ येन दैत्यगणान्राजन्जितवान् वैशतक्रतुः । यस्य घोषेण दैत्यानां व्यामुह्यन्त दिशोदश ॥४३॥ तद्भार्गवाय प्रायच्छच्छक्रः परमसम्मतम् । तद्दिव्यं भार्गवो मह्यमददद्धनुरुत्तमम् ॥ ४४॥ तेन योत्स्ये महाबाहुमर्जुनं जयतांवरम् । यथेन्द्रः समरे सर्वान् दैतेयान् वै समागतान् ॥ ४५ ॥ धनुर्घोरं रामदत्तं गाण्डीवात्तद्विशिष्यते । त्रिःसप्तकृत्वः पृथिवी धनुषा येन निर्जिता ॥ ४६ ॥ धनुषो ह्यस्य कर्माणि दिव्यानि प्राह भार्गवः । तद्रामो ह्यद दन्मह्यं येन योत्स्यामि पाण्डवम् ॥ ४७॥ अद्य दुर्योधनाहं त्वां नन्दयिष्ये सबान्धवम् । निहत्य समरे वीरमर्जुनं जयतां वरम् ॥ ४८ ॥ सपर्वतवनद्वीपा हतद्विडा ससागरा ।

गिरानेकी सावधानी अर्जुन मेरे समान नहीं है । ४० । हे भरतवंशी देहकाबल वा मनकाबल वा अस्त्रोंकी शिक्षा वा पराक्रममें लक्ष्यभेदन करने में भी अर्जुन मेरे समान नहीं हैं । ४१ । सब शस्त्रों में श्रेष्ठ विजयनाम धनुष इन्द्रके प्रिय होनेकी इच्छा से विश्वकर्माजी ने उत्पन्नकिया । ४२ । हे राजा निश्चयकरके इंद्रने उसी धनुषकेद्वारा दैत्योंके समूहों को विजयकिया और जिसके शब्द से दैत्यों की दशोंदिशा मोहित हुईं । ४३ । वह बड़ा उत्तम धनुष इन्द्रने भार्गवजीको दिया और भार्गवजी ने वह दिव्य धनुष प्रसन्नहोकर मुझकोदिया । ४४ । हे महाविजयी उसी धनुष के द्वारा मैं महाबाहु अर्जुनसे लड़ूंगा जैसेकि भागहुये दैत्योंसे इन्द्र लड़ाथा ।४५ । परशुरामजी का दियाहुआ घोर धनुष गाण्डीव धनुषसे अधिकहै जिसके द्वारा यह पृथ्वी इक्कीस बार विजयकीगई । ४६ । इस धनुषके घोरकर्मको भार्गव परशुरामजीने मुझसेकहा है उनके उस दियेहुये धनुष के द्वारा मैं पाण्डवों से लड़ूंगा । ४७ । हे दुर्योधन अब मैं बड़े विजयी विख्यात अर्जुनको युद्धमें मारकर तुझको बांधवों समेत प्रसन्न

weapons. 40 In the strength of body and mind, in the training of arms, prowess and hitting the mark he cannot cope with me. The bow, known as Vijoya, which Vishwakarma had made for the sake of Indra and which Indra used in destroying and stupefying the Danavas, was given by Indra to Bhargava who was pleased to give me that divine bow. I shall fight with Arjun with the help of that bow, as Indra had fought with the Daityas and put them to flight. 45. The dreadful bow given me by Parushuram is superior to Gandiv and has conquered the earth twenty one times. Parushuram told me the history of this wonderful bow with which I am going to fight the Pandavas. I shall please you all by slaying the conquering and famous Arjun. The Earth, with her hills, forests, islands and seas, will be thine. The geat warriors have already been slain and they sons and grandsons

पुत्रपौत्रप्रतिष्ठाते भविष्यत्यत्र पार्थिव॥४९॥नाशक्यं विद्यते मेद्य त्वत्प्रियार्थं विशेषतः।
सम्यग्धर्मानुरक्तस्य सिद्धिरात्मवतो यथा ॥ ५० ॥ न हि मां समरे सोढुं संशक्तोऽग्नि-
तरुर्यथा। अवश्यन्तु मया वाच्यं येन हीनोस्मि फाल्गुनात् ॥ ५१ ॥ ज्या तस्य धनुषो
दिव्या तथाक्षय्यौ महेषुधी। सारथिस्तस्य गोविन्दो मम तादृङ्न विद्यते ॥५२ ॥ तस्य
दिव्यं धनुः श्रेष्ठं गाण्डीवमजितं युधि। विजयञ्च महद्दिव्यं ममापि धनुरुत्तमम् ॥५३॥
तत्राहमधिकः पार्थात् धनुषा तेन पार्थिव। येन चाप्यधिको वीरः पाण्डवस्तन्निबोध मे
॥ ५४॥ रश्मिग्राहश्च दाशार्हः सर्वलोकनमस्कृतः। अग्निदत्तश्च वै दिव्यो रथ काञ्चन
भूषणः ॥ ५५ ॥ अच्छेद्यः सर्वतो वीर वाजिनश्च मनोजवाः। ध्वजश्च दिव्यो द्युतिमान्
वानरो विस्मयङ्करः ॥५६ ॥ कृष्णश्च स्रष्टा जगतो रथं तमभिरक्षति। एतैर्द्रव्यैरहं हीनो

करूंगा । ४८ । हे राजा अब पर्व्वत वन द्वीप और समुद्रों समेत यहसब पृथ्वी तेरी होगी जिसके कि वीर मारेगये और तेरे पुत्र पौत्रों की प्रतिष्ठा करेंगे।४९। अबतेरे अभीष्ट के निमित्त मेरी कोई अच्छे प्रकार की विशेषता ऐसी नहींहै जैसेकि अच्छे धर्मपर प्रीति करनेवाले मनुष्य की मोक्षमेंहोती है ।५० । वह अर्जुन युद्धमें मेरे सहने को ऐसे समर्थ नहीं होसक्ता जैसे कि वृक्ष अग्निको नहीं सहसक्ता मैं जिस हेतुसे कि अर्जुन से कमहूं उसको अवमुझे कहना अवश्य है । ५१ । एक तो उसके धनुष की प्रत्यंचा दिव्यहै और इसीप्रकार उसके दो तूणीर अक्षय हैं और उसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं मेरा वैसा सारथी नहीं है । ५२ । उसकागाण्डीव धनुष दिव्य उत्तम होकर युद्धमें सबसे अजेयहै और मेरा विजयनाम धनुषभी दिव्य और उत्तमहै।५३। हे राजा वहांमैं उस धनुषके कारणसे अर्जुनसे अधिकहूं और जिनकारणोंसे कि वीरपांडव अर्जुन मुझसे अधिकहै उसकोभी मुझसेसुनो-५४।प्रथमतो सबके पूज्य रूप श्रीकृष्णजी सारथी हैं और अग्नि देवताका दियाहुआ सुवर्ण जटित रथ भी दिव्यहै । ५५ । हे वीर वह सबप्रकारसे अजेय है उसके घोड़ेभी चित्तके अनुमार शीघ्रगामीहैं और ध्वजाभी दिव्य प्रकाशमान है और उस ध्वजामें हनुमान् जी बड़े आश्चर्यकारी हैं । ५६ । और संसारके स्वामी श्रीकृष्णमहाराज उसके रथ की रक्षा करते हैं

will reign all over. I am intent on doing you good as a virtuous man on attaining salvation. 50. Arjun cannot withstand me in battle as a tree cannot withstand fire. Now hear in what points I am *inferior to Arjun*: he possesses a *divine bowstring and two inexhaustible quivers*. He has Shri Krishn *to drive his car*, while I *have no such driver*. His gandiv bow is the best and invincible though *my bow too*, called Vijaya, is equally good and divine. I am *superior to Arjun* in the point of bow. Hear also in what points he excels me. Firstly, he has Shri Krishn, worshipped by all, to drive his car and the gold decked car, given him by Agni, is divine. 55. He is invincible in all ways. His horses are swift like the mind and his banner is divine and glorious

योद्धुमिच्छामि पाण्डवम्॥ ५७ ॥ अयन्तु सदृशः शौरेः शल्यः समितिशोभनः। सारथ्यं यदि मे कुर्य्यात् ध्रुवस्ते विजयो भवेत् ॥ ५८ ॥ तस्य मे सारथिः शल्यो भवत्वसुकरः परैः। नाराचान् गार्द्धपत्रांश्च शकटानि वहन्तु मे ॥५९ ॥ रथाश्च मुख्या राजेन्द्र युक्ता वाजिभिरुत्तमैः ॥ आयान्तु पश्चात् सततं मामेव भरतर्षभ ॥ ६० ॥ एव मप्यधिकः पार्थात् भविष्यामि गुणैरहम् । शल्योप्यभ्यधिकः कृष्णादर्जुनादपि चाप्य हम ॥ ६१ ॥ यथाश्वहृदयं वेद दाशार्हः परवीरहा। तथा शल्यो विजानीते हयज्ञानं महारथः॥ ६२ ॥ बाहुवीर्य्ये समोनास्ति मद्रराजस्य कश्चन । यथास्त्रैमत्समो नास्ति कश्चिदेव धनुर्द्धरः ॥ ६३ ॥ तथा शल्यसमोनास्ति हयज्ञाने हि कश्चन ॥ ६४ ॥ सोय मभ्यधिकः पार्थाद्भविष्यति रथो मम । समुद्यातुं न शक्ष्यन्ति देवा अपि सवासवाः

इन वस्तुओं से रहितहोकर मैं अर्जुन से लड़ना चाहताहूं । ५७ । युद्धको शोभा देनेवाला यह राजाशल्य श्रीकृष्णजीके समानहै जो राजाशल्य मेरा सारथी बनजाय तो अवश्य तेरी विजय होय ।५८। शत्रुओं के साथ कठिन कर्म करनेवाला शल्य मेरा सारथी होय और कंकपत्तवाले मेरे अनेक बाणों के बहुतसे छकड़े साथ में ले चलें ।५९। हे भरतर्षभ राजेन्द्र उत्तम घोड़ोंके रथमें बैठकर तुमभी मेरे साथही साथ चलो । ६० । मैं अपने गुणों से अर्जुन से अधिक होजाऊंगा शल्य भी श्रीकृष्णजी से अधिकहै और मैंभी अर्जुनसे अधिकहूं । ६१ । जिस प्रकार शत्रुहन्ता श्रीकृष्णजी अश्वहृदय नाम विद्या के जाननेवाले हैं इसी प्रकार महारथी शल्यभी अश्वविद्या का ज्ञाताहै ।६२। और भुजाबलमें राजा शल्य के समान कोई नहीं है इसीप्रकार अस्त्रवेत्ता मेरेसमान कोईनहींहै।६३।जोकि अश्वविद्या में शल्यके समान कोई नहीं है इसीसे यह मेरारथ अर्ज्जुनसे भी अधिक होगा हेकौरवोंमें श्रेष्ठ ऐसा करनेसे मैं रथकी सवारि में अधिक होजाऊंगा इन्द्र समेत देवता भी तेरे सम्मुखहोनेको समर्थ नहीं होंगे । ६५ । हे शत्रुहन्ता महाराज दुर्य्योधन यह काम मैं तुमसे करवाया चाह-

with the wonderful ape seated in it. Shri Krishn the lord of the world protects his car, Destitute of these things, I am going to fight with him, Prince Shalya, the pride of the field of battle is like Shri Krishn, and I can get victory if he become the driver of my car. Let Shalya the destroyer of foes drive my car, and let cart loads of arrows go with me. You too, will go with me.60. My merits will make me superior to Arjun. Shalya is superior to Krishn and I am superior to Arjun. Like Shri Krishn, Shalya knows about horses. He is unequalled in strength, while I am unequalled in archery. My car will be superior to that of Arjun as Shalya is unequalled in the knowledge of horses, and I shall be invincible by gods led by Indra. 65. I wish you to do this for me, Prince Duryodhan. Let not this opportunity slip from your hand, and we shall gain our object by so doing. Then you

॥ ६५ ॥ एतत् कृतं महाराज त्वयेच्छामि परन्तप ॥ ६६ ॥ क्रियतामेष कामो मे मा वः कालोऽत्यगादयम् । एवं कृते कृतं सह्यं सर्वकामैर्भविष्यति ॥ ६७ ॥ ततो द्रक्ष्यसि संग्रामे यत् करिष्यामि भारत ॥ ६८ ॥ सर्वथा पाण्डवान् संख्ये विजेष्ये वै समागतान् न हि मे समरे शक्ताः संमुखातुं सुरासुराः । किमु पाण्डुसुता राजन् रणे मानुषयोनयः ॥ ६९ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तस्तव सुतः कर्णेनाहवशोभिना । सम्पूज्य संप्रहृष्टात्मा ततो राधेयमब्रवीत् ॥ ७० ॥ दुर्योधन उवाच । एवमेतत् करिष्यामि यथा त्वं कर्ण मन्यसे । सोपासङ्गा रथाः साश्वाः अनुयास्यन्ति संयुगे ॥ ७१ ॥ नाराचान् गार्ध्रपत्रांश्च शकटानि वहन्तु ते । अनुयास्याम कर्ण त्वां वयं सर्वे च पार्थिवाः ॥ ७२ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा महाराज तव पुत्रः प्रतापवान् । अभिगम्याब्रवीद्राजा मद्रराजमिदं वचः ॥ ७३ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि कर्णदुर्योधन संवादे एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

ताहूं । ६६ । यह मेरा मनोरथ पूर्ण करो इससमय को किसी प्रकार से उल्लंघन न करना चाहिये ऐसा करनेसे सब अभीष्ट सिद्धहोंगे ।६७। हेभरतवंशी इसके पीछे जैसा मैं युद्ध करूंगा उसकोभी तुम देखोगे मैं सम्मुख आनेवाले पाण्डवों को सब प्रकार से विजय करूंगा । ६८ । सुर और असुर भी युद्धमें मेरे सम्मुख आनेको समर्थ नहीं हैं हेराजा फिर मनुष्य योनि पाण्डवलोग मेरी सम्मुखता क्या करेंगे । ६९ । संजय बोले कि कर्णसे इन सब वचनों को सुनकर आपका पुत्र दुर्योधन अत्यन्त प्रसन्न होकर कर्णसे प्रशन्सा पूर्वक यह वचन बोला ।७०। कि हे कर्ण जैसा तुम कहते हो मैं इन सब बातों को वैसाही करूंगा तूणीरों से भरे हुये रथ तुम्हारे पीछे चलेंगे । ७१। कंकपक्ष से जटित तेरे बाणों के बहुतसे छकड़े केचलूंगा और मुझ समेत सब राजालोग तेरे पीछे चलेंगे । ७२ । संजय बोले हे महाराज आपका प्रतापी पुत्र दुर्योधन इस प्रकारके वचन कहकर मद्रदेशके राजा शल्य के पास जाकर उससे यह वचन बोला ७३ ॥

will see my prowess in fighting, I shall conquer all the Pandavas who come before me. Gods and asuras will not be able to oppose me; how can the Pandavas, who are but men, withstand me." Sanjaya said, "Hearing these words of your son, Duryodhan, much pleased, praised Karan and said, "I shall do, Karan, as you have directed me to do: Cars full of quivers shall follow you. I shall take with me many carts full of kank-feathered arrows for your use; I, with other princes, will bring up your rear." Sanjaya said, "Then your glorious son Duryodhan, having said this, came to Shalya the king of Madra and spoke to him as follows." 73.

सञ्जय उवाच । पुत्रस्तव महाराज मद्रराज महारथम् । विनयेनोपसङ्गम्य प्रणया द्वाक्यमब्रवीत् ॥ १ ॥ सत्यव्रत महाभाग द्विषतां तापवर्द्धन । मद्रेश्वर रणे शूर पर सैन्यभयङ्कर ॥ २॥ श्रुतवानसि कर्णस्य ब्रुवतो वदताम्वर। यथा नृपतिसिंहानां मध्ये त्वां वरयत्ययम्॥३॥स त्वामप्रतिवीर्य्याद्य शत्रुपक्षक्षयाय च। मद्रेश्वरप्रयाचेऽहं शिरसा विनयेन च ॥४॥ तस्मात् पार्थविनाशार्थं हितार्थं मम चैव हि। सारथ्यं रथिनां श्रेष्ठ प्रणयात् कर्त्तुमर्हसि ॥ ५ ॥ त्वयि यन्तरि राधेयो विद्विषो मे विजेष्यते ॥ ६ ॥ अभीषूणां हि कर्णस्य ग्रहीतान्यो न विद्यते । ऋते हि त्वां महाभाग वासुदेवसमं युधि स पाहि सर्वथा कर्णं यथा ब्रह्मा महेश्वरम् ॥ ७ ॥ यथा च सर्वथापत्सु वार्ष्णेय: पाति पाण्डवम् । तथा मद्रेश्वराद्य त्वं राधेयं प्रतिपालय ॥ ८ ॥ भीष्मो द्रोणः कृपः कर्णो

अध्याय ३२ ॥

संजय बोले कि हे महाराज आपका पुत्र बड़ी नम्रता समेत समीप जाकर महारथी शल्यसे यह वचन बोला । १ । हे सत्यव्रती महाबाहु शत्रु शोककारी मद्र देशके स्वामी युद्धमें शूर और शत्रुकी सेना को भय उत्पन्न करनेवाले । २ । श्रेष्ठ वक्ता आपने कर्णका वचन सुनाहै मैं सब श्रेष्ठ राजाओं में आपको उत्तम जानताहूं । ३ । हे अनुपम पराक्रमी शत्रुपक्ष के नाशकारी राजा मद्र मैं नम्रता पूर्वक आपको शिरसे दण्डवत करताहूं । ४ । हे रथियों में श्रेष्ठ आप अर्ज्जुन के नाश और मेरी वृद्धिके अर्थ न्याय से सारथ्य कर्म करने को योग्यहो । ५ । आपके सारथी होनेसे कर्ण मेरे शत्रुओं को विजयकरेगा कर्णकी बागडोरों का पकड़ने वाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है । ६ । हे महाबाहु युद्धमें वासुदेवजी के समान तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य नहीं है । ७ । आप सब प्रकारसे कर्ण की ऐसी रक्षाकरिये जैसे कि ब्रह्माजी ने महेश्वरजी की और श्रीकृष्ण ने सब आपत्तियों में पाण्डवों की करी है और करते हैं । ८ । भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण और परा-

CHAPTER XXXII

Sanjaya said, "Your son humbly went to Shalya and said, "Truthful, brave man, destroyer of foes, king of Madra, terror of foes, you have heard the words of Karan. I think you to be the best of kings. Prince of Madra, of matchless prowess and destoyer of foes, I humbly salute you. Best of car warriors, you may be pleased to drive Karan's car for Arjun's destruction and my advancement. 5. Karan will conquer my foes, if you will drive his car; for I see none worthier than you for doing this work. You are like Vasudev in prowess and no wrrrior can equal you. You will protect Karan from harm as Brahma protected Maheshwar or as Krishn protects the Pandavas. Bhishm, Drona, Krip, Karan, valiant Kritvarma, Shakuni

भवान् भोजश्च वीर्य्यवान् । शकुनिः सौवलो द्रौणिरहमेव च नो वलम् ॥ ९ ॥ एव मेष कृतो भागो नवधा पृथिवीपते । न च भागोत्र भीष्मस्य द्रोणस्यच महात्मनः॥१०॥ ताऽवामतीत्य तौ भागौ निहता मम शत्रवः ॥ ११ ॥ वृद्धौ हितौ नरव्याघ्रौ छलेन निहतौच तौ । कृत्वानसुकरंकर्मगतौ स्वर्गमितोनघ । तथान्ये पुरुषव्याघ्राःपरैर्विनिहता युधि ॥ १२ ॥ अस्मदीयाश्च बहवः स्वर्गाय प्रहितो रणे । त्यक्त्वा प्राणान् यथाशक्ति चेष्टां कृत्वा च पुष्कलाम् ॥ १३॥ तदिदं क्षतभूयिष्ठं वलं मम नराधिप । पूर्वमप्यल्पकैः पार्थैर्हतं किमुत साम्प्रतम् ॥ १४ ॥ वलवन्तो महात्मान. कौन्तेयाः सत्यविक्रमा । वल शेषं न हन्युर्मे यथा तत्त् कुरु पार्थिव ॥ १५ ॥ हतवीरमिदं सैन्यं पाण्डवैः समरे विभो ॥ १६ ॥ कर्णो ह्येको महाबाहुरस्मत्प्रियहिते रतः । भवांश्च पुरुषव्याघ्र सर्वलोक महारथः ॥ १७ ॥ शल्य कर्णोर्ज्जुनेनाद्य योद्धुमिच्छति संयुगे। तस्मिन् जयाशा

कृपी कृतवर्मा सौवलका पुत्र शकुनी अश्वत्थामा मैं और हमारी सव सेना । ९ । हे राजा इस रीतिसे यह नौ भागकियेहैंपरन्तु इन भागोंमें महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्यका भाग नहीं है । १० । इन्होंने उन दोनोंभागों को उल्लंघन करके मेरे शत्रुओंको मारा वह दोनों वृद्ध बड़े धनुषधारी युद्धमें छलसे मारे गये । ११ । हे निष्पाप वह दोनों कठिन कर्मोंकोकरके यहांसे स्वर्गकोगये और इसीप्रकार अन्य२ भी वहुतसे पुरुषोत्तम युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मारेगये । १२ । हमारे अनेक शूरवीर युद्धमें वड़े २ पराक्रमों को करके प्राणों को त्याग कर स्वर्ग को गये ।१३। हे राजा यह मेरी वहुतसी सेना मारीगई पूर्व्वमें भी इन अत्यन्त थोड़े पाण्डवोंसे मेरे वहुत से मनुष्य मारेगये अव कौनसी वात करनी उचित है । १४ । कुन्ती के पुत्र महावली सत्य पराक्रमीहैं सो हे राजा जिस रीति से वह पाण्डवलोग मेरी शेष वची हुई सेनाको न मारसकें वही उपाय आपको करना योग्य है । १५ । हे समर्थ यह सेना युद्ध में पाण्डवों के हाथमें मृतक हुये शूरवीर वाली है अव हमारी वृद्धि चाहनेवाला एक महावाहु पराक्रमी कर्ण और सव लोगोंके महारथी पुरुषोत्तम आप ही हे शल्य अव कर्ण युद्ध में अर्ज्जुन के साथ लड़ना चाहता है । १७ । हे

Ashwathama, I and all our army, were divided into nine parts. Bhishm and Drona are now no more. 10. They did more than their part in slaying the foes and were slain by deceit. They died after doing great deeds like many other princes. Many of our warriors have gone to heaven after doing great deeds of prowess. The greater part of my vast army has been destroyed by a handful of the Pandavas. What is to be done now ? The sons of Kunti are exceedingly powerful and of true prowess. Save the rest of my army from the Pandavas. 15. Many warriors of my army have been slain by the Pandavas. You and valiant Karan are our only well wishers. Now Karan is going to fight against Arjun. My hopes of victory lie in

समरे हत्वा गमिष्यामि यथागतम् ॥ ३४ ॥ अथ वाप्येक एवाहं योत्स्यामि कुरुनन्दन ।
पश्य वीर्यं ममाद्य त्वं संग्रामे दहतो रिपून् ॥ ३५ ॥ न चाभिमानं कौरव्य निधाय
हृदये पुमान् । अस्मद्विधः प्रवर्त्तेत मा मां त्वमभिशङ्किथाः ॥ ३६ ॥ युधि चाप्यव
मानो मे न कर्त्तव्यः कथञ्चन । पश्य पीनौ मम भुजौ वज्रसंहननोपमौ ॥ ३७ ॥ धनुः
पश्य च मे चित्रं शरांश्चाशीविषोपमान् । रथं पश्य च मे क्लृप्तं सदश्वैर्वातवेगिभिः
॥ ३८ ॥ गदाञ्च पश्य गान्धारे हेमपट्टविभूषिताम् । दारयेयं महीं क्रुद्धो विकिरेयञ्च
पर्वतान् ॥ ३९ ॥ शोषयेयं समुद्रांश्च तेजसा स्वेन पार्थिव । तं मामेवंविधं राजन् सम
र्थमरिनिग्रहे ॥ ४० ॥ कस्माद्युनक्षि सारथ्ये न्यूनस्याधिरथे रणे । न मामधुरि
राजेन्द्र नियोक्तुं त्वमिहार्हसि ॥ ४१ ॥ न हि पापीयसः श्रेयान् भूत्वा प्रेष्यत्वमुत्सहे ।
यो ह्यभ्युपगतं प्रीत्या गरीयांसं वशे स्थितम् ॥ ४२ ॥ वशे पापीयसो धत्ते तत्पापम

से आयाहूं वहांको चलजाऊं । ३४ । हे कौरवनन्दन चाहेमैंही अकेला युद्ध करूंगा
और तुम युद्धमें मुझ शत्रुहन्ता के पराक्रम को देखो । ३५ । जैसे कि मुझसा
पुरुष उस अपमानको हृदयमें धारण करके फिर त्याग करने को कर्मकर्त्ता होजाय
वैसेही तुमभी मुझमें सन्देह न करो । ३६ । अथवा: युद्धमें भी मेरा अपमान
किसीप्रकारसे न करना चाहिये मेरी वज्ररूपी मोटी २ भुजाओं को देखो । ३७ ।
और मेरे चित्र धनुष समेत विषवाले सर्पकेसमान बाणोंको देखो और वायुकेसमान
वेगवान उत्तम घोड़ों से अलंकृत मेरे श्रेष्ठ रथको देखो । ३८ । हे गान्धारी के
पुत्र सुवर्ण सूत्रोंसे वेष्ठित मेरी गदाको देखो मैं संपूर्ण पृथ्वीको फाड़कर पर्व्वतों
को भी तोड़सक्ताहूं । ३९ । और हे राजा अपनेतेजसे समुद्रको शोषण करसक्ताहूं
मुझ शत्रुओं के विजय करने में समर्थ ऐसे सामर्थ्यवान् को । ४० । युद्धमें तू नीच
अधिरथीके सारथीपने में क्यों संयुक्त करताहै हे राजा तुम मुझको नीचकर्म में
संयुक्त करने को योग्य नहींहो । ४१ । मैं उत्तम होकर नीचजातिके सेवन करनेको
नहीं चाहताहूं जो कि प्रीतिसे समीप आया और स्वाधीनता में नियतहुआ । ४२ ।

after achieving it. Let me fight alone and you will be see my prowess. 35. A person like me is apt to leave work by insult. Have no doubt about me. You must never insult me so in battle. Look at my thick set arms like vajra as well as the wonderful bow and arrows like venomons serpents. Look at my good car drawn by horses swift like the wind. Look at my mace, having golden strings, with which I can break through mountains and earth. I can soak the ocean dry with my glory; why dost thou appoint me to drive the car of a despicable half-warrior. You must not set me such vile work to do. 41. Being of a noble family, I donot like to serve a man of low origin. You would make my love and independance servile. It is a sin to confuse superiors and inferiors. Brahma created Brahmans from

रोत्तरम् । ब्रह्मासृजन्मुखे विप्रान् क्षत्रियानपि बाहुतः ॥ ४३ ॥ ऊरुभ्यामसृजद्वैश्यान् पद्भ्यां शूद्रानिति स्थितिः । तेभ्यो वर्णविशेषाश्च प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ ४४ ॥ अथान्योन्यस्य संयोगात् चातुर्वर्ण्यस्य भारत । गोप्तारः संग्रहीतारो दातारः क्षत्रियाः स्मृताः ॥४५॥ याजनाध्यापनैर्विप्रा विशुद्धैश्च प्रतिग्रहैः । लोकस्यानुग्रहार्थाय स्थापिता ब्राह्मणा भुवि ॥ ४६ ॥ कृषिश्च पाशुपाल्यञ्च विशां दानञ्च धर्मतः । ब्रह्मक्षत्रविशां शूद्रा विहिताः परिचारकाः ॥ ४७ ॥ तथा वै क्षत्रियाणां च सूता वै परिचारकाः । न क्षत्रियो वै सूतानां शृणु वाक्यं ममानघ ॥ ४८ ॥ सोऽहं मूर्द्धाभिषिक्तश्च राजर्षिकुलसम्भवः । महारथः समाख्यातः सेव्यः स्तव्यश्च बन्दिनाम ॥ ४९ ॥ सोऽहमेतादृशो भूत्वा नेहारिबलसूदन । सूतपुत्रस्य संग्रामे सारथ्यं कर्तुमुत्सहे ॥ ५० ॥ अवमानमहं प्राप्य न योत्स्यामि कथञ्चन । आपृच्छे त्वाद्य गान्धारे

उसको तू नीचजातिकी आधीनता में करता है देखो छोटे बड़ोंका विपर्य्यय करना बड़ापापहै ब्रह्माजी ने मुखसे ब्राह्मण उत्पन्नकिये और भुजासे क्षत्रियों को उत्पन्न किया । ४३ । वैश्योंको जंघा से और शूद्रोंको चरणों से उत्पन्न किया यह वेद का वचन है इन चारोंवर्णोंसे अनुलोम प्रतिलोम लोगहुये हैं हे भरतवंशी चारों वर्णोंकी मिलावटसे उत्पन्न होनेवालों के क्षत्रीलोग रक्षक दण्ड देनेवाले और दान करनेवाले कहे हैं । ४५ । और ब्राह्मणोंको ब्रह्माजीने यज्ञकरनेकराने दान देनेलेने और वेद पढ़ने और शुद्ध दानोंकेद्वारा लोक के अनुग्रह के निमित्त इस पृथ्वीपर नियत कियाहै । ४६ । वैश्यों का कर्म धर्म से खेतीकरना पशुपालन और दान करनाहै और शूद्रलोग ब्राह्मण क्षत्री और वैश्यों के सेवा करनेवाले वर्णन किये हैं । ४७ । और सूतलोग तो अवश्यही क्षत्री और ब्राह्मणों के सेवा करने वाले हैं क्षत्री किसी दशामें भी सूतोंका आज्ञावर्त्ती नहीं होसक्ता । ४८ । हे राजा मैं राजर्षियों के कुल में उत्पन्न मूर्द्धाभिषेक नाम से प्रसिद्ध इसरीति से बन्दीजनों का पूज्य और स्तूयमान हूं । ४९ । हे शत्रुसेनापहारी सो मैं ऐसा होकर सूत के सारथीपने को इच्छानहीं करता हूं । ५० । मैं अपमान युक्तहोकर फिर किसीप्रकार

his mouth, kshatryas from his arms, Vaishyas from his thighs and Shudras from his feet. The Vedas say so. Then there are people of mixed castes. Kshatryas protect all classes and give them punishment and charity.45. Brahma has created the Brahmans to perform sacrifices, to give and receive charity, to teach and read the Vedas and to do good to the world by holy donations. It is the duty of Vaishyas to cultivate land, to domesticate beasts and to give away in charity. Shudras are said to be created for the service of the three upper classes. The *Sutas* are surely among the last class; a kshatrya can never command the services of a kshatrya. I am born of royal sages, a crowned prince and praised by bards. Being such, I am not desirous of serving a *Sut*.50. Thus degraded, I shall never fight again. Kshatriy

गमिष्यामि गृहाय वै ॥ ५१ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा नरव्याघ्रः शल्यः समितिशोभनः । उत्थाय प्रययौ तूर्णं राजमध्यादमर्षितः ॥ ५२ ॥ प्रणयाद्बहुमानाच्च निगृह्य च सुतस्तव । अब्रवीन्मधुरं वाक्यं साम्ना सर्वार्थसाधकम् ॥५३॥ यथा शल्य त्वमात्थेत्थमेवमेतदसंशयम् । अभिप्रायस्तु मे कश्चित्तन्निबोध जनेश्वर ॥ ५४ ॥ न कर्णोऽभ्यधिकस्त्वत्तो न शङ्के त्वाञ्च पार्थिव । न हि मद्रेश्वरो राजा कुर्य्याद्यदनृतं भवेत् ॥ ५५ ॥ ऋतमेव हि पूर्वास्ते वदन्ति पुरुषोत्तमाः । तस्मादार्त्तायनिः प्रोक्तो भवानिति मतिर्मम ॥ ५६ ॥ शल्यभूतश्च शत्रूणां यस्मात्त्वं युधि मानद । तस्माच्छल्येति ते नाम कथ्यते पृथिवीतले ॥ ५७ ॥ यदेव व्याहृतं पूर्वं भवता भूरिदक्षिण । तदेव कुरु धर्मज्ञ मदर्थं यद्वदुच्यसे ॥ ५८ ॥ न च त्वत्तो हि राधेयो न चाहमपि वीर्य्यवान् । वृणोमि त्वं हया

से भी युद्ध नहीं करूंगा हे गान्धारी के पुत्र मैं तुमसे पूछकर अब अपने घरको जाऊंगा । ५१ । संजय बोले हे महाराज युद्ध में शोभा पानेवाला क्रोधयुक्त शल्य इसप्रकारसे कहकर राजाओं के मध्य में से शीघ्रही उठकर चलदिया । ५२ । आप का पुत्र बड़ी प्रतिष्ठा पूर्वक उसको पकड़कर सब प्रयोजनों के सिद्ध करनेवाले मीठे २ वचनों से बड़ी नम्रतापूर्वक बोला । ५३ । हे शल्य जैसा आप जानतेहो और कहतेहोसो यथार्थहीहै इसमें किसीप्रकारका सन्देह नहींहै इसमें मेरा प्रयोजन है उसको आप कृपाकरके सुनिये । ५४ । हे राजा कर्ण आपसे अधिक नहीं है और न मैं आपपर सन्देहकरता हूँ आपमद्रदेशके राजाहैं जो मिथ्या समझें तो उस कामको न करियेगा । ५५ । हे पुरुषोत्तम तुम्हारे वृद्ध लोगों को रत अर्थात् सत्यतायुक्त बोलते हैं उनकी सन्तानहोनेसे आप आर्तायन कहेजाते हैं यह मेरा मत है । ५६ । हे प्रतिष्ठा देनेवाले इस कारण से आप युद्धमें शत्रुओंके शल्य रूप अर्थात् भल्लरूपहो इसीहेतुसे पृथ्वीपर आपका नाम शल्य विख्यातहै । ५७ । हे बड़े दक्षिणा देनेवाले आपने जो प्रथम कहाहै उसीको करो हे धर्मज्ञ मेरे निमित्त जो २ कहा है । ५८ । कर्णसमेत मैं भी आपसे अधिक पराक्रमी नहींहूँ परन्तु

your permission, go home, son of Gandhari." Sanjaya continued, "Having said this, valiant Shalya, much enraged, went away from among the princes But your son held him and spoke sweet and humble words to gain his purpose, saying," It is no doubt true what you say and know, Shalya. Pray bear me with patience, Neither Karan is superior to you nor I doubt you, king of Madra You may not do what is false. You are called Artayan, because your predecessors are known as *ratas* or 'truthful. You are a shalya or dart to the *enemies in battle and hence your name is* Shalya. *Do as you have* said, generous man for my sake, Neither Karan nor I am superior to your, yet I request you to be a driver to these excellent horses. I believe that Karan is superior to Arjun in good qualities, and all

प्रथमां यन्तारमिति संयुगे ॥ ५९ ॥ यथा ह्यभ्यधिकः कर्णो गुणैस्तात धनञ्जयात् । वासुदेवादपि त्वञ्च लोकोपमिति मन्यते ॥ ६० ॥ कर्णो ह्यभ्यधिकः पार्थादस्त्रैरेव नरर्षभ । भवानप्यधिकः कृष्णादश्वज्ञाने तथा बले ॥ ६१ ॥ यथाद्वहृदयं वेद वासुदेवो महामनाः । द्विगुणं त्वं तथा वेत्सि मद्रराज न संशयः ॥ ६२ ॥ शल्य उवाच । यन्मां ब्रवीषि गान्धारे मध्ये सैन्यस्य कौरव । विशिष्टं देवकीपुत्रात् प्रीतिमानस्म्यहं त्वयि ॥ ६३ ॥ एष सारथ्यमातिष्ठे राधेयस्य यशस्विनः । युध्यतः पाण्डवाग्र्येण यथा त्वं वीर मन्यसे ॥ ६४ ॥ समयश्च हि मे वीर कश्चिद्वैकर्त्तनं प्रति । उत्सृजेयं यथाश्रद्ध महं वाचोस्य सन्निधौ ॥ ६५ ॥ सञ्जय उवाच । तथेति राजन् पुत्रस्ते सह कर्णेन भारत । अब्रवीन्मद्रराजस्य सुतं भरतसत्तम ॥ ६६ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि शल्यस्य कर्ण सारथ्यस्वीकारे द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

मैं युद्धमें आप को उत्तम घोड़ोंका सारथी चाहताहूँ । ५९ । हे शल्य मैं कर्णकोभी उत्तम गुणों के द्वारा अर्जुन से अधिक मानता हूँ और आपको वासुदेवजी से भी अधिक मुझ समेत सबलोकमानते हैं । ६० । हे नरोत्तम कर्ण अस्त्रों में भी अर्जुन से अधिकहै इसीप्रकार आपभी अश्वविद्या के जानने में और पराक्रम में श्रीकृष्ण से अधिकहो । ६१ । जैसे कि बड़ेसाहसी वासुदेवजी अश्व हृदय को जानते हैं उसी प्रकार उनसेभी द्विगुणित आप जानतेहो ।६२ । शल्य बोला हे गांधारी के पुत्र कौरव जो तुम सेनाके मध्य में मुझको श्रीकृष्णजी से अधिकमानते और कहते हो इसी से मैं तुमपर प्रसन्न हूँ । ६३ । अब मैं अर्जुन के साथ युद्ध करने वाले यशस्वी कर्ण के साथ सारथीपने में नियत होता हूँ हे वीर जैसेकि तुम मानकर चाहते हो । ६४ । हे वीर कर्ण के विषय में मेरा यह संकल्पहै अर्थात् प्रतिज्ञा है कि इसके सम्मुख श्रद्धा के समान कहूँगा । ६५ । संजय बोले हे भरत वंशी राजा धृतराष्ट्र आपका पुत्र कर्ण समेत बोला कि जैसी राजा मद्रकी इच्छा है वैसाही हो ॥ ६६ ।

---

the people, including myself, say that you are superior to Krishn. 60. Karan is superior to Arjun in the knowledge of weapons and you are *superior to Vasudev in the knowledge of horses as well as in prowess.* You know twice as much about horses as Vasudev does." Shalya said, "I am pleased with you, son of Gandhari, because you hold me superior to Krishn in the presence of all the warriors. I shall now drive Karan's car in his encounter with Arjun as you wish. I have resolved, O brave warrior, that I shall say in his presence what pleases him." Sanjaya said, "Then, O king Dhritrashtra, your son and Karan said, "Let the king of Madra do as he says." 66.

दुर्योधन उवाच । भूय एव तु मद्रेश यत्वां वक्ष्यामि तच्छृणु । यथा पुरावृत्तमिदं युद्धे देवासुरे प्रभो ॥ १ ॥ यदुक्तवान् पितुर्मह्यं मार्कण्डेयो महानृषि । तदशेषेण ब्रुवतो मम राजर्षिसत्तम ॥ २ ॥ तन्निबोध न चाप्यत्र कर्त्तव्या ते विचारणा । देवानामसुराणाञ्च परस्परजयैषिणाम् ॥ ३ ॥ बभूव परमो राजन् संग्रामस्तारकामयः । निर्जिताश्च तदा दैत्या दैवतैरिति न श्रुतम ॥ ४ ॥ निर्जितेषु च दैत्येषु तारकस्य, सुतास्त्रयः । ताराक्षः कमलाक्षश्च विद्युन्माली च पार्थिव ॥ ५ ॥ तप उग्रं समास्थाय परमे नियमे स्थिताः । तपसा कर्शयामासुर्देहांस्ते शत्रुतापन ॥ ६ ॥ दमेन तपसा चैव नियमेन समाधिना । तेषां पितामहः प्रीतो वरदः प्रददौ वरान् ॥ ७ ॥ अवध्यत्वञ्च ते राजन् सर्वभूतेषु सर्वदा । सहिता वरयामासुः सर्वलोकपितामहम ॥ ८ ॥ तानब्रवीत्तदा देवो लोकानां प्रभुरीश्वरः । नास्ति सर्वामरत्वं वै निवर्त्तध्वमितोसुराः ॥ ९ ॥ अन्यं वरं

अध्याय ३४ ॥

दुर्य्योधन बोले हे राजा मद्र आपसे जो मैं कहताहूँ उसको फिर भी तुम सुनो हे समर्थ जैसे कि पूर्व्व देवासुरों के संग्राम में जो वृत्तान्तहुआ । १ । उसीको महर्षी मार्कण्डेयजीने जिसरीति से मेरे पितासे कहा हे राजऋषभ आप उसका मुझसे सुनिये और चित्त से समझिये । २ । तुमको इसमें विचार न करनाचाहिये हे राजा परस्पर में विजयकी इच्छासे देवता और असुरोंका प्रथमयुद्ध । ३ । तारक संबंधीहुआ तब दैत्य देवताओंसे हारगये यह हमने सुना । ४ । हे राजा दैत्यों के हारने पर तारकके तीन पुत्र ताराक्ष कमलाक्ष विद्युन्माली । ५ । उग्रतपी होकरबड़े भारी नियम में नियतहुये हे शत्रुसंतापी उन तीनों ने तपस्याओंसे अपने २ शरीरों को दुर्बल करादिया उनकी शान्त चित्तता तप नियम और समाधी से प्रसन्न होकर वरदाता ब्रह्माजी ने उनको वरदान दिये । ७ । हे राजा उन सब मिले हुओं ने सब जीवमात्रके हाथ से मृत्युका न होना लोकके पितामह ब्रह्माजी से बरमांगा । ८ । तब ब्रह्माजीने उनसे कहा कि सबकी अविनाशिता नहीं है हेअसुर

CHAPTER XXXIII

Duryodhan said," Hear what I say, king of Madra, what happened in the war of gods and asuis. Hear it as was told by Markandeya to my father. You should have no hesitation in doing what I say; Desirous, of conquering one another, the gods and asurs, fought for Tarak. We hear that the gods were vanquished in that first war. At the defeat of the gods, the three sons of Tarak, known as Taraksh, Kamalaksh and Vidyunmali, performed a severe asceticism. They made their bodies lean Being pleased with their asceticism, Brahma the giver of boons, gave them boons 7. They asked of the grandfather that they should not meet death at the hands of any living being.

वृणध्वं वै यादृशं संप्ररोचते । ततस्ते सहिता राजन् संप्रधार्य्यासकृद्बहु ॥ १० ॥ सर्व
लोकेश्वरं वाक्यं प्रणम्येदमथाब्रुवन् । अस्माकं त्वं वरं देव प्रयच्छेमं पितामह ॥ ११ ॥
वयं पुराणि त्रीण्येव समास्थाय महीमिमाम् । विचरिष्याम लोकेस्मिंस्त्वत्प्रसादपु
रस्कृताः ॥ १२ ॥ ततो वर्षसहस्रे तु समेष्यामः परस्परमेकीभावं गमिष्यन्ति पुराण्येतानि
चानघ ॥ १३ ॥ समागतानि चैतानि यो हन्याद्भगवंस्तदा । एकेषुणा देववरः स नो
मृत्युर्भविष्यति ॥ १४ ॥ एवमस्त्विति तान्देवः प्रत्युक्त्वा प्राविशद्दिवम् । ते तु लब्ध
वराः प्रीताः संप्रधार्य्य परस्परम् ॥ १५ ॥ पुरत्रयविसृष्ट्यर्थं मयं वव्रुर्महासुरम् ।
विश्वकर्माणमजरं दैत्यदानवपूजितम् ॥ १६ ॥ ततो मयः स्वतपसा चक्रे धीमान् पुराणि
च । त्रीणि काञ्चनमेकं वै रौप्यं कार्ष्णायसं तथा ॥ १७ ॥ काञ्चनं दिवि तत्रासीदन्त

लोगो इसविचारसे लौटो । ९ । और इसके सिवाय जो दूसरा वर चाहतेहो उसको मांगो हे राजा इसके पीछे वह सब मिलेहुये प्रभुका वारम्वार ध्यान करके । १० । और सर्वेश्वर को नमस्कार पूर्वक यह वचन बोले हे देवता पितामह हमको यह बरदानदो । ११ । कि हम तीन पुरों में नियतहोकर आपकी कृपासे इसलोकमें इस पृथ्वीपर घूमें । १२ । इसकेपीछे हजारवर्ष के अनंतर परस्परमें मिलेंगे हे निष्पाप यह तीनोंपुर एकहीरूप होजायँ । १३ । हे भगवान् उससमय जो देवता हमारे इस मिलेहुये पुरको एकहीवाणसे ढानेवालाहोगा उसीसेहमारी मृत्युहो । १४ । ब्रह्माजी तथास्तु कहकर स्वर्गमें चलेहुये फिर वह तीनों बरप्रदानको पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुये । १५ । और तीनपुर बनानेके लिये असुरोंके विश्वकर्म्मा अजर अमर और दैत्यों से पूजित जो मयनाम दैत्यहै उससे बोले । १६ । उसके पीछे उस बुद्धिमान् मयदैत्य ने अपने तपसे तीन पुरों को उत्पन्न किया उनमें एक सुवर्णका दूसरा चांदीका तीसरा लोहेकाथा । १७ । वह सुवर्णका पुरतो स्वर्गमें नियत हुआ चांदी का अंतरिक्षमें और लोहेकापुर इच्छाके अनुसार पृथ्वीपर चलनेवालाहुआ । १८ ।

But brahma told them that he would not grant them immortality and that they were at liberty to ask something else instead. Then they bowed down to the lord of the world and said, "Grant us, grandfather, that we may reside in three cities and roam throughout the world12. Then let them be united together in one mass, when they meet after a thousand years, and let us die by the hand of that god who demolishes the combined cities with one arrow." Brahma granted their request and went to heaven. They were much pleased at receiving the boon. 16. They asked Maya the immortal mason of asuras to build the three cities. Wise Maya built the three cities, with great application. One of them was of gold, the other of silver and the third of iron. The golden city was in paradise, the silver one in

॥ २७ ॥ स तुष्टमब्रवीद्देवं वापी भवतु नः पुरे । शस्त्रैर्विनिहता यत्र क्षिप्ताः स्युर्बलव
त्तराः ॥ २८ ॥ स तु लब्ध्वा वरं वीरस्तारकाक्षसुतो हरिः । सृसृजे तत्र वापीं तां मृतसं
जीवनीं प्रभो ॥ २९ ॥ येन रूपेण दैत्यास्तु येन वेषेण चैव ह । मृतास्तस्यां परिक्षिप्तास्ता
दृशेनैव जज्ञिरे ॥ ३० ॥ तां प्राप्य ते पुनस्त्रींस्तान् सर्वान् लोकान् बबाधिरे । महता
तपसा सिद्धाः सुराणां भयवर्धनाः ॥ ३१ ॥ न तेषामभवद्राजन् क्षयो युद्धे कथञ्चन ॥३२॥
ततस्ते लोभमोहाभ्यामभिभूता विचेतसः । निर्ह्रीकाः संस्थिताः सर्वे स्थापिताः समलू
लुपन् ॥ ३३ ॥ विद्राव्य सगणान् देवांस्तत्र तत्र तदा तदा । विचेरुः स्वेन कामेन वर
दानेन दर्पिताः ॥ ३४ ॥ देवारण्यानि सर्वाणि प्रियाणि च दिवौकसाम् । ऋषीणामाश्र
मान् पुण्यान् रम्यान् जनपदांस्तथा । व्यनाशयन्त मर्यादा दानवा दुष्टचारिणः ॥३५॥
पीड्यमानेषु लोकेषु ततः शक्रो मरुद्गणः । पुराण्याघोषयाञ्चक्रे वज्रपातैः समन्ततः

के पुत्र वीर पराक्रमी हरिनाम ने बड़ी घोर तपस्या करी उस तपसे ब्रह्माजी प्रसन्न हुये । २७ । तब ब्रह्माजी को प्रसन्न जानकर उसने यहवर मांगा कि हमारेपुर में एक ऐसी वापी अर्थात् बावड़ी उत्पन्नहो जिसमें शस्त्रों से मृतकलोग उसमें डालने से सजीव होकर बलवान् होजायँ । २८ । हे राम उस तारकाक्ष के पुत्र हरि ने इस वरको पाकर वहां मृतक संजीविनी बावड़ी को तैयार किया । २९ । फिरमरे हुये दैत्य जिस रूप और पोशाकसे उस में डालेगये वह उसी रूपको धारण किये पोशाक समेत उत्पन्न हुये ।३० उन्होंने उस बावड़ी को पाकर फिर उनसब लोकों को पीड़ित किया वह सबदैत्य बड़े बड़े तपस्वी और सिद्धलोगों के भी भयके बढ़ानेवाले हुये । ३१ । हे राजा कभी उनकी युद्ध में पराजय नहीं हुई।३२। उसके पीछे लोभ मोहसे व्याप्त निर्बुद्धी निर्लज्जहोकर वह सबलोभ में फंसेहुये नियत हुये । ३३ । वरदान से अहंकारी होकर वह सब जहां तहां देवताओं के समूहों को भगाकर अपनी इच्छाके अनुसार घूमने लगे । ३४ । देवताओं के प्रियकारी सब क्रीड़ा स्थानों को वा ऋषियों के पवित्र आश्रमों को और अनेक सुन्दर सुन्दर देशोंको नाश करके उन दुष्टकर्मी दैत्यों ने मर्यादाओं को भी बिगाड़ा । ३५ । इस के पीछे सबके पीड़ित होनेपर मरुद्गणों समेत इन्द्र ने चारोंओर

performed a severe asceticism and gratified Brahma. He asked of Brahma the boon of a well that could revive those, who were killed by weapons, and give them strength. So the reviving well was made there. The slain Daityas thrown into the well, came out whole of body and dress like before. 30. They tortured the people the more after getting the well and increased the fear of the ascetics and sidhas. They were from that time invincible in battle. Devoid of shame and full of avarice, they became very greedy. Proud of the boons, they put to flight the armies of gods and roamed unrestrained. They destroyed the pleasure houses of gods and the holy hermitages of the

त्र्यम्बकेणाभ्यनुज्ञाता स्ततस्ते स्वस्थचेतसः। नमो नमो नमस्तेस्तु प्रभो इत्यब्रुवन् बच ॥ ५४ ॥ नमो देवाधिदेवाय धन्विनेथातिमन्यवे । प्रजापतिमखघ्नाय प्रजापतिभिरीड्यते ॥ ५५ ॥ नमोस्तुताय स्तुत्याय स्तूयमानाय शंभवे। विलोहिताय रुद्राय नीलग्रीवाय शूलिने ॥ ५६ ॥ अमोघाय मृगाक्षाय प्रवरायुधयोधिने अर्हाय चैव शुद्धाय क्षयाय क्रथनायच॥५७॥ दुर्वारणाय शुक्राय ब्रह्मणेब्रह्मचारिणे। ईशानायाप्रमेयाय नियन्त्रे चीरवाससे ॥ ५८ ॥ तपोरत्ताय पिङ्गाय व्रतिने कृतिवाससे। कुमारपित्रे त्र्यक्षाय प्रवरायुधयोधिने ॥ ५९ ॥ प्रपन्नार्त्तिविनाशाय ब्रह्मद्विट्संघघातिने, वनस्पतीनां पतये नराणां पतये नमः ॥६०॥ गवाञ्च पतये नित्यं यज्ञानां पतये नमः ॥६१॥ नमोस्तु ते ससैन्याय त्र्यम्बकायामितौजसे। मनोवाक्कर्मभिर्देव त्वां प्रपन्नान् भजस्वनः ॥ ६२ ॥ ततः प्रसन्नो भगवान् स्वागतेनाभिनन्द्यतान् । प्रोवाच ब्रवेतु वश्रासो सूत किं

किस निमित्त आयेहो तब तो शिवजीकी आज्ञापाकर वहसब देवता नियत चित्तता से तप नियमों में नियत होकर सनातन वेदको पढ़तेहुये शिवजी की स्तुति करनेलगे ॥ ५४ ॥

नमोदेवाधिदेवायधन्विनेऽथातिमन्यवे । प्रजापतिमखघ्नायप्रजापतिभिरीड्यते ॥ ५५ ॥
नमोस्तुतायस्तुत्यायस्तूयमानायशम्भवे। विलोहितायरुद्रायनीलग्रीवायशूलिने ॥ ५६ ॥
अमोघायमृगाक्षायप्रवरायुधयोधिने । अर्हायचैवशुद्धायक्षयायक्राथनायच ॥ ५७ ॥
दुर्वारणायशुक्रायब्रह्मणेब्रह्मचारिणे । ईशानायाप्रमेयायनियन्त्रेचीरवाससे ॥ ५८ ॥
तपोरत्तायपिंगायव्रतिनेकृतिवाससे । कुमारपित्रेत्र्यक्षायप्रवरायुधयोधिने । ५९ ॥
प्रपन्नार्त्तिविनाशायब्रह्मद्विट्संघघातिने । वनस्पतीनांपतयेनराणांपतयेनमः ॥ ६० ॥
गवांचपतयेनित्यंयज्ञानांपतयेनमः । नमोस्तुतेससैन्यायत्र्यम्बकायामितौजसे ॥ ६१ ॥
नमोवाक्कर्मभिर्देवत्वांप्रपन्नान्भजस्वनः ॥ ६२ ॥

तब प्रसन्न होकर शिवजीने उनका स्वागत किया और कहा कि बतलाओ

Shiv. Then smiling slowly, Shiv asked the purpose of their mission and they began to adore him as follows:—"We adore you, lord of gods, bowyer, wrathful, destroyer of Daksh's sacrifice, adored by the lords of the world. Salutations to thee that art always praised, worthy of praise, Shambhu, red-coloured, Rudra, blue-throat, Shuli, Amogh, deer-eyed, warrior god, invincible, holy, destroyer, Durvaran, Shukra, Brahman, Brahmcharin. Ishan, immeasurable, controller, robed in tatters, engaged in penances, tawny, observant of vows, father of Kumur, three-eyed, great warrior, refuge of the distressed, destroyer of the foes of Brahmans, lord of trees, men, cows and sacrifices. Salutations to thee leader of troops, three-eyed, of immense energy. We salute thee in thought, word and deed, be kind to us." Pleased with these adorations, Shiv welcomed them, saying, "Say, what

करदाणि वः ॥ ६३ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि त्रिपुराख्याने त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

दुर्योधन उवाच पितृदेवर्षिसंघेभ्योभये दत्ते महात्मना । सत्कृत्य शङ्करं प्राह लोकहितं वचः ॥१॥ तवातिसर्गात् सर्वेश प्राजापत्यमिदं पदम । मयाधितिष्ठता दत्तो दानवेभ्यो महान् वरः ॥ २ ॥ तानतिक्रान्तमर्य्यादान्नान्यः संहर्त्तमर्हति । त्वामृत भूत भव्येश त्वं ह्येषां प्रत्यरिर्वधे ॥ ३ ॥ स त्वं देव प्रपन्नानां याचताञ्च दिवौकसाम । कुरु प्रसादं देवेश दानवान् जहि शूलधृक् ॥ ४ ॥ त्वत्प्रसादाज्जगत् सर्वं सुखमेधतुः

तुम्हारे लिये क्याकरें ६३ ॥

अध्याय ॥ ३४ ॥

दुर्योधन बोले कि पितृदेवता और ऋषियोंके समूहोंको शिवजीने निर्भयता दी उस निर्भयताके देनेपर ब्रह्माजी शिवजीकी प्रशंसाकरके यहलोकोंका हितकारी वचन बोले । १ । हे देवताओं केईश्वर आपकेदियेहुये प्रजापतिके पदपर वर्त्त-मानहोकर मैंने दैत्योंको बड़ाभारी वरदानदियाथा । २ । उनमर्य्यादा उल्लंघन करने-वाले असुरोंके मारनेको आपके सिवाय किसीको सामर्थ्य नहीं है हे भूत भविष्यके स्वामी आपही उनके मारनेको विरोधी शत्रुहो । ३ । हे देवेश्वर शंकर देवता तुम शरणागत आनेवाले और प्रार्थना करनेवाले देवताओं के ऊपर कृपाकरो और दानव लोगोंकोमारो । ४ । हे बड़ाईदेनेवाले आपकी कृपासेही सबसंसार वृद्धि

we are to do for you." 63.

CHAPTER XXXIV

Duryodhan said, "The pitris, gods and rishis were freed from fear by Shiv. At this Brahma praised him and said these words for the benefit of the world; "Being installed by you on the post of a protector of the world, I gave the Daityas a powerful boon. None except you can now destroy those breakers of rules. You only can be their formidable foe, lord of the Past, Present and Future. Be kind to the gods who come to seek refuge of thee, lord of gods; Shankar, and slay the Danavas. The world grows by your grace and you are the refuge of

बलवत्तरः । महादेव इति ख्यातस्ततः प्रभृति शङ्करः ॥ १३ ॥ ततोऽब्रवीन्महादेवो धनु
र्बाणधरस्त्वहम् । हनिष्यामि रथेनाजौ तान् रिपून् वो दिवौकसः ॥ १४ ॥ ते
यूयं मे रथश्चैव धनुर्बाणं तथैव च । पश्यध्वं यावदद्यैतान् पातयामि महीतले ॥ १५ ॥
देवा ऊचुः । मूर्तीःसर्वाः समाधाय त्रैलोक्यस्य ततस्ततः । रथं ते कल्पयिष्यामो देवेश्वर
महौजसम् ॥ १६ ॥ तथैव बुद्ध्या विहितं विश्वकर्मकृतं महत् । ततो विबुधशार्दूलास्तं
रथं समकल्पयन् ॥ १७ ॥ विष्णुं सोमं हुताशञ्च तस्येषुं समकल्पयन् । शृङ्गमग्निर्ब
भूवास्य भल्लः सोमो विशाम्पते ॥ १८ ॥ कुडलश्चाभवद्विष्णुस्तस्मिन्निषुवरे तदा ।
बन्धुरं पृथिवीं देवीं विशालपुरमालिनीम् ॥ १९ ॥ सपर्वतवनद्वीपां चक्रुर्भूतधरां तदा
मन्दरः पर्वतश्चाक्षं जंघा तस्य महानदी ॥ २० ॥ दिशश्च प्रदिशश्चैव परिवारो रथस्य

होगये ।१२। अर्थात् शिवजी उनके आधेबलसे सबसे अधिक बलवान होगये तभीसे शिवजीका महादेवनाम प्रसिद्धहुआ । १३ । इसके पीछे महादेवजी बोले कि हे देवताओ मैं धनुषबाण धारीहूं और युद्ध भूमिमें रथकी सवारीके द्वारा तुम्हारे उनशत्रुओंको मारूंगा । १४ । इसहेतुसे तुममेरे रथ और धनुष बाणको विचारकरके तबतक खोजो जबतक कि उनशत्रुओं को पृथ्वीपर न गिराऊं । १५ । देवता बोले कि हे देवेश्वर हम जहां तहांसे तीनोंलोकोंका सबतेज इकट्ठा करके उससे आपके प्रकाशमान रथको तैयार करेंगे । १६ । फिरजैसा कि बुद्धिके अनुसार बतायागया वैसाही विश्वकर्माजीने शुभ और उत्तम रथको तैयारकिया तदनन्तर उन उत्तम देवताओंने उस बनेहुये दिव्य रथको अच्छेप्रकार से अलंकृत किया । १७ । विष्णु जी चन्द्रमा और अग्नि देवता यहतीनों तो शिवजी के बाणमें कल्पितहुये अग्नि श्रृंगहुआ और चन्द्रमा भल्लहुआ । १८ । और विष्णुजी उस उत्तम बाणमें कुंतल हुये और बड़े पुरोंकी धारण करनेवाली पृथ्वीदेवी शिवजी का रथ बनी वह पृथ्वी पर्वत वा द्वीपों से युक्त होकर अखिलजीवों की धारण करनेवाली थी उस समय मन्दराचल पर्वत अक्षहुआ और उसकी जंघा महानदी गंगा हुई ।२०। तब दिशा

---

their strength, so that he became the most powerful and from that time he is known as Maheshwar. Then Shiv said to the gods." I shall slay your enemies with bow and arrow from a car. You must search me out a car with a bow and arrow so that I may bring down your enemies." 15. The gods promised to prepare for him a car from all the glorious things of the world. Vishwakarma made him a car worthy of the occasion. The gods decked the divine car. Vishnu, Chandra and Agni entered the arrow of Shiv. Angni formed the staff; Chandra formed the dart and Vishnu the point of that arrow. The Earth, with her cities, became Shiva's car. The Earth with her mountains, lands and innumerable creatures, formed the car. Mandar hill was made its axle and the great river Ganga was made its *jangha*. 20. The

यष्टिं विपत् कृत्वा स्थापयामास गोवृषम ॥३७॥ ब्रह्मदण्डः कालदण्डो रुद्रदण्डस्तथा ज्वरः। परिस्कन्दा रथस्यासन् सर्वतोदिशमुद्यताः॥ ३८ ॥ अथर्वाङ्गिरसावास्तां चक्ररक्षौ महात्मनः। ऋग्वेदः सामवेदश्च पुराणश्च पुरः सराः॥ ३९ ॥ इतिहासयजुर्वेदौ पृष्ठरक्षौ बभूवतुः। दिव्या वाचश्च विद्याश्च परिपार्श्वचराः स्थिताः॥ ४० ॥ स्तोत्रादयश्च राजेन्द्र वषट्कारस्तथैव च। ओङ्कारश्च मुखे राजन्नतिशोभाकरोभवत् ॥ ४१ ॥ विचित्रमृतुभिः षड्भिः कृत्वा संवत् सरं धनुः। छायामेवात्मनश्चक्रे धनुर्ज्यामक्षयां रणे॥ ४२ ॥ कालो हि भगवान्रुद्रस्तस्य संवत्सरो धनुः। तस्माद्रौद्री कालरात्रिर्ज्या कृता धनुषोजरा॥ ४३ ॥ इषुश्चाप्यभवद्विष्णुर्ज्वलनः सोम एव च। अग्नीषोमं जगत् कृत्स्नं वैष्णवञ्चोच्यते जगत्॥ ४४ ॥ विष्णुश्चात्मा भगवतो भवस्यामिततेजसः। तस्माद्धनुर्ज्या संस्पर्शं न विषेहुर्हरस्य ते ॥ ४५ ॥ तस्मिन् शरे तिग्मन्युर्मुमो

शङ्करजी ने अपने अस्त्रशस्त्रोंको उस रथपर रक्खा और आकाशको ध्वजाकी यष्टिबनाके नन्दीगण को उसपर नियत किया। ३७। ब्रह्मदण्ड कालदण्ड रुद्रदण्ड और तप यह चारों सब दिशाओं से युक्त रथके ओर पासके रक्षकहुये। ३८। अथर्वा और अङ्गिरस उसमहात्माके रथचक्रोंके रक्षकहुये ऋग्वेद सामवेद और पुराण यह सब आगे चलनेवाले हुये। ३९। इतिहास और यजुर्वेद पीछे के रक्षक हुये और दिव्यवाणी और विद्या यह रथके चारों ओर नियत हुये। ४०। हे राजेन्द्र स्तोत्रादिक वषट्कार और प्रणव यह मुख में शोभा करनेवाले हुये। ४१। और छओं ऋतुओं समेत वर्ष के अन्तको विचित्र धनुष करके अपने सम्मुख अविनाशी छायारूप सावित्र को युद्धमें धनुषकी प्रत्यंचा बनाई। ४२। वेगवान रुद्रजी कालरूपहुये और उनका धनुष संवत्सर हुआ इस हेतुसे रौद्री कालरात्रीको धनुषकी प्रत्यंचा बनाया। ४३। विष्णु अग्नि और चन्द्रमाभी बाणरूपहुये यह सब जगत् अग्निषोम नाम दो रूपवाला वैष्णव कहा जाताहै। ४४। और विष्णुजी उस भगवान् महातेजस्वी शिवजी की आत्मा हैं इस कारण से दानवोंने शिवजीके धनुष

The rods of Brahm, Kal, Rudra and Fever protected the wheels on all sides Atharva and Angiras protected the wheels and Rigved and Samved, with the Puranas, led the way. Itihas and Yajurved protected from behind, and celestial language and knowledge surrounded the car. 40. Stotras and Vashatkar, with Pranav stood in the van. Making a bow of the year and six seasons, he made immortal Savitri its bowstring. Rudra assumed the form of Death, his bow consisted of the year, and the night of Death was made into the bowstring. Vishnu, Agni and Chandra became the arrow and therefore the world of Vishnu, is said to consist of Agni and Som. Vishnu is the soul of Rudra and therefore the Danavas could not bear the

चापिषं प्रभुः । भृग्वङ्गिरोमन्युभवं क्रोधाग्निमतिदुःसहम् ॥ ४६ ॥ स नील
लोहितो धूम्रः कृत्तिवासा भयङ्करः । आदित्यायुतसंघातस्तेजोज्वालावृतोज्वलन्
॥ ४७ ॥ दुश्च्यावच्यावनो जेता हन्ता ब्रह्मद्विषां हरः । नित्यं त्राता च हन्ता च धर्मा
धर्माश्रितान्नरान् ॥ ४८ ॥ प्रमाथिभिर्भीमबलैर्भीमरूपैर्मनोजवैः । विभाति भगवान्
स्थाणुस्तैरेवात्मगुणैर्वृतः ॥ ४९ ॥ तस्याङ्गानि समाश्रित्य स्थितं विश्वमिदं जगत् ।
जङ्गमाजङ्गमं राजन् । शुशुभेऽद्भुतदर्शनम् ॥ ५० ॥ दृष्ट्वा तन्तु रथं युक्तं कवची स
शरासनी । बाणमादाय तं दिव्यं सोमविष्ण्वग्निसम्भवम् ॥ ५१ ॥ ततः राजंस्तदा
देवाः कल्पयाञ्चक्रिरे प्रभोः । पुण्यगन्धवहं राजन् श्वसनं देवसत्तमम् ॥ ५२ ॥ तमा
स्थाय महादेवस्त्रासयन् दैवतान्यपि । आरोहत्तदा यत्तः कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥ ५३ ॥ तमा

की मरपंचाके स्पर्शको न सहा । ४५ । ईश्वरने भृगु वा अंगिरा ऋषि के क्रोध से उत्पन्न बड़ी कठिनतासे सहनेके योग्य तेजसंकल्पवाले असह्य क्रोधाग्नि को उसबाण में लगाया ।४६। और नीललोहित धूम्रवर्ण दिगम्बर भयकारी दशहजार सूर्य के समान प्रकाशों से संयुक्त ज्वलित तेजको । ४७ । कठिनतासे गिरने के योग्य राक्षसों का संहार करनेवाला और ब्राह्मणों के मारनेवाले शत्रुओं का नाश करनेवाला सदैव धर्म में नियत मनुष्यों की रक्षा करनेवाला और अधर्मी लोगों का संहार कर्त्ताथा । ४८ । शत्रुओं के मथन करनेवाले भयानक वल और रूप चित्त के समान शीघ्रगामी इन अपने गुणों से युक्त भगवान शिवजी प्रकाश मान हुये । ४९ । यह जड़ चैतन्य रूप विश्व उन शिवजी के अंगों में शरण रूप होकर अपूर्व दर्शनवाला शोभायमान हुआ । ५० । वह धनुषधारी शिवजी उस तैयार हुये रथको देखकर और चन्द्रमा विष्णु और अग्नि से उत्पन्न होने वाले उसबाणको लेकर नियत हुये । ५१ । हे भ्रू राजा शल्य तब देवताओं ने उसके पीछे चलनेवाले देवताओं में श्रेष्ठ वायुको पवित्र गन्धियों का पहुंचानेवाला विचार किया । ५२ । तब सावधान शिवजी देवताओंको भी भयभीत करते हुये पृथ्वी को कंपायमान करके उस रथपर सवार हुये । ५३ । उस रथपर सवार

touch of Shiva's bowstring. 45. Ishwar (Shiv) put the unbearable fire of Angira's wrath into that arrow. The blue-red, smoke-coloured, dreadful Digambar, brilliant like a myriad suns, destroyer of invincible rakshases and enemies of Brahmans, protector of virtuous men and destroyer of sinners, swift like the mind, Shiv shone gloriously with his qualities. Under the protection of Shiv, the world, consisting of movables and immovables, looked wonderfully glorious. 50. Shiv the wielder of bow, finding the car ready, mounted it, with the arrow composed of Som, Vishnu and Agni. Then the gods asked Vayu the best of gods to blow a fragrant breeze. Wise Shiv then mounted the car terrifying even the gods and shaking the Earth. The crowds of gods,

रंवक्षुं देवेशं तुष्टुवुः परमर्षयः । गन्धर्वा देवसंघाश्च तथैवाप्सरसांगणाः ॥५४॥ ब्रह्मर्षि
भिस्तूयमानो वन्द्यमानश्च वन्दिभिः । तथैवाप्सरसांवृन्दैर्नृत्यद्भिर्नृत्यकोविदैः ॥५५॥ स
शोभमानो वरदः खड्गी बाणी शरासनी । हसन्निवाब्रवीद्देवान् सारथिः को भवि
ष्यति ॥ ५६ ॥ तमब्रुवन् देवगणा यं भवान् संनियोक्ष्यते । स भविष्यति देवेश सार
थिस्ते न संशयः ॥ ५७॥ तानब्रवीत् पुनर्देवो मत्तः श्रेष्ठतरो हि यः । तं सारथिं कुरुध्वं
मे स्वयं सञ्चिन्त्य मा चिरम् ॥ ५८ ॥ एतच्छ्रुत्वा ततो देवा वाक्यमुक्तं महात्मना ।
गत्वा पितामहं देवाः प्रसाद्यं वचोऽब्रुवन् ॥ ५९ ॥ यथा त्वत्कथितं देव त्रिदशारिवि
निग्रहे । तथा च कृतमस्माभिः प्रसन्नो नो वृषध्वजः ॥ ६० ॥ रथश्च विहितोऽस्माभि
र्विचित्रायुधसंवृतः । सारथिं न जानीमः कः स्यात्तस्मिन्रथोत्तमे ॥ ६१ ॥ तस्माद्वि
धीयतां कश्चित् सारथिर्देवसत्तमः । सफलां तां गिरं देव कर्तुमर्हसि नो विभो ॥ ६२॥

होनेके अभिलाषी देवताओं के ईश्वर शिवजी को परमऋषि गन्धर्व देवगण और
अप्सराओं के गणों ने स्तुतिमान किया । ५४ । महाऋषियों से स्तुतिमान और
बन्दी जनों से प्रतिष्ठित और नृत्य विद्यामें कुशल नाचनेवाली अप्सराओं से
शोभायमान । ५५ । खड्ग बाण और धनुषधारी वरदाता शिवजी देवताओं से
बोले कि हमारा सारथी कौनहोगा । ५६ । तब देवगणों ने कहा कि हे देवेश आप
जिसको आज्ञा देंगे वही निस्सन्देह आपका सारथीहोगा । ५७ । फिर शिवजीने
कहा कि जो मुझसे श्रेष्ठतम होय उसको तुम अच्छीरीति से विचारकर शीघ्रही
मेरा सारथी बनाओ विलम्ब न करो । ५८ । इसके पीछे शिवजी के इस वचन
को सुनकर देवतालोग ब्रह्माजी के समीप पहुँच बहुत प्रसन्न करके यह वचन
बोले । ५९ । कि हे देवता असुरों के मारने में जो २आपने कहा वहसब हमनेकिया
और शिवजी हमपर प्रसन्न हैं । ६० । हमने विचित्र शस्त्रों से युक्त रथ को तैयार
किया है हम नहीं जानते हैं कि उस उत्तम रथमें सारथी कौन होगा । ६१ । हे
देवोत्तम इसहेतु से आपही किसी सारथी को विचार कीजिये हे समर्थ देवता
हमारे इस वचनके सफल करने को आपही समर्थ हैं । ६२ । हे भगवन् तुमनेपूर्व

rishis, gandharvas and apsaras adored Shiv the lord of gods at the time of riding the car, Adored by divine sages and eulogised by bards, with well-trained *apsaras dancing round*, *Shiv the boon-giver*, armed with sword, arrow and bow, said to the gods," Who will drive the car.?"56 The gods replied, "Lord of gods, it rests with your pleasure to appoint a driver to your car." Then Shiv directed them to select without delay a driver that should be superior to him. At this the gods went to Brahma and said," We have acted upon your directions to secure the destruction of the asurs, and Shiv is kind to us, 60. We have *got ready a car furnished with curious weapons, but we* donot know who will drive it. Choose a driver to it, best of gods, You alone are

एवमस्मासु हि पुरा भगवन्नुक्तवानसि । हितं कर्त्तास्मि भवतामिति तत् कर्त्तुमर्हसि ॥ ६३ ॥ स देवयुक्तो रथसत्तमो नो दुराधरो द्रावणः शात्रवाणाम् ॥ ६४ ॥ पिनाकपाणिर्विहितोऽत्र योद्धा विभीषयन् दानवानुद्यतोऽसौ ॥ ६५॥ तथैव वेदाश्चतुरो हयाग्र्या धरा सशैला च रथो महात्मनः ॥ ६६ ॥ नक्षत्रवंशानुगतो वरूथी हरो योद्धा सारथिर्नाभिलक्ष्यः ॥ ६७ ॥ तत्र सारथिरेष्टव्यः सर्वैरेतैर्विशेषवान् । तत्प्रतिष्ठो रथो देव हयो योद्धा तथैव च ॥ ६८ ॥ कवचानि सशस्त्राणि कार्मुकं च पितामह । त्वामृते सारथिं तत्र नान्यं पश्यामहे वयम् ॥ ६९ ॥ त्वं हि सर्वगुणैर्युक्तो देवतेभ्योऽधिकः प्रभो । स रथं तूर्णमारुह्य संयच्छ परमान् हयान् ॥ ७० ॥ जयाय त्रिदशेशानां वधाय त्रिदशद्विषाम् ॥ ७१ ॥ इति ते शिरसा गत्वा त्रिलोकेशं पितामहम् । देवाः प्रसादयामासुः सारथ्या-

---

समय में लोगों से ऐसा कहाहै कि मैं तुमलोगों का हित करूंगा उसको आप करने के योग्य हैं । ६३ । हे देव तब वह रथियों में श्रेष्ठ कठिनता से सहने के योग्य शत्रुलोगों का भगानेवाला पिनाक धनुषधारी हमारे अनुकूल युद्ध करनेवाला विचार कियागया वह दानवों को भयभीत करता हुआ वर्त्तमान है । ६५ । उसी प्रकार चारों वेद यही चारों उत्तम घोड़ेहुये और पर्वतों समेत पृथ्वी रथहुई नक्षत्र उसके शोभादेनेवाले और शिवजी युद्धकर्त्ता बने हैं परन्तु सारथी जानने के योग्यहै । ६७ । इन सबसे अधिक तेज बलवाला सारथी चाहिये हे देव रथ घोड़े समेत लड़नेवाला देवता नियत है । ६८ । और हे पितामहजी कवच धनुष और शस्त्रभी तैयार हैं परन्तु उनका सारथी आपकेसिवाय दूसरा हम नहीं देखते हैं । ६९ । हे प्रभु आपही सब गुणोंसे सम्पन्न देवतासे अधिकहो सोतुम शीघ्रही उत्तम रथपर सवारहोकर घोड़ोंकी बाग पकड़ो आपको देवताओं के विजय और असुरों के लिये ऐसा करना उचित है ।७१। यह कहकर उन देवताओंने तीनोंलोकों के ईश्वर

---

capable of granting this request of ours. You have already promised to do us good. Be pleased now to grant our request. That best of warriors, unbearable destroyer of foes, wielder of Pinak and terror of the Danavas, is ready to fight for us. The four Vedas are the good steeds; the Earth, with her mountains, is the car; the stars adorn it, and Shiv is the warrior; but we donot know the driver. He should possess greater energy and strength than all of them. The warrior god, with the car and horses, is ready. The armour, bow and other weapons are ready, but we we see no driver better than you. You are endued with all the good qualities. You may be pleased to mount the car at once to hold the reigns of the horses. 70. You must do this to conquer and destroy the asurs," Having said this, they bowed down to Brahma and requested him to become a driver to the

येति न श्रुतम् ॥ ७३ ॥ पितामह उवाच । नात्र किञ्चिन्मृषा वाक्यं यदुक्तं त्रिदिवौ
कसः । संयच्छामि हयानेषु युध्यतो वै कपर्दिनः ॥ ७४ ॥ ततः स भगवान्देवो लोक
स्रष्टा पितामहः । सारथ्ये कल्पितो देवैरीशानस्य महात्मनः ॥ ७५ ॥ तस्मिन्नारोहति
क्षिप्रं स्यन्दने लोकपूजिते । शिरोभिरगमन् भूमिं ते हया वातरंहसः ॥ ७६ ॥ आरुह्य
भगवान्देवो दीप्यमानः स्वतेजसा । अभीषून् हि प्रतोदञ्च सञ्जग्राह पितामहः ॥ ७७ ॥
तत उत्थाप्य भगवान् तान् हयाननिलोपमान् । बभाषे च तदा स्थाणुमारोहेति सुरो
त्तमम् ॥ ७८ ॥ ततस्तमिषुमादाय विष्णुसोमाग्निसम्भवम् । आरुरोह तदा स्थाणुर्ध
नुषा कम्पयन् परान् ॥ ७९ ॥ तमारूढन्तु देवेशं तुष्टुवुः परमर्षयः । गन्धर्वा देवस
ङ्घाश्च तथैवाप्सरसां गणाः ॥ ८० ॥ स शोभमानो वरदः खड्गी बाणी शरासनी ।
प्रदीपयन्रथे तस्थौ त्रींल्लोकान् स्वेन तेजसा ॥ ८१ ॥ ततो भूयोऽब्रवीद्देवो देवानिन्द्रपुरो

ब्रह्माजी को शिरसे दण्डवतकरी और उनको सारथीके बनने निमित्त प्रसन्नकिया
।७३।ब्रह्माजी बोले हे देवताओं तुमने जो कहाहै उसमें कुछभी मिथ्या नहींहै अबमें
युद्धकर्ता शिवजी के घोड़ोंको थांभताहूं । ७४ । यहकहकर वह संसारके स्वामी
ब्रह्माजी देवताओं की प्रार्थना से सारथी नियत हुये । ७५ । इन लोकेश ब्रह्माजी
के रथपर सवार होनेपर उनवायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंने शिरोंसे पृथ्वीको प्राप्त
किया । ७६ । अपने तेजसेही प्रकाशमान भगवान् ब्रह्माजीने रथपर चढ़कर बाग-
डोरों समेत चाबुकको हाथमें लिया । ७७ । उसके पीछे देवताओंमें श्रेष्ठ भगवान्
ब्रह्माजी उन वायुके समान घोड़ोंको उठाकर शिवजी से बोले कि रथपर सवार
हूजिये । ७८ । इसके अनन्तर शिवजी विष्णु अग्नि और चन्द्रमा से उत्पन्न
होनेवाले उसबाणको लेकर धनुषसे शत्रुओं को कंपाते सवारहुये । ७९ । परम
ऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओं के गणोंने उस रथारूढ़ देवेशकी स्तुतिकरी
। ८० । वह शोभायमान खड्ग धनुषबाण धारी वरदाता अपने तेजसे तीनोंलोकों
को अत्यन्त प्रकाश करतेहुये रथपर सवारहुये । ८१ । और इन्द्रादिक देवताओंसे

car. Brahma said, "There is no untruth in what you say; I shall hold the reigns of Shiva's horses." Having said this, Brahma the lord of the world was appointed the driver of the car, at the request of the gods, 75. At his mounting the car, the horses bowed down their heads to the ground. Shining in his glory, Bhagwan Brahma mounted the car and held the reigns and whip. Then Brahma raised the horses and asked Shiv to mount the car. Then Shiv, taking the arrow composed of Vishnu, Agni and Som, and shaking the enemies with his bow, mounted the car. The great rishis, Gandharvas and apsaras adored Shiv as he mounted the car. 80. With his beautiful sword, illumining the three worlds with his glory, he mounted the car. Then Shiv said to Indra and other gods, "Have no doubt in

गमात् । न हन्यादिति कर्त्तव्यो न शोको वः कथञ्चन ॥ ८२ ॥ हतानीत्येव जानीत बाणेनानेन चासुरान् । ते देवाः सत्यमित्याहुर्निहता इति चाब्रुवन् ॥ ८३ ॥ न च तद्वचनं मिथ्या यदाह भगवान् प्रभुः ॥ ८४ ॥ इति सञ्चिन्त्य वै देवाः परां तुष्टिमवाप्नुवन् । ततः प्रयातो देवेशः सर्वैर्देवगणैर्वृतः ॥ ८५ ॥ रथेन महता राजन्नुपमा यस्य नास्ति ह ॥८६॥ स्वैश्च पारिषदैर्देवः पूज्यमानो महायशाः । नृत्यद्भिरपरैश्चैव मांसभक्ष्यैर्दुरासदैः । धावमानैः समन्ताच्च तर्जमानैः परस्परम् ॥ ८७ ॥ ऋषयश्च महाभागास्तपोयुक्ता महागुणाः । आशंसुर्विजयं देवा महादेवस्य सर्वशः ॥ ८८ ॥ एवं प्रयाते वरदे लोकानामभयङ्करे । तुष्टमासीज्जगत् सर्वं देवताश्च नरोत्तम ॥ ८९ ॥ ऋषयस्तत्र देवेशं स्तुवन्तो बहुभिः स्तवैः । तेजश्चास्य वर्धयन्तो राजन्नासन् पुनः पुनः ॥ ९० ॥ गन्धर्वाणां सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च । वादयन्ति प्रयाणेऽस्य वाद्यानि विविधानि च ॥ ९१ ॥ ततोऽधिरूढे वरदे प्रयाते चासुरान् प्रति । साधुसाध्विति विश्वेशः स्मय

फ़िर कहतेहुये कि यह तुमसन्देह न करना कि शत्रु नहींमारे जायँगे । ८२ । इसबाणसे तुम असुरोंको मराहुआही जानना उन देवताओंनेकहा कि सत्यहै असुर मारेगये । ८३ । यह वचन जो आपके मुखसे निकलाहै वह मिथ्या नहींहै । ८४ । देवतालोग ऐसा विचारकर बड़े प्रसन्नहुये उसके पीछे सब देवगणों समेत देवेश शिवजी । ८५ । उसबड़ेरथमें बैठेहुयेचले जिसके समान कोईनहीं ।८६। वहबड़ायशस्वी देवता मांसभक्षी अजेय दौड़ते नाचते और चारोंओर से धमकाते हुये अपने पार्षदोंसे शोभित था । ८७ । महाबाहु तपोमूर्त्ति बड़े गुणवान् सब ऋषि और देवगणोंने महादेवजी की विजयकी आशाकरी । ८८ । हे नरोत्तम इसरीति से लोकों को निर्भय करनेवाले लोकेशके चलनेपर सब संसारी जीवों समेत देवतालोग प्रसन्न हुये । ८९ । वहां ऋषिलोग बहुतसे स्तोत्रोंसे शिवजीकी स्तुति को करतेहुये बारम्बार इनके तेजकी वृद्धिकरनेवाले हुये । ९० । उनके यात्राकरनेपर प्रयुतों अर्बुदोंगन्धर्वोंने नानाप्रकारके बाजोंको बजाया । ९१ । इसकेपीछे वरदाता ब्रह्माजी

---

our being able to slay the foes. With this arrow the enemies cannot scape death." The gods said, "It is true." and believed the foes to be already slain. Having thought so, the gods were much pleased. Then Shiv the lord of gods, went on in the matchless car. 86. The glorious god was followed by carnivorous, invincible warriors, who went on dancing, frisking and terrifying. The great ascetic rishis and gods were hopeful of Shiva's victory. When the lord of the world was thus *going on*, the creatures of the world and gods were much pleased. The rishis adored him with hymns and augmented his glory. 90. Millions of gandharvas sounded musical instruments at his departure. When Brahma the boongiver had mounted the car and was going towards the Danavas, Shiv

मानं स्मयभाषत ॥ ९१ ॥ याहि देवयतो दैत्याश्चोदयाश्वानतन्द्रितः । पश्य बाह्वोर्बलं
मेऽद्य निघ्नतः शात्रवान् रणे ॥ ९२ ॥ ततोऽश्वांश्चोदयामास मनोमारुतरंहसः । येन तत्त्रि
पुरं राजन् दैत्यदानवरक्षितम् ॥ ९४ ॥ पिबद्भिरिव चाकाशं तैर्हयैर्लोकपूजितैः ।
जगाम भगवान् क्षिप्रं जयाय त्रिदिवौकसाम् ॥९५॥ प्रयाते रथमास्थाय त्रिपुराभिमुखे
भवे । ननाद सुमहानादं वृषभः पूरयन् दिशः ॥ ९६ ॥ वृषभस्यास्य निनदं श्रुत्वा
भयकरं महत् । विनाशमगमंस्तत्र तारकाः सुरशत्रवः ॥ ९७ ॥ अपरेऽवस्थितास्तत्र
युद्धायाभिमुखास्तदा । ततः स्थाणुर्महाराज शूलधृक् क्रोधमूर्छितः । ९८ ॥ त्रस्तानि
सर्वभूतानि त्रैलोक्यं भूः प्रकम्पते । निमित्तानि च घोराणि तत्रासन् संदधतः शरम्
॥ ९९ ॥ तस्मिन् सोमाग्निविष्णूनां क्षोभेण ब्रह्मरुद्रयोः । स रथो धनुषः क्षोभाद्वशीद

के रथपर सवारहोने और असुरोंकीओरको चलनेपर मन्दमुसकान करतेहुये शिवजी बोले कि धन्यहै धन्यहै । ९२ । हे देवता उधरको चलो जिधर दैत्यलोगहैं और सावधानहोकर तुम घोड़ोंको तेजकरो अब तुम मुझ शत्रुहन्तके युद्ध में भुजबलको देखो । ९३ । हे राजा इसके पीछे मन और वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ोंको तीक्ष्ण किया और जिस ओर को दैत्य दानवोंसे संयुक्त वह त्रिपुरथा उधरकोही उचका मुखकिया । ९४ । भगवान् शिवजी देवताओंकी विजय के निमित्त लोक पूजित इन आकाशके पान करनेवाले घोड़ोंके द्वारा बड़ी शीघ्रता से चले । ९५ । शिवजीको रथपर सवार होकर त्रिपुरके सम्मुख चलने के समय नन्दीगण दिशाओं को शब्दायमान करताहुआ बड़ेवेगसे गर्जा । ९६ । वहां देवताओंके शत्रु तारक दैत्य इन नन्दीगणके महाभयकारी शब्दको सुनकर नाशको प्राप्तहुये । ९७ । तब दूसरे असुरलोग वहां युद्धके निमित्त सम्मुखगये हे महाराज इसके पीछे त्रिशूल धारी शिवजी क्रोध में ज्वलितहुये । ९८ । तब सब जीवधारी और तीनों लोक भयभीतहुये और पृथ्वी कम्पायमान हुई और धनुषके चढ़ातेही बड़े अशकुन हुये । ९९ । उस समय चन्द्रमा अग्नि विष्णु समेत जो धनुषथा उसके वेगसे और

welcomed him with a smile, saying, "Proceed towards the Danavas; make your horses run fast and see the prowess of my arms in destroying the foes. Then the horses, swift like the mind or wind, were made to run fast in the direction of the three cities of the Danavas. For the victory of the gods, Shiv worthy of respect by all the world, was carried by horses which on account of their swiftness, seemed to touch the sky. 95. At the time of Shiva's departure to conquer the three cities of gods, Nandi bellowed with a terrible noise. The Tarak Daityas died on hearing the dreadful bellowing of Nandi. Then other Daityas faced Shiv in battle, and the rage of Shiv the wielder of trident was kindled. All the creatures were terrified; the Earth shook and great omens occurred when Shiv drew his bow. From

ञवसीदति ॥ १०० ॥ ततो नारायणस्तस्माच्छरभागाद्विनिःसृतः । वृषरूपं समास्थाय उज्जहार महारथम् ॥ १०१ ॥ सीदमाने रथे चैव नर्दमानेषु शत्रुषु । स संभ्रमात्तु भगवान् नादं चक्रे महाबलः ॥ १०२ ॥ वृषभस्यास्थितो मूर्द्धिन हयपृष्ठे च मानद । तदा स भगवान् रुद्रो निरैक्षद्दानवं पुरम् ॥ १०३ ॥ वृषभस्यास्थितो रुद्रो हयस्य च नरोत्तम । स्तनांस्तदाऽग्रसत् खुरांश्चैव द्विधाकरोत् ॥ १०४ ॥ ततःप्रभृति भद्रं ते गवां द्वैधीकृताः खुराः । हयानाञ्च स्तनाराजंस्तदाप्रभृति नाभवन् ॥ १०५ ॥ पीड़ितानां बलवता रुद्रेणाद्भुतकर्मणा । तथाधिज्यं धनुः कृत्वा सर्वः सन्धाय तं शरम् ॥ १०६ ॥ युक्त्वा पाशुपतास्त्रेण त्रिपुरं समचिन्तयत् । तस्मिन् स्थिते महाराज रुद्रे विधृतकार्मुके ॥ १०७ ॥ पुराणि तेन कालेन जग्मुरेकतां तदा । एकीभावं गते चैव त्रिपुरत्वमुपागते । बभूव तुमुलो हर्षो देवतानां महात्मनाम् ॥ १०८ ॥ ततो देव

ब्रह्माजी औररुद्र केकोपसे इसके पीछे वहरथ अत्यन्त पीड़ाको पाताथा।१००।नारायण जी उस बाणके भागनेसे बाहर निकले और वृषभरूप होकर उसबड़े रथको उठा लिया । १०१ । रथ के पीड़ित होने और शत्रु ओं के गर्जने पर उन महाबली शिव जीने भांती से शब्द दिया । १०२ । इसके पीछेबैलके मस्तक और घोड़ों के पीछे नियत होनेवाले रथ पर बैठकर उन शिवजी ने दानवों के पुर को देखा । १०३ । हे नरोत्तम तब बैल और घोड़ों पर नियत रुद्रजी ने उनके स्तनों का नाशकरके खुरों के दाटुकड़े कर दिये । १०४ । हे राजन् शल्य आपका भलाहो तभी से गो और और बैलों के पैर बीचमें सेफटे और उसी समय से घोड़ों के स्तन नहीं हुये । १०५ । अद्भुतकर्मा महाबली रुद्रजी ने उनको पीड़ेकरते अपने धनुष को संधान बाणको चढ़ाके पाशुपत अस्त्रसे संयुक्त करके त्रिपुरको अच्छेप्रकारसे चिन्तनकिया हेमहाराज उसधनुषधारी शिवजीके नियतहोने ।१०७। पर दैवकी प्रेरणा से समय के आनेपर वह तीनों पुर एकत्वभाव को प्राप्तहुये फिर उन त्रिपुर नामकी एकदशा होनेपर देवताओं को बड़ी प्रसन्नताहुई । १०८ ।

the velocity of the dow, made up of Som, Agni, and Vishnu and the rage of Brahma and Rudra, the car was much shaken. 100. Then Narayan came out of the arrow and lifted up the car in the shape of an ox. At the shaking of the car and the roaring of the enemies, valiant Shiv roared loud and looked at the cities of the Danavas from his car driven by the ox and the horses. He then cut off the teets of the horses and split the hoofs of the oxen. May you be blessed Shalya? from that time cows and oxen have cloven hoofs and horses have no teets. 105. Mighty Rudra then put the arrow to his bow, and having united with it the Pashupat weapon, he aimed well at the three cities. In the meantime the three cities came together to the great joy of the gods. Then adoring Shiv, the gods, Maharshis and Sidhas cried out, "Victory,"

शल्य विनिश्चित्य मा भूदत्र विचारणा ॥ १२६ ॥ भार्गवाणां कुले जातो जमदग्नि-
र्महातपाः । तस्य रामेतिविख्यातः पुत्रस्तेजोगुणान्वितः ॥ १२७ ॥ स तीव्रं तप
आस्थाय प्रसादयितवान् भवम् । अस्त्रहेतोः प्रसन्नात्मा नियतः संयतेन्द्रियः ॥१२८॥
तस्य तुष्टो महादेवो भक्त्या च प्रशमेन च हृद्गतञ्चास्य विज्ञाय दर्शयामास शङ्करः
॥ १२९ ॥ महादेव उवाच । राम तुष्टोऽस्मि भद्रन्ते विदितं मे तवेप्सितम् ।
कुरुष्व पूतमात्मानं सर्वमेतदवाप्स्यसि ॥ १३० ॥ दास्यामि ते तदस्त्राणि यद
पूतो भविष्यसि । अपात्रमसमर्थञ्च दहन्त्यस्त्राणि भार्गव ॥ १३१ ॥ इत्युक्तो
जामदग्न्यस्तु देवदेवेन शूलिना । प्रत्युवाच महात्मानं शिरसावनतः प्रभुम ॥१३२॥
यदा जानाति देवेशः पार्श्वं मामस्त्रधारणे । तदा शुश्रूषतेऽस्त्राणि भवान्मे दातुमर्हति
॥ १३३ ॥ दुर्योधन उवाच । ततः स तपसा चैव दमेन नियमेन च ।
पूजोपहारबलिभिर्होममन्त्रपुरस्कृतैः ॥ १३४ ॥ आराधयितवान् सर्वं बहून् वर्ष

विचार मतकरो । १२६ । भार्गववंश में बड़े यशस्वी जमदग्नि जी उत्पन्नहुये उनके पुत्र तेजगुण में पूर्ण परशुरामजी प्रसिद्धहुये । १२७ । उस प्रसन्नचित्त सावधान जितेन्द्री ने अस्त्रों के निमित्त उत्तम व्रतोंको धारण करके शिवजीको प्रसन्न किया । १२८ । उसकी भक्ति और शान्त चित्तता से प्रसन्न होकर शिवजी ने उनको दर्शन दिया । १२९ । और परशुराम से कहा हे परशुरामजी तुम्हाराकल्याणहो मैं प्रसन्न हूं और तुम्हारे चित्तकी इच्छाभी मुझको विदित हुई तुम अपनी आत्मा को पवित्रकरो सब अभीष्टों को पावोगे । १३० । और जब तुम पवित्र होगे तभी तुमको अस्त्र दूंगा क्योंकि यह अस्त्र अपात्र और असमर्थ को भस्म करते हैं । १३१ । शिवजी के इस वचनको सुनकर परशुराम जी ने देव देव को प्रणाम करके उत्तर दिया । १३२ । हे देवेश जब आप मुझको पवित्र और पात्र जानें तभी अस्त्र दीजियेगा । १३३ । दुर्योधन ने कहा कि हे शल्य इसके पीछे तप शांति और नियम पूर्वक पूजा भेंट और बलिप्रदान होम और मुख्य मन्त्रों के द्वारा । १३४ । बहुत वर्षोंतक शिवजी की आराधना करी तब उन महादेवजी ने महात्मा

---

of Bhrigus, and Parashuram of great glory and virtues was his son. The latter, with a control of mind observed good vows and gratified Shiv. Being pleased with his devotion and patience, Shiv appeared to him and said," May you be blessed, Parashuram, I am pleased with you and know the desire of your heart. Purify yourself and you will gain the object of your desire.130. I shall give you weapons when you are purfied, for those weapons burn the unworthy and incapable." Having heard the words of Shiv, Parashuram replied with respect," You may be pleased to give me the weapons when you find me purified and worthy." Then with asceticism, observances, libations, sacrifices and hymns, he adored Shiv for many years. Shiv

गर्भास्तदा प्रसन्नश्च महादेवो भार्गवस्य महात्मनः ॥ १३५ ॥ अब्रवीत्तस्य बहुशो
गुणान् देव्याः समीपतः । भक्तिमानेष सततं मयि रामो दृढव्रतः ॥ १३६ ॥ एवं
तस्य गुणान् प्रीतो बहुशोऽकथयत् प्रभुः । देवतानां पितॄणाञ्च समक्षमरिसूदन
॥ १३७ ॥ एतस्मिन्नेव कालेतु दैत्या ह्यासन् महाबलाः । तैस्तदा दर्पमोहान्धैर
बध्यन्त दिवौकसः ॥ १३८ ॥ ततः सम्भूय विबुधास्तान् हन्तु कृतनिश्चयाः । चक्रुः
शत्रुवधे यत्नं न शेकुर्जेतुमेव तान् ॥ १३९ ॥ अभिगम्य ततो देवा महेश्वरमुमाप-
तिम् । प्रासादयन्त ते भक्त्या जहि शत्रुगणानिति ॥ ४० ॥ प्रतिज्ञाय ततो दवो
देवतानां रिपुक्षयम् । रामं भार्गवमाहूय सोऽभ्यभाषत शङ्करः ॥ १४१ ॥ रुद्र
उवाच । रिपून् भार्गव देवानां जहि सर्वान् समागतान् । लोकानां हितकामार्थं मम
प्रीत्यर्थं तथैव च । एवमुक्तः प्रत्युवाच त्र्यम्बकं वरदं प्रभुम् ॥ १४२ ॥ रामउवाच

भार्गवजी की । १३५ । प्रशंसा देवी पार्वतीजी के सम्मुख वर्णन की कि यह दृढ
व्रत रखने वाले परशुराम सदैव मुझमें भक्ति रखने वाले हैं । १३६ । हे शत्रुहन्ता
इस प्रकार से प्रसन्न होकर शिवजी ने देवता और पितरों के सम्मुख उन परशु-
रामजी के बहुत से गुणों का वर्णन किया । १३७ । इसके पीछे उसीसमय में
दैत्यलोग बड़े पराक्रमी हुये और प्रबल और अहंकारी राक्षसों से देवतालोग
पराजित होकर घायल हुये । १३८ । तब उनके मारने में निश्चय करने वाले
देवताओं ने इकट्ठे होकर उन शत्रुओं के मारने का उपाय किया परन्तु उनके
मारने को समर्थ नहीं हुये । १३९ । इसके पीछे देवताओं ने उमापति महेश्वरजी
को भक्तिसे प्रसन्न किया और प्रार्थनाकरी कि शत्रुओं के समूहों को मारिये १४०
इसके अनन्तर वह देवेश शिवजी देवसंतापी दैत्योंके नाश करनेका प्रणकर के
भार्गव परशुरामजी को बुलाकर यह वचन बोले । १४१ । कि हे भार्गव देवताओं
के सब आयहुये शत्रुओं को हमारी प्रीति और लोकों के हितके अर्थ तुममारो
। १४२ । यह वचन सुनकर परशुरामजी ने शिवजी से प्रार्थनाकरी कि हे देवेश
युद्ध में दुर्म्मद अस्त्रवेत्ता दानवों के मारने को अस्त्रों से अभिज्ञ कैसे मारनेको समर्थ

praised the Bhargav in the presence of Uma, saying," Parashuram, is observing hard vows and is truly devoted to me." In the presence of gods and pitars, Shiv spoke highly of Parashuram's virtues. In the meantime the Daityas became powerful and the gods were vanquished by powerful and proud rakshases. Then the gods assembled to slay the Daityas, but were unable to do so. The gods then pleased Shiv with their devotion and requested him to slay the foes. Shiv promised to slay the enemies of gods and calling Parashuram in his presence, said," For my love and the good of the world, slay the enemies of gods, O Bhargav." 142. On hearing this, Parashuram said to Shiv, "Being unacquainted with the use of weapons, how

का शक्तिर्मम देवेश अकृतास्त्रस्य संयुगे।निहन्तुं दानवान्सर्वान्कृतास्त्रान् युद्धदुर्मदान् ॥ १४३ ॥महेश्वर उवाच । गच्छ त्वं मदनुज्ञातो निहनिष्यसि दानवान्। विजित्य च रिपून् सर्वान् गुणान् प्राप्स्यसि पुष्कलान् ॥ १४४ ॥ एतच्छ्रुत्वा च वचनं प्रतिगृह्य च सर्वशः । रामः कृतस्वस्त्ययनः प्रययौ दानवान् प्रति ॥ १४५ ॥ अब्रवीद्दर्पसंयुक्तान् मदर्पबलान्वितान् । मम युद्धं प्रयच्छध्वं दैत्या युद्धमदोत्कटाः ॥१४६॥ प्रेषितो देवदेवेन वो विजेतुं महासुरान् ॥ १४७ ॥ इत्युक्ता भार्गवेणाथ दैत्या योद्धुं प्रचक्रमुः । स तान्निहत्य समरे दैत्यान् भार्गवनन्दनः । वज्राशनिसमस्पर्शैः प्रहारैरेव भार्गवः ॥ १४८ ॥ स दानवैः क्षततनुर्जामदग्न्यो द्विजोत्तमः । संस्पृष्टः स्थाणुना सद्यो निर्व्रणः समजायत ॥ १४९ ॥ प्रीतश्च भगवान्देवः कर्मणा तेन तस्य वै । वरान् प्रादाद्बहुविधान् भार्गवाय महात्मने ॥ १५० ॥ उक्तश्च देवदेवेन प्रीतियुक्तेन शूलिना ॥ ५१ ॥ निपाताच्च शस्त्राणां शरीरे याभवद्रुजा । तया ते मानुषं कर्म

होसक्ता है । १४३ । महेश्वरजी ने कहा कि मेरी आज्ञासे तुम वहां जावो शत्रुओं को मारोगे और शत्रुओं के समूहों को विजय करके बड़े गुणोंको प्राप्त होगे।१४४। इस वचनको सुनकर परशुरामजी सब बातोंको अंगीकार करके स्वस्तिवाचन पूर्वक दानवों की ओर चले । १४५ । वहां जाकर बड़े अहंकारी और बली उन दानवोंसे बोले कि हे युद्धदुर्मद दैत्यलोगो मुझसे युद्ध करो ।१४६। हे महाअसुरलोगो मुझको महादेवजी ने तुम्हारे विजय करनेको भेजाहै । १४७ । फिर भार्गवजी के इस बचन को सुनकर दैत्यों ने युद्ध किया उससमय भार्गवनन्दन ने वज्र और बिजली के समान स्पर्शवाले प्रहारों से युद्धमें उन दैत्योंको मारकर शिवजीका दर्शन किया फिर जमदग्निजी के पुत्र ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजी दानवों के हाथसे घायल शरीर शिवजी के हाथके स्पर्शसे घातजन्य पीड़ासे रहितहुये और शिवजी महाराज ने इनके उस कर्मसे अत्यन्त प्रसन्न । १५० । होकर इन महात्माभार्गवजीको बहुतसे वरदान दिये और उन प्रसन्नमूर्त्ति शिवजी ने परशुरामजी से कहा

shall I be able to slay the Danavas who are so skilful in fighting," "Go there by my order," said Shiv "and you will slay them. You will gain great fame by conquering the foes." Parashuram consented to the proposal of Shiv and went towards the Danavas with benedictions. 145. On reaching there, he said to the Danavas, "Proud Daityas! fight with me. I am sent by Shiv to conquer you." On hearing the words of the Bhargav, the Daityas attacked him. He slew ahe Daityas with his powerful weapons and saw Shiv. Jamadagni's son, the best of Brahmans, with his body wounded by the weapons of the Danavas, became sound again at a touch of Shiva's hand. Much pleased with his deeds of prowess, Shiv gave him many boons, and joyfully said to him, "The wounds in your body, made

व्यपोढं भृगुनन्दन। गृहाणास्त्राणि दिव्यानि मत्सकाशात् यथेप्सितम॥१५२॥दुर्योधन
उवाच । ततोऽस्त्राणि समस्तानि वरांश्च मनसेप्सितान्। लब्ध्वा बहुविधान्रामः प्रणम्य
शिरसा शिवम् ॥ १५३ ॥ अनुज्ञां प्राप्य देवेशाज्जगाम स महातपाः । एवमेतत्
पुरावृत्तं तदा कथितवानृषिः ॥ १५४ ॥ भार्गवोऽप्यददत् सर्वं धनुर्वेदं महात्मने।
कर्णाय पुरुषव्याघ्र सुप्रीतेनान्तरात्मना । वृजिनं हि भवेत् किञ्चिद्यदि कर्णस्य
पार्थिव ॥ १५५ ॥नास्मै ह्यस्त्राणि दिव्यानि प्रादास्यद्भृगुनन्दनः। नापि सूतकुले जातं
कर्णं मन्ये कथञ्चन ॥ १५६ ॥ देवपुत्रमहं मन्ये क्षत्रियाणां कुलोद्भवम। विसृष्टमव-
बोधार्थं कुलस्येति मतिर्मम ॥ १५७ ॥ सर्वथा न ह्ययं शल्य कर्णः सूतकुलोद्भवः।
सकुण्डलं सकवचं दीर्घबाहुंमहारथम । कथमादित्यसदृशं मृगी व्याघ्रं
जनिष्यति॥ १५८ ॥ यथा ह्यस्य भुजौ पीनौ नागराजकरो पमौ। वक्षः पश्य

। १५१ । कि शस्त्रों के आघातसे यह तेरे शरीर में पीड़ा हुई उस पीड़ा से हे
भृगुनन्दन तेरामानुषीकर्म नष्ट होकर दिव्यकर्म प्राप्तहुआ अब तुम अपनी इच्छा
नुसार मुझसे दिव्य अस्त्रोंको लो । १५२ । दुर्योधनने कहाकि इसकेपीछे पर-
शुरातजी सब अस्त्रों को और अनेक अभीष्ट वरोंको पाकर शिरसे दण्डवत् कर
शिवजी की आज्ञा लेकर वहांसे चलेगये । १५३ । तब ऋषिने इसरीति से प्राचीन
वृत्तान्त को वर्णन किया भार्गवजी ने भी अत्यन्य प्रसन्न अन्तःकरण के साथ
दिव्य धनुर्वेद महात्मा कर्णको दिया है पुरुषोत्तम राजा शल्य जो कर्णमें कुछ
पापहोता तो भृगुनन्दनजी काहे को दिव्यअस्त्र उसको देते और मैं भी उसको
सूतके वंशमें उत्पन्न नहीं समझताहूँ । १५६ । मैं इसको क्षत्रियोंके वंशमें उत्पन्न
देवकुमार जानताहूँ और यह कुलके गुप्तकरनेको आज्ञा दिया गयाहै यहमेरामत है
। १५७ । हे शल्ययह कर्ण सब प्रकार से क्षत्री है और सूत के वंशमें नहीं
उत्पन्न हुआहै कुण्डल और कवचधारी महाबाहु महारथी । १५८। सूर्यके समान
तेजस्वी सिंहको मृगी कैसे उत्पन्न करसक्ती है । १५८ । और जैसे कि इसके

by weapons, have raised you from humanity to godhood. You will now receive from me the celestial weapons." 152. Duryodhan continued, "Having got the weapons and boons, Parashuram bowed down to Shiv and returned by his permission, The rishi told us this ancient history. Parashuram was kind to Karan and gave his celestial weapons. Karan could not get those celestial weapons from him, if he were not worthy of them. I donot think him to be born of a Sut. I believe that he is descended from some god in a kshatrya family and forbidden to disclose his parentage. He is a kshatrya from top to toe. He can not be a Sut. How can a warrior, with armour and ear-rings, glorious like the Sun, a lion, be brought forth by a

विशालञ्च सर्वशत्रु निवर्हणम् ॥ १५९ न त्वेव प्राकृतः कश्चित् कर्णो वैकर्त्तनो नृप । महात्मा ह्येष राजेन्द्र रामशिष्यः प्रतापवान् । १६० ॥

इति श्री कर्णपर्वणि त्रिपुरवधोपाख्याने चतुर्स्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

दुर्य्योधन उवाच । एवं स भगवान् देवः सर्वलोकपितामहः । सारथ्यमकरोत्तत्र ब्रह्मा रुद्रोऽभवद्रथी ॥ १ ॥ रथिनोऽभ्यधिको वीरः कर्त्तव्यो रथसारथिः । तस्मात्त्वं पुरुषव्याघ्र नियच्छ तुरगान् युधि ॥ २ ॥ यथा देवगणैस्तत्र वृतो यत्नात् पितामहः । तथाऽस्माभिर्भवान् यत्नात् कर्णादभ्यधिको वृतः ॥ ३ ॥ यथा देवैर्महाराज ईश्वराद

दोनों भुजा गजराजकी सूंड़के समान मोटी हैं उसीप्रकार हे शत्रुहन्ता इसकी बड़ी छाती कोभी देखो । १५९ । यह सूर्य का पुत्र धर्म्मात्मा कर्ण कोई प्रकृतिपुरुष नहीं है हे राजेन्द्र यह कर्ण महात्मा परशुरामजी का प्रतापवान् और महा पराक्रमी शिष्य है ॥ १६० ॥

अध्याय ॥ ३५ ॥

दुर्य्योधनबोले कि इसरीतिसे वहां सब लोकोंके पितामह भगवान् ब्रह्माजी ने सारथ्य कर्मकिया और श्रीरुद्रजी रथीहुये । १ । हे वीर रथी से अधिक रथ का सारथी करना योग्य है हे पुरुषोत्तम इसहेतुसे तुम युद्धमें घोड़ोंको थांभो जैसे कि शिवजीके निमित्त देवगणोंने भगवान् ब्रह्माजी को सारथ्य कर्मकेलिये प्रार्थनाकरी उसीप्रकार हम लोगोंकी ओरसे कर्णसेभी अधिक आप प्रार्थनाकिये गयेही । ३ ।

hand? How like the trunk of an elephant are his two arms? Look at his broad chest! Karan, the son of Surya, cannot be a vulgar man. He is the glorious disciple of Parashurama." 160.

CHAPTER XXXV

Duryodhan said, "Brahma acted as a driver to Rudra's car. A driver can be superior to a warrior. You may drive Karan's car. We request you to drive Karan's car as the gods had requested Brahma to drive that of Rudra, thinking you to be better than Karan. Being superior to Karan we ask you to drive the car as Brahma, who is superior to Rudra, was asked to do the work. Hold the

धिको वृतः । तथा भवानपि क्षिप्रं रुद्रस्येव पितामहः । नियच्छ तुरगान् युद्धे राधेयस्य महाद्युते ॥ ४ ॥ शल्य उवाच । महाप्येतन्नरश्रेष्ठ बहुशोऽमरसिंहयो । कथ्यमानं श्रुतं दिव्यमाख्यानमतिमानुषम् ॥५॥ यथा च चक्रे सारथ्यं भवस्य प्रपितामहः । यथासुराश्च निहता इषुणैकेन भारत । कृष्णस्य चापि विदितं सर्वमेतत् पुरा ह्यभूत् ॥ ७ ॥ यथा पितामहो जज्ञे भगवान् सारथिस्तदा । अनागतमतिक्रान्तं वेद कृष्णोऽपि तत्त्वतः ॥ ८ ॥ एतदर्थं विदित्वा तु सारथ्यमुपजग्मिवान् । स्वायम्भुरिव रुद्रस्य कृष्णः पार्थस्य भारत ॥ ९ ॥ यदि हन्याच्च कौन्तेयं सूतपुत्र कथञ्चन दृष्ट्वा विनिहतं पार्थं स्वयं योत्स्यति केशवः ॥ १० ॥ शङ्खचक्रगदापाणिर्धक्ष्यते वाहिनीम् । न चापि तस्य क्रुद्धस्य वार्ष्णेयस्य महात्मनः । स्थास्यते प्रत्यनीकेषु काश्चिदत्र नृपस्तव । ११ ॥ सञ्जय उवाच । तंतथा भाषमाणन्तु मद्रराजमरिन्दमः । प्रत्युवाच महाबाहुरदीनात्मा सुतस्तव । ११ ॥ मावमंस्था महाबाहो कर्णं वैकर्तनं

जैसे कि देवताओंकी ओरसे शिवजी से बड़ेभी ब्रह्माजी प्रार्थना कियेगये हैंमहाराज उसी प्रकार आपभी कर्णसे अधिक होनेके कारण प्रार्थनाकिये गये हैं जैसे कि ब्रह्माजीने रुद्रजीके घोड़ोंको थांभा उसीप्रकार आपभी बड़े तेजस्वी कर्णके घोड़ों को थांभों । ४ । शल्य बोले कि हे नरोत्तम मैंने भी इन नरोत्तम श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनके मुखसे कहीहुई इस उत्तम अद्भुत कथाको बहुधा सुनाहै । ५ । जैसे कि ब्रह्माजीने शिवजीके सारथ्य कर्मको किया है और जैसे कि शिवजीने एकही बाण से सब असुरोंको मारा । ६ । हे भरतवंशी यह भूतकाल का वृत्तान्त श्रीकृष्णजी का भी नाना हुआहै जैसे कि भगवान् ब्रह्माजी सारथी हुये उसी प्रकार श्रीकृष्ण जी भी भूतभविष्य के वृत्तान्तोंको जानतेहैं । ८ । इसी हेतुसे जैसे कि जान बूझकर भगवान् ब्रह्माजीने शिवजी के सारथ्यकर्मको किया है भरतवंशी उसी प्रकार श्रीकृष्णजीने अर्ज्जुनकी रथवानी अङ्गीकारकरी । ९ । जोकर्ण किसी दशा में भी अर्ज्जुनको मारडालेगा तो अर्ज्जुनके मरनेकेपीछे आप श्रीकृष्णजी युद्ध करेंगे । १० । शङ्ख चक्र गदाके हाथमें धारण करनेवाले श्रीकृष्णजी तेरी सेनाको भस्मकरेंगे उससमय उन क्रोधयुक्त श्रीकृष्णजी के सम्मुख तेरी सेनामें से कोई भी युद्ध करनेको समर्थ न होगा । ११ । संजय बोले कि शत्रुओं का विजय करने

reins of Karan's horses as Brahma held those of Rudra." Shalya replied, "I too have heard this wonderful account from Vasudev. 5. Shree Krishn knows the old history of how Brahma drove Rudra's car and also how Rudra destroyed the Asurs with one arrow. Shri Krishn too, drives Arjun's car as Brahma drove that of Rudra.' If Karan kill Arjun, Shri Krishn himself will fight. 10. Armed "with conch, discus and mace, he will destroy your army and then none will be able to withstand him," ' Sanjay said, "Having heard this from Shalya, your valiant son Duryodhan said, "You should not think

रणे। सर्वशस्त्रभृतां श्रेष्ठं सर्वशास्त्रार्थपारगम ॥ १२ ॥ यस्य ज्यातलनिर्घोषं श्रुत्वा भयकरं महत्। पाण्डवेयानि सैन्यानि विद्रवन्ति दिशो दश ॥ १३ ॥ प्रत्यक्षं ते महाबाहो यथा रात्रौ घटोत्कचः। मायाशतविकुर्वाणो हतो मायापुरस्कृतः ॥ १४ ॥ न चातिष्ठत बीभत्सुः प्रत्यनीके कथञ्चन। एतांश्च दिवसान् भयेन महता वृतः ॥ १५ ॥ भीमसेनश्च बलवान् धनुष्कोट्याभिचोदितः। उक्तश्चासंज्ञया राजन् मूढ औदरिकेति च ॥ १६ ॥ माद्रीपुत्रौ तथा शूरौ येन जित्वा महारणे। कमप्यर्थं पुरस्कृत्य न हतौ युधि मारिष ॥ १७ ॥ येन वृष्णिप्रवीरस्तु सात्यकिः सात्वतां वरः। निर्जित्य समरे वीरो विरथश्च तथा कृतः ॥ १८ ॥ सृञ्जयाश्चेतरे सर्वे धृष्टद्युम्नपुरोगमाः।

वाला महासाहसी आपका पुत्र दुर्य्योधन ऐसे वचन कहनेवाले शल्य से बोला हे महाबाहु तुम सूर्य्यके पुत्र महा पराक्रमी कर्णका अपमान मतकरो जो कर्ण कि सब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ होकर सर्व शास्त्रोंका पारगामी है । १२ । जिस के धनुषकी भयानक प्रत्यञ्चाके शब्दको सुनकर पांडवी सेना दशोंदिशाओं को भागती है । १३ । हे महाबाहु आपके नेत्रोंकेही सम्मुख हुआथा जैसेकिवह मायावी सैकड़ों मायाओंका प्रकट करनेवाला घटोत्कच रातमें मारागया । १४ । और अर्ज्जुन किसी प्रकारसे भी सेनाके सम्मुख नहीं हुआ बड़ा भयभीत अर्ज्जुन इस सबदिनों में कभी सम्मुख नहींहुआ । १५ । और पराक्रमी भीमसेन धनुषकी कोटि से प्रेरित किया गया हेराजा बहुतसे लोगोंके सामने कर्णने कहाथा कि तू पेटपालन करने वालोंके समान अज्ञान है । १६ । इसी प्रकार बड़ेयुद्ध में माद्रीके पुत्र शूरवीर नकुल और सहदेवको विजय करके किसी प्रयोजनसे युद्धमें नहीं मारा । १७ । हे श्रेष्ठ जिस कर्णने वाष्णियों में बड़ावीर और यादवोंमें श्रेष्ठ महा पराक्रमी सात्यकि को युद्धमें विजयकरके रथसे विहीन करदिया । १८ । और उसी मन्दमुसकान वालेने सृंजियों को आदिलेकर अन्य सब योद्धाओंको जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था उनको वारम्बार युद्धमें विजय किया उस महारथी पराक्रमी कर्णको पाण्डव लोग

so meanly of Karan, the best of warriors, so clever in the use of weapons and terror of the Pandav armies. You yourself have seen how he slew Ghatotkach in the night battle. Arjun has always been hiding himself from his encounter. Valiant Bhim was struck with the bow and, in the presence of many warriors, he called Bhim a fool and glutton. 16. Nakul and Sahadev too, were defeated by Karan, but somehow their lives were spared. He conquered Satyaki and deprived him of the use of car and often defeated the Panchals led by Dhrishtadyumn. How can the Pandavas defeat him? He can slay Indra the wielder of vajra in battle and you are the best of warriors. There is no warrior to match you You are a dart to slay foes. You are a

असह्यास्त्रविजितां सेख्ये स्मयमानेन संयुगे ॥ १९ ॥ तंकथं पाण्डवा युद्धे विजेष्य-
न्ति महारथम ॥ २० ॥ यो हन्यात् समरे क्रुद्धो वज्रहस्तं पुरन्दरम ॥ २१ ॥ त्वञ्च
सर्वास्त्रविद्वीर सर्वविद्यासु पारगः ॥ २२ ॥ बाहुवीर्येणते तुल्यः पृथिव्यां नास्ति
कश्चन । त्वं शल्यभूतः शत्रूणामविषह्यः पराक्रमे ॥ २३ ॥ अतस्त्वमुच्यसे
राजन् शल्य इत्यरिसूदन । तव बाहुबलं प्राप्य न शेकुः सर्वसात्वताः ॥ २४ ॥
तव बाहुबलाद्राजन् किन्तु कृष्णो बलाधिकः । यथा हि कृष्णेन बलं धार्यं वै फाल्गुने
हते । तथा कर्णात्ययीभावे त्वया धार्यं महद्बलम ॥ २५ ॥ किमर्थं समरे सैन्यं
वासुदेवो न्यवारयत् । किमर्थञ्च भवान् सैन्यं न हनिष्यति मारिष ॥ २६ ॥ त्वत्
कृते पदवीं गन्तुमिच्छेयं युधि मारिष । सोदराणाञ्च वीराणां सर्वेषाञ्च महीक्षिताम्
॥ २७ ॥ शल्य उवाच । यन्मां ब्रवीषि गान्धारे अग्रे सैन्यस्य मानद । विशिष्टं
देवकी पुत्रात् प्रीतिमानस्म्यहं त्वयि ॥ २८ ॥ एष सारथ्यमातिष्ठे राधेयस्य

युद्धमें कैसे विजय करसक्ते हैं । २० । जो क्रोधयुक्त होकर युद्ध में वज्रधारी
इन्द्रको भी मारसक्ताहै और आपसर्वविद्या सम्पन्न महा अस्त्रज्ञ और पंडितहो ।२२।
और पृथ्वीपर आपके भुजबलके समान भी कोई नहीं है तुम शत्रुओं के भल्लरूप
होकर पराक्रममें भी असह्यहो । २३ । हे शत्रुहन्ता राजा शल्य इसीहेतु से आपका
नाम विख्यात है आपके भुजबलको पाकर सब यादव लोग समर्थ नहींहुये । २४
हे राजा श्रीकृष्णजी आपके भुजबल से अधिक हैं जैसे कि अर्जुन के मरनेपर
श्रीकृष्णजी से सेना रक्षाके योग्य है उसीप्रकार कर्णके नाश होजानेपर सेना के
लोग आपसे रक्षाके योग्य हैं । २५ । जैसे कि वासुदेवजी युद्धमें सेनाको रोकेंगे
उसीप्रकार आपभी सेनाको अवश्यमारांगे । २६ । आपके कारणसे युद्धमें अग्रणता
प्राप्तकरना चाहताहूं और सब सगे भाई इष्ट मित्र और अन्य सब राजाओं की
अनुगाता चाहताहूं । २७ । शल्यबोला हे प्रशंसा करनेवाले दुर्य्योधन तुम सब
सेनाके समक्ष जो कृष्णजी सेभी अधिक मुझको कहतेहो इस हेतुसे मैं तुमपर
प्रसन्नहूं अब मैं प्रसन्नतासे अर्जुनसे लड़नेवाले यशस्वी कर्णके साथ उसके रथपर
इसप्रतिज्ञासे सारथी बनताहूं कि मैं जिससमय जो चाहूंगा वहकर्णके विषयमें कहूं

famous warrior and all the Yadavas cannot withstand you except Shri Krishn. You will protect the Kauravas when Karan is no more as Krishn will do in case Arjun is slain.25. Like Shri Krishn you will be able to slay the foes. I wish to win victory by your help. The safety of my brothers and allies depends on you.27. Shalya said, "I am pleased with you, because you say that I am superior to Krishn. I shall, with pleasure, drive Karan's car on condition that I shall say to Karan whatever I like, without having any regard for him." 30. Sanjaya

यशस्विनः । युध्यतः पाण्डवानमेण यथा त्वं वीर मन्यसे ॥ २९ ॥ समर्थश्च हि मे वीर कश्चिद्वैकर्त्तने प्रति । उत्सृजेयं यथाश्रद्धमहं वाचोऽस्य सन्निधौ ॥ ३० ॥ सञ्जय उवाच । तथेति राजन् पुत्रस्ते सह कर्णेन मारिष । अब्रवीन्मद्रराजानं सर्वक्षत्रस्य सन्निधौ ॥ ३१ ॥ सारथ्यस्याभ्युपगमात् शल्येनाश्वासितस्तदा । दुर्योधनस्तदा हृष्टः कर्णं समभिषस्वजे ॥ ३२ ॥ अब्रवीच्च पुनः कर्णं स्तूयमानः सुतस्तव जहि पार्थान्मृधे सर्वान् महेन्द्रो दानवानिव ॥ ३३ ॥ स शल्येनाभ्युपगते हयानां संनियच्छने । कर्णो हृष्टमना भूयो दुर्योधनमभाषत ॥ ३४ ॥ नातिहृष्टमना ह्येष मद्रराजोऽभिभाषते । राजन्मधुरया वाचा पुनरेनं ब्रवीहि वै ॥ ३५ ॥ ततो राजा महाप्राज्ञः सर्वास्त्रकुशलो बली । दुर्योधनोऽब्रवीच्छल्यं मद्रराजं महीपतिम् ॥ ३६ ॥ पूरयन्निव घोषेण मेघगम्भीरया गिरा । शल्य कर्णोऽर्जुनेनाद्य योद्धव्यमिति मन्यते ॥ ३७ ॥ तस्य त्वं पुरुषव्याघ्र नियच्छ तुरगान् युधि । कर्णो हत्वेतरान् सर्वान् फाल्गुनं

दूंगा उसका किसीप्रकारका मान नहीं करूंगा । ३० । संजयबोले हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र तब आपकापुत्र कर्णसमेत यह बोलाकि ऐसाही होय यहकहकर सब क्षत्रियोंकेसमक्षमें । ३१ । शल्यके सारथी होनेसे विश्वासयुक्तहोकर दुर्योधन बड़ी प्रसन्नतासे कर्णसे प्रीतिपूर्वक मिला । ३२ । और बड़ी प्रशंसाकरके कहनेलगा कि युद्धमें तुम सब पाण्डवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र सब दानवोंको मारता है । ३३ । इसके अनन्तर घोड़ोंके हांकनेको शल्यके तैयारहोनेपर प्रसन्नचित्त होकर कर्ण ने दुर्योधन से कहा । ३४ । यह मद्रदेशका राजा अत्यन्त प्रसन्नचित होकर बात नहीं करता है हे राजा आप मीठे वचनों से फिर इसप्रकार से कहो । ३५ । तब महाज्ञानी सर्वशास्त्र और अस्त्रों का वेत्ता पराक्रमी राजा दुर्योधन मद्र देशियों के महाराज से बोला । ३६ । हे शल्य अब कर्ण बादल के समान गिरतेहुये शब्दयुक्त बाणों से युद्धभूमिको पूर्ण करना मानता है कि अर्जुन के साथ युद्ध करना चाहिये । ३७ । हे पुरुषोत्तम आप युद्धमें उसके घोड़ों को थामो कर्ण सब योद्धाओं को मारकर अर्जुनको मारना चाहता है । ३८ । हे राजा मैं वारंवार आपको कर्ण के सारथी बनने के निमित्त अपनी इच्छा से प्रार्थना करताहूं जैसे कि सारथियों में

says that prince Duryodhan and Karan agreed to Shalya's proposal. Being overjoyed by securing Shalya's services as a driver, Duryodhan embraced Karan with great affection and said, " Slay the Pandavas as Indra does the Danavas." Seeing Shalya ready to drive the horses, Karan said to Duryodhan that the prince of Madra did not appear pleased and that he should be made a little more cheerful by sweet words.35. Wise and learned Duryodhan then said to the king of Madra; " Karan will fill the field of battle with his arrows like clouds, and shall fight with Arjun. Hold the reins of his horses as he desires to slay Arjun and other great warriors. I am again and again request

यन्तुमिच्छसि ॥ ३८ ॥ अस्याभीषुग्रहे राजन् प्रसादे त्वां पुनः पुनः ॥ ३९ ॥ पार्थस्य सचिवः कृष्णो यथाभीषुग्रहो वरः । तथा त्वमपि राधेयं सर्वतः परिपालय ॥ ४० ॥ सञ्जय उवाच । ततः शल्यः परिष्वज्य सुतं ते वाक्यमब्रवीत् । दुर्योधनममित्रघ्नं प्रीतो मद्राधिपस्तदा ॥ ४१ ॥ एवञ्चेन्मन्यसे राजन् गान्धारे प्रियदर्शन । तस्मात्ते यत् प्रियं किञ्चित् तत् सर्वं करवाण्यहम् ॥ ४२ ॥ यत्रास्मि भरतश्रेष्ठ योग्यः कर्मणि कर्हिचित् । तत्र सर्वात्मना युक्तो वक्ष्ये कार्यधुरं तव ॥ ४३ ॥ यत्तु कर्णमहं ब्रूयां हितकामः प्रियाप्रिये । मम तत् क्षमतां सर्वं भवान् कर्णश्च सर्वशः ॥ ४४ ॥ कर्ण उवाच । ईशानस्य यथा ब्रह्मा यथा पार्थस्य केशवः । तथा नित्यं हिते युक्तो मद्रराज भजस्व नः ॥ ४५ ॥ शल्य उवाच । आत्मनिन्दात्मपूजा च परनिन्दा परस्तवः । अनाचरितमार्याणां वृत्तमेतच्चतुर्विधम् ॥ ४६ ॥ यत्तु विद्वन् प्रवक्ष्यामि प्रत्ययार्थमहं तव । आत्मनः स्तवसंयुक्तं तन्निबोध यथा तथम् ॥ ४७ ॥ अहं

जैसे श्रीकृष्णजी अर्जुन के मन्त्री हैं उसी प्रकार आप भी कर्णकी सब ओर से रक्षाकरो । ४० संजय बोले इसकेपीछे प्रसन्नचित्तहो राजाशल्य आपके पुत्र दुर्योधन से बड़े स्नेह से मिलाप करके यह वचन बोला । ४१ । हेगांधारी के पुत्र अपूर्वदर्शन राजा दुर्योधन जो तुम मुझको ऐसा मानतेहो इसहेतु से तेरा जो अभीष्ट है उस सबको मैं करूंगा । ४२ । हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ शत्रुसंतापी मैं जिस जिस कर्म के योग्यहूं और जहां जहां जैसा मैं करसक्ता हूं वहां अपने मन से सर्वात्मा से तेरेकर्म को करूंगा । ४३ । मैं हितका चाहने वाला होकर कर्णसे जोकुछ प्रियवा अप्रिय वार्त्ताकहूं उस वचनको आप और कर्णदोनों सब प्रकारसे सहनेके योग्यहैं । ४४ । कर्णबोला हे राजामद्र जिसप्रकारसे ब्रह्माजी शिवजीके और श्रीकृष्णजी अर्जुन के सारथीहुये उसी प्रकार तुमभी हमारी वृद्धिमें प्रवृत्तहूजिये । ४५ । शल्यने कहा कि अपनीनिन्दा और स्तुति और दूसरे की निन्दा और स्तुति यह चारप्रकारके कर्म अच्छेलोग नहीं करते हैं । ४६ । हे बुद्धिमान् फिरभी मैं तेरे निश्चय होनेके लिये अपनी प्रशंसा से भरेहुये वचनको कहताहूं उसको तुम यथार्थही समझो । ४७ । हे प्रभु मैं मातलिके समान सावधानी व प्रबलकी रथवानी अथवा आगे होनेवालेदोषके जानने और उसके दूरहोने

ing you to drive Karan's car. You will protect Karan in all ways as Shri Krishn does Arjun."40. Sanjaya continued," Then Shalya affectionately embraced your son, saying," Son of Gandhari, Duryodhan, I shall satisfy your desire. Best of Bharats! destroyer of foes! I shall do what lies in my power, with all my heart. But you and Karan must bear patiently what I say to Karan for your good." Karan said," You will drive my car as Brahma drove that of Shiv or as Krishn drives that of Arjun." Shalya said," Virtuous men donot praise or blame themselves and others; but to assure you I speak

शल्यस्य-सारथ्ये योग्यो मातलिवत् प्रभो । अप्रमादप्रयोगाच्च ज्ञानविद्याचिकित्सितैः ॥ ४८ ॥ ततः पार्थेन संग्रामे युध्यमानस्य तेऽनघ । वाहयिष्यामि तुरगान् विज्वरो भवसूतज ॥ ४९ ॥

इति कर्णपर्वणि शल्यस्य कर्णसारथ्यस्वीकारे पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

दुर्य्योधन उवाच । अयं ते कर्ण सारथ्यं मद्रराजः करिष्यति । कृष्णादभ्यधिको यन्ता देवेन्द्रस्येव मातलिः ॥ १ ॥ यथा हरिहयैर्युक्तं संगृह्णाति स मातलिः । शल्यस्तथा तवाद्यायं संयन्ता रथवाजिनाम् ॥ २ ॥ योधे त्वयि रथस्थे च मद्रराजे च सारथौ । रथश्रेष्ठो ध्रुवं संख्ये पार्थानभिभविष्यति ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच ।

के उपायके जानने से और दोषोंके दूर करने की सामर्थ्य रखने से इन्द्रकेसारथी होनेके योग्यहूं । ४८ । हे निष्पाप कर्ण इस हेतुसे युद्धमें अर्ज्जुनसे युद्धकरनेवाले तुझ रथीके साथसारथी होकर तापसे पृथक् घोड़ोंको चलाऊंगा ४९ ॥

अध्याय ३६ ॥

दुर्योधन बोला हे कर्ण यह राजा मद्र तेरा सारथी बनेगा यह तुम्हारा सारथी श्रीकृष्णजी से भी ऐसा अधिक है जिसप्रकार इन्द्रका सारथी मातलि । १ । जैसे कि मातलि हरित घोड़ोंके रथको चलाता है उसी प्रकार यह शल्य भी तेरे रथके घोड़ों को चलावेगा । २ । तुझ युद्धकर्त्ताके रथी होने और राजा मद्रके सारथी होने पर तुम्हाराही उत्तम रथ निश्चय करके पाण्डवों को विजय करेगा । ३ । संजयबोले

in self praise. I am clever like Matali in the knowledge of horses and know how to remove their defects. I am able to do the work of Matali. Being your driver, I shall manage your horses without tiring them out."49.

CHAPTER XXXVI

1 Duryodhan said to Karan, "The king of Madra, who is superior to even Krishn, will drive your car. He is as clever as Matali, the driver of Indra's car. He will drive your horses like Matali. Your car will conquer the Pandavas, when you are the warrior and Shalya

ततो दुर्य्योधनो भूयो मद्रराजं तरस्विनम्।उवाच राजन् संग्रामे युयुत्सुरुपस्थितः॥४॥ कर्णस्य यच्छ संग्रामे मद्रराज हयोत्तमान्। त्वयाभिगुप्तो राधेयो विजेष्यति धनंजयम् ॥ ५ ॥ इत्युक्तो रथमास्थाय तथेति प्राह भारत। ५ । शल्येऽभ्युपगते कर्णः सारथिं सुमनाब्रवीत् । त्वं सूत स्यन्दनं मह्यं कल्पयेत्यसकृत्त्वरन् ॥ ६ ॥ ततो जैत्रं रथवरं गन्धर्वनगरोपमम् । विधिवत् कल्पितं भर्त्रे जयेत्युक्त्वा न्यवेदयत् ॥ ७ ॥ तं रथं रथिनां श्रेष्ठः कर्णोऽभ्यर्च्य यथाविधि । सम्पादितं ब्रह्मविदा पूर्वमेव पुरोधसा ॥ ८ ॥ कृत्वाप्रदक्षिणं यत्नादुपस्थाय च भास्करम्। समीपस्थं मद्रराजमारोह त्वमथाब्रवीत् ॥ ९ ॥ ततः कर्णस्य दुर्धर्षं स्यन्दनप्रवरं महत्। आरुरोह महातेजाः शल्यः सिंह इवाचलम् ॥ १० ॥ ततः शल्यास्थितं दृष्ट्वा कर्णः स्वरथमुत्तमम् । अध्यतिष्ठद्यथाम्भोदं विद्युत्वन्तं दिवाकरः ॥ ११ ॥ तावेकरथ

हे राजा इसके अनन्तर प्रातःकाल होजाने पर राजा दुर्योधन ने उस वेगवान राजा मद्र से फिर कहा । ४ । कि हे राजा मद्र आप अब युद्धमें कर्ण के उत्तम घोड़ों को थामो तुम से रक्षित होकर कर्ण अर्जुन को अवश्य विजय करेगा । ५ । हे भरतवंशी यह वचन सुनकर शल्य ने रथपर नियत होकर कहा कि ऐसाही होगा तब प्रसन्नचित्त कर्ण अपने सारथी शल्य के पास आकर यह वचन बोला कि हे सूत आप मेरे रथको शीघ्र तैयार करो । ६ । उसके पीछे सारथी शल्यने कहा विजयकरो यह शब्द कहकर रथोंमें श्रेष्ठ गंधर्व नगरके समान बुद्धि के अनुसार अलंकृत कल्याणरूप और विजयी रथको बड़ी शीघ्रतासे तैयार करके वर्त्तमानकिया । ७ । उस उत्तम रथको प्रथम तो महारथी कर्ण ने ब्रह्मज्ञानी अपने पुरोहित के द्वारा बुद्धि के अनुसार पूजके परिक्रमाकर विचारपूर्वक सूर्य का उपस्थान करके सम्मुख वर्त्तमान हुये शल्यसे कहा कि आप सवार हूजिये । ९ । इसके पीछे बड़ा तेजस्वी शल्य कर्णके उस अत्यन्त उत्तम बड़े अजेय रथपर ऐसे चढ़ा जैसे कि पर्वत पर सिंह चढ़ताहै । १० । तदनन्तर कर्ण अपने उत्तम रथको शल्य के स्वाधीन देखकर ऐसे सवार हुआ जैसे बिजली से भरे हुये बादलपर सूर्य्य सवार होता है । ११ ।

the driver of your car." Sanjaya said, "Then, in the morning, Duryodhan again said to Shalya, "Hold the reins of Karan's car, king of Madra. Protected by you, Karan is sure to conquer Arjun." At this Shalya mounted the car of Karan, saying, "Let it be so" Then Karan, much pleased, came to Shalya and said, "Prepare my car soon." Shalya said in reply, "*Gain victory.*" Having said this, Shalya brought the well-decked car to Karan, who having properly worshipped the car, prayed with his face towards the Sun. Then he said to Shalya, "Take your seat on the car" Then glorious Shalya took his seat on the great invincible car as a lion over a hill. 10. Seeing his car guided by Shalya, Karan mounted it as the Sun does a

भास्करादित्याग्निसमत्विषौ । अभ्राक्रान्तौ यथा मेघे सूर्याग्नी सहितौ दिवि ॥१२॥ स्तूयमानौ तौ वीरौ तदास्तां द्युतिमत्तमौ । ऋत्विक्सदस्यैरिन्द्राग्नी स्तूयमानाविवाध्वरे ॥ १३ ॥ स शल्यसंगृहीताश्वे रथे कर्णः स्थितोऽभवत् । धनुर्विस्फारयन् घोरं परिवेषीव भास्करः । १४ ॥ आस्थितः स रथश्रेष्ठं कर्णः शररश्मिमान प्रबभौ पुरुषव्याघ्रो मन्दरस्थ इवांशुमान् । १५ ॥ तं रथस्थं महाबाहुं युद्धायामिततेजसम् । दुर्योधनस्तु राधेयमिदं वचनमब्रवीत् ॥ १६ ॥ अकृतं द्रोणभीष्माभ्यां दुष्करं कर्म संयुगे कुरुष्वाधिरथे वीर मिषतां सर्वधन्विनाम ॥ १७ ॥ मनोगतं मम ह्यासीत् भीष्मद्रोणौ महारथौ । अर्जुनं भीमसेनं च निहन्ताराविति ध्रुवम ॥ १८ ॥ ताभ्यां यदकृतं वीर वीरकर्म महामृधे । तत् कर्म कुरु राधेय वज्रपाणिरिवापरः ॥ १९ । गृहाण धर्मराजं वा जहि वा त्वं धनञ्जयम । भीमसेनं च

फिर वह सूर्य और अग्निके समान प्रकाशमान दोनों एक रथपर सवार होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्ग के सूर्य और चन्द्रमा दोनो बादलों में शोभित होवे हैं।१२। उस समय वह महात्मा बड़े तेजस्वी ऐसे दिखाई दिये जैसे कि यज्ञमें ऋत्विज और सदस्यों से स्तुतिमान इन्द्र और अग्नि होते हैं । १३ । फिर वहकर्ण रथपर नियत होगया जिसके घोड़ों को शल्यने पकड़रक्खाथा बाणरूप किरणोंका रखने वाला कर्णवीर धनुषको टंकारता हुआ अपने उत्तम रथपर ऐसे नियत हुआ जिस प्रकार मण्डलयुक्त सूर्य्य नियत होताहै वह पुरुषोत्तम ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन्दराचल पर्वतपर सूर्य नियत होताहै । १५ । फिर शल्य उस महाबाहु रथपर चढ़ेहुये तेजस्वी कर्णसे यहवचन बोला कि हे वीर कर्ण युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी से जो कठिन कर्म्म नहीं कियागया तुम सब धनुषधारियोंके समक्ष में उसको करो । १७ । मेरे चित्तमें यह पूर्ण विश्वास था कि महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य अवश्य अर्जुन और भीमसेनको मारेंगे । १८ । हे वीर उसमहायुद्ध में जो वीरताका कर्म्म उन दोनों से नहींहुआ है कर्ण तुमद्वितीय इन्द्रके समान होकर उसकर्मको करो । १९ । तुम धर्मराजको बांधो अथवा अर्जुनको मारो हे कर्ण

cloud charged with lightning. Both riding the same car like the sun and fire, looked glorious like the Sun and moon of heaven peeping through clouds. The two glorious warriors looked like Indra in the midst of the priests at a sacrifice. Then Karan mounted the car the reins of whose horses were held by Shalya. Having arrows for rays, twanging the bowstring, Karan looked like the sun on mount Mandar. 15. Then Shalya thus spoke to Karan:—"Brave Karan, "You will do deeds such as Bhishm and Drona could not do. I believed that they would slay Bhim and Arjun. Like a *second Indra you will do deeds which they could not do. You may captivate Dharmraj or slay Arjun. You may slay Bhim and the two sons of Madri.*

राधेय माद्रीपुत्रौ यमावपि ॥ २० ॥ जयश्च तेऽस्तु भद्रं ते प्रयाहि पुरुषर्षभ । पाण्डुपुत्रस्य सैन्यानि कुरु सर्वाणि भस्मसात् ॥ २१ ॥ ततस्तूर्यसहस्राणि भेरीणामयुतानि च । वाद्यमानान्यरोचन्त मेघशब्दा यथा दिवि ॥ २२ ॥ प्रतिगृह्य तु तद्वाक्यं रथस्थो रथसत्तमः। अभ्यभाषत राधेयः शल्यं युद्धविशारदम् ॥२३॥ चोदयाश्वान् महाबाहो यावद्धन्मि धनञ्जयम् । भीमसेनं यमौ चोभौ राजानञ्च युधिष्ठिरम् ॥२४॥ अद्य पश्यतु मे शल्य बाहुवीर्य्यं धनञ्जयः । अस्यतः कङ्कपत्राणां सहस्राणि शतानि च ॥ २५ ॥ अद्य क्षेप्स्याम्यहं शल्य शरान् परमतेजनान् । पाण्डवानां विनाशाय दुर्य्योधनजयाय च ॥ २६ ॥ शल्य उवाच । सूतपुत्र कथं नु त्वं पाण्डवानवमन्यसे । सर्वास्त्रज्ञान्महेष्वासान् सर्वानेव महाबलान् ॥ २७ ॥ अनिवर्त्तिनो महाभागान् अजय्यान् सत्यविक्रमान् । अपि सञ्जनयेयुर्ये भयं साक्षात् शतक्रतोः ॥ २८ ॥ यदा

तुम भीमसेनसमेत माद्रीकेपुत्र नकुल और सहदेवको भी मारो ।२०। हेपुरुषोत्तम तुम यात्राकरो तुम्हारा कल्याण है और विजय होगी वहां जाकर पाण्डवों की सब सेनाको भस्मकरो । २१ । इसके पीछे तुरी नामादि हजारों बाजे और भेरी बजाईं उनका शब्द ऐसासुन्दर विदितहुआ जैसेकि स्वर्गमें बादलों के शब्द होतेहैं ।२२। फिर वह महारथी रथमेंबैठा हुआ कर्ण उसके वचनको अंगीकार करके उस युद्धमें अत्यन्त सावधान शल्य से बोला । २३ । हे महाबाहु घोड़ों को तीक्ष्णकरो मैं अर्जुनको मारूंगा और भीमसेन समेत दोनों नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर को मारूंगा । २४ । हे शल्य अब तुम अर्जुनको और मुझ हजारों बाण फेंकने वाले के भुजबलको देखो । २५। अब मैं बड़े प्रकाशित बाणों को पांडवों के नाश और दुर्योधन की विजय के लिये फेंकता हूं शल्य बोला हे सूतके पुत्र तुम इस रीतिसे पांडवों का अपमान करते हो यह पांडव सब अस्त्रशस्त्रों के ज्ञाता बड़े धनुषधारी अतिबली कभी मुख न मोड़नेवाले महाभाग अजेय और सत्यपराक्रमी हैं जो साक्षात् इन्द्रको भी भय के उत्पन्न करने वाले हैं । २८ । हे कर्ण जब वज्रके

20. Proceed Karan, and you will win. Destroy all the army of the Pandavas." Then thousands of musical instruments were sounded and their noise was like that of thunder. Karan believed in Shalya's words and said to Shalya wise in war, "Drive the horses fast; I shall slay Arjun, Bhim, Nakul Sahdev and Yudhishthir. You will now see the strength of my arms in shooting thousands of arrows at Arjun. 25. I am about to shoot my bright arrows to slay the Pandavas and to secure victory to Duryodhan." Shalya said, "Why do you thus insult the Pandavas, son, of Sut! The Pandavas are skilful in the use of all weapons, great archers, unflinching in battle, invincible and of true prowess. They can terrify Indra himself. You will not say so, Karan, when you will hear the sound of the Gandiv.

श्रोष्यसि निर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः । राधेय गाण्डीवस्याजौ तदा नैवं वदिष्यसि ॥ २९ ॥ यदा द्रक्ष्यसि संग्रामे धर्मपुत्रं यमौ तथा । शितैः पृषत्कैः कुर्वाणान् अभ्रच्छायामिवाम्बरे ॥ ३१ ॥ अस्यतः क्षिपतश्चारींल्लघुहस्तान् दुरासदान् । पार्थिवानपि चान्यांस्त्वं तदा नैवं वदिष्यसि ॥ ३२ ॥ सञ्जय उवाच । अनादृत्य तु तद्वाक्यं मद्रराजेन भाषितम् । याहीत्येवाब्रवीत् कर्णो मद्रराजं तरस्विनम् ॥ ३३ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि त्रिपुरवधोपाख्याने चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४

सञ्जय उवाच । दृष्ट्वा कर्णं महेष्वासं युयुत्सुं समवस्थितम् । चुक्रुशुः कुरवः सर्वे हृष्टरूपाः समन्ततः ॥ १ ॥ ततो दुन्दुभिनिर्घोषैर्भेरीणां निनदेन च । बाणशब्दैश्च विविधैर्गर्जितैश्च तरस्विनाम् । निर्ययुस्तावका युद्धे मृत्युं कृत्वा निवर्तनम्

समान गांडीव धनुष के शब्दको सुनोगे तब ऐसा नहीं कहोगे । २९ । जब युद्ध में धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर वा नकुल सहदेव को देखोगे और जब तीक्ष्णबाणों से आकाशको आच्छादित करनेवाले, बाणोंके चलाने वाले हस्तलाघव करने वाले अजय शत्रुओं को अथवा अन्य २ बड़े २ प्रतापी राजाओं को देखोगे तब तुम ऐसे वचन नहीं कहोगे । ३२ । संजय बोले कि इसके पीछे कर्ण राजा मद्रके कहेहुये वचनों को निन्दित करके उस वेगवान् राजा मद्र से कहनेलगा कि अब चलो । ३३ ।

अध्याय ३७ ॥

सञ्जय बोले कि प्रसन्नमूर्त्ति सब कौरव उस बड़े धनुषधारी युद्धाभिलाषी कर्ण को देखकर चारों ओरसे पुकारे । १ । इसके पीछे दुन्दभी और नानाप्रकार के बाणोंके घोड़ोंकी गर्जना समेत शब्दोंको करते आपके युद्धकरनेवाले युद्ध में

You will not say so when you will see Yudhishthir, Nākul, Sahadev, and other invincible warriors, shooting their arrows like clouds." Sanjaya said, "Then Karan disregarding Shalya's words said, "Now drive the car faster." 33.

CHAPTER XXXVII

Sanjaya said, "Then the Kauravas cried with cheer at the sight of Karan. Then raising a tremendous noise with their musical instruments and the neighing of horses, your warriors came out to battle as if against

द्रोणपथा यमाय ॥ २३ ॥ न त्वे वाहं न गमिष्यामिमध्यं तेषां शूराणामिति मां शल्य विद्धि । मित्रद्रोहो मर्षणीयो न मेऽयं त्यक्त्वा प्राणाननुयास्यामि द्रोणम् ॥ २४ ॥ प्राज्ञस्य मूढस्य च जीवितान्ते नास्ति प्रमोक्षोऽन्तकसत्कृतस्य । अतो विद्वन्‌ अभियास्यामि पार्थान् दिष्टं न शक्यं व्यतिवर्तितुं वै ॥ २५ ॥ कल्याणवृत्तिः सततं हि राजन् वैचित्रवीर्यस्य सुतो ममासीत् । तस्यार्थे सिध्यर्थमहं त्यजामि प्रियान् प्राणान् दुस्त्यजं जीवितञ्च ॥ २६ ॥ वैयाघ्रचर्माणमकूजनाक्षं हैमत्रिकोषं रजतत्रिवेणुम् । रथप्रबर्हं तुरगप्रबर्हैर्युक्तं प्रादान्मह्यमिमं हि रामः ॥ २७ ॥ धनूंषि चित्राणि निरीक्ष्य शल्य ध्वजान् गदा सायकांश्चोग्ररूपान् । असिञ्च दीप्तं परमायुधञ्च शङ्खञ्च शुभ्रं स्वनवन्तमुग्रम् ॥ २८ ॥ पताकिनं वज्रनिपातनिस्वनं सिताश्वयुक्तं

सृंजियों समेत पाण्डवों को मारूंगा वा उनके हाथ से मरकर द्रोणाचार्य के समान यमराज के समीप जाऊँगा । २३ । हे शल्य यह बात नहीं है कि मैं भीष्मादि शूरों के समान न मरूँगा किंतु मरना अवश्यहै परन्तु मुझसे मित्रके द्रोह करनेवाले नहींसहेजाते इसहेतुसे उनमें पराक्रमपूर्वक लड़कर प्राणोंको त्यागकरके द्रोणाचार्य्य के पीछे जाऊंगा।२४। जीवनके अन्तहोनेपरमृत्युके चाहेहुये बुद्धिमानऔरअबुद्धिमान दोनों बच नहींसक्ते हे बुद्धिमान् इसहेतुसेमैं पाण्डवोंके सम्मुख जाऊंगा:निश्चयकरके दैवके उल्लंघन करनेको कोई समर्थ नहीं है । २५ । राजा धृतराष्ट्र का पुत्र सदैव से मेरा शुभचिन्तक और मित्ररहा है इस निमित्त मैं उसके अभीष्ट सिद्धहोने के लिये प्रियभोग और कठिनतासे त्यागने के योग्य अपने प्राणोंको भी त्यागकरूंगा । २६ । वह व्याघ्रचर्मसे मढ़ाहुआ रथ मुझको परशुरामजीनेदिया है जो शब्दरहित चक्र सुवर्णमय त्रिकोश और रजतमय त्रिवेणु और अत्यन्त उत्तम घोड़ोंसे संयुक्तहै । २७ । हे शल्य चित्र विचित्र धनुष ध्वजा गदा वा उग्ररूप शायक प्रकाशित खड्ग और उत्तम आयुधों समेत शब्दायमान उग्र उज्ज्वल शङ्खकोदेखो २८। मैंइस

Prince Yudhishthir of true vows, Bhim, Arjun, Vasudev, Satyaki, Srinjayas, Nakul and Sahadev ! Hasten therefore, king of Madra, so that I may slay the Srinjayas, Panchals and Pandavas or be slain by them like Drona. It is true, O Shalya, that I shall die like Bhishm and Drona, yet I cannot bear to see the enemies of my friends. Having fought with them, I shall go the way that Drona has gone. Both fool and wise die at last. I shall therefore encounter the Pandavas. Surely none can overstep Fate | 25. Duryodhan has ever been my friend; I am therefore ready *to set aside* all my comforts and to lay down my very life for his sake. This car, lined by tiger's hide has been given me by Parashuram. It makes no rattling noise, is decked with golden Trikosh and Silver Trivenu and is drawn by good steeds. Look at my wonderful bow, standard, mace,

शुभंतूणशोभितम् । इमं समास्थाय रथं रथर्षभं रणे हनिष्याम्यहमर्जुनं बलात् ॥२९॥ तच्चेन्मृत्युः सर्वहरोऽभिरक्षेत् सदाप्रमत्तः समरे पाण्डुपुत्रम् । तं वा हनिष्यामि समेत्य युद्धे यास्यामि वा भीष्ममुखो यमाय ॥ ३० ॥ यमवरुणकुबेरवासवा यदि युगपत् सगणा महाहवे । जुगुपिषव इहैत्य पाण्डवं किमु बहुना सह तैर्जयामि तम् ॥ ३१ ॥ सञ्जय उवाच । इति रणरभसस्य कत्थतस्तदुपनिशम्य वचः स मद्रराट् । अवहसदवमन्य वीर्यवान् प्रतिषिषेध च जगाद चोत्तरम् ॥ ३२ ॥ शल्य उवाच विरम विरम कर्ण कत्थनादतिरभसोऽतिवाप्ययुक्तवाक् । क च हि नरवरो धनञ्जयः क्व पुनरहो पुरुषाधमो भवान् ॥ ३३ ॥ यदुसदनमुपेन्द्रपालितं त्रिदिवमिवामरराजरक्षितम् । प्रसभमभिविलोक्य को हरेत् पुरुषवरावरजामृतेऽर्जुनात् ॥ ३४ ॥ त्रिभु

पताकाधारी वज्रके समान दृढ़ शब्दायमान श्वेत घोड़े और तणीरों से शोभायमान रथोंमें श्रेष्ठ इस रथपर आरूढ़होकर युद्धमें अपने पराक्रमसे अर्जुनको मारूंगा । २९ । जोयुद्धभूमि में सदैव सावधान सबका नाशकरनेवाला कालभी अर्जुनकी रक्षाकरे तो भी युद्धमें सम्मुखहोकर उसको अवश्य मारूंगा अथवा भीष्म के समस्त यमराज के पास जाऊंगा । ३० । जो युद्धमें यमराज वरुण कुबेर इन्द्र अपने सब समूहों समेत इकट्ठे होकरभी अर्जुनकी रक्षाकरें तबभी मैं उनसब सतेत अर्जुनको विजय करूंगा बहुत बातोंके कहने से क्या प्रयोजनहै । ३१ । संजय बोलेकि कर्ण के वचनों को सुनकर पराक्रमी राजाशल्य उसका अपमान करके हँसा और निषेध करके उत्तर दिया । ३२ । शल्यनेकहा हे कर्ण अपनी प्रशंसा मतकरो हे बड़े अहंकारी तुमबड़ा बोल बोलतेहो बड़े आश्चर्यकी बातहै कि कहां तो नरोत्तमअर्जुन और कहां नराधम तुम । ३३ । अर्जुन के सिवाय कौनपुरुष विष्णुजी और इन्द्रसे रक्षितदेवस्वरूप यदुभवनको बिलोड़नकरकेश्रीकृष्णकी छोटीबहिन सुभद्राकोहरणकर सक्ताथा । ३४ । और मृगवध कलह में अर्थात् शूकर के शिकार करने में इन्द्रके

darts, bright sword and loud-sounding white conch. From this car, decked with banner, strong like vajra, and equipped with quivers, I shall slay Arjun. I shall slay ever-vigilant Arjun, though Death himself may protect him, or, like Bhishm, I shall go to the region of Yam. 30. I shall conquer him, though he be protected by Yamraj, Varun, Kuver, Indra and their armies. But what is the use of talking much!" Sanjaya said, On hearing the words of Karan, valiant Shalya laughed at him in scorn and said, "Donot praise yourself Karan. I wonder why you boast so much. There is no comparison between Arjun the best of men and you the worst of men. What man, except Arjun, could seize the younger sister of Keshav from the home of Yadus protected by warriors of Vishnu and Indra like prowess? Who except Arjun of Indra like prowess,

पाण्डवं पर्यपृच्छत ॥ १ ॥ यो ममाद्य महात्मानं दर्शयेत् श्वेतवाहनम् । तस्मै
दद्यामभिप्रेतं धनं यन्मनसेच्छति ॥ २ ॥ स चेत्तदभिमन्येत तस्मै दद्यामहं पुनः
। शकटं रत्नपूर्णञ्च यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ ३ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुन
दर्शिवान् । अथ दद्यां गवां तस्मै नैत्यकं कांस्यदोहनम् ॥ ४ ॥ शतं ग्रामवरांश्चैव
दद्यामर्जुनदर्शिने । तथा तस्मै पुनर्दद्यां श्वेतमश्वतरीरथम् । युक्तमञ्जनकेशी
भियों मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ ५ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै
वरं दद्यां सौवर्णं हस्तिषड्गवम् ॥ ६ ॥ तथाप्यस्मै पुनर्दद्यां स्त्रीणां शतमलं
कृतम् । श्यामानां निष्ककण्ठीनां गीतवाद्यविपश्चिताम् ॥ ७ ॥ स चेत्तदभिमन्येत
पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । तस्मै दद्यां शत नागान् शतं ग्रामान् शतं रथान् ॥ ८ ॥ सुवर्ण-
स्य च मुख्यस्य हयाग्र्याणां शतं शतान् । ऋध्या गुणैः सुदान्तांश्च धुर्य्यवाहान्

युद्धमें प्रत्येक को देखकर पाण्डवों से कहा । १ । कि इस समय जो पुरुष महात्मा
अर्ज्जुन को मुझे दिखावे उसको मुंह मांगा धनदूं । २ । और जो वह पुरुष उसको
भी थोड़ा जाने उसको मैं रत्नों का भराहुआ एक शकट दूं । ३ । और जो अर्जुन
का बतलाने वाला पुरुष उसको भी थोड़ा माने तो मैं उस को भोजन और कांस्य
दोहिनियों समेतसौ गौवेंदूं।४।अर्ज्जुनके दिखलाने परसौ उत्तम गांवदूं और खच्चरों
समेतरथभीदूं अथवाइन सबकोभी थोड़ाजानेतोमैं उसकोकृष्णकेशोंसेशोभित स्त्रियोंको
दूंगा । ५ । जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला इसको भी साधारण जाने तो उसको
सुनहरी हाथी के समान छः बैलों से युक्त रथदूं । ६ । और इसीप्रकार उसे ऐसी
वस्त्रालंकारयुक्त स्त्रियों का एक सैकड़ादूंगा जोकि निष्ककी माला धारण किये
गीतवाद्य में कुशल श्यामांगी हों । ७ । अथवा जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला
उसको भी कमजाने उसको सौ हाथी सौगांव सौ रथ । ८ । और दशहजार सुवर्ण
से युक्त सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथके लेचलने में समर्थहोंय ऐसे घोड़े दूंगा । ९ । और
सुवर्ण शृंगों से युक्त सवत्सा चारसौ गौवेंदूंगा जो अर्ज्जुन का दिखलाने वाला

Pandav warrior, saying, "I shall give to the man who may show great Arjun to me, as much wealth as he wants. And if that be insufficient, I shall give him a cart load of jewels. If this too, be insufficient, I shall add a hundred cows with brazen milk pots. To one who shows Arjun to me, I shall give a hundred good villages and cars drawn by mules. If this be insufficient, I shall add to it women with hair.5. If the above be insufficient, I shall give the man, who *Arjun to me, six oxen, like elephants, decked with gold. I shall* so give him a hundred women decked with fine clothes and ornaments, garlanded and skilful in singing and talking. If this be too small, I shall give him a hundred elephants and as many villages and cars. I shall add to it ten thousands of horses, well trained, healthy, fit to

सुशिक्षितान् ॥ ९ ॥ तथा सुवर्णशृङ्गीणां गोधेनूनां चतुःशतम् । दद्यां तस्मै सव
त्सानां यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ १० ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् ।
अन्यं तस्मै वरं दद्यां श्वेतान् पञ्च शतान् हयान् ॥ ११ ॥ हेमभाण्डापरिच्छन्नान्
सुमृष्टमणिभूषणान् ॥ १२ ॥ सुदान्तानपि चैवाहं दद्यामष्टादशापरान् । रथञ्च
शुभ्रं सौवर्णं दद्यां तस्मै स्वलंकृतम् । युक्तं परमकाम्बोजैर्यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥१३॥
स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै वरं दद्यां कुञ्जराणां शतानि
षट् ॥ १४ ॥ काञ्चनैर्विविधैर्भाण्डैः संछन्नान् हेममालिनः । उत्पन्नानपरान्तेषु
विनीतान् हस्तिशिक्षकैः ॥ १५ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् ।
अन्यं तस्मै वरं दद्यां वैश्यग्रामांश्चतुर्दश ॥ १६ ॥ सुस्फीतान् धनसंयुक्तान् प्रत्यास
न्नवनोदकान् । अकुतोभयान् सुसम्पन्नान् राजभोज्यांश्चतुर्दश ॥ १७ ॥ दासीनां
निष्ककण्ठीनां मागधीनां शतं तथा । प्रत्यग्रवयसां दद्यां यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥१८॥
स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै वरं दद्यां यमसौ कामयेत्

हो ।१०। जोवह पुरुप इसकोभी थोड़ामाने उसकेलिये दूसरावरदेकर पांचसौ घोड़ेदूं जोकि श्वेतवर्ण और सुवर्णसे मंडित स्वच्छ मणियों के भूषणों से अलंकृतहों ।१२। इसके विशेष मैं अठारह अच्छे शिक्षित अन्य घोड़ोंकोभी दूंगा और अति उज्वल सुवर्ण से अलंकृत कांबोजी भी घोड़ों से युक्तरथ दूं ।१३। जो अर्जुन का दिख लानेवाला पुरुष उसको भी न्यूनसमझे तो दूसरा दानदूं अर्थात् नानाप्रकार के स्वर्ण भूषणों से और मालाओं से अलंकृत पश्चिमीय कच्छ देशों में उत्पन्न और मादयवान् हाथीवानों से शिक्षित छः सौ हाथी दूं और जो इसको भी थोड़ा माने ।१६। उसको बहुत वृद्धि युक्त धनसे पूर्ण वन जंगलवाले ऐसे चौदह गांवदूं जो निर्भय और अच्छे राजाओं के भोगने के योग्य होंय ।१७। इसीप्रकार निष्ककी मालाधारण करने वाली मगधदेशी दासियों का एक सैकड़ा अर्जुनके बतलाने वाले कोदूं ।१८। और जो अर्जुनका दिखलानेवाला पुरुष इसकोभी थोड़ामाने तो जोवह मांगे वह दूं इसके विशेष जो जो मेरा धन है और वह चाहता है वह सब उसको

draw cars and decked with gold ornaments. I shall also give him four hundred cows with golden horns and calves. But if he thinks this insufficient, I shall give him more. I shall give him five hundred white horses decked with golden ornaments and jewels. Besides this I shall also give him eighteen Camboj horses, of white colour, decked with gold ornaments. If he think this too, insufficient, I shall give him more: I shall give him six hundred well-trained elephants of Western country, decked with garlands. If this too, be insufficient, I shall add to it fourteen prosperous villages, full of forests and grazing grounds, worthy of kings and free from danger. 17. I shall give the man, who shows Arjun to me, a hundred slave girls. If this be

पाण्डवं पर्य्यपृच्छत ॥ १ ॥ यो ममाद्य महात्मानं दर्शयेत् श्वेतवाहनम् । तस्मै
दद्यामभिप्रेतं धनं यन्मनसेच्छति ॥ २॥ स चेत्तदभिमन्येत तस्मै दद्यामहं पुनः
। शकटं रत्नपूर्णञ्च यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ ३ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुन
दर्शिवान् । अन्यं दद्यां गवां तस्मै नैत्यकं कांस्यदोहनम् ॥ ४ ॥ शतं ग्रामवराश्चैव
दद्यामर्जुनदर्शिने । तथा तस्मै पुनर्दद्यां श्वेतमश्वतरीरथम् । युक्तमञ्जनकेशी
भिर्यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ ५ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै
वरं दद्यां सौवर्णं हस्तिषड्गवम् ॥ ६ ॥ तथाप्यस्मै पुनर्दद्यां स्त्रीणां शतमलं
कृतम् । श्यामानां निष्ककण्ठीनां गीतवाद्यविपश्चिताम् ॥ ७॥ स चेत्तदभिमन्येत
पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । तस्मै दद्यां शतं नागान् शतं ग्रामान् शतं रथान् ॥ ८ ॥ सुवर्ण.
स्य च मुख्यस्य हयाग्र्याणां शतं शतान् । ऋद्ध्या गुणैः सुदान्तांश्च धुर्य्यवाहान्

युद्धमें प्रत्येक को देखकर पाण्डवों से कहा । १ । कि इस समय जो पुरुष महात्मा अर्ज्जुन को मुझे दिखावे उसको मुंह मांगा धनदूं । २ । और जो वह पुरुष उसको भी थोड़ा जाने उसको मैं रत्नों का भराहुआ एक शकट दूं । ३ । और जो अर्जुन का बतलाने वाला पुरुष उसको भी थोड़ा माने तो मैं उस को भोजन और कांस्य दोहिनियों समेतसौ गौवेंदूं।४।अर्ज्जुनके दिखलाने परसौ उत्तम गांवदूं और खच्चरों समेतरथभीदूं अथवाइन सबकोभी थोड़ाजानेतोमैं उसकोकृष्णकेशोंसेशोभित स्त्रियोंको दूंगा ।५। जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला इसको भी साधारण जाने तो उसको सुनहरी हाथी के समान छः बैलों से युक्त रथदूं । ६ । और इसीप्रकार उसे ऐसी वस्त्रालंकारयुक्त स्त्रियों का एक सैकड़ादूंगा जोकि निष्ककी माला धारण किये गीतवाद्य में कुशल श्यामांगी हों ।७। अथवा जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला उसको भी कमजाने उसको सौ हाथी सौगांव सौ रथ । ८ । और दशहजार सुवर्ण से युक्त सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथके लेचलने में समर्थहोंय ऐसे घोड़े दूंगा । ९ । और सुवर्ण शृंगों से युक्त सवत्सा चारसौ गौवेंदूंगा जो अर्ज्जुन का दिखलाने वाला

Pandav warrior, saying, "I shall give to the man who may show great Arjun to me, as much wealth as he wants. And if that be insufficient, I shall give him a cart load of jewels. If this too, be insufficient, I shall add a hundred cows with brazen milk pots. To one who shows Arjun to me, I shall give a hundred good villages and cars drawn by mules. If this be insufficient, I shall add to it women with black hair.5. If the above be insufficient, I shall give the man, who shows Arjun to me, six oxen, like elephants, decked with gold. I shall also give him a hundred women decked with fine clothes and ornaments, garlanded and skilful in singing and talking. If this be too small, I shall give him a hundred elephants and as many villages and cars. I shall add to it ten thousands of horses, well trained, healthy, fit to

दद्यां तस्मै सब
सुशिक्षितान् ॥ ९ ॥ तथा सुवर्णशृङ्गीणां गोधेनूनां चतुःशतम् ।
रसांनां यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ १० ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् ।
अन्यं तस्मै वरं दद्यां श्वेतान् पञ्च शतान् हयान् ॥ ११ ॥ हेमभाण्डापरिच्छन्नान्
सुमृष्टमणिभूषणान् ॥ १२ ॥ सुदान्तानपि चैवाहं दद्यामष्टादशापरान् । रथञ्च
शुभ्रं सौवर्णं दद्यां तस्मै स्वलंकृतम् । युक्तं परमकाम्बोजैर्यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥१३॥
स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै वरं दद्यां कुञ्जराणां शतानि
षट् ॥ १४ ॥ काञ्चनैर्विविधैर्भाण्डैः संछन्नान् हेममालिनः । उत्पन्नानपरान्तेषु
विनीतान् हस्तिशिक्षकैः ॥ १५ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् ।
अन्यं तस्मै वरं दद्यां ग्रामान्यश्चतुर्दश ॥ १६ ॥ सुस्फीतान् धनसंयुक्तान् प्रत्यास.
वनोदकान् । अकुतोभयान् सुसम्पन्नान् राजभोज्यांश्चतुर्दश ॥ १७ ॥ दासीनां
निष्ककण्ठीनां मागधीनां शतं तथा । प्रत्यग्रवयसां दद्यां यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥१८॥
स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै वरं दद्यां यमसौ कामयेत्

हो ।१०। जोवह पुरुष इसकोभी थोड़ामाने उसकेलिये दूसरावरदेकर पांचसो घोड़ेदूं जोकि श्वेतवर्ण और सुवर्णसे मंडित स्वच्छ मणियों के भूषणों से अलंकृतहों ।१२। इसके विशेष मैं अठारह अच्छे शिक्षित अन्य घोड़ोंकोभी दूंगा और अति उज्वल सुवर्ण से अलंकृत कांबोजी भी घोड़ों से युक्तरथ दूं । ११ । जो अर्जुन का दिख- लानेवाला पुरुष उसको भी न्यूनसमझे तो दूसरा दानदूं अर्थात् नानाप्रकार के स्वर्ण भूषणों से और मालाओं से अलंकृत पाश्चिमीय कच्छ देशों में उत्पन्न और माल्यवान् हाथीवानों से शिक्षित छः सौ हाथी दूं और जो इसको भी थोड़ा माने ।१६। उसको बहुत वृद्धि युक्त धनसे पूर्ण वन जंगलवाले ऐसे चौदह गांवदूं जो निर्भय और अच्छे राजाओं के भोगने के योग्य होंय । १७ । इसीप्रकार निष्ककी मालाधारण करने वाली मगधदेशी दासियों का एक सैकड़ा अर्जुनके बतलाने वाले कोदूं ।१८। और जो अर्जुनका दिखलानेवाला पुरुष इसकोभी थोड़ामाने तो जोवह मांगे वह दूं इसके विशेष जो जो मेरा धन है और वह चाहता है वह सब उसको

draw cars and decked with gold ornaments. I shall also give him four hundred cows with golden horns and calves. But if he thinks this insufficient, I shall give him more. I shall give him five hundred white horses decked with golden ornaments and jewels. Besides this I shall also give him eighteen Camboj horses, of white colour, decked with gold ornaments. If he think this too, insufficient, I shall give him more. I shall give him six hundred well-trained elephants of Western country, decked with garlands. If this too, be insufficient, I shall add to it fourteen prosperous villages, full of forests and grazing grounds, worthy of kings and free from danger. 17. I shall give the man, who shows Arjun to me, a hundred slave girls, If this be

पाण्डवं पर्य्यपृच्छत ॥ १ ॥ यो ममाद्य महात्मानं दर्शयेत् श्वेतवाहनम् । तस्मै दद्यामभिप्रेतं धनं यन्मनसेच्छति ॥ २ ॥ स चेत्तदभिमन्येत तस्मै दद्यामहं पुनः । शकटं रत्नपूर्णञ्च यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ ३ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं दद्यां गवां तस्मै नैत्यकं कांस्यदोहनम् ॥ ४ ॥ शतं ग्रामवराश्चैव दद्यामर्जुनदर्शिने । तथा तस्मै पुनर्दद्यां श्वेतमश्वतरीरथम् । युक्तमञ्जनकेशीभिर्यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ ५ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै रथं दद्यां सौवर्णं हस्तिषड्गवम् ॥ ६ ॥ तथाप्यस्मै पुनर्दद्यां स्त्रीणां शतमलंकृतम् । श्यामानां निष्ककण्ठीनां गीतवाद्यविपश्चिताम् ॥ ७ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । तस्मै दद्यां शतं नागान् शतं ग्रामान् शतं रथान् ॥ ८ ॥ सुवर्णस्य च मुख्यस्य हयाग्र्याणां शतं शतान् । ऋद्ध्या गुणैः सुदान्तांश्च धुर्य्यवाहान्

युद्धमें मत्स्येक को देखकर पाण्डवों से कहा । १ । कि इस समय जो पुरुष महात्मा अर्जुन को मुझे दिखावे उसको मुंह मांगा धनदूं । २ । और जो वह पुरुष उसको भी थोड़ा जाने उसको मैं रत्नों का भराहुआ एक शकट दूं । ३ । और जो अर्जुन का वतलाने वाला पुरुष उसको भी थोड़ा माने तो मैं उस को भोजन और कांस्य दोहिनियों समेतसौ गौवेंदूं।४।अर्ज्जुनके दिखलाने परसौ उत्तम गांवदूं और खच्चरों समेतरथभीदूं अथवाइन सवकोभी थोड़ाजानेतोमैं उसकोकृष्णकेशोंसेशोभित स्त्रियोंको दूगा । ५ । जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला इसको भी साधारण जाने तो उसको सुनहरी हाथी के समान छः बैलों से युक्त रथदूं । ६ । और इसीप्रकार उसे ऐसी वस्त्रालंकारयुक्त स्त्रियों का एक सैकड़ादूंगा जोकि निष्ककी माला धारण किये गीतवाद्य में कुशल श्यामांगी हों । ७ । अथवा जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला उसको भी कमजाने उसको सौ हाथी सौगांव सौ रथ । ८ । और दशहजार सुवर्ण से युक्त सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथके लेचलने में समर्थहोंय ऐसे घोड़े दूंगा । ९ । और सुवर्ण शृंगों से युक्त सवत्सा चारसौ गौवेंदूंगा जो अर्ज्जुन का दिखलाने वाला

Panday warrior, saying, "I shall give to the man who may show great Arjun to me, as much wealth as he wants. And if that be insufficient, I shall give him a cart load of jewels. If this too, be insufficient, I shall add a hundred cows with brazen milk pots. To one who shows Arjun to me, I shall give a hundred good villages and cars drawn by mules. If this be insufficient, I shall add to it women with black hair.5. If the above be insufficient, I shall give the man, who shows Arjun to me, six oxen, like elephants, decked with gold. I shall also give him a hundred women decked with fine clothes and ornaments, garlanded and skilful in singing and talking. If this be too small, I shall give him a hundred elephants and as many villages and cars. I shall add to it ten thousands of horses, well trained, healthy, fit to

सुशिक्षितान् ॥ ९ ॥ तथा सुवर्णशृङ्गीणां गोधेनूनां चतुःशतम् । दद्यां तस्मै सव त्सानां यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ १० ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै वरं दद्यां श्वेतान् पञ्च शतान् हयान् ॥ ११ ॥ हेमभाण्डपरिच्छन्नान् सुमृष्टमणिभूषणान् ॥ १२ ॥ सुदान्तानपि चैवाहं दद्यामष्टादशापरान् । रथञ्च शुभ्रं सौवर्णं दद्यां तस्मै स्वलंकृतम् । युक्तं परमकाम्बोजैर्यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ १३ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै वरं दद्यां कुञ्जराणां शतानि षट् ॥ १४ ॥ काञ्चनैर्विविधैर्भाण्डैः संछन्नान् हेममालिनः । उत्पन्नानपरान्तेषु विनीतान् हस्तिशिक्षकैः ॥ १५ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै वरं दद्यां येषु ग्रामांश्चतुर्दश ॥ १६ ॥ सुस्फीतान धनसंयुक्तान् प्रत्यास- न्नवनोदकान् । अकुतोभयान् सुसम्पन्नान् राजभोज्यांश्चतुर्दश ॥ १७ ॥ दासीनां निष्ककण्ठीनां मागधीनां शतं तथा । प्रत्यग्रवयसां दद्यां यो मे ब्रूयाद्धनञ्जयम् ॥ १८ ॥ स चेत्तदभिमन्येत पुरुषोऽर्जुनदर्शिवान् । अन्यं तस्मै वरं दद्यां यमसौ कामयेत

दो ।१०। जोवह पुरुष इसकोभी थोड़ामाने उसकेलिये दूसरावरदेकर पांचसौ घोड़ेदूं जोकि श्वेतवर्ण और सुवर्णसे मंडित स्वच्छ मणियों के भूषणों से अलंकृतहों ।१२। इसके विशेष में अठारह अच्छे शिक्षित अन्य घोड़ोंकोभी दूंगा और अति उज्वल सुवर्ण से अलंकृत कंबोजी भी घोड़ों से युक्तरथ दूं ।१३। जो अर्जुन का दिख- लानेवाला पुरुष उसको भी न्यूनसमझे तो दूसरा दानदूं अर्थात् नानाप्रकार के स्वर्ण भूषणों से और मालाओं से अलंकृत पश्चिमीय कच्छ देशों में उत्पन्न और मालयवान् हाथीवानों से शिक्षित छः सौ हाथी दूं और जो इसको भी थोड़ा माने ।१६। उसको बहुत बृद्धि युक्त धनसे पूर्ण वन जंगलवाले ऐसे चौदह गांवदूं जो निर्भय और अच्छे राजाओं के भोगने के योग्य होंय ।१७। इसीप्रकार निष्ककी मालाधारण करने वाली मगधदेशी दासियों का एक सैकड़ा अर्जुनके बतलाने वाले कोदूं ।१८। और जो अर्जुनका दिखलानेवाला पुरुष इसकोभी थोड़ामाने तो जोवह मांगे वह दूं इसके विशेष जो जो मेरा धन है और वह चाहता है वह सब उसको

---

draw cars and decked with gold ornaments. I shall also give him four hundred cows with golden horns and calves. But if he thinks this insufficient, I shall give him more. I shall give him five hundred white horses decked with golden ornaments and jewels. Besides this I shall also give him eighteen Camboj horses, of white colour, decked with gold ornaments. If he think this too, insufficient, I shall give him more. I shall give him six hundred well-trained elephants of Western country, decked with garlands. If this too, be insufficient, I shall add to it fourteen prosperous villages, full of forests and grazing grounds, worthy of kings and free from danger. 17. I shall give the man, who shows Arjun to me, a hundred slave girls. If this be

स्वयम् ॥ १९ ॥ पुत्रदारान् विहारांश्च यदन्यद्वित्तमस्ति मे । तच्च तस्मै वरं दद्यां यद्यच्च मनसेच्छति ॥ २० ॥ हत्वा च सहितौ कृष्णौ तयोर्वित्तानि सर्वशः । तस्मै ददाम्यहं यो मे प्रब्रूयात् केशवार्जुनौ ॥ २१ ॥ एता वाचः सुबहुशः कर्ण उच्चारयन् युधि । दध्मौ सागरसम्भूतं सुस्वरं शङ्खमुत्तमम् ॥ २२ ॥ ता वाचः सूतपुत्रस्य यथायुक्ता निशम्य ह । दुर्योधनो महाराज संहृष्टः सानुगोऽभवत् ॥ २३ ॥ ततो दुन्दुभिनिर्घोषो मृदङ्गानाञ्च सर्वशः । सिंहनादः सवादित्रः कुञ्जराणाञ्च निस्वनः ॥ २४ ॥ प्रादुरासीत्तदा राजन् सैन्येषु पुरुषर्षभ । योधानां सम्प्रहृष्टानां तथा समभवत् स्वनः ॥ २५ ॥ तथा प्रहृष्टे सैन्ये तु प्लवमानं महारथम् । विकत्थमानञ्च तदा राधेयमरिकर्षणम् । मद्रराजः प्रहस्येदं वचनं प्रत्यभाषत ॥ २६ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि त्रिपुरवधोपाख्याने चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४

देसकाहूं जो अर्ज्जुन को मुझे बतावे व दिखावे । २० । श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनको एक समय में ही मारकर उनका सबधन उसको दूं जो अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजी को मुझे दिखावे । २१ । युद्ध में ऐसे बचनों को कहतेहुये कर्ण ने समुद्र से उत्पन्न हुये अपने शङ्खको बजाया । २२ । हे महाराज कर्ण के इन वचनों को सुनकर दुर्य्योधन अपने साथियों समेत अत्यन्त प्रसन्नहुआ । २३ । इसकेपीछे हे पुरुषोत्तम दुन्दुभी आदि मृदंगों के सब प्रकारके शब्द वा बाजोंसमेत सिंहनाद और हाथियों के शब्द । २४ । सेनाओंके मध्यमें प्रकटहुये इसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरों के अनेक शब्दहुये । २५ । तब तो सेनाके प्रसन्न होनेपर राजामद्र हँसकर उस शत्रुओं के विजय करनेवाले और अपनी प्रशंसा करतेहुये जानेवाले महारथी कर्णसे यहवचन बोला २६ ॥

---

insufficient, I shall give him more. I can give him whatever he asks out of my cherished wealth. I shall slay Arjun and Krishn at the same time and shall give their wealth to him who points them out to me." Having said this, Karan blew his sea born conch. Duryodhan and his brothers were much pleased to hear Karan's words. Then the musical instruments were sounded and the warriors roared leonine roars with glee. At these signs of pleasure, the king of Madra laughed and said to Karan who was thus praising himself. "26.

शल्य उवाच। मा सूतपुत्र दानेन सौवर्णं हस्तिषड्गवम्। प्रयच्छ पुरुषायाद्य द्रक्ष्यसि त्वं धनंजयम्॥१॥बाल्यादिह त्वं त्यजसि वसु वैश्रवणो यथा। अयत्नेनैव राधेय द्रष्टास्यद्य धनंजयम्॥२॥परासृजसि यद्वित्तं किंचित्त्वं बहुमूढवत् अपात्रदाने ये दोषास्तान्मोहान्नावबुध्यसे ॥३॥यत्प्रवेदयसे वित्तं बहुतेन खलु त्वया। शक्यं बहुविधैर्यज्ञैर्यष्टुं सूत यजस्व तैः॥४॥ यच्च प्रार्थयसे हन्तुं कृष्णौ मोहात् वृथैव तत्। न हि शुश्रुम संमर्दे क्रोष्ट्रा सिंहौ निपातितौ ॥ ५ ॥ अप्रार्थितं प्रार्थयसे सुहृदो न हि सन्ति ते। ये त्वां निवारयन्त्याशु प्रपतन्तं हुताशने ॥ ६ ॥ कार्याकार्यं न जानीषे कालपक्वोऽस्यसंशयम्। बह्वबद्धमकर्णीयं को हि ब्रूयाज्जिजीविषुः ॥ ७ ॥ समुद्रतरणं दोर्भ्यां कण्ठे बद्ध्वा यथा शिलाम्। गिर्यग्राद्वा निपतनं तादृक् तव चिकीर्षितम् ॥ ८ ॥

अध्याय ३९ ॥

शल्यबोले हे सूतपुत्र दान करनेसे बन्दहो तू सुवर्णमय हाथी के समान छः बैलोंसे संयुक्त रथको मतदे तुम अर्जुनको देखोगे । १ । हे राधाके बेटे तुम यहां बालबुद्धिसे अज्ञानों के समान धनको देतेहो अब तुम बिना उपायकेही अर्जुनको देखोगे ।२। तुम अज्ञानियोंके समान जो निरर्थकधनकोदेतेहो अपात्रके दानदेनेमें जो दोषहैं उनकोभी अपने मोहसे नहीं जानतेहो । ३ । जो तुम बहुतसे धनको देतेहो उसधनकेद्वारा तुमको उचित है कि यज्ञोंको करो । ४ । जोतुम अपनी अज्ञानतासे श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारना चाहतेहो वह निरर्थकहै शृगालोंसे सिंहोंका मारना हमने नहीं सुनाहै । ५ । तू अप्रार्थितको चाहताहै तेरे शुभचिंतक मित्रनहीं हैं जोकि तुझको अग्निमें गिरतेहुये नहीं रोकतेहैं । ६ । तू शुभाशुभकर्मकोभी नहीं जानताहै और निस्सन्देह तू कालके गालमें फँसताहै जीवनका चाहनेवाला कौन पुरुष सर्वथा निष्प्रयोजन और सुनने के अयोग्य वार्त्ताओंको करे । ७ । जैसे कि गले में पत्थरकी शिलाको बांधकर समुद्रमें पैरना चाहै अथवा पर्व्वत के शिखरसे गिरनाहोय वैसेही प्रकारका तेरा इंप्सितकर्महै । ८ । जो अपना कल्याण चाहतेहो

CHAPTER XXXIX

Shalya said, 'Stop giving donations, son of Sut, for you will see Arjun today, without your giving a car drawn by six elephant-like oxen. You are foolishly offering wealth like children, though you will see him without exertion on your part. Like fools you are needlessly offering wealth and donot, on account of your stupidity, know the harms attending the gift of wealth to the undeserving. You can perform many sacrifices with the wealth you thus offer. Your foolish desire to slay Krishn and Arjun is vain; can a jackal slay a lion ? 5. You wish to obtain things which are impossible; have you no friends who could keep you back from falling into fire? You donot know whether a thing is proper to do or not and would fall in the jaws of death;

सहितः सर्वयोधैस्त्वं व्यूढानीकैः सुरक्षितः । धनञ्जयेन युध्यस्व श्रेयश्चेत् प्राप्तु
मिच्छसि ॥ ९ ॥ हितार्थं धार्त्तराष्ट्रस्य ब्रवीमि त्वां न हिंसया । श्रद्धत्स्वैवं मया
प्रोक्तं यदि तेऽस्ति जिजीविषा ॥ १० ॥ कर्ण उवाच । स्वबाहुवीर्य्यमाश्रित्य प्रार्थ
यास्यर्जुनं रणे । त्वन्तु मित्रमुखः शत्रुर्मां भीषयितुमिच्छसि ॥ ११ ॥ न मामस्मा
दभिप्रायात् कश्चिदद्य निवर्त्तयेत् अपीन्द्रो वज्रमुद्यम्य किमु मर्त्यः कथञ्चन ॥ १२ ॥
सञ्जय उवाच । इति कर्णस्य वाक्यान्ते शल्यः प्राहोत्तरं वचः । चुकोपयिषुरत्यर्थं
कर्णं मद्रेश्वरः पुनः ॥ १३ ॥ यदा वै फाल्गुनवेगमुक्ता ज्याचोदिता हस्तवता
विसृष्टाः । अन्वेतारः कङ्कपत्राः शिताग्रास्तदा तप्स्यस्यर्ज्जुनस्यानुयोगात् ॥ १४ ॥
यदा दिव्यं धनुरादाय पार्थः प्रतापयन् पृतनां सव्यसाची । त्वामर्दयिष्यन्निशितैः

तो तुम सब योद्धाओं से युक्त सजीहुई अपनी सेना समेत अर्जुनसे युद्धकरो । ९ ।
मैं दुर्योधनकी वृद्धिकेलिये तुमसे कहताहूं जोतू जीवनकी इच्छा रखता है तौ मेरे
वचनोंको शत्रुता और ईर्षासंयुक्त न जान । १० । कर्ण बोला मैं अपनेही भुजबल
के आश्रित होकर युद्धमें अर्जुनको चाहताहूं हे उत्तम मित्र तुम शत्रुरूप होकर
मुझको भयभीत करातेहो । ११ । अब मुझको मेरे इस विचारसे कोई भी नहीं हटा
सक्ताजो इन्द्रभी वज्र दिखाकर मुझको युद्धसे निवृत्त कियाचाहै तो नहीं निवृत्त
होसक्ता । १२ । संजय बोले कि फिर कर्ण को क्रोधयुक्त करनेकी इच्छासे मद्रदेश
के स्वामी शल्यने कर्णके बोलनेके पीछे इस उत्तररूप वचनको कहा । १३ । कि
जब अर्जुन के वेगसे युक्त प्रत्यंचासे प्रेरित तीव्र हाथोंसे छोड़ेहुये कंकपक्षसे जटित
तीक्ष्ण नोकवाले बाण तेरे सम्मुख आवेंगे तब तू अर्जुनके विषयमें ऐसे वचन कहने
को दुखी होगा । १४ । जबसेनाको संतप्त करताहुआ तुझको तीक्ष्णनोकवाले बाणो
से मर्दन करना चाहनेवाला अर्जुन अपने दिव्य धनुषको लेकर तेरे सम्मुख आवेगा

what persons wishing long life, will indulge in talking nonsense? Your attempt is like that of him who, with a stone round his neck, wishes to swim accross the ocean, or of one who would jump down from a mountain. Fight with Arjun with the help of all your army, if you wish to seek your own welfare. I say this to you for the good of Duryodhan; you must not think that I do so for malice."10. Karan: "It is with the strength of my own arms that I wish to fight with Arjun; being a friend, you terrify me like an enemy. Even Indra cannot turn me back from my purpose." Sanjaya said, "Wishing to enrage Karan the more, Shalya continued by way of reply, "You will regret saying so with regard to Arjun, when you will meet with his sharp pointed arrows, fitted with Kank feathers, and discharged with force. You will be sorry, when Arjun comes on with his celestial bow,

पूर्वाद्वैरसवा पश्चात्त्वसे सूतपुत्र ॥ १५ ॥ बालश्चन्द्रं मातुरङ्के शयानो यथा कश्चित् प्रार्थयतेऽपहर्तुं म । तद्वन्मोहात् द्योतमानं रथस्थं त्वं प्रार्थयस्यर्जुन मतुमूढ, ॥ १६ ॥ त्रिशूलमाश्रित्य सुतीक्ष्ण धार सर्वाणि गात्राणि निघर्षसि त्वम् । सुतीक्ष्णधारोपमकर्मणा त्वं युयुत्ससे योऽर्जुनेनाद्य कर्ण ॥ १७ ॥ क्रुद्धं सिंहं केसरिणं, बृहन्तं बालो मूढः क्षुद्रमृगोऽस्वयी । समाह्वयेत्तद्वदेतत्तवाद्य समाह्वान सूतपुत्रार्जुनस्य ॥ १८ ॥ मा सूतपुत्राह्वय राजपुत्रं महावीर्यं केसरिणं यथैव । वने शृगालः पिशितस्य तृप्तो मा पार्थमासाद्य विनङ्क्ष्यसि त्वम् ॥ १९ ॥ ईशादन्तं महानागं प्रभिन्नकरटामुखम् । शशकाह्वयसे युद्धे कर्ण पार्थं धनञ्जयम् ॥ २० ॥ बिलस्थं कृष्णसर्पं त्वं बाल्यात् काष्ठेन विध्यसि । महाविषं पूर्णकोपं यत् पार्थं योद्धुमिच्छसि ॥ २१ ॥ सिंहं केसरिणं क्रुद्धमतिक्रम्याभिनर्दसे । शृगाल इव मूढत्वं

तब हे सूतपुत्र तू महादुखी होगा । १५ । जैसे कि माताकी गोदीमें कोई सोताहुआ बालक चन्द्रमाके पकड़नेकी इच्छा करता है उसी प्रकार अबतुम इस रथकर सवार होकर प्रकाशमान अर्जुनको अपने मोहसे विजय किया चाहते। १६। हेकर्ण अब तुम अत्यन्त तीक्ष्णधार वाले त्रिशूल से चिपटकर अपन अगोंको घसीटतेहो जो कि अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले त्रिशूल कर्मी अर्जुन के साथमें लड़ना चाहतेहो । १७ । जैसे कि अज्ञान बालक वा वेगवान नीचमृग क्रोधयुक्त बड़े केसरी सिंहको युद्धके निमित्त बुलावे है सूतपुत्र इसीप्रकार सेतूभी अर्जुनको बुलाता है । १८ । हेसूतके पुत्र तू राजकुमार को मतबुलावे जैसे कि मांससे तृप्तहुआ शृगाल बनमें केसरी सिंहको नहीं बुलासक्ता उसीप्रकार तुम अर्जुन को प्राप्त होकर अपना नाशकरना चाहतेहो सो मतकरो । १९ । जैसे कि शृगाल ईशाके समान दांत रखनेवाले मुख और गंडस्थल से मद झाड़नेवाले बड़े हाथी को युद्धमें बुलावे है कर्ण उसी प्रकार तुम पापदर अर्जुनका बुलातेहो । २० । तुम अपनी अज्ञानता और बल बुद्धिसे बिलमें बैठेहुये क्रोधयुक्त महा विषधर कालेसर्पको लकड़ी से मारतेहो जो अर्जुनसे युद्धकरना चाहतेहो । २१ । हे कर्ण अब शृगाल रूप अज्ञानहोकर तुम

destroying the armies and shooting his sharp arrows at you. 15. Like a child who, being in the arms of its mother, wishes to catch the moon, you wish to conquer glorious Arjun from the car. Clinging to a sharp edged dart, you rub your body against it in as much as you would meet in battle with Arjun who works like a trident. Your challenge of Arjun to fight is like that of a weak deer against a lion. Donot challange him, son of Sut, for you will lose your life as a jackal satisfied with meat, does on challenging a lion. You challenge Arjun to fight, like a jackal challenging a mad elephant of large tusks. 20. Your wish to fight with Arjun is like beating out a venomous black serpent with a stick. Like a foolish jackal you bark

नृसिंहं कर्ण पाण्डवम् ॥ २२ ॥ सुपर्णं पतगश्रेष्ठं वैनतेयं तरस्विनम् । भोगी वाह्वयसे पाते कर्ण पार्थं धनञ्जयम् ॥ २३ ॥ सर्वाम्भसां निधिं भीममूर्मिमन्तं झषान्वितम् । चन्द्रोदये विवर्धन्तमप्लवः सन्तितीर्षसि ॥ २४ ॥ ऋषभं दुन्दुभिग्रीवं तीक्ष्णशृङ्गं प्रहारिणम् । वत्स आह्वयसे युद्धे कर्ण पार्थं धनञ्जयम् ॥ २५ ॥ महामेघं महाघोरं दर्दुरः प्रतिनर्दसि कामतोयप्रदं लोके नरपर्जन्यमर्जुनम् ॥ २६ ॥ यथा च स्वगृहस्थः श्वा व्याघ्रं वनगतं भषेत् । तथा त्वं भषसे कर्ण नरव्याघ्रं धनञ्जयम् ॥ २७ ॥ शृगालोऽपि वने कर्ण शशैः परिवृतो वसन् । मन्यते सिंहमात्मानं यावत् सिंहं न पश्यति ॥ २८ ॥ तथा त्वमपि राधेय सिंहमात्मानमिच्छसि अपश्यन् शत्रुदमनं नरव्याघ्रं धनञ्जयम् ॥ २९ ॥ व्याघ्रं त्वं मन्यसेऽऽत्मानं यावत् कृष्णौ न

केसरी सिंहरूप क्रोधयुक्त नरोत्तम पांडव अर्जुनको उल्लंघन करके गर्जते हो । २२। और सर्प के समान तुम अपनी मृत्यु के लिये सुन्दर पक्षवाले अद्भुत पराक्रमी गरुड़ के समान वेगवान महाबली पाण्डव अर्जुन को बुलातेहो । २३ । सब जलों के स्वामी भयानक मत्स्यादिक जीवों से व्याप्त चन्द्रोदय में प्रसन्न रूप वृद्धि पानेवाले मूर्त्तिमान समुद्रको भुजाओं से तरनाचाहतेहो । २४ । हे कर्ण बछड़े के समान तुम दुन्दुभीरूप क्षुद्रघंटिकाओं के शब्द रखनेवाले होकर तीक्ष्ण शृंगसे घात करनेवाले बड़े बैलके समान पांडवअर्जुन को युद्धमें बुलातेहो । २५ । तुम मेंडक के समान होकर लोकमें घोर जल बरसानेवाले नररूप बादल के समान अर्जुन के सम्मुख ऐसे गर्जते हो । २६ । जैसे कि अपने घरमें नियत कुत्ता वन में वर्त्तमान व्याघ्रका अपने स्थान से भौंकता है, उसीप्रकार तुमभी कुत्ते के समान नररूपव्याघ्र अर्जुनकी ओर को भौंकतेहो । २७। हे कर्ण खरगोशों से युक्त शृगाल भी बनमें निवास करता हुआ अपनेको उस समयतक सिंहरूप मानताहै जबतक कि सिंहको नहीं देखता है । २८ । हे राधाके पुत्र इसीप्रकार शत्रुओं के विजय करने वाले अर्जुनको न देखके तुमभी अपने को सिंहरूप मानरहे हो । २९ । जबतक एक रथपर सूर्य और चंद्रमाके समान नियत श्रीकृष्ण और अर्जुन को नहीं देखतेहो

at lion like Arjun. You challenge Arjun to fight as a snake does a garut of matchless prowess. You wish to cross with yourarms the ocean, wherein dreadful acquatic animals live, when it is swollen at the full moon. Like a calf decked with small tinkling bells you wish to encounter Arjun who is like a bull ready to attack with horns. 25. Like a frog you croak at the cloud-like form of Arjun. Like a dog which, being at home, barks at a lion, you bark at Arjun. A *jackal living in the midst of hares, thinks himself to be a lion as long* as he has not seen a lion. You think yourself a tiger so long as you have not seen Krishn and Arjun seated on the same car like the

पश्यसि । समास्थितावेकरथे सूर्याचन्द्रमसाविव ॥ ३० ॥ यावद्गाण्डीवनिर्घोषं न शृणोषि महाहवे । तावदेव त्वया कर्ण शक्यं वक्तुं यथेच्छसि ॥ ३१ ॥ रथशब्दधनुःशब्दैर्नादयन्तं दिशो दश । नर्दन्तमिव शार्दूलं दृष्ट्वा क्रोष्टा भविष्यसि ॥ ३२ ॥ नित्यमेव शृगालस्त्वं नित्यं सिंहो धनञ्जयः । वीरप्रद्वेषणान्मूढ तस्मात् क्रोष्टेव लक्ष्यसे ॥ ३३ ॥ यथाखुः स्याद्बिडालश्च श्वा व्याघ्रश्च बलाबले । यथा शृगालः सिंहश्च यथा च शशकुञ्जरौ ॥ ३४ । यथानृतञ्च सत्यंच यथा चापि विषामृते । तथा त्वमपि पार्थश्च प्रख्यातावात्मकर्मभिः ॥ ३५ ॥

इति कर्णपर्वणि शल्यस्य कर्णसारथ्यस्वीकारे पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

तबतक तुम अपनी आत्माको व्याघ्र मानतेहो । ३० । हे कर्ण जबतक कि तुम युद्ध में गांडीव धनुषके शब्दको नहीं सुनतेहो तभीतक तुमजो चाहो मुखसे बोलरहेहो ।३१। रथ और धनुषों से दशोंदिशाओं को शब्दायमान करनेवाले और शार्दूल के समान गर्जने वाले अर्ज्जुनको देखकर तू शृगालरूपहो होजायगा । ३२ । तुम सदैव शृगालरूप हो और अर्ज्जुन सदैव सिंहरूप है हे अज्ञाने इस कारण वीरलोगों से शत्रुता करने में तू शृगाल के समान दिखाई देताहै ।३३। जैसे कि चूहाबिलार और महाबन में कुत्ता और व्याघ्रहोय और जैसे शृगाल और सिंह होंय और जिसप्रकार गलोश और हाथी होंय । ३४ । अथवा मिथ्या और सत्य वा विष और अमृतहोंय उसीप्रकार तुम और अर्ज्जुनभी अपने २ कर्म से विख्यातहो । ३५ ।

Sun and moon. 30 You are talking nonsense, O Karan, so long as you have not heard the twang of the Gandiv bow. You will be turned into a jackal at the sight of Arjun who fills the directions with the sound his of bow and leonine roars. You are like a jackal, while Arjun is like a lion; for you slink away like a jackal in the presence of warriors. You and Arjun are famous for your deeds like a rat and a cat, a jackal and a lion, a hare and an elephant, falsehood and truth, or poison and antedote." 35.



संजय उवाच । अधिक्षिप्तस्तु राधेयः शल्येनामिततेजसा । शल्यमाह सुसंक्रुद्धो वाक्शल्यमवधारयन् ॥ १ ॥ कर्ण उवाच । गुणान् गुणवतां शल्य गुणवान् वेत्ति नागुणः । त्वन्तु सर्वैर्गुणैर्हीनः किं ज्ञास्यसि गुणागुणम् ॥ २ ॥ अर्जुनस्य महास्त्राणि क्रोधं वीर्यं धनुः शरान् । अहं शल्य विजानामि विक्रमंच महात्मनः ॥ ३ ॥ तथा कृष्णस्य माहात्म्यमृषभस्य महीक्षिताम् । यथाहं शल्य जानामि न त्वं जानासि तत्तथा ॥ ४ ॥ एवमेवात्मनो वीर्यमहं वीर्यंच पाण्डवे । जानन्नेवाह्वये युद्धे शल्य नाग्निं पतङ्गवत् ॥ ५ ॥ अस्ति चायमिषुः शल्य सुमुखो रक्तभोजनः एकतूणीशयः पत्री सुधौतः समलंकृतः ॥ ६ ॥ शेते चन्दनचूर्णेन पूजितो बहुलाः समाः । आहेयो विषवानुग्रो नराश्वद्विपसंघहा ॥ ७ ॥ घोररूपो महारौद्रस्तनुत्रास्थिविदारणः । निर्भिन्द्यां येन रुष्टोऽहमपि मेरु महागिरिम् ॥ ८ ॥ तमहं जातु नास्येयमन्यस्मिन्

अध्याय ४०

संजय बोले कि तेजस्वी शल्य से निन्दा कियाहुआ कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर बचन रूपभालों को धारण करताहुआ बोला । १ । कि हे शल्य ! गुणवानों के गुणों को गुणवानही जानताहै गुणहीन मनुष्य नहीं जानता है; तुम गुणों से रहितहो इसीसे गुण और अवगुणों को क्या जानसक्तेहो । २ । हे शल्य मैं महात्मा अर्जुन के बड़े अस्त्रों को वा क्रोध बल पराक्रम धनुष और बाणोंको अच्छे प्रकार से जानता हूं । ३ । और राजाओं में वा यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजीकी भी महानता को जैसा कि मैं जानताहूं वैसा तुम नहीं जानतेहो । ४ । मैं अपने और पाण्डवों के पराक्रमको अच्छेप्रकार से जानताहुआ युद्धमें उसगांडीव धनुषधारीकोबुलाताहूं नकि अग्नि और पतंगकीनाईं । ५ । हे शल्य यहसुन्दर पुंखवाला रुधिर पीनेवाला तरकस में अकेला ही रहनेवाला स्वच्छ, अलंकृत । ६ । चन्दन से लिप्त बहुत वर्षों से पूजित सर्परूप विषधर उग्रमनुष्य घोड़े और हाथियों के समूहोंका मारनेवाला । ७ । घोररुद्ररूप कवच समेत अस्थियों का चूर्णकर्त्ता जिसके द्वारा मैं क्रोधयुक्त होकर मेरुपर्व्वत सरीके बड़े पर्व्वतों को भी चीर डालताहूं । ८ । मैं अर्जुन और

CHAPTER XL

Sanjaya said, "Insulted by Shalya, Karan was much enraged and thus spoke to him. "*Worthy men know the worth of the worthy men. Being* yourself unworthy, you can not know about merits and demerits. I know well the merits and strength as well as the bow and and arrows of Arjun. I know also the worth of Shri Krishn the best of Yadavas and kings as you do not. Knowing well the strength of the Pandavas and my self, I challenge the wielder of *Gandiv* to fight. My case is not that of insects and fire .5. This dart, O Shalya, fitted with beautiful feathers, blood drinking, kept single in a quiver, clean, sandal-pasted, worshipped for long years, like a venomous snake capable of slaying men,

फाल्गुनादृते । कृष्णाद्वा देवकीपुत्रात्सत्यञ्चात्र शृणुष्व मे ॥ ९ ॥ तेनाहमिषुणा शल्य
वासुदेवधनञ्जयौ । योत्स्ये परमसंक्रुद्धस्तत् कर्म सदृशं मम ॥ १० ॥ सर्वेषां वृष्णि
वीराणां कृष्णे लक्ष्मीः प्रतिष्ठिता । सर्वेषां पाण्डुपुत्राणां जयः पार्थे प्रतिष्ठितः ॥ ११ ॥
उभयं तत् समासाद्य कोऽतिवर्त्तितुमर्हति तावुभौ पुरुषव्याघ्रौ समेतौ स्यन्दने स्थितौ
॥ १२ ॥ मामेकमभिसंयातौ सुजातं पश्य शल्य मे । पितृष्वसामातुलजौ भ्रातरावपरा
जितौ । मणी सूत्र इव प्रोतौ द्रष्टासि निहतौ मया ॥ १३ ॥ अर्जुने गाण्डिवं कृष्णे
चक्रं तार्क्ष्यकपिध्वजौ । भीरूणां त्रासजननं शल्य हर्षकरं मम ॥ १४ ॥ त्वन्तु दुष्प्र
कृतिर्मूढो महायुद्धेष्वकोविदः । भयावदीर्णः संत्रासादबद्धं बहु भाषसे ॥ १५ ॥ तौ
हत्वा समरे हन्ता त्वामद्य सहबान्धवम् । सुहृद्भूत्वा रिपुः किं मां कृष्णाभ्यां भीषयस्य

देवकी नन्दन श्रीकृष्ण के सिवाय इस बाणको कभी दूसरे पर नहीं चलाऊंगा इसहेतु से में सत्य वचन कहताहूं । ९ । मैं अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसबाण से अर्जुन और वासुदेवजी से लडूंगा यह कर्म मेरेही योग्य है । १० । सब वृष्णि वंशी वीरोंकी लक्ष्मी श्रीकृष्ण जीमें नियत है और सब पाण्डवों की विजय अर्जुन में नियत है । ११ । इससे अब दोनों को एक रथपर पाकर कौन लौटसक्ता है । १२ । मुझ अकेले के सम्मुखहोनेपर हे शल्य मेरे युद्धकी शोभा को देखना बुआ और मामा के बेटे अजेय दोनों भाइयों को सूतमें पोहीहुई दोमणियों के सदृश मेरे हाथसे मृतकही देखोगे । १३ । अर्जुन के पास गांडीव धनुष है श्री कृष्णके पास सुदर्शनचक्र है और गरुड वा हनुमानजी के रूप रखनेवाली दोनों ध्वजा हैं हे शल्य भयभीतों को भयके उत्पन्न करनेवाले और मेरी प्रसन्नताके बढ़ानेवाले वह दोनों हैं । १४ । दुष्टप्रकृति अज्ञानी महायुद्ध में अनभिज्ञ भय से विदीर्ण चित्त तुम भयभीतहोकर बहुत से भयकारी वचनोंको कहतेहो । १५ । अब युद्ध में इनदोनों को मारकर तुझको भी बांधवों समेत मारूंगा तू मित्रहोकर शत्रु

horses and elephants, of dreadful form, breaker of bones and armours, with which I can break through mountains, has been reserved by me for Arjun and Vasudev and for no other. I shall fight with Arjun and Vasudev by means of that arrow. This work is worthy of me. 10. The prosperity of the Vrishnis depends upon Krishn and the conquest of the Pandavas depends upon Arjun. Finding both of them together, on the same car, who can return from fighting? You will see, Shalya, the beauty of my fighting at the time of encounter. You will see the two cousins (Krishn and Arjun), like two beads strung in the same thread, pierced and slain. Arjun possesses the gandiv bow and Shri Krishn wields the discus, known as Sudarshan, and they have their standards of garur and monkey. Both give joy to me and are the cause of fear to the timid. Yo-

लम् ॥ १७ ॥ तौ वा ममाद्य हन्तारौ हनिष्ये वापि तावहम् । नाहं बिभेमि कृष्णा भ्यां विजानन्नात्मनो बलम् ॥ १८ ॥ वासुदेवसहस्रं वा फाल्गुनानां शतानि वा। अहमेको हनिष्यामि जोषमास्स्व कुदेशज ॥ १९ ॥ स्त्रियो बालाश्च वृद्धाश्च प्रायः क्रीडागता जनाः । या गाथाः संप्रगायन्ति कुर्वन्तोऽध्ययनं यथा ॥ २० ॥ ता गाथा शृणु मे शल्य मद्रकेषु दुरात्मसु ॥ २१ ॥ ब्राह्मणैः कथिताः पूर्वं यथावद्राजसन्निधौ । श्रुत्वा चैकमना मूढ क्षम वा ब्रूहि वोत्तरम् ॥ २२ ॥ मित्रध्रुङ्मद्रको नित्यं यो नो द्वेष्टि स मद्रकः । मद्रके सङ्गतं नास्ति क्षुद्रवाक्ये नराधमे ॥ २३ ॥ दुरात्मा मद्रको नित्यं नित्यमानृतिकोऽनृजुः । यावदन्तं हि दौरात्म्यं मद्रकेष्विति नः श्रुतम् ॥ २४ ॥ पिता पुत्रश्च माता च श्वश्रूश्वशुरमातुलाः । जामाता दुहिता भ्राता नप्ता ते ते च बान्धवाः ॥ २५ ॥ वयस्याभ्यागताश्चान्ये दासीदासञ्च सङ्गतम् । पुंभिर्विमिश्रा

के समान मुझको श्रीकृष्ण और अर्जुन से क्या डराता है । १७ । यातो वह दोनों मुझकोही मारेंगे वा मैंहीं उन दोनों को मारूंगा मैं अपने पराक्रमको जानता हुआ श्रीकृष्ण और अर्जुनसे नहीं डरताहूं।१८।मैंअकेलाहीहजारो वासुदेवों और सैकड़ों अर्जुनों को मारसक्ताहूंहे दुर्देशमें उत्पन्न होनेवाले मौनहो । १९ । दुष्ट अन्तष्करण वाले मद्र देशियों के विषयमें क्रीड़ाके निमित्त इकट्ठे होनेवाले स्त्री बालक वृद्ध मनुष्यबहुधाजिनकथाओंको गानकरकेपढ़ाकरतेहैंहेशल्यउन गाथाओंकोमुझसेसुनो२१ औरपूर्वसमयमें इन्हीं कथाओंको राजाओंके समक्षमें ब्राह्मणोंनेभी जिसप्रकारसेवर्णन करीहै हे अज्ञानी तुम उनको एकाग्रचित्त से सुनकर क्षमाकरना या उत्तरदेना।२२। मद्रदेशी सदैव मित्रसे शत्रुता करनेवाले हैं जो हमसे शत्रुताकरता है हम उसको मद्रदेशी ही जानते हैं मद्रदेशी में मेळ मिलाप नहीं होता है औरआपस में दुर्वचन बोला करतेहैं । २३ । हमने सुना है कि मद्रदेशीयलोग सदैव दुष्टात्मा मिथ्यावादी और कुटिलहोते हैं । २४ । पिता, माता, पुत्र, सास, ससुर, मामा,जामात्र, लड़की भाई, पोते, बांधव और समान अवस्थावाले, अभ्यागत, और अन्यदासी दासआदि

talking nonsense on account of fear, wicked, foolish, unacquainted with warfare and timid as you are .55. Having slain both of them, I shall slay you together with your kinsmen. Being a friend why do you terrify me like an enemy. Either they will slay me or I shall slay them. Knowing my own prowess, I am not afraid of Arjun and Krishn. Alone I can slay thousands of Vasudevas and hundreds of Arjuna. Be silent you who are born in a wicked country. Hear about the songs which the ill-natured women, children and old men of Madra sing to please themselves. *Brahmans told this in tha presence of* kings. Hear them quietly and then you may either forgive or resent. 22. The people of Madra are always deceivers of friends: we call our enemies Madraks. They are not friendly and their talk with one

नार्य्यश्च ज्ञाताज्ञाताः स्वयेच्छया ॥ २६ ॥ येषां गृहेष्वशिष्टानां सक्तुमत्स्याशिनां तथा । पीत्वा सीधु सगोमांसं क्रन्दन्ति च हसन्ति च ॥ २७ ॥ गायन्ति चाप्यबद्धानि प्रवर्त्तन्ते च कामतः । कामप्रलापिनोऽन्योऽन्यं तेषु धर्मः कथं भवेत् ॥ २८ ॥ मद्रकेषु च लिप्तेषु प्रख्याताशुभकर्मसु । नापि वैरं न सौहार्दं मद्रकेण समाचरेत् ॥ २९ ॥ मद्रके सङ्गतं नास्ति मद्रको हि सदामलः । मद्रकेषु च संसृष्टं शौचं गान्धारकेषु च ॥ ३० ॥ राजयाजकयाज्ये च नष्टं दत्तं हविर्भवेत् । शूद्रसंस्कारको विप्रो यथा याति पराभवम् ॥ ३१ ॥ यथा ब्रह्मद्विषो नित्यं गच्छन्तीह पराभवम् । तथैव सङ्गतं कृत्वा नरः पतति मद्रकैः ॥ ३२ ॥ मद्रके सङ्गतं नास्ति हतं वृश्चिक ते विषम् । आथर्वणेन मन्त्रेण यथा शान्तिः कृता मया ॥ ३३ ॥ इति वृश्चिकदष्टस्य विषवेगहतस्य च

सब मिले हुये हैं और उनकी स्त्रियें जाने और जनाने पुरुषों के साथ अपनी इच्छासे विषय भोगकरने वाली हैं । २६ । इसीप्रकार जिन नीच अचेतता में युक्त मत्स्यखादकों के घरमें गौके मांससमेत मद्यको पीकर पुकारते और हँसते हैं । २७ । और अयोग्य गीतोंको भी गातेहुये इच्छानुसार कर्मो को करते हैं और परस्पर में भी इच्छानुसार वार्त्तालाप करते हैं उनमें धर्म कैसे होसक्ता है । २८ । जो कि मद्रदेशी अहंकारी होकर दुष्टकर्मी विख्यात हैं इसहेतुसे मद्रदेशियोंसे मित्रता और शत्रुता दोनों न करे । २९ । मद्रदेशियों में स्नेह और प्रीति नहींहोती और वह सदैव अपवित्रहैं मद्रदेशी और गान्धार देशियोंमें पवित्रता नष्टहोगई है । ३० । राजा जिस में याजकहै उस यज्ञमें जो हवि दियाजाता है वह सब जैसे नष्टताको पाता है और जिसप्रकार शूद्रोंका संस्कार करनेवाला ब्राह्मण तिरस्कारको पाताहै और जैसे इसलोकमें ब्राह्मणों के शत्रु सदैव नाशहोते हैं उसीप्रकार मद्रदेशियों से प्रीतिकरके मनुष्य नष्टताको पाताहै । ३२ । मद्रदेशी में मेलमिलाप नहीं है हे विषैले विच्छू मैंनेतेरे विषको अथर्वणवेदके मन्त्रोंसे शांतकियाहै । ३३ । इसीप्रकार

another is immoral. We hear that your countrymen are ill-natured, untruthful and, wicked. Fathers, mothers, sons, mothers-in-law, fathers-in law uncles, sons-in-law, daughters, brothers, grandchildren, kinsmen, people of the same age, guests and others mix with slaves, and their women associate with friends and strangers 26. The wicked people of your country eat fish and beef and revel after drinking wine. They sing immoral songs and are licencious. They talk as they please. how can they be virtuous? They are notorious for their wickedness and pride and therefore friendship and enmity is forbidden with them. The people of Madra are not friendly. They as well as the Gandhars are unclean.30. The libations poured by a king in the sacrificial fire are lost. The Brahman who presides at the ceremonies of Shudras, is degraded, likewise, he who forms friendship with the people of

कुर्वन्ति भेषजं प्राज्ञाः सत्यं तच्चापि दृश्यते ॥ ३४ ॥ एवं विद्वन् जोषमास्व शृणु चात्रोत्तरं वचः । वासांस्युत्सृज्य नृत्यन्ति स्त्रियो या मद्यमोहिताः ॥ ३५ ॥ मैथुने ऽसंयताश्चापि यथाकामचराश्च ताः ॥ तासां पुत्रः कथं धर्मं मद्रको वक्तुमर्हति ॥ यास्तिष्ठन्त्यः प्रमेहन्ति यथैवोष्ट्रा दशेरकाः ॥ ३६ ॥ तासां विभ्रष्टधर्माणां निर्लज्जानां ततस्ततः । त्वं पुत्रस्तादृशीनां हि धर्मं वक्तुमिहेच्छसि ॥ ३७ ॥ सुवीरकं याच्यमाना मद्रिका कर्षति स्फिचौ । अदातुकामा वचनमिदं वदति दारुणम् ॥ ३८ ॥ मा मां सुवीरकं कश्चित् याचतां दयितं मम। पुत्रं दद्यां पतिं दद्यां न तु दद्यां सुवीरकम् ॥ ३९ ॥ गौर्य्योऽबृहत्यो निर्ह्रीकाः माद्रिकाः कम्बलावृताः । घस्मरा नष्टशौचाश्च प्राय इत्यनुशुश्रुम ॥ ४० ॥ एवमादि मयान्यैर्वा शक्यं वक्तुं भवेद्बहु । आकेशाग्रान्नखाग्राच्च वक्तव्येषु कुकर्मसु ॥ ४१ ॥

ज्ञानीलोग बिच्छूके काटेहुये विषके वेगसे घायल मनुष्यकी औषधीकरते हैं वहभी सत्य २ देखनेमें आते हैं । ३४ । हे बुद्धिमान यातो मौन होजाओ नहीं तो ऐसे वचनों को सुनोगे जिन वचनों को मद्यसे मदोन्मत्त स्त्रियां गाकर नाचतीहैं । ३५ । उन स्वेच्छाचारी पतिवंचक भोगों में अनियम स्त्रियोंका पुत्र मद्रदेशी किसरीति से धर्म कहनेको योग्य होसक्ताहै । ३६ । जो स्त्रियांकि ऊंट और गधोंके समान खड़ी खड़ी पेशाबकियाकरती हैं उन बेधर्म और निर्लज्ज स्त्रियोंका पुत्रहोकर तू धर्म कहना चाहताहै । ३७ । जो स्त्रियां कांजी मांगनेपर कीचों को खींचतीहै और न देनेकी इच्छासे इन भयकारी असह्य वचनोंको कहती हैं । ३८ । कि कोई हमसे कांजी मतमांगो वह हमारी बड़ी प्रियहै बेटेको दें पतिको दें परन्तु कांजी को न देंगे । ३९ । कन्या और वृद्ध स्त्री निर्लज्जहैं और कम्बलोंकी धारण करनेवाली होकर बहुधा दुराचारिणी और भ्रष्टहैं । ४० । इसरीति से अन्यलोगभीशिरकी चोटीसे परके नखोंतक अयोग्य और अनुचित बातें मद्रदेशियोंके विषयमें कहाकरते हैं । ४१ । और पापिष्ट देशमें उत्पन्न होनेवाले म्लेच्छ रूप धर्म्मों से रहित मद्र,

Madra, is lost. The people of Madra are not social, I have allayed thy poison, O scorpion, with the hymns of the Atharv Ved. Wise men thus cure those who are stung by scorpions. Be quiet, wise man or you will hear from me the song sung by the drunken women of your country.33. How can one born of such lewd women talk of dharm? Being the son of shameless women who make water standing like camels and asses, how can you talk of dharm? When some one asks for a little vinegar of a Madrak woman, she scratches her hips, and not wishing to give it, she utters such unbearable and dreadful words, saying, "Let no one ask us to give vinegar which is very dear to us. We would rather give up a son or a husband than vinegar." Both young and old women are shameless. They wear blankets and are often lewd and unclean. People say that the Madraks are unclean from top

मद्रकाः सिन्धुसौवीरा धर्मं विद्युः कथन्त्विह । पापदेशोद्भवा म्लेच्छा धर्माणामविच क्षणाः ॥ ४२ ॥ एष मुख्यतमो धर्मः क्षत्रियस्येति नः श्रुतम् । यदाजौ निहतः शेते सद्भिः समभिपूजितः ॥ ४३ ॥ आयुधानां साम्पराये मन्मुच्येयमहं ततः । ममैष प्रथमः कल्पो निधने स्वर्गमिच्छतः ॥ ४४ ॥ सोऽहं प्रियः सखा चास्मि धार्त्तराष्ट्रस्य धीमतः । तदर्थे हि मम प्राणा यच्च मे विद्यते वसु ॥ ४५ ॥ व्यक्तं त्वमप्युपहितः पाण्डवैः पापदेशज । यथाचामित्रवत् सर्वं त्वमस्मासु प्रवर्त्तसे ॥ ४६ ॥ कामं न खलु शक्योऽहं त्वद्विधानां शतैरपि । संग्रामाद्विमुखः कर्त्तुं धर्मज्ञ इव नास्तिकैः ॥ ४७ ॥ सारङ्ग इव घर्मार्त्तः काम विलप शुष्य च । न हि भीषयितुं शक्यः क्षत्रवृत्ते व्यवस्थितः ॥ ४८ ॥ तनुत्यजां नृसिंहानामाहवेष्वनिवर्त्तिताम् । या गतिर्गुरुणा प्रोक्ता पुरा रामेण तां स्मरे ॥ ४९ ॥ तेषां त्राणार्थमुद्युक्तं वधार्थं द्विषतामपि । विद्धि मामास्थितं वृत्त

सिन्ध, और सौवीर देशीलोग कैसे धर्म्मों को जानेंगे । ४२ । यहभी हमनेसुना है कि क्षत्रियोंका यह श्रेष्ठधर्म्म है कि युद्धभूमि में मृतकहोकर अथवा सत्पुरुषों से स्तूयमानहोकर । ४३ । पृथ्वीपर शयनकरैं इसहेतुसे जो मैं युद्धभूमिमें जीवनको त्यागकरूं तो मुझ स्वर्गाभिलाषी का यह प्रथमकल्प है । ४४ । ऐसा मैं बुद्धिमान् दुर्य्योधनका प्यारामित्रहूं उसके लियेही मेरेप्राण और धनहैं हे पापी देशमें पैदा होनेवाले विदित होता है कि तूभी पांडवोंसे मिला हुआ है तुम शत्रु के सम न जैसे कर्म हमारे साथमें करतेहो । ४६ । यह निश्चय समझो कि मैं तुझ सरीके सैकड़ों मनुष्योंसे भी युद्धमें नहीं फिरूंगा जैसेकि धर्मज्ञ मनुष्य नास्तिक के वचनोंसे ।४७। धूपकेमारे सारंग पक्षीके समान विलापकर वा सूख क्षत्रीके व्यवहारमें नियतहोकर मैं डरानेके योग्य नहींहूं । ४८ । पूर्व्वसमयमें मेरेगुरु श्रीपरशुरामजीने युद्धमें मुख न मोड़नेवाले और शरीर त्यागनेवाले नरोत्तमलोगोंकी जो गति कही है उसको मैं स्मरण करताहूं । ४९ । और धृतराष्ट्र के पुत्रों की रक्षा और शत्रुओं के नाश

to toe. People born in that wicked country behave like mleches. How can those born in Madra, Sindh and Sauvir know of Dharm? 42. We hear that the best duty of a kshatrya is to lie on earth slain in battle or praised by the virtuous. It would be a happy moment for me, if I lie dead on the ground. Duryodhan is very dear to me and I can lay down my life and wealth for his sake. You, who are born in a wicked country, seem to be in collusion with the Paudawas. You behave with me like an enemy.46. Remember well that I can not turn back from battle at the instigation of hundreds of men like you, as a virtuous men can not be misled by an athiest You may scream like a sarang bird afflicted by the heat of the Sun, but I am not to be terrified by you. I remember the lot of those best of men who die in a field of battle without turning back, as was told me by my

पौरुरवसमुत्तमम् ॥ ५० ॥ न तद्भूतं प्रपश्यामि त्रिषु लोकेषु मद्रक । यो मामस्मा
दभिप्रायाद्वारयेदिति मे मतिः ॥ ५१ ॥ एवं विद्वान् जोषमास्व त्रासात् किं बहु
भाषसे । मा त्वां हत्वा प्रदास्यामि क्रव्याद्भ्यो मद्रकाधम ॥ ५२ ॥ मित्रप्रतीक्षया शल्य
धार्त्तराष्ट्रस्य चोभयोः । अपवादतितिक्षाभिस्त्रिभिरेतैर्हि जीवसि ॥ ५३ ॥ पुनश्चेदी
दृशं वाक्यं मद्रराज वदिष्यसि । शिरस्ते पातयिष्यामि गदया वज्रकल्प
या । ५४ ॥ श्रोतारस्त्विदमद्येह द्रष्टारो वा कुदेशज । कर्णं वा जघ्नतुः कृष्णौ कर्णो
वा निजघान तौ ॥ ५५ ॥ एवमुक्त्वा तु राधेयः पुनरेव विशाम्पते । अब्रवीन्मद्रराजा
नं याहि याहीत्यसम्भ्रमम् ॥ ५६ ॥

इति कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे चत्वारिंशोऽध्यायः । ४० ॥

करने में प्रवृत्त हूं मुझको उत्तम व्यवहारमें नियत पुरवावंशी जानो । ५० । हे राजामद्र मैं तीनोंलोकों में ऐसा किसी जीवधारीको नहीं देखताहूं जो मुझको इस विचारसे हटावे यह मेरा सिद्धान्त है । ५१ । हे बुद्धिमान ऐसा जानकर मौनहो भयभीत होकर क्यों बहुत बकता है हे मद्रदेशियों में नीच मैं तुझको मारकर कच्चे मांस भक्षियों को नहींदूंगा ।५२। हे शल्य तुम मित्र दुर्योधन इन दोनों और अपवादकेभय से घातक जीवते बचेहो । ५३ । हे राजा मद्र जो तू फिर ऐसे वचनों को कहेगा तो तेरे शिरको अपनी वज्रकी समान गदासे काटकर पृथ्वीपर गिराऊंगा । ५४ । हे दुष्टदेश में उत्पन्न होनेवाले अब यहां इस बातकोदेख और सुन कि श्रीकृष्ण और अर्जुन कर्णको मारें अथवा कर्ण उन दोनों को मारे ।५५। हेराजा इसप्रकार कहकरफिरकर्ण राजामद्रसे बोला कि निर्भय होकर तुमचलो ५६॥

---

preceptor Parashuram. I am ready to protect the sons of Dhritrashtra and to slay their foes I shall imitate the noble character of Pururava.50. I donot see a creature in the three worlds that can turn me from my purpose. Knowing this you must keep silent. Why do you talk like timid men ? I shall not slay you to give you to flesh-eating birds, because you are a friend of Duryobhan, and because they will blame me. I shall break your head with my vajra like mace, if you will again say such words to me. Now look and hear attentively: either Karan will slay Krishn and Arjun or they will kill him." Having said this, Karan asked the king of Madra to proceed fearlessly."56

सञ्जय उवाच। मद्रेशोऽधिरथेः श्रुत्वा वाचो युद्धाभिनन्दिनः। शल्योऽब्रवीत् पुनः कर्णं निदर्शनमुदाहरन्॥ १ ॥ जातोऽहं यज्वनां वंशे संग्रामेष्वनिवर्त्तिनाम्। राज्ञां मूर्द्धाभिषिक्तानां स्वयं धर्मपरायणः ॥ २ ॥ यथैव मत्तो मद्येन त्वं तथा लक्ष्यसे वृष। यथापि त्वां प्रमाद्यन्तं चिकित्सेयं सुहृत्तया ॥ ३ ॥ इमां काकोपमां कर्ण प्रोच्यमानां निबोध मे। श्रुत्वा यथेष्टं कुर्यास्त्वं निहीनकुलपांसन ॥ ४ ॥ नाहमात्मनि किञ्चिद्वै किल्बिषं कर्ण संस्मरे। येन मां त्वं महाबाहो हन्तुमिच्छस्यनागसम्॥५॥ अवश्यन्तु मया वाच्यं बुध्यता त्वद्धिताहितम्। विशेषतो रथस्थेन राज्ञश्चैव हितैषिणा ॥ ६ ॥ समञ्च विषमञ्चैव रथिनश्च बलाबलम्। श्रमः खेदश्च सततं हयानां रथिना सह ॥ ७ ॥ आयुधस्य परिज्ञानं रुतञ्च मृगपक्षिणाम्। भारश्चाप्य

अध्याय ४१

संजय बोले कि हे श्रेष्ठ फिर शल्य युद्धके अभिलाषी अधिरथी कर्ण के वचनों को सुनकर उससे यह उदाहरणदेकरयह वचन बोला।१ कि मैं अपने धर्म्म में नियत यज्ञकर्त्ता युद्धमें मुख न मोड़ने वाले मूर्द्धाभिषेक राजाओं के वंशमें उत्पन्न हुआ हूं। २। हे कर्ण जैसे मदिरा से उन्मत्त मनुष्य होता है वैसाही तू मुझको दिखाई देताहै इससे अब मैं उसीप्रकारसे शुभचिंतकतासे तुझमतवाले की चिकित्सा करताहूं। ३। हे नीच कुलकलङ्की कर्ण इस मेरी कहीहुई काकोपमा को समझो उसको सुनकर अपनी इच्छाके अनुसार कर्म करना। ४। हे कर्ण मैं अपने विषय में उस दोषको स्मरण नहीं करताहूं जिसके हेतुसे हे महाबाहु तुम मुझ निरपराधी को मारना चाहतेहो। ५। मुख्यकर राजा का अभ्युदय चाहनेवाले रथपर सवार होकर मैं तेरे हानिलाभ के कहने के योग्यहूं मेरे इन वचनों को समझो। ६। कि टेढ़ा सीधा मार्ग रथके सवारों की बल निर्बलता रथकी सवारी में घोड़ोंका क्लेश और थकावट। ७। शस्त्रोंकाज्ञान पशु पक्षियोंके शब्द भारकी न्यूनाधिकता

CHAPTER XLI

Sanjaya said, " Hearing tne words of Karan who was so eager for fighting, Shalya cited the following example, saying, " I am descended from crowned monarchs who were firm on their duty, performed sacrifices and were unflinching in war. You look like a drinkard and I shall have to cure you of your folly. Hear the example of a crow and then yon may act as you like. I remember no fault of mine which can justify you in slaying me. Being specially a well-wisher of Daryodhan and in the capacity of the driver of your car, I must show you the pros and cons, strength and weakness, state of horses, knowledge of weapons, omens taken from the sounds of birds and beasts, quantity of weight, cure of wounds, putting together of weapons and other

स्तैः सर्वैरल्पबुद्धिभिरण्डजः । तद्वचः सत्यमित्येव मौर्ख्याद्दर्पाच्च मन्यते ॥ १७ ॥ तेषां यं प्रवरं मेने हंसानां दूरपातिनाम् । तमाह्वयत दुर्बुद्धिः पताव इति पक्षिणम ॥ १९ ॥ तच्छ्रुत्वा प्राहसन् हंसा ये तत्रासन् समागता । भाषतो बहु काकस्य बलिनः पततां वराः ॥ २० ॥ इदमूचुः स्म चक्राङ्गा वचः काकं विहङ्गमाः ॥ २१॥ हंसा ऊचुः वयं हंसाश्चरामेमां पृथिवीं मानसौकसः । पक्षिणाञ्च वयंनित्यं दूरपातेन पूजिताः ॥२२॥ कथं नु हंसं बलिन चक्राङ्ग दूरपातनम् । काको भूत्वा निपतन सना ह्वयसि दुर्मते ॥ २३ ॥ कथं त्वं पतिता काक सहस्माभिर्ब्रवीहि तत ॥ २३ ॥ अथ हंसवचो मूढः कुत्सयित्वा पुनःपुनः । प्रजगादोत्तरं काकः कत्थनो जातिलाघवात् ॥ २४ ॥ काक उवाच । शतमेकञ्च पातानां पतितास्मि न संशयः । शतयोजन मेकैकं विचित्रं विविधं तथा ॥ २५ ॥ कर्त्तास्मि मिपतां वोऽद्य ततो द्रक्ष्यथ मे बलम् । तेषामन्यतमेनाहं पतिष्यामि विहायसम । प्रदिशध्वं यथान्यायं केन हंसाः पताम्य

अहङ्कार और अज्ञानता से उस वचनको सत्यही जाना । १७ । और उन दूरजाने वाले बहुत हंसोंके पास जाकर उस दुर्बुद्धीने कहा कि तुमलोगों में से जो श्रेष्ठहोय वह मेरे साथ उड़े ।१८। यह सुनकर वह सब आयेहुये हंस हँसे और उन आकाश चारी मनगामी और पक्षियों में श्रेष्ठ हंसों में से चक्रांग नाम हंसने उस अहंकारी काकसे कहा । २१ । कि हम हंसोंकी गति मनके समान है और दूर जाने के कारण से हम सब पक्षियों में शिरोमणि गिनेजाते हैं हे निर्बुद्धी तू काक होकर अपने साथ हमको उड़ने के लिये कैसे बुलाता है । २३ । भला कहतो सही कि तू हमारे साथ किस प्रकारसे उड़ेगा यह सुनकर उस निकृष्ट जाति और अपनी प्रशंसा आप करनेवाले काकने हंसों के कहेहुये वाक्यों को वारंवार निंदा करके उत्तर दिया । २४ । कि मैं निस्सन्देह एक सौ एक प्रकारकी गति से उड़ सक्ताहूं और प्रत्येकगति शतयोजन लम्बी चित्र विचित्र प्रकारकी है । २५ । उन गतियों को मैं तुम्हारे सम्मुख करताहूं इसीनिमेरे पराक्रमको देखोगे मैं उन गतियों मेंसे एक

of birds that fly in air." On hearing his praise, the foolish crow was puffed up with pride and believed in what they had said. Then going to the far-flying swans the fool said, "Let the best among you fly with me. The swans laughed at his words and their leader, known as Chakrang, said to him, "We fly swift like the mind and we are considered best among birds on account of our long flight. How can yon challenge us to fly with you, foolish crow? How can you keep pace with us?" The vain crow laughed with scorn at the reply of the swan and said, "I can fly a hundred and one sorts of ways, every sort clearing a hundred yojans in a wonderful manner. 25. I shall show you those flights and from them you will see my prowess. I shall fly in one of those ways, whichever you may like"

हम् ॥ २६ ॥ एवमुक्ते तु काकेन प्रहस्यैको विहङ्गमः उवाच काकं राधेय वचनं तन्निबोध मे ॥ २७ ॥ हंस उवाच । शतमेकञ्च पातानां त्वं काक पतिता ध्रुवम् । एकमेव तु यं पातं विदुः सर्वे विहंगमाः ॥ २८ ॥ तमहं पतिता काक नान्यं जानामि कञ्चन । पत त्वमपि रक्ताक्ष येन पातेन मन्यसे ॥ २९ ॥ अथ काकाः प्रजहसुर्ये तत्रासन् समागताः कथमेकेन पातेन हंसः पातशतं जयेत् ॥ ३० ॥ प्रपेततुः स्पर्द्धया च ततस्तौ हंसवायसौ । एकपाती च चक्राङ्गः काकः पातशतेन च ॥ ३१ ॥ अथ काकस्य चित्राणि पतितानि मुहुर्मुहुः दृष्ट्वा प्रमुदिताः काका विनेदुरधिकैः स्वरैः ॥ ३२ ॥ अथ हंसः स तच्छ्रुत्वा प्रापतत् पश्चिमां दिशम् । उपर्य्युपरि वेगेन सागरं मकरालयम् ॥ ३३ ॥ ततो भीः प्राविशत् काकं तदा तत्र विचेतसम् । द्वीपद्रुमानपश्यन्तं निपातार्थे श्रमान्वितम् ॥ ३४ ॥ निपतेयंक्व तु श्रान्त

गतिके द्वारा आकाशमें उड़ताहूं हे हंसलोगो आप जिस गतिसे कहो उसीगतिसे उड़ूं । २६ । काकके इसवचनको सुनकर एक हंस ने हँसकर काकको उत्तर दियाहै हे कर्ण उस वचनको मुझ से समझो । २७ । हंसने कहा हे काक तुम निश्चयकरकेसौ प्रकारकी गतिको गड़ोगे और मैं उसी गतिसे उडूंगा जिस गतिसे सबपक्षी उड़ते हैं । २८ । क्योंकि मैं इस एकगतिके सिवाय दूसरीगतिको नहीं जानताहूं हे ताम्राक्ष अबतुमभी चाहैजिस गतिसे उड़ो । २९ । इसके पीछे जो वहां और काक इकट्ठे होगयेथे वह सब हँसे और कहनेलगे कि हंस एकही गतिवालाहोकर सौ गति जानने वाले को कैसे परास्त करसक्ता है । ३० । इसके अनन्तरहंस और काक ईर्षाकरके उड़े अर्थात् एक गति उड़नेवाला हंस सौ गतिवाले काक के साथ उड़ा । ३१ । उसकी विचित्र गति को देखकर सब काक प्रसन्नहुये और उच्चस्वरसे चिल्लाये । ३२ । हंसउसके वचनको सुन बहुतसा हँसकर पश्चिम समुद्रकी ओरको चला ३३ और उसके संगकाकभी अपनेपरों को चपल करताहुआ चला समुद्र के ऊपर चलते २ कुछदरपर काक थकित होगया और कोई वृक्ष टाप न देखके धैर्यतासे रहित होकर उड़नेलगा । ३४ । जब उसके सबपक्ष शिथिलहोगये तब समुद्रमें गिर

On hearing the crow's words one of the swans replied. His answer is worth hearing. He said, "You may fly in a hundred ways, O crow; but I shall fly in the way that all birds do, for I know no other ways. Yo may fly in whatever way you like, red-eyed one." The crow laughed at this and said, "How can a swan knowing only one way of flight, defeat a crow who knows a hundred ways.' 30. Then the crow and the swan flew together. The swan who could fly a single flight, flew with the crow who knew a hundred ways. The crows assembled there were pleased at the wonderful flight of the crow and cawed loudly. The swan laughed at him and flew over the western sea. The crow too, flew fast with him over the Ocean, but

इति तस्मिन् जलार्णवे ॥ ३५ ॥ अविषह्यः समुद्रो हि बहुसत्वगणालयः । महा
भूतशतोद्भासी नभसोऽपि विशिष्यते ॥ ४६ ॥ हंस उवाच । बहूनि पतितानि त्वमा
चक्षाणो मुहुर्मुहुः । पातस्य व्याहरंश्चेदं न नो गुह्यं प्रभाष से ॥ ३६ ॥ किं नाम
पतितं काक यत्वं पतसि साम्प्रतम । जलं स्पृशसि पक्षाभ्यां तुण्डेन च पुनःपुनः॥३७॥
प्राणैर्हंस प्रपद्ये त्वां द्वीपान्तं प्रापयस्व माम ॥ ३८ ॥ यद्यहं स्वस्तिमान् हंस
स्वदेशं प्राप्नुयां विभो । न कञ्चिदवमन्येयमापदो मां समुद्धर ॥ ३९ ॥ अनुकत्वा
वायसं हंसो जलक्लिन्नं सुदुर्दशाम् । पद्भ्यामुत्क्षिप्य वेपन्तं पृष्ठमारोपयच्छनैः ॥ ४० ॥
उच्छिष्टभोजनः काको यथा वैश्यकुले तु सः । एवं त्वमुच्छिष्टभृतो धार्त्तराष्ट्रैर्न
संशयः ॥ ४१ ॥ द्रोणद्रौणिकृपैर्गुप्तो भीष्मेणान्यैश्च कौरवैः । विराटनगरे पार्थमेकं किं
नावधीस्तदा ॥ ४२ ॥ यत्र व्यस्ताः समस्ताश्च निर्जिताः स्थाकिरीटिना ।शृगाला इव
सिंहेन क्व ते वीर्यमभूत्तदा ॥ ४३ ॥ भ्रातरञ्च हतं दृष्ट्वा समरे सव्यसाचिना

पड़ा । ३५ । हंसके कहा कहो सौ गतियोंमेंसे यह कौनकी आपकी गतिहै कि
जलमें मौनहोकरअपनेपक्ष और चोंचको डुबाते और निकालतेहो ।३७। यह वचन
सुनकरवह नीच वायसआरत वचनोंसे बोला हेहंस अब आप अपनी ओरकोदेखकर
मेरे ऊपर क्षमाकरो और जलसे निकालकर मुझको कहीं पहुंचादो॥३८॥यदिमैं अपने
देशमें पहुंचजाऊं तोफिर कभी किसीका अपमान न करूंगा । ३९ । हे कर्ण यह
काकके वचन सुनकर हंसने अपने पंजेसे उसको पकड़कर स्थलमें लाकर डालदिया
। ४० । सो जैसेकिवैश्यकेघरमें उच्छिष्ट खाखाकर काकपुष्टहुआउसीप्रकार तुमभी
धृतराष्ट्रके घरमेंखाके मोटेहोकरबढ़ेहो । ४१ । विराटनगरमें द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य
और भीष्मादिक सरीके शूरवीरोंको पार्थने विजयकिया तब तुमने अकेले अर्जुनको
क्योंनहीं मारा । ४२ । उसस्थानपर पृथक्२ और संयुक्ततुमसब लोगोंकोअर्जुननेऐसे
विजयकिया जैसेकि शृगालोंको सिंहविजयकरताहै तबतेरा पराक्रमकहांथा ।४३। युद्धमें
अर्जुन के हाथसे मारेहुये भाईको देखकर सब कौरवी वीरों के देखते हुये प्रथमतो

was tired after some time. Seeing no tree or island in the way, he flew on with a very distressed mind. His wings became stiff and he fell down into the sea. Then the swan said, "Which of your hundred flights is this flight that you silently sink and raise your beak and wings." At this the mean crow much humiliated, said, "Excuse me and take me out from water. If through your kindness I reach some land, I shall never look down upon any one." At this the swan took up the crow with his claws and left it on land. 40. You have become fat on the food of the sons of Dhritrashtra as the crow was on that of the Vaishyas. Arjun defeated Drona, Krip, Bhishm and other warriors at Virat. Why did you not slay him when he was alone? There he conquered you all, singly and separately, as a lion does jackals; where was

। पश्यतां कुरुवीराणां प्रथमं त्वं पलायितः ॥ ४४ ॥ तथा द्वैतवने कर्ण गन्धर्वैः समभिद्रुतः । कुरून् समग्रान्त्सृज्य प्रथमं त्वं पलायितः ॥ ४५ ॥ हत्वा जित्वा च गन्धर्वांश्चित्रसेनमुखान्रणे । कर्ण दुर्योधनं पार्थः सभार्यं समवोक्षयत् ॥ ४६ ॥ पुनः प्रभावः पार्थस्य पौराणः केशवस्य च । कथितः कर्ण रामेण सभायां राजसंसदि ॥ ४७ ॥ सततञ्च त्वमश्रौषीर्वचनं द्रोणभीष्मयोः । अवध्यौ वदतोः कृष्णौ सन्निधौ च महीक्षिताम् ॥ ४८ ॥ कियदत्र तत् प्रवक्ष्यामि येन येन धनञ्जयः । त्वत्तोऽतिरिक्तः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो ब्राह्मणो यथा ॥ ४९ ॥ इदानीमेव द्रष्टासि प्रधाने स्यन्दने स्थितौ । पुत्रञ्च वसुदेवस्य कुन्तीपुत्रञ्च पाण्डवम् ॥ ५ ॥ यथाश्रयत चक्राङ्गं वायसो बुद्धिमास्थितः । तथाश्रयस्व वार्ष्णेयं पाण्डवञ्च धनञ्जयम् ॥ ५१ ॥ यदा त्वं युधि विक्रान्तौ वासुदेवधनञ्जयौ । द्रष्टास्येकरथे कर्ण तदा नैवं वदिष्यसि

तुम्हीं भागे हे । ४४ । हे कर्ण इसीप्रकार द्वैतवन में गन्धर्वोंसे सम्मुखता होनेमें प्रथम तुमहीं सब कौरवों को छोड़कर भागेथे । ४५ । वहां भी हे कर्ण अर्जुन ने ही युद्धमें गन्धर्वों को मारकर और चित्रसेनादिकों का विजय करके स्त्री समेत दुर्योधन को छुटाया था । ४६ । हे कर्ण फिर परशुरामजी ने राजाओं के मध्य सभा के बीच अर्जुन और केशवजी का प्राचीन प्रभाव वर्णन किया था । ४७ । तुमने राजालोगों के समक्ष में श्रीकृष्ण और अर्जुनको अवध्य वर्णन करने वाले भीष्म और द्रोणाचार्य के वारंवार कहे हुये वचनों को सुना । ४८ । मैं उसको कहांतक तुझसे कहूं अर्जुन अनेक प्रकार से तुझ से ऐसा अधिक है जैसे कि सब जीवों से ब्राह्मण अधिक होताहै ४९ तू अभी रथपर चढ़ेहुये वसुदेव नन्दन और कुन्ती नन्दन श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखेगा । ५० । जैसे कि बुद्धि में नियत होकर काक हंसके पास शरणागत हुआ उसी प्रकार तू भी वासुदेवजी और अर्जुनके पास जाकर शरणागतहो । ५१ । हे कर्ण जब तुम युद्धमें पराक्रमी

your prowess then ? Seeing your brother slain by Arjun, you were the first to run away in the presence of all the Kaurav warriors. In the same manner you fled from the Dwait forest, from the Gandharvas. 45, Arjun conquered Chitrasen and other Gandharvas there and rescued Duryodhan and his wife from their captivity. Parashuram mentioned the gretness of Arjun and Keshav in the assembly of kings and you have often heard from Drona and Bhishm the indestructibility of those two great men. *How long should I tell you this!* Arjun is as superior to you as a Brahman is to other beings. You will see presently the sons of Vasudev and Kunti. As the crow, on receiving a lesson, took refuge with the swan so you should go to Arjun and take refuge. You will now see Arjun and

॥ ५२ ॥ यदा शरशतैः पार्थो दर्पं ते दारयिष्यति । तदा त्वमन्तरं द्रष्टा आत्म
नश्चार्जुनस्य च ॥ ५३ ॥ देवासुरमनुष्येषु प्रख्यातौ यौ नरोत्तमौ । तौ मावमंस्था
भीमवीर्यं खद्योत इव रोचनौ ॥ ५४ ॥ सूर्याचन्द्रमसौ यद्वत्तद्वदर्जुनकेशवौ ।
प्रकाशेनाभिविख्यातौ त्वन्तु खद्योतवन्नृषु ॥ ५५ ॥ एवं विद्वान्मावमंस्थाः सूतपुत्रा
च्युतार्जुनौ । नृसिंहौ तौ महात्मानौ जोषमास्स्व विकत्थने ॥ ५६ ॥

इति कर्णपर्वणि हंसकाकीयोपाख्याने एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

अर्जुनऔर वासुदेवजीको एक रथपर देखोगे तब ऐसी बातेंनकहोगे ।हेराजन् अर्जुन सैकड़ों बाणोंसे तेरे अहंकारका नाश करेगा तभी तुम अपने और अर्जुनके बलाबल रूप अन्तरको देखोगे । ५३ । अरे;जो नरोत्तम देव असुर और मनुष्योंमें प्रसिद्धहैं उनका अपमान तुम ऐसे मतकरो जैसे कि पटबीजना सूर्यका अपमान नहीं कर सक्ता । ५४ । जैसे कि सूर्य और चन्द्रमा हैं उसी प्रकार अर्जुन और श्रीकृष्णजी अपने तेजसे विख्यातहैं तुम मनुष्योंमें पटबीजनेके समानहो । ५५ । हेबुद्धिमानसूतके पुत्र कर्ण तू अर्जुन और केशवजीका अपमान मतकर यह दोनों नरोत्तम महात्माहैं मौनहोजा अपनी प्रशंसा मतकर ५६ ॥

Vasudev seated on the same car and then you will forget saying such things. You will mark the difference between your strength and that of Arjun, when the latter crushes your pride with hundreds of his arrows. Donot insult the best of gods, asurs and men, for a glow-worm cannot surpass the Sun. Shree Krishn and Arjun are famous for their glory like the sun and the moon, while you are like a glow-worm among men. Donot insult Shree Krishn and Arjun son of Sut, They are the best of men. Be silent and cease giving yourself praise." 56.



सञ्जय उवाच। मद्राधिपस्याधिरथिर्महात्मावचो निशम्याप्रियमप्रतीतः। उवाच शल्यं विदितं ममैतद् यथाविधावर्जुनवासुदेवौ ॥ १ ॥ शौरे रथं वाहतोऽर्जुनस्य बलं महास्त्राणि च पाण्डवस्य। अहं विजानामि यथावदद्य परोक्षभूतं तव तत्तु शल्य ॥ २ ॥ तौ चाप्रधृष्यौ शस्त्रभृतां वरिष्ठौ व्यपेतभीर्योधयिष्यामि कृष्णौ। सन्तापयत्यधिकन्तु रामाच्छापोऽद्य मां ब्राह्मणसत्तमाच्च ॥ ३ ॥ अवसं वै ब्राह्मणच्छद्मनाहं रामे पुरा दिव्यमस्त्रं चिकीर्षुः। तत्रापि मे देवराजेन विघ्नो हितार्थिना फाल्गुनस्यैव शल्य ॥ ४ ॥ कृतो विभेदेन ममोरुमेत्य प्राप्य कीटस्य तनु विरूपाम। ममोरुमेत्य प्रबिभेद कीटः सुप्ते गुरौ तत्र शिरो निधाय ॥ ५ ॥ ऊरुप्रभेदाच्च महान् बभूव शरीरतो मे घनशोणितौघः। गुरोर्भयाच्चापि न चालयामहं तत्तत्र

अध्याय ४२ ॥

संजय बोले कि महात्मा कर्ण शल्य के अप्रिय वचनों को सुनकर शल्य से बोला कि मैं ठीक जानताहूं जैसे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजी हैं । १ । मैं अर्जुन के रथके हांकनवाले केशवजी और अर्जुन के पराक्रम समेत बड़े अस्त्रों को भी अच्छी रीति से जानताहूं हे शत्रुरूप शल्य उसको तू नहीं जानता है । २ । मैं उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और निर्भयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुन से युद्ध करूंगा परंतु ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजी का दिया हुआ शाप अब मुझको अधिकतर दुःख दे रहा है । ३ । हे शल्य शापका कारण यह था कि मैं पूर्व समय में दिव्य अस्त्रोंका अभिलाषी होकर ब्राह्मणका रूप बनाकर कपट से परशुरामजी के पास ठहरने को गयाथा वहांभी अर्जुनकीही उन्नति चाहने वाले देवराज इन्द्रने । ४ । भयानकरूप कीटके शरीर में प्रवेश करके मेरी जंघामें चिपटकर काटने से विघ्नकरादिया अर्थात् मेरी जंघापर शिर रखकर गुरू परशुरामजी के सोनेपर उस कीटने मेरी जंघा को काटा । ५ । और बड़े घाव होनेके कारण मेरी जंघा में से बहुतसा रुधिर प्रकट हुआ परन्तु मैंने गुरूजी के भय से शरीरको जराभी न कंपाया इसके पीछे जब

CHAPTER XLII

Sanjaya said, "Hearing the unwelcome words of Shalya, Karan said, "I know the reality of Krishn and Arjun. I know well the prowess of Arjun and Krishn and the power of their arms more than you do. I shall fight with those intrepid and best of warriors, but the curse of Parashuram afflicts me much. The cause of the curse was that desirous of obtaining divine weapons, I went to Parashuram in the disguise of a Brahman. There too, Indra the well-wisher of Arjun undid me, for in the shape a dreadful reptile, he clung to my thigh, while Parashuram was reclining his head on it. The reptile bit by thigh and a great quantity of blood flowed down from the wound. But I did not move my body for fear of disturbing the preceptor. On

बुद्धो ददर्शोऽथ विप्रः ॥ ६ ॥ स धैर्ययुक्तं प्रसमीक्ष्य मां वै न त्वं विप्रः कोऽसि सत्यं वदेति । तस्मै तदात्मानमहं यथावदाख्यातवान् सूतवदेत्य शल्य ॥ ७ ॥ स मां निशम्याथ महातपस्वी संशप्तवान् रोषपरीतचेताः । सूतोपधावाप्तमिदं तवास्त्रं न कर्मकाले प्रतिभास्यति त्वाम् ॥ ८ ॥ अन्यत्र तस्मात्तव मृत्युकालाद् ब्राह्मणे ब्रह्म न हि ध्रुवं स्यात् । तदद्य पर्याप्तमतीव चास्त्रमस्मिन् संग्रामे तुमुले तात भीमे ॥ ९ ॥ योऽयं शल्य भरतेषूग्रवेगः प्रकर्षणः सर्वहरोऽतिभीमः । सोऽभिमन्ये क्षत्रियाणां प्रवीरान् प्रतापिता बलवान् वै विमर्दः ॥ १० ॥ शल्योग्रधन्वानमहं वरिष्ठं तरस्विनं भीममसह्यवीर्यम् । सत्यप्रतिज्ञं युधि पाण्डवेयं धनञ्जयं मृत्युमुखं नयिष्ये ॥ ११ ॥ अस्त्रं हि मे तत् प्रतिपन्नमद्य येन क्षेप्स्ये समरे शत्रुपूगान् । प्रतापिनं बलवन्तं कृतास्त्रं तमुग्रधन्वानममितौजसञ्च । क्रूरं शूरं रौद्रममित्र

गुरुजी जागे और उस मेरी जंघा के रुधिरको देखा । ६ । उन्होंने उस घाव से भी मुझको धैर्यता में नियतदेखा तब यह वचन कहा कि निश्चयकरके तू ब्राह्मण नहीं है कौन है यह सत्य कहो ह शल्य तबतो मैंने सूतके समान समीप जाकर अपना यथार्थ वृतान्त कहा । ७ । उस समय क्रोधयुक्त होकर महा तपस्वी गुरुजी ने मुझको देखकर शापदिया कि हे सूत तूने अपनी ज्ञातिको गुप्तकरके जो इस अस्त्रको प्राप्त किया है वह युद्धकर्म के समय पर तुझको स्मरण न रहैगा । ८ । इससे सिवाय मृत्यु कालमेंयहब्रह्मास्त्र स्थिरनहींहोगा अबइस भयकारी कठिनयुद्धमेंउसबड़े अस्त्रका प्रयोग संहार स्मरण नहीं आताहै । ९ । हे शल्य जो यह सबका मारनेवाला महाघोर भयानकरूप प्रबलयुद्ध भरतवंशियोंमें उत्पन्न हुआहै यह कालरूप युद्ध बहुतसे बड़े क्षत्री शूरवीरों को निश्चय करके संतप्त करेगा । १० । परन्तु मैं उसउग्र धनुषधारी महावेगवान् भयानक कठिनता से सहने के योग्य सत्य पराक्रम और प्रतिज्ञा वाले पाण्डव अर्जुन को युद्धमें मृत्युके मुखमें पहुँचाऊंगा । ११ । वह मेरा अस्त्र

awakening he saw the blood on my thigh and said, "Surely you are not a Brahman. Who are you? Speak the truth." Then I had to disclose my secret. He was very angry and cursed me, saying, "You will not remember at your need the knowledge of arms which you acquired by keeping your birth a secret.8. This weapon will not stay with you at the time of your death." During this dreadful battle, I donot remember how to discharge that weapon. This dreadlul battle among the descendants of Bharat, will bring about the ruin of many warriors.10. Finding that great archer, unbearable and of great velocity in fighting, of true prowess and vows, I shall throw him ints the jaws of death. With my weapons I shall destroy great

सोऽहं धनञ्जयं संयुगेऽहं हनिष्ये ॥ १२ ॥ अपांपतिर्वेगवानप्रमेयो निमज्जयिष्यन्
बहुलाः प्रजाश्च ॥ १३ ॥ महावेगं संक्रुद्धते समुद्रो वेला चैव धारयत्यप्रमेयम्
॥ १४ ॥ प्रमुञ्चन्तं बाणसंघानमोघान् मर्मच्छिदो वीरहनः सुपत्रान् । कुन्तीपुत्रं
प्रतियोत्स्यामि युद्धे ज्याः कर्षतामुत्तममद्य लोके ॥ १५ ॥ एवं बलेनातिबलं महास्त्रं
समुद्रकल्पं सुदुरापमुग्रम् । शरौघिणं पार्थिवान्मज्जयन्तं वेलेव पार्थमिषुभिः सस
हिष्ये ॥ १६ ॥ अद्याहवे यस्य न तुल्यमन्यं मन्ये मनुष्यं धनुरादधानम् । सुरासुरान्
यो युधि वै जयेत तेनाद्य मे पश्य युद्धं सुघोरम् ॥ १७ ॥ अतीव मानी पाण्डवो युद्ध
कामो ह्यमानुषैरेष्यति मे महास्त्रैः मस्त्रास्त्रमस्त्रैः प्रतिहत्य सर्वं बाणोत्तमैः पातयिष्यामि
पार्थम् ॥ १८ ॥ दिवाकरेणाभिसमं तपन्तं समाप्तरश्मिं यशसा ज्वलन्तम् । तमो

वर्त्तमानहै उसीके द्वारा युद्धमें शत्रुओं के समूहों को और मतापी बलवान् अस्त्रज्ञ और महाउग्र धनुषधारी तेजस्वी निर्दयी शूर रुद्र शत्रुओं के नाशकरनेवाले अर्ज्जुन को युद्धमें ऐसे मारूंगा जैसे कि महावेगवान् अप्रमेय जलोंका स्वामी समुद्र अनेक जीवोंको अपने में मग्न करलेता है । १३ । जैसे समुद्र बड़ा वेगवान् वृद्धिसे भरे मर्य्यादा और किनारों को धारणकरताहै । १४ । इसी प्रकार अब मैं भी इस लोकके युद्धमें मर्मोंके भेदी वीरों के मारनेवाले तीक्ष्णबाण समूहों के छोड़नेवाले प्रत्यञ्चा खैंचनेवालों में श्रेष्ठ अर्ज्जुनके साथ युद्धकरूंगा । १५ । इस रीतिसे बाणोंके बलके प्रतापसे उसबड़े पराक्रमी अस्त्रज्ञ समुद्रकी समान महादुर्जेय बड़े शूरवीर राजाओं के नाशकरनेवाले अर्ज्जुन को ऐसे सहूंगा जैसे कि समुद्र को मर्य्यादा सहलेतीहै । १६ । अब युद्ध में जिसके समान दूसरे धनुषधारीको नहीं समझता और मानताहूं वह देवता और असुरोंको भी युद्धमें विजय करसक्ताहै उसके साथ अब मेरे महाघोर युद्धको देखो युद्धाभिलाषी महाअहङ्कारी अर्जुन दिव्य महाअस्त्रों के द्वारा मेरे सम्मुख आवेगा । १७ । तब मैं युद्ध में उसके अस्त्रों को अपने अस्त्रोंसे हटाकर उत्तम बाणों से उस सूर्य्यकेसमान उग्रदिशाओंके तपानेवाले अर्जुन को गिराऊंगा । १८ । जैसे कि बड़ाबादल सूर्य्य को ढकदेताहै

warriors as well as the great archer Arjun as the Ocean does those who fall *into it*. Like the Ocean rising in anger in of spite its shore, I shall, with my foe-destroying *arrows*, *encounter the great archer* Arjun. 15. With the strength of my arrows, I shall withstand invincible Arjun the destroyer of brave warriors, as the coast does the ocean. I believe that Arjun is the greatest archer, capable of conquering the gods and asuras. You will see my dreadful battle with him. Proud Arjun, desirous of fighting, will face me with his powerful weapons; but having checked his weapons with mine own, I shall kill him who scorches all warriors like the Sun. I shall, with my arrows, hide glorious Arjun the scorcher of the world, as the clouds

नूनं मेघ इवाग्निमात्रं धनञ्जयं छादयिष्यामि बाणैः ॥ १९ ॥ वैदधानंदं धूमशिखं ज्वलन्तं तेजस्विनं लोकमिमं दहन्तम् । मेघो यथा शरवर्षेणधाहं कुन्तीपुत्रं शम यिष्यामि युद्धे ॥ २० ॥ युद्धे सहिष्ये हिमवानिवाचलो धनञ्जयं क्रुद्धममृष्यमाणम् । विशारदं रथमार्गेषु शक्तं धुर्यं नित्यं समरेषु प्रवीरम् ॥ २१ ॥ लोके वरं सर्व धनुर्धराणां धनञ्जयं संयुगे ससहिष्ये । सर्वामिमां यः पृथिवीं विजिग्ये तथा विद्वान् योद्धयमानोऽस्मि तेन ॥ २२ ॥ यः सर्वभूतानि सदैवतानि प्रदंप ऽजयत् खाण्डवे सव्यसाची ॥ २३ ॥ को जीवितं रक्षमाणो हि तेन युयुत्सते मामृते मानुषोऽन्यः ॥ मानी दृढास्त्रः कृतहस्तयोगो दिव्यशस्त्रवित् श्वेतहयः प्रमाथी ॥ २४ ॥ तस्याहं मद्यातिरथस्य कायात् शिरो हरिष्यामि शितैः पृषत्कैः । योत्स्याम्यहं शल्य धनञ्जयेन मृत्युं पुरस्कृत्य रणे जयं वा ॥ २५ ॥ अन्यो हि नास्त्येकरथेन मर्त्यो युध्येत यः

उसीप्रकार अग्निरूप क्रोध रखनेवाले महातेजस्वी इसलोक के भस्म करनेवाले अर्जुन को अपने बाणों से आच्छादित करदूंगा । १९ । मैं बादलरूप अपने वर्षा रूप बाणोंसे युद्धमें उस अग्निरूप बड़ पराक्रम रखनेवाले महारकर्त्ता वायुरूप उग्र अर्जुनको शान्तकरूंगा । २० । हिमालय पर्वत के समान युद्ध में अग्निके समान क्रोधरूप पण्डित सत्यवक्ता रथ मार्गों में समर्थ महाबली अर्जुन को देखूंगा । २१ । लोकमें अद्वितीय धनुर्धर जिसके समान दूसरा नहीं देखता और जिसने सब पृथ्वी को विजयकिया मैं युद्धमें सम्मुखहोकर उस अर्जुन से लड़ूंगा । २२ । जिस अर्जुनने इन्द्रप्रस्थ के समीप खाण्डववन में देवताओं समेत सबजीवों को विजय किया । २३ । उस वीरके सम्मुखमेरे सिवाय इच्छापूर्वक कौन युद्ध करसक्ताहै वह महा अहंकारी अस्त्र हस्तलाघवका करनेवालादिव्य शस्त्रोंकेप्रयोग संहारोंका ज्ञाता मनुष्यका पचानेवाला है । २४ । अब मैं तीक्ष्ण बाणों से उन अतिरथीके शिरको देहसे जुदाकरूंगा हे शल्य मैं युद्धमें विजयको और मृत्युको आगे करके इस अर्जुन से लड़ूंगा । २५ । ऐसा मेरे सिवाय दूसरा कोई मनुष्य नहीं है जोकि उन इन्द्रके समान पराक्रमी के साथ एकरथसे युद्धकरे मैं युद्धमें प्रसन्न चित्त होकर क्षत्रियों के

hide the Sun. I shall extinguish the fire of Arjun's weapons with the rain of my arrows. 20. I shall see Arjun, who is firm like a mountain, enraged like fire, learned, truthful, clever in fighting and full of prowess. I believe that there is no other warrior in the world equal to Arjun the conqueror of all the world, but I shall fight with him. He conquered the gods and other creatures at the Khandav forest. No warrior, except myself, can cope with proud Arjun who is so clever in fighting and in the use of celestial weapons. I shall now sever his head from his body and shall fight with him for death or conquest 25. None except myself can fight with that warrior of Indra like prowess. I am eulogising the bravery of Arjun in the presence of all

पाण्डवं मृत्युकल्पम्। तस्याहवे पौरुषं पाण्डवस्यब्रूयां हृष्टः समितौ क्षत्रियाणाम्॥२६॥ किं त्वं मूर्खः प्रसभं मूढचेताः समावोचः पौरुषं फाल्गुनस्य। अप्रियो निष्ठुरो हि क्षुद्रः क्षेप्ता क्षमिणश्चाक्षमावान्॥ २७॥ हन्यामहं तादृशानां शतानि क्षमाम्यहं क्षमया कालयोगात्। अतोचस्त्वं पाण्डवार्थेऽप्रियाणि प्रधर्षयन्मां पापकर्मा॥ २८॥ मय्यार्जवे जिह्ममतिर्हतस्त्वं मित्रद्रोही साप्तपदं हि मैत्रम्। कालस्त्वयं प्रत्युपयाति दारुणो दुर्य्योधनो युद्धमुपागमद्यत्॥ २९॥ सिद्धिं त्वभिकांक्षमाणस्तन्मन्यसे यत्र नैकान्त्यमस्ति। मित्रं मिदेर्नन्दतेः प्रीयते र्वा संत्रायतेर्मिनुतर्मोदतेर्वा॥ ३०॥ ब्रवीमि ते सर्वमिदं ममास्ति तच्चापि सर्वमम वेत्ति राजा॥३१॥शत्रुः शदेः शासतेर्वाश्यतेर्वाशृणातेर्वा श्वसतेः सीदतेर्वा। उपसर्गाद्बहुधा सूदतेश्च प्रायेण सर्वं त्वयि तच्च मह्यम॥ ३२॥ दुर्य्योधनार्थं तव च प्रियार्थं

देखतेहुये उस पांडव अर्जुनकी वीरता वर्णन करताहूं। २६। तुम महामूर्ख और अज्ञानचित्त होकर हठसे उस अर्जुनकी वीरताको क्या कहतेहो जो पुरुष अप्रिय कठोर चित्त नीच और अशान्तचित्त होताहै वह शान्त चित्तवालोंकी ... करता है। २७। मैं इस प्रकारके सैकड़ों पुरुषों को मार सक्ताहूं परन्तु मैं क्षमा करनेके समय आनेपर क्षमाकर देताहूं हेपापात्मा शल्य तू अज्ञानीके समान डराकर अर्जुनके लिये अप्रियवचनोंको कहताहै। २८। हे सत्यताके समय मित्रसे शत्रुता करनेवाले कुटिल बुद्धि निश्चय करके मित्रता सात पदोंसे संबंध है वह भयकारी समय सम्मुख आता है जिससे कि दुर्य्योधनने युद्धकोप्राप्त किया है। २९। और मैं भी उसीके अभीष्ट सिद्धीका चाहनेवालाहूं परन्तु तुम उसी मानतेहो जिस में कि प्रीति नहीं है अर्थात् हमारा पक्षवाला होकर भी साथ प्रीति करता है मित्रवहहै जो प्रसन्न करै अथवा रक्षाकरै और सुखदे। ३०। मैं तुमसे सत्य कहताहूं कि यह सब गुणमुझमें प्राप्तहैं राजा दुर्य्योधन मेरे गुणोंको जानताहै और मारनाशासनकरना स्वाधीन करना दंडदेना लम्बेश्वासलेनेमें प्रवृत्त करना और पीड़ित करना इनगुणोंके होनेसे शत्रुकहाजाता है। ३२। यह

the wrriors. Being ignorant and unacquainted with Arjun, you talking foolishly of his bravery. A bad-natured, hard hearted man, of unpeaceful mind, speaks ill of those who are of contented minds. I *can slay hundreds of people like you*, but being of a *forgiving* nature, I forgive you. Being a sinful man, you terrify me by praising Arjun. You show enmity towards friends. Surely, O fool, friendship is of seven degrees. Duryodhan has brought about these terrible times. I am his well-wisher, but you seem to lack in friendship as you show your love towards another. 30. I tell you truly that I possess all the good pualities required of friendship, such as pleasing, protecting and giving happiness, and Duryodhan knows it. An enemy, on the

यतोऽर्थमात्मार्थमपीदृशरार्थम् । तस्मादहं पाण्डववासुदेवौ योत्स्ये यत्नात् कर्म
तत् पश्य मेऽद्य । अस्त्राणि पश्याद्य ममोत्तमानि ब्राह्मास्त्राणि दिव्यान्यथ मानुषाणि
॥ ३३ ॥ आसादयिष्याम्यहमुग्रवीर्यं द्विपो द्विपं मत्तमिवातिमत्तः । अस्त्रं ब्राह्मस्य
मनसा तदजय्यं क्षेप्स्ये पार्थायाप्रमेयं जयाय ॥ ३४ ॥ तेनापि मे नैव मुच्येत
युद्धे न चेत् पतेद्विषमे मेऽद्य चक्रम ॥ ३५ ॥ वैवस्वताद्दण्डहस्ताद्वरुणाद्वापि
पाशिनः । सगदाद्वा धनपतेः सवज्राद्वापि वासवात् ॥ ३६ ॥ अन्यस्माद्वपि
कस्माच्चिदमित्रादाततायिनः । इति शल्य विजानीहि यथा नाहं बिभेम्यतः भस्माच्च
मे भयं पार्थाद्वापि चैव जनार्दनात् ॥ ३७ ॥ सह युद्धं हि मे ताभ्यां साम्पराये
भविष्यति । कदाचिद्विजयस्याद्यमस्त्रहेतोरटन्नृप ॥ ३८ ॥ अज्ञानाद्धि क्षिपन्
बाणान् घोररूपान् भयानकान् ॥ ३९ ॥ होमधेन्वा वत्समस्य प्रमत्त इषुणाहनम्

सब गुण बहुधा तुझमें नियतहैं इसनिमित्त अथवैं दुर्योधनकी वा तेरीइच्छा अथवा
अपनी शुभकीर्ति और ईश्वरकी प्रसन्नताके लिये अर्जुन और वासुदेवजीसे लड़ूंगा
अब उस कर्मको वा ब्रह्मास्त्र आदि महा उत्तम और दिव्य अस्त्रों को और मानुषी
शस्त्रों को देखो । ३३ । मैं उस उग्र पराक्रमी को ऐसे प्राप्तकरूंगा जैसे
कि बड़ा मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथीको और विजयके हेतु उस अजेय
ब्रह्मास्त्रको मनसे अर्जुनके ऊपर चलाऊंगा । ३४ । उस मेरे अस्त्रसे भी युद्धमें
कोई शत्रु नहीं बचसक्ता है जो कदाचित् यह रथकाचक्र किसीगढ़ेमें नहीं गिरे
। ३५ । तो हे शल्य मैं दण्डधारी यमराज पाशभृत् वरुण गदाधारी कुबेर वज्र
धारीन्द्र और युद्धाभिलाषी शस्त्रोंसे मारनेवाले किसीप्रकारकेभी शत्रुसे नहींडरताहूं
इसीहेतुसे मुझको अर्जुन और श्रीकृष्णजी से जराभी भयनहींहै । ३७ ।
मेरायुद्ध उन दोनोंके साथ परलोकके निमित्तहोगा हे राजा इसका हेतु यहहै कि
एकसमय शस्त्रोंके सीखनेमें मैंनेघोररूप अस्त्रोंको फेंकने में । ३८ ।
वहां अज्ञानतासे एक ब्राह्मणकी होम साधन करनेवाली गौका बछड़ा जो निर्जन

---

hand, destroys, injures, causes us to heave long sighs and makes us cheerless. All those signs are found in you. To please Duryodhan, as well as you and myself, and for the sake of fame and to please God, I shall fight with Arjun and Vasudev. Now you will witness my deeds, and celestial and human weapons. I shall meet that brave man as one mad elephant meets with another, and shall discharge the Brahmastra in mind alone, to gain victory over Arjun. None can scape my weapon if my wheel does not sink in the ground. I am not afraid of Yam, Varun, Kuver, Indra or any other foe. I am in no way afraid of Sri Krishna and Arjun. My fight with them will be for the sake of the next world. One day I was practising archery and sending forth dreadful arrows. Unknowingly I hit the calf of a Brahman's cow

यांमात्रेण कथञ्चन । अन्यं जानीहि यः शक्यस्त्वया भीषयितुं रणे ॥ ४ ॥ नीचस्य बलमेतावत् पारुष्यं यत् त्वमात्थ माम् । अशक्तो मद्गुणान् वक्तुं वल्गसे बहु दुर्मते ॥ ५ ॥ न हि कर्णः समुद्भूतो भयार्थमिह मद्रक । विक्रमार्थमहं जातो यशोऽर्थञ्च तथात्मनः ॥ ६ ॥ सारथिभावेन सौहार्दान्मित्रभावेन चैव हि । कारणैस्त्रिभिरेतैस्त्वं शल्य जीवसि साम्प्रतम् ॥ ७ ॥ राज्ञश्च धृतराष्ट्रस्य कार्यं सुमहदुद्यतम् । मयि तच्चाहितं शल्य तेन जीवसि मे क्षणम् ॥ ८ ॥ कृतश्च समयः पूर्वं क्षन्तव्यं विप्रियं वचः ॥ ९ ॥ ऋते शल्यसहस्रेण विजयेयं परानहम् । मित्रद्रोहस्तु पापीयानिति जीवसि साम्प्रतम् ॥ १० ॥

इति कर्ण पर्वणि शल्य संवादे त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४३॥

केवल वार्तोंहा से किसी दशामें भी भयभीत होनेको योग्य नहींहूं हे शल्य वह कोई दूसरेही मनुष्यहोंगे जो युद्धमेंअर्जुनसे डरें । ४ । नीच मनुष्यकी इतनी ही सामर्थ्य है जो तुमने मुझको कठोर वचन कहे हे दुर्बुद्धी मेरी प्रशंसा करने को असमर्थ होकर तुम बहुतसी बातें करते हो । ५ । हे मद्रदेशी इसलोक में कर्ण भयके लिये नहीं उत्पन्नहुआ है किन्तु यशकीर्ति और पराक्रम के हेतु मैंने जन्मालिया है । ६ । हे राजाशल्य तुम इनतीन कारणों से जीते बचेहो एकतो सारथ्यकर्म्म करने से उत्पन्न हुई मित्रता दूसरे-मेरी क्षमायुक्त प्रकृति तीसरे अपने परममित्र दुर्य्योधन के कार्य्य सिद्धके लिये । ७ । हे शल्य राजा दुर्य्योधनका बड़ा भारी कार्य्य वर्त्तमान होकर मुझमें नियत है इसहेतुसे-अल्पकाल तक मेरे हाथसे जीवते हो क्योंकि प्रथम मैं नियम करचुकाहूं कि तेरे अप्रिय वचनों को सहूंगा । ९ । मैं शल्य के बिनाभी शत्रुओं को विजयकरसक्ता हूं और मित्रसे शत्रुता करना पापकर्म कहा है इसी कारण से तुम जीवते हो । १० ।

---

may be terrified of Arjun. A wicked man like you can be terrified by words. You cannot speak of my merits and are talking nonsense. 5. Karan is not created in this world to be terrified, he is born for fame and prowess. You owe life to three things, Shalya: friendship arising out of your work as a driver. my forgiving nature: and *the thought of accomplishing the work of my dear friend Duryodhan.* A great weight of Duryodhan's work lies on me and therefore I spare you for a short time; I have promised to hear your harsh words for some time. I can conquer my foes without Shalya. It is a sin to make enmity with a friend and therefore you are alive." 10.



शल्य उवाच । ननु प्रलापाः कर्णैते यान् ब्रवीषि परान् प्रति । ऋते कर्ण सहस्रेण शक्यं जेतुं परान् युधि ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । तथा ब्रुवन्तं परुषं कर्णो मद्राधिपं तदा । परुषं द्विगुणं भूयः प्रोवाचाप्रियदर्शनः ॥ २ ॥ कर्ण उवाच । इदन्तु मे त्वमेकाग्रः शृणु मद्रजनाधिप । सन्निधौ धृतराष्ट्रस्य प्रोच्यमानं मया श्रुतम् ॥ ३ ॥ देशांश्च विविधांश्चित्रान् पूर्ववृत्तांश्च पार्थिवान् । ब्राह्मणाः कथयन्तः स्म धृतराष्ट्रमुपासते ॥ ४ ॥ तत्र वृद्धः पुरावृत्ताः कथाः कश्चिद्द्विजोत्तमः । बाह्लीकदेशान् मद्रांश्च कुत्सयन् वाक्यमब्रवीत् ॥ ५ ॥ बहिष्कृता हिमवता गङ्गया च बहिष्कृताः । सरस्वत्या यमुनया कुरुक्षेत्रेण चापि ये ॥ ६ ॥ पञ्चानां सिन्धुषष्ठानां नदीनां येऽन्तराश्रिताः । तान् धर्मबाह्यानशुचीन् बाह्लीकान् परिवर्जयेत् ॥ ७ ॥ गोवर्द्धनो नाम वटः सुभाण्डं नाम चत्वरम् । एतद्राजकुलद्वारमाकुमारात् स्मरा-

अध्याय ४४ ॥

शल्यबोला हे कर्ण निश्चय करके ये सब निष्फल बातें हैं जिनको तुम शत्रुओं के विषय में कहते हो युद्धमें हजार कर्ण के बिनाभी मेरे हाथसे शत्रुविजय होनेके योग्य हैं । १ । संजय बोले कि इस पीछे कर्णने इसप्रकार के कठोर वचन कहनेवाले शल्य से फिर प्रथमसेभी द्विगुणित ऐसे कठोर वचन कहे जो देखने और सुनने के अयोग्यथे । २ । कर्णबोला हे राजा मद्र तुम चित्तको स्थिर करके उन वचनों को सुनो जो दुर्य्योधन के समक्ष में । ३ । ब्राह्मणों ने धृतराष्ट्रकी सभाके मध्य नानाप्रकार के अद्भुत देशों के भूत वृत्तान्तों को राजाओं से वर्णन कियाथा वहां एक वृद्धब्राह्मणोत्तम भूतकालीन वृत्तान्त विषयक कथाओं को कहता वाहीक और मद्रदेशोंकी निन्दा करता हुआ यह वचनबोला, ५। कि जो लोग हिमाचल पर्व्वत श्रीगंगाजी सरस्वती यमुना और कुरुक्षेत्रसे अलग कियेगये हैं और जो लोग पंजाब और सिन्ध के मध्य में निवास करनेवाले हैं उन धर्महीन अपवित्र वाहीक नामवालों को त्यागकरें । ७ । वहांपर गोवर्धन अर्थात्

CHAPTER XLIV

Shalya said, "surly, O Karan, your words are to no *purpose. I can* conquer the foe without the help of a thousand Karans." *Sanjaya* said, "Hearing the harsh words of Shalya, Karan *spoke to him in* doubly harsh words unfit for the ear. Karan *said,* "*Hear* me attentively, O Shalya, the words which a Brahman *said in the* court of Dhritrashtra, while giving an account of *various countries.* An old Brahman, speaking about the *countries of Vahik* and Madra said, "Those who live beyond the *Himalayas,* the Ganges, the Saraswati, the Yamuna and *Kurukshetra—those* who live between the Punjab and Sindh— the *Vahiks are the lowest* class of men, There is a slaughter house for kine *and a stall for* selling wine at

कथं सञ्जय राधेयः प्रत्यव्यूहत पाण्डवान् । धृष्टद्युम्नमुखान् सर्वान् भीमसेना भिरक्षितान् । सर्वानेव महेष्वासानजय्यानमरैरपि ॥ ५ ॥ क च पक्षौ प्रपक्षौ वा मम सैन्यस्य सञ्जय । प्रविभज्य यथान्यायं कथं वा समवस्थिताः ॥ ६ ॥ कथं पाण्डुसुताश्चापि प्रत्यव्यूहन्त मामकान् । कथञ्चैव महद्युद्धं प्रावर्त्तत सुदारुणम् ॥ ७ ॥ क च बीभत्सुरभवत् यत् कर्णोऽयाद्युधिष्ठिरम् । को ह्यर्जुनस्य सान्निध्ये शक्तोऽभ्येतुं युधिष्ठिरम् ॥ ८ ॥ सर्वभूतानि यो ह्येकः खाण्डवे जितवान् पुरा कस्तमन्यस्तु राधेयात् प्रतियुध्येज्जिजीविषुः ॥ ९ ॥ सञ्जय उवाच । शृणु व्यूहस्य रचनामर्जुनश्च यथागतः । परिवार्य्य नृपं स्वं स्वं संग्रामश्चाभवद्यथा ॥१०॥ कृपः शारद्वतो राजन्मागधाश्च तरस्विनः । सात्वतः कृतवर्मा च दक्षिणं पक्षमाश्रिताः ॥ ११ ॥ तेषां प्रपक्षौ शकुनिरुलूकश्च महारथः । सादिभिर्विमलप्रासैस्तवानीकमरक्षताम् ॥ १२ ॥ गान्धारिभिरसम्भ्रान्तैः पार्वतीयैश्च दुर्जयैः । शलभानामिवव्रातैः

सब पाण्डवों के सम्मुख जिन में अग्रगामी धृष्टद्युम्न था कैसे व्यूहको अलंकृत किया । ५ । और देवताओं सेभी अजेय बड़े धनुषधारी सब युद्धकर्त्ताओं को किस किस रीति से रोका और हे संजय मेरी सेनासे पक्ष और प्रपक्ष कौन हुये । ६ । और न्याय के अनुसार सेना का विभागकरके किस रीति से नियत हुये और पाण्डवों ने भी मेरे पुत्रों के सम्मुख कैसे व्यूहको रचा । ७ । और वह महाभ भयानक युद्ध कैसे जारीहुआ और उस समय अर्ज्जुन कहांथा जबकि कर्ण युधिष्ठिर के सम्मुख गयाथा । ८ । क्योंकि अर्ज्जुन के समक्षमें युधिष्ठिरके सम्मुख जाने को कौन समर्थ होसक्ताहै कि जिस अकेले ने पूर्वकालमें खाण्डव वनके सबजीव मात्रों को विजय किया उसके सम्मुख कर्णके सिवाय कौनसापुरुष जीवनकी आशाकरके युद्धको करे । ९ । संजयबोले कि व्यूहकी रचनाको सुनिये और जैसे अर्ज्जुन वहां से गया और जिसरीतिसे अपने राजाको घेरेहुये युद्ध जारीहुआ । १० । हेराजा शारद्वत कृपाचार्य वेगवान् मगध देशीय यादव कृतवर्मा यह तो दाहिने पक्षपर नियत हुये । ११ । और उनके प्रपक्षपरमहारथी शकुनि और महारथी उलूक ने स्वच्छप्रास रखनेवाले सवारों समेत आपकी सेनाको रक्षित किया । १२ । भयसे

dyumn?5. How did he check all those warriors who were invincible even by gods? Who were for and against my side? How was the army divided and posted? How did the Pandavas arrange their army? How was the battle fought? Where was Arjun when Karan opposed Yudhishthir? For, who could oppose Yudhishthir in the presence of Arjun, who alone conquered all at the Khandav forest? Who, desirous of life, except Karan, could withstand Arjun?" Sanjaya said, "Hear how the army was arranged; how Arjun went there and how the battle was fought. Kripacharya and Kritvarma stood on the right, and Shakuni and Uluk, with the horse-

पिशाचैरिव दुर्दृशैः ॥ १३ ॥ चतुर्विंशतसहस्राणि रथानामनिवर्त्तिनाम । संशप्तका युद्धशौण्डा वामं पार्श्वमपालयन् ॥ १४ ॥ समन्वितास्तव सुतैः कृष्णार्जुनजिघांसवः । तेषां प्रपक्षाः काम्बोजाः शकाश्च यवनैः सह ॥ १५ ॥ निदेशात् सूतपुत्रस्य सरथाः साश्वपत्तयः । आह्वयन्तोऽर्जुनं तस्थुः केशवञ्च महाबलम् ॥ १६ ॥ मध्ये सेनामुखे कर्णो ह्यवातिष्ठत दंशितः । चित्रवर्माङ्गदः स्रग्वी पालयन् वाहिनीमुखम् ॥ १७ ॥ रक्ष्यमाणः सुसंरब्धैः पुत्रैः शस्त्रभृतां वरः । वाहिनीप्रमुखे वीरः संप्रकर्षन्नशोभत ॥ १८ ॥ अयवर्त्तन्महाबाहुश्चन्द्रवैश्वानरप्रभः । महाद्विपस्कन्धगतः पिङ्गाक्षः प्रियदर्शनः ॥ १९ ॥ दुःशासनो वृतःसैन्यैः स्थितो व्यूहस्य पृष्ठतः । तमन्वयान्महाराज स्वयं दुर्य्योधनो नृपः । २० ॥ चित्रायुधै

उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित गान्धारदेशी लोग और कठिनतासे विजय होनेवाले उन पहाड़ियों समेत जोकि टीड़ीदल के समान पिशाचोंके तुल्य कठिनता से देखनेके योग्यथे । १३ । मुख न मोड़नेवाले चौबीस हजाररथी युद्धमें कुशल संसप्तकोंने बायें पक्षको रक्षितकिया । १४ । वह सब आपके पुत्रोंसे युक्त श्रीकृष्ण अर्जुनके मारनेके अभिलाषी थे और पाण्डवों के मपक्षमें यवनों समेत कांबोज देशीय शकजातिके लोगहुये । १५ । और कर्णकी आज्ञासे रथ घोड़ और पत्तियों समेत सबलोग श्रीकृष्णजी और अर्जुनको पुकारतेहुये । १६ । वह अपूर्व कवच बाजूबन्द और मालाधारण करनेवाला कर्णभी सेनामुखको रक्षितकरताहुआ सेनाके मुखकर नियतहुआ । १७ । वह अत्यन्त क्रोधित आपके पुत्रोंसे व्याप्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शूरवीर कर्ण सेनाका संहार कर्त्ता मध्य सेना मुखपर शोभायमान । १८ । और सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशित अपूर्व्व दर्शन पिंगलवरण नेत्रवाले बड़ हाथीपर सवार सेना समेत व्यूहके पृष्ठभागकर दुश्शासन नियतहुआ हेराजा उसके

men armed with prases, guarded the other wing. 12. Free from uneasiness of fear, the invincible warriors of Gandhar, and the hill warriors, numberless like a flight of locusts, terrible to look at like pishaches, with twenty four thousand invincible car-warriors of the Sansaptaks clever in fighting, guarded the left wing. All these, with your sons, were desirous of slaying Arjun and Shri Krishn. On the side of the Pandavas, were the Yavans, Camboje sand Shakas. All the warriors, whether on cars or on horse back or on foot, led by Karan, challenged Krishn and Arjun to fight. 16. Karan adorned with armour, garland and armlet, protected the entrance of the array. Valiant Karan, the best of warriors, looked glorious at the head of the army. Mounted on a yellow elephant of wonderful form, glorious like the sun or fire, Dushasan stood protecting the rear. Armed with wonderful weapons and armour, accompanied by his brothers as well

श्चित्रसन्नाहैः सोदर्यैरभिरक्षितः । रक्ष्यमाणो महाबाहुः सहितैर्मद्रकेकयैः ॥ २१ ॥
अशोभत महाराज देवैरिव शतक्रतुः । अश्वत्थामा कुरूणाञ्च ये प्रवीरा महारथाः
॥ २२ ॥ नियमस्थाश्च मातङ्गाः शूरैर्म्लेच्छैः समन्विताः । अन्वयुस्तद्रथानीकं
क्षरन्त इव तोयदाः ॥ २३ ॥ ते ध्वजैर्वैजयन्तीभिर्ज्वलद्भिः परमायुधैः । सादिभि
श्चास्थिता रेजुर्द्रुमवन्त इवाचलाः ॥ २४ ॥ तेषां पदातिनागानां पादरक्षाः सहस्रशः
पट्टिशासिधरा शूरा बभूवुरनिवर्तिनः ॥ २५ ॥ सादिभिस्यन्दनैर्नागैरधिकं समलं
कृतैः । स व्यूहराजो विबभौ देवासुरचमूपमः ॥ २६ ॥ बार्हस्पत्यः सुविहितो
नायकेन विपश्चिता । नृत्यतीव महाव्यूहः परेषां भयमादधत् ॥ २७ ॥ तस्य
पक्षप्रपक्षेभ्यो निष्पतन्ति युयुत्सवः । पत्त्यश्वरथमातङ्गाः प्रावृषीव बलाहकाः
॥ २८ ॥ ततः सेनामुखे कर्णं दृष्ट्वा राजा युधिष्ठिरः । धनञ्जयममित्रघ्नमेक

पीछे अद्भुत अस्त्र और कवचधारी निज भाइयों से और एकत्रहुये बड़े शूरवीर मद्र और कैकेय देशियों से चारों ओरसे रक्षित आप राजा दुर्य्योधन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि देवताओंके मध्यमें रक्षा कियाहुआ इन्द्र शोभित होताहै और अश्वत्थामा वा कौरवोंके बड़े २ महारथी शूर म्लेच्छोंसे युक्त सदैव मतवाले बादलों के समान मदरूप जलके डालनेवाले हाथी उस रथोंकी सेनाके पीछे २ चले। २३। वह ध्वजा पताका वा प्रकाशित उत्तम शस्त्र और सवारों समेत नियत होकर ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि वृक्षधारी पर्वत होतेहैं । २४ । उन पदाती और हाथियोंके पाद रक्षकभी पट्टिश और खड्गके धारण करनेवाले मुख न मोड़नेवाले हजारों शूरवीर वर्त्तमानथे । २५ । वह देवासुरोंकी सेनाके समान व्यूहराज सवार रथ और हाथियों समेत अलंकृत महा शोभायमान हुआ । २६ । उस बुद्धिमान सेनापति ने इसरीतिसे बार्हस्पत्य व्यूहकोरचा उस नाचतेहुये महा व्यूहको भय उत्पन्नहुआ २७ उसके पक्ष और प्रपक्षों से पत्ती घोड़े रथ और हाथी सवकेसव युद्धाभिलाषी होकर ऐसे निकलतेथे जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल निकलते हैं । २८ । इसके पीछे राजा

as the warriors of Madra and Kaikaya, Prince Duryodhan looked like Indra surrounded by gods. Ashwathama and other brave warriors of the Kauravas, accompanied by Mlechas like clouds or elephants, followed the army. 23. With banners, standards, glorious weapons and horsemen, they looked glorious like hills with trees. The foot soldiers and guards of the elephants, armed with pattishes and swords, invincible in battle, were thousands in number. 25. Like the army of Indra, the warriors mounted on cars and elephanst, looked very glorious. The wise leader of the armies, arranged the forces after the fashion of Vrihaspati and caused consternation among the foes. The foot, horse and elephants at the wings of his army, desirous of fighting, looked like clouds of rains. Prince Yudhishthir, seeing

वीरमुवाच ह ॥ २९ ॥ पश्यार्जुनमहाव्यूहं कर्णेन विहितं रणे । युक्तं पक्षैः प्रपक्षैश्च परानीकं प्रकाशते ॥ ३० ॥ तदेतद्वै समालोक्य प्रत्यमित्रं महाबलम् । यथा नाभिभवत्यस्मांस्तथा नीतिर्विधीयताम् ॥ ३१ ॥ एवमुक्तोऽर्जुनो राज्ञा प्राञ्जलिर्नृपमब्रवीत् । यथा भवानाह तथा तत् सर्वं न तदन्यथा ॥ ३२ ॥ यस्यास्य विहितो घातस्तं करिष्यामि भारत । प्रधानवध एवास्य विनाशस्तं करोम्यहम् ॥ ३३ ॥ युधिष्ठिर उवाच । तस्मात्त्वमेव राधेयं भीमसेनः सुयोधनम् । वृषसेनं च नकुलः सहदेवोऽपि सौबलम् ॥ ३४ ॥ दुःशासनं शतानीको हार्दिक्यं शिनिपुङ्गवः । पाण्ड्यो द्रोणसुतं यातु स्वयं योत्स्याम्यहं कृपम् ॥ ३५ ॥ द्रौपदेया धार्त्तराष्ट्रान् शिष्टान् सह शिखण्डिना । ते ते च तांस्तान् सहितानस्माकं घ्नन्तु मामकाः ॥ ३६ ॥ सञ्जय उवाच । इत्युक्तो धर्मराजेन तथेत्युक्त्वा धनञ्जयः।

युधिष्ठिर कर्ण की सेना मुखकर देखकर शत्रुओं के मारनेवाले अकेले अर्जुन से बोले । २९ । हे अर्जुन युद्धमें कर्णके रचेहुये उसबड़े व्यूहको देखो जो पक्ष और प्रपक्षों से संयुक्त शत्रुकी सेनाको प्रकाशित करताहै । ३० । सो तुम इसशत्रुकी दृढ़सेनाको अच्छे प्रकारसे देखकर ऐसी नीतिको विचारो जिससे कि यह हमको भयभीत न करे ।३१। राजा के इसरीति के वचनको सुनकर अर्जुन हाथ जोड़कर राजा से कहनेलगा कि जैसा आप कहते हैं वैसाही है मिथ्या नहीं है । ३२ । हे भरतर्षभ जिस रीतिसे इसका मारना विचार कियाहै उसको मैं करूंगा इसकामारना बहुत श्रेष्ठ है इससे मैं इसका नाशकरता हूं । ३३ । युधिष्ठिर बोले कि तुम तो कर्ण से लड़ो भीमसेन सुयोधन से नकुल वृषसेनसे सहदेव सौबल से । ३४ । शतानीक दुश्शासन से सात्यिकी कृतवर्मा से पाण्डय अश्वत्थामा से सम्मुख होकर लड़ो और मैं आप कृपाचार्य्य से युद्ध करूंगा । ३५ । और शिखण्डी समेत द्रौपदी के सब पुत्र उन शेषबचेहुये धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे सम्मुख होकर लड़नेको जाओ और सब हमारे शूरवीर उनके शूरवीरोंको मारो । ३६ । संजय बोले कि इसरीति से धर्मराज

Karan at the entrance of the army, said to Arjun the destroyer of foes, "Look at the array formed by Karan, which glorifies the enemy's forces 30. Look at the vast army of the enemy and arrange our army in a manner that we may not be terrified by them." Hearing these words of the king, Arjun with clasped hands, said, "It will be as you have said. I shall bring about their ruin and shall begin directly" Yudhishthir said, "You should engage in fighting with Karan; Bhimsen will meet with Suyodhan, Nakul with Vrishasen, Sahadev with Shakuni, Shatanik with Dushasan, Satyaki with Kritvarma, Pandya with Ashwathama and I with Kripacharya 35. Shikhandi and the sons of Draupadi will engage with the remaining sons of Dhritrashtra and thus our warriors will slay those

व्यादिदेश स्वसैन्यानि स्वयञ्च गाच्चसमुखम ॥ ३७ ॥ ब्रह्मेशानेन्द्रवरुणान् क्रम
शो योऽवहत् पुरा । तमाथं रथमास्थाय प्रयातौ केशवार्जुनौ ॥३९॥ अथ तं रथमा
यान्तं दृष्ट्वा चाद्भुतदर्शनम् । उवाचाधिरथिं शल्यः पुनस्तं युद्धदुर्मदम् ॥ ४० ॥
अयं स रथ आयाति श्वेताश्वः कृष्णसारथिः । दुर्वारः सर्वसैन्यानां विपाकः कर्म
णामिव ॥ ४१ ॥ निघ्नन्नमित्रान् कौन्तेयो यं कर्ण परिपृच्छसि ॥ ४१ ॥ श्रूयते
तुमुलः शब्दो यथा मेघस्वनो महान् ॥ ४२ ॥ ध्रुवमेतौ महात्मानौ वासुदेवधनञ्ज
यौ । एष रेणु समुद्भूतो दिवमावृत्य तिष्ठति ॥ चक्रनेमिप्रणुन्नेव कम्पते कर्ण मेदिनी
प्रवात्येष महावायुरभितस्तव वाहिनीम् ॥ ४४ ॥ क्रव्यादा व्याहरन्त्येते मृगाः
क्रन्दन्ति भैरवम् । पश्य कर्ण महाघोरं भयदं लोमहर्षणम् ॥ ४५ ॥ कबन्धं मेघ

के वचनोंको सुनकर अर्ज्जुनने कहा कि ऐसाही होगा यह कहकर अपनी सेनाओं को आज्ञादी और आप सेनामुख परगया । ३७ । जिसने पूर्वसमय में ब्रह्मा रुद्र इन्द्र और वरुणको क्रमपूर्वक सवारकिया उस रथपर सवारहोकर केशवजी और अर्ज्जुनचले । ३९ । तदनन्तर शल्य उस अपूर्व दर्शनीय आतेहुये रथको देखकर उस युद्धदुर्मद अधिरथी कर्णसे बोला । ४० । यह श्वेत घोड़ोंसे युक्त सारथी श्री कृष्णजी समेत सब सेनाओं से भी कठिनता से रोकनेके योग्य अर्ज्जुनका रथ आया यह रथ ऐसे कठिनता से रोकने के योग्य है जैसे कि कर्मोंका फल रोकने के योग्य नहीं होता है । ४१ । हे कर्ण जिसको तुम पूछते थे वह शत्रुओं को मारता हुआ अर्ज्जुन चला आता है उसका ऐसा कठोर शब्द सुनाई देता है जैसा कि बादलका घोर शब्द होता है । ४२ । निश्चय करके यह दोनों महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं देखो यह उठीहुई धूलि आकाशको व्याप्त करके नियत है । ४३ । हे कर्ण रथके पहिये के नीचेसे चलायमान पृथ्वी कंपायमान है और महावेगवान वायु आपकी सनाके सम्मुख चलरहा है । ४४ । यह कच्चे मांसखाने वाले राक्षस आदि

of the enemy."36.

Sanjaya said, "On hearing the words of Dharmraj, Arjun said, "Let it be so. " He ordered his army and went at the head of the forces. The car which had carried Brahma, Rudra, Indra and Varun in turn, now carried Arjun and Vasudev. Then Shalya, seeing the car come toward him, said to Karan,40. "Here comes Ajun's invincibe car with the white horses driven by Krishn. It cannot be turned back like the punishment of sin. Here comes Arjun about whom you were asking. The noise of his car is like that of thunder. Surely Krishn and Arjun are there. Look at the dust rising to the sky. The Earth trembles under the wheels and a dreadful wind is blow-

संघार्थं भानुमावृत्य संस्थितम् । पश्य यूथैर्बहुविधैर्मृगाणां सर्वतो दिशम् ॥ ४६ ॥ बलिभिः कर्ण शार्दूलैरादित्योऽभिनिरीक्ष्यते । पश्यकङ्कांश्च गृध्रांश्च समवेतान् सहस्रशः ॥ ४७ ॥ स्थितानभिमुखान् घोरानन्योऽन्यमभिभाषतः । रञ्जिताश्चामरा युक्तास्तव कर्ण महारथे ॥ ४८ ॥ प्रवराः प्रचलन्त्येते ध्वजश्चैव प्रकम्पते । सर्वपशून् हयान् पश्य महाकायान्महाजवान् ॥ ४९ ॥ प्लवमानान् दर्शनीयानाकाशे गरुडानिव ध्रुवमेषु निमित्तेषु भूमिमाश्रित्य पार्थिवाः ॥ ५० ॥ स्वप्स्यन्ति निहताः कर्ण शतशोऽथ सहस्रशः । सङ्खानां तुमुलः शब्दः श्रूयते लोमहर्षणः ॥ ५१ ॥ आनकानाञ्च राधेय मृदङ्गानाञ्च सर्वशः । बाणशब्दान् बहुविधान् नराश्वरथनिस्वनान् ॥ ५२ ॥ ज्यातलत्रेषु शब्दांश्च शृणु कर्ण महात्मनाम् । हेमरूप्यप्रसृष्टानां वाससां शिल्पनिर्मिताः ॥ ५३ ॥ नानावर्णा रथे भान्ति श्वसनेन प्रकम्पिताः । सहेमचन्द्रताराकाः पताकाः

भी बोलरहे हैं यह मृग भयानक शब्दों को करते हैं हे कर्ण इस घोर भयदायक रोमहर्षण करनेवाले सूर्यको आच्छादित कियेहुये बादल की सूरत केतु नक्षत्रको देखो और सब दिशाओं में नानाप्रकार के पशुओं के झुंड और पराक्रमी शार्दूल सूर्यको देखते हैं हजारों भागनेवाले और सम्मुख नियत होनेवाले परस्परमें घोर शब्द करनेवाले कंक और गृद्धों को देखो और हे कर्ण तेरे रथपरलगे हुये अति उत्तम चामरभी अग्निके समान होगये हैं । ४८ । ध्वजाकांपती है बड़े वेगवान उन्नत बलिष्ठ शरीरवाले घोड़ों के कंपको देखो । ४९ । जैसे दर्शन करने के योग्य आकाश में उड़नेवाले गरुड़ोंको देखते हैं उसीप्रकार निश्चय करके युद्धों में हजारों मरेहुये राजालोग पृथ्वीपर आश्रयलेकर । ५० । शयनकरेंगे और शंखों के कठोर शब्द रोमांच खड़े करनेवाले सुनाई देते हैं । ५१ । हे कर्ण ढोल और मृदंगोंके शब्दों को सुनो हे राधाके पुत्र बाणोंके मनुष्योंके और घोड़े हाथियों के शब्द ।५२। महात्मा के मत्यंचाके तलत्रोंके शब्दोंको और कारीगरोंके हाथसे सुवर्ण और चांदीसे निर्मित वस्त्रोंके बनायेहुये । ५३ । नानाप्रकारकी वर्णवाली ध्वजाओं से कंपायमान पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य और नक्षत्र रखनेवाली क्षुद्रघंटिकायुक्त पताका

ing against your army. The rakshases, who eat raw flesh, are howling. The deer are crying dreadfully. Look at Ketu which excites fear by hiding the Sun. The herds of beasts and the tiger are looking at the Sun. Kanks and Vultures fly at one another with a noise. The chamars on your car are shining brightly like fire. Your banner trembles and the strong horses of our car are shaking. Thousands of kings lie dead on the ground and look like garurs in the sky.50. The sounds of the conchs make the hair of the body stand on end. Hear the sounds of drums, arrows, men, horses, elephants, bowstrings and palms of hands. Banners made of the cloths of gold and silver, small bells, bright like

किंकिणीयुताः ॥ ५० ॥ पश्य कर्णार्जुनस्यैतां सौदामिनीमिवाम्बुदे । ध्वजाः कण
कणायन्ते वातेनाभिसमीरिताः ॥ ५५ ॥ विभ्राजन्ति रथाः कर्ण विमाने देवता यथा ।
सपताका रथाश्चैते पाञ्चालानां महात्मनाम् ॥ ५६ ॥ पश्य कुन्तीसुतं वीरं बीभ
त्सुमपराजितम् । पूर्वयितुमायान्तं कपिप्रवरकेतनम् ॥ ५७ ॥ एष ध्वजाग्रे
पार्थस्य प्रेक्षणीयः समन्ततः । दृश्यते वानरो भीमो द्विषतां भयवर्धनः ॥ ५८ ॥
एतच्चक्रं गदा शार्ङ्गं शंखं कृष्णस्य धीमतः । अत्यर्थं भ्राजते कृष्णे कौस्तुभस्तु मणि
स्ततः ॥ ५९ ॥ एष शार्ङ्गगदापाणिर्वासुदेवोऽतिवीर्यवान् । वाहयन्नेति तुरगान्
पाण्डरान् वातरंहसः ॥ ६० ॥ एतत् कूजति गाण्डीवं विकृष्टं सव्यसाचिना । एते
हस्तवता मुक्ता घ्नन्त्यमित्रान् शिताः शराः ॥ ६१ ॥ विशालायतताम्राक्षैः पूर्णचन्द्र

रथपर महा शोभायमान फरारही हैं। ५४। हे कर्ण देखो कि अर्ज्जुन की ध्वजा वायुसे चलायमान ऐसी कणकणारही हैं जैसे कि आकाशमें बिजलियां कणकणाया करती हैं। ५५। और महात्मा पांचालोंके यह पताकाधारी रथ विमानों की सदृश कैसे शोभायमान हैं। ५६। वानराधीशको धारण करनेवाली अतिउत्तम विजयकारिणी ध्वजा संयुक्त आनेवाले अजेय कुन्तीनन्दन को देखो। ५७। यह चारोंओर से देखने के योग्य महाभयानक शत्रुओंका भयकारी वानर अर्ज्जुन की ध्वजाकी नोकपर दिखाई देरहाहै। ५८। और बुद्धिमान श्रीकृष्णजीका यह शंख चक्र गदा और शार्ङ्ग धनुषहै जिसमें श्रीकृष्णजी का कौस्तुभमणि न्यारीही शोभा देरहाहै। ५९। यह शार्ङ्ग धनुष और गदा हाथमें रखनेवाले पराक्रमी वासुदेवजी वायुके समान शीघ्रगामी श्वेतघोड़ोंको चलातेहुये चलेआते हैं। ६०। अर्ज्जुन से खैंचाहुआ यह गांडीव धनुष कैसे शब्दोंको करता है उस हस्तलाघवी के छोड़ेहुये यह तीक्ष्णवाण शत्रुओंको माररहे हैं। ६१। और मुख न मोड़नेवाले बड़ेलंबे रक्त

---

the Sun and moon and stars are tinkling on the banners.54. Arjun's banner, fluttered by the wind, flashes like lightning. The bannered cars of the Panchals look glorious like celestial cars. Look, there comes invincible Arjun, with his victorious banner having the device of the king of monkeys. The dreadful monkey, exciting fear among the foes all round, is shining from the banner. There you see the conch, discus, mace and Sharang bow of wise Shri Krishn, on whose person the Kaustubh Jewel shines with great radiance. Vasudev, the wielder of Sharang bow and mace, is coming on driving the white horses fleet as the wind.60. The Gandiv bow, drawn by Arjun, makes a tremendous noise and his sharp arrows are slaying the foes. The ground is being covered with the body of tall, unflinching warriors, with *faces* like the full *moon*. The club like arms of the warriors,

निभाननैः । एषा भूः कीर्य्यते शश्वत् शिरोभिरपलायिनाम् ॥ ६२ ॥ एते परिघ
सङ्काशाः पुण्यगन्धानुलेपनाः । उद्यतायुधशौण्डानां पात्यन्ते सायुधा भुजाः ॥ ६३ ॥
निरस्तनेत्रजिह्वाश्च वाजिनः सह सादिभिः । पतिताः पात्यमानाश्च क्षितौ क्षीणाश्च
शेरते ॥ ६४ ॥ एते पर्वतशृङ्गाणां तुल्यरूपा हता द्विपाः । संछिन्नभिन्नाः पार्थेन
प्रपतन्त्यद्रयो यथा ॥ ६५ ॥ गन्धर्वनगराकारा रथा हतनरेश्वराः । विमानानीव
पुण्यान्ते स्वर्गिणां निपतन्त्यमी ॥ ६६ ॥ व्याकुलीकृतमत्यर्थं पश्य सैन्यं किरी
टिना । नानामृगसहस्राणां यूथं केसरिणा यथा ॥ ६७ ॥ घ्नन्त्येते पार्थिवान् वीराः
पाण्डवाः समभिद्रुताः । नागाश्वरथपत्त्योघांस्तावकान् समभिघ्नतः ॥ ६८ ॥
एष सूर्य्य इवाम्भोदैश्छन्नः पार्थो न दृश्यते । ध्वजाग्रं दृश्यते त्वस्य ज्याशब्दश्चा
पि श्रूयते ॥ ६९ ॥ अद्य द्रष्टासि तं वीरं श्वेताश्वं कृष्णसारथिम् । निघ्नन्तं

ऐश्वर्य्यशाली पूर्णचन्द्रमा के समान मुखवाले शूरवीरों के शिरोंसे यह पृथ्वी आच्छादित
होती चलीजाती है । ६२ । उठायेहुये शस्त्रोंमें कुशल युद्धकर्त्ताओं के परिघकी
समान पवित्र चन्दनादि से चर्चित भुजदंड शस्त्रोंके द्वारा गिरायेजाते हैं । ६३ ।
जिनके नेत्र और जिव्हा निकल पड़ी वह सवारोंसमेत घोड़े पृथ्वीपर मर कर गिरे
हुये सोरहे हैं । ६४ । पर्व्वतके शिखरकी समान रूपवाले यह हाथी मारेगये और
अर्ज्जुन के हाथसे घायल वा चूर्णीभूत अंगवाले हाथी पर्व्वतों के समान घूमते हैं
। ६५ । वह गंधर्वनगरके समान रूपवाले रथ जिनके कि राजा मरगये वह स्वर्ग
वासियों के पवित्र बिमानों के समान पृथ्वीपर गिरते हैं । ६६ । अर्ज्जुनके हाथ से
अत्यन्त व्याकुलसेना ऐसी दिखाई देतीहै जैसे कि नानाप्रकारके हजारों पशु
ओंके समूह केशरी सिंहसे व्याकुल होते हैं । ६७ । आपके हाथी घोड़े रथ और
पतियोंके समूहों को मारनेवाले सम्मुख दौड़नेवाले यह वीर पाण्डवलोग राजाओं
को मारते हैं । ६८ । जैसे कि बादलोंसे सूर्य्य ढकजाता है उसीप्रकार यह अर्ज्जुन
ढकाहुआ दिखाई नहीं देताहै उसकी ध्वजाकी नोकही दिखाई देतीहै और प्रत्यंचा
का शब्दभी सुनाजाताहै । ६९ । अब उस श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजी को सारथी

beautified with sandal paste, are being cut down by weapons. The horses, with eyes and tongues out, are lying dead on earth along with their riders The elephants, huge as hills, are slain by Arjun, while the wounded ones are moving like hills.65. The cars, like the city of Gandharvas, whose riders are dead, are lying on the ground like celestial cars. The army, wounded and fleeing from Arjun's arrows, looks like a herd of deer chased by a lion. The elephants, horses, cars and foot of your army are being destroyed by the Pandavas. Arjun is covered as it were with clouds; his banner only is visible and the twang of his bow is audible. With his white horses driven by Shri Krishn

शात्रवान् संख्ये यं कर्णं परिपृच्छसि ॥ ७० ॥ अथ तौ पुरुषव्याघ्रौ लोहिताक्षौ परन्तपौ । वासुदेवार्जुनौ कर्ण द्रष्टास्येकरथे स्थितौ ॥ ७१ ॥ सारथिर्यस्य वार्ष्णेयो गाण्डीवं यस्य कार्मुकम् । तञ्चेद्धन्तासि राधेय त्वन्नो राजा भविष्यसि ॥ ७२ ॥ एष संशप्तकाहूतस्तानेवाभिमुखो गतः । करोति कदनं चैषां संग्रामे द्विषतां बली ॥ ७३ ॥ इति ब्रुवाणं मद्रेशं कर्णः प्राहातिमन्युमान् । पश्य संशप्तकैः क्रुद्धैः सर्वतः समभिद्रुतः ॥ ७४ ॥ एष सूर्य इवाम्भोदैश्छन्नः पार्थो न दृश्यते । एतदन्तोऽर्जुनः शल्य निमग्नो योधसागरे ॥ ७५ ॥ शल्य उवाच । वरुणं कोऽम्भसा हन्यादिन्धनेन च पावकम् । कोऽनिलं वा निगृह्णीयात् पिबेद्वा को महार्णवम् ॥ ७६ ॥ ईदृग्रूपमहं मन्ये पार्थस्य युधि निग्रहम् । न हि शक्योऽर्जुनो जेतुं युधि सेन्द्रैः सुरासुरैः ॥ ७७ ॥ अथ वा परितोषस्ते वाचोक्त्वा सुमना भव । न स शक्यो युधा

रखनेवाले युद्धमें शत्रुओंके मारनेवाले वीर अर्जुन को देखोगे । ७० । जिसको कि तुम पूछतेथे हे कर्ण अब तुम इन पुरुषोत्तम लालनेत्र शत्रुओं के संतप्तकरनेवाले एक रथ पर नियत अर्जुन और वासुदेवजी को देखोगे । ७१ । जिसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं और धनुष जिसका गांडीव है हे कर्ण उसको जो तुम मारोगे तो हमारे राजाहोगे । ७२ । संसप्तकों का बुलाया हुआ यह अर्जुन उनके समीप सम्मुख होकर उन महापराक्रमियोंका युद्धमें नाशकररहाहै ।७३। ऐसे शल्यके वचनोंको सुनकर कर्ण महाक्रोध युक्त होकर बड़े अहंकारसे बोला कि हे शल्य तुम महाक्रोध युक्त संसप्तकोंसेसबओरसेघिरेहुये अर्जुनको देखो।७४।जैसेकिसूर्य बादलोंसेढकजाय उसीप्रकार ढकाहुआ यह अर्जुन दिखाई नहीं पड़ता है हे शल्य अर्जुन ऐसेही अन्तका करनेवाला है जो कि युद्धकर्त्ताओंके समुद्रमें डूबरहा है । ७५ । शल्यबोला कि कौन पुरुष वरुणको जलसेमारे और कौन मनुष्य ईंधनसे अग्निको बुझावे और कौन हवाको पकड़े अथवा कौन पुरुष महासमुद्रका पानकरे । ७६ । मैं युद्धमें अर्जुनका मरना असंभव मानताहूं इन्द्रसमेत देवतालोगभी युद्धमें अस्त्रोंसे अर्जुनको विजय नहीं करसक्ते । ७७ । अब तेरी प्रसन्नताहै तो अपने वचनको कहकर चित्त

Arjun the destroyer of foes will be visible to you by and by .70. You will now see, O Karan, the two red-eyed warriors, Krishn and Arjun, about whom you were asking. You will be our king, if you can slay Arjun the possessor of the Gandiv bow, whose car is driven by Krishn. Challenged by the Sansaptaks, Arjun attacks and destroys those warriors " Having heard Shalya's words, Karan said with pride and anger, " Look at Arjun surrounded by the enraged Sansaptaks. He is invisible like the sun hidden by clouds. That destroyer of foes is now sinking in the Ocean of our warriors ." 75. Shalya said, " Who can extinguish fire with fuel; who can hold the wind or drink the Ocean? I think that the slaying of Arjun is impossible; even Indra with gods

हेतुमन्यं कुरु मनोरथम् ॥ ७८ ॥ यो बाहुभ्यामुद्धरेद्भूमिं दहेत्क्रुद्ध इमाः प्रजाः । पातयेत्त्रिदिवाद्देवान् योऽर्जुनं समरे जयेत् ॥ ७९ ॥ पश्य कुन्तीसुतं वीरं भीममक्लिष्टकारिणम् । प्रभासन्तं महाबाहुं स्थितं मेरुमिवापरम् ॥ ८० ॥ अमर्षी नित्यसंरब्धश्चिरं वैरमनुस्मरन् । एष भीमो जयप्रेप्सुर्युधि तिष्ठति वीर्यवान् ॥८१॥ एष धर्मभृतां श्रेष्ठो धर्मराजो युधिष्ठिरः । तिष्ठत्यसुकरः संख्ये परैः परपुरञ्जयः ॥ ८२ ॥ एतौ च पुरुषव्याघ्रावश्विनाविव सोदरौ । नकुलः सहदेवश्च तिष्ठतो युधि दुर्जयौ ॥ ८३ ॥ दृश्यन्त एते कार्ष्णेयाः पञ्च पञ्चाचला इव । व्यवस्थिता योद्धुकामाः सर्वेऽर्जुनसमा युधि ॥ ८४ ॥ एते द्रुपदपुत्राश्च धृष्टद्युम्नपुरोगमाः । स्फीताः सत्यजितो वीरास्तिष्ठन्ति महौजसः ॥ ८५ ॥ असाविन्द्र इवासह्यः

को मतकर वह तो युद्धमें किसीसे विजयकरनेके योग्यनहींहै अब तू दूसरे मनोरथ को कर । ७८ । जो भुजाओंसे पृथ्वीको उठासके और क्रोधयुक्त होकर इनसब जड़ चैतन्योंका नाशकरे स्वर्गसे देवताओं को गिरासके उस अर्जुनको युद्धमें कौन विजय करसक्ता है । ७९ । साधारण कर्मों महाप्रकाशमान द्वितीय मेरुपर्व्वत के समान नियत महाबाहु कुन्तीके पुत्र शूरवीर भीमसेनको देखो।८०।सदैव क्रोधयुक्त असहिष्णु विजयाभिलाषी यह पराक्रमी भीमसेन चिरकालकी शत्रुता को स्मरण करता युद्धमें नियतहै । ८१ । यह धर्मधारियों में श्रेष्ठयुद्धमें शत्रुओंके साथ कठिन कर्मकरनेवाला शत्रुओं के पुरोंका विजय करनेवाला धर्मराज युधिष्ठिर नियत है । ८२ । यह कठिनता से विजय होनेवाले दोनों पुरुषोत्तम अश्विनीकुमारोंके समान निज सहोदर नकुल सहदेव दोनों भाई युद्धमें नियतहैं । ८३ । यह पांच पर्व्वतोंके समान पांचो द्रौपदीके पुत्र नियतहैं यह सब अर्जुनके समान युद्धाभिलाषी युद्धमें वर्त्तमानहैं । ८४ । बलकी वृद्धिवाले बड़ेतेजस्वी सत्यवक्ता द्रुपदके शूरवीर पुत्रजिनमें मुख्य धृष्टद्युम्नहै । ८५ । इन्द्रके समान असह्य एवं समयमें क्रोधयुक्त मृत्युके समान

cannot conquer him. You may please your self with words, for you cannot slay Arjun, and must set your mind on any other thing. Who can conquer Arjun who is capable of lifting up the earth, of destroyaing the movables and immovables and of making the gods fall down from heaven when he is angry. Look at valiant Bhim, *standing* in glory like a second Meru.80. Naturally wrathful, desirous of victory, valiant Bhim, remembering the old standing enmity, stands in the field of battle. Yudhishthir the just, of great prowess, destroyer of foes, stands ready to fight. The two invincible warriors, Nakul and Sahadev, stand there like Ashwinikumars. The five sons of Draupadi, huge as hills, are full of prowess like Arjun. There stand the valiant sons of Drupad, led by Dhrishtadyumn. Here comes, Satyaki, like Death himself the best of the Yadavas, desirous of

सात्यकिः सात्वतां वरः । युयुत्सुरुपयात्यस्मान् कुद्धान्तकसमः पुरः ॥ ८६ ॥
संवदतोरेव तयोः पुरुषसिंहयोः । ते सेने समसज्जेतां गङ्गायमुनवद्भृशम् ॥

इतिश्री कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे पटचत्वा रिंशोऽध्यायः । ४५ ।

धृतराष्ट्र उवाच । तथा व्यूढेष्वनीकेषु संसक्तेषु च सञ्जय ।
पार्थो गतः कर्णश्च पाण्डवान् ॥ १ ॥ एतद्विस्तरशो युद्धं प्रब्रूहि कुशलो ह्यसि
न हि तृप्यामि वीराणां शृण्वानो विक्रमान् इह ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ।
मवज्ञाय प्रत्यमित्रबलं महत् । अभ्युद्यतार्ज्जुनो व्यूहं पुत्रस्य तव दुर्नये ॥ ३ ॥

यादवोंमें श्रेष्ठ युद्धाभिलाषी यह सात्यकि हमारे सम्मुख आताहै । ८६ । उन पुरुषोत्तमों के इसरीतिसे वार्त्तालाप करते करते वह दोनों सेना श्रीगंगा के समान बड़े वेगसे भिड़गई । ८७ ।

अध्याय ४६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसरीति से सेनाओंके तैयारहोने पर और अच्छी रीति से भिड़जानेपर अर्जुन किसरीतिसे संसप्तकोंके सम्मुखगया और कर्ण कैसे पांडवों सम्मुखगया । १ । इस युद्धको ब्योरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़े चतुरहो मैं युद्धमें शत्रुओं के पराक्रमोंके सुनने से तृप्तनहीं होताहूं । २ । संजयबोले कि आपके पुत्र हेतु अन्याय होने पर अर्जुन ने शत्रुओं की बड़ी सेनाको निपत जानकर व्यूह को

fighting." When the two great warriors were thus talking together the warriors met with a great force like the Ganges and the Yamuna." 87.

CHAPFER XLVI

Dhritrashtra said. "When the armies had thus met together, how did Arjun face the Sansaptaks and how did Karan face the Pandavas? Please let me know all this in detail, for you are very clever and I am not satisfied with hearing of the prowess of the foes." Sanjaya said, "On account of the injustice of your son, Arjun formed an array of his army consisting of horse, foot, elephants and cars and led by Dhrishtadyumn. Glorious like the sun and the moon, the

सादिनागकलिलं पदातिपरसंकुलम् । धृष्टद्युम्नमुखं व्यूढमशोभत महद्बलम् ॥ ४ ॥ पारावतसवर्णाश्वश्चन्द्रादित्यसमद्युतिः । पार्षतः प्रबभौ धन्वी कालो विग्रहवानिव ॥ ५ ॥ पार्षतंत्वभितस्तस्थु द्रौपदेया युयुत्सवः । दिव्यवर्मायुधधराः शार्दूलसमविक्रमाः । सानुगा दीप्तवपुषश्चन्द्रं तारागणा इव ॥ ६ ॥ अथ व्यूढेष्वनीकेषु प्रेक्ष्य संशप्तकान्रणे । क्रुद्धोऽर्जुनोऽभिदुद्राव व्याक्षिपन् गाण्डिवं धनुः ॥ ७ ॥ अथ संशप्तकाः पार्थमभ्यधावन् वधैषिणः । विजये धृतसङ्कल्पा मृत्युं कृत्वा निवर्तनम् ॥ ८ ॥ तदश्वौघबहुलं मत्तनागरथाकुलम् । पत्तिमच्छूरवीरौघं द्रुतमर्जुनमार्दयत् ॥ ९ ॥ स संप्रहारस्तुमुलस्तेषामासीत् किरीटिना । तस्यैव नः श्रुतो यादृङ्निवातकवचैः सह ॥ १० ॥ रथानश्वान् ध्वजान्नागान् पत्तीन्रणगतानपि । इषून् धनूंषि खड्गांश्च चक्राणि च परश्वधान् ॥ ११ ॥ सायुधानुद्यतान् बाहून् विविधान्यायुधानि च ।

रचा वह अश्व सवार हाथियों समेत रथ और पदातियों से आवृत बड़ी सेना वाला व्यूह जिसमें मुख्य धृष्टद्युम्न था शोभायमान हुआ । ४ । चन्द्रमा और सूर्य के समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्तिमान काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतवर्ण घोड़ों समेत शोभित हुआ । ५ । दिव्य कवच और धनुष रखनेवाले शार्दूलके समान पराक्रमी शरीरसे प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रोंने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्न को ऐसा रक्षित किया जैसेकि तारागण चन्द्रमाको रक्षित करतेहैं । ६ । तदनन्तर सेनाओं के सन्नद्ध होनेपरयुद्धमें संसप्तकोंको देखकर क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गांडीव धनुष को टंकारता हुआ सम्मुखगया । ७ । इसकेपीछे मारनेके अभिलाषी संसप्तक लोग अर्जुनके सम्मुख दौड़े वह विजय में संकल्प करनेवाले मृत्यको तिरस्कार करके सम्मुख गये । ८ । मनुष्य हाथी घोड़ों के समूहों से युक्त मतवाले हाथी और रथोंसे व्याप्त पत्तियों से युक्त शूरवीरों के उस समूहको अर्जुन ने बड़ी शीघ्रता से पीड़ित किया । ९ । अर्जुन के साथमें उनलोगों का ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसाकि उसका युद्ध निवात कवचियों के साथ हमने सुनाथा । १० । रथघोड़े ध्वजा हाथी इस युद्धमें वर्त्तमानों कोभी बाण धनुष खड्गचक्र फरसे । ११ । आदि नानाप्रकार

glorious archer, like Death himself, Dhrishtadyumn rode his horses of the colour of pigeons. 5. Armed with armours and bow, of the prowess of tigers, the sons of Draupadi, desirous of fighting, protected Dhrishtadyumn as the star surround the moon. Seeing the Sansaptake ready to fight, enraged Arjun, twanging the Gandiv bow, faced them. The Sansaptake, desirous of fighting and fearless of life, attacked Arjun. Composed of men, elephants, horses, mad elephants, cars and foot, the army rushed against Arjun. Their battle with Arjun was like that between Arjun and Nibat Kabaches. Arjun cut down the heads of warriors and destroyed the cars, horses, standards, elephants bows, arrows, swords discuses, axes and the arms holding

सात्यकिः सात्वतां वरः । युयुत्सुरुपयात्यस्मान् कुम्भाग्तकसमः पुरः ॥ ८६ ॥
संवदतोरेव तयोः पुरुषसिंहयोः । ते सेने समसज्जेतां गङ्गायमुनवद्भृशम ॥

इतिश्री कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे पञ्चचत्वा रिंशोऽध्यायः । ४५ ।

धृतराष्ट्र उवाच । तथा व्यूढेष्वनीकेषु संसक्तेषु च सञ्जय ।
पार्थो गतः कर्णश्च पाण्डवान् ॥ १ ॥ एतद्विस्तरशो युद्धं प्रब्रूहि कुशलो
न हि तृप्यामि वीराणां शृण्वानो विक्रमाञ्रणे ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ।
मवज्ञाय प्रत्यमित्रबलं महत । अव्यूहतार्ज्जुनो व्यूहं पुत्रस्य तव दुर्नये ॥ ३ ॥

यादवोंमें श्रेष्ठ युद्धाभिलापी यह सात्यकि हमारे सम्मुख आताहै । ८६ । उन पुरुषोत्तमों के इसरीतिसे वार्त्तालाप करते करते वह दोनों सेना श्रीगंगा के समान बड़े वेगसे भिड़गई । ८७ ।

अध्याय ४६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसरीति से सेनाओंके तैयारहोने पर और अच्छी रीति भिड़जानेपर अर्जुन किसरीतिसे संसप्तकोंके सम्मुखगया और कर्ण कैसे पांडवों सम्मुखगया । १ । इस युद्धको ब्योरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़े चतुरहो मैं युद्ध शत्रुओं के पराक्रमोंके सुनने से तृप्तनहीं होताहूं । २ । संजयबोले कि आपके पुत्र हेतु अन्याय होने पर अर्जुन ने शत्रुओं की बड़ी सेनाको निपत जानकर व्यूह को

fighting." When the two great warriors were thus talking together the warriors met with a great force like the Ganges and the Yamuna." 87.

CHAPTER XLVI

Dhritrashtra said. "When the armies had thus met together, how did Arjun face the Sansaptaks and how did Karan face the Pandavas? Please let me know all this in detail, for you are very clever and I am not satisfied with hearing of the prowess of the foes." Sanjaya said, "On account of the injustice of your son, Arjun formed an array of his army consisting of horse, foot, elephants and cars and led by Dhrishtadyumn, Glorious like the sun and the moon, the

सादिनागकलिलं पदातिपवर्गसंकुलम् । धृष्टद्युम्नमुखं व्यूढमशोभत महद्बलम् ॥ ४ ॥ पारावतसवर्णाश्वस्त्रग्वी दिव्यसमद्युतिः । धार्ष्टद्युम्नः प्रबभौ धन्वी काले विग्रहवानिव ॥ ५ ॥ पार्षतस्त्वभितस्तस्थुः द्रौपदेया युयुत्सवः । दिव्यवर्मायुधधराः शार्दूलसमविक्रमाः । सानुगा दीप्तवपुषश्चन्द्रं तारागणा इव ॥ ६ ॥ अथ व्यूढेष्वनीकेषु प्रेक्ष्य संशप्तकान्रणे । क्रुद्धोऽर्जुनोऽभिदुद्राव व्याक्षिपन् गाण्डिवं धनुः ॥ ७ ॥ अथ संशप्तकाः पार्थमभ्यधावन् वधैषिणः । विजये धृतसङ्कल्पा मृत्युं कृत्वा निवर्तनम् ॥ ८ ॥ तदश्वौघबहुलं मत्तनागरथाकुलम् । पत्तिमच्छूरवीरौघं द्रुतमर्जुनमार्दयत् ॥ ९ ॥ स संप्रहारस्तुमुलस्तेषामासीत् किरीटिना । तस्यैव नः श्रुतो यादृङ्निवातकवचैः सह ॥ १० ॥ रथानश्वान् ध्वजानागान् पत्तीन्रणगतानपि । इषून् धनूंषि खड्गांश्च चक्राणि च परश्वधान् ॥ ११ ॥ सायुधानुद्यतान् बाहून् विविधान्यायुधानि च ।

रथा वह अश्व सवार हाथियों समेत रथ और पदातियों से आवृत बड़ी सेना वाला व्यूह जिसमें मुख्यधृष्टद्युम्नथा शोभायमानहुआ । ४ । चन्द्रमा और सूर्य के समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्तिमान काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतवर्ण घोड़ोंसमेत शोभित हुआ । ५ । दिव्य कवच और धनुष रखनेवाले शार्दूलके समान पराक्रमी शरीरसे प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रोंने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्न को ऐसा रक्षित किया जैसेकि तारागण चन्द्रमाको रक्षित करतेहैं । ६ । तदनन्तर सेनाओं के सन्नद्ध होनेपरयुद्धमें संसप्तकोंको देखकर क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गांडीव धनुष को टंकारता हुआ सम्मुखगया । ७ । इसकेपीछे मारनेके अभिलाषी संसप्तक लोग अर्जुनके सम्मुख दौड़े वह विजय में संकल्प करनेवाले मृत्युको तिरस्कार करके सम्मुख गये । ८ । मनुष्य हाथी घोड़ों के समूहों से युक्त मतवाले हाथी और रथोंसे व्याप्त पत्तियों से युक्त शूरवीरों के उस समूहको अर्जुन ने बड़ी शीघ्रता से पीड़ित किया । ९ । अर्जुन के साथमें उनलोगों का ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसाकि उनका युद्ध निवात कवचियों के साथ हमने सुनाथा । १० । रथघोड़े ध्वजा हाथी इस युद्धमें वर्तमानों कोभी बाण धनुष खड्गचक्र फरसे । ११ । आदि नानाप्रकार

glorious archer, like Death himself, Dhrishtadyumn rode his horses of the colour of pigeons. 5. Armed with armours and bow, of the prowess of tigers, the sons of Draupadi, desirous of fighting, protected Dhrishtadyumn as the star surround the moon. Seeing the Sansaptaks ready to fight, enraged Arjun, twanging the Gandiv bow, faced them. The Sansaptaks, desirous of fighting and fearless of life, attacked Arjun. Composed of men, elephants, horses, mad elephants, cars and foot, the army rushed against Arjun. Their battle with Arjun was like that between Arjun and Nibat Kabaches. Arjun cut down the heads of warriors and destroyed the cars, horses, standards, elephants bows, arrows, swords discuses, axes and the arms holding

सात्यकिः सात्वतां वरः । युयुत्सुरुपयात्यस्मान् कुलान्तकसमः पुरः ॥ ८६ ॥
संवदतोरेव तयोः पुरुषसिंहयोः । ते सेने समसज्जेतां गङ्गायमुनवद्भृशम् ॥

इतिश्री कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः । ४५ ।

धृतराष्ट्र उवाच । तथा व्यूढेष्वनीकेषु संसक्तेषु च सञ्जय ।
पार्थो गतः कर्णश्च पाण्डवान् ॥ १ ॥ एतद्विस्तरशो युद्धं प्रब्रूहि कुशलो ह्यसि
न हि तृप्यामि वीराणां शृण्वानो विक्रमानिह ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ।
मवज्ञाय प्रत्यमित्रबलं महत् । अभ्यूहताऽर्जुनो व्यूहं पुत्रस्य तव दुर्नये ॥ ३ ॥

यादवोंमें श्रेष्ठ युद्धाभिलाषी यह सात्यकि हमारे सम्मुख आताहै । ८६ । उन पुरुषोत्तमों के इसरीतिसे वार्त्तालाप करते करते वह दोनों सेना श्रीगंगा के समान बड़े वेगसे भिड़गईं । ८७ ।

अध्याय ४६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसरीति से सेनाओंके तैयारहोने पर और अच्छी रीति से भिड़जानेपर अर्जुन किसरीतिसे संसप्तकोंके सम्मुखगया और कर्ण कैसे पांडवों के सम्मुखगया । १ । इस युद्धको ब्यौरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़े चतुरहो मैं युद्धमें शत्रुओं के पराक्रमोंके सुनने से तृप्तनहीं होताहूं । २ । संजयबोले कि आपके पुत्रके हेतु अन्याय होने पर अर्जुन ने शत्रुओं की बड़ी सेनाको नियत जानकर व्यूह को

fighting." When the two great warriors were thus talking together the warriors met with a great force like the Ganges and the Yamuna." 87.

CHAPTER XLVI

Dhritrashtra said. "When the armies had thus met together, how did Arjun face the Sansaptaks and how did Karan face the Pandavas? Please let me know all this in detail, for you are very clever and I am not satisfied with hearing of the prowess of the foes." Sanjaya said, "On account of the injustice of your son, Arjun formed an array of his army consisting of horse, foot, elephants and cars and led by Dhrishtadyumn, Glorious like the sun and the moon, the

सादिनागरथाकीर्णं पदातिगणसंकुलम् । धृष्टद्युम्नमुखं व्यूहमशोभत महद्बलम् ॥ ४ ॥
पारावतसवर्णाश्वश्चन्द्रादित्यसमद्युतिः । पार्षतः प्रबभौ धन्वी कालो विग्रहवानिव
॥ ५ ॥ पार्षतं त्वभितस्तस्थुर्द्रौपदेया युयुत्सवः । दिव्यवर्मायुधधराः शार्दूलसम
विक्रमाः । सानुगा दीप्तवपुषश्चन्द्रं तारागणा इव ॥ ६ ॥ अथ व्यूढेष्वनीकेषु प्रेक्ष्य
संशप्तकान्रणे । क्रुद्धोऽर्जुनोऽभिदुद्राव व्याक्षिपन्गाण्डिवं धनुः ॥ ७ ॥ अथ संशप्तकाः
पार्थमभ्यधावन् वधैषिणः । विजये धृतसङ्कल्पा मृत्युं कृत्वा निवर्तनम् ॥ ८ ॥
तदश्वौघबहुलं मत्तनागरथाकुलम् । पत्तिमच्छूरवीरौघं द्रुतमर्जुनमार्दयत् ॥ ९ ॥
स संप्रहारस्तुमुलस्तेषामासीत् किरीटिना । तस्यैव नः श्रुतो यादृङ्निवातकवचैः सह
॥ १० ॥ रथानश्वान् ध्वजान्नागान् पत्तीन्रणगतानपि । इषून् धनूंषि खड्गांश्च
चक्राणि च परश्वधान् ॥ ११ ॥ सायुधानुद्यतान् बाहून् विविधान्यायुधानि च ।

रचा वह अश्व सवार हाथियों समेत रथ और पदातियों से आवृत बड़ी सेना वाला व्यूह जिसमें मुख्यधृष्टद्युम्नथा शोभायमानहुआ । ४ । चन्द्रमा और सूर्य के समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्त्तिमान काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतवर्ण घोड़ोंसमेत शोभित हुआ । ५ । दिव्य कवच और धनुष रखनेवाले शार्दूलके समान पराक्रमी शरीरसे प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रोंने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्न को ऐसा रक्षित किया जैसेकि तारागण चन्द्रमाको रक्षित करतेहैं । ६ । तदनन्तर सेनाओं के सन्नद्ध होनेपरयुद्धमें संसप्तकोंको देखकर क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गांडीव धनुष को टंकारता हुआ सम्मुखगया । ७ । इसकेपीछे मारनेके अभिलाषी संसप्तक लोग अर्जुनके सम्मुख दौड़े वह विजय में संकल्प करनेवाले मृत्युको तिरस्कार करके सम्मुख गये । ८ । मनुष्य हाथी घोड़ों के समूहों से युक्त मतवाले हाथी और रथोंसे व्याप्त पत्तियों से युक्त शूरवीरों के उस समूहको अर्जुन ने बड़ी शीघ्रता से पीड़ित किया । ९ । अर्जुन के साथमें उनलोगों का ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसाकि उनका युद्ध निवात कवचियों के साथ हमने सुनाथा । १० । रथघोड़े ध्वजा हाथी इन युद्धमें वर्त्तमानों कोभी बाण धनुष खड्गचक्र फरसे । ११ । आदि नानाप्रकार

glorious archer, like Death himself, Dhrishtadyumn rode his horses of the colour of pigeons. 5. Armed with armours and bow, *of the prowess of tigers*, the sons of Draupadi, desirous of fighting, protected Dhrishtadyumn as the star surround the moon. Seeing the Sansaptake ready to fight, enraged Arjun, twanging the Gandiv bow, *faced* them. The *Sansaptake, desirous of fighting and fearless of life*, attacked Arjun. Composed of men, elephants, horses, mad elephants, cars and foot, the army rushed against Arjun. Their battle with Arjun was like that between Arjun and Nibat kabsches. Arjun cut down the heads of warriors and *destroyed the cars, horses, standards,* elephants bows, arrows, swords discuses, axes and the arms holding

छिन्द्धेद् छिपता पार्थः शिरांसि च सहस्रशः ॥ १२ ॥ तस्मिन् सैन्यमहार्णवे पातालतलसन्निभे । निमग्नं तं रथं गत्वा नेदुः संशप्तकास्तदा ॥ १३ ॥ स पुरस्ताद्दतिन् हत्वा पुनरुत्तरतोऽवधात् । दक्षिणेन च पश्चाच्च क्रुद्धो रुद्रः पशूनिव ॥ १४ ॥ अथ पांचालचेदीनां सृंजयानांच मारिष । त्वदीयैः सह संग्राम आसीत् परमदारुणः ॥ १५ ॥ कृपश्च कृतवर्मा च शकुनिश्चापि सौबलः हृष्टसेनाः सुसंरब्धा रथानीक प्रहारिणः ॥ १६ ॥ कोशल्यैः काशिमत्स्यैश्च कारुषैः केकयैरपि । शूरसेनैः शूरवै युयुधुर्युद्धदुर्मदाः ॥ १७ ॥ तेषामन्तकरं युद्धं देहपाप्मासुनाशनम् । क्षत्रविट्शूद्रवीराणां धर्म्यं स्वर्ग्यं यशस्करम् ॥ १८ ॥ दुर्योधनोपि सहितो भ्रातृभिर्भरतर्षभ । गुप्तः कुरुवीरैश्च मद्राणाञ्च महारथैः ॥ १९ ॥ पाण्डवैः सह पांचालैश्चेदिभिः सात्यकिना च । युध्यमानं रणे कर्णं कुरुवीरोऽभ्यपालयत् ॥ २० ॥ कर्णोऽपि निशितै

के शस्त्रोंको उठायेहुये भुजाओं वा नानाप्रकारके शस्त्रों को और शत्रुओं के हजारों शिरोंको अर्जुनने काटा । १२ । तब पाताल तलके समान उस सेनारूपी सागर में इसप्रकार मग्नहुये उस रथ को देखकर संशप्तकलोग गरजे । १३ । तदनन्तर उसने उन शत्रुओं को मारकर फिरभी उत्तरकी ओरसे मारा दक्षिण और पश्चिम ओर सेभी ऐसा मारा जैसे कि क्रोधयुक्त रुद्र पशुओं को मारते हैं । १४ । उसके पीछे हे श्रेष्ठ पांचाल चेदेरी और सृंजयदेशियों के युद्ध आपके युद्धकर्त्ताओंसे बड़ेभारी कठिन हुये । १५ । युद्धमें दुर्मद अत्यन्त क्रोधयुक्त रथसमेत सेनाको मारनेवाले प्रसन्न चित्त कृपाचार्य कृतवर्मा और सौबलके पुत्र शकुनी । ने कोशल काशी मत्स्य कारूपकेकय और शूरसेनदेशी उत्तमशूरों समेत युद्धकिया । १७ । यह तीनों उनके युद्धका अन्त करनेवाले शरीर पाप और प्राणों के नाशकरनेवाले क्षत्रीवैश्य और शूद्रवीरों के धर्म स्वर्ग और यशके उत्पन्न करनेवालेहुये । १८ । हे भरतर्षभ इसके पीछे बड़े वीर कौरव और महारथी मद्रदेशियों से रक्षित वीर दुर्योधन ने भाइयों समेत युद्धमें आकर पांडव पांचाल और चेदेरी देशियों समेत सात्यकीके साथ युद्ध करनेवाले कर्णको चारों ओरसे रक्षित किया । २० । फिर कर्णने भी तीक्ष्णधार

weapons 12. The Sansaptaks roared on seeing the car of Arjun drowned in the ocean of the army. Then Arjun slew the enemies right and left, before and behind as *Rudra* slays animals. Then the warriors of Panchal, Chanderi, Srinjaya and others fought bravely.15. Valiant Kripacharya, Kritrarma and Shakuni fought with the warriors of Koshal, Kashi, Matsya, Karus'h and Shurasn. Destroying bodies, sins and life, the Kshatryas, *Vais'yas* and Shudra warriors obtained Dharm, fame and heaven. Protected by the warriors of Madra and the Kauravas, Duryodhan and his brothers protected Karan who was fighting with the Panchals and Pandavas led by Satyaki20. Karan slew the host of warriors and wounded Yudhish-

कार्याणिमिहत्य महाचमूम् । प्रमुख च रथश्रेष्ठान् युधिष्ठिरमपीडयत् ॥ २१ ॥ विप्रमायुधदेहासून् कृत्वा शत्रून् सहस्रशः युक्ता स्वर्गयशोभ्यांच स्वेभ्यो मुदमुदावहत ॥ २२ ॥ एवं मारिष संग्रामो नरवाजिरथक्षयः । कुरूणां सृञ्जयानाञ्च देवासुर समोऽभवत् ॥ २३ ॥

इतिश्री कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । यत्तत् प्रविश्य पार्थानां सैन्यं कुर्वन् जनक्षयम् । कर्णो राजानमभ्यगच्छत्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ १ ॥ के च प्रवीराः पार्थानांयुधि कर्णमवारयन् । कांश्च प्रमथ्याधिरथिर्युधिष्ठिरमपीडयत् ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । धृष्टद्युम्नमुख

वाले बाणों से बड़ीभारी सेनाको मारकर प्रथम उत्तम रथियोंको मर्दनकरके युधिष्ठिरको पीड़ामानकिया । २१ । हजारों शत्रुओंको अस्त्रशस्त्र शरीर और प्राणोंसे पृथक्कर स्वर्ग और यशको स्पर्श करके अपने शूरवीरोंको प्रसन्नकिया । २२ । हे श्रेष्ठ इसरीतिसे मनुष्य हाथी और घोड़ोंका नाशकरनेवाला युद्ध कौरव और सृंजियों में देवासुरोंके युद्धके समानहुआ २३ ॥

अध्याय ४७ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मनुष्यों का नाश करनेवाले कर्णने पांडवों की उस सेनामें जाकर राजा युधिष्ठिरको जैसे अचेत किया वहसव मुझसे वर्णनकरो । १ । युद्धमें पाण्डवों के कौन से बड़े वीरोंने कर्णको रोका और अधिरथी कर्णने कौन

thir. Depriving thousands of foes of their weapons and life, Karan pleased his companions in arms. Thus the battle, destructive of elephants, horses and men, fought between the Kauravas and Pandavas, was severe like that between the gods and asurs." 23.

CHAPTER XLVIII

Dhritrashtra said; "Tell me, Sanjaya how Karan the destroyer of foes entered the Pandav army and made Yudhishthir insensible. What great warriors of the Pandavas checked Karan? What warriors were destroyed by Karan, before he wounded Yudhishthir?" Sanjaya

व पार्थान् दृष्ट्वा कर्णो व्यवस्थितान् । समभ्यधावत्त्वरितः पाञ्चालान् शत्रुकर्षणः
॥ ३ ॥ तं तूर्णमभिधावन्तं पाञ्चाला जितकाशिनः । प्रत्युद्ययुर्महात्मानं हंसा इव
महार्णवम् ॥ ४ ॥ ततः शङ्खसहस्राणां निस्वनो हृदयङ्गमः । प्रादुरासीदुभयतो
भेरीशब्दश्च दारुणः ॥ ५ ॥ नानावादित्रनादश्च द्विपाश्वरथनिस्वनः सिंहनादश्च
वीराणामभवद्दारुणस्तदा ॥ ६ ॥ साद्रिद्रुमार्णवा भूमिः सवाताम्बुदमम्बरम् । सार्केन्दु
ग्रहनक्षत्रा द्यौश्च व्यक्तं विघूर्णिता ॥ ७ ॥ इति भूतानि तं शब्दं मेनिरे ते च
विव्यथुः । यानि चाल्पबलान्यासंस्तानि भूतानि च ॥ ८ ॥ अथ कर्णो भृशं क्रुद्धः शीघ्र
मस्त्रमुदीरयन् । जघान पाण्डवीं सेनामासुरीं मघवानिव ॥ ९ ॥ स पाण्डवबलं
कर्णः प्रविश्य विसृजन् शरान् । प्रभद्रकाणां प्रवरानहनत् सप्तसप्ततिम् ॥ १० ॥ ततः सुपुंख

से वीरोंको मथकर युधिष्ठिरको पीड़ितकिया । २ । संजयबोले कि शत्रुओंका
विजय करनेवाला कर्ण सम्मुख वर्त्तमान पाण्डवों को जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था
देखकर शीघ्रही पांचालके सम्मुख दौड़ा । ३ । विजयसे शोभायमान पांचाल शीघ्र
ही उसके सम्मुख दौड़नेवाले महात्मा के सम्मुख ऐसेगये जैसेकि हंससमुद्रके सम्मुख जातेहैं
। ४ । इसकेपीछे दोनों ओरसे हजारों शंखों के चित्तरोचक शब्द प्रकटहुये और
भेरियों के भयानक शब्द होनेलगे । ५ । तब नानाप्रकार के बाजोंका मिलना और
हाथी घोड़े वा रथों के शब्द और भयकारी वीरोंके सिंहनाद उत्पन्न हुये । ६ ।
पर्वत वृक्ष और समुद्रसमेत पृथ्वी वायु और बादलों समेत आकाश अथवा सूर्य्य
चन्द्रमा ग्रह नक्षत्रादि समेत स्वर्ग यह सब प्रत्यक्ष में घूमने लगे । ७ । सब जीवमात्र
उस शब्दको इसप्रकार का मानकर व्याकुलहोनेसे व्यथितहुये और छोटे जीवतो भयभीत
होकर मरगये । ८ । इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने शीघ्रही अस्त्रको
प्रकटकर के पाण्डवी सेनाको ऐसा मारा जिसप्रकार आसुरी सेनाको इन्द्रमारता है
। ९ । बाणों को छोड़तेहुये उसकर्ण ने पाण्डवी सेना में घुसकर प्रभद्रकों के बड़े

said, " Karan the destroyer of foes, seeing the Pandav army led by Dhrishtadyumn, rushed on against him. The valiant Panchals rushed at Karan as swans do towards the sea. The sounds of conchs on both sides were heart-stirring and the noise of the drums was dreadful. Arrows fell down and the noise arising out of horses, elephants and cars, was mingled with the roars of the warriors. The earth with her hills, trees and seas as well as the sky with clouds, the Sun, the moon and stars seemed turning round. All the creatures were disturbed with that noise, while the smaller ones fell down dead. Then Karn, much enraged, discharged his weapons and slew the Pandav army as Indra does the army of asurs. Shooting his arrows, Karan entered the Pandav army and slew seventyseven Prabhadraks

निशिते रथश्रेष्ठो रथेषुभिः । अवधीत् पञ्चविंशत्या पांचालान् पञ्चविंशतिम ॥११॥
सुवर्णपुंखैर्नाराचैः परकायविदारणैः । चेदिकानवधीद्वीरः शतशोऽथ सहस्रशः
॥ १२ ॥ तं तथा समरे कर्म कुर्वाणमतिमानुषम् । परिवव्रुर्महाराज पाञ्चालानां
रथव्रजाः ॥ १३ ॥ ततः सन्धाय विशिखान् पञ्च भारत दुःसहान् । पाञ्चालान
वधीयत् पञ्च कर्णो वैकर्त्तनो नृपः ॥ १४ ॥ भानुदेवं चित्रसेनं सेनाविन्दुञ्च
भारत । तपनं शूरसेनञ्च पाञ्चालानहनद्रणे ॥ १५ ॥ पाञ्चालेषु च शूरेषु वध्यमा
नेषु सायकैः । हाहाकारो महानासीत् पाञ्चालानां महाहवे ॥ १६ ॥ परिवव्रुर्महा
राज पाञ्चालानां रथा दश । पुनरेव च तान् कर्णो जघानाशु पत त्रिभिः
॥ १७ ॥ चक्ररक्षौ तु कर्णस्य पुत्रौ मारिष दुर्ज्जयौ । सुषेणःसत्यसेनश्च त्यक्त्वा
प्राणानयुध्यताम ॥१८॥ पृष्ठगोप्तातु कर्णस्य ज्येष्ठः पुत्रो महारथः । वृषसेनःस्वयंकर्ण
पृष्ठतः पर्य्यपालयत् ॥ १९ ॥ धृष्टद्युम्न :सात्यकिश्चद्रौपदेया वृकोदराः । जनमेजयः

सतहत्तर वीरों को मारा । १० । इसकेपीछे उस महारथी कर्ण ने सुनहरी पुंखवाले
तीक्ष्णधार पच्चीस उत्तम बाणों से पच्चीसही पांचालों को मारा । ११ । फिर
उस वीरने सुनहरी पुंखवाले शत्रुओं के चीरनेवाले नाराचों से हजारों चंदेरी देशियों
को भी मारा । १२ । हे महाराज इसके पीछे पांचालों के रथसमूहों ने इसरीति के
बुद्धि से बाहर कर्म करनेवाले कर्णको चारों ओर से घेरलिया । १३ । फिर तो
सूर्य के पुत्र महात्मा कर्णने दुस्सह पांचविशिखोंको धनुषपर चढ़ाकर पांचपांचालोंको
मारा । १४ । अर्थात् हे भरतर्षभयुद्धमें भानुदेव,चित्रसेन,सेनाविन्दु तपन,सूरसेन इन
पांचालों को मारा । १५ । उस युद्धमें शूरवीर पांचालोंके मरनेपर पांचालों में बड़ा
हाहाकार हुआ । १६ । हे महाराज तबतो पांचालों के दश महारथियों ने कर्णको
चारोंओर से घेर लिया उससमयभी कर्णने शीघ्रही बाणों से उनको मारा । १७ ।
इसके पीछे चक्र के रक्षक दुर्जय कर्णके पुत्र सुषेण और सत्यसेन ने कर्णको त्याग
कर युद्ध किया । १८ । फिर कर्णके पुत्र पृष्ठरक्षक वृषसेन ने कर्णको पीछेकी
ओरसे रक्षित किया । १९ । कवच और शस्त्रोंके धारण करनेवाले धृष्टद्युम्न, सात्यकि

warriors. 10. Then with twentyfive arrows he slew as many Panchals. He slew thousands of Chanderi warriors with his foe-destroying warriors. Then Panchal warriors surrounded Karan who was doing extraordinary deeds of prowess Karan the son of Suryaput five arrows to his bow and slew five Panchals; namely, Bhanudev, Chitrasen, Senavindu, Tapan and Shursen.15. At the death of those warriors the Panchals cried out in dismay. Then ten warriors of the Panchals surrounded Karan but the latter slew them all. The valiant sons of Karan, who guarded the wheels of his car, fought away from his car. Karan's son, Vrishasen guarded his car from

।शिखण्डी च प्रवीराश्च प्रभद्रकाः ॥ २० ॥ चेदिकैकयपाञ्चाला यमौ मत्स्याश्च दंशिताः । समभ्यधावन्राधेयं जिघांसन्तः प्रहारिणम् ॥ २१ ॥ त एनं विविधैः शस्त्रैः शरधाराभिरेव च । अभ्यवर्षन् विमर्दन्तं प्रावृषीवाम्बुदा गिरिम् ॥ २२ ॥ पितरन्तु परीप्सन्तः कर्णपुत्राः प्रहारिणः । त्वदीयाश्चापरे राजन् वीरा वीरानवारयन् ॥ २३ ॥ सुषेणो भीमसेनस्य छित्वा भल्लेन कार्मुकम् । नाराचैः सप्तभिर्विद्ध्वा हृदि भीमं ननाद ह ॥ २४ ॥ अथान्यद्धनुरादाय सुदृढं भीमविक्रमः । सज्यं वृकोदरः कृत्वा सुषेणस्याच्छिनद्धनुः ॥ २५ ॥ विव्याध चैनं दशभिः क्रुद्धो नृत्यन्निवेषुभिः । कर्णञ्च तूर्णं विव्याध सप्तत्या निशितैः शरैः ॥ २६ ॥ भानुसेनञ्च दशभिः साश्व सूतायुधध्वजम् । पश्यतां सुहृदां मध्ये कर्णपुत्रमपातयत् ॥ २७ ॥ क्षुरप्रणुन्नं तत्तस्य

द्रौपदी के पुत्र, भीमसेन, जन्मेजय, शिखण्डी और बड़े वीर प्रभद्रक ।२०। चन्देरी केकय, पांचालदेशी, नकुल सहदेव और मत्स्यदेशी शूरवीर यह सब मारने को इच्छावान् उस प्रहार करने वाले कर्ण के सम्मुख दौड़े । २१ । और नानाप्रकारकी बाण वर्षासे इस कर्णको ऐसा मर्दन किया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल पर्वतको मर्दनकरते हैं । २२ । इसके पीछे पिता के चाहनेवाले प्रहारकर्त्ता कर्ण के पुत्रोंने और आपके अन्य वीरों ने उन सब वीरोंको रोका । २३ । सुषेण भल्लसे भीमसेन के धनुषको काटकर और सात नाराचों से भीमसेन को छातीपर घायल करके गर्जा । २४ । इसके पीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन ने बड़े दृढ़ दूसरे धनुषको लेकर अपने बाणसे सुषेण के धनुष को काट । २५ । क्रोधसे युक्त नाचते हुये भीमसेन ने दश बाणोंसे उसको घायल किया और बड़ी शीघ्रता से कर्णको भी सत्तर बाणोंसे उसको घायल किया । २६ । और देखनेवाले मित्रों के मध्यमें कर्ण के पुत्र भानुसेनको घोड़े सारथी रथ शस्त्र और ध्वजासमेत दशबाणों से गिरादिया । २७ । फिर क्षुरमसे कटाहुआ उसका वह प्रकाशमान शिर ऐसा शोभित हुआ

behind. Armed with weapons and armour, Dhrishtadyumn, Satyaki, the sons of Draupadi, Bhimsen, Janmejaya, Shikhandi, the warriors of Prabhadrak, Chanderi, Kaikaya and Panchal, Nakul, Sahadev and Matsya warriors, desirous of slaying, attacked Karan. They showered their arrows over him like rain Then the sons of Karan, desirous of the safety of their father, checked those warriors with the help of other warriors. Sushen cut the bow of Bhim and wounded him on the breast, with a roar. Bhim of dreadful prowess then took up another hard bow and cut Sushen's bow. Dancing in anger, Bhim wounded him with ten arrows and Karan with seventy seven. In the presence of all his friends, he deprived Karan's son Bhanusen of driver, car, weapons and standard. Severed by a sharp arrow, his head looked glorious like a lotus flower severed from its stalk. Having

शिरश्चन्द्रनिभाननम् । शुभदर्शनमेवासीन्नालभ्रष्टमिवाम्बुजम् ॥ २८ ॥ हत्वा कर्णसुतं भीमस्तावकान् पुनरार्दयत् । कृपहार्दिक्ययोश्छित्वा चापौ तावप्यपीडयत् ॥ २९ ॥ दुःशासनं त्रिभिर्विद्ध्वा शकुनिं षड्भिरायसैः । उलूकञ्च पतत्रिञ्च चकार विरथावुभौ ॥ ३० ॥ हा सुषेण हतोऽसीति ब्रुवन्नादत्त शायकम् । तमस्य कर्णश्चिच्छेद त्रिभिश्चैनमताडयत् ॥ ३१ ॥ अथान्यं परिजग्राह सुपर्वाणं सुतेजनम् सुषेणायासृजद्भीमस्तमप्यस्याच्छिनद्वृषः ॥ ३२ ॥ पुनः कर्णस्त्रिसप्तत्या भीमसेनमथेषुभिः । पुत्रं परीप्सन् विव्याध क्रूरं क्रूरैर्जिघांसया ॥ ३३ ॥ सुषेणस्तु धनुर्गृह्य भारसाधनमुत्तमम् । नकुलं पञ्चभिर्बाणैर्बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ ३४ ॥ नकुलस्तन्तु विंशत्या विद्ध्वा भारसहैर्दृढैः । ननाद बलवन्नादं कर्णस्य भयमादधत् ॥ ३५ ॥ तं सुषेणो महाराज विद्ध्वा दशभिराशुगैः । चिच्छेद च धनुः शीघ्रं क्षुरप्रेण महारथ

जैसे कि नालसे जुदाहुआ कमल होता है ।२८। भीमसेन ने कर्णके पुत्रको मारकर आपके शूरवीरों को फिर पीड़ामान करके कृपाचार्य्य और कृतवर्मा के धनुषों को काटकर उनकोभी व्याकुल किया । २९ । फिर दुःशासनको तीनवाणसे और शकुनीको छः लोहे के वाणों से घायल करके उलूक और पत्री इनदोनों को विरथकिया । ३० । हा सुषेण को मारा है ऐसा कहते हुये ने भीमसेन ने शायक को लिया तबकर्ण ने उसके उसवाण को काटकर तीन वाणों से उसको भी घायल किया । ३१ । इसके पीछे भीमसेनने सुन्दर पर्व्ववाले वाणको लेकर सुषेणके ऊपर छोड़ा फिर कर्णने उसवाण कोभी काटा । ३२ । इसके पीछे पुत्रको चाहते निर्दय कर्ण ने मारने की इच्छासे तिहत्तर वाणों से भीमसेन को फिर घायल किया ।३३। फिर सुषेणने बड़े भारवाहक उत्तमधनुषको लेकर पांचवाणोंसे नकुलको दोनों भुजा और छातीपर घायलकिया । ३४ । तब नकुलभी भारसहने वाले बीसवाणों से उसको घायल करके बड़े शब्दसे गर्जा और कर्ण के भयको उत्पन्न किया ।३५। फिर महारथी सुषेण ने शीघ्रगामी तीक्ष्ण दशवाणोंसे उसको घायल कर के शीघ्रही

slain Karan's son, Bhim wounded your warriors and cut the bows of Kripacharya and Kritvarma. Then he wounded Dushasan with three arrows and Shakuni with six, and deprived Uluk and Patri of their car. He took up an arrow crying out, "I have slain Sushen." But Karan cut down his arrow and wounded him with three arrows. Then Bhim took up a pointed arrow and discharged it at Sushen; but Karan cut that arrow too. Then cruel Karan, desirous of the safety of his own son, wounded Bhim with seventy three arrows. Sushen then took up another hard bow and with five arrows wounded Nakul on both his arms and breast. Nakul wounded him with twenty arrows and roared loudly, causing fear to Karan 35. Then brave Sushen, with ten swift arrows, wounded him and cut his bow with another. Then Nakul,

शिखण्डी च प्रवीराश्च प्रभद्रकाः ॥ २० ॥ चेदिकैकयपाञ्चाला यमौ मत्स्याश्च दंशिताः । समभ्यधावन्नाधेयं जिघांसन्तः प्रहारिणम् ॥ २१ ॥ त एनं विविधैः शस्त्रैः शरधाराभिरेव च । अभ्यवर्षन विमर्दन्तं प्रावृषीवाम्बुदा गिरिम् ॥ २२ ॥ पितरन्तु परीप्सन्तः कर्णपुत्राः प्रहारिणः । त्वदीयाश्चापरे राजन् वीरा वीरानवारयन् ॥ २३ ॥ सुषेणो भीमसेनस्य छित्वा भल्लेन कार्मुकम् । नाराचैः सप्तभिर्विद्ध्वा हृदि भीमं ननाद ह ॥ २४ ॥ अथान्यद्धनुरादाय सुदृढं भीमविक्रमः । सज्यं वृकोदरः कृत्वा सुषेणस्याच्छिनद्धनुः ॥ २५ ॥ विव्याध चैनं दशभिः क्रुद्धो नृत्यन्निवेषुभिः । कर्णञ्च तूर्णं विव्याध सप्तत्या निशितैः शरैः ॥ २६ ॥ भानुसेनञ्च दशभिः साश्वसूतायुधध्वजम् । पश्यतां सुहृदां मध्ये कर्णपुत्रमपातयत् ॥ २७ ॥ क्षुरप्रणुन्नं तत्तस्य

द्रौपदी के पुत्र, भीमसेन, जन्मेजय, शिखण्डी और बड़े वीर प्रभद्रक ।२०। चन्देरी केकय, पांचालदेशी, नकुल सहदेव और मत्स्यदेशी शूरवीर यह सब मारने को इच्छावान् उस प्रहार करने वाले कर्ण के सम्मुख दौड़े । २१ । और नानाप्रकारकी बाण वर्षासे इस कर्णको ऐसा मर्दन किया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल पर्व्वतको मर्दनकरते हैं । २२ । इसके पीछे पिता के चाहनेवाले प्रहारकर्त्ता कर्ण के पुत्रोंने और आपके अन्य वीरों ने उन सब वीरोंको रोका ।२३। सुषेण भल्लसे भीमसेन के धनुषको काटकर और सात नाराचों से भीमसेन को छातीपर घायल करके गर्जा । २४ । इसके पीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन ने बड़े दृढ़ दूसरे धनुषको लेकर अपने बाणसे सुषेण के धनुष को काट । २५ । क्रोधसे युक्त नाचते हुये भीमसेन ने दश बाणोंसे उसको घायल किया और बड़ी शीघ्रता से कर्णको भी सत्तर बाणोंसे उसको घायल किया । २६ । और देखनेवाले मित्रों के मध्यमें कर्ण के पुत्र भानुसेनको घोड़े सारथी रथ शस्त्र और ध्वजासमेत दशबाणों से गिरादिया । २७ । फिर क्षुरप्रसे कटाहुआ उसका वह प्रकाशमान शिर ऐसा शोभित हुआ

behind. Armed with weapons and armour, Dhrishtadyumn, Satyaki, the sons of Draupadi, Bhimsen, Janmejaya, Shikhandi, the warriors of *Prabhadrak*, *Chanderi*, *Kaikaya* and *Panchal*, *Nakul*, *Sahadev* and Matsya warriors, desirous of slaying, attacked Karan. They showered their arrows over him like rain Then the sons of Karan, desirous of the safety of their father, checked those warriors with the help of other warriors. Sushen cut the bow of Bhim and wounded him on the breast, with a roar. Bhim of dreadful prowess then took up another hard bow and cut Sushen's bow. *Dancing* in anger, Bhim wounded him with ten arrows and Karan with seventy seven. In the presence of all his friends, he deprived Karan's son Bhanusen of driver, car, weapons and standard. Severed by a sharp arrow, his head looked glorious like a lotus flower severed from its stalk. Having

शिरश्चन्द्रनिभाननम्। । शुभदर्शनमेवासीन्नालभ्रष्टमिवाम्बुजम ॥ २८ ॥ हत्वा कर्णसुत भीमस्तावकान् पुनरार्दयत् । कृपहार्दिक्ययोश्छित्वा चापौ तावप्यथार्दयत् ॥ २९ ॥ दुःशासनं त्रिभिर्विध्वा शकुनिं षड्भिरायसैः । उलूकञ्च पतत्रिञ्च चकार विरथावुभौ ॥ ३० ॥ हा सुषेण हतोऽसीति ब्रुवन्नादत्त शायकम । यमस्य कर्णश्चिच्छेद त्रिभिश्चैनमताड़यत ॥ ३१ ॥ अथान्यं परिजग्राह सुपर्वाणं सुतेजनम सुषेणायासृजद्भीमस्तमप्यस्याच्छिनद्वृषः ॥ ३२ ॥ पुनः कर्णस्त्रिसप्तत्या भीमसेन मथेषुभिः । पुत्रं परीप्सन् विव्याध क्रूरं क्रूरजिघांसया ॥ ३३ ॥ सुषेणस्तु धनुर्गृह्य भारसाधनमुत्तमम् । नकुलं पञ्चभिर्बाणैर्बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ ३४ ॥ नकुलस्तं तु विंशत्या विध्वा भारसहैर्दृढैः । ननाद बलवन्नादं कर्णस्य भयमादधत् ॥ ३५ ॥ तं सुषेणो महाराज विध्वा दशभिराशुगैः । चिच्छेद च धनुः शीघ्रं क्षुरप्रेण महारथ

जैसे कि नालसे जुदाहुआ कमल होता है ।२८। भीमसेन ने कर्णके पुत्रको मारकर आपके शूरवीरों को फिर पीड़ामान करके कृपाचार्य्य और कृतवर्मा के धनुषों को काटकर उनकोभी व्याकुल किया । २९ । फिर दुःशासनको तीनवाणसे और शकुनीको छः लोहे के बाणों से घायल करके उलूक और पत्री इनदोनों को विरथकिया । ३० । हा सुषेण को मारा है ऐसा कहते हुये ने भीमसेन ने शायक को लिया तबकर्ण ने उसके उसवाण को काटकर तीन बाणों से उसको भी घायल किया । ३१ । इसके पीछे भीमसेनने सुन्दर पर्ववाले वाणको लेकर सुषेणके ऊपर छोड़ा फिर कर्णने उसवाण कोभी काटा । ३२ । इसके पीछे पुत्रको चाहते निर्दय कर्ण ने मारने की इच्छासे तिहत्तर बाणों से भीमसेन को फिर घायल किया ।३३। फिर सुषेणने बड़े भारवाहक उत्तमधनुषको लेकर पांचवाणोंसे नकुलको दोनों भुजा और छातीपर घायलकिया । ३४ । तब नकुलभी भारसहते वाले बीसवाणों से उसको घायल करके बड़े शब्दसे गर्जा और कर्ण के भयको उत्पन्न किया । ३५ । फिर महारथी सुषेण ने शीघ्रगामी तीक्ष्ण दशवाणोंसे उसको घायल कर के शीघ्रही

slain Karan's son, Bhim wounded your warriors and cut the bows of Kripacharya and Kritvarma. Then he wounded Dushasan with three arrows and Shakuni with six, and deprived Uluk and Patri of their car. He took up an arrow crying out, "I have slain Sushen." But Karan cut down his arrow and wounded him with three arrows. Then Bhim took up a pointed arrow and discharged it at Sushen; but Karan cut that arrow too. Then cruel Karan, desirous of the safety of his own son, wounded Bhim with seventy three arrows. Sushen then took up another hard bow and with five arrows wounded Nakul on both his arms and breast. Nakul wounded him with twenty arrows and roared loudly, causing fear to Karan 35. Then brave Sushen, with ten swift arrows, wounded him and cut his bow with another. Then Nakul,

॥३६॥ अथान्यद्धनुरादाय नकुलः क्रोधमूर्च्छितः। सुषेणं नवभिर्बाणैर्वारयामाससंयुगे
॥३७॥स तु बाणैर्दिशो राजन्नाच्छाद्य परवीरहा।
त्रिभिःचिच्छेदचास्यसुदृढं धनुर्भल्लैस्त्रिभिस्त्रिधा॥३८॥अथान्यद्धनुरादायसुषेणःक्रो
र्च्छितः।अविध्यन्नकुलं षष्ट्या सहदेवञ्चसप्तभिः ॥३९॥ तद्युद्धं सुमहद्घोरमासीद्देवा
सुरोपमम्। निघ्नता सायकैस्तूर्णमन्योऽन्यस्य वधं प्रति ॥ ४० ॥ सात्यकिर्वृषसेनस्य
सूतं हत्वा त्रिभिः शरैः। धनुश्चिच्छेद भल्लेन जघानाश्वांश्च सप्तभिः ॥ ४१ ॥ ध्वज
मेकेषुणोन्मथ्य त्रिभिस्तं हृद्यताडयत्। अथावसन्नः स रथे मुहूर्त्तात् पुनरुत्थितः ॥४२॥
स रणे युयुधानेन विसूताश्वरथध्वजः। कृतो जिघांसुः शैनेयं खड्गचर्मधृगभ्ययात्
॥ ४३ ॥ तस्य चाप्लवतः शीघ्रं वृषसेनस्य सात्यकिः। वराहकर्णैर्दशभिरविध्यद्

तुरमसे उस के धनुषको काटा। ३६। इसके पीछे क्रोधसे भरेहुये नकुलने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें नौबाणों सुषेणको रोका। ३७। उस शत्रुहन्ता ने बाणों से दिशाओं को ढककर इसके सारथीको घायल किया फिर सुषेणको तीनबाणसे छेदा और तीन भल्लों से उसके बड़े दृढ़ धनुषके तीनखण्ड करादिये। ३८। इसके पीछे क्रोधयुक्त सुषेण दूसरे धनुषको लेकर साठबाणों से नकुलको घायल करके सातबाणोंसे सहदेव को छेदा। ३९। परस्परके युद्ध में शीघ्रतापूर्वक शायक मारने वाले वीरोंका युद्ध देवासुरों के युद्धके समानहुआ। ४०। फिर सात्यकि तीन बाणों से वृषसेन के सारथीको मारकर भल्लसे उसके धनुषको काट घोड़ों को भी सातबाणों से मारा। ४१। एकबाण से ध्वजाको काटकर तीनबाणों से उसको भी हृदयपर घायलकिया इसके पीछे एकमुहूर्त अपने रथपर अचेतहोकर फिर उठखड़ा हुआ। ४२। युद्धमें सात्यकि के हाथसे सारथी घोड़े रथ और ध्वजासे रहित किया हुआ वह वृषसेन उस के मारनेकी इच्छासे ढाल तलवार बांधकर सम्मुख गया। ४३। उस शीघ्रतासे आनेवाले वृषसेनकी ढालतलवारको सात्यकिने वाराहकर्ण

much enraged, took up another bow and checked Sushen with nine arrows. That destroyer of foes, having spread his arrows in all directions, wounded his adversary's driver. Then he wounded Sushen with three arrows and with three more cut his bow at three places. Then enraged Sushen took up another bow and having wounded Nakul with sixty arrows, wounded Sahadev too, with seven. The battle between those warriors, desirous of slaying one another, was like that between gods and asurs. 40. Then Satyaki slew the driver of Vrishasen with three arrows and having cut down his bow, slew the horses with seven more. He cut his standard with one arrow and wounded him on the breast with three. Vrishasen fainted in the car for some time. Deprived of driver, car, horses and standard by Satyaki, Vrishasen opposed him with shield and sword. But Satyaki cut into pieces his shield and sword with ten arrows. Seeing

सिचर्मणो ॥ ४४ ॥ दुःशासनस्तु तं दृष्ट्वा विरथं व्यायुधं कृतम् । आरोप्य स्वरथं तूर्णमपोवाह रथान्तरम् ॥ ४५ ॥ अथान्यं रथमास्थाय वृषसेनो महारथः । द्रौपदेयांस्त्रिसप्तत्या युयुधानञ्च पञ्चभिः ॥ ४६ ॥ भीमसेनं चतुःषष्ट्या सहदेवञ्च पञ्चभिः । नकुलं त्रिंशता बाणैः शतानीकञ्च सप्तभिः ॥ ४७ ॥ शिखण्डिनञ्च दशभिर्धर्मराजं शतेन च । एतांश्चान्यांश्च राजेन्द्र प्रवीरान् जयगृद्धिनः ॥ ४८ ॥ अभ्यर्दयन्महेष्वासः कर्णपुत्रो विशाम्पते । कर्णस्य युधि दुर्द्धर्षस्ततः पृष्ठमपालयत् ॥ ४९ ॥ दुःशासनञ्च शैनेयो नवैर्नवभिरायसैः । विसूताश्वरथं कृत्वा ललाटे त्रिभिरार्पयत् ॥ ५० ॥ स त्वन्यं रथमास्थाय विधिवत् कल्पितं पुनः । युयुधे पाण्डवैः सार्द्धं कर्णस्याप्याययन् बलम् ॥ ५१ ॥ धृष्टद्युम्नस्ततः कर्णमविध्यद्दशभिः शरैः । द्रौपदेयास्त्रिसप्तत्या युयुधानस्तु सप्तभिः ॥ ५२ ॥ भीमसेनश्चतुःषष्ट्या सहदेवश्च

नाम दशवाणों से काटा।४४। और दुश्शासन ने उस रथ और शस्त्रसेहीनवृषसेनको देखकर अपने रथपर सवारकरके शीघ्रही दूसरे रथपर सवारकिया । ४५ । इसके पीछे महारथी वृषसेन ने दूसरे रथपर सवार होकर तिहत्तरवाणोंसे द्रुपदके पुत्रोंको और पांचवाणों से सात्यकी को ।४६। चौंसठ वाणों से भीमसेनको पांचसे सहदेव को तीनसौ बाणोंसे नकुलको सातवाणोंसे शतानीक को ।४७। दशवाणसे शिखण्डी को और सौ बाणोंसे धर्म्मराजको घायलकिया हे राजा उस धनुषधारी कर्ण के पुत्रने इन और अन्य शूरवीरों को पीड़ामानकिया इसके पीछे उस अजयने युद्धमें कर्णके पृष्ठभागको रक्षितकिया । ४९ । फिर सात्यकि ने नवीन लोहे के नौ बाणों से दुश्शासनको सारथी घोड़े और रथसे विहीनकरके तीनवाण से उसके ललाटको घायल किया।५०।फिर वह दुश्शासन बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर कर्ण के बलको बढ़ाताहुआ पाण्डवोंके साथ युद्ध करनेलगा । ५१ । इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने दश वाणों से कर्णको घायल किया द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर वाणोंसे सात्यकि ने सात वाणोंसे भीमसेनने चौंसठ वाणोंसे नकुलने तीनसौ वाण

Vrishasen deprived of arms and car, Dushasan took him up on his own car. 45. Mounted on another car, Vrishasen wounded the sons of Drupad with seventy three arrows, Satyaki with five, Bhim with sixty four, Sahadev with five, Nakul with three hundred, Shatanik with seven, *Shikhandi with ten and Yudhishthir with a hundred.* Karan's son wounded these and other warriors and then went on to protect Karan's rear. With nine new arrows made of iron, Satyaki deprived Dushasan of driver, horses and car and with three more wounded him on the head.50. Dushasan mounted another car and helped Karan in fighting with the Pandavas. *Dhrishtadyumn* wounded Karan with five arrows; the sons of Draupadi wounded him with seventy three; Satyaki wounded him with seven; Bhim with sixty

सप्तभिः । नकुलस्त्रिशता बाणैः शतानीकश्च सप्तभिः ॥ ५३ ॥ शिखण्डी दशभिर्वीरो धर्मराजः शतेन च ॥ ५४ ॥ एते चान्ये च राजेन्द्र प्रवीरा जयगृद्धिनः । अभ्यर्दयन्महेष्वासं सूतपुत्रं महामृधे ॥ ५५ ॥ तान् सूतपुत्रो विशिखैर्दशभिर्दशभिः शरैः । रथेनानुचरन् वीरः प्रत्यविध्यदरिन्दमः ॥ ५६ ॥ तत्रास्त्रवीर्यं कर्णस्य लाघवञ्च महात्मनः । अपश्याम महाराज तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ५७ ॥ न ह्याददानं ददृशुः सन्दधानञ्च सायकान् । विमुञ्चन्तञ्च संरम्भाद्ददृशुस्तं हतानरीन् ॥ ५८ ॥ द्यौर्वियद्भूर्दिशश्चैव प्रपूर्णा निशितैः शरैः । अरुणाभ्रावृताकारं तस्मिन्देशे बभौ वियत् ॥ ५९ ॥ नृत्यन्निव हि राधेयश्चापहस्तः प्रतापवान् । यैर्विद्धः प्रत्यविद्धत्तानेकैकं त्रिगुणैः शरैः ॥ ६० ॥ दशभिर्दशभिश्चैनान् पुनर्विद्ध्वा ननाद च । साश्वसूतरथच्छत्रास्ततस्ते विवरं ददुः ॥ ६१ ॥ तान् प्रमृद्य महेष्वासान्राधेयः शरवृष्टिभिः । राजानीकमसंबाधं

से शतानीकने सातबाण से शिखण्डीने दशबाणों से और वीर धर्मराज ने सौ बाणोंसे घायल किया । ५४ । हे राजेन्द्र विजयाभिलाषी इन वीरों और अन्यवीरों ने उस महायुद्ध में बड़े भारी धनुषधारीको पीड़ामानकिया।५५।फिररथमे घूमकर उस शत्रुविजयी वीर कर्णने विशिखनाम दश दशबाणोंसे प्रत्येकको घायलकिया । ५६ । हे महाबाहो हमने महात्मा कर्ण के अस्त्रबल और हस्तलाघवता को देखकर बड़ा आश्चर्य किया । ५७ । क्रोधसे बाणों को लेते चढ़ाते और मारतेहुये कर्णको नहीं देखा परन्तु शत्रुओं को मृतकहुआ देखा । ५८ । उससमय तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे पृथ्वी स्वर्ग दिशा और आकाश भर व्याप्त होगया उस स्थानपर आकाश लालबादलों से व्याप्त होनेके समान परिपूर्ण होगया । ५९ । उससमय धनुष हाथमें लिये नाचता हुआ प्रतापवान् कर्ण जिन के हाथ से घायल हुआथा उन उन को एकएक करके तिगुने बाणों से घायल किया । ६० । फिर हज़ारबाणों से उनको घायल करके बड़े वेगमे गर्जा इसके पीछे घोड़े रथ सारथी समेत वह सबलोग घायल हो होकर हटगये । ६१ । शत्रुओं का घायल करनेवाला कर्ण बाणोंकी

four; Sahadev with seven; Nakul with three hundred; Saatanik with seven; Shikhandi with ten and Yudhishthir wounded him with a hundred. These and other warriors wounded Karan. Karan wounded each of them with ten arrows.56. We wondered at the dexterity and prowess of Karan. We could not mark his taking up and putting on and discharging of arrows; we only saw the enemies slain. All the directions were filled with his arrows. He wounded his adversaries with thrice the number of arrows which they had used in wounding him.60. Having wounded them with thousands of arrows, he roared a mighty roar. All the warriors, thus wounded, removed themselves from his presence. Karan the destroyer of foes, having routed them.

प्राविशच्छत्रुकर्षणः ॥ ६२ ॥ स रथांस्त्रिशतं हत्वा चेदीनामनिवर्त्तिनाम् । राधेयो निशितैर्बाणैस्ततोऽभ्यच्छेद्युधिष्ठिरम् ॥ ६३ ॥ ततस्ते पाण्डवा राजन् शिखण्डी च ससात्यकिः । राधेयात् परिरक्षन्तो राजानं पर्य्यवारयन् ॥ ६४ ॥ तथैव तावकाः सर्वे कर्णं दुर्वारणं रणे । यत्ताः शूरा महेष्वासाः पर्य्यरक्षन्त सर्वशः ॥ ६५ ॥ नानावादित्रघोषाश्च प्रादुरासन् विशाम्पते । सिंहनादश्च सञ्जज्ञे शूराणामभिगर्जताम् ॥ ६६ ॥ ततः पुनः समाजग्मुरभीताः कुरुपाण्डवाः । युधिष्ठिरमुखाः पार्थाः सूतपुत्रमुखा वयम् ॥ ६७ ॥

इतिश्री कर्णपर्वणि संकलयुद्धे अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः । ४४ ।

वर्षा से उनबड़े धनुषधारियों को मथकर परस्पर मर्दनरूप पीड़ासे रहित होकर हाथियोंकी सेनाओं में आया । ६२ । वहां उस कर्णनेमुख न मोडनेवाले चन्देरी देशियो के तीनसौ रथों को मारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे युधिष्ठिरको घायल किया । ६१ । इसकेपीछे हे राजा सब पाण्डव सात्यकि और शिखण्डी जोकि राजाको कर्ण से रक्षा कररहेथे उन सबने आकर युधिष्ठिरको चारोंओरसे रक्षित किया । उसीप्रकार सावधान शूरवीर महाधनुषधारी आपके सब युद्धकर्त्ताओं ने युद्धमें दुर्जय कर्णको चारों ओरसे रक्षित किया । ६५ । हे राजा फिर नानाप्रकार के बाजों के शब्द प्रकटहुये और सम्मुख गर्जनेवाले वीरों के सिंहनाद उत्पन्न हुये । ६६ । इसके पीछे निर्भय पाण्डव और कौरव फिर सम्मुख हुये पाण्डवों का मुख्य युधिष्ठिर था और हमारा मुख्य अग्रगामी कर्ण था । ६७ ।

---

entered the army of elephants. There he slew three hundred of the Chanderi warriors and wounded Yudhishthir. Then all the Pandavas, with Satyaki and Shikhandi, protected Yudhishthir on all sides. In the same manner, your warriors protected Karan. Then musical instruments were sounded. *The fearless Pandavas and* Kauravas led by Yudhishthir and Karan respectively, met in battle. "67.



सञ्जय उवाच। विद्राव्य कर्णस्तां सेनां धर्मराजमुपाद्रवत् । रथहस्त्यश्वपत्तीनां सहस्रैः परिवारितः ॥ १ ॥ नानायुधसहस्राणि प्रेषितान्यरिभिर्वृषः । छित्वा बाणशतैरुग्रैस्तान् विव्यधसंभ्रमात् ॥ २ ॥ निचकर्त्त शिरांस्तेषां बाहूनूरूंश्च सूतजः । ते हता वसुधां पेतुर्भग्नाश्चान्ये विदुद्रुवुः ॥ ३ ॥ द्राविड़ान्ध्रनिषादाश्च पुनः सात्यकिचोदिताः । अभ्यद्रवन् जिघांसन्तः पत्तयः कर्णमाहवे ॥ ४ ॥ ते विबाहुशिरस्त्राणाः प्रहताः कर्णसायकैः। पेतुः पृथिव्यां युगपच्छिन्नं शालवनं यथा ॥ ५ ॥ एवं योधशतान्याजौ सहस्राण्ययुतानि च । हतानीयुर्महीं देहैर्यशसापूर्य्य रोदसी ॥ ६ ॥ अथ वैकर्त्तनं कर्णं रणे क्रुद्धमिवान्तकम् । रुरुधुः पाण्डुपाञ्चाला व्याधिं मन्त्रौषधैरिव ॥ ७ ॥ स तान् प्रमृद्याऽभ्यपतत् पुनरेव युधिष्ठिरम् । मन्त्रौषधिक्रियातीतो व्याधिरत्युल्बणो यथा ॥ ८ ॥ स राजगृद्धिभी रुद्धः पाण्डुपाञ्चालकेकयैः । नाशकत्तानतिक्रान्तुं

अध्याय ४८

संजय बोले कि इसके पीछे हजारों रथ घोड़े हाथी और पत्तियों समेत कर्ण उस सेनाको चीरकर युधिष्ठिरके सम्मुखगया । १ । वहां कर्णने निर्भयता पूर्वक शत्रुओं से संतप्त होकर नानाप्रकारके हजारों शस्त्रों को काटकर सैकड़ों महाउग्र बाणों से शत्रुओंको घायल किया । २ । कर्णने उनके शिरजंघा और भुजाओंको काटा तब वह घायल और मृतक होकर पृथ्वीपर गिरपड़े और बहुतसे भागगये।३। फिर सात्यकि के कहनेपर द्राविड़ निषाद और शूरवीर पत्ती लोग युद्धमें मारनेकी इच्छासे कर्णके सम्मुखगये । ४ । वह लोगभी कर्ण के हाथसे शिरत्राण और भुजाओं से रहित होकर मारेगये और एकसाथही पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि टूटाहुआ तालका वन गिर पड़ताहै ।५।इसरीतिसे युद्धभूमिमें दिशाओं को व्याप्तकरते सैकड़ों और हजारों शूरवीर मृतकहोकर पृथ्वीपर वर्त्तमान हुये इसकेपीछे पांडव और पांचालोंने मृत्युके समान सूर्यके पुत्र कर्णको ऐसेरोका जैसे कि मन्त्र और औषधियों के द्वारा रोगको रोकते हैं । ७ । वह कर्ण उनकोभी मर्दनकर के फिर युधिष्ठिर केपास ऐसे पहुँचा जैसे कि मंत्र वा औषधियोंके कर्मको उल्लंघन करनेवाला महा कठिन रोगहोता है । ८ । राज्य के अभिलाषी पाण्डव पांचाल और केकयलोगों से रोकाहुआ वह कर्ण उल्लंघन करनेको ऐसे समर्थ नहींहुआ जैसे कि काल ब्रह्म

CHAPTER XLIX

Sanjaya said, " Then having crossed thousands of elephants, horse, cars and foot, Karan came face to face with Yudhishthir. Having fearlessly chastised the foe and cut down thousands of weapons, he wounded the foes with his dreadful weapons. Karan cut down their heads, thighs and arms and they fell down dead on the ground or fled from him. At the instigation of Satyaki, the Dravids, Nishads and brave foot-soldiers, opposed Karan. But they were all slain by him and fell down on the ground like trees struck down by the wind. Filling the

मृत्युं ब्रह्मविदो यथा ॥ ९ ॥ ततो युधिष्ठिरः कर्णमदूरस्थं निवारितम् । अब्रवीत्
परवीरघ्नं क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ १० ॥ कर्ण कर्ण वृथादृष्टे सूतपुत्र वचः शृणु । सदा
स्पर्द्धसि संग्रामे फाल्गुनेन तरस्विना ॥ ११ ॥ तथास्मान् बाधसे नित्यं धार्त्त
राष्ट्रमते स्थितः । यद्बलं यच्च ते वीर्यं प्रद्वेषो यश्च पाण्डुषु ॥ १२ ॥ तत्सर्वं
दर्शयाद्य पौरुषं महदास्थितः । युद्धश्रद्धाञ्च तेऽद्याहं विनेष्यामि महाहवे ॥ १३ ॥
एवमुक्त्वा महाराज कर्णं पाण्डुसुतस्तदा । सुवर्णपुङ्खैर्दशभिर्विव्याधायसमयैः शरैः
॥ १४ ॥ तं सूतपुत्रो दशभिः प्रत्यविध्यदरिन्दमः । वत्सदन्तैर्महेष्वासः प्रहसन्निव
भारत ॥ १५ ॥ सोऽवज्ञाय तु निर्विद्धः सूतपुत्रेण मारिष । प्रजज्वाल महाबाहु
र्हविषेव हुताशनः ॥ १६ ॥ ततो विस्फार्य्य सुमहच्चापं हेमपरिष्कृतम् । समाधत्त

ज्ञानीको नहीं उल्लंघन करसक्ता है । ९ । इसके पीछे समीप वर्त्तमान शत्रुविजयी रोकेहुये कर्ण से वह क्रोधसे रक्तनेत्र युधिष्ठिरबोले । १० । हे वृथा दीखनेवाले सूत पुत्र कर्ण मेरे वचनको सुन तू सदैव युद्धमें महावेगवान् अर्ज्जुन से ईर्षा करताहै । ११ । और दुर्योधन के मतमें होकर सदैव हमलोगों को पीड़ादेता है तेरा तेज बल पराक्रम और पाण्डवोंके साथमें जो शत्रुताहै । १२ । उस सबको तू बड़ी धीरता में नियत होकर दिखला अब मैं बड़े युद्धमें तेरे युद्धकी श्रद्धाका नाशकरूंगा । १३ । हे महाराज पाण्डव युधिष्ठिरने कर्णसे ऐसे वचन कहके सुनहरी पुंखवाले दशबाणों से उसको घायलकिया । १४ । हे भरतवंशी शत्रुओंके विजयी कर्ण ने हँसकर वत्सदन्तनाम दशबाणों से उसको घायलकिया । १५ । हे श्रेष्ठ कर्ण के हाथसे घायल वह युधिष्ठिर उसको तुच्छ करके ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि हव्यके कारणसे अग्नि प्रज्वलित होतीहै । १६ । उसकेपीछे सुवर्णसे जटित बहुत बड़ेधनुष को टंकार कर पर्वतोंके भी विदीर्ण करनेवाले बहुत तीक्ष्णबाणोंको चढ़ाया । १७ ।

directions with his arrows, he killed thousands of warriors. Then the Pandavas and Panchals checked Karan as a medicine does sickness. Having routed them, he approached Yudhishthir as sickness prevails over medicine. Checked by the Pandavas, Panchals and Kaikayas, eager for kingdom, Karan could not overstop them as Death cannot overtake one who knows Brahm. Then seeing Karan the conqueror of foes near him, Yudhishthir, with red eyes in anger, said, "Hear me vain son of Sut: you have always borne enmity with Arjun and have always given us trouble for the sake of Duryodhan. Now show us your great strength, enmity and prowess, and I shall satisfy your desire for fighting." Having said this to Karan, Yudhishthir wounded him with ten arrows having golden feathers. Then Karan wounded him with arrows known as Vatsdant .15. Disregarding the wounds

यितं वाणं गिरीणामपि दारणम् ॥ १७ ॥ ततः पूर्णायतोत्कृष्टं यमदण्डनिभं शरम्।
मुमोच त्वरितो राजा सूतपुत्रजिघांसया ॥ १८ ॥ स तु वेगवता मुक्तो बाणो
ऽशनिस्वन। विभेद सहसा कर्णं सव्यपार्श्वे महारथम् ॥ १९ ॥ स तु तेन
पीडितः प्रमुमोह वै । स्रस्तगात्रो महाबाहुर्धनुरुत्सृज्य स्यन्दने ॥ २० ॥
हाहाकृतं सर्वं धार्तराष्ट्रबलं महत्। विवर्णमुखमूयिष्ठं दृष्ट्वा कर्णं तथागतम्
सिंहनादश्च सञ्जज्ञे क्ष्वेडाः किलकिलास्तथा । पाण्डवानां महाराज दृष्ट्वा राज्ञः
क्रमम् ॥ २२ ॥ प्रतिलभ्य तु राधेयः संज्ञां नातिचिरादिव । वधे राजन्
मनः क्रूरपराक्रमः ॥ २३ ॥ स हेमविकृतं चापं विस्फार्य विजयं महत्।
मुदमेयात्मा पाण्डवं निशितैः शरैः ॥ २४ ॥ ततः क्षुराभ्यां पाञ्चाल्यौ

इसकेपीछे राजाने कर्णके मारने की इच्छासे शीघ्र कर्णतक खींचिहुये यमराजके
दण्डकी समान वाणको छोड़ा । १८ । फिर वह उस वेगवान्के हाथसे छूटाहुआ
बिजली के समान शब्दायमान वाण अकस्मात् उस महारथी कर्णके वाईंकोख
निपत हुआ । १९ । तब वह महाबाहु उसवाण से पीडितहोकर रथपर
छोड़कर अचेत होगया । २० । इसके पीछे दुर्योधनकी बड़ीसेनाने कर्णको उसदशा
में विपरीत चेष्टायुक्त देखकर बड़ा हाहाकार किया । २१ । हे राजा
पराक्रमको देखकर पाण्डवोंकासिंहनाद और क्रीडापूर्वक किलकिलाशब्द
। २२ । फिर वड़े पराक्रमी कर्णने थोड़ेही काल में सचेतहोकर राजा के मारने का
मनोरथकिया । २३ । और उस साहसी ने सुवर्णजटित विजयनाम धनुषको
कर तीक्ष्ण धारवाले वाणों से पाण्डवों को घायल किया २४ इसके पीछे युद्ध
महात्मा राजाके चक्करक्षक पांचालदेशी चंद्रदेव और दण्डधार को दो क्षुरों
प्राप्त किया २५ धर्मराजके वह दोनों बड़ेवीर दोनों पहियोंकीओर रथके

---

given by Karan, Yudhishthir was enraged like fire with lib
He then, twanged his bow and put to it many arrows which
pierce through mountains. Then the king desirous of slaying Karan,
drawing his bow to the ear, discharged an arrow like the staff
Yam. Shot by him, the arrow, with the speed of lightning, pierced
through the left rib of Karan, That brave warrior swooned with
wound and let go the bow and arrow from his grasp. 20.
Karan in that state, a great cry was raised from the army of
Kauravas. The Pandav warriors roared in glee at the sight o
Yudhishthir's prowess. Karan regained consciousness after a
time, and desirous of slaying the king, he twanged his bow and wound
ed him. He also wounded Chandradev and Dandadhar the
Panchal wheel-guards, 25. The two brave warriors

महात्मनः । जघान चन्द्रदेवञ्च दण्डधारञ्च संयुगे ॥ २५ ॥ तावुभौ धर्मराजस्य प्रवीरौ परिपार्श्वतः । रथाभ्यासे चकाशेते चन्द्रस्येव पुनर्वसू ॥ २६ ॥ युधिष्ठिरः पुनः कर्णमविध्यत्त्रिंशता शरैः । सुषेणं सत्यसेनञ्च त्रिभिस्त्रिभिरताडयत् ॥ २७ ॥ शल्यं नवत्या विव्याध त्रिसप्तत्याथ सूतजम् । तांश्चास्य गोप्तॄन् विव्याध त्रिभिस्त्रिभिरजिह्मगैः ॥ २८ ॥ ततः प्रहस्याधिरथिर्विधुन्वानः स्वकार्मुकम् । छित्वा भल्लेन राजानं विद्ध्वा षष्ट्यानदत्तदा ॥ २९ ॥ ततः प्रवीराः पाण्डूनामभ्यधावन्समर्पिताः । युधिष्ठिरं परीप्सन्तः कर्णमभ्यर्दयञ्छरैः ॥ ३० ॥ सात्यकिश्चेकितानश्च युयुत्सुः पाण्ड्य एव च । धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च द्रौपदेयाः प्रभद्रकाः ॥ ३१ ॥ यमौ च भीमसेनश्च शिशुपालस्य चात्मजः । कारूषा मत्स्यशेषाश्च केकयाः काशिकोशलाः ॥ ३२ ॥ एते च त्वरिता वीरा वसुषेणमताडयन् । जनमेजयश्च पाञ्चाल्यः कर्णं विव्याध सायकैः ॥ ३३ ॥ वराहकर्णनाराचैर्नालीकैर्निशितैः शरैः । वत्स

ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि चन्द्रमाकेपास पुनर्वसु नक्षत्र शोभायमान होते हैं २६ युधिष्ठिरने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से कर्णको फिरछेदा और सुषेण व सत्यसेन को तीनबाणों से घायल किया २७ शल्यको नव्बेबाणों से और कर्ण को तिहत्तर बाणों से पीड़ामान किया और उनके रक्षकों को सीधे चलनेवाले तीनतीनबाणों से घायल किया २८ इसकेपीछे धनुषको चलायमान करताहुआ वह कर्ण तड़तहँसा और भल्लसे राजाको व्यथितकर साठबाणों से घायल करके गर्जा २९ इसके पीछे युधिष्ठिर पाण्डवके बड़े वीर क्रोधयुक्त होकर युधिष्ठिर की रक्षाकरने को कर्ण के सम्मुख दौड़े और बाणों से उसको पीड़ामान किया ३० सात्यकि, चेकितान, युयुत्सु, पाण्ड्य, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पुत्र, प्रभद्रक ३१ नकुल, सहदेव, भीमसेन, शिशुपालकेपुत्र, कारूष, मत्स्य, केकय, काशी, कोशिल इनदेशों के शेषशूरवीरों ने ३२ वसुसेनको घायलकिया और पांचालदेशी जनमेजयने शायकों से कर्ण को पीड़ित किया ३३ वाराह कर्ण, नाराच, नालीक, वत्सदंत, विपाट, क्षुरप्र चुटका-

by the wheels of the king, looked glorious like Punarvasus close by the moon. Yudhishthir again pierced Karan with his arrows and with three arrows each, wounded Sushen and Satyasen. He also wounded their wheel guards with three arrows each. Karan laughed loudly and having wounded the king with sixty arrows, roared a mighty roar. Then the brave warriors of the Pandavas rushed against Karan to protect Yudhishthir and wounded him with their arrows, 30. Satyaki, *Chekitan. Yuyutsu*; *Pandya*, *Dhrishtadyumn*, *Draupadi's* sons, Prabhadraks, Nakul, Sahadev, Bhimsen, Shishupal's son, Karushyas, Matsyas; Kaikayas, Kashis, and Kosal warriors surrounded Vasusen. Janamejaya of Panchal wounded Karan with arrows. With

वृन्दैर्विपाठैश्च क्षुरप्रैश्च वत्सदन्तकैः ॥ ३४ ॥ नानामहरणेश्चान्यैः रथहस्त्यश्वसादिभिः सर्वतोऽभ्यद्रवन् कर्णं परिवार्य्य जिघांसया ॥ ३५ ॥ स पाण्डवानां प्रवरैः सर्वतः समभिद्रुतः । उदीरयन् ब्राह्ममस्त्रं शरैरापूरयद्दिशः ॥ ३६ ॥ ततः शरमहाज्वालो वीर्य्योष्मा कर्णपावकः । निर्दहन् पाण्डववनं वीर पर्य्यचरद्रणे ॥ ३७ ॥ स सन्धाय महास्त्राणि महेष्वासो महामनाः । प्रहस्य पुरुषेन्द्रस्य शरैश्चिच्छेद कार्मुकम् ॥ ३८ ॥ ततः सन्धाय नवतिं निमेषान्नतपर्वणः । बिभेद कवचं राज्ञो रणे कर्णः शितैः शरैः ॥ ३९ ॥ तद्वर्म हेमविकृतं रत्नचित्रं बभौ पतत् । सविद्युदभ्रं सवितुः श्लिष्टं वात हतं यथा ॥ ४० ॥ तदङ्गात् पुरुषेन्द्रस्य भ्रष्टं वर्म व्यरोचत । रत्नैरलं कृतं शुभ्रं

मुख ३४ और नाना प्रकारके उग्रशस्त्रों से और रथ हाथी घोड़े और अश्वसवारों से कर्णको घेरकर मारने की इच्छासे सम्मुखदौड़े ३५ सबप्रकार करके पाण्डवोंके उत्तम शूरवीरों से घिराहुआ होकर ब्रह्मास्त्रको प्रगट करते हुये उस कर्णने से दिशाओं को व्याप्त करादिया ३६ इसकेपीछे बाणरूप बड़ी अग्नि और पराक्रम रूप बड़ी उष्णता रखनेवाला अग्निरूप कर्ण पाण्डवरूपी वनको भस्मकरताहुआ इधर उधर भ्रमणकरने लगा ३७ फिर बड़े धनुषधारी वीरकर्णनेहँसकर महाअस्त्रोंको चढ़ाकर बाणों से महाराजा युधिष्ठिर के धनुषको काटा ३८ इसके पीछे कर्ण ने। एक पलभरमेंही नब्बे बाणों को चढ़ाकर युद्ध में राजा के कवच को छेदा ३९ उससमय वह रत्नजटित सुवर्णसे खचित कवच पृथ्वीपर गिरता हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसा कि बिजलीका रखनेवाला बादल वायुसे ताड़ित होकर सूर्य्य से चिपटाहुआ होता है ४० उस महाराज के शरीर से गिराहुआ रत्नों से अलंकृत वह कवच ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि रात्रिके .... बादलों से रहित आकाश होता है । ४१ । इसके पीछे बाणों से टूटे कवच

arrows of different sorts and other weapons, with horses, elephants and horsemen, they attacked Karan from all sides. 35. Surrounded by the Pandav warriors, Karan filled all the directions with arrows from the Brahmastra. With the fire of his arrows, he burnt down the forest of the Pandav army and roamed throughout the field of battle. Then, with a smile, valiant Karan cut down the bow of Yudhishthir and pierced his armour with ninety arrows. The armour, by arrows, fell down from Yudhishthir's body like a cloud with lightning. The armmour falling down from the body of the king, looked like the starlit sky of a clear night. Then the king, destitute of armour, with bleeding body, hurled an iron spear at Karan; but the latter cut it down in the air with seven arrows and made it fall down on the ground. Then Yudhishthir the Pandav wounded

वैयंश्च निशितप्रास्वरम् ॥ ४१ ॥ छिन्नवर्मा शरैः पार्थो रुधिरेण समुक्षितः । क्रुद्धः सर्वायसीं शक्तिं चिक्षेपाधिरथिं प्रति ॥ ४२ ॥ तां ज्वलन्तीमिवाकाशे शरैश्चिच्छेद सप्तभिः । सा छिन्ना भूमिमगमन्महेष्वासस्य सायकैः ॥ ४३ ॥ ततो बाह्वोर्ललाटे च हृदि चैव युधिष्ठिरः । चतुर्भिस्तोमरैः कर्णं ताडयित्वानदन्मुदा ॥४४॥ उद्भिन्नरुधिरः कर्णः क्रुद्धः सर्प इव श्वसन् । ध्वजं चिच्छेद भल्लेन त्रिभिर्विव्याध पाण्डवम् ॥ ४५ ॥ इषुधी चास्य चिच्छेद रथञ्च तिलशोऽच्छिनत् ॥ ४६ ॥ कालवालास्तु ये पार्थं दन्तवर्णावहन् हयाः । तैर्युक्तं रथमास्थाय प्रायाद्राजा पराङ्मुखः ॥ ४७ ॥ एवं पार्थोऽभ्यपायात् स निहतः पार्ष्णिसारथिः । अशक्नुवन् प्रमुखतः स्थातुं कर्णस्य दुर्मनाः ॥ ४८ ॥ अभिद्रुत्य तु राधेयः स्कन्धे संस्पृश्य पाणिना । अब्रवीत् प्रहसन्राजन् कुत्सयन्निव पाण्डवम् ॥ ४९ ॥ कथं नाम कुले जातः क्षत्रधर्मे व्यवस्थितः । प्रजह्यात समरं भीत प्राणान्रक्षन्महाहवे

रुधिरसेभरेहुये उसराजाने केवल लोहेकी बनीहुई शक्तिको कर्णके ऊपरफेंका ।४२। कर्णने उस अग्निरूपी शक्तिको आकाशमेंही सात बाणों से काटा और वह शक्ति पृथ्वीपर गिरपड़ी । ४३ । इसके पीछे पीछे पाण्डव युधिष्ठिर चार तोमरों से कर्णको दोनोंभुजा ललाट और हृदयपर घायलकरके बड़ी प्रसन्नतासे गर्जा । ४४ । फिर रुधिरभरे क्रोधयुक्त सर्प के समान श्वास लेनेवाले कर्णने भल्लसे ध्वजाको काटकर तीन बाणों से पाण्डव युधिष्ठिरको घायलकिया । ४५ । और उसकेदोनों तूणीरोंको काटकर रथको तिल के समान चूर्ण करडाला । ४६ । जिन कृष्ण वर्ण बालरखनेवाले दंतवर्ण घोड़ों ने युधिष्ठिर को सवार किया राजा उनघोड़ों के रथपर चढ़कर मुखमोड़कर घरको चलदिया । ४७ । इसरीतिसे वह युधिष्ठिर जिसका सारथी और पीछेरहनेवाला मरगयाथावह हटगया फिरवहमहाखेदित चित्तहोकर कर्णके सम्मुख होनेको समर्थ नहींहुआ।४८।फिरकर्ण हाथ से कंधेकोछूकर हँसताहुआ और पाण्डवों की निन्दाकरता हुआ बोला ४९ बड़े कुलमें उत्पन्नक्षत्री-धर्ममें नियत होकर इसबड़े युद्धमें भयभीतता से प्राणोंकी रक्षाकरते युद्धको त्याग कर कैसे जातेहो ५० इससे मेरे मतसे आपक्षत्रीधर्ममें कुशल नहीं हो आप ब्राह्मणों

Karan with four tomars on the two arms, forehead and breast, and roared with joy. Karan, bleeding profusely and sighing like a serpent, cut down Yudhishthirs banner and wounded him with three darts. 45. Then he cut down his quivers and car into small pieces. Then Yudhishthir turned back the white horses with black hair; for without driver and guards he could no longer oppose him. Karan then touched Yudhishthir's shoulder and with a smile, insulted the Pandav, saying, " Born in a noble family of kshatryas, how it is that, you fly away from the field of battle. 50. I think you are not firm on your duty.

॥ ५० ॥ न भवान क्षत्रधर्मेषु कुशल इति मे मतिः। ब्राह्मे बले भवान युक्तः स्वाध्याये यज्ञकर्मणि ॥ ५१ ॥ मास्म युध्यस्व कौन्तेय मा च वीरान समासदः। मा चैनानप्रियं ब्रूहि मा वै व्रज महारणम् ॥ ५१ ॥ एवमुक्त्वा ततः पार्थं विसृज्य च महाबलः। न्यहनत् पाण्डवीं सेनां वज्रहस्त इवासुरीम् ॥ ५२ ॥ ततोऽपायाद्द्रुतं राजन् व्रीडन्निव जनेश्वरः ॥ ५३ ॥ अथापयातं राजानं मत्वान्वीयुस्तमच्युतम्। चेदि पाण्डवपाञ्चालाः सात्यकिश्च महारथः। द्रौपदेयास्तथा शूरा माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ ॥ ५५ ॥ ततो युधिष्ठिरानीकं दृष्ट्वा कर्णः पराङ्मुखम्। कुरुभिः सहितो वीरः प्रहृष्टः पृष्ठतोऽन्वगात् ॥ ५६ ॥ भेरीशंखमृदंगानां कार्मुकाणाञ्च निस्वनैः। बभूव धार्त्तराष्ट्राणां सिंहनादरवस्तथा ॥ ५७ ॥ युधिष्ठिरस्तु कौरव्य रथमारुह्य सत्वरः। श्रुतकीर्तेर्महाराज दृष्टवान् कर्णविक्रमम् ॥ ५८ ॥ काल्यमानं बलं दृष्ट्वा धर्मराजो युधिष्ठिरः। स्वानयोधानथाब्रवीत्

के समूहों में वेदपाठ और यज्ञ करने में योग्यहो ५१ हे कुन्ती के पुत्र युद्ध मतकरो और वीरों के सम्मुख मतहो इनको अप्रिय मतकहो बडे युद्धमें मत जाओ ५२ बस बडे वीरने इसरीति से कहकर पाण्डवको छोड पाण्डवीसेना को ऐसेमारा जैसे वज्र धारी इन्द्र आसुरी सेनाको मारताहै ५३ हे राजा इसके पीछे लज्जा युक्त राजा युधिष्ठिर शीघ्रही हटगया तदनन्तरउसअजेय राजा को हटाहुआ मानकर आगे लिखे हुये वीर इसके पीछे चले चंदेरी देशवाले पांडव पांचाल महारथी सात्यकि शूर द्रौपदी के पुत्र नकुल सहदेव इत्यादि।५५।तदनन्तर युधिष्ठिरकी सेनाको फिराहुआ देख कर अत्यन्त प्रसन्न चित्त कर्ण कौरवों समेत पीछेकी ओरसेचला ५६ और धृतराष्ट्रके पुत्रों के भेरीशंख मृदंग धनुष और सिंहनादों के शब्दहुये।५७। हे कौरव्य महाराज फिरयुधिष्ठिरने शीघ्रही श्रुतकीर्त्तिके रथपर चढकर कर्णके पराक्रमको देखा। ५८। फिर धर्मराज अपनी सेना को छिन्न भिन्न देखकर महाक्रोधितहो अपनेशूरवीरोंसे बोला कि तुम कैसे खडेहो इनको क्योंनहींमारते। ५९। तबवह राजाकी आज्ञापाकर पांडवों के सब महारथी जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा आपके

You are fit only to perform sacrifices among Brahmans. You should fight no longer with warriors, son of Kunti, nor should you insult them with your challenge." Having said this, Karan let him go and then began slaughtering *the Pandav army as Indra does the army of* asurs. Then Yudhishthir slunk away with shame. Then seeing the king give way, the warriors of Chanderi and Panchal, the Pandavas, Satyaki, the sons of Draupadi, Nakul and Sahadev followed him. Then seeing the army of Yudhishthir turn back, Karan with a cheerful mind turned back with the Kaurav army. 56. Musical instruments were sounded in the army of the sons of Dhritrashtra and the warriors roared like lions. Then Yudhishthir mounted the car of Shrutkirti, and seeing Karan's prowess in dispersing his army, he said

क्रुद्धो निहतैमान किमासत ॥ ५९ ॥ ततो राज्ञाऽभ्यनुज्ञाताः पाण्डवानां महारथाः ।
भीमसेनमुखाः सर्वे पुत्रांस्ते प्रत्युपाद्रवन ॥ ६० ॥ अभवत्सुमहान् शब्दो योधानां तत्र
भारत । रथहस्त्यश्वपत्तीनां शस्त्राणाञ्च ततस्ततः ॥ ६१ ॥ उत्तिष्ठत प्रहरत प्रैतानि
पततेति च । इति ब्रुवाणा ह्यन्योन्यं जघ्नुर्योधा महारणे ॥ ६२ ॥ अभ्रच्छायेव
तत्रासीच्छरवृष्टिभिरम्बरे । समावृतैर्नरवरैर्निघ्नद्भिरितरेतरम ॥ ६३ ॥ विपता
कध्वजच्छत्रा व्यश्वसूतायुधा रणे । व्यङ्गाङ्गवयवाः पेतुः क्षितौ क्षीणाः क्षितीश्वराः ।
॥ ६४ ॥ प्रवणादिव शैलानां शिखराणि द्विपोत्तमाः । सारोहा निहताः पेतुर्वज्र
भिन्ना इवाद्रयः ॥ ६५ ॥ छिन्नभिन्नविपर्य्यस्तैर्वर्मालङ्कारभूषणैः । सारोहास्तुरगाः
पेतुर्हतवीराः सहस्रशः ॥ ६६ ॥ विप्रविद्धायुधाङ्गाश्च द्विरदाश्वरथैर्हताः । प्रति

पुत्रों के सम्मुख दौडे। ६० । तब वहां शूरवीरोंके बड़े कठोर शब्द हुये रथ हाथी घोड़े और पत्तियों के जहां तहां शब्द होनेलगे। ६१ । फिर उठो घायलकरो सम्मुख होजाओ दौडो इसप्रकारकी परस्पर में वार्त्ता करते हुये शूरवीरोंने उस बड़े युद्धमें

एकने एकको मारा ६२और आकाशमें बाणोंकेकारण घटासी छागई परस्परमें मार नेवाले लौट हुये उत्तम पुरुषोंके हाथसे युद्धमें ध्वजापताकाओंसे खंडित घोड़े सारथी और शस्त्रों से रहित शरीर के अंगोंसे चूर्णित राजालोग मृतकहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि टूट कर पहाड़ों के शिखर गिरपड़ते हैं इसी प्रकार सवारों समेत उत्तम हाथी मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्र से टूटेहुये भूषण और कवचों से संयुक्त पर्व्वत गिरतेहैं । ६६ । हजारों सवारों समेत घोड़े जिनके बहुत से शूरवीर मारेगये वहभी पृथ्वीपर गिरपड़े और युद्धमें सम्मुख युद्धकरने वाले वीरोंसे पत्तियों जितके हजारों समूह मारे गये । ६७ । बड़ी लंबी लाल आंख और चन्द्रमा कमलके समान मुख रखनेवाले युद्ध कुशल पुरुषों के उत्तम

to his warriors in a rage, " Why are you standing idle ? Why do you not attack ? " At the king's command, the Pandav warriors led by Bhimsen rushed against your son's army.60. Then there were heard harsh words of the warriors, mingled with the noise from cars, ele-phants and horses. " Rise; attack; run," were the words uttered by the warriors who slew one another. There was a cloud of arrows in the air. The fighting warriors, with broken banners, destitute of horses, drivers and weapons, wounded and dead, lay on earth like broken pieces of mountains. The elephants with their riders lay dead on earth like hills struck down by lightning. The riderless horses were lying down on earth by thousands. Thousads of foot soldiers lay dead. The earth was covered with heads having red eyes and beautiful faces. The noise of the warriors reached the sky. The parties of apsaras carried thousands of warriors in celestial cars. Seeing this great

मुकम ॥ ८४ ॥ व्यद्रवत्तावकं सैन्यं लोड्यमानं समन्ततः । सिंहार्दितमिवारण्ये यथा गजकुलं तथा ॥ ८५ ॥

इतिश्री कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे एकोनपंचाशोऽध्यायः । ४९ ।

सञ्जय उवाच । तानभिद्रवतो दृष्ट्वा पाण्डवांस्तावकं बलम् । दुर्योधनो महाराज वारयामास सर्वशः ॥ १ ॥ योधांश्च स्वबलञ्चैव समन्ताद्भरतर्षभ । क्रोशतस्तव पुत्रस्य न स्म राजन्न्यवर्तत ॥ २ ॥ ततः पक्षः प्रपक्षश्च शकुनिश्चापि सौबलः । तदा सशस्त्राः कुरवो भीममभ्यद्रवन्रणे ॥ ३ ॥ कर्णोऽपि दृष्ट्वा द्रवतो धार्तराष्ट्रान् सराजकान् । मद्रराजमुवाचेदं याहि भीमरथं प्रति ॥ ४ ॥ एवमुक्त

धनुषवाली चारों ओरसे ऐसे तितर बितर होकरभागी जैसे कि वनमें सिंहसे पीड़ित हाथियों के समूह व्याकुल होकर भागते हैं ॥ ८५ ॥

अध्याय ॥ ५० ॥

संजयबोले कि हेमहाराज आपकी सेना के सम्मुख दौड़नेवाले पांडवों को देखकर दुर्योधनने सेनाको सब प्रकारसे रोका १ हे भरतर्षभ उस दुर्योधनने बड़े शूरवीरोंको और सेना को अनेक प्रकारसे रोकापरन्तु आपके पुत्रकेभी पुकारनेसे वहलोग नहीं लौटे २ तब उसके पीछे पक्ष प्रपक्ष समेत सौबलका पुत्रशकुनी और शस्त्रधारी कौरव युद्धमें भीमसेन सम्मुख गये ३ कर्णभी राजाओं समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको देखकर मद्रके राजासे यहबोला कितुम भीमसेनके रथके समीप चलो ४ कर्णके इस वचनको सुनकर राजा मद्रने हंसवर्णके उत्तम घोड़ों को वहां पहुंचाया जहांकि भीमसेनथा ५

broken shields, weapons and armours, they fled away in all directions as a herd of elephants runs away from before a lion, "85,

CHAPTER L

Sanjaya said, "Seeing the Pandavas attack the Kaurav army, Duryodhan tried his best to rally his forces, but they would not hear him. Then Shakuni the son of Suval, together with his army, faced Bhim. Seeing the Kaurav warriors there, Karan too, said to the king of Madra, " Let us go towards Bhim." Madra laughed at this

एवमुक्तु कर्णेन शल्यो मद्राधिपस्तदा । हंसवर्णान् हयान्प्रायान् प्रैषीद्यत्र वृकोदरः ॥ ५ ॥ ते प्रेषिता महाराज शल्येनाहवशोभिना । भीमसेनरथं प्राप्य समसज्जन्त वाजिनः ॥ ६ ॥ दृष्ट्वा कर्णं समायान्तं भीमः क्रोधसमन्वितः । मतिं चक्रे विनाशाय कर्णस्य भरतर्षभ ॥ ७ ॥ सोऽब्रवीत् सात्यकिं वीरं धृष्टद्युम्नञ्च पार्षतम् । यूयं रक्षत राजानं धर्मात्मानं युधिष्ठिरम् ॥ ८ ॥ संशयान्महतो मुक्तं कथञ्चित् प्रेक्षतो मम ॥ ९ ॥ हत्वास्मद्य रणे कर्णं स वा मां निहनिष्यति । संग्रामेण सुघोरेण सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ १० ॥ राजानमद्य भवतां न्यासभूतं ददामि वै । तस्य संरक्षणे सर्वे यतध्वं विगतज्वराः ॥ ११ ॥ एवमुक्त्वा महाबाहुः प्रयादाधिरथिं प्रति । सिंहनादेन महता सर्वाः संनादयन्दिशः ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा त्वरितमायान्तं भीमं युद्धाभिनन्दिनम् । सूतपुत्रमथोवाच मद्राणामीश्वरो विभुः ॥ १३ ॥ शल्य उवाच । पश्य कर्ण महाबाहुं संक्रुद्धं पाण्डुनन्दनम् । दीर्घकालार्जितं क्रोधं मोक्तुकामं त्वयि ध्रुवम् ॥ १४ ॥

हे महाराज युद्धको शोभा देनेवाले कर्णके प्रेरित घोड़े भीमसेनके रथको पाकर अच्छे प्रकारसे भिड़े ६ हे भरतर्षभ क्रोधयुक्त भीमसेनने कर्णको आताहुआ देखकर उसके मारनेका उपाय विचारा ७ और वीरसात्यकि औरधृष्टद्युम्नसे बोला कि तुम धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरकी रक्षाकरो ८ क्योंकि वह मुझको देखकर बड़े सन्देहको न करे ९ मैं तुमसे सत्यसत्य कहताहूं कि घोर युद्ध के द्वारा किसी मैंही कर्ण को मारूंगा अथवा कर्ण मुझको मारेगा १० अबमैं राजाको आपलोगों के सुपुर्द करता हूं तुम सबलोग अनेक प्रकारसे उसकी रक्षाके उपाय को करो। ११। वह महाबाहु भीमसेन इसप्रकार धृष्टद्युम्न से कहकर बड़े शब्द से सिंहनाद को करके दिशाओं को शब्दायमान करताहुआ कर्ण के रथकी ओर गया। १२। इसके पीछे मद्रदेशियों का स्वामी समर्थ शल्य युद्ध के चाहनेवाले शीघ्रतापूर्वक आनेवाले भीमसेन को देखकर कर्ण से बोला। १३। हे कर्ण इस अत्यन्त क्रोधयुक्त बहुतकाल से दबे हुये क्रोधको तेरेऊपर निकालने की इच्छा वाले पांडुनन्दन भीमसेन को देखो।१४। हे कर्ण पूर्व में मैंने अभिमन्यु और घटोत्कच के मरनेपर भी इसका इसप्रकार का

and drove the car towards Bhim. 5. The horses of Karan took the car straight towards that of Bhim. Bhim, enraged to see Karan's advance towards him, thought of slaying him. Then he addressed brave Satyaki and Dhrishtadyumn, saying, "Protect king Yudhishthir well, so that he may not worry himself for my sake. I shall fight hard with Karan and shall either slay him or be slain by him. 10. I commit the king to your care and keeping." Having said this to Dhrishtadyumn, Bhim advanced towards Karan, *filling* the directions with his roars. Then the lord of Madra, seeing Bhim advance, said to Karan, "Look at Bhim who is coming towards you, to discharge on you his long pent up fury. I never saw Bhim so

ईदृशं नास्य रूपं मे दृष्टपूर्वं कदाचन । अभिमन्यौ हते कर्ण राक्षसे च घटोत्कचे ॥१५॥ त्रैलोक्यस्य समस्तस्य शक्तः क्रुद्धो निवारणे । बिभर्त्ति यादृशं रूपं युगान्ताग्निसमप्रभम् ॥१६॥ सञ्जय उवाच। इति ब्रुवति राधेयं मद्राणामीश्वरे नृप। अभ्यवर्त्तत वै कर्णं क्रोधदीप्तो वृकोदरः ॥ १७ ॥ तथागतन्तु संप्रेक्ष्य भीमं युद्धाभिनन्दिनम् । अब्रवीद्वचनं शल्यं राधेयः प्रहसन्निव ॥ १८ ॥ यदुक्तं वचनं मेऽद्य त्वया मद्रजनेश्वर । भीमसेनं प्रति विभो तत् सत्यं नात्र संशयः ॥ १९ ॥ एष शूरश्च वीरश्च क्रोधनश्च वृकोदरः । निरपेक्षः शरीरे च प्राणतश्च बलाधिकः ॥ २० ॥ अज्ञातवासं वसता विराटनगरे तदा । द्रौपद्याः प्रियकामेन केवलं बाहुसंश्रयात् ॥ २१ ॥ गूढभावं समाश्रित्य कीचकः सगणो हतः ॥ २२ ॥ सोऽद्य संग्रामशिरसि सन्नद्धः क्रोध

रूप नहीं देखाथा जैसा कि अब देखने में आता है । १५ । यह क्रोधयुक्त तीनों लोकों के भी हटाने में समर्थ है इससमय इसने प्रलयकालकी अग्नि के समान देदीप्यमान अपने रूप को धारण किया है । १६ । संजय बोले हे राजा शल्यके इस प्रकारके कहतेही कहते में महाविकरालरूप भीमसेन कर्ण के सम्मुख वर्त्तमानहुआ । १७ । इससे पीछे हँसताहुआ कर्ण उस सम्मुख आयेहुये भीमसेन को देखकर शल्य से यह वचन बोला । १८ । हे मद्रदेश के स्वामी अब तुमने भीमसेनके विषय मे जो वचन मुझसे कहा वह सत्य है इसमें सन्देह नहींहै । १९ । यह भीमसेन बड़ा शूरवीर क्रोध में भरा शरीर से असादृश्य पराक्रमियों में भी अधिक पराक्रमी है।२०। विराट नगर में गुप्त रहने वाली द्रौपदी के अभीष्ट चाहनेवाले ने केवल भुजबलकेही द्वारा । २१ । गुप्त उपाय से आश्रित और प्रवृत्त होकर कीचक को उसके सब समूहों समेत मारा । २२ । अब कवचधारी क्रोध से व्याकुल यह भीमसेन दण्ड

wrathful before, even at the time of the death of Abhimanyu and Ghatotkach. 15. He is capable of upsetting the three worlds in his wrath. He is now burning in rage like the fire of pralaya." Sanjaya said, "While the king of Madra was thus saying, Bhim approached Karan. Karan smiled at the sight of Bhim and said to the king of Madra, "Your opinion about Bhim was quite right. Surely, Bhim, the bravest of the brave, is full of wrath. For the sake of Draupadi, during his secret residence at Viratnagar, he destroyed Kichak and his party with the strength of his bare arms alone. Protected by armour, wrathful Bhim is capable of encountering Death. It has been my long cherished desire that either I should slay Arjun or he should slay me. There is now every probability of my desire being satisfied in the ensuing fight with Bhim; for Arjun is sure to come against me, if I can either slay Bhim or deprive him of the car. In either case I shall be a gainer. You must do now what is needful." On hearing

मूर्च्छितः । किं करोधतदण्डन् मृत्युनापि व्रजेद्रणं ॥ २३ ॥ चिरकालाभिलषितो ममायन्तु मनोरथः । अर्जुनं समरे हन्यां मां वा हन्याद्धनञ्जयः स मे कदाचिदद्यैव भवेद्भीमसमागमात् ॥ २४ । निहते भीमसेने तु यदि वा विरथीकृते । अभियास्यते मां पार्थस्तन्मेसाधु भविष्यति । अत्र यन्मन्यसे प्राप्तं तच्छीघ्रं सम्प्रधारय ॥ २५ ॥ एतच्छ्रुत्वा तु वचनं राधेयस्यामितौजसः । उवाच वचनं शल्यः सूतपुत्रं तथागतम् ॥ २६ ॥ अभियाहि महाबाहो भीमसेनं महाबलम् । निरस्य भीमसेनन्तु तत प्राप्स्यसि फाल्गुनम् ॥ २७ ॥ यस्ते कामोऽभिलषितश्चिरात्प्रभृति हृद्गतः । स वै संपत्स्यते कर्ण सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ २८ ॥ एवमुक्ते ततः कर्णः शल्यं पुनरभाषत ॥२९॥ हन्तार्जुनमहंसंख्ये मां वा हन्याद्धनञ्जयः युद्धे मनः समाधाय याहि यत्र वृकोदरः ॥ ३० ॥ सञ्जय उवाच । ततः प्रायाद्रथेनाशु शल्यस्तत्र विशाम्पते । यत्र भीमो महेष्वासो व्यद्रावयत वाहिनीम् ॥ ३१ ॥ ततस्तूर्य निनादश्च

धारी मृत्यु के संगभी युद्धकरने को समर्थ है ।२३। फिर यह मेरे मनका अभिलाष बहुत कालसे होरहा कि मैं युद्धमें अर्जुन को मारूं अथवा अर्जुन मुझेमारे । २४। वह मेरा प्रयोजन भीमसेनके लड़ने से कदाचित् अभी होजाय क्योंकि भीमसेनके मरनेपर अथवा विरथ करनेपर अर्जुन मेरे सम्मुख आवेगा यही मुझको श्रेष्ठ लाभ होगा, अब यहां जो उचित समझतेहो उसको शीघ्रता से करो । २५ । बड़े तेजस्वी कर्ण के इस वचनको सुनकर शल्य कर्ण से बोला । २६ । कि हे महाबाहो तुम बड़े पराक्रमी भीमसेनके सम्मुखचलोतुम भीमसेनको विजयकरके अर्जुनको पाओगे ।२७। जो तेरे चित्तका अभीष्ट बहुत कालसे हृदयमें वर्त्तमान है हे कर्ण वह अभीष्ट तेरा तुझको प्राप्तहोगा इसमें मिथ्या न होगा । २८ ऐसा कहने पर फिर कर्ण शल्यसे बोला ।२९। कि मैं युद्ध में अर्जुन को मारूंगा वा वहमुझको मारेगातुम युद्ध में मन लगाकर वहांचलो जहां भीमसेनहैं । ३० । तब संजयनेकहा हे राजा फिर शल्य रथ के द्वारा वहां गया जहां बड़े धनुधारी भीमसेन ने आपकी सेना को भगायाथा ।३१। हे राजेन्द्र इसके पीछे कर्ण और भीमसेन की सम्मुखता में तूरीऔर भेरी

those words of glorious Karan, Shalya said, You may advance against Bhim, for after conquering him you will see Arjun. You will be able to satisfy your long cherished desire." On hearing this, Karan spoke again to Shalya, saying, "I shall either slay Arjun or he will slay me. You must take me to the place where Bhim is." At this Shalya drove the car to the place where Bhim had routed the Kaurav army. Drums and trumpets sounded at the time of Bhim's encounter with Karan. Then wrathful Bhim of great prowess routed the Kaurav army with his clean and sharp arrows. The encounter of Karan with Bhim was very severe. Then Bhim rushed against

भेरीणाञ्च महास्वनः । उदातष्ठच्च राजेन्द्र कर्णभीम समागमे ॥ ३२ ॥ भीमसेनोऽथ संक्रुद्धस्तत्र सैन्यं दुरासदम् । नाराचैर्विमलैस्तीक्ष्णैर्दिशः प्राद्रावयद्बली ॥ ३३ ॥ स सन्निपातस्तुमुलो घोररूपो विशाम्पते । आसीद्रौद्रो महाराज कर्ण पाण्डवयोर्मृधे ॥ ३४ ॥ ततो मुहूर्त्ताद्राजेन्द्र पाण्डवः कर्णमाद्रवत् तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य कर्णो वैकर्त्तनो वृषः । आजघान सुसंक्रुद्धो नाराचेन स्तनान्तरे ॥ ३५ ॥ पुनश्चैनममेयात्मा शरवर्षैरवाकिरत् । स विद्धः सूतपुत्रेण छादयामास पत्रिभिः विव्याध निशितैः कर्णं नवभिर्नतपर्वभिः । ३६ ॥ तस्य कर्णो धनुर्मध्ये द्विधा चिच्छेद पत्रिभिः अथैनं छिन्नधन्वानं प्रत्यविध्यत् स्तनान्तरे । नाराचेन सुतीक्ष्णेन सर्वावरणभेदिना ॥ ३७ ॥ सोऽन्यत् कार्मुकमादाय सूतपुत्रं वृकोदरः । राजन्मर्मसु मर्मज्ञो विव्याध निशितैः शरैः ॥ ३८ ॥ ननाद बलवन्नादं कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥ ३९ ॥ तं कर्णः पञ्च

आदि बाजों के शब्द होनेलगे । ३२ । तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेन ने उसकी महादुर्जय सेनाको साफ और तीक्ष्ण नाराचों से दिशाओं में भगादिया । ३३ । हे महाराज धृतराष्ट्र इनके पीछे भीमसेन और कर्ण का महा भयकारी कठिन रोमहर्षण युद्ध हुआ । ३४ । इसके पीछे एक क्षणमात्र में ही भीमसेन कर्ण की ओर दौड़ा फिर सूर्य के पुत्र धर्म्मात्मा कर्ण ने उस आतेहुये भीमसेनको देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर छातीपर घायल किया । ३५ । और बाणोंकी वर्षा से ढकादिया कर्ण के हाथसे भीमसेन ने भी कर्णको बाणों से ढककर टेढ़े पर्ववाले नौ बाणों से देह में घायल किया । ३६ । फिर कर्णने बाणों से उसके धनुषको दो स्थानों से काटकर अत्यन्त तीक्ष्ण सब प्रकार के कवचों के काटने वाले नाराच से उसकी छाती को घायल किया । ३७ । फिर मर्मों के जानने वाले उस भीमसेन ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण बाणों से कर्णको मर्म स्थलों में घायल किया । ३८ । और पृथ्वी वा आकाशको कंपायमान करताहुआ महा घोर शब्दको गर्जा । ३९ । फिर कर्णने उसको पच्चीस नाराचोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि वनमें मतवाले हाथीको उल्काओं से घायल करते हैं । ४० । इसके

Karan. Seeing Bhim advance towards him, Karan the son of Surya, much enraged, wounded him on the breast, covering him with his arrows. Wounded by Karan's arrows, Bhim covered him with the flight of his arrows and wounded him with nine arrows. Then Karan cut down his bow at two places and piercing his armour with hard arrows, wounded him again on the breast. Bhim took up another bow and wounded him in the vital parts. Then with his roar he shook the earth. Then Karan wounded him with twenty five arrows as they wound an elephant with sparks of fire. Wounded with arrows, with eyes red in anger, Bhim wishing to destroy him, put an arrow to his bow

विशाख्या नागयानां समार्पयत् । महोत्कट वने हस्तमुक्ताभिरिव कुञ्जरम् ॥ ४० ॥
ततः सायकभिन्नाङ्गः पाण्डवः क्रोधमूर्च्छितः । संरम्भमत्ताताम्राक्ष सूतपुत्रवधेप्स
या ॥४१॥ स कार्मुके महावेगं भारसाधनमुत्तमम् । गिरीणामपि भेत्तारं सायकं
समयोजयत् ॥ ४२ ॥ विकृष्य बलवच्चाप माकर्णादपि मारुतिः । तं मुमोच महेष्वासः
क्रुद्धः कर्णजिघांसया ॥४३॥ स विसृष्टोबलवता बाणो वज्राशनिस्वनः । अदारयद्रणे
कर्णं वज्रवेगो यथाचलम् ॥ ४४ ॥ स भीमसेनाभिहतः सूतपुत्रः कुरूद्वह । निषसाद
रथोपस्थे विसंज्ञः पृतनापतिः ॥ ४५ ॥ ततो मद्राधिपो दृष्ट्वा विसंज्ञं सूतनन्दनम् । अपो
वाह रथेनाजौ कर्णमाहवशोभिनम् ॥ ४६ ॥ ततः पराजिते कर्णे धार्त्तराष्ट्रीं महाचमूम्
व्यद्रावयद्भीमसेनो यथेन्द्रो दानवान् पुरा ॥ ४७ ॥

इति कर्ण पर्वणि कर्ण पयाने पंचाशोध्यायः ॥ ५० ॥

पीछे शायकों से घायल शरीर क्रोधसे व्याकुल क्रोध और ईर्षा से लाल नेत्र करके उसके मारनेकी इच्छासे भीमसेन ने । ४१ । बड़े भारवाही पर्व्वतों के भीछेदनेवाले उग्रबाणको धनुषमें चढ़ाया । ४२ । और बड़े धनुषधारी वेगवान् वायुपुत्र भीमसेनने कर्णके मारने की अभिलाषा से कर्ण पर्य्यन्त धनुषको खैंचकर वह बाण चलाया । ४३ । पराक्रमी भीमसेन के हाथसे छूटेहुये वज्र और बिजली के समान शब्दाय मान उस प्रबल बाणसे युद्धमें कर्णको घायल किया जैसे कि वज्रका वेग पर्व्वतको व्याकुल करके घायल करता है । ४४ । हे कौरव्य वह सेनापति कर्ण भीमसेनके हाथसे घायल और अचेत होकर रथके बैठनेकेस्थ न पर गिरपड़ा । ४५ । तबतो राजा मद्रकर्णको अचेत देखकर युद्धमें शोभादेनेवाले कर्ण को युद्धभूमि से दूरलेगया । ४६ । इसके पीछे कर्ण के विजय हूनेपर भीमसेन ने दुर्य्योधनकी बड़ी सेना को ऐसा भगाया जैसे कि पूर्वकाल में इन्द्र ने दानवों को भगाया था । ४७ ।

---

that could pierce even mountain, and drawing his bow to the ear, in order to slay Karan, he shot that arrow at him Shot like vajra or lightning, the arrow discharged from the mighty bow, wounded him as lightning pierces through a mountain. Wounded by Bhim, Karan the commander of armies swooned and fell down on his seat in the car. Seeing Karan senseless, the king of Madra took him far away from the field of dattle. Then at the defeat of Karan, Bhim routed the Pandav army as Indra had done the Danavas. 47.

धृतराष्ट्र उवाच। सुदुष्करमिदं कर्म कृतं भीमेन सञ्जय। येन कर्णो महाबाहू रथोपस्थे निपातितः ॥ १ ॥ कर्णो ह्येको रणे हन्ता पांडवान् सृञ्जयैः सह। इति दुर्योधनः सूतमाभाषिवान्मां मुहुर्मुहुः ॥२॥ पराजितन्तु राधेयं दृष्ट्वा भीमेन संयुगे। ततः परं किमकरोत् पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच विमुखं प्रेक्ष्य राधेयं सूतपुत्रं महाहवे पुत्रस्तव महाराज सोदर्य्यान् समभाषत ॥४॥ शीघ्रं गच्छत भद्रंवो राधेयं परिरक्षत। भीमसेनभयागाधे मज्जन्तं व्यसनार्णवे ॥ ५ ॥ तेतुराजा समादिष्टा भीमसेनं जिघांसवः। अभ्यवर्त्तन्त संक्रुद्धाः पतङ्गाः पावकं यथा ॥ ६ ॥ श्रुतवान्दुर्द्धरः क्राथो विवित्सुर्विकटः समः। निषङ्गी कवची पाशी तथा नन्दोपनन्दकौ ॥ ७ ॥ दुष्प्रधर्षःसुबाहुश्च वातवेगसुवर्चसौ। धनुर्ग्राहो दुर्मदश्च जलसन्धः शलः सहः ॥ ८ ॥ एतेरथैः परिवृता वीर्य्यवन्तो महाबलाः। भीमसेनं समासाद्य समन्तात् पर्य्यवारयन् ॥९॥ तेव्यमुञ्चन्

अध्याय। ५१।

धृतराष्ट्र बोले हे संजय भीमसेन ने यह अत्यन्त कठिन कर्मकिया जिसने अपने हाथसे कर्णको रथके स्थान में अचेत करके गिराया। १ अकेला कर्णयुद्धमेंसृंजियों सतेत सब पाण्डवों को मारेगा हे संजय यहबात बराम्बार मुझसे दुर्य्योधन ने कही है। २। युद्धमें भीमसेन के हाथसे विजय कियेहुये कर्णको देखकर मेरे पुत्र दुर्य्योधन ने क्या किया। ३। संजयनेकहा हे महाराज युद्धमें आपकापुत्र कर्णको मुखमोड़नेवाला देखकर अपने भाइयों से बोला कि। ४। तुम्हारा भलाहो तुम शीघ्रजाकर भीमसेन के महाकष्टरूपी अथाह समुद्रमें डूबेहुयेकर्ण की सबओर से रक्षाकरो। ५। राजाकी आज्ञापातेही वह सबलोग महाक्रोधयुक्त होकर भीमसेन के सम्मुख ऐसे हुये जैसे कि अग्नि के सम्मुख पतङ्ग होते हैं। ६। श्रुतवान, दुर्द्धर, क्राथ, विवित्सु, विकट, सम, निषंगी, कवची, पाशी, नन्द, उपनन्द। ७। दुष्प्रधर्ष सुबाहु, वातवेग, सुवर्चस, धनुर्ग्राह, दुर्मद, जलसंध, शल, ८

CHAPTER LI

Dhritrashtra said, "Bhim did a brave deed in as much as he made Karan senseless. I have often been told by Duryodhan that Karan will slay the Pandavas and Srinjayas. What did Duryodhan do when Karan was made insensible by Bhim?" Sanjaya said, "Seeing Karan turn back, Duryodhan said to his brothers, "Protect Karan from Bhim, may you be blessed!" By the order of the king, they faced Bhim in great anger as insects fall in fire. Shrutvan, Dundhar, Krath, Vivitsu, Vikat, Sam, Nishangi, Kabachi, Pashi, Nand, Upnand, Dushpradharsh, Suvahu, Vatveg, Suvarchas, Dhanurgrah, Durmad, Jalsandh, Shal and Sah, the sons of Dhritrashtra surrounded Bhim on all sides and attacked him with arrows. Mighty Bhim, wounded by their arrows, slew five hundred of their

शरव्रातान् नानालिङ्गान् समन्ततः ॥ १० ॥ स तैरभ्यर्द्यमानस्तु भीमसेनो महाबलः । तेषामापततां क्षिप्रं पुत्राणां ते जनाधिप । रथैः पञ्चशतैः सार्द्धं पञ्चाशद्‌हनद्रथान् ॥ ११ ॥ विविस्तोस्तु ततःक्रुद्धो भल्लेनापहरच्छिरः । भीमसेनो महाराज तव पपात ततोभुवि ॥ १२ ॥ स कुण्डलशिरस्त्राणं पूर्णचन्द्रोपमं तदा । तं दृष्ट्वा निहतं शूरं भ्रातरः सर्वतः प्रभो ॥ १३ ॥ अभ्यद्रवन्त समरे भीमं भीमपराक्रमम् । ततोऽपराभ्यां भल्लाभ्यां पुत्रयोस्ते महाहवे । जहार समरे प्राणान् भीमो भीमपराक्रमः ॥ १४ ॥ तौ धरामन्वपद्येतां वातरुग्णाविव द्रुमौ । विकटश्च सहश्चोभौ देवपुत्रोपमौ नृप ॥ १५ ॥ ततस्तु त्वरितोभीमः क्राथंनिन्ये यमक्षयम् । नाराचेन सुतीक्ष्णेनसहतोन्यपतद्भुवि॥१६॥ हाहाकारस्ततस्तीव्रः सम्बभूव जनेश्वर । वध्यमानेषु वीरेषु तवपुत्रेषु धन्विषु ॥ १७ ॥

सह, इनमहापराक्रमी रथोंसे रक्षित धृतराष्ट्रके पुत्रों ने भीमसेन को पाकर चारों ओर से घेरलिया । ९ । और नानाप्रकार के रूपवाले बाण समूहों को चारोंओर से फेंका । १० । फिर महाबली भीमसेन ने उनके हाथसे पीड़ामान होकर उनआते हुये आपके पुत्रों के पांचसौ रथों समेत पचास रथियों को मारा । ११ । इसके पीछे फिर क्रोधयुक्त भीमसेन ने भल्लसे विविस्तु के शिरको देहसे जुदाकिया और वह मरकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । १२ । पूर्णचन्द्रमा के समान कुण्डलभी उसके शिर के साथही गिरा हे राजा तबतो उसके सबभाई उस शूरवीर अपने भाईको मराहुआ देखकर । १३ । युद्धमें भयानक पराक्रमी भीमसेन के सम्मुख गये इसके अनन्तर उस भयानक भीमसेन ने उस महायुद्ध में दूसरे दो भल्लों से आपके दोपुत्रों के प्राणोंका हरणकिया । १४ । हे राजा हवासे टूटेहुये वृक्षों के समान देवकुमारों के समान वह विकट और सहनाम दोनों भाई भी मरकर पृथ्वीपर गिरपड़े । १५ । इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने क्राथकोभी यमलोक में पहुँचाया अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचका माराहुआ वह क्राथ पृथ्वीपर गिरपड़ा । १६ । तब तो महाकठिन हाहाकार उत्पन्न हुआ आपके धनुषधारी वीर बेटोंके मरने और उनकी सेना के चलायमान होनेपर फिर महाबली भीमसेन ने युद्ध में नन्द उपनन्द को यमलोक में

warriors and destroyed fifty cars. Enraged Bhim cut off the head of Vivitsu and made him fall down dead on the ground. His ear-rings, like the full moon, fell down with his head. His brothers, seeing him dead, faced Bhimsen. The latter then cut down the heads of your two sons, Vikat and Sah who fell down like trees struck by the wind 15. He then sent Krath too, to the region of Yam. Then there was a great alarm raised at the death of your sons. Again he slew Nand and Upnand. Then your sons fled at the sight of the dreadful form of Bhim. Karan was much grieved at the death of your sons and drove his swan like horses towards his car. The horses

तेषां संकुलिते सैन्ये पुनर्भीमो महाबलः । नन्दोपनन्दौ समरे प्रैषयद्यमसादनम् ॥ १८
ततस्ते प्राद्रवन् भीताः पुत्रास्ते विह्वलीकृताः । भीमसेनं रणे दृष्ट्वा कालान्तकयमो
पमम् ॥ १९ ॥ पुत्रांस्ते निहतान् दृष्ट्वा सूतपुत्रः सुदुर्मनाः । हंसवर्णान् हयान् भूयः
प्राहिणोद्यत्र पाण्डवः ॥ २० ॥ ते प्रेषिता महाराज मद्रराजेन वाजिनः । भीमसेनरथ
प्राप्य समसज्जन्त वेगिताः ॥ २१ ॥ स सन्निपातस्तुमुलो घोररूपो विशाम्पते । आसी
द्रौद्रो महाराज कर्णपाण्डवयोर्मृधे ॥ २२ ॥ दृष्ट्वा मम महाराज तौ समेतौ महारथौ
। आसीद्बुद्धिः कथं युद्धमेतदद्य भविष्यति ॥ २३॥ ततो भीमो रणश्लाघी छादयामास
पत्रिभिः । कर्णं रणे महाराज पुत्राणां तव पश्यताम् ॥ २४ ॥ ततः कर्णो भृशं क्रुद्धो
भीमं नवभिरायसैः । विव्याध परमास्त्रज्ञो भल्लैः सन्नतपर्वभिः ॥ २५ ॥ आहतः स
महाबाहुर्भीमो भीमपराक्रमः । आकर्णपूर्णैर्विशिखैः कर्णं विव्याध सप्तभिः ॥ २६ ॥
ततः कर्णो महाराज आशीविष इव श्वसन् । शरवर्षेण महता छादयामास पाण्डवम्
॥ २७ ॥ भीमोऽपि तं शरव्रातैश्छादयित्वा महारथम् । पश्यतां कौरवेयाणां विननाद

पहुँचाया । १८ । उसके पीछे वह आपके पुत्र भयभीत और व्याकुल युद्धमें काल
रूप भीमसेन को देखकर भागे । १९ । फिर वह दुःखी कर्ण ने आपके पुत्रों को
मराहुआ देखकर फिर हंसवर्ण घोड़ोंको वहांही चलाया जहां पांडव भीमसेन था
। २० । हे महाराज राजामद्रके चलाये हुये वह वेगवान् घोड़े भीमसेन के रथको
पाकर अच्छीरीति से भिड़े । २१ । हे राजा धृतराष्ट्र युद्धमें कर्ण और पांडव
भीमसेनका वह युद्धमहाकठिन घोररूप रुधिरका उत्पन्न करनेवाला हुआ । २२ ।
फिर उन भिड़े हुये महारथियों को देखकर मैंने विचार किया कि यह युद्ध कैसे
होगा । २३ । इसके पीछे युद्धमें प्रशंसनीय भीमसेन ने बाणों से कर्णको आपके
पुत्रों के देखते हुये ढकदिया । २४ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अस्त्रों के जाननेवाले
कर्ण ने भी भीमसेनको टेढ़े पर्ववाले नौ भल्लों से पीड़ामान किया । २५ । तब
उस घायल महाबाहु भयानक पराक्रमी भीमसेनने कानतक खैंचे हुये सात
विशिखों से कर्णको पीड़ामान किया । २६ । हे महाराज इसके पीछे विषैले सर्पकी
समान श्वास लेनेवाले कर्ण ने बाणोंकी बड़ी वर्षा से भीमसेनको ढकदिया । २७

driven by the king of Madra, took him well up to the car of Bhim. Then the battle between those two warriors was extremely dreadful. Seeing their fight I wondered what the result would be. Bhim hid Karan with his arrows in the presence of your sons. Karan too, wounded Bhim with his arrows.25. Bhim, much wounded, drew his bow to the car, and wounded Karan with seven darts. Sighing like a serpent, Karan hid Bhim with the flights of his arrows. Bhim too, hid him with his arrows and roared in the presence of the Kauravas.

महाबलः ॥ २८ ॥ ततः कर्णो भृशं क्रुद्धो दृढमादाय कार्मुकम् । भीमं विव्याध दशभिः कङ्कपत्रैः शिलाशितैः ॥ २९ ॥ कार्मुकञ्चास्य चिच्छेद भल्लेन निशितेन च ॥ ३० ॥ ततो भीमो महाबाहुर्हेमपट्टपरिष्कृतम् । परिघं घोरमादाय मृत्युदण्डमिवापरम् । कर्णस्य निधनाकांक्षी चिक्षेपातिबलो नदन् ॥ ३१ ॥ तमापतन्तं परिघं वज्राशनिसमस्वनम् । चिच्छेद बहुधा कर्णः शरैराशीविषोपमैः ॥ ३२ ॥ ततः कार्मुकमादाय भीमो दृढतरं तदा । छादयामास विशिखैः कर्णं परबलार्दनः ॥ ३३ ॥ ततो युद्धमभूद्घोरं कर्णपाण्डवयोर्मृधे । हरीन्द्रयोरिव मुहुः परस्परवधैषिणोः ॥ ३४ ॥ ततः कर्णो महाराज भीमसेनं त्रिभिः शरैः । आकर्णमूलं विव्याध दृढमायम्य कार्मुकम् ॥ ३५ ॥ सोऽतिविद्धो महेष्वासः कर्णेन बलिनां वरः । घोरमादत्त विशिखं कर्णकायविदारणम् ॥ ३६ ॥ तस्य छित्वा तनुत्राणं भित्वा कायञ्च सायकः ।

फिर महाबली भीमसेन ने भी अपने बाणोंकी वृष्टि से उस कर्णको ढकादिया और कौरवों के देखतेहुये गर्जा । २८ । इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने दृढधनुषको लेकर तीक्ष्णधारवाले दशबाणों से भीमसेन को पीड़ामान करके तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उसके धनुषको काटा । ३० । इसके पीछे बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्ण के मारने की इच्छासे गर्जना करतेहुये भीमसेन ने सुवर्ण वस्त्रों से अलंकृत कालदण्ड के समान घोर परिघ को लेकर फेंका कर्णने उसवज्र और बिजली के समान आते हुये परिघको विषैले सर्पों की समान बाणों से टुकड़े करादिया । ३२ । तबतो शत्रुसंतापी भीमसेन ने बहुत बड़े दृढ़ धनुष को लेकर कर्ण को मारे बाणोंके आच्छादित करदिया । ३३ । उसके पीछे कर्ण और भीमसेन का ऐसा घोरयुद्ध हुआ जैसे कि परस्पर मारनेकी इच्छाकरने वाले महाबली सिंहोंके राजाओं का युद्ध वारंवार होता है ।३४। हे महाराज इसके पीछे कर्ण ने दृढ़ धनुषको चढ़ाकर तीन बाणसे भीमसेनको कर्ण मूलपर घायल किया ।३५। कर्णके हाथसे अत्यन्त घायल महाबली भीमसेन ने कर्णके शरीरको छेदनेवाले घोर विशिखको हाथमें लेकर फेंका वह बाण उस कर्णके कवच में घुस शरीरको छेदकर पृथ्वीमें ऐसा समागया जैसे कि सर्पवामी

Then Karan, much enraged, wounded him with ten darts and cut his bow.30. Then desiring to slay mighty Karan, Bhim with a roar, hurled at him a dreadful club, decked with the cloth of gold, like the staff of Yam; but Karan cut it down into pieces with his serpent like arrows, Bhim the destroyer of foes then took up a hard bow and covered Karan with arrows. Then Karan and Bhim fought dreadfully like two kings of lions. Karan wounded his adversary with three hard arrows 35. Wounded by Karan, mighty Bhimsen took up a dart and hurled it at him. It pierced Karan's body and entered the ground as a serpant enters an ant-hill. Pierced by that dart,

प्राविशच्चरणों राजन् वल्मीकमिव पन्नगः ॥ ३७ ॥ स तेनातिप्रहारेण व्यथितो विह्वलन्निव । सञ्चचाल रथे कर्णः क्षितिकम्पे यथाचलः ॥ ३८ ॥ ततः कर्णो महाराज रोषामर्षसमन्वितः । भीमं तं पञ्चविंशत्या नाराचानां समार्पयत् ॥ ३९ ॥ आजघ्ने बहुभिर्बाणैर्ध्वजं एकेषुणा हनत् । सारथिमस्य भल्लेन प्रेषयामास मृत्यवे ॥ ४० ॥ छित्वा च कार्मुकं तूर्णं पाण्डवस्याशु पत्रिणा । विरथं भीमकर्माणं भीमं कर्णश्चकार ह ॥ ४२ ॥ विरथो भरतश्रेष्ठ प्रहसन्ननिलोपमः । गदां गृह्य महाबाहुरपतत् स्यन्दनोत्तमात् ॥ ४३ ॥ अवप्लुत्य तु वेगेन तव सैन्यं विशाम्पते । व्यधमद्गदया भीमः शरन्मेघानिवानिलः ॥ ४४ ॥ नागान् सप्तशतान्राजन्नीषादन्तान् प्रहारिणः । व्यधमत् सहसा भीमः क्रुद्धरूपः परन्तपः ॥ ४५ ॥ दन्तवेष्टेषु नेत्रेषु कुम्भेषु च कटेषु च । मर्मस्वपि च

में समाजाता है । ३७ । उस कठिनघातसे महापीड़ित व्याकुल और अचलके समान वह कर्ण रथपर ऐसा कंपित हुआ जैसे कि पृथ्वी के भूकम्प में पर्वत हिलता है । ३८। हे महाराज इसके पीछे क्रोध और व्याकुलता से रहित कर्णने भीमसेनको पच्चीस नाराचोंसे घायल किया ।३९। और अनेक बाणोंसे देहको घायलकरके एक बाणसे ध्वजाको काटा और भल्लसे उसके सारथीको कालके वशकिया । ४० । और शीघ्रही तीक्ष्णबाणोंसे उसके धनुषको काटकर,हँसतेहुये कर्णने एकमुहूर्तमें सावधानी से भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेनको रथसे विरथ करदिया । ४२ । हे भरतर्षभ वह वायुके समान रथसे विहीन हँसताहुआ महाबाहु भीमसेन गदाकोलेकर उस उत्तम रथसेकूदा । ४३ । और बड़े वेगसे दौड़कर भीमसेन ने आपकी सेनाको उस गदासे ऐसा तितिर्वितर करदिया जैसे कि बादलों को वायु छिन्नभिन्न करदेताहै ४४ फिर उस भयानकरूप शत्रुसंतापी भीमसेन ने ईषाके समान दांतरखने वाले घातक सातसौ हाथियोंको भी छिन्नभिन्न करके । ४५ । बड़े पराक्रम से उन हाथियों के जाबड़े आंख मस्तक कमर और मर्मस्थलों को घायलकिया । ४६ । इसके पीछे सब हाथी भयभीत होकर भागे और फिर शत्रुओंकी ओर से भेजेहुये अन्य सवारों

Karan shook like a mountain during an earthquake. Much enraged and without confusion, he wounded Bhim with twenty five arrows and cut the banner and slew the driver with one arrow each.40. Then having cut his bow with a sharp arrow, with a smile, he took care to deprive him of his car. Destitute of the car, Bhim free like the wind, jumped down mace in hand and with it began routing your army as the wind disperses the clouds. Dreadful Bhimsen the destroyer of foes dispersed seven hundred elephants and wounded them on the jaws, eyes, head, back and vital parts.45. Then

सर्वांस्तान्नागानहनद्बली ॥ ४६ ॥ ततस्ते प्राद्रवन् भीताः प्रतीपं प्रहिताः पुनः । महामात्रै
स्तमाववु्र्मेघा इव दिवाकरम् ॥ ४७ ॥ तान् स सप्तशतान् नागान् सारोहायुधकेतनान्
भूमिष्ठो गदयाजघ्ने वज्रेणेन्द्र इवाचलान् ॥ ४८ ॥ ततः सुबलपुत्रस्य नागानतिबलान्
पुनः पोथयामास कौन्तेयो द्वापञ्चाशदरिन्दमः ॥ ४९ ॥ तथा रथशतं साग्रं
पत्तींश्च शतशोऽपरान् । न्यहनत् पाण्डवो युद्धे तापयंस्तव वाहिनीम् ॥ ५० ॥
प्रताप्यमानं सूर्येण भीमेन च महात्मना । तव सैन्यं सञ्चुकोच चर्माग्नावाहितं यथा
॥ ५१ ॥ ते भीमभयसन्त्रस्तास्तावका भरतर्षभ । विहाय समरे भीमं दुद्रुवुर्वै दिशो
दश ॥ ५२ ॥ रथाः पञ्चशताश्चान्ये ह्रादिनश्चर्मवर्मिणः । भीममभ्यद्रवंस्तूर्णं
शरपूगैः समन्ततः ॥ ५३ ॥ तान् ससूतरथान् वीरान् सपताकाध्वजायुधान् ।
पोथयामास गदया भीमो विष्णुरिवासुरान् ॥ ५४ ॥ ततः शकुनिनिर्दिष्टाः सादिनः

समेत हाथियों ने उसको ऐसा घेरलिया जैसे कि सूर्य्यको बादल घेरलेता है ।४७। फिर उस पृथ्वीपर नियतने उन सातसौ हाथियोंको भी सवारशस्त्र और ध्वजाओं समेत ऐसा मारा जैसे कि इन्द्र वज्रसे पहाड़ोंको मारताहै ॥ ४८ । इसकेपीछे शत्रुओंके विजयी भीमसेन ने शकुनी के बड़े पराक्रमी बावन हाथियों को फिर मारा । ४९ । इसीप्रकार आपकी सेनाको कंपयामान करतेहुये पाण्डव भीमसेन ने एकसौसे अधिक रथ और हजारों पतियोंको मारा ॥ ५० ॥ तब आपकी सेना महात्मा भीमसेनरूपी सूर्य्यसे संतप्तहोकर ऐसेसूखगई जैसे आगसेचमड़ा ॥ ५१ ॥ हे भरतर्षभ भीमसेन के भयसे आपके शूरवीर भयभीत होकर युद्ध में भीमसेनको छोड़कर दशोंदिशाओं को भागे ॥ ५२ ॥ तब शब्द करनेवाले चर्म के कवचधारी अन्य पांचसौ रथ रथियोंसमेत भीमसेनपर चारों ओरसे बाणोंकी वर्षाकरतेहुये सम्मुख आये । ५३ । भीमसेनने उन पांचसौ रथसमेत वीरोंको भी ध्वजा पताकाओं समेत अपनी गदासे ऐसा मारा जैसे कि असुरोंको विष्णु भगवान् मारते हैं ।५४।

they fled in terror. Other elephants, sent by the enemy, surrounded Bhim as the clouds hide the Sun, but he soon put them to death as Indra breaks through mountains with vajra. Then Bhim the destroyer of foes destroyed fifty two elephants of the enemy. Thus shaking your army, Bhim the Pandav destroyed more than a hundred car warriors and thousands of foot. Your army was scorched by the Sun of Bhim as leather by fire. Terrified by Bhim, your warriors ran in all directions. 52. Then came to him five hundred warriors protected by leathern armour, and shooting arrows at Bhim; but they too, were destroyed by Bhim's mace as Asurs are destroyed by Vishnu. Then the followers of Shakuni, armed with darts and swords three thousand in number, faced Bhim and were destroyed by him

शूरसम्मताः । त्रिसहस्राश्वयुर्यान्ति शक्त्यृष्टिप्रासपाणयः ॥ ५५ ॥ प्रत्युद्गम्य जवे
नाशु साश्वारोहांस्तदारिहा विविधान् विचरन्मार्गान् गदया समपोथयत् ॥ ५६ ॥
तेषामासीन्महाशब्दस्ताडितानाञ्च सर्वशः । अश्मभिर्वध्यमानानां नागानामिव भारत
॥ ५७ ॥ एवं सुबलपुत्रस्य त्रिसाहस्रान् हयोत्तमान् । हत्वान्यं रथमास्थाय क्रुद्धो
राधेयमभ्ययात् ॥ ५८ ॥ कर्णोऽपि समरे राजन् धर्मपुत्र मरिन्दमम् । स शरैश्छाद
यामास सारथिञ्चाप्यपातयत् ॥ ५९ ॥ ततः स प्रद्रुतं संख्ये रथं दृष्ट्वा महारथ ।
अन्वधावत् किरन्बाणैः कङ्कपत्रैरजिह्मगैः ॥ ६० ॥ राजानमभिधावन्तं हयैरा
वृत्यरोदसी । क्रुद्धः प्राच्छादयामास शरजालेन मारुतिः ॥ ६१ ॥ संनिवृत्तस्त
तस्तूर्णं राधेयः शत्रुकर्षणः । भीमं प्रच्छादयामास समन्तान्निशितैः शरैः ॥ ६२ ॥
भीमसेनरथव्यग्रं कर्णं भारत सात्यकिः । अभ्यर्दयदमेयात्मा पार्ष्णिग्रहणकारणात्

इसके पीछे शकुनीके आज्ञावर्ती शूरोंके अंगीकृत शक्ति दुधारे खड्ग और भालोंके हाथमें रखनेवाले तीनहजार अश्वसवार भीमसेनके सम्मुखगये । ५५ । तब शत्रुहन्ता भीमसेनने नानाप्रकार के मार्गोंमें घूमघूमकर शीघ्रही सम्मुख जाकर बड़े वेग पूर्वक गदासे उन अश्वसवारोंको भी मारा । ५६ । हे भरतवंशी तब तो उन सब घायलोंके ऐसे शब्द प्रकटहुये जैसे कि पत्थरों से घायलहुये हाथियोंके शब्द होते हैं । ५७ । इसरीति से शकुनीके तीनोंहजार अश्वारूढोंको मारकर दूसरेरथमें सवार हो क्रोधयुक्त भीमसेन कर्णके सम्मुखगया । ५८ । वहां उस कर्णनेभी शत्रुविजयी धर्मपुत्र युधिष्ठिर को बाणों से ढककर सारथी को रथसे गिराया । ५९ । इसके पीछे वह महारथी युद्धमें सारथीसे रहित रथको देखकर भागा और कर्ण कंकपक्षों से जटित सीधे बाणोंको मारताहुआ उसके पीछेचला । ६० । वायुके पुत्र भीमसेन ने राजाकी ओर जानेवाले कर्ण को देखकर अपने बाणजालों से ढकदिया दिया फिर बाणों से पृथ्वी आकाश को ढककर शत्रुओं का विजय करनेवाला कर्ण बहुत शीघ्रलौटा और तीक्ष्णबाणों से भीमसेनको सब ओरसे ढकदिया ।६२। इस के पीछे हे राजा बड़े धनुषधारी सात्यकि ने पीछे होनेके कारण भीमसेनके रथ से व्याकुल कर्णको पीड़ामान किया । ६३ । बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित कर्णभी उस के सम्मुख वर्त्तमानहुआ फिर सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ वह दोनों वीर सम्मुखहो

They cried like elephants hit with stones. Having slain the horsemen of Shakuni, Bhim mounted another car and faced Karan. Karan hid him with arrows and slew the driver of his car. Without a driver, Bhim ran away in his car and was chased by Karan' arrows. 60. Seeing Karan advance towards the king, Bhim covered him with his arrows. Karan too, spread his arrows, in all directions and hid Bhim. Then Satyaki, seeing Bhim much afflicted, wounded Karan with his arrows. Though much wounded Karan faced him. Then

॥ ६३ ॥ अभ्यवर्तत कर्णस्तमार्दितोऽपि शरैर्भृशम् ॥ ६४ ॥ तावन्योऽन्यं समासाद्य वृषभौ सर्वधन्विनाम ॥ ६४ ॥ विसृजन्तौ शरांश्चित्रान् विभ्राजेतां मनस्विनौ । ताभ्यां वियति राजेन्द्र विततं भीमदर्शनम क्रौञ्चपृष्ठारुणं रौद्रं बाण जालं व्यदृश्यत ॥ ६५ ॥ नैव सूर्यप्रभां राजन् न दिशः प्रदिशस्तथा । प्राज्ञासिष्म वयं ते वा शरैर्मुक्तैः सहस्रशः ॥ ६६ ॥ मध्यान्हे तपतो राजन् भास्करस्य महाप्रभाः ॥ ६७ ॥ हृताः सर्वाः शरौघैस्तैः कर्णपाण्डवयोस्तदा । सौबलं कृतवर्माणं द्रौणिमाधिरथिं कृपम् ॥ ६८ ॥ संसक्तान् पाण्डवैर्दृष्ट्वा निवृत्ताः कुरवः पुनः । तेषामापततां शब्दस्तीव्र आसीद्विशाम्पते ॥ ६९ ॥ उद्धूतानां यथा वृष्ट्या सागराणां भयावहः । ते सेने भृशसंसक्ते दृष्ट्वान्योऽन्यं महाहवे ।

कर युद्ध करनेलगे और हरएकने परस्पर में चौसठ २ बाण छोड़े उन बाणों के छोड़ते में वह दोनों वीर अत्यन्त शोभित हुये हे राजा उन दोनों का फैलाया हुआ भयकारी मर्दनकरनेवाला रुद्र बाण जाल क्रौंचकी पुच्छके समान रक्त वर्ण दिखाई दिया । ६५ । फिर छोड़े हुये हजारों बाणों के कारणसे हमने और उन सब लोगों ने सूर्य्यकोनहीं देखा और दिशाओं को ऐसे नहीं पाहिचाना जैसे कि मध्याह्न के समय तेजस्वी सूर्य्य के कारण दिशाओंका ज्ञान नहीं होता है । ६७ । उस समय कर्ण और भीमसेन के बाण समूहों से हटायेहुये शकुनी अश्वत्थामा कृतवर्मा और अधिरथी कृपाचार्य्य । ६८ । यह सब कर्णको पाण्डवों से भिड़ाहुआ देखकर फिर लौटे हे राजा उन आनेवाले वीरों के ऐसे बड़े कठोर शब्दहुये । ६९ । जैसे कि चन्द्रके उदय से उठेहुये महासमुद्रों के शब्द होते हैं वह दोनों सेना उस महा युद्ध में परस्पर अच्छेप्रकारसे देखकर खूबलड़ीं और परस्परमें एक एकको घेरकर बड़ी प्रसन्नहुईं । ७० । इसके पीछे मध्याह्न के समय सूर्य्य के वर्त्तमान होनेपर युद्ध जारीहुआ ऐसा युद्ध पूर्व्व में कभी देखाथा न सुना था । ७१ । फिर सेनाके समूह दूसरीसेना के समूहोंको पाकरतीव्रतासे ऐसे सम्मुख गये जैसे कि जलोंकेसमूह

the two best of archers fought hard and each wounded the other with sixty four arrows. They looked very glorious in fighting and the flights of their arrows looked like those of Krounch birds with red tails.65. The Sun and the directions were hid with their arrows: we could not know the points of the compass as at mid-day. Then Shakuni, Ashwathama, Kritvarma and Kripacharya seeing Karan fight with the Pandavas came back and faced Bhim with flights of arrows. Then there was a noise like that of the Ocean at the full moon. The two sides fought well and were much pleased at the prospect of victory.70. The battle began at noon and was so severe as we had

हर्षेण महता युक्ते परिगृह्य परस्परम् ॥ ७० ॥ ततः प्रववृते युद्धं मध्यं प्राप्ते दिवाकरे ॥ यादृशं न कदाचिद्धि दृष्टपूर्वं न च श्रुतम् ॥ ७१ ॥ बलौघस्तु समासाद्य बलौघं सहसा रणे । उपासर्पत वेगेन वार्य्योघ इव सागरम् ॥ ७२ ॥ आसीन्निनादः सुमहान् बलौघानां परस्परम् । गर्ज्जतां सागरौघानां यथा स्यान्निस्वनो महान् ॥ ७३ ॥ ते तु सेने समासाद्य वेगवत्यौ परस्परम् । एकीभावमनुप्राप्ते नद्याविव समागते ॥ ७४ ॥ ततः प्रववृते युद्धं घोररूपं भयानकम् । कुरूणां पाण्डवानाञ्च लिप्सतां सुमहद्यशः ॥ ७५ ॥ शूराणां गर्ज्जतां तत्र ह्यविच्छिन्नकृता गिरः । श्रूयन्ते विविधा राजन्नामान्युद्दिश्य भारत ॥ ७६ ॥ यस्य यद्धि रणे व्यङ्गं पितृतो मातृतोऽपि वा । कर्म्मतः शीलतो वापि स तत् श्रावयते युधि ॥ ७७ ॥ तान् दृष्ट्वा समरे शूरांस्तर्ज्जमानान् परस्परम् । अभवन्मे मती राजन्नैषामस्तीति जीवितम् ॥ ७८ ॥ तेषां दृष्ट्वा तु क्रुद्धानां वपूंष्यमिततेजसाम् । अभवन्मे भयं तीव्रं कथमेतद्भविष्यति ॥ ७९ ॥ ततस्ते पाण्डवा राजन् कौरवाश्च महारथाः । ततक्षुः सायकैस्तीक्ष्णैर्निघ्नन्तो हि परस्परम् ॥ ८० ॥

इतिकर्ण्ण पर्व्वणि संकुलयुद्धेएक पंचाशोध्यायः ॥ ५१ ॥

समुद्रके सम्मुख होतेहैं । ७२ । उससमय परस्पर बाणोंकी वर्षा के ऐसे बड़े शब्द हुये जैसे कि गर्जनेवाले समुद्रों के जलके वेगकी बड़ी ध्वनि होती है । ७३ । फिर उन दोनों वेगवान सेनाओं ने परस्परमें एक एकको पाकर एकताको ऐसेपाया जैसे कि दो नदियां परस्पर मिलकर एक होजाती हैं । ७४ । हे राजा इसके पीछे यशके चाहने वाले कौरव और पांडवोंका घोररूप युद्ध जारी हुआ । ७५ । उस समय वहां गर्जनेवाले शूरवीरोंकी वार्त्तालाप जोकि निरंतर नानाप्रकार कीथीं और नामोंको लेलेकर होरहीथीं सुनीगई । ७६ । जिस के पिता माताके अवगुण स्वाभाविक दोषथे वह युद्धमें परस्पर एकएकको सुनातेथे । ७७ । हे राजा युद्धमें परस्पर घुड़कने वाले उन शूरों को देखकर मैंने समझा कि अब इनका जीवन नहीं है ।७८। और उन क्रोधयुक्त बड़ेतेजस्वियों के शरीरों को देखकर मुझको अत्यन्त भयहुआ कि यह कैसे होगा । ७९ । इसके पीछे उनमहारथी पांडव और कौरवों ने परस्परमें मारकर प्रत्येकको अपने तीक्ष्णशायकोंसे घायलकिया । ८० ॥

never seen before. The armies met with great force like two masses of water. The sounds of arrows on both sides were like the roar of the ocean. The two armies were then united like two streams. The Kauravas and the Pandavas vied for victory. The roars of the warriors, who called others by name, were of various sorts. They brought to light the sins of one another's parents. Seeing them engaged in fighting, I thought that the period of their life had come to an I, was much terrified at the sight of their dreadful visages and wondered what the end would be. Thus the Kaurav and Pandav warriors wounded one another in battle." 80.

सञ्जय उवाच । क्षत्रियास्ते महाराज परस्परवधैषिणः । अन्योऽन्यं समरे जघ्नुः कृतवैराः परस्परम् ॥ १ ॥ रथौघाश्च हयौघाश्च नरौघाश्च समन्ततः । गजौघाश्च महाराज संसक्ताश्च परस्परम् ॥ २ ॥ गदानां परिघानाञ्च कुणपानाञ्च क्षिप्यताम् प्रासानां भिन्दिपालानां भुशुण्डीनाञ्च सर्वशः । सम्पातं चानुपश्याम संग्रामे भृशदारुणे ॥ ३ ॥ शलभा इव सम्पेतुः शरवृष्टयः सुदारुणाः ॥ ४ ॥ नागा नागान् समासाद्य व्यधमन्त परस्परम् । हया हयांश्च समरे रथिनो रथिनस्तथा ॥ ५ ॥ पत्तयः पत्तिसंघांश्च हयसंघांश्च पत्तयः । पत्तयो रथमातङ्गान् रथा हस्त्यश्वमेव च । नागाश्च समरे त्र्यङ्गं ममृदुः शीघ्रगा नृप ॥ ६ ॥ वध्यतां तत्र शूराणां क्रोशतां च परस्परम् घोरमायोधनं जज्ञे पशूनां वैशसं यथा ॥ ७ ॥ रुधिरेण समास्तीर्णा भाति भारत मेदिनी । शक्रगोपगणाकीर्णा प्रावृषीव यथा धरा ॥ ८ ॥ यथा वा वाससी शुक्ले

अध्याय ५१ ॥

संजय बोले हे महाराज परस्पर में मारने के अभिलाषी और शत्रुता करने वाले उन क्षत्रियों ने परस्पर में घायलकिया॥१॥और रथ घोड़े और मनुष्यों समेत राजाओं के समूह चारोंओरसे आपस में खूब जुटे। २ । फेंकेहुये परिघ, गदा, कुणप, प्रास, भिन्दिपाल और भुशुंडियों के सबप्रकार के प्रहारों को युद्ध में महाभयकारी देखा। ३ । और बाणों की वर्षा टीड़ी के समान हजारों प्रकारसे होने लगी॥४॥हाथियोंने हाथियों को परस्परमें पाकर छिन्नभिन्न किया तब घोड़ों ने घोड़ोंको रथियों ने रथियोंको। ५ । पत्तियों के समूहों को वा घोड़ों के यूथोंको अथवा रथ और हाथियों ने घोड़ोंको । ६ । और शीघ्रगामी हाथियों ने सेनाको अंगो से विहीन करके छिन्नभिन्न करदिया। ७। वहां शूरवीरों के समूह परस्परमें घायल होते और पुकारतेथे इसहेतुसे युद्धभूमि ऐसी अत्यन्त भयानकहोगई जैसी कि पशुओं की संहारस्थानकी भूमी होती है। ८ । हे भरतवंशी उससमय रुधिर से भरीहुई पृथ्वी ऐसी दिखाई देतीथी जैसे कि वर्षाऋतुमें बीरबहूटियों के समूहों से पृथ्वी रक्त दिखाई देती है अथवा जैसे कुसुम के रंगेहुये श्वेत वस्त्रोंको

CHAPTER LII

Sanjaya said, "Those warriors, desirous of slaying one another through enmity wounded one another. Parties of cars, horses and men met in the field of battle. The clubs, maces and other weapons discharged were dreadful to behold. The shower of arrows looked like the flight of locusts. Elephants, horses and car-warriors destroyed their own kind. Foot soldiers destroyed foot soldiers, horsemen, cars and elephants, and the latter did the same to horses. Swift elephants destroyed and dispersed the warriors. The brave men saw one another and cried, and the battle field looked dreadful like a slaughter house. The ground covered with blood looked as if strewn with red

नगनिभोपमाः । विनेदुः समरे तस्मिन् पक्षवन्त इवाद्रयः ॥ १७ ॥ अपरे
प्राद्रवन्नागाः शल्यार्त्ता व्रणतापिताः । प्रतिमानैश्च कुम्भैश्च पेतुरुर्व्यां महाहवे
॥ १८ ॥ विनेदु सिंहवच्चान्ये नदन्तो भैरवान्रवान् । बभ्रमुर्बहवो राजंश्चुक्रुशु
श्चापरे गजाः ॥ १९ ॥ हयाश्च निहता बाणैः स्वर्णभाण्डपरिच्छदाः - निपेतुश्चैव
मम्लुश्च बभ्रमुश्च दिशो दश ॥ २० ॥ अपरे कृष्यमाणाश्च विचेष्टन्तो महीतले ।
भावान् बहुविधांश्चक्रुस्ताडिताः शरतोमरैः ॥ २१ ॥ नरास्तु निहता भूमौ कूजन्त
स्तत्र मारिष । दृष्ट्वा च बान्धवानन्ये पितृनन्ये पितामहान् ॥ २२ ॥ धावमानान्
परांश्चान्यान् दृष्ट्वान्ये तत्र भारत । ख्यापयाने गोत्रनामानि शशंसुरितरेतरम् ॥ २३ ॥
तेषां छिन्ना महाराज भुजाः कनकभूषणाः।उद्वेष्टन्ते विचेष्टन्ते पतन्ति चोत्पतन्ति च॥२४
निपतन्ति तथैवान्ये स्फुरन्ति च सहस्रशः।वेगांश्चान्ये रणे चक्रुःपञ्चास्यां इव पन्नगाः
॥ २५ ॥ ते भुजा भोगिभोगाभाश्चन्दनाक्ता विशाम्पते । लोहितार्द्रा भृशं रेजुस्तपनी

। १८ । और बहुतेरे सिंहों के समान शब्दोंको गर्जे बहुतसे घूमने लगे । १९ । और बहुतसे हाथी पुकारे और सुनहरी सामानों से अलंकृत घोड़े बाणों से मारेहुये बैठगये और मृतक माप होकर दशोंदिशाओं में घूमनेलगे।२०। बाण वा तोमरों से घायल चेष्टाओंको करतेहुये बहुतसे हाथी घूमने लगे और अनेक हाथियों ने नाना प्रकार की चेष्टाओं को किया । २१ । हे श्रेष्ठ भरतवंशी वहां मनुष्य घायल होकर पृथ्वीपर शब्द करनेलगे और बहुतसे लोग भाई बन्धु पिता और पितामहादिकों को देखकर । २२ । किसी ने दौड़तेहुये शत्रुओंको देखकर गोत्रनामोंसमेत अपनीजातों को वर्णन किया । २३ । हे महाराज उनलोगोंके स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत भुजदण्ड टूटेहुये हाथ पैरोंमें चेष्टा करकर छिपटते थे और उछलतेथे ।२४। इसीप्रकार बहुतसी भुजा उछलकर अनेक चेष्टा करतीथीं और हजारों ऊपर नीचे होकर अपूर्व चेष्टा करती थीं और किसी भुजाओं नें पांचमुख रखनेवाले सर्पकी समान युद्ध में बहुतसा वेगकिया । २५ । हे राजा सर्पों के फणों के

looked like mountains on fire. Others, huge like hills, wounded by tusks, looked like winged mountains and were destroyed. Others wounded by darts, fled from the field of battle and fell outside. Others roared like lions or roamed here and there. Many elephants shrieked, and horses with gold trappings were struck dead by arrows or fled in all directions. Wounded by arrows and tomars, many elephants moved in different directions. Men wounded there cried and called their kinsmen, fathers and grandfathers to help. Some seeing the enemy give way, announced their names and pedigree. Decked with ornaments, their severed arms and feet lay trembling on the ground and jumped there like five-headed snakes. 25. The bleeding arms, sandal-pasted, looked like the heads of serpents or like golden

यध्वजा इव ॥ २५ ॥ वर्त्तमाने तथा घोरे संकुले सर्वतो दिशम् । अविज्ञाताः स्म युध्यन्ते विनिघ्नन्तः परस्परम् ॥ २७ ॥ भौमेन रजसाकीर्णे शस्त्रसंपातसंकुले । नैव स्वेन परे राजन् व्यज्ञायन्त तमोवृताः ॥ २८ ॥ तथा तदभवद्युद्धं घोररूपं भयानकम् । शोणितोदा महानद्यः प्रसस्रुस्तत्र चासकृत् ॥ २९ ॥ शीर्षपाषाणसंछन्नाः केशशैवलशाद्वलाः । अस्थिमीनसमाकीर्णा धनुःशरगदोडुपाः ॥ ३० ॥ मांसशोणितपङ्किन्यो घोररूपाः सुदारुणाः । नदीः प्रावर्त्तयामासुः शोणितौघप्रवर्त्तिनीः ॥ ३१॥ भीरुवित्रासकारिण्यः शूराणां हर्षवर्द्धनाः । ता नद्यो घोररूपास्तु नयन्त्यो यमसादनम् । अवगाढान्मज्जयन्तः क्षत्रस्याजनयन् भयम् ॥ ३२ ॥ क्रव्यादानां नरव्याघ्र नर्दतां तत्र तत्र ह । घोरमायोधनं जज्ञे प्रेतराजपुरो

समान चन्दनसे लिप्त रुधिर से भरीहुई वह सवभुजा स्वर्णमयी ध्वजाके समान वहुत शोभायमान हुई । २७ । इसरीति से दशोंदिशाओं में घोपसंकुलनाम घोरयुद्ध होनेपर अज्ञातरूप परस्पर में युद्ध करनेवाले हुये । २८ । और धूलसे संयुक्त शस्त्रों के आघातों से व्याकुल युद्धमें अँधेरे होनेके कारण अपने और पराये नहीं जानेगये इसरीतिसे वह युद्ध महाघोर रूप और भयानक हुआ वहां रुधिररूप जल रखने वाली वड़ी नादियां वहनिकलीं । २९ । वह नादियां शिररूप पत्थरों से युक्त केशरूप शैवल और शाद्वलरखने वाली अस्थिरूप मछलियों से पूर्ण धनुपवाण और गदारूपी नौका रखने वाली । ३० । मांस रुधिररूपी कीच से भरी हुई घोररूप वड़ी भयानक रुधिररूप जल के वेगकी वढ़ाने वाली होकर वहने लगी । ३२ । भयभीतों के भयकी वढ़ाने वाली शूरवीरों की प्रसन्नता वढ़ाने वाली घोररूप वह नादियां यमलोक को पहुँचाने वाली होगई हे नरोत्तम वह नादियां भीतर जाने वालों को डुवाने वाली क्षत्रियों का भय वढ़ाने वाली हुई तहां मांस भक्षी जीवोंकी गर्जना करने से यह युद्ध भूमि घोररूप राजपुरी के समान होगई । ३३ । और चारोंओर से असंख्यों रुण्ड उठ

standards. Thus the battle became general. There were darkness, dust and confusion, and friends and foes were not distinguishable. The battle was dreadful and rivers of blood flowed, with heads for stones, hair for weeds, bones for fish and bows, arrows and maces for boats 30. Having flesh and blood for mire, the rivers of blood were dreadful to behold, causing fear to the timid and joy to the brave, leading to the region of Yam. They sunk those who entered them and fear to the warriors. With the hideous cries of the birds of prey, the battle field became dreadful to behold like the region of the F Headless bodies rose on all sides and beasts of prey, satisfied with flesh and blood, danced here and there. Lions, crows, vultures and here

पमम ॥ ३३ ॥ उत्थितान्यगणेयानि कवन्धानि समन्ततः ॥ ३४॥ नृत्यन्ति वै भूतगणाः सुतृप्ता मांसशोणितैः । पीत्वा च शोणितं तत्र वसां पीत्वा च भारत ॥ ३५ ॥ मेदो मज्जावसामत्ता स्तृप्ता मांसस्य चैव हि । धावमानाः स्म दृश्यन्ते काकगृध्रवकास्तथा ॥ ३६ ॥ शूरास्तु समरे राजन् भयं त्यक्त्वा सुदुस्त्यजम् । योधव्रतं समास्थाय चक्रुः कर्माण्यभीतवत् ॥ ३७ ॥ शरशक्तिसमाकीर्णे क्रव्यादगणसंकुले । व्यचरन्त रणे शूराः ख्यापयन्तः स्वपौरुषम् ॥ ३८ ॥ अन्योऽन्यं श्रावयन्ति स्म नामगोत्राणि भारत । पितृनामानि च रणे गोत्रनामानि चाभितः ॥ ३९ ॥ श्रावयाणाश्च बहवस्तत्र योधा विशाम्पते । अन्योऽन्यमवमृद्नन्तः शक्तितोमरपट्टिशैः ॥ ४० ॥ वर्त्तमाने तथा युद्धे घोररूपे सुदारुणे । व्यषीदत् कौरवी सेना भिन्ना नौरिव सागरे ॥ ४१ ॥

इतिश्री कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे द्वि पंचाशोऽध्यायः । ५२ ।

। ३४ । मांस और रुधिर से तृप्त होकर जीवोंके समूह नाचते थे हे भरतवंशी वहां रुधिर और मज्जाका भोजन करके । ३५ । मांस मज्जा और भेजों के खानेसे मत वाले सिंह काक गृध्र और बगलेभी दौडतेहुये दिखाई दिये । ३६ । शूरवीरों ने त्यागने अयोग्य भयकोभी त्यागकरके युद्धाभिलाषी होकर निर्भयलोगोंके समान युद्धमें कर्मोंको किया । ३७ । उस युद्ध में वह शूरलोग अपनी "वीरता" को प्रसिद्ध करते हुये भ्रमण करने लगे जो कि बाण और शक्तियोंसे युक्तहोकर मांस भक्षियों से व्याकुलथे । ३८ । हे समर्थ भरतवंशी उनलोगोंने परस्परमें गोत्रनामों समेत अपने पिताओंका भीनाम लिया । ३९ , हजारों ने तो अपने गोत्रादि और नामों को सुनाया और बहुत से युद्धकर्त्ता । ४० । इधर उधर से तोमर शक्ति और पट्टिशों के द्वारा परस्पर मे मर्दन करनेलगे इसरीति से घोररूप महाभयानक युद्धजारी होनेपर कौरवीसेना ऐसी पीडित हुई जैसे कि समुद्रमें टूटीहुई नौका डामाडोल होकर पीडित होती है । ४१ ।

---

ran at the heaps of flesh.36. Setting aside all fear, the warriors fought very bravely. They roamed in the field of battle and showed their prowess in the midst of arrows, darts and flesh eating animals. They announced their names and pedigree, while others discharged their weapons. When the battle was thus raging fiercely, the Kaurav army shook like a broken boat in the midst of a stormy sea. 41.

सञ्जय उवाच । वर्त्तमाने तथा युद्धे क्षत्रियाणां निमज्जने । गाण्डीवस्य महाघोषः
श्रूयते युधि मारिष ॥ १ ॥ संसप्तकानां कदनमकरोद्यत्र पाण्डवः कोशलानां तथा
राजन्नारायण बलस्य च ॥ २ ॥ संशप्तकास्तु समरे शरवृष्टिः समन्ततः । अपातयन्
पार्थ मूर्द्धनि जयगृद्धाः प्रमन्यवः ॥ ३ ॥ तां वृष्टिं सहसा राजं स्तरसा धारयन् प्रभुः ।
व्यगाहत रणे पार्थो विनिघ्नन्रथिनां वरान् ॥ ४ ॥ विगाह्य तु रथानीकं कङ्कपत्रैः शि
लाशितैः आससाद ततः पार्थः सुशर्माणं महारथम् ॥ ५ ॥ स तस्य शरवर्षाणि ववर्ष
रथिनां वरः । तथा संशप्तकाश्चैव पार्थं बाणैः समार्पयन् ॥ ६ ॥ सुशर्मा तु ततः पार्थं
विद्ध्वा दशभिराशुगैः । जनार्दनं त्रिभिर्बाणै रहनद्दक्षिणे भुजे । ततोऽपरेण भल्लेन
केतुं विव्याध मारिष ॥ ७ ॥ स वानरवरो राजन् विश्वकर्मकृतो महान् । ननाद सु
महानादं भीषयाणो जगर्ज च ॥ ८ ॥ कपेस्तु निनदं श्रुत्वा सन्त्रस्ता तव वाहिनी ।
भयं विपुलमाधाय निश्चेष्टा समपद्यत ॥ ९ ॥ ततः सा शुशुभे सेना निश्चेष्टा वस्थिता

अध्याय ॥ ५३ ॥

संजय बोले कि हे श्रेष्ठ इसरीति से क्षत्रियों के नाशकारी युद्ध के जारी होने पर युद्धमें गाण्डीव धनुषके बड़े शब्दसुनाई दिये हे राजा जहांपर कि पांडव अर्जुन ने संसप्तकों का वा कोशिल देशियों का और नारायण नाम सेनाका नाश किया । २ । वहां क्रोधयुक्त संसप्तकों ने युद्धमें चारोंओर से अर्ज्जुन के शिरपर बाणोंकी वर्षा करी । ३ । हे राजा रथियों में श्रेष्ठ वेगसे अकस्मात् उन बाणवर्षा को सहते और मारते हुये प्रभु अर्जुनने सेनाको बिलोडन किया । ४ । और अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों के द्वारा उस रथवाली सेनाके पारहोकर उत्तम शस्त्रधारी सुशर्माको सम्मुख पाया । ५ । तब उस श्रेष्ठरथी ने बाणोंकी वर्षा से उसको आच्छादित किया जैसे संसप्तकों ने बाणों की वर्षा से अर्ज्जुनको ढकाथा । ६ । इसके पीछे सुशर्मा ने शीघ्रगामी दशबाणों से अर्ज्जुन को और तीन उत्तम बाणों से श्रीकृष्ण चन्द्रजी को दाहिनी भुजापर छेदकर दूसरे भल्लसे ध्वजाकोभी विदीर्ण किया । ७ । हे राजा विश्वकर्माजी का उत्पन्न किया हुआ वानरोंमें श्रेष्ठ वह बड़ा वानर सबको भयभीत करके बड़े शब्दसे गर्जा । ८ । इस हनुमानजीके शब्दसे सुनकर आपकी

CHAPTER LIII

Sanjaya said, " When the battle, destructive to kshatryas, was thus raging on, fearful sounds of Gandiv bow were heard at the place where Arjun was destroying the Sansaptaks, Kosals and Narayans. The Sansaptaks discharged arrows at the head of Arjun. Bearing their hits and slaying, Arjun agitated the army and having crossed the cars by means of his sharp arrows, he found Susharma opposing him.5. He hid him with his arrows, while the Sansaptaks covered him with the shower of their arrows. Then Susharma wounded Arjun with ten arrows and Krishn with three and with another dart hit the

नृप । नानापुष्पसमाकीर्णं यथा चैत्ररथं वनम् ॥ १० ॥ प्रतिलभ्य ततः संज्ञां योधास्ते कुरुसत्तम । अर्जुनं सिषिचुर्बाणैः पर्वतं जलदा इव ॥ ११ ॥ परिवव्रुस्ततः सर्वे पाण्डवस्य महारथम् । निगृह्य तं प्रचक्रुशुर्वध्यमानाः शितैः शरैः ॥ १२ ॥ ते हयान्रथचक्रे च रथेषाश्चापि मारिष । निगृह्य बलवत् सर्वे सिंहनादमथोऽनदन् ॥ १३ ॥ अपरे जगृहुश्चैव केशवस्य महाभुजौ । पार्थमन्ये महाराज रथस्थं जगृहुर्मुदा ॥१४॥ केशवस्तु तदा बाहू विधुन्वन् रणमूर्द्धनि । पातयामास तान् सर्वान् दुष्टहस्तीव हस्तिपान् ॥ १५ ततः क्रुद्धो रणे पार्थः संवृतस्तैर्महारथैः । निगृहीतं रथं दृष्ट्वा केशवञ्चाप्यभिद्रुतम् । रथारूढांश्च सुबहून् पदातींश्चाप्यपातयत् । १७ ॥ आसन्नांश्च तथा योधान् शरैरासन्न

सेना महाभयभीत हुई और अत्यन्त भयभीत होकर चेष्टारहित होगई । ९ । इसके पीछे हे राजा वह सेना निश्चेष्ट होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नानाप्रकार के फूलों से युक्त चैत्ररथ बनहोता है ।१०। हे कौरव्य इसके पीछे उन युद्धकर्त्ताओं ने सावधान होकर अर्जुनको बाणों से ऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि पर्व्वत को बादल आच्छादित करदेते हैं । ११ । इसके पीछे सबने अर्जुन के बड़े रथको घेरलिया उसको घेरके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल करके पुकारनेलगे । १२ । हे श्रेष्ठ इसके पीछे वह सब क्रोधयुक्त रथकेचारोंओर होकररथकेचक्र और ईशाके भीपकड़ेन को पासगये वह हजारोंशूरवीर उसकेउसरथकेओरसब साथियोंकोपकड़करसिंहनाद करनेलगे।१३।और कितनोंहीने केशवजीकिभीभुजाको पकड़लियाऔर पकड़ने बहुतोंने रथमें सवार अर्जुनको पकड़लिया । १४ । इसकेपीछे दोनों भुजाओंको कंपायमान करतेहुये केशवजीने उन सब को ऐसे गिरादिया जैसे कि मतवाला हाथी हाथी के सवारों को गिरादेता है । १५ । इसके पीछे उन महारथियों से घिरे हुये क्रोधयुक्त अर्ज्जुन ने युद्धमें उस पकड़े हुये रथको देख और श्रीकृष्णजी को भी पकड़ा हुआ जानकर बहुतसे रथ सवारों समेत पदातियों को गिराया १६ उसीप्रकार समीप वर्त्तमान शूरवीरोंको समीपहीसे मारे बाणों के ढकादिया और केशवजी से कहने लगा । १७ । हे महाराज श्रीकृष्णजी भयकारी कर्म करने

standard. Made by Vishwakarma, the best of monkeys on the standard, cried with a tremendous roar. Your army was much terrified at the sound and lost senses, looking like the forest of Chitrarath, overgrown with various flowers. 10. Then coming to consciousness, they covered Arjun with arrows and surrounded his car like clouds round a hill. They cried all round his car. They held the car by its various parts and roared like lions. Some held Keshav by the arm and others took hold of Arjun. Then Keshav shaking both his arms, set himself free, making them fall down as one mad elephant throws another down. 15. Surrounded by those warriors, enraged

चेतधिभिः । छादयमास समरे केशवञ्चेदमब्रवीत् ॥ १७ ॥ पश्य कृष्ण महाबाहो संश
सकगणान् बहून् । कुर्वाणान् दारुणं कर्म वध्यमानान् सहस्रशः ॥ १८ ॥ रथबन्धमिमं
घोरं पृथिव्यां नास्ति कश्चन । यः सहेत पुमांल्लोके मदन्यो यदुपुङ्गव ॥ १९ ॥ इत्येवमु
क्त्वा बभित्स देवदत्तमथाधमत् । पाञ्चजन्यञ्च कृष्णोपि पूरयन्निव रोदसी ॥ २० ॥
तन्तु शङ्खस्वनं श्रुत्वा संशप्तकवरूथिनी । सञ्चाल महाराज वित्रस्ता चाभवद्भृशम
॥ २१ ॥ पादबन्धं ततश्चक्र पाण्डवः परवीरहा । नागमस्त्रं महाराज संप्रोदीर्य्य मुहुर्मुहुः
॥ २२ ॥ ते बद्धाः पादबन्धेन पाण्डवेन महात्मना । निश्चेष्टाश्चाभवन्राजन् अश्मसार
मया इव ॥ २३ ॥ निश्चेष्टांस्तु ततो योधानवधीत् पांडु नन्दनः । यथेन्द्रः समरे दैत्यां
स्तारकस्य वधे पुरा ॥ २४ ॥ ते वध्यमानाः समरे मुमुचुस्तं रथोत्तमम । अयु
धानि च सर्वाणि विस्रष्टुमुपचक्रमुः ॥ २५ ॥ ते बद्धः पादबन्धेन नेकुश्चेष्टितु

वाले शरीरसे घायल हजारों संसप्तकों को देखो । १८ । यह रथोंकी बँधावट महा घोर है और पृथ्वीपर मेरे सिवाय ऐसा कोई नहीं है जो नरलोक में इसबंधनको सहै । १९ । अर्ज्जुन ने ऐसा कहकर अपने देवदत्त शङ्खको बजाया और पृथ्वी आकाशादिको व्याप्तकरके श्रीकृष्णजी ने भी पांचजन्य शङ्खको बजाया । २० । हे महाराज उस शङ्खके शब्दको सुनकर संसप्तकोंकी सेना महाकंपितहुई और भयभीत होकर भागी । २१ । इसके पीछे शत्रुविजयी अर्जुनने वारम्वार नागास्त्र को प्रकट करके उनके चरणोंको बांधदिया । २२ । हे राजा महात्मा अर्जुनके बंधनसे चरणों में बँधेहुये वह लोग लोहेकी मूर्त्तिके समान निश्चेष्ट खड़ेरहगये । २३ । इसके पीछे उन निश्चेष्ट मनुष्योंको पाण्डुनन्दनने ऐसे मारा जैसे कि पूर्वसमय में तारक असुर के मारनेवाले युद्धमें इन्द्रने दैत्योंको माराथा । २४ । युद्धमें घायल होकर उनलोगों ने अर्जुनके उत्तम रथको छोड़दिया और शस्त्रोंका मारना प्रारंभकिया । २५ । है

Arjun seeing himself and Krishn caught hold of covered the enemies standing by with his arrows and said to Krishn, "Look at the Sansaptak warriors of whom thousands are wounded. The joints of our car are unusually strong. None except me can hold it." Having said this, Arjun blew his conch named Devdatta. Shree Krishn blew *Panchjanya. The armies of Sansaptaks shook at the sound and fled in* terror. Then Arjun the conqueror of foes discharged nagastra which held them by their feet. They stood like iron statues and Arjun slew them as Indra had done the Daityas in the war of Tarak. Wounded *in battle, they left Arjun's car and began hurling their weapons at him.* Being held by their legs, they could no longer move, and Arjun began slaying them with their arrows. Being held fast by serpents, they

नृप । ततस्तानवधीत् पार्थः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ २६ ॥ सर्वेयोधा हि समरे भुजगै र्वेष्टिताभवन् । यानुद्दिश्य रणे पार्थः पादबन्धं चकार ह ॥ २७ ततः सुशर्मा राजेन्द्र गृहीतां वीक्ष्य वाहिनीम् । सौपर्णमस्त्रं त्वरितः प्रादुश्चक्रे महारथः ॥ २८ ॥ ततः सुपर्णाः संपेतुर्भक्षयन्तो भुजङ्गमान् । ते वै विदुद्रुवुर्नागा दृष्ट्वा तान् खचरान्नृप ॥ २९ ॥ बभौ बलं तद्विमुक्तं पादबन्धाद्विशाम्पते । मेघवृन्दाद्यथा मुक्तो भास्करस्तापयन् प्रजाः ॥ ३० ॥ विप्रमुक्तास्तु ते योधाः फाल्गुनस्य रथं प्रति । ससृजुर्बाण सङ्घांश्च शस्त्रसङ्घांश्च मारिष । विविधानि च शस्त्राणि प्रत्यविध्यन्त सर्वशः ॥ ३१ तां महास्त्रमयीं वृष्टिं संछिद्य शरवृष्टिभिः । न्यवधीच्च ततो योधान् वासविः परवीरहा ॥ ३२ ॥ सुशर्मा तु ततो राजन् बाणेनानतपर्वणा । अर्जुनं हृदये विध्वा विव्याधान्यैस्त्रिभिः शरैः ॥ ३३ ॥ स गाढ़विद्धो व्यथितो रथोपस्थ उपाविशत् । तत उच्चुक्रुशुः सर्वे हतः पार्थ इति स्म ह ॥ ३४ ॥ ततः शङ्खनिनादाश्च भेरीशब्दाश्च पुष्क

राजा चरण बंधनके कारण से वह लोग हिलचलभी न सके इसके पीछे अर्ज्जुनने टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे उनको मारा । २६ । युद्धमें वहसब शूरवीर लोग सर्पोंसे बँधे-हुये खड़ेरहगये जिनको कि अर्ज्जुनने लक्षकरके चरणोंका बन्धन किया । २७ । हे राजा इसके पीछे महारथी सुशर्मानेंबँधी हुई सेनाको देखकर शीघ्रही गरुड़ास्त्रको प्रकट किया । २८ । तब तोबहुत से गरुड़ सर्पोंको भक्षण करने को दौड़े और वह सर्पउन गरुड़ोंको देखकरभागे । २९ । फिर चरण बंधनोंसे छूटीहुई वह सेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि सब सृष्टि के संतप्तकरने वाले सूर्य्य बादलोंसे रहित होकर शोभित होते हैं । ३० । इसके पीछे उनबंधनोंसे छूटेहुये शूरवीरोंने अर्जुनके रथपर बाण और शस्त्रोंके समूहोंको छोड़ा और सबने नानाप्रकार के अस्त्रोंको चलाया । ३१ । तब तो इन्द्रपुत्र महावीर अर्जुनने उनलोगोंको बाणोंकी वर्षासे ढककर युद्धकर्त्ताओं को मारा । ३२ । इसके पीछे सुशर्माने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे अर्ज्जुनको हृदयमें घायलकरके दूसरे तीन बाणोंसे पीड़ित किया । ३३ । तब वह अत्यन्त घायल और पीड़ामान होकर रथके बैठनेके स्थानपर बैठगया इस के पीछे सबोंने पुकारकरी कि अर्जुन मारागया । ३४ । इसके पीछे शङ्ख भेरी

stood in the field of battle. Then brave Susharma, seeing the army so captivated, discharged *Garurastra*. Then many garurs rushed on to seize the serpents. The snakes slunk away at the sight of those garurs. Freed from captivity, they looked glorious like the Sun freed from clouds.30. Then they discharged arrows and other weapons over Arjun. Arjun covered them with the shower of his arrows and slew them. Susharma wounded Arjun in the breast with three arrows and he sat down with pain on his seat in the car, the warriors crying out, "Arjun is slain." Then the musical instruments were sounded and the warriors roared.35. Then Arjun the possessor of

का: । नानावादित्र निनादाः सिंहनादाश्च जज्ञिरे ॥ ३५ ॥ प्रतिलभ्य ततः संज्ञां श्वेताश्वः कृष्णसारथिः । ऐन्द्रमस्त्रममेयात्मा प्रादुश्चक्रे त्वरान्वितः ॥ ३६ ॥ ततो बाणसहस्राणि समुत्पन्नानि मारिष । सर्वदिक्षु व्यदृश्यन्त सूदयन्ति नृपद्विपान् ॥ ३७ ॥ हयान्रथांश्च समरे शस्त्रैः शतसहस्रशः ॥ ३८ ॥ संशप्तकगणानाञ्च गोपालानाञ्च भारत । न हि तत्र पुमान् कश्चिद्योऽर्जुनं प्रत्ययुध्यत ॥ ३९ ॥ पश्यतां तत्र वीराणामहन्यत बलं तव । हन्यमानमपश्यंश्च निश्चेष्टोऽस्मि पराक्रमे ॥ ४० ॥ अयुतं तत्र योधानां हत्वा पाण्डुसुतो रणे । व्यभ्राजत महाराज विधूमोऽग्निरिव ज्वलन् ॥ ४१ ॥ चतुर्दश सहस्राणि यानि शिष्टानि भारत । रथानामयुतञ्चैव त्रिसाहस्राश्च दन्तिनः ॥ ४२ ॥ ततः संशप्तका भूयः परिववुर्धनञ्जयम् मर्तव्यमिति निश्चित्य जयं वापि निवर्तनम् ॥ ४३ ॥ तत्र युद्धं महच्चासीत्तावकानां विशाम्पते । शूरेण बलिना सार्द्धं पाण्डवेन किरीटिना ॥ ४४ ॥

इतिश्री कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे द्वि पंचाशोऽध्यायः । ५४ ।

आदि बाजोंके शब्द और सिंहनाद उत्पन्न हुये । ३५ । फिर श्वेतघोड़ों से युक्त श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले बड़े साहसी शीघ्रतासे युक्त अर्जुन ने .. होकर ऐन्द्रास्त्रको प्रकटकिया । ३६ । हे श्रेष्ठ उस ऐन्द्रास्त्र से हजारों बाण उत्पन्न हुये और सब दिशाओं में दिखाईदिये । ३७ । और युद्ध में आपके हजारों रथ घोड़े और हाथियों को शस्त्रों से मारा । ३८ । संसप्तक और गोपालों के समूहों को बड़ा भय उत्पन्न हुआ ऐसा कोई मनुष्यनथा और न रहाजोअर्जुनकोमारता३९ सब वीरों के देखतेहुये आपकी सेना मारीगईवहां पाण्डव अर्जुन सेनाको आपके और पराक्रम से थकित देखता हुआ युद्धमें दशहजार शूरवीरों को मारकर निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुआ । ४१ । हे भरतवंशी महाराज परीक्षा करी हुई चौदह सहस्र सेना और तीन हजार हाथियों समेत दश हजार रथों से संसप्तकों ने फिर अर्जुन को आ घेरा और यह विचार ठानलिया .. चाहै विजयहोय वा पराजहोय युद्धमें लड़कर मरना योग्यहै । ४३ । ऐसा . आपके शूरवीरों का और अर्जुनका महाघोर युद्धहुआ । ४४ ।

white horses, which were driven by Shri. Krishn, regaining consciousness, discharged Aindrastra from which appeared thousands of arrows in all directions and slew thousands of car warriors, horsemen and elephant riders. The Sansaptaks and Gopals were terrified and there was none who could withstand Arjun. Your army was slain in presence of all the warriors. Seeing the army slain and tired, and having slain ten thousands of warriors, Arjun looked glorious like smokeless fire.41. Then fourteen thousands of experienced warriors, with three thousands of elephants and ten thousands of car-warriors of the Sansaptaks again surrounded Arjun and were resolved to die fighting for victory or defeat. Then the battle between warriors and Arjun was very severe.44.

सञ्जय उवाच । कृतवर्मा कृपो द्रौणिः सूतपुत्रश्च मारिष । उलूकः सौबलश्चैव राजा च सह सोदरैः ॥ १ ॥ सीदमानां चमूंदृष्ट्वा पाण्डुपुत्रभयार्दिताम् । समुज्जहार वेगेन भिन्नां नावमिवार्णवे ॥ २ ॥ ततो युद्धमतीवासीन्मुहूर्त्तमिव भारत । भीरूणां त्रासजननं शूराणां हर्षवर्द्धनम् ॥ ३ ॥ कृपेण शरवर्षाणि प्रतिमुक्तानि संयुगे । सृञ्जयांश्छादयामासुः शलभानां व्रजा इव ॥ ४ ॥ शिखण्डीच ततः क्रुद्धो गौतमं त्वरितोऽययौ । ववर्ष शरवर्षाणि समन्ताद्द्विजपुङ्गवम् ॥ ५ ॥ कृपस्तु शरवर्षन्तन्निहत्य महास्त्रवित् । शिखण्डिनं रणे क्रुद्धो विव्याध दशभिः शरैः ॥ ६ ॥ ततः शिखण्डी कुपितः शरैः सप्तभिराहवे । कृपं विव्याध सुभृशं कङ्कपत्रैरजिह्मगैः ॥ ७ ॥ ततः कृपः शरैस्तीक्ष्णैः सोऽतिविद्धो महारथः । व्यश्वसूतरथं चक्रे शिख

अध्याय ५४ ॥

संजयबोले हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र कृतवर्मा कृपाचार्य्य अश्वथामा, कर्ण, उलूक शकुनि, और अपने निजभाइयों समेत राजा दुर्योधनने । १। अर्जुन के भयसे पीड़ामान सेनाको देखकर बड़ेवेग से उनको ऐसे छुटाया जैसे समुद्रमें से टूटीहुई नौका को निकालतेहैं । २ । हे भरतवंशी इसके अनन्तर एक मुहूर्त तक वह कठिन युद्ध रहा जो भयभीतोंको भय और शूरवीरों की प्रसन्नता कावढ़ाने वाला था ।३। युद्धमें कृपाचार्य्य के छोड़े हुये टीड़ियों के समूहों के समान बाणोंने सृंजियों को ढकदिया । ४ । इसके पीछे बहुत शीघ्रतासे शिखंडी कृपाचार्य्यके सम्मुखगया और चारोंओर से उन श्रेष्ठब्राह्मण कृपाचार्य्यके ऊपरबाणों को बरसाया। ५ । फिर महाअस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य्य ने क्रोधयुक्त होकर उन बाणोंके समूहों को हटाकर युद्धमें शिखंडी को दशबाणों से पीड़ितकिया । ६ । फिर शिखंडी ने भी क्रोध युक्त होकर कंकपत्रसे जुटित शीघ्रगामी सातबाणों से उन क्रोधरूप कृपाचार्य्य को पीड़ामान किया । ७ । उसके पीछे उत्तमहारथी कृपाचार्य्यजी ने तीक्ष्ण बाणों से शिखंडीको रथ और सारथीसे रहित करदिया ।८। इसकेपीछे महारथी शिखंडी मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर अच्छे प्रकार से ढाल तलवारको लेकर शीघ्र

CHAPTER LIV

Sanjaya said, "Kritvarma, Kripacharya, Ashwathama, Karan, Uluk, Shakuni and Duryodhan with his brothers, seeing their army afflicted by Arjun rescued them like a broken boat. Then the battle was severe, terrifying to the timid and pleasing to the brave. The arrows discharged by Kripacharya, like the flights of locusts, hid the Srinjayas. Then Shikhandi faced Krip and showered his arrows over him. Kripacharya, much enraged, checked his shower of arrows and wounded him with ten arrows. Shikhandi too, wounded him with seven arrows. With his sharp arrows he destroyed Shikhandi's horses, and driver. Shikhandi jumped down from the car and faced the

विहनमयो द्विजः ॥ ८ ॥ हुताश्यात्तु ततो यानादवप्लुत्य महारथः । खड्गचर्म तथा गृह्यसत्वरं ब्राह्मणं ययौ ॥ ९ ॥ तमापतन्तं सहसा शरैः सन्नतपर्वभिः । छादया मास समरे तदद्भुतमिवाभवत् ॥ १० ॥ तत्राद्भुतमपश्यामशिलानां प्लवनं यथा । निश्चेष्टो यद्रणे राजन् शिखण्डी समतिष्ठत ॥११॥ कृपेण छादितं दृष्ट्वा नृपोत्तम शिखण्डिनम् । प्रत्युद्ययौ कृपं तूर्णं धृष्टद्युम्नो महारथः ॥ १२ ॥ धृष्टद्युम्नं ततो यान्तं शारद्वत रथंप्रति । प्रतिजग्राह वेगेन कृतवर्मा महारथः ॥ १३ ॥ युधिष्ठिरमथायान्तं शारद्वतरथं प्रति । सपुत्रं सहसैन्यञ्च द्रोणपुत्रो न्यवारयत् ॥ १४ ॥ नकुलं सहदेवञ्च त्वरमाणौ महारथौ । प्रतिजग्राह ते पुत्रः शरवर्षेण वारयन् ॥ १५ ॥ भीमसेनं करूषांश्च कैकयान् सह सृञ्जयैः । कर्णो वैकर्त्तनो युद्धे वारयामास भारत । ॥ १६ ॥ शिखण्डिनस्ततो बाणान् कृपः शारद्वतो युधि । प्राहिणोत्त्वरया युक्तो दिधक्षुरिव मारिष ॥१७॥तान्शरान्प्रेषितांस्तेन समन्तात् स्वर्णभूषितान् । चिच्छेद

आचार्य्यजी के सम्मुखगया । ९ । तब आचार्य्यजी ने उस आतेहुये को टेढ़ेपर्व वाले बाणों से ढकदिया यह देखकर सबको आश्चर्यसा हुआ । १० । वहां पर वस्त्रों के अपूर्व आघातोंको ऐसा देखा जैसाकि शिलाओंका उछलना होताहै जब हे राजा शिखंडी निश्चेष्ट होकर युद्धमें नियत हुआ । ११ । तब श्रेष्ठ महारथी धृष्टद्युम्न उस कृपाचार्य्यके बाणों से ढकेहुये शिखंडीको देखकर शीघ्रही कृपाचार्य के सम्मुख गया । १२ । इसके पीछे महारथी कृतवर्माने कृपाचार्य्य के रथकी ओर जानेवाले धृष्टद्युम्न को बड़े वेगसे रोका । १३ । पीछे से कृपाचार्य्यके रथकी ओर पुत्र और सेना समेत आनेवाले युधिष्ठिरको अश्वत्थामा ने रोका ।१४ । की वर्षा करनेवाले आपके पुत्रों ने शीघ्रता करनेवाले महारथी नकुल और को रोका । १५ । हे भरतवंशी सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने युद्धमें भीमसेन को कैकय और सृंजयदेशियों को रोका । १६ । इसके पीछे शीघ्रता से दुःख भस्म ने के अभिलाषी शारद्वत कृपाचार्य्यने युद्धमें शिखंडी के ऊपरबाणोंकोचलाया फिर वारंवार खड्गको फिराते हुये शिखंडी ने उन कृपाचार्य्य के स्वर्णमयी ओरसे फेंके हुये बाणों को काटा । १८ । हे भरतवंशीफिर गौतम उसकी सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको बड़ी शीघ्रता पूर्वक शायकों से तोड़ा

acharya with sword and shield. The latter covered him with arro[ws] to the amazement of all. 10. Then we saw the weapons hurled the[re] like stones Seeing Saikhandi hard pressed by Kripacharya, Dhri[sh]tadyumna advanced to rescue him, but was checked by Kritvarm[a]. Ashwathama chased Yudhishthir and your brave sons checked Nak[ul] and Sahadev. 15. Karan checked Bhimsen and the warriors [of] Karushya, Kaikaya and Srinjaya. Kripacharya, wishing to destr[oy] Shikhandi, sent forth his arrows against him; but Shikhandi c[ut] them all down with the movement of his sword. Then Krip[a]

खड्गमाविध्य भ्रामयंश्च पुनः पुनः ॥ १८ ॥ शतचन्द्रं ततश्चर्म गौतमः पार्षतस्य ह । व्यधमत् सायकैस्तूर्णं तत उच्चुक्रुशुर्जनाः । १९ ॥ स विचर्मा महाराज खड्गपाणिरुपाद्रवत् । कृपस्य वशमापन्नो मृत्योरास्य मिवातुरः ॥ २० ॥ शारद्वत शरैर्ग्रस्तं क्लिश्यमानं महाबलम् । चित्रकेतुसुतो राजन् सुकेतुस्त्वरितो ययौ ॥ २१॥ विकिरन् ब्राह्मणं युद्धे बहुभिर्निशितैः शरैः । अभ्यापतदमेयात्मा गौतमस्य रथं प्रति ॥ २२ ॥ दृष्ट्वा विषक्तं तद्युद्धे ब्राह्मणं चरितव्रतम् । अपयात स्ततस्तूर्णं शिखण्डी राजसत्तम ॥ २३ ॥ सुकेतुस्तु ततो राजन् गौतमं नवभिः शरैः । विद्ध्वा विव्याध सप्तत्या पुनश्चैनं त्रिभिः शरैः ॥ २४ ॥ अथास्य सशरञ्चापं पुनश्चिच्छेद मारिष । सारथिञ्च शरेणास्य भृशं मर्मस्वताडयत् ॥ २५ ॥ गौतमस्तु ततः क्रुद्धो धनुर्गृह्य नवं दृढम् । सुकेतुं त्रिंशता बाणैः सर्वमर्मस्वताडयत् ॥ २६॥ स विह्वलितसर्वाङ्गः

इसहेतु से सब मनुष्य पुकारे । १९ फिर वह ढालसे रहित हाथमें खड्गलिये जैसे कि मृत्यु के मुखपर रोगी वर्त्तमान होता है वैसेही कृपाचार्य्य की स्वाधीनता में वर्त्तमान शिखण्डी उनके पासगया हे राजा चित्रकेतुका पुत्र बडापराक्रमी सुकेतु कृपाचार्य्य के बाणों से ढकेहुये महादुखी शिखंडी को देखकर शीघ्र ही सम्मुख गया । २१ । युद्धमें बडे तीक्ष्ण बाणों से ढकताहुआ महासाहसी सुकेतु कृपाचार्य्य के रथके समीपपहुँचा । २२ । हे राजाओंमें श्रेष्ठ इसके पीछे शिखंडी युद्ध में प्रवृत्त उस व्रतकरनेवाले ब्राह्मण को देखकर शीघ्रही हटगया । २३ । तदनन्तर सुकेतुने कृपाचार्य्यको नौ बाणों से व्यथित कर सत्तरबाणों से पीडामानकिया फिर दूसरी बारभी तीनबाणों से घायल किया । २४ । और उनके धनुषको बाणसमेत काटकर एक बाणसे उनके सारथी कोभी मर्मस्थल में कठिन घायल किया । २५ । इसके पीछे क्रोधयुक्त कृपाचार्य्य ने दृढ़ नवीन धनुष लेकर तीसबाणों से सुकेतु के सब मर्मस्थलों को घायल किया । २६ । तब वह अत्यन्त कम्पायमान और व्याकुल सुकेतु अपने उत्तम रथपर ऐसे चेष्टा करने वालाहुआ जैसे कि भूकम्प होनेमेंवृक्ष कांपताहै । २७ । तब उस कम्पायमान के शरीरसे प्रकाशित कुंडलों समेत शिरको

into pieces his shield bearing a hundred moons and the people cried out in dismay. Then Shikhandi stood with his sword like a sick man in the jaws of death. Suketu the son of Chitraketu, seeing Shikhandi covered with the arrows of Kripacharya, faced the latter, covering him with his sharp arrows. 22. Seeing the acharya engaged in fighting with another, Shikhandi removed himself from his presence. Suketu wounded Krip with seventy nine arrows and again with three, and having cut his bow and arrow, he wounded the driver *too*, in the vital parts. 25. Kripacharya took up another very hard bow and wounded Suketu with thirty arrows in the vital parts. Suketu

सञ्जय उवाच । द्रौणिर्युधिष्ठिरं दृष्ट्वा शैनेयेनाभिरक्षितम् । द्रौपदेयैस्तथा शूरै रभ्यवर्त्तत हृष्टवत् ॥ १ ॥ किरन्निषुगणान् घोरान् स्वर्णपुङ्खाञ्छिलाशितान् । दर्शयन् विविधान् मार्गान् शिक्षाश्च लघुहस्तवत् ॥ २ ॥ ततः स पूरयामास शरै र्दिव्यास्त्रमन्त्रितैः । युधिष्ठिरन्तु समरे पर्य्यवारयदस्त्रवित् ॥ ३ ॥ द्रौणायनि शरच्छन्नं न प्राज्ञायत किञ्चन । बाणभूतमभूतत् सर्वमायोधनशिरो महत् ॥ ४ ॥ बाणजालं दिविच्छन्नं स्वर्णजालविभूषितम् । शुशुभे भरतश्रेष्ठ वितानमिव विष्ठितम् ॥ ५ ॥ तेन छन्नं नभो राजन् बाणजालेन भास्वता । अभ्रच्छायेव सञ्जज्ञे बाण रुद्धे नभस्तले ॥ ६ ॥ तत्राश्चर्य्यमपश्याम बाणभूते तथाविधे । न स्म सम्पतते भूतं किञ्चिदेवान्तरीक्षगम् ॥ ७ ॥ सात्यकिर्यतमानस्तु धर्मराजश्च पाण्डवः तथेतराणि सैन्यानि न स्म चक्रुः पराक्रमम् ॥ ८ ॥ लाघवं द्रोणपुत्रस्य दृष्ट्वा तत्र

अध्याय ५५ ॥

संजयबोले कि सात्यकि और शूरवीर द्रौपदीके पुत्रोंसे रक्षित युधिष्ठिरको देखकर अश्वत्थामा जी प्रसन्न चित्तके समान सम्मुख वर्त्तमान हुये । १ । हस्तलाघवता के समान सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण घोर बाणोंको फेंकते और नाना प्रकार मार्गों समेत अपने अभ्यासों को दिखलातेहुये सम्मुख आये । २ । उसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने युद्धमें युधिष्ठिर को घेरकर दिव्य अस्त्रोंसे अभिमंत्रित बाणोंकी वर्षा के द्वारा आकाश को व्याप्तकिया । ३ । अश्वत्थामा के बाणोंसे आच्छादित आकाश में कुछनहीं जानागया और बड़ी युद्धभूमिका शिर बाणरूप होगया । ४ । हे भरतर्षभ आकाशमें सुवर्णजालों से अलंकृत और ढकाहुआ बाणजाल ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि नियत हुआ यज्ञ शोभित होताहै । ५ । उन प्रकाशित बाणजालों से जब आकाश ढकगया और बाणों केयुद्धमें आकाश मंडल में बादलों की छाया होगई । ६ । ऐसे बाणरूप जालों के होनेपर हमने एक आश्चर्य को देखा कि अन्तरिक्ष का उड़नेवाला कोई जीव नहींउड़ा । ७ । उपाय करनेवाले सात्यकि और पाण्डव धर्मराज समेत अन्य सेनाके शूरवीर लोग पराक्रम नहीं

CHAPTER LV

Sanjaya said, " Seeing Yudhishthir protected by Satyaki and the brave sons of Draupadi, Ashwathama cheerfully faced him. Discharging gold-feathered arrows and moving in different directions, he opposed Yudhishthir. Ashwathama surrounded Yudhishthir with arrows. Nothing except arrows was seen in the sky and over the field. The sky, full of gold-feathered arrows looked glorious like a well-arranged sacrifice.5. The arrows were spread through the sky like clouds, and no birds could be seen flying through the air. In spite of their exertions, Satyaki and Yudhishthir were powerless before him.

महारथाः । व्यस्मयन्त महाराज न चैनं प्रत्युदीक्षितुम् । शेकुस्तेसर्वराजान स्तपन्तमिव भास्करम् ॥ ९ ॥ वध्यमाने ततः सैन्ये द्रौपदेया महारथाः । सात्यकिर्धर्मराजश्च पाञ्चालाश्चापि सङ्गताः । त्यक्त्वा मृत्युभयं घोरं द्रौणायनि मुपाद्रवन् ॥ १० ॥ सात्यकिः सप्तविंशत्या द्रौणिं विध्वा शिलीमुखैः । पुनर्विव्याध नाराचैः सप्तभिः स्वर्ण भूषितैः ॥ ११ ॥ युधिष्ठिरस्त्रिसप्तत्या प्रतिविन्ध्यश्च सप्तभिः । श्रुतकर्मा त्रिभिर्बाणैः श्रुतकीर्तिश्च पञ्चभिः ॥ १२ ॥ सुतसोमस्तु नवभिः शतानीकश्च सप्तभिः । अन्ये च बहवः शूरा विव्यधुस्तं समन्ततः ॥ १३ ॥ स तु क्रुद्धस्ततो राजन्नाशीविष इवा श्वसन् । सात्यकिं पञ्चविंशत्या प्राविध्यत शिलाशितैः ॥ १४ ॥ श्रुतकीर्तिञ्च नवभिः सुतसोमञ्च पंचभिः । अष्टाभिः श्रुतकर्माणं प्रतिविन्ध्यं त्रिभिःशरैः ॥ १५ ॥ शतानीकंच नवभिर्धर्मपुत्रंच पंचभिः । अथेतरांस्ततः शूरान्द्वाभ्यांद्वाभ्यामताड़यत् । श्रुतकीर्तिस्तथ

करसके । ८ । हे महाराज वहां महारथी अश्वत्थामाकी हस्तलाघवता को देखकर आश्चर्य युक्त होकर वह सब राजालोग उसके सम्मुख देखनेको भी ऐसे समर्थ नहुये जैसे कि संतप्त करनेवाले सूर्य्यको कोई नहीं देखसक्ता है इसके पीछे सेनाके घायल होनेपर महारथी द्रौपदी के पुत्र सात्यकि धर्मराज और सब पांचाल देशी इकट्ठेहुये और घोर मृत्युके भयको त्यागकर अश्वत्थामा के सम्मुखगये । १० । सात्यकि ने शिलीमुखनाम सत्ताईस बाणोंसे अश्वत्थामा को छेदकर सुवर्ण से अलंकृत सातनाराचोंसे पीड़ामान किया । ११ । युधिष्ठिर ने तिहत्तर बाणों से प्रतिविन्ध्य ने सातबाणों से श्रुतकर्मा ने तीनबाणों से श्रुतकीर्ति ने सातबाणों से । १२ । सुतसोमने नौ बाणों से शतानीकने सात बाणों से और अन्य शूरोंनेभी चारों ओरसे घायलकिया १३ । हे राजा इसके पीछे उस क्रोधयुक्त विषैले सर्पके समान श्वासलेने वाले अश्वत्थामा ने शिलीमुखनाम पच्चीस बाणों से सात्यकिको घायलकिया । १४ । श्रुतकीर्ति को नौ बाणों से सुतसोमको पांचबाणों से श्रुतकर्मा को आठबाणों से प्रतिविन्ध्यको तीनबाणों से । १५ । शतानीकके नौबाणोंसे युधिष्ठिर को पांचबाणसे और इसीप्रकार अन्य शूरोंको दो दो बाणोंसे घायलकिया

The warriors wondered at the dxeterity of Ashwathama and none could look at him as at the burning Sun. When the army was thus wounded, the sons of Draupadi, with Satyaki, Yudhishthir and the Panchals, fearless of death, opposed Ashwathama, Having pierced him with twenty seven arrows, Satyaki wounded him with seven more decked with gold. Yudhisthir, Prativindhya, Shrutkarma, Sutsom and Shataink wounded Ashwathama with seventy three, seven, nine and seven arrows respectivety, and other warriors wounded him from all sides. Then Ashwathama, hissing like an enraged venomous serpent wounded Satyaki, Shrutkirti, Sutsom, Shrutkarma, Prativindhya, Shatanik and Yudhishthir with twenty five, nine, five, eight,

चापं चिच्छेद निशितैः शरैः ॥ १६ ॥ अथान्यद्धनुरादाय श्रुतकीर्तिर्महारथः । द्रौणायनिं
त्रिभिर्विद्ध्वा विव्याधान्यैः शितैः शरैः ॥ १७ ॥ ततो द्रौणिर्महाराज शरवर्षेण मारिष ।
छादयामासतत् सैन्यं समन्ताद्भरतर्षभ ॥१८॥ ततःपुनरमेयात्मा धर्मराजस्यकार्मुकम् ।
द्रौणिश्छिच्छेद विहसन् विव्याध च शरैस्त्रिभिः ततो धर्मसुतो राजन् प्रगृह्यान्यन्म
हद्धनुः । द्रौणिं विव्याध सप्तत्या बाह्वोरुरसि चैव ह ॥ २० ॥ सात्यकिस्तु ततः
क्रुद्धो द्रौणेः प्रहरतो रणे । अर्द्धचन्द्रेण तीक्ष्णेन धनुश्छित्वानदद्भृशम् ॥ २१ ॥ छिन्न
धन्वा ततो द्रौणिः शक्त्या शक्तिमतां वरः । सारथिं पातयामास शैनेयस्य रथाद्
द्रुतम् ॥ २२ ॥ अथान्यद्धनुरादाय द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । शैनेयं शरवर्षेण छादया
मास भारत ॥ २३ ॥ तस्याश्वाः प्रद्रुता संख्ये पातिते रथसारथौ । तत्र तत्रैव
धावन्तः समदृश्यन्त भारत ॥ २४ ॥ युधिष्ठिरपुरोगास्तु द्रौणिं शस्त्रभृतां वरम्

और तीक्ष्णधारवाले बाणसे श्रुतकीर्ति के धनुषको काटा। १६। इसके पीछे महारथी श्रुतकीर्ति ने दूसरे धनुषको लेकर अश्वत्थामा को तीन बाणोंसे छेदकर दूसरे तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ामान किया ।१७। हे भरतर्षभ महाराज धृतराष्ट्र इसके पीछे अश्वत्थामा ने बाणोंकी वर्षा से उस सेनाको चारोंओर से ढकदिया । १८ । तबतो महासाहसी हँसतेहुये अश्वत्थामाने धर्मराजके धनुषको फिर काटा और तीनबाणोंसे पीड़ामान किया।१९। हे राजा उसके पीछे धर्मपुत्रने दूसरे बड़े धनुषको लेकर अश्वत्थामाको सत्तरबाणोंसे पीड़ित किया और छाती समेत भुजाओंको घायलकिया । २० । तब सात्यकि युद्धमें प्रहार करने वाले अश्वत्थामाके धनुषको अपने तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाण से काटकर महाध्वनि सें गर्जा। २१ । इसके पीछे उस टूटे धनुषधारी शक्ति रखने वाले अश्वत्थामा ने शक्तिसे सात्यकि के रथसे बड़ी शीघ्रतापूर्वक सारथीको गिराया । २२ । तदन्तर प्रतापवान अश्वत्थामा ने दूसरे धनुषका लेकर सात्यकि को बाणों की वर्षा से ढकदिया । २३ । रथसे सारथी के गिरनेपर युद्धमें उसके घोड़े भागने लगे और जहां तहां भागतेहुये दिखाईदिये । २४ । फिर युधिष्ठिर के साथी शूर-

three, nine and five arrows respectively and other warriors with two arrows each. With a sharp arrow, he cut Shrut kirti's bow.16. The latter pierced Ashwathama with three arrows from another bow and then began discharging other arrows. Ashwathama hid the warriors with his sharp arrows, and with a smile cut Yudhishthir's bow again and wounded him with three. arrows. Yudhishthir took up another bow and wounded Ashwathama with seventy arrows on the arms and breast.20. Satyaki cut Ashwathama's bow with a sharp arrow and roared a mighty roar. With a spear, the latter killed the driver of Satyaki, and taking up another bow, hid him with arrows. His horses became unruly at the death of the drrvi.

पञ्चभिः पंचभिशरैः ॥१०॥ ततोऽपराभ्यां भल्लाभ्यां धनुषी समकृन्तत । यमयोः सहसा
राजन् विव्याध च त्रिसप्तभिः ॥ ११ ॥ तावन्ये धनुषी श्रेष्ठे शक्रचापनिभे शुभे । प्रगृह्य
रेजतुः शूरा देवपुत्रसमौ युधि ॥ १२ ॥ ततस्तौ रभसौ युद्धे भ्रातरौ भ्रातरं नृप ।
शरैर्ववर्षतुर्घोरैर्महामेघौ यथाचलम् ॥ १३ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज तव पुत्रो महारथः ।
पाण्डुपुत्रौ महेष्वासौ वारयामास पत्रिभिः । १४ ॥ धनुर्मण्डलमेवास्य दृश्यते युधि
भारत । सायकाश्चैव दृश्यन्ते निश्चरन्तः समन्ततः ॥१५॥ तस्य सायकसञ्छन्नौ चकाशाते
न पाण्डवौ । मेघच्छन्नौ यथा व्योम्नि चन्द्रसूर्यौ हृतप्रभौ ॥ १६ ॥ ते तु बाणा
महाराज हेमपुङ्खाः शिलाशिताः । आच्छादयन् दिशः सर्वाः सूर्यस्येवांशवस्तदा १७
बाणभूते ततस्तस्मिन् संछन्ने च नभस्तले । यमयोर्ददृशे रूपं कालान्तकयमोपमम्
॥ १८ ॥ पराक्रमन्तु तं दृष्ट्वा तव सूनोर्महारथाः । मृत्योरुपान्तिकं प्राप्तौ माद्रीपुत्रौ
स्म मेनिरे ॥ १९ ॥ ततः सेनापती राजन् पाण्डवस्य महारथः । पार्षतः प्रययौ तत्र

भरतवंशियों में और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ नकुल सहदेवको घायल करके दूसरे दोभल्लोंसे उन दोनोंके धनुषोंको भी अकस्मात् काटडाला और इक्कीस बाणोंसे घायलकिया । ११ । युद्धमें देवकुमारों के समान वह शूरवीर दूसरे इन्द्रधनुषके समान शुभधनुषोंको लेकर शोभायमानहुये । १२ । इसके पीछे युद्धमें वेगवान् वह दोनों भाई युद्धमें घोरबाणोंकी वर्षाभाई के ऊपर ऐसे करनेलगे जैसे कि दो बादल पर्वतपर वर्षाकरते हैं । १३ । हे महाराज तब तो आपके क्रोधयुक्त पुत्रने बड़े धनुषधारी दोनों पाण्डवों को अपने बाणोंसे रोका । १४ । उससमय दुर्योधन का धनुष युद्ध में मण्डलाकार दिखलाई देताथा और चारोंओरसे दौड़तेहुये सायक दृष्टपड़ते थे । १५ सब दिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि सूर्यकी किरणें संसार को व्याप्तकर देती हैं इसके अनन्तर आकाशमण्डल को बाणरूपी जालों से ढक जानेपर । १७ । नकुल और सहदेव के निमित्त उसकारूपकाल और मृत्युरूप यमराज के समान दिखाईपड़ा । १८ । महारथियों ने आपके पुत्रके उस पराक्रमको देख कर नकुल और सहदेव को मृत्युके गालमें फँसाहुआ माना । १९ । इसके पीछे

much enraged, wounded your son with twenty one and five arrows respectively. Duryodhan wounded them with five arrows each, cut their bows with two more and hid them again with twenty one arrows. Like the sons of gods in battle, they took up other strong bows and looked glorious. Then they showered their arrows over their cousin as two clouds shower rain over a mountain. Your son angrily checked them with his arrows. Duryodhan's bow moved in a circle and arrows sped from it all round, spreading like the rays of the Sun. Fighting with Nakul and Sahadev he looked like Death himself. 18. Those who saw his prowess, took Nakul and Sahadev for dead. Then Dhrishtadyumn the brave commander of the Pandav

यत्र राजा कुरूत्तमः ॥ २ ॥ माद्रीपुत्रौ ततः शूरौ व्यतिक्रम्य महारथौ । धृष्टद्युम्नस्तव
सुतं वारयामास सायकैः ॥ २१ ॥ तमविध्यदमेयात्मा तव पुत्रोऽरिमर्दनः । पाञ्चाल्यं
पञ्चविंशत्या प्रहस्य पुरुषर्षभः ॥ २२ ॥ ततः पुनरमेयात्मा तव पुत्रोऽप्यमर्षणः । विद्ध्वा
ननाद पाञ्चाल्यं षष्ट्या पञ्चभिरेव च ॥२३॥ अथास्य सशरं चापं हस्तावापञ्च मारिष
क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन राजा चिच्छेद संयुगे ॥ २४ ॥ तदपास्य धनुश्छिन्नं पाञ्चाल्यः शत्रु
कर्षणः । अन्यदादत्त वेगेन धनुर्भारसहं नवम् ॥ २५ ॥ प्रज्वलन्निव वेगेन संरम्भा
द्रुधिरेक्षणः । अशोभत महेष्वासो धृष्टद्युम्नः कृतव्रणः । २६ ॥ स पञ्चदश नाराचान्
श्वसतः पन्नगानिव । जिघांसुर्भरतश्रेष्ठ धृष्टद्युम्नो व्यवासृजत् ॥ २७ ॥ ते वर्म भे
त्वाशु छित्वा राज्ञः शिलाशिताः विविशुर्वसुधां वेगात् कङ्कबर्हिणवाससः ॥ २८ ॥
सोऽतिविद्धो महाराज पुत्रस्तेऽति व्यराजत । वसन्तकाले सुमहान् सपुष्प इव किंशुकः २९
स भिन्नवर्मा नाराचैः प्रहारैर्जर्जरीकृतः । धृष्टद्युम्नस्य भल्लेन क्रुद्धश्चिच्छेद कार्मुकं ३०

पाण्डवोंका महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न वहांगया जहां कि राजा दुर्योधनथा २०। वहां जाकर महारथी शूरवीर नकुल और सहदेव को उल्लंघनकर धृष्टद्युम्नने आपके पुत्रको शायकों से रोका । २१ । तब आपके साहसी क्रोधयुक्त पुत्रने हँसकर धृष्टद्युम्न को पच्चीस बाणोंसे छेदकर पैंसठबाणों से घायलकर बड़े शब्दसे गर्जनाकरी । २३ । और फिर उसके बाण और हस्तत्राण समेत धनुषको अपने तीक्ष्णक्षुरप्रसे काटडाला २४ ।तब शत्रुविजयी धृष्टद्युम्नने उसटूटे धनुषको डालकर बड़े वेगसे बड़े भारवाहक नवीन धनुषको हाथमें लिया । २५ । और वेगसे लालनेत्र क्रोधयुक्त घायल हुआ धृष्टद्युम्न महाशोभायमान हुआ । २६ । फिर सर्पोंके समान श्वास लेनेवाले पन्द्रह नाराचों को मारनेके इच्छावान् धृष्टद्युम्नने राजादुर्योधनके ऊपर छोड़े । २७ । वह तीक्ष्णधार कंक और मोरपक्षीके परोंसे जटितबाण राजाके स्वर्णमयी कवचको काटकर पृथ्वीमें बड़े वेगसे समागये । २८ । फिर वह आपका पुत्र अत्यन्त घायलहोकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि वसन्तऋतुमें अच्छा प्रफुल्लित किंशुकवृक्ष होता है । २९ । नाराचोंसे टूटाकवच और प्रहारोंसे घायल शरीर २८ क्रोधयुक्त दुर्योधनने भल्लसे धृष्टद्युम्नके धनुषको काटा । ३० और बड़ी शीघ्रता-

armies approached Duryodhan and checked him with his arrows.21. Your courageous son, with a smile, hit his adversary with twenty five and sixty five arrows and roared loudly. Then he cut his bow and hand-guard. Dhrishtadyumn the destroyer of foes laid aside the broken bow and took up a new one. With eyes red in anger, wounded Dhrishtadyumn looked very glorious and discharged fifteen sharp arrows at Duryodhan. The arrows, fitted with Kank and peacock feathers, pierced the king's arrmour and entered the ground. Your son, wounded by them, looked glorious like a kinshuk tree in bloom. With broken armour and wounded

अथैनं छिन्नधन्वानं त्वरमाणो महीपतिः। सायकै र्दशभिः राजन्भ्रुवोर्मध्ये समार्पयत
॥ ३१ ॥ तस्यतेऽशोभयन् वक्त्रं कर्मारपरिमार्जिताः। प्रफुल्लं पङ्कजं यद्वद्भ्रमरा मधु
लिप्सवः ॥ ३२ ॥ तदपास्य धनुश्छिन्नं धृष्टद्युम्नो महामनाः। अन्यदादत्त वेगेन
धनुर्भल्लांश्च षोडश॥३३॥ ततो दुर्योधनस्याश्वान् हत्वा सूतञ्च पञ्चभिः धनुश्चिच्छेद
भल्लेन जातरूपपरिष्कृतम् ॥ ३४ ॥ रथं सोपस्करं छत्रं शक्तिं खड्गं गदां ध्वजम्
भल्लैश्चिच्छेद दशभिः पुत्रस्य तव पार्षतः॥ ३५ ॥ तपनीयाङ्गदं चित्रं नागं मणिमयं
शुभम्। ध्वजं कुरुपतेश्छिन्नं ददृशुः सर्वे पार्थिवाः ॥ ३६ ॥ दुर्योधनस्तु विरथं छिन्न
सर्वायुधं रणे। भ्रातरः पर्य्यरक्षन्त सोदरा भरतर्षभ ॥ ३७ ॥ तमारोप्य रथे राजन्
दण्डधारो नराधिपम् । अपोवाह रणादाशु धृष्टद्युम्नस्य पश्यतः ॥ ३८ ॥ कर्णस्तु
सात्यकिं जित्वा राज्यगृद्धी महाबलः। द्रोणहन्तारमुग्रेषुं ससाराभिमुखो रणे ॥ ३९ ॥

से टूटे धनुषवाले धृष्टद्युम्नको दश शायकोंसे दोनों भृकुटियों में घायल किया । ३१ । बड़े कारीगरके स्वच्छ कियेहुये नवबाणों ने उसके मुखको ऐसा शोभायमान किया जैसे कि मधुकेलोभी भ्रमर अच्छे फूलेहुये कमलको शोभित करते हैं । ३२ । फिर उस महासाहसी धृष्टद्युम्नने उस टूटेहुये धनुष को डालकर बड़े वेगसे सोलह भल्लों समेत दूसरे धनुषको लिया । ३३ । इसके पीछे पांचबाणों से दुर्योधन के सारथीसमेत घोड़ों को मारकर एक भल्लसे सुनहरी धनुष को काटा।३४। फिर धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र के रथ, उपस्कर, छत्र, शक्ति, खड्ग, गदा और ध्वजाको और दश भल्लों से काटा । ३५ । सब राजाओंने दुर्य्योधन की उस टूटीहुई ध्वजाको जो कि सुवर्णके बाजूबन्द रखनेवाली अपूर्व मणियों से जटित नाग चिह्नवाली अति शुभरूपकी थी देखा ।३६ हे भरतर्षभ फिर उस रथसे विहीन टूटे कवच और ध्वजावाले दुर्योधनको उसके निज भाइयोंने चारों ओरसे रक्षित किया । ३७ । हेराजा भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित राजा दण्डधारी दुर्योधन को रथपर बैठाकर धृष्टद्युम्नके देखतेहुये दूरलेगया ।३८। फिर राज्यका लोभी महाबली कर्ण सात्यकि को विजयकरके युद्धमें द्रोणाचार्य्यके मारने वाले उग्रबाणधारी धृष्टद्युम्नके सम्मुखगया । ३९ । फिर बाणोंको मारताहुआ सात्यकि उसके पीछे ऐसा

body, Duryodhan cut the bow of his adversary and quickly wounded him an the forehead with ten arrows. 31. The well-cleaned arrows made his face look glorious like a lotus flower sprinkled over with bees. Bravo Dhrishtadyumn laid asids the broken bow, and having slain his horses and driver with five arrows, cut his bow with one more. Then with ten arrows he cut the parts of his car, umbrella, spear, sword, mace and standard. 35. The warriors present there saw the broken standard of Duryodhan having the figure of an elephant on. His own brothers came to his protection. Dandadhar unconfusedly took the prince on his car and took him far away from the sight of

तंपृषतोऽभ्ययात्तूर्णं द्रोणघ्नो विशिखैश्शरैः । पार्श्वजघनोपान्ते विषाणाभ्यामिव द्विपाः ॥ ४० ॥ स भारत महानासीत् योधानां सुमहात्मनाम् । कर्णपार्षतयोर्मध्ये त्वदीयानां महारणः ॥ ४१ ॥ न पाण्डवानां नास्माकं योधः कश्चित् पराङ्मुखः ॥ प्रत्यदृश्यत यत् कर्णः पाञ्चालांस्त्वरितो ययौ ॥ ४२ ॥ तस्मिन्क्षणे नरश्रेष्ठ गजवाजिजनक्षयः । प्रादुरासीदुभयतो राजन्मध्यगतेऽहनि ॥ ४३ ॥ पाञ्चालास्तु महाराज त्वरिता विजिगीषवः । ते सर्वेऽभ्यद्रवन् कर्णं पतत्रिण इव द्रुमम् ॥ ४४ ॥ तांस्तथाधिरथिः क्रुद्धो यतमानान्मनस्विनः । विचिन्वन्निव बाणाग्रैः समासादयदग्रतः ॥ ४५ ॥ व्याघ्रकेतुं सुशर्माणं चित्रं चोग्रायुधं जयम् । शुक्लञ्च रोचमानञ्च सिंहसेनञ्च दुर्जयम् ॥ ४६ ॥ ते वीरा रथवेगेन परिवव्रुर्नरोत्तमम् । सृजन्तं सायकान् क्रुद्धं कर्णमाहव शोभिनम् ॥ ४७ ॥ युध्यमानांस्तु तान् शूरान् मनुजेन्द्रः प्रतापवान् । अष्टाभिरष्टौ राधेयोऽभ्यर्दय

शीघ्रचला जैसेकि हाथीको हाथी दांतोंसे जंघास्स्थानमें पीड़ामान करताहुआ जाताहै । ४० । हे भरतवंशी बड़े महात्मा आपके शूरवीरोंका वह महाघोर युद्ध कर्ण और धृष्टद्युम्न के मध्यमें ऐसा उत्तम हुआ । ४१ । कि जिसमें पाण्डवों के और हमारी ओरके किसी पुरुषने भी मुखको न मोड़ा इसके पीछे बड़ी शीघ्रता से, कर्ण पांचालों से युद्ध करनेलगा । ४२ । हे नरोत्तम राजा धृतराष्ट्र मध्याह्न के समय घोड़े हाथी मनुष्यों का विध्वंसन दोनों ओरमें हुआ । ४३ । फिर विजयाभिलाषी वह सब पांचाल शीघ्रतासे कर्णके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि वृक्षकी ओर पक्षी जाते हैं । ४४ । इसरीति से क्रोधयुक्त बाणसमूहों से रोकतेहुये अधिरथी कर्ण ने उन उपाय करनेवाले साहसी सेनापति से मिले हुये । ४५ । व्याघ्र केतु सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्ल, रोचमान, सिंहसेन और दुर्जयको सम्मुखपाया । ४६ । उनवीरों ने उस नरोत्तमको रथमार्गसे घेरलिया जोकि बाणोंका छोड़नेवाला क्रोधयुक्त होकर युद्धमें शोभादेनेवाला था । ४७ । उस प्रतापी कर्ण ने उन दूरसे युद्धकरनेवाले आठोंवीरोंको तीक्ष्णधारवाले

Dhrishtadyumn. Karan desirous of obtaining the kingdom, having conquered Satyaki, faced Dhrishtadyumn the slayer of Drona and wounded him with arrows as one elephant wounds another with tusks on the thighs. 40. The battle between those two warriors was such that none of the warriors of the two sides turned back. Then Karan began fighting with the Panchals. Horses, elephants and men were destroyed at midday. The Panchals, desirous of conquest, went eagerly towards Karan as birds fall on a tree. Checking their arrows valiant Karan found Vyaghraketu, Susharma, Chitra, Ugrayudh, Jaya, Shukl, Rochman, Sinhasen and Durjaya face to face with him-self. They surrounded the enraged warrior who looked glorious while discharging his arrows at the foe. He wounded them with eight arrows and slew thousands of skilful warriors. Then, in anger, he

शितैः शरैः ॥ ४८ ॥ अथापरान् महाराज सूतपुत्रः प्रतापवान् । जघान बहुसाहस्रान् योधान् युद्धविशारदान् ॥ ४९ ॥ जिष्णुञ्च जिष्णुकर्माणं देवापिं भद्रमेव च । दण्डञ्च राजन् समरे चित्रं चित्रायुधं हरिम् ॥ ५० ॥ सिंहकेतुं रोचमानं शलभञ्च महारथम् । निजघान सुसंक्रुद्धः चेदीनाञ्च महारथान् ॥ ५१ ॥ तेषामाददतः प्राणानासीदाधिरथेर्वपुः । शोणिताभ्युक्षिताङ्गस्य रुद्रस्येवोर्जितं महत् ॥५२॥ तत्र भारत कर्णेन मातङ्गास्ताडिताः शरैः । सर्वतोऽभ्यद्रवन् भीताः कुर्वन्तो महदाकुलम् ॥ ५३ ॥ निपेतुरुर्व्यामपरे कर्णसायकपीडिताः । कुर्वन्तो विविधान्नादान् वज्रनुन्ना इवाचलाः ॥५४ ॥ गजवाजिमनुष्यैश्च निपतद्भिः समन्ततः । रथैश्चाधिरथेर्मार्गे समास्तीर्यत मेदिनी ॥ ५५ ॥ नैव भीष्मो न च द्रोणो नाप्यन्ये युधि तावकाः । चक्रुः स्म तादृशं कर्म यादृशं वै कृतं रणे ॥ ५६ ॥ सूतपुत्रेण नागेषु हयेषु च रथेषु च । नरेषु च नरव्याघ्र कृतं स्म कदनं महत् ॥ ५७ ॥ मृगमध्ये यथा सिंहो दृश्यते निर्भयश्चरन् । पाञ्चालानां तथा मध्ये :क

आठबाणोंसे पीड़मानकिया । ४८ । हे महाराज उनको पीड़ितकरके महाप्रतापी कर्ण ने उन अन्य हजारों शूरवीरोंको भी जो कि युद्धमें बड़े कुशलथे मारा । ४९ । इस केपीछे उस अत्यन्त क्रोधयुक्त ने जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापी, भद्र दण्ड, चित्र, चित्रायुध, हरि, सिंहकेतु, रोचमान, महारथी शलभ इन चंदेरी देशों के महारथियों को मारा । ५१ । उस समय उनके प्राण हरनेवाले कर्णका शरीर ऐसा होगया जैसे कि रुधिर से लिप्त शिवजी का बड़ा शरीर होता है । ५२ । हे भरतवंशी इसके सिवाय युद्ध में कर्ण के बाणों से अनेक हाथी भी घायलहुये बड़ी व्यकुलता उत्पन्न करने वाले भयकारी वह हाथी युद्धमें कर्णके बाणों से चारोंओरको भाग भागकर पृथ्वी पर गिरपड़े वज्रसे ताडित पर्व्वतों के समान घोरशब्द करतेहुये गिरनेवाले हाथीघोड़े मनुष्य और रथों से कर्ण के मार्ग की पृथ्वी आच्छादित होगई । ५५ । युद्धमें भीष्म द्रोणाचार्य्य और अन्य आपके वीरोंने भी ऐसाकर्म नहीं किया जैसा कि युद्धभूमि में कर्ण ने किया । ५६ । हे महराज हाथी घोडे रथ और मनुष्यों का कर्णके हाथसे नाशहुआ ।५७ । जैसे कि मृगोंके मध्य में घूमनेवाला निर्भय सिंह

slew Jishnu, Jishnukarma, Devapi, Bhadra, Dand, Chitra, Chitrayudh, Hari, Sinhaketu, Rochman, valiant Shalabh and other warriors of Chanderi. 51. While destroying those warriors, Karan's form, stained in blood, looked dreadful like that of Rudra. He wounded many elephants which, maddened with the wounds ran out in all directions and fell down here and there. Making a dreadful noise like that of mountains struck by lighting, the elephants, horses, men and cars impeded the path of Karan. 55. Bhishm, Drona and other warriors of yours did not do deeds of bravery like those of Karan. Elephants, horses and cars were destroyed by him. Karan roamed amongst the the Panchals like a lion amongst lower animals and put them to

णोऽद्रवद्भीतवत् ॥ ५८ ॥ यथामृगगणांस्त्रस्तान् सिंहो द्रावयते दिशः । पाञ्चालानां रथव्रातान् कर्णो व्यद्रावयत्तथा ॥ ५९ ॥ सिंहास्यञ्च यथा प्राप्य न जीवन्ति मृगाः क्वचित् । तथा कर्णमनुप्राप्य न जीवन्ति महारथाः ॥ ६० ॥ वैश्वानरं यथा दीप्तं प्राप्य दह्यन्ति वै जनाः । कर्णाग्निना रणे तद्वद्दग्धा भारत सृञ्जयाः ॥ ६१ ॥ कर्णेन चेदिषु एकेन पाञ्चालेषु च भारत । विश्राव्य नाम निहता बहवः शूरसम्मताः ॥ ६२ ॥ मम चासीन्मती राजन् दृष्ट्वा कर्णस्य विक्रमम् । नैकोऽप्याधिरथेर्जीवन् पाञ्चालो मोक्ष्यते युधि ॥ ६३ ॥ पाञ्चालान् व्यधमत् सङ्ख्ये सूतपुत्रः पुनः पुनः ॥ ६४ ॥ पाञ्चालानथ निघ्नन्तं कर्णं दृष्ट्वा महारणे । अभ्यधावत संक्रुद्धो धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ ६५ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु राधेयं द्रौपदेयाश्च मारिष । परिवव्रू रथिश्रेष्ठं शतशश्चापरे जनाः ॥ ६६ ॥ शिखण्डी सहदेवश्च नकुलो नाकुलिस्तथा । जनमेजयः शिनेर्नप्ता बहवश्च प्रभद्रकाः ॥ ६७ ॥ एते पुरोगमा भूत्वा धृष्टद्युम्नस्य संयुगे । कर्णं मस्यन्त

पशुओंको नाशकरता है उसीप्रकार कर्णभी पांचालों में निर्भयता पूर्व्वक विचारा । ५८ । जैसे कि सिंह भयभीत मृगों को दिशाओंमें भगादेता है उसीप्रकार कर्ण ने पांचालों के रथसमूहों को भगादिया । ५९ । जैसे कि सिंहके मुखको पाकर कोई पशु नहीं जीता है उसीप्रकार महारथी कर्णको पाकर कोई जीवता नहीं रहा ।६०। निश्चय करके जिसप्रकार सब जीवमात्र वैश्वानर अग्नि को पाकर भस्महोते हैं उसी प्रकार हे भरतवंशी सृंजयभी कर्णरूपी अग्नि से भस्म होगये । ६१ । हे भारत कर्ण ने चंदेरी केकय और पांचाल देशियों के मध्य में नामों को सुना कर वीरों के अंगीकृत अनेक युद्धकर्त्ताओं को मारा । ६२ । कर्ण के पराक्रमको देखकर मैंने विचार किया एकभी पांचालदेशी जीवता न बचेगा । ६३ । कर्ण ने युद्धमें पांचालों को बारम्बार छिन्न भिन्न करादिया । ६४। इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त धर्म्मराज युधिष्ठिर उस महायुद्ध में पांचालोंके मारने वाले कर्णको देखकर सम्मुख दौड़े । ६५ । धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र, और अन्य हजारों मनुष्यों ने शत्रुके मारने वाले कर्णको घेरलिया । ६६ । शिखण्डी, सहदेव, नकुल, नकुलका पुत्र, जनमेजय सात्यकि प्रभद्रक । ६७ । और धृष्टद्युम्न, यह सब बड़े तेजस्वी, युद्धमें सम्मुख

flight. None of the warriors encountering him escaped with life like animals fallen in the jaws of a lion. 60. The Srinjayas were destroyed by Karan as though they had fallen in the all devouring fire. He slew the noteworthy warriors of Chanderi, Kaikaya and Panchal. On seeing Karan's prowess, I thought that none of the Panchals would remain alive. He routed them again and again. Seeing them thus destroyed by him, Yudhishthir attacked him. Dhrishtadyumn, the sons of Draupadi and thousands of other warriors surrounded Karan. Shikhandi, Sahadev, Nakul and his son, Janmejaya, Satyaki, Prabhadraks and Dhrishtadyumn faced Karan in battle; but alone he

इष्वस्त्रैर्विरेजुरमितौजसः ॥ ६८ ॥ तांस्तत्राधिरथिः सङ्ख्ये चेदिपाञ्चालपाण्डवान् ।
एको बहूनभ्यपतद्गरुत्मान् पन्नगानिव ॥ ६९ ॥ तैः कर्णस्याभवद्युद्धं घोररूपं विशा
म्पते । तादृग् यादृक् पुरावृत्तं देवानां दानवैः सह ॥ ७० ॥ तत्र मर्मसु भीमेन नाराचै
स्ताडिता गजाः । प्रपतन्तो हतारोहाः कम्पयन्तिस्म मेदिनीम् ॥ ७१ ॥ वाजिनश्च
हतारोहाः पत्तयश्च गतासवः । शेरते युधि निर्भिन्ना वमन्तो रुधिरं बहु ॥ ७२ ॥
सहस्रशश्च रथिनः पतिताः पतितायुधाः । ते कृत्ताः समदृश्यन्तभीमाद्भीता गतासवः
रथिभिः सादिभिः सूतैः पादातैर्वाजिभिर्गजैः । भीमसेनशरच्छिन्नैराच्छन्ना वसु
धाभवत् ॥ ७३ ॥ तत् स्तम्भितमिवातिष्ठद्भीमसेनभयार्दितम् । दुर्योधनबलं राजन्
निरुत्साहं कृतव्रणम् ॥ ७४ ॥ निश्चेष्टं तद्बलं दीनं बभौ तस्मिन् महारणे ॥ ७५ ॥
प्रसन्नसलिले काले यथा स्यात् सागरो नृप । तद्वत्तव बलं तद्वै निश्चलं समवस्थितम्
॥ ७६ ॥ मन्युवीर्य्यबलोपेतं दर्पात् प्रत्यवरोपितम् । अभवत्तव पुत्रस्य तत् सैन्यं

होकर धनुषधारी बाण फेंकनेवाले कर्ण के सन्मुख होकर बाण और अस्त्रों समेत शोभायमान हुये । ६८ । वहां अकेला कर्ण युद्धमें उन चंदेरी पांचालदेशी और अन्य शूरवीरों समेत पाण्डवोंके सन्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सर्पोंके सन्मुख अकेला गरुड़ होता है ।६९। हे राजा उन सबके साथ कर्ण का ऐसे घोररूप युद्धहुआ जैसे कि पूर्व समय में देवताओं का युद्ध दानवों से हुआथा । ७० । और भीमसेन के नाराचों से हाथी मर्मस्थलों में घायल हुये जिनके सवार मारेगये उन गिरतेहुओं ने पृथ्वी को कम्पायमान करदिया घोड़ोंने जिनके सवार मारेगये थे और पत्तियोंने भी युद्धमें घायल रुधिरको वमन किया । ७२ । और जिनके कि शस्त्र गिरपड़े वह हजारों रथी अश्वसवार सारथी पदाती घोड़े यह सब हाथियों समेत घायल होकर भीमसेन से भयभीत और मरेहुये दृष्टपड़े । ७३ । दुर्योधनकी वह सब सेना भीमसेन के भयसे पीड़ित अचेष्टितों के समान नियत थी । ७४ । उत्साह से रहित घायल और अगचेष्टा विना अत्यन्त दुःखी रूप युद्ध में दिखाई पड़ी । ७५ । हे राजा जैसे कि प्रसन्न काल में स्वच्छ जलवाला समुद्र स्थिर नियत होता है उसीप्रकार आपकी सेना भी निश्चल होगई । ७६ । क्रोध पराक्रम

faced the warriors of Chanderi, Panchal and other allies of the Pandavas as Garur encounters serpents. He fought with them as the gods had once fought with asurs 70. Bhimsen slew elephants with his arrows and they fell down shaking the earth. The riderless horses and foot soldiers vomitted blood and fell down along with the car-warriors, horses, drivers, foot soldiers horses and elephants. The army of Duryodhan terrified by Bhim, stood motionless, courageless, wounded and dejected. 75. Your army became motionless like the sea in a calm weather. The army of your enriged son, destitute of pride and glory, stood bleeding and wounded. Karan and Bhim,

निध्नं तदा ॥ ७७ ॥ तद्बलं भरतश्रेष्ठ युध्यमानं परस्परम् । रुधिरौघपरिक्लिन्नं रुधिरार्द्रं बभूव तु ॥ ७८ ॥ सूतपुत्रो रणे क्रुद्धः पाण्डवानामनीकिनीम् । भीमसेनः कुरूंश्चापि द्रावयन् बह्वशोभत ॥ ७९ ॥ वर्तमाने तथा रौद्रे संग्रामेऽद्भुतदर्शने निहत्य पृतनामध्ये संशप्तकगणान्बहून् । अर्जुनो जयतांश्रेष्ठो वासुदेवमथाब्रवीत् ॥ ८१ ॥ प्रभग्नं बलमेतद्धि योत्स्यमानं जनार्दन एते द्रवन्ति सगणाः संशप्तकमहारथाः । मद्बाणवेगमसहन्तो सिंहशब्दं मृगा इव ॥ ८२ ॥ दीर्यते च महत् सैन्य सृञ्जयानां महारणे ॥ ८३ ॥ हस्तिकक्षो ह्यसौ कृष्ण केतुः कर्णस्य धीमतः । दृश्यते राज सैन्यस्य मध्ये विचरतो मुहुः ॥ ८४ ॥ न च कर्णं रणे शक्ता जेतुमन्ये महारथाः । जानीते हि भवान् कर्णं वीर्यवन्तं पराक्रमे । तत्र याहि यतः कर्णो द्रावयत्येष नो बलम् ॥ ८५ ॥ वर्जयित्वा रणे याहि सूतपुत्रं महारथम् । एवं मे रोचते कृष्ण यथा वा तव रोचते ॥ ८६ ॥ एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य गोविन्दः प्रहसन्निव । अब्रवी

से युक्त आपके पुत्रकी वह सेना अहंकार से पराभित होकर शोभा से रहित होगई । ७७ । हे भरतर्षभ वह सेना परस्पर घायलहोकर रुधिरों से लिप्तहोगई । ७८ । फिर युद्धमें क्रोधयुक्त पराक्रमी कर्ण पाण्डवों समेत सेनाको और भीमसेन भी कौरवों समेत कौरवी सेनाको भगातेहुये शोभायमानहुये । ७९ । इस रीतिसे महा घोर भयंकर युद्धजारी होनेपर महाविजयी अर्जुन सेनामें संसप्तकों के बहुतसे समूहों को मारकर फिर वासुदेवजी से बोला । ८१ । कि हे जनार्दनजी यह युद्धाभिलाषी सेना छिन्नभिन्नहोकर पराजितहुई यह संसप्तक महारथी अपने समूहों समेत मेरे बाणों से ऐसे भागते हैं जैसे कि सिंहके शब्दको सुनकर मृग भागते हैं । ८२ । और बड़े युद्धमें सृञ्जियोंकी बड़ीसेना पृथक् हुईजाती है । ८३ । हे श्रीकृष्णजी राजाओं की सेनाके मध्यमें प्रसन्नतापूर्वक घूमनेवाले बुद्धिमान् कर्णकी यह ध्वजा दिखाईदेती है जिसमें कि हाथी की कक्षाकाचिन्ह है । ८४ । और कोई महारथी कर्णके विजय करने को समर्थ नहीं है आपभी कर्ण को बड़ा पराक्रमी जानते हैं अब आप वहां चलिये जहांपर कि वह कर्ण हमारी सेनाको भगारहा है । ८५ । आप इन सबको त्यागकर युद्ध में महारथी कर्ण के सम्मुख चलिये हे श्रीकृष्णजी मुझको यह उचित

routing the armies of the Pandavas and the Kauravas respectively, were glorious to behold. When the battle was thus *raging furiously*, Arjun said to Vasudev, "This army has been vanquished and dispersed. They are running away from my arrows like deer from a lion. The great army of the Srinjayas is being dispersed, 83. Yonder is to be seen the standard, with the ensign of elephant's rope, belonging to Karan who is roaming cheerfully and whom none can conquer. You know, his prowess Krishn. Let us now go to the place where Karan is putting our army to flight. 85. I think it will be better that you leave all others to face Karan for aught you know still

रहुनं तूर्णं कौरवान् जहि पाण्डव ॥ ८७ ॥ ततस्तव महासैन्यं गोविन्दप्रेषिता हयाः । हंसवर्णाः प्रविविशुर्वहन्तः कृष्णपाण्डवौ ॥ ८८ ॥ केशवप्रेषितैरश्वैः श्वेतैः काञ्चनभूषणैः । प्रविशद्भिस्तव बले चतुर्दिशमभिद्रुत ॥ ८९ ॥ मेघस्तनितनिर्घोषः स रथो वानरध्वजः । चलत्पताकस्तां सेनां विमानं द्यामिवाविशत् ॥ ९० ॥ तौ विदार्य महासेनां प्रविष्टौ केशवार्जुनौ । क्रुद्धौ संरम्भरक्ताक्षौ व्यभ्राजेतां महाद्युती ॥ ९१ ॥ युद्धशौण्डौ समाहूतावागतौ तौ रणाध्वरम् । यज्वभिर्विधिनाहूतौ मखे देवाविवाश्विनौ ॥ ९२ ॥ क्रुद्धौ तौ तु नरव्याघ्रौ वेगवन्तौ बभूवतुः । तलशब्देन रुषितौ यथा नागौ महावने ॥ ९३ ॥ विगाह्य तु रथानीकमश्वसंघांश्च फाल्गुनः । व्यचरत् पृतनामध्ये पाशहस्त इवान्तकः ॥ ९४ ॥ तं दृष्ट्वा युधि विक्रान्तं

मालूम होता है अथवा जैसी आपकी इच्छाहो वही करना योग्य है । ८६ । उसके इसवचनको सुनकर गोविन्दजी हँसकर बोलेहेपांडवतुम शीघ्रही कौरवोंको मारो८७ इसके पीछे गोविन्दजी की आज्ञानुसार अपने सारथी रूप श्रीकृष्णजी समेत श्वेत हंसवर्ण घोड़ों को सवारी से अर्जुन आपकी सेनामें आपहुँचा । ८८ । केशवजी का आज्ञाकारी सुवर्ण के भूषणों से युक्त श्वेत घोड़ों के रथके पहुँचतेही आपकी सेना चारों दिशाओं में हटगई । ८९ । बादलके समान शब्दायमान हनुमानजी की ध्वजासे संयुक्त चेष्टावान् पताकावाला वह रथ उससेनामें ऐसे पहुँचा जैसे कि स्वर्ग में विमान पहुँचता है । ९० । वहां वह अर्जुन और केशवजी दोनों सेनाको चीरते हुये प्रविष्टहुये और क्रोध से भरे लालनेत्र कियेहुये वह दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन शोभायमानहुये । ९१ । युद्धमें कुशल और बुलायेहुये वह दोनों युद्ध में ऐसे आपहुँचे जिसप्रकार विधिपूर्वक यज्ञ करनेवालों से आह्वान किये हुये अश्विनी कुमार होते हैं । ९२ । फिर क्रोधयुक्त वह दोनों नरोत्तम ऐसे युद्धमें प्रवृत्त हुये जैसे कि महावन में तल शब्द से क्रोधित महाबली नाग होते हैं । ९३ । फिर अर्जुन रथों की सेना और घोड़ों के समूहों को मझाकर पाशधारी यमराजके समान सेना में घूमने लगा । ९४ । हे भरतवंशी युद्धमें आपकी सेना के मध्यमें पराक्रम करनेवाले उस अर्जुन

better. On hearing this, Govind said, "Make haste to destroy the Kauravas." At this, Arjun, acting upon the advice of Krishna, drove his swan-like horses into your army. Your army scattered at the sight of the white horses decked with gold ornaments. The car, equipped with the figure of noisy Hanuman, reached like a celestial car in the midst of your army. 90. Both Arjun and Keshav entered in the midst of the army with red eyes. The two warriors, challenged to fight, entered the army like Ashwinikumars invited to a sacrifice. The two enraged warriors were then engaged in fighting like elephants startled by the beat of palms in a forest. Breaking through the lines of cars and horses, Arjun roamed there like Yam the bearer of

सेनायां तव भारत । संशप्तकगणान् भूयः पुत्रस्ते समचोदयत् ॥ ९५ ॥
ततो रथसहस्रेण द्विरदानां त्रिभिः शतैः । चतुर्दशसहस्रैस्तु तुरगाणां महाहवे ॥ ९६
द्वाभ्यां शतसहस्राभ्यां पदातीनाञ्च धन्विनाम् । शूराणां लब्धलक्षाणां विदितानां सम
न्ततः ॥ ९७ ॥ अभ्यवर्तन्त कौन्तेयं छादयन्तो महारथाः । शरवर्षैर्महाराज सर्वतः
पाण्डुनन्दनम् ॥ ९८ ॥ संछाद्यमानः समरे शरैः परबलार्दनः ॥ ९९ ॥ दर्शयन्रौद्रमा
त्मानं पाशहस्त इवान्तकः । निघ्नन् संशप्तकान् पार्थः प्रेक्षणीयतरोऽभवत् ॥ १०० ॥
ततो विद्युत्प्रभैर्बाणैः कार्तस्वरविभूषितैः । निरन्तरमिवाकाशमाच्छन्नं किरीटिना
॥ १०१ ॥ किरीटिभुजनिर्मुक्तैः सम्पतद्भिर्महाशरैः । समाच्छन्नं बभौ सर्वं काद्रवेयैरिव
प्रभो ॥ १०२ ॥ रुक्मपुङ्खान् प्रसन्नाग्रान् शरान् सन्नतपर्वणः । अवासृजदमेयात्मा दिक्षु
सर्वासु पाण्डवः ॥१०३ ॥ मही वियद्दिशः सर्वाः समुद्रा गिरयोऽपि वा । स्फुटन्तीति
जना जज्ञुः पार्थस्य तलनिस्वनात् ॥ १०४ ॥ हत्वा दश सहस्राणि पार्थिवानां महारथः ।

को देखकर आपके पुत्रने संसप्तकोंके समूहोंको फिर प्रेरणाकरी ।९५। दशहजार रथ तीनसौहाथी चौदहहजार घोड़े और दो१९ लाख धनुषधारी शूरवीर लक्ष्योंके बेधने वाले चारोंओरसे घिरेहुये पदातियों समेत महारथी अर्ज्जुनको बाणोंसे आच्छादित करतेहुये सम्मुख वर्त्तमानहुये । ९८ । हे महाराज उन सबलोगोंने चारोंओरसे बाणोंकी वर्षाकरके अर्ज्जुनको ढकदिया फिर शत्रुकी सेनाका पीड़ामान करनेवाला युद्धमें बाणोंसे ढकाहुआ वह अर्ज्जुन पाशधारी यमराजके समान अपना रुद्ररूप दिखलाताहुआ और संसप्तकों को मारताहुआ अपूर्व्व दर्शन के योग्यहुआ । १००। इसके पीछे बिजलीके समान प्रकाशमान सुवर्णसे अलंकृत अर्जुनके चलायेहुये बाणोंसे सब आकाशढकगया । १०१ । वहां अर्ज्जुनके छोड़हुये बड़े बाणोंके गिरनेसे सब आकाश आच्छादित होकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि कद्रुके बेटे सर्पोंसेव्याप्त होकर शोभितहोताहै । १०२ । बड़े साहसी पाण्डवने सुनहरी पुंखयुक्त तीक्ष्णनोक टेढ़े पर्ववाले बाणोंको सब दिशाओं में छोड़ा । १०३ । मनुष्योंने अर्जुनकी प्रत्यंचाके शब्दसे यह अनुमान किया कि पृथ्वी आकाश सब दिशा समुद्र और पर्वत टूटते हैं । १०४ । महारथी अर्जुन दशहजार क्षत्री महारथियों को मारकर

noose. Seeing Arjun fight in the midst of your army, your son again urged the Sansaptaks. Then a thousand car-wariors, three hundred elephants, fourteen thousand horse and two hundred thousands of good archers on foot surrounded Arjun, covering him with arrows. Arjun the destroyer of foes, hid by ther arrows assumed a dreadful form like that of Yam and began slaying the Sanspataks. 100. All the sky was covered with Arjun's arrows swift like lightning which appeared like offspring of Kadru. The brave Pandav shot his gloden arrows in all directions. From the twangs of Arjun's bow people

संशप्तकानां कौन्तेयः प्रवरं रथिरतोऽभ्ययात् ॥ १०५ ॥ प्रपक्षश्च समासाद्य पार्थः
काम्बोजरक्षितम् । प्रममाथ बलाद्बाणैर्दानवानिव वासवः ॥ १०६ ॥ प्रचिच्छेदाशु
भल्लैश्च द्विषतामाततायिनाम् । शस्त्रपाणीं स्तथा बाहूं स्तथा जङ्घाः शिरांसि च ॥ १०७
अङ्गाङ्गावयवैश्छिन्नैर्व्यायुधास्तेऽपतन् भुवि । विष्वग्वाताभिसंभग्ना बहुशाखा इव द्रुमाः
॥ १०८ ॥ हस्त्यश्वरथपत्तीनां व्राताभिघ्नन्तमर्जुनम् । सुदक्षिणादवरजः शरवृष्ट्याभ्य
वीवृषत् ॥ १०९ ॥ तस्यास्यतोऽर्द्धचन्द्राभ्यां बाहू परिघसन्निभौ । पूर्णचन्द्राभवक्त्र
ञ्च क्षुरेणाभ्यहरच्छिरः ॥ ११० ॥ स पपात ततो वाहात् स्वलोहितपरिस्रवः । मनः
शिलागिरेः शृङ्गं वज्रेणेव विदारितम् ॥ १११ ॥ सुदक्षिणं त्ववरजं काम्बोजं ददृशु
र्हतम् । प्रांशुं कमलपत्राक्षमत्यर्थं प्रियदर्शनम् ॥११२ ॥ काञ्चनस्तम्भसदृशं भिन्नं हेम

शीघ्रही संसप्तकों के सम्मुख गया ।१०५। वहां अर्जुनने काम्बोज के राजासे रक्षित सेनाको नेत्रोंके सम्मुख पाकर अपने बाणोंके बलसे उसको ऐसे मारा जैसे कि दानवलोगों को इन्द्र मारता है । १०६ । और बड़ी शीघ्रता से मारनेके इच्छावान् शत्रुलोगों के शस्त्र भुजा हाथ और शिरों को भी काटा । १०७। वह शस्त्रोंसेरहित टूटेअंग पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसेकि संसारी वायु से टूटे बहुत शाखावाले वृक्ष गिरते हैं । १०८ । हाथी घोड़े रथ व रथियोंके समूहों के मारनेवाले अर्जुन के ऊपर सुदक्षिणके छोटे भाईने बाणोंकी वर्षाकरी । १०९ । तब अर्जुनने उस बाणवर्षा करनेवाले की परिघके समान दोनों भुजाओंको दो अर्द्धचन्द्रोंसे और पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाले शिरको क्षुरमसे जुदाकिया । ११० । उसके पीछे बहेरुधिरको गिरानेवाला वह राजा रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे फटाहुआ मनशिल पर्वतका शिखर गिरताहै । १११ । सुदक्षिणके छोटेभाई कांबोजदेशी कमल पत्र के समान नेत्रधारी उन्नत वह तेजस्वी अपूर्व दर्शन को जो कांचनके स्तंभसमान टूटे हेमागिरिके समान वर्त्तमानथामारा । ११३ । इसके अनन्तर फिर महावोर युद्ध जारीहुआ उस युद्धमें लड़नेवाले शूरवीरों की नाना

believed that the earth, sea and mountains were breaking. Having slain ten thousands of warriors, Arjun attacked the Sansaptaks. Seeing the army protected by the king of Kamboj, he slew them as Indra does the Danavas. He cut down the weapons, arms and hands of the foes. Destitute of weapons and wounded they fell down like trees broken by the wind. Sudakshin's younger brother showered arrows over Arjun, but the latter cut both his club like arms with crescent shaped arrows and severed also his head having moon like face. 10. His bleeding body fell down from the car like a hill struck down by lightning. Thus was slain Sudarshan's brother whose face was like that of lotus petals. He fell down like a mountain of gold. 113.

गिरिं यथा ॥ ११३ ॥ ततोऽभवत् पुनर्युद्धं घोरमत्यर्थमद्भुतम् । नानायाधाश्च योधानां प्रभुरत्र युध्यताम् ॥ ११४ ॥ पृषत्कैर्निहतैरश्वैः काम्बोजैर्यवनैः शकैः । शोणिताक्तैस्तदा रक्तं सर्वमासीद्विशाम्पते ॥ ११५ ॥ रथैर्हताश्वसूतैश्च हतारोहैश्च वाजिभिः । छिन्नैश्च हतारोहैर्मात्रांगैर्हतद्विपैः । अन्योऽन्येन महाराज कृतो घोरो जनक्षयः ॥ ११६ ॥ तस्मिन् प्रपक्षे पक्षे च निहते सव्यसाचिना । अर्जुनं जयतां श्रेष्ठं त्वरितो द्रौणिरुपयात् ॥ ११७ ॥ विधुन्वानो महच्चापं कार्त्तस्वरविभूषितम् । आददानः शरान् घोरान् स्वरश्मीनिव भास्करः ॥ ११८ ॥ कोपामर्षविवृत्तास्यो लोहिताक्षो बभौ बली । अन्तकाले यथा क्रुद्धो मृत्युः किङ्करदण्डभृत् ॥ ११९ ॥ ततः प्रायुजदुग्राणि शरवर्षाणि सङ्घशः । तैर्विद्रवन्महाराज व्यद्रवत् पाण्डवी चमूः ॥ १२० ॥ स दृष्ट्वैव तु दाशार्हं स्यन्दनस्थं विशाम्पते । पुनः प्रायुजदुग्राणि शरवर्षाणि मारिष ॥ १२१ ॥ तैः पतद्भिर्महाराज द्रौणिमुक्तैः समन्ततः । संछादितौ रथस्थौ तावुभौ कृष्णधनञ्जयौ

प्रकार की अपूर्वदशा वर्त्तमानहुई । ११४ । अर्थात् बाणसे मरेहुये काम्बोज देशी यवनदेशी और शकदेशी घोड़ोंसे और रुधिरसेलिप्त शरीरों से सब रुधिर मयी भूमि होगई ।११५। मृतक घोड़े औरसारथीवालेरथ वामृतक सवारोंके घोड़े वा मृतक हाथीवान और सवारों वाले हाथियों से परस्परमें मनुष्योंका बड़ा नाश हुआ ।११६। अर्ज्जुन के हाथसे उस पक्ष और प्रपक्ष के मरनेपर बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक अश्वत्थामाजी उस महाविजयी अर्ज्जुनके सन्मुख गये । ११७ । सुवर्णजटित बड़े धनुषको कम्पायमान करता सूर्यकी किरणोंके समान घोरबाणोंको लेता ।११८। क्रोध और अशान्ती से फैलाहुआ मुख रक्तनेत्र वह पराक्रमी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलयकाल में किंकरनाम दण्डधारी क्रोधरूप अग्नि होताहै ।११९। इसके पीछे उग्रबाणों की वर्षाओं को बरषाया हे महाराज उनछोड़े हुये बाणों से पांडवी सेनाको भगाया । १२० । हे महाराजा उसने रथपर सवार श्रीकृष्ण जीको देखतेही फिर उग्र बाणों की वर्षा करी । १२१ । तब हे महाराज अश्वत्थामाके छोड़े हुये और चारों ओर से गिरते हुये उनबाणों से वह रथपर चढ़े हुये दोनों

The fighting warriors were in a strange plight. Slain by arrows, the Cambojas, Yavans and Shaks, with bleeding bodies, lay on earth. Warriors destitute of horses and drivers, riderless horses and elephants were slain there. At the slaughter of both the sides by Arjun, Ashwathama faced him. Shaking his bow, spreading arrows like the rays of the Sun, the enraged warriors, with red eyes, looked glorious like the fire of pralaya. He put the Pandav warriors to flight with the shower of his arrows.120. He sent forth his arrows at Krishn. Both Krishn and Arjun were hid in their car by his arrows and wounded. The people cried in terror at the sight of those two protectors of the armies being hid under the cloud of arrows. The

शतशोऽथ सहस्रशः । पश्यतस्तस्य वीरस्य तव पुत्रस्य मारिष ॥ १५३ ॥ एवमेष क्षयो वृत्तस्तावकानां परैः सह । क्रूरो विशसनो घोरो राजन् दुर्मन्त्रिते तव ॥१५४॥ संशप्तकांश्च बीभत्सुः कुरूंश्चापि वृकोदरः । वसुषेणश्च पाञ्चालान् क्षणेन व्यधमद्रणे ॥ १५५ ॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे राजन् वीरवरक्षये । उत्थितान्यगणेयानि कबन्धानि समन्ततः ॥ १५६ ॥ युधिष्ठिरोऽपि संग्रामात् प्रहारैर्गाढवेदनः । क्रोशमात्रमपक्रम्य तस्थौ भरतसत्तम ॥ १५७ ॥

इति कर्णपर्वणि संकुल युद्धे षट् पञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

अर्जुनने उस आपके वीर पुत्रके देखतेहुये किया ।' १५३ । इस रीतिसे आपके कुमन्त्रोंके कारण शत्रुओं के साथ आपके शूरवीरों का यह महाघोर नाश वर्त्त-मान हुआ । १५४ । अर्जुनने संसप्तकों को भीमसेनने कौरवोंको व सुषेणने पांचालोंको क्षणमात्रमेंही युद्धभूमिमें छिन्न भिन्न करदिया । १५५ । हेराजा इस रीतिसे उत्तम वीरोंके सम्मुख नाशकारी युद्ध के होनेपर चारोंओर से असंख्य रुण्ड उठ खड़े हुये । १५६ । हे भरतर्षभ आघातों से कठिन पीड़ामान युधिष्ठिरभी युद्धमें एक कोस हटकर नियतहुआ । १५७ ।

---

slew thousands of your warriors, through your evil policy. Arjun routed the Sansaptaks, Bhimsen slew the Kauravas and Karan slaughtered the Panchals. Thousands of headless trunks were to be seen on the field of battle in a moment. Having received many wounds, Yudhishthir stood a mile from the scene of action." 147



सञ्जय उवाच । दुर्योधनस्ततः कर्णमुपेत्य भरतर्षभ । अब्रवीन्मद्रराजञ्च तथैवान्यांश्च पार्थिवान् ॥ १ ॥ यदृच्छयैतत् संप्राप्तं स्वर्गद्वारमपावृतम् । सुखिनः क्षत्रियाः कर्ण लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ २ ॥ सदृशैः क्षत्रियैः शूरैः शूराणां युध्यतां युधि । इष्टं भवति राधेय तदिदं समुपस्थितम् ॥ ३ ॥ हत्वा वा पाण्डवान् युद्धे स्फीतामुर्वीमवाप्स्यथ । निहता वा परैर्युद्धे वीरलोकमवाप्स्यथ ॥ ४ ॥ दुर्योधनस्य तच्छ्रुत्वा वचनं क्षत्रियर्षभाः । हृष्टा नादानुदक्रोशन् वादित्राणि च सर्वशः ॥ ५ ॥ ततः प्रमुदिते तस्मिन् दुर्योधनबले तदा । हर्षयंस्तावकान् योधान् द्रौणिर्वचनमब्रवीत् ॥ ६ ॥ प्रत्यक्षं सर्वसैन्यानां भवताञ्चापि पश्यताम् । न्यस्तशस्त्रो मम पिता धृष्टद्युम्नेन पातितः ॥ ७ ॥ स तेनाहममर्षेण मित्रार्थे चापि पार्थिवाः । सत्यं वः प्रतिजानामि तद्वाक्यं मे निबोधत ॥ ८ ॥ धृष्टद्युम्नमहत्वाहं न विमोक्ष्यामि दंशनम् ।

अध्याय ५७ ॥

संजय बोले हे भरतर्षभ इसके पीछे दुर्य्योधनने शल्य आदि अन्य राजाओं समेत कर्णसे कहा कि । १ । दैवइच्छासे यह स्वर्गकाद्वार खुलाहुआ है ऐसे युद्धको स्वर्ग और मोक्षके पानेवाले क्षत्री लोगपाते हैं । २ । हे कर्ण युद्धमें युद्ध करने वाले शूरवीर क्षत्रियों के चित्तका जो प्यारा होता है वह दिन आज वर्त्तमान है । ३ । युद्धमें पांडवों को मारकर वृद्धियुक्त पृथ्वी को पावोगे अथवा युद्ध में शत्रुओंके हाथसे मरकर वीरों के लोकों को पावोगे । ४ । वह सब श्रेष्ठ क्षत्री लोग दुर्य्योधन के इस वचनको सुनकर बड़े प्रसन्न होकर अत्यन्त उच्चस्वरसेगर्जे और बाजोंको बजाया । ५ । इसके पीछे दुर्योधनकी उस सेनाके अति प्रसन्न होने पर अश्वत्थामाजी आपके शूरवीरोंको प्रसन्न करतेहुये यहवचनबोले । ६ । किसब सेनाके मनुष्यों के और आपके सपक्षमें शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरापिता इस धृष्ट द्युम्न के हाथसे मारागया । ७ । हे राजालोगो इसहेतुसे क्रोध और मित्रके लिये भी तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं उसको आपसब समझो । ८ । मैं धृष्टद्युम्नको जबतक न मारलूंगा तब तक कवचको नहीं उतारूंगा जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी तो स्वर्गको भी मैं नहीं पासक्ता । ९ । युद्धमें भीमसेन अर्ज्जुन आदि जो कोई

CHAPTER LVII

Sanjaya said, "Then Duryodhan said to Karan in the presence of Shalya and other kings- "It is by good luck that the way to paradise is open for kshatryas engaged in fighting. This is the time which kshatryas like you seek for. You will secure the kingdom by slaying the Pandavas, or gain the region of the brave, if you are slain by them." The warriors roared in glee at the words of Duryodhan. Then Ashwathama said as follows to cheer up still more the army of the Kauravas, "My father who had laid aside weapons was slain by Dhrishtadyumn in the presence of all the warriors. For

शतशोऽथ सहस्रशः । पश्यतस्तस्य वीरस्य तव पुत्रस्य मारिष ॥ १५३ ॥ एवमेष क्षयो वृत्तस्तावकानां परैः सह । क्रूरो विशसनो घोरो राजन् दुर्मन्त्रिते तव ॥१५४ ॥ संशप्तकांश्च बीभत्सुः कुरूंश्चापि वृकोदरः । वसुषेणश्च पाञ्चालान् क्षणेन व्यधमद्रणे ॥ १४५ ॥ वर्त्तमाने तथा रौद्रे राजन् वीरवरक्षये । उत्थितान्यगणेयानि कबन्धानि समन्ततः ॥ १४६ ॥ युधिष्ठिरोऽपि संग्रामात् प्रहारैर्गाढ़वेदनः । क्रोशमात्रमपक्रम्य तस्थौ भरतसत्तम ॥ १४७ ॥

इति कर्णपर्वाणि संकुल युद्धे षट् पञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

अर्जुनने उस आपके वीर पुत्रके देखतेहुये किया । १४३ । इस रीतिसे आपके कुमन्त्रोंके कारण शत्रुओं के साथ आपके शूरवीरों का यह महाघोर नाश वर्त्तमान हुआ । १४४ । अर्जुनने संसप्तकों को भीमसेनने कौरवोंको व सुषेणने पांचालोंको क्षणमात्रमेंही युद्धभूमिमें छिन्न भिन्न करदिया । १४५ । हेराजा इस रीतिसे उत्तम वीरोंके सम्मुख नाशकारी युद्ध के होनेपर चारोंओर से असंख्य रुण्ड उठ खड़े हुये । १४६ । हे भरतर्षभ आघातों से कठिन पीड़ामान युधिष्ठिरभी युद्धमें एक कोस हटकर नियतहुआ । १४७ ।

---

slew thousands of your warriors, through your evil policy. Arjun routed the Sansaptaks, Bhimsen slew the Kauravas and Karan slaughtered the Panchals. Thousands of headless trunks were to be seen on the field of battle in a moment. Having received many wounds, Yudhishthir stood a mile from the scene of action." 147



सञ्जय उवाच । दुर्योधनस्ततः कर्णमुपेत्य भरतर्षभ । अब्रवीन्मद्रराजञ्च तथैवान्यांश्च पार्थिवान् ॥ १ ॥ यदृच्छयैतत् संप्राप्तं स्वर्गद्वारमपावृतम् । सुखिनः क्षत्रियाः कर्ण लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ २ ॥ सदृशैः क्षत्रियैः शूरैः शूराणां युध्यतां युधि । इष्टं भवति राधेय तदिदं समुपस्थितम् ॥ ३ ॥ हत्वा वा पाण्डवान् युद्धे स्फीतामुर्वीमवाप्स्यथ । निहता वा परैर्युद्धे वीरलोकमवाप्स्यथ ॥ ४ ॥ दुर्योधनस्य तच्छ्रुत्वा वचनं क्षत्रियर्षभाः । हृष्टा नादानुदक्रोशन् वादित्राणि च सर्वशः ॥ ५ ॥ ततः प्रमुदिते तस्मिन् दुर्योधनबले तदा । हर्षयंस्तावकान् योधान् द्रौणिर्वचनमब्रवीत् ॥ ६ ॥ प्रत्यक्षं सर्वसैन्यानां भवताञ्चापि पश्यताम् । न्यस्तशस्त्रो मम पिता धृष्टद्युम्नेन पातितः ॥ ७ ॥ स तेनाहममर्षेण मित्रार्थे चापि पार्थिवाः । सत्यं वः प्रतिजानामि तद्वाक्यं मे निबोधत ॥ ८ ॥ धृष्टद्युम्नमहत्वाहं न विमोक्ष्यामि दंशनम् ।

अध्याय ५७ ॥

संजय बोले हे भरतर्षभ इसके पीछे दुर्योधनने शल्य आदि अन्य राजाओं समेत कर्णसे कहा कि । १ । दैवइच्छासे यह स्वर्गकाद्वार खुलाहुआ है ऐसे युद्धको स्वर्ग और मोक्षके पानेवाले क्षत्री लोगपाते हैं । २ । हे कर्ण तुमसे युद्ध करने वाले शूरवीर क्षत्रियों के चित्तका जो प्यारा होता है वह दिन आज वर्त्तमान है । ३ । युद्धमें पांडवों को मारकर वृद्धियुक्त पृथ्वी को पावोगे अथवा युद्ध में शत्रुओंके हाथसे मरकर वीरों के लोकों को पावोगे । ४ । वह सब श्रेष्ठ क्षत्री लोग दुर्योधन के इस वचनको सुनकर बड़े प्रसन्न होकर अत्यन्त उच्चस्वरसेगर्जे और बाजोंको बजाया । ५ । इसके पीछे दुर्योधनकी उस सेनाके अति प्रसन्न होने पर अश्वत्थामाजी आपके शूरवीरोंको प्रसन्न करतेहुये यहवचनबोले । ६ । किसब सेनाके मनुष्यों के और आपके समक्षमें शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरापिता इस धृष्टद्युम्न के हाथसे मारागया । ७ । हे राजालोगो इसहेतुसे क्रोध और मित्रके लिये भी तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं उसको आपसब समझो । ८ । मैं धृष्टद्युम्नको जबतक न मारलूंगा तब तक कवचको नहीं उतारूंगा जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी तो स्वर्गको भी मैं नहीं पासक्ता । ९ । युद्धमें भीमसेन अर्ज्जुन आदि जो कोई

CHAPTER LVII

Sanjaya said, "Then Duryodhan said to Karan in the presence of Shalya and other kings:- "It is by good luck that the way to paradise is open for kshatryas engaged in fighting. This is the time which kshatryas like you seek for. You will secure the kingdom by slaying the Pandavas, or gain the region of the brave, if you are slain by them." The warriors roared in glee at the words of Duryodhan. Then Ashwathama said as follows to cheer up still more the army of the Kauravas, "My father who had laid aside weapons was slain by Dhrishtadyumn in the presence of all the warriors. For

अनृताया प्रतिज्ञायां न हि स्वर्गमवाप्नुयाम् ।९। अर्जुनो भीमसेनश्च यश्च मां
प्रत्युद्धरिष्यति । सर्वांस्तान् प्रमथिष्येऽहमिति मे व्रतमाहितम् ॥ १० । एवमुक्ते ततः
सर्वा सहिता भारती चमू । अभ्यद्रवन्त कौन्तेयांस्तथा ते चापि पाण्डवाः ॥ ११ ॥
स सन्निपातो रथयूथपानां महात्मनां भारत भीमरूपः । जनक्षये कालयुगान्तकल्पः
प्रावर्तताथ कुरुसृञ्जयानाम् ॥ १२ ॥ ततः प्रवृत्ते युधि संप्रहारे भूतानि सर्वाणि
सदैवतानि । आसन् समेतानि सहाप्सरोभिर्दिदृक्षमाणानि नरप्रवीरान् ॥ १३ ॥
दिव्यैश्च माल्यैर्विविधैश्च गन्धैर्दिव्यैश्च रत्नैर्विविधैर्नराग्र्यान् । रणे स्वकर्मोद्वहनः प्रवी
रानवाकिरन्नप्सरसः प्रहृष्टाः । १४ ॥ समीरणस्तांश्च निषेव्य गन्धान् सिषेव सर्वा
नपि योधमुख्यान् । निषेव्यमाणास्त्वनिलेन योधाः परस्परघ्ना धरणीं निपेतुः ।१५॥
सा दिव्यपुष्पैरवकीर्यमाणा सुवर्णपुङ्खैश्च शरैर्विचित्रैः । नक्षत्रसङ्घैरिव चित्रिता

शूरवीर धृष्टद्युम्नका रक्षकहोगा उसकोभी मैं युद्ध में बाणोंसे मारूंगा । १० । इस
वचन के सुनतेही भरतवंशियों की सबसेना एक साथही पांडवों के सम्मुख गई और
इसीप्रकार वह पांडवलोगभी कौरवों के सम्मुख दौड़े । ११ । हे राजा वह महारथियों
का संग्राम बड़ा भयकारी हुआ और कौरव वा सृंजियों के आगे मनुष्योंका नाश
कुछ कम प्रलयहीके समान हुआ । १२ । इसके पीछे युद्धमें उन कठिन महारों के
वर्तमान होनेपर अप्सराओं समेत देवता और सबजीवमात्र उन नरवीरोंके देखनेके
अभिलाषी इकट्ठे हुये । १३ । अत्यन्त प्रसन्नचित्त अप्सराओंने युद्धमें अपने कर्म
से स्वर्ग में पहुँचने के योग्य बड़े बड़े नरोत्तम वीरोंको दिव्य माला वा नानाप्रकार
की गंधि और रत्न जटित उत्तम अद्भुत भूषणों को बरसा कर ढकदिया । १४ ।
फिर वायुने उनसब गंधादिकों को लेकर उन सब श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले शूरवीरों
को सेवन किया वायुसे सेवित होकर परस्पर में मारेहुये शूरवीर गिरपड़े । १५ ।
दिव्यमाला वा सुनहरी पुंखवाले विचित्र बाणोंसे व्याप्त उत्तम शूरवीरों से विचित्र
वह पृथ्वी ऐसेशोभायमानहुई जैसेकि नक्षत्र मण्डल से अलंकृत आकाश होताहै।१६।

this reason and for the sake of my friend, I make a true vow that I shall not put off armour without slaying Dhrishtadyumn. May I not gain heaven, if I donot fulfil my promise. I shall slay every protector of him— whether he be Bhim or Arjun." 10. At this, all the Kaurav army rushed at once against the Pandavas, and the latter hastened to meet the former. The battle was dreadful, and the destruction of the Kauravas and Srinjayas was somewhat like that at pralaya. The apsaras, gods and others assembled to see the feats of those warriors. They covered the warriors with showers of scented garlands and jewels. A fragrant breeze blew when the warriors were falling down. 15. The ground was covered with the warriors

द्यौः क्षितिर्यथौ गोधरैर्विचित्रा ॥ १६ ॥ ततोऽन्तरिक्षाद्दपि साधुवादैर्वादित्रघोषैः समुदीर्यमाणः । ज्याघोषनेमिस्वननादमिश्रः समाकुलः सोऽभवत् संप्रहारः ॥ १७ ॥

इति कर्णपर्वणि अश्वत्थामा प्रतिज्ञायां सप्त पंचाशोऽध्याय ५७

संजय उवाच । एवमेष महानासीत् संग्रामः पृथिवीक्षिताम् । क्रुद्धेऽर्जुने तथा कर्णे भीमसेने च पाण्डवे ॥ १ ॥ द्रौणिं पराजित्य जित्वा चान्यान् महारथान् । अब्रवीदर्जुनो राजन् वासुदेवमिदं वचः ॥ २ ॥ पश्य कृष्ण महाबाहो द्रवन्तीं पाण्डवीं चमूम् । कर्णञ्च पश्य संग्रामे काल्यन्तं महारथान् ॥ ३ ॥ न च पश्यामि दाशार्ह धर्मराजं युधिष्ठिरम । नापि केतुर्युधां श्रेष्ठ धर्मपुत्रस्य दृश्यते ॥ ४ ॥ त्रिभागश्चावशि.

इसकेपीछे वह युद्धभूमि अन्तरिक्षके प्रशंसायुक्तवचनबाजोंके शब्दोंसे शब्दायमान धनुष और रथचक्रों के अपूर्व शब्दोंसे अद्भुत रूप होकर व्याकुल होगई १७ ॥

अध्याय ५८ ॥

संजय बोले कि अर्जुन कर्ण और भीमसेनके क्रोधयुक्त होनेपर इसरीति से राजाओं का यह अद्भुत युद्ध हुआ १ हे राजा अर्जुन अश्वत्थामा और दूसरे महारथियों को विजय करके वासुदेवजी से यह वचन बोला २ हे महाबाहु श्रीकृष्ण भी भागती हुई पाण्डवी सेनाको और युद्ध में महारथियों को भगाते हुये कर्णको देखो ३ हे श्रीकृष्णजी मैं धर्मराज युधिष्ठिर को नहीं देखताहूं हे बड़े शूरवीर पुरुष को युधिष्ठिरकी वही ध्वजाभी नहीं दिखाई देती ४ । हे जनार्दनजी दिनका तीसरा भाग शेष है धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्धमें मेरे सम्मुख कोई नहीं आता है

wearing ornaments and looked like the star-spangled sky. The field was ringing with the sounds of the divine music coming from air." 17.

CHAPTER LVIII

Sanjaya said "Karan, Bhim and Arjun, enraged, made a havoc among the warriors. Having conquered Aswathama and others, Arjun said to Vasudev:—"Look at Karan who is routing the Pandav army. I donot see Yudhishthir and his standard. This is the third

घोऽयं दिवसस्य जनार्दन । न च मां धार्त्तराष्ट्रेषु कश्चिद्योत्स्यति संयुगे । तस्मात्वं मत् प्रियं कुर्वन् याहि यत्र युधिष्ठिरः ।.५ ॥ दृष्ट्वा कुशलिनं युद्धे धर्मपुत्रं सहानुजम पुनर्योद्धास्मि वार्ष्णेय शत्रुभिः सह संयुगे ॥ ६ ॥ ततः प्रायाद्रथेनाशु वीभत्सर्व चनार्द्दनः ॥ ७ ॥ यतो युधिष्ठिरो राजा सृञ्जयाश्च महारथाः । अयुध्यन्त महासेषा मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ८ ॥ ततः संग्रामभूमिं तां .वर्त्तमाने जनक्षये । अवेक्षमाणो गोविन्दः सव्यसाचिनमब्रवीत् ॥ ९ ॥ पश्य पार्थ महारौद्रो वर्त्तते भरतक्षयः । पृथिव्यां क्षत्रियाणां वै दुर्योधनकृते महान् ॥ १० ॥ पश्य भारत चापानि रुक्मपृष्ठानि धन्विनाम । मृतानामपविद्धानि कलापांश्च महाधनान् ॥ ११॥ जातरूपमयैः पुङ्खैः शरां श्चानतपर्वणः । तैलधौतांश्च नाराचान् निर्मुक्तान् पन्नगानिव ॥ १२ ॥ हस्तिदन्तत्सरून खड्गान् जातरूपपरिष्कृतान् । चर्माणि चापविद्धानि रुक्मगर्भाणि भारत ॥ १३ ॥ सुवर्णविकृतान् प्रासान् शक्तीः कनकभूषणाः । जाम्बूनदमयैः पट्टैर्बद्धाश्च विपुला गदाः ॥ १४ ॥ जातरूपमयीश्चर्ष्टीः पट्टिशान् हेमभूषितान् । दण्डैः कनकचित्रैश्च विप्र

इस हेतु से आप मेरे हितको करते हुये वहां चलो जहांपर युधिष्ठिर है। ५ । हे माधवजी मैं युद्ध में अपने छोटे भाइयों समेत युधिष्ठिर को कुशल देखकर फिर आकर शत्रुओं से लडूंगा । ६ । यह सुनकर श्रीकृष्णजी शीघ्रही रथके द्वारा चले । ७ । जहां राजा युधिष्ठिर और महारथी सृञ्जय अपनी सेनासमेत मृत्युको हाथमें लिये परस्परमें युद्ध करतेथे । ८ । इसके पीछे मनुष्यों के नाशकाल वर्त्तमान होनेपर युद्धभूमिको देखतेहुये गोविन्दजी अर्जुनसे बोले । ९ । हे अर्जुन देखो कि दुर्योधनके कारणसे पृथ्वीपर क्षत्रियोंका और भरतवंशियों का महाघोर रुद्ररूप नाश वर्त्तमानहै । १० । हे धनुषधारी मरेहुये धनुषधारियोंके सुवर्णपृष्ठ वाले धनुष और बहुमूल्य टूटेहुये तूणीरोंको देखो । ११ । और सुनहरीपुंख युक्त टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंको तेलसे सफा कियेहुये कांचली से रहित सर्पोंकी समान नाराचों को देखो । १२ । हाथीदांत का बेंटा रखनेवाले सुवर्ण जटित खड्गोंको और टूटेहुये स्वर्णमयी कवचोंको देखो । १३ । सुवर्ण जटित प्रास और सुवर्ण भूषणों से अलंकृत शक्ति अथवा स्वर्णसूत्रोंसेखचित बड़ीगदाओंकोदेखो ।१४। सुवर्णसेजटितदुधारेखड्ग औरफर-

part of the day and none of the sons of Dhritrashtra are near to oppose me. Let us therefore go to Yudhishthir. 5. I shall come back again after seeing Yudhishthir. 5. I shall come back again after seeing Yudhishthir and other brother safe." At this, Shri Krishn drove the car to the place where Yudhishthir and the Srinjayas, careless of their lives, were fighting with the enemy. Seeing that great destruction, Govind said to Arjun:- "Look at the great destruction of warriors caused by Duryodhan. 10. The bows of the warriors with gold backs, the precious quivers and well-cleaned arrows are seen everywhere. The swords decked with gold, having ivory handles, and golden armours are scattered everywhere. Prasses, spears, maces,

विद्धान् परश्वधान्॥१५॥अयःकुन्तांश्च पतितान् मुसलानि गुरूणि च । शतघ्नीःपश्य
चित्राश्च विपुलान् परिघांस्तथा ॥ १६ ॥ चक्राणि चापविद्धानि तोमरांश्च महारणे।
नानाविधानि शस्त्राणि प्रगृह्य जयगृद्धिनः ॥ १७ ॥ जीवन्त इव दृश्यन्ते गतसत्वा
स्तरस्विनः । गदाविमथितैर्गात्रैर्मुसलैर्भिन्नमस्तकान् ॥ १८ ॥ गजवाजिरथक्षुण्णान्
पश्य योधान् सहस्रशः । मनुष्यहयनागानां शरशक्त्यृष्टिपट्टिशैः । निस्त्रिंशैः परिघैः
प्रासैरय कुन्तैः परश्वधैः ॥ १९ ॥ शरीरैर्बहुभिश्छिन्नैः शोणितौघपरिप्लुतैः । गता
सुभिरमित्रघ्न संवृता रणभूमयः ॥ २० ॥ बाहुभिश्चन्दनादिग्धैः साङ्गदैर्शुभभूषितैः ।
सतलत्रैः सकेयूरैर्भाति भारत मेदिनी ॥ २१ ॥ साङ्गुलित्रैर्भुजाग्रैश्च विप्रविद्धैरलंकृतैः
हस्तिहस्तोपमैश्छिन्नैरूरुभिश्च तरस्विनाम् ॥ २१ ॥ बद्धचूडामणिवरैः शिरोभिश्च
सकुण्डलैः । पतितैर्वृषभाक्षाणां विराजति वसुन्धरा । २३ ॥ कबन्धैः शोणितादिग्धै

सोंकोदेखो।१५। गिरेहुयेभारीमुशल छिन्नितशतघ्नी औरबड़ेपरिघोंकोदेखो। १६। इसमहायुद्धमेंटूटेचक्र और तोमरोंकोदेखो विजयाभिलाषी वेगवानयुद्धकर्त्तालोग नाना प्रकारकेशस्त्रोंसमेत मरेहुयेभी जीवतेहुये से विदितहोते हैं। १८। गदाओ से अंग भंग मुशलोंसे टूटे मस्तक हाथी घोड़े और रथों से घायल हजारों शूरवीरोंको देखो । १९। हे शत्रुहन्ता अर्जुन मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीर बाण, शक्ति, दुधारा, खड्ग, पट्टिश घोर रूप लोहे की परिघ असिकान्त, फरसा इत्यादि शस्त्रों से छिन्नरूप और बहुतसे मृतकरूप शरीरोंसे। २०। आच्छादित होकर चन्दन से लिप्त सुवर्ण के बाजुओं से अलंकृत हस्तत्राण वा केयूर रखनेवाली भुजाओं से पृथ्वी प्रकाशमान हुई। २१। हे भरतवंशी हस्तत्राण रखने वाले अत्यन्त अलंकृत और छिदीहुई उत्तम भुजा और हाथीकी सूंडके समान महावेगवानोंकी टूटी जंघा और उत्तम चूड़ामणि समेत कुण्डलधारी उत्तम नेत्रवाले वीरोंसमेत पड़े हुये शिरों से पृथ्वी महा शोभायमान होगई है। २१। हे भरतर्षभ रुधिरसे लिप्त अंग

swords; pattishes and axes are lying everywhere.15. Clubs, shataghnis, musals, broken wheels and tomars are lying on the ground along with the slain warriors who look alive even in death. With heads broken by maces, thousands of elephants, horses and warriors lie dead. The bodies of men, horses and elephants, wounded by arrows, axes, swords, clubs and other weapons as well as the arms of the warriors, decked with sandal paste and ornaments, beautify the field.21. The arms, decked with hand guards, pierced, the severed thighs like the trunks of elephants, and the heads of warriors with beautiful eyes, ear-rings and head jewels beautify the land. The bleeding bodies, with broken necks and limbs, made the ground look like a burnt forest. Look at the broken cars with golden bells and the horses dead or dying with wounds.25. Look at the different parts

दिछन्नगात्रशिरोधरैः । भूर्भाति भरतश्रेष्ठ शान्तार्चिर्भिरिवाग्निभिः ॥ १४ ॥ रथांश्च बहुधा भग्नान् हेमकिङ्किणिनः शुभान् । वाजिनश्च हतान् पश्य विनिकीर्णान् शरा हतान् ॥ २५ ॥ सानुकर्षानुपासङ्गान् पताका विविधध्वजान् । रथिनाञ्च महाशङ्खान् पाण्डरांश्च प्रकीर्णकान् ॥ २६ ॥ निरस्तजिह्वान् मातङ्गान् शयानन् पर्वतोपमान् । वैजयन्तीर्विचित्राश्च हतांश्च गजवाजिनः ॥ २७ ॥ वारणानां परिस्तोमांस्तथैव क्लिन्नकम्बलान् । विपाटितविचित्रांश्च चित्ररूपाः कुथास्तथा ॥ २८ ॥ भिन्नाश्च बहुवः घण्टा महाद्भिः पतितैर्गजैः । वैदूर्य्यदण्डांश्च शुभान् पतितानङ्कुशान् भुवि ॥२९॥ बद्धाः सादिभुजाग्रेषु सुवर्णविकृताः कशाः ॥ ३० ॥ विचित्रमणिचित्रांश्च जात रूपपरिष्कृतान् । अश्वास्तरपरिस्तोमान् राङ्कवान् पतितान् भुवि॥३१॥चूड़ामणीन्नरे न्द्राणां विचित्राः काञ्चनस्रजः । छत्राणि चापविद्धानि चामरव्यजनानि च ॥ ३२ ॥ चन्द्रनक्षत्रभासैश्च वदनैश्चारुकुण्डलैः । क्लृप्तश्मश्रुभिरत्यर्थं वीराणां समलंकृतैः ॥३३॥

जिनकी ग्रीवा टूटीहुई इनसब नानाअंगोंसे पृथ्वी ऐसी प्रकाशित हुई जैसे कि शांत ज्योतिवाली अग्नियों से बनशोभित होता है । २४ । और सुनहरी घण्टे रखनेवाले बहुत प्रकार से टूटेहुये शुभरथों से व्याप्त बाणों से घायल मृतक वा व्याकुल पड़े हुये आनन्दवाले घोड़ोंको देखो । २५ । अनुकर्ष उपासंग पताका और नाना प्रकारकी ध्वजाओंको देखो रथी लोगोंके बड़े शंखश्वेत चामर और जिनकी जिह्वा बाहर निकल पड़ीं उन पर्वताकार सोतेहुये हाथियों को देखो वैजयन्तीमाला व रथके विचित्र मृतक घोड़े वा हाथियों के परिस्तोम मृगचर्म और कम्बलोंको देखो विचित्र चांदी से जड़े हुये अंकुश और बड़े हाथियों समेत गिरकर टूटे घंटोंको देखो वैडूर्य्य मणियों से जटित सुन्दर दण्ड युक्त गिरे हुये शुभ अंकुश और सवारोंकी भुजाओं में बंधेहुये सुवर्ण जटित चाबुकों को देखो । ३० । विचित्र मणियों से जटित सुवर्ण से अलंकृत रांकवान मृगचर्म से बनेहुये पृथ्वीपर पड़ेहुये घोड़ों के स्तर परिस्तोमों को देखो । ३१ । राजाओंकी चूड़ामणि व विचित्र स्वर्णमयी माला वा टूटेहुये छत्र चामर और व्यजनों को देखो । ३२ । चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशमान सुन्दर कुंडलधारी दाढ़ी मूछोंसे अलंकृत सब संयुक्त वीरोंके मुखों से । ३३ । दकीहुई रुधिररूप कीचवाली पृथ्वीको देखो

of cars and banners. Look at the large conchs of the car-warriors and the huge elephants lying with their tongues out. Look at the garlands, the wonderful horses of the cars slain, the trappings of elephants, deer skins and blankets. Look at the wonderful silver goads and the broken bells of the dead elephants. Look at the beautiful handles of the goads decked with lapis lazuli and the golden whips tied to the arms of the horsemen,30 Look at the golden trappings of horses, made of the best deer skins and furs. Look at the head jewels, golden garlands, the broken umbrellas, chamars and

चोदयत् ॥ ४२ ॥ तां युद्धभूमिं पार्थस्य दर्शयित्वा च माधवः । त्वरमाणस्ततः कृष्णः पार्थमाह शनैरिदम् ॥४३॥ पश्य कौरवराजानमुपयातांश्च पार्थिवान्। कर्णं पश्य महारङ्गे ज्वलन्तमिव पावकम् ॥ ४४॥ असौ भीमो महेष्वासः सन्निवृत्तो रणं प्रति । तमेते विनिवर्त्तन्ते धृष्टद्युम्नपुरोगमाः। पाञ्चालसृञ्जयाश्चापि पाण्डवानां च ये मुखम् ॥ ४६ ॥ निवृत्तैश्च पुनः पार्थैर्भग्नं शत्रुबलं महत् । कौरवान् द्रवतो ह्येष कर्णो वारयतेऽर्जुन ॥ ४७ ॥ अन्तकप्रतिमो वेगे शक्रतुल्यपराक्रमः । असौ गच्छति कौरव्य द्रौणिः शस्त्रभृतांवर ॥ ४८ ॥ तमेव प्रद्रुतं संख्ये धृष्टद्युम्नो महारथः । अनुप्रयाति संग्रामे हतान् पश्य च सृञ्जयान् ॥ ४९ ॥ सर्वमाह सुदुर्द्धर्षो वासुदेवः किरीटिने । ततो राजन् प्रादुरासीन्महाघोरो महारणः ॥ ५० ॥ सिंहनादरवाश्चैव प्रादुरासन् समागमे । उभयोः सेनयो राजन् मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ५१ ॥ एवमेष क्षयो वृत्तः पृथि

ऐसा शीघ्रता करनेवाले माधव श्रीकृष्णजी ने वह युद्धभूमि अर्ज्जुनको दिखाकर बड़ी धैर्यता से अर्ज्जुनसे यह वचन कहा । ४३ । कि हे अर्ज्जुन राजा युधिष्ठिर को और सम्मुख जानेवाले राजाओं को देखो और महायुद्धमें अग्नि के समान क्रोधरूप कर्णकोभी देखो । ४४ । यह बड़ाधनुषधारी भीमसेन युद्धमेंलौटाहैपांचाल सृञ्जी और जो पाण्डवों के उत्तम गिनेजाते हैं जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न है वह सब उस भीमसेनके संगमें लौटते हैं । ४६ । और उस लौटनेवाले पांडव भीमसेनसे शत्रुओंकी बड़ीसेना फिर पराजय हुई है अर्जुन यह कर्ण भागनेवाले कौरवोंको रोकताहै । ४७ । हे कौरव्य वेगमें यमराज के समान और इन्द्रके सदृश पराक्रमी शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ यह अश्वत्थामाभी जाताहै । ४८ । महारथी धृष्टद्युम्नयुद्धमें उस भागनेवाले के पीछे जाताहै और युद्धमें मरेहुये सृंजियोंको देखो । ४९ । महाअजेय वासुदेवजीने इसरीतिसे इससब वृत्तान्तको अर्जुनसे कहा हे राजा इसकेपीछे महाघोर युद्ध जारीहुआ । ५० । तब मृत्युको निश्चय करके दोनों सेनाओं के समागम होनेमें दोनों ओरको सिंहनादों के महान् शब्द होनेलगे । ५१ । हे पृथ्वीपति राजा धृतराष्ट्र आपके दुर्मंत्रों से पृथ्वीपर आपके और अन्यों के शूरवीरों का इसरीति

ing shown the field of battle to Arjun, Shri Krishn again said, "Look at Yudhishthir and other fighting warriors. Look at Karan who is enraged like fire. The great archer Bhim is coming back to the field of battle. The Panchals, the Srinjayas and the other good warriors of the Pandavas, led by Dhrishtadyumn, are coming back with Bhim. Bhim has again routed the Kauravas. There goes Ashwathama like Yamraj or Indra in prowess. Brave Dhrishtadyumn is chasing him. Look at the Srinjayas slain. " Invincible Govind, was thus talking to Arjun, while a dreadful fighting began. The roars of the warriors of both sides were heard during their encounter. Thus the destruction of your warriors and those of the Pandavas began on

र्वां पृथिवीपते। तावकानां परेषाञ्च राजन् दुर्मन्त्रिते तव ॥ ५२ ॥

इति कर्णपर्वणि कृष्णवाक्ये अष्टपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

सञ्जय उवाच। ततः पुनः समाजग्मु रभीताः कुरुसृञ्जयाः। युधिष्ठिरमुखाः पार्थाः सूतपुत्रमुखा वयम् ॥ १ ॥ ततः प्रववृतेभीमः संग्रामो लोमहर्षणः। कर्णस्य पाण्डवानाञ्च यमराष्ट्रविवर्द्धनः ॥ २ ॥ तस्मिन् प्रवृत्ते संग्रामे तुमुले शोणितोदके संशप्तकेषु शूरेषु किञ्चिच्छिष्टेषु भारत ॥ ३ ॥ धृष्टद्युम्नो महाराज सहितःसर्वराजभिः कर्णमेवाभिदुद्राव पाण्डवाश्च महारथाः ॥ ४ ॥ आगच्छमानांस्तान् संख्ये प्रहृष्टान्

से नाश जारी हुआ ५२ ॥

अध्याय ॥ ५९ ॥

संजयबोले कि इसके पीछे निर्भय कौरव सृञ्जी और युधिष्ठिरको अग्रगामी करनेवाले पाण्डव और कर्णको अग्रगामी करनेवाले हमलोग फिर भिड़गये। १। उससमय कर्ण और पाण्डवोंका वहयुद्ध फिरजारीहुआ जो भयकारी रोमहर्षण करनेवाला यमराज के देशकी वृद्धि करनेवाला था। २। हे भरतवंशी उसकठिन रुधिररूप जल रखनेवाले युद्ध के जारीहोनेपर और शूरवीर संसप्तकों के कुछबाकी रहनेपर। ३। धृष्टद्युम्न और महारथी पाण्डव सब राजाओं समेत कर्णके सम्मुख गये तब अकेले कर्णने युद्धमें आनेवाले प्रसन्नचित्त विजयाभिलाषी उन वीरोंको

account of your evil policy, O king. "25.

CHAPTER LIX

Sanjaya said, " The the intrepid Kauravas and Srinjayas, led by Yudhishthir, and our warriors led by Karan again met in battle. The battle was dreadful, increasing the region of Yam. When the bloody battle was being fought and only a small part of the Sansaptak army was left, Dhrishtadyumn and the Pandav warriors faced Karan alone bore them as a mountain does a storm of rain.

विजयेऽरिघ्नः । दधारैको रणे कर्णो जलौघानिव पर्वतः ॥ ५ ॥ समासाद्य तु ते कर्णं
व्यशीर्यन्त महारथाः । यथाचलं समासाद्य वार्योघाः सर्वतोदिशम् ॥ ६ ॥ तयो
रासीन्महाराज संग्रामो लोमहर्षणः । धृष्टद्युम्नस्तु राधेयं शरेण नतपर्वणा ॥ ७ ॥
ताडयामास समरे तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् । विजयञ्च धनुः श्रेष्ठं विधुन्वानो महारथः
॥ ८ ॥ पार्षतस्य धनुश्छित्त्वा शरांश्चाशीविषोपमान् । ताडयामास संक्रुद्धः पार्षतं
नवभिः शरैः ॥ ९ ॥ ते वर्म हेमविकृतं भित्त्वा तस्य महात्मनः । शोणिताक्ता व्यराजन्त
शक्रगोपा इवानघ ॥ १० ॥ तदपास्य धनुश्छिन्नं धृष्टद्युम्नो महारथः । अन्यद्धनु
रुपादाय शरांश्चाशीविषोपमान् । कर्णं विव्याध सप्तत्या शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ११ ॥
तथैव राजन् कर्णोऽपि पार्षतं शत्रुतापनम् । छादयामास समरे शरैराशीविषोपमैः
॥ १२ ॥ द्रोणशत्रुर्महेष्वासो विव्याध निशितैः शरैः ॥ १३ ॥ तस्य कर्णो महाराज शरं
कनकभूषणम् । प्रेषयामास संक्रुद्धो मृत्युदण्डमिवापरम् ॥ १४ ॥ तमापतन्तं सहसा

ऐसे धारणकिया जैसे कि जलके समूहोंको पर्व्वत धारण करताहै । ५ । वहसब महारथी कर्णको पाकर ऐसे छिन्नभिन्नहोगये जैसे कि जलकेसमूह पर्व्वतको पाकर इधर उधर दिशाओं को चलेजाते हैं । ६ । हे महाराज इसके पीछे रोमहर्षण करने वाला युद्ध होनेलगा तब धृष्टद्युम्नने कर्णको टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे घायलकिया और तिष्ठ तिष्ठ कहा विजयनाम उत्तम धनुषको और विषैले सर्पों के समान बाणोंको काटकर अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर नौबाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल किया । ९ । हे निष्पाप वह कर्णके बाण उस महात्माके सुनहरी कवचको छेदकर रुधिरमें भरेहुये बीरबहूटी के समान शोभायमान हुये । १० । महारथी धृष्टद्युम्न ने उस टूटेहुये धनुषको डालकर दूसरे धनुष और विषैले सर्पकी समान बाणोंको लेकर टेढ़े पर्व्व वाले सत्तर बाणोंसे कर्णको पीड़ामान किया । ११ । और उसी प्रकार कर्णनेभी युद्धमें शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको विषैले सर्पके समान बाणोंसे ढकादिया । १२ । फिर द्रोणाचार्य्य के शत्रु बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से पीड़ामान किया । १३ । हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने सुनहरी भूषण युक्त द्वितीय यमदण्डके समान बाणको उसके ऊपरफेंका । १४। हस्तलाघवकरने वाले सात्यकी

They were dispersed before him like water falling over a hill. 6. When the battle was severe, Dhrishtadyumn wounded Karan. Drawing up his bow, known as Vijaya, Karan cut his bow and arrows and wounded him with nine darts, which pierced his armour and came out blood stained. 10. Dhrishtadyumn threw aside the broken bow and wounded Karan with seventy arrows. Karan too, hid him with his darts. Again his adversary wounded him. Then Karan shot at him a gold-decked arrow like a serpent. Satyaki cut it into seven parts. Seeing this Karan hid Satyaki with his arrows and wounded him with seven darts. Satyaki too, wounded him with arrows. Then the battle

घोररूपं विशाम्पते । चिच्छेद सप्तधा राजन् शैनेयः कृतहस्तवत् ॥१५॥ शरं तु तं विनि
हतं दृष्ट्वा शरैः कर्णो विशाम्पते । सात्यकिं शरवर्षेण समन्तात् पर्यवारयत् ॥१६॥
विव्याध चैनं समरे नाराचैस्तत्र सप्तभिः । तमप्यथ विव्यधे शैनेयः शरैर्हेमविभूषितैः
॥१७॥ ततो युद्धं महाराज चक्षुःश्रोत्रभयावहम् । आसीद्रौद्रं च चित्रं च प्रेक्षणीयं
समन्ततः ॥१८॥ सर्वेषां तत्र भूतानां रोमहर्षोऽभ्यजायत । तदृष्ट्वा समरे कर्म
कर्णशैनेययोर्नृप ॥१९॥ एतस्मिन्नन्तरे द्रौणिरभ्ययात् सुमहाबलः । पार्षतं शत्रुदमनं
शत्रुवीर्यासुनाशनम् ॥२०॥ अभ्यभाषत संक्रुद्धो द्रौणिः परपुरञ्जयः । तिष्ठ
तिष्ठाद्य ब्रह्मघ्न न मे जीवन् विमोक्ष्यसे ॥२१॥ इत्युक्त्वा सुभृशं वीरं शीघ्रकृन्नि
शितैः शरैः । पार्षतं छादयामास घोररूपैः सुतेजनैः ॥२२॥ यतमानं परं शक्त्या
यतमानो महारथः । यथा हि समरे द्रोणः पार्षतं वीक्ष्य मारिष ॥२३॥ तथा द्रौणिं

ने बल अकस्मात् आनेवाले घोररूप बाणको सात टुकड़े किया । १५ । तब कर्ण ने बाणको कटाहुआ देखकर सात्यकिको बाणोंकी वर्षा करके चारों ओर से ढकदिया । १६ । और सात नाराचों से पीड़ामानभी किया इसके पीछे सात्यकि ने भी सुवर्णजटित बाणों से उसको छेदा । १७ । हे महाराज इसके पीछे घोरयुद्ध हुआ वह युद्ध नेत्र और कर्णोंको भयभीत करनेवाला महाअद्भुत चारोंओरसे देख नेकेही योग्य था । १८ । हे राजा वहां कर्ण और सात्यकिके उस कर्मको देखकर सब जीवोंके रोमांच खड़ेहोगये । १९ । इसी अन्तरमें अश्वत्थामाजी बड़ेपराक्रमी वह धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये जोकि शत्रुओं का विजय करनेवाला और पराक्रम समेत प्राणोंका हरनेवाला था । २० । शत्रुके पुरके विजय करनेवाले और अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा जी बोले कि हे ब्राह्मणके मारनेवाले ठहरोठहरो अब मुझ से बचकर जीवानहीं बचसक्ता । २१ । यह कहकर शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने तीक्ष्णधार घोररूप सुन्दर तेजवाले बाणों से वीर धृष्टद्युम्न को अत्यन्त वेगसे ढकदिया । २२ । हे श्रेष्ठ जैसे कि महारथी द्रोणाचार्य्य जी युद्ध में उपाय करने वाले धृष्टद्युम्न को देखकर बड़ेपरिश्रमसे उपाय करनेवाले हुये । २३ । उसीप्रकार

was terrible to the eye and ear and wonderful to look at. The hair of the lookers-on stood on end. In the mean time Ashwathama faced Dhrishtadyumn the destroyer of foes. 20. Ashwathama the conquerer of foes said, "Stay, slayer of Brahman. You cannot scape from me." Having said this, he hid his adversary with arrows. Dhrishtadyumn was not pleased with the encounter of Ashwathama and was in the same mood of mind as Drona, when he fought with him. He thought that his end was near and fought dejectedly. But knowing himself to be unslayable with weapons he faced Ashwathama like Deah

रणेदृष्ट्वा पार्षतः परवीरहा । नातिहृष्टमना भूत्वा ज्ञातवान् मृत्युमात्मनः ॥ २४ ॥ स
दृष्ट्वा समरेऽत्मान शस्त्रेणावध्यमेव तु । जवेनाभ्यद्रवद्द्रौणिं कालः कालमिव क्षये
। २५ ॥ द्रौणिस्तु दृष्ट्वा राजेन्द्र धृष्टद्युम्नमवस्थितम् । क्रोधेन निश्वसन् वीरः पार्षतं
समुपाद्रवत् । तावन्योऽन्यस्तु दृष्ट्वैव संरम्भं जग्मतुः परम् ॥ २६ ॥ अथाब्रवीन्महा
राज द्रोणपुत्र, प्रतापवान् । धृष्टद्युम्नं समीपस्थं त्वरमाणो विशाम्पते ॥ २७ ॥ पांचा
लापसद् यत्त्वां प्रेषयिष्यामि मृत्यवे ॥ २८ ॥ पापंहि यत्त्वया कर्म घ्नता द्रोणं पुरा
कृतम् । अद्य त्वां तप्स्यते तद्वै यथा न कुशलं तथा ॥ २९ ॥ अरक्ष्यमाणः पार्थेन यदि
तिष्ठसि संयुगे । नापक्रामसि वा मूढ सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ३० ॥ एवमुक्तः प्रत्युवाच
धृष्टद्युम्नः प्रतापवान् ॥ ३० ॥ प्रतिवाक्यं स एवासिर्मामको दास्यते तव । येनैव ते
पितुर्दत्तं वर्तमानस्य संयुगे ॥ ३१ ॥ यदि तावन्मयाद्रोणो निहतो ब्राह्मणब्रुवः । स्वा

शत्रुओं के वीरोंके मारनेवाले धृष्टद्युम्नने युद्धमें अश्वत्थामाको देखकर कुछअप्रसन्न होकर अपनी मृत्युकोमाना । २४ । फिर वह युद्धमें अपनेको शस्त्रसे अवध्य जानकर बड़ी तीव्रतासे अश्वत्थामाके सम्मुख ऐसेगया जैसे कि प्रलयकाल में काल कालके सम्मुख जाता है । २५ । हे महाराजेन्द्र फिर वीर अश्वत्थामा अपने सम्मुख धृष्टद्युम्नको देखकर क्रोधसे श्वासलेताहुआ उसके सम्मुखगया और उन दोनों ने परस्पर देखकर बड़ा क्रोधकिया । २६ । हे महाराज राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला प्रतापवान् अश्वत्थामा सम्मुख होनेवाले धृष्टद्युम्न से बोले । २७ । हे पांचालदेशियों में नीच अब मैं तुझको मृत्युके समीप भेजूंगा । २८ । जो कि पूर्वसमय में तुमने द्रोणाचार्य्य को मारकर पापकर्म किया है अब वह पापका फल तुझको ऐसा मिलेगा जिसमें तेराकल्याण न होगा । २९ । हे अज्ञान जो तू अर्जुनसे अरक्षितहोकर युद्धमें नियतहोताहै वा नहीं हटताहै इसीसे सत्य २ तेरा कल्याण नहीं है यह वचन सुनकर प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने उत्तर दियाँ । ३० । कि मेरा वहीखड्ग तेरे उत्तरकोदेगा जिसने कि युद्धमें उपाय करनेवाले तेरेपिताको उत्तर दिया था । ३१ । नाममात्र अपनेको ब्राह्मण कहनेवाले द्रोणाचार्य्यजी मेरे हाथसे मारेगये अब युद्धमें अपने पराक्रम से तुझको भी क्यों न मारूंगा

encountering Death at pralaya. 25. Seeing Dhrishtadyumn before him, Ashwathama faced him with deep sighs. Both were enraged at the sight of each other. Then Ashwathama said to his adeversary, "Worst of Panchals, I shall send you to the region of Death. You will reap the punishment of slaying Drona, if you are not protected by Arjun or if you donot run away. To this Dhirshtadymn replied, "My sword, which slew thy father, will reply you. Drona, a Brahman in name, was slain by me and I shall not spare your life." Having said

मिद्यामी कथं युद्धे न हनिष्यामि विक्रमात् ॥ ३२ ॥ एवमुक्त्वा महाराज सेनापति रमर्षणः। निशितेनाथ भागेन द्रौणिं विव्याध पार्षतः ॥ ३३ ॥ ततो द्रौणिः सुसंक्रुद्धः शरैः सन्नतपर्वभिः । आच्छादयद्दिशो राजन् धृष्टद्युम्नस्य संयुगे ॥ ३४ ॥ नैवान्तरीक्षं न दिशो नापि योधाः समन्ततः। दृश्यन्त वै महाराज शरैश्छन्नाः सहस्रशः ॥ ३५ ॥ तथैव पार्षतो राजन् द्रौणिमाहवशोभिनम्। शरैः प्रच्छादयामास सूतपुत्रस्य पश्यतः ॥ ३६ ॥ राधेयोऽपि महाराज पाञ्चालान् सह पाण्डवैः। द्रौपदेयान् युधामन्युं सात्यकिञ्च महारथम् । एकः संवारयामास प्रेक्षणीयः समन्ततः ॥ ३७ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु समरे द्रौणेश्छिच्छेद कार्मुकम्। वेगवत् समरे घोरं शरांश्चाशीविषोपमान् ॥ ३८ ॥ स पार्षतस्य राजेन्द्र धनुः शक्तिं गदां ध्वजम् । हयान् सूतं रथश्चैव निमिषाद्व्यधमच्छरैः ॥ ३९ ॥ स छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः खड्गमादत्त विपुलं शतचन्द्रञ्च भानुमत् ॥ ४० ॥ द्रौणिस्तदपि राजेन्द्र भल्लैः

। ३२ । हे महाराज क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्न ने ऐसा कहकर अत्यन्त तीक्ष्ण बाण से अश्वत्थामाको घायलकिया । ३३ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे युद्धमें धृष्टद्युम्नकी दिशाओं को ढकादिया । ३४ । उस समय चारों ओर से बाणों से ढकेहुये न शूरवीर दिखाई दिये न दिशा विदिशा समेत अन्तरिक्ष दिखाई दिया हेराजा इसीप्रकार धृष्टद्युम्न ने भी युद्धमें शोभादेनेवाले अश्वत्थामा को कर्णके देखतेहुये बाणोंसे ढकादिया । ३६ । फिर चारों ओर से देखने के योग्य अकेले कर्णनेभी पांचाल पांडव द्रौपदी के पुत्र युधामन्यु और महारथीसात्यकि को रोका । ३७। फिर धृष्टद्युम्नने युद्धमें अश्वत्थामाके धनुषको काटा तब वेगवान अश्वत्थामाने उसको डाल दूसरे धनुषको लेकर घोरजंग में विषैले सर्पोंकी समान बाणोंको फेंका फिर उसने धृष्टद्युम्नकी गदा शक्ति धनुष ध्वजा रथ सारथी और घोड़ोंको बाणों से एक क्षणमात्र में मारा । ३९ । तब उस धनुष रथ गदा शक्ति रथ ध्वजा टूटेहुये धृष्टद्युम्नने बड़े खड्ग और सौ चन्द्रमा रखने वाली ढालको लिया । ४० । हे राजेन्द्र तब हस्तलाघवी वीर अश्वत्थामा ने शीघ्रही अपने भल्लों से रथसे न उतरने वाले धृष्टद्युम्न के उसखड्ग को भी काटा यह बड़ा

this, enraged Dhrishtadyumn wounded Ashwathama with sharp arrows. 33. Nothing except arrows was seen on all sides. Dhrishtadymn too, covered Ashwathama with arrows. 36. Karan alone checked the Panchals, the sons of Draupadi, Yudhamanyu and Satyaki. Then Dhrishtadyumn cut the bow of Ashwathama. The latter put it down and taking up another bow, discharged from it arrows like serpents. He then cut down the bow, spear, mace, standard, car, driver and horses in an instant. Dhrishtadyumn took up his sword and shield: 40. Ashwathama cut his sword also, before he could

क्षिप्रं महारथः । चिच्छेद समरे धीरः क्षिप्रहस्तो दृढायुधः । रथादनवरूढस्य तदद्भुत
मिवाभवत् ॥ ४२ ॥ धृष्टद्युम्नन्तु विरथं हताश्वं छिन्नकार्मुकम् । शरैश्च बहुधा
विद्धमस्त्रैश्च शकलीकृतम् ॥ ४३ ॥ नाशकद्भरतश्रेष्ठ यतमानो महारथः ॥ ४४ ॥
तस्यान्तमिषुभी राजन् यदा द्रौणिर्न जग्मिवान् । अथ त्यक्त्वा धनुर्वीरः पार्षतं त्वरि
तोऽन्वगात् ॥ ४५ ॥ आसीदाद्रवतो वेगस्तस्य राजन्महात्मनः । गरुडस्येव पततो
जिघृक्षोः पन्नगोत्तमम् ॥ ४६ ॥ एतस्मिन्नेव काले तु माधवोऽर्जुनमब्रवीत् ॥४७॥
पश्य पार्थ यथा द्रौणिः पार्षतस्य रथं प्रति । यत्नं करोति विपुलं हन्यादेनं न संशयः
॥ ४८ ॥ तं मोचय महाबाहो पार्षतं शत्रु कर्षण । द्रौणेरास्यमनुप्राप्तं मृत्योरास्य
गतं यथा ॥ ४९ ॥ एवमुक्त्वा महाराज वासुदेवः प्रतापवान् । प्रैषयत्तुरगांस्तत्र
यत्र द्रौणिर्व्यवस्थितः ॥ ५० ॥ ते हयाश्चन्द्रसङ्काशाः केशवेन प्रचोदिताः । आपि
बन्त इव व्योम जग्मुर्द्रौणिरथं प्रति ॥ ५१ ॥ दृष्ट्वायान्तौ महावीर्य्यौ तावुभौ कृष्ण
धनञ्जयौ । धृष्टद्युम्नवधे यत्नमकरोत् स महाबलः ॥ ५२ ॥ विकृष्यमाणं दृष्ट्वैव

आश्चर्यसा हुआ । ४२ । हे भरतर्षभ फिर उपाय करनेवाला महारथी उस रथ गदा शक्ति खड्ग आदि से रहित बाणों से अत्यन्त घायल धृष्टद्युम्न को न मारसका हे राजा जब अश्वत्थामा बाणोंसे उसको न मारसका तब वहवीर धनुष को त्यागकर धृष्टद्युम्नकी ओरको चला । ४५ । और उससमय हे महाराज उस महात्मा भ्रमरहित अश्वत्थामाका इसप्रकारका हुआ जैसेकि उत्तम सर्पके भक्षण करनेवाले गरुड़का वेगहोताहै । ४६ । उसीसमय श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले । ४७ । हे अर्जुन देखो कि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके रथपर बड़े उपायों को करताहै वह निस्सन्देह इसको मारेगा । ४८ । हे शत्रुओं के विजय करनेवाले महाबाहु जैसे हो सके वैसे अश्वत्थामारूप मृत्युके मुखमें फँसहुये धृष्टद्युम्नको निश्चयकरके छुटाओ । ४९ । हे महाराज ऐसाकहकर प्रतापवान् वासुदेवजीने घोड़ोंको वहां पहुँचाया वहां कि अश्वत्थामा नियतथे । ५० । केशवजीके हांकेहुये वह चन्द्रवर्ण घोड़े आकाशगामी होकर अश्वत्थामाके रथपरपहुँचे । ५१ । हे राजा महापराक्रमी अश्वत्थामाने उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर धृष्टद्युम्नके मारनेमें उपाय किया । ५२ । तब बड़े पराक्रमी अर्जुनने खिंचे हुये धृष्टद्युम्नको देखकर

come down from the car, to the amazement of all; but in spite of destroying all his weapons and car, he could not slay Dhrishtadyumn. Not being able to slay Dhrishtadyumn with arrows, Ashwathama left his bow and rushed at him as a garur does towards a serpent. Then Shri Krishn said to Arjun, "Look at Ashwathama who is coming with great speed to slay Dhrishtadyumn. You must save the latter from the former." Having said this, Vasudev drove the car towards Ashwathama. 50. Driven by him, the silver white horses reached Ashwathama's car in a moment. Seeing Krishn and

धृष्टद्युम्नं जनेश्वर । शरांश्चिक्षेप वै पार्थो द्रौणिं प्रति महाबलः ॥ ५३ ॥ ते भास्वरा हेमविकृता गाण्डीवप्रेषिता भृशम् । द्रौणिमासाद्य विविशुर्वल्मीकमिव पन्नगाः ॥५४॥ स विद्धस्तैः शरैर्घोरैर्द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । उत्सृज्य समरे राजन् पाञ्चाल्यसमितो जसम् ॥ ५५ ॥ रथमारुरुहे वीरो धनञ्जयशरार्दितः । प्रगृह्य च धनुः श्रेष्ठं पार्थं विव्याध सायकैः ॥ ५६ ॥ एतस्मिन्नन्तरे वीरः सहदेवो जनाधिप । अपोवाह रथे नाजौ पार्षतं शत्रुतापनम् ॥ ५७ ॥ अर्जुनोऽपि महाराज द्रौणिं विव्याध पत्रिभिः । तं द्रोणपुत्रः संक्रुद्धो बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ ५८ ॥ क्रोधितस्तु रणे पार्थो नाराचं कालसम्मितम् । द्रोणपुत्राय चिक्षेप कालदण्डमिवापरम् । ब्राह्मणस्यांसदेशेस निपपात महाद्युतिः ॥ ५९ ॥ स विह्वलो महाराज शरवेगेन संयुगे । निषसाद् रथोपस्थे वैक्लव्यञ्च परं ययौ ॥ ६० ॥ ततः कर्णो महाराज व्याक्षिपद्विजयं धनुः । अर्जुनं समरे क्रुद्धः प्रेक्षमाणो मुहुर्मुहुः । द्वैरथञ्चापि पार्थेन काम

बाणों को अश्वत्थामाके ऊपर फेंका । ५३। गांडीवधनुषसे चलायेहुये वह स्वर्णमयी बाण अश्वत्थामाको पाकर उसके शरीर में ऐसे प्रवेशकरगये जैसे कि सर्प बामी में घुसतेहैं । ५४ । हेराजा उनबाणोंसे घायल और पीड़ावान् वीर अश्वत्थामा युद्धमें बड़े तेजस्वी धृष्टद्युम्नको छोड़कर रथपर सवारहुये।५५।और अर्जुनके बाणोंसे पीड़ितहोकर उत्तमधनुषको लेकर शायकों से अर्जुनको घायल किया । ५६ । इसी अन्तर में वीरसहदेव युद्धभूमि में शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको रथ में बैठाकर दूर लेगया । ५७ । हे महाराज!फिरतो अर्जुनने भी अश्वत्थामा को बाणोंसे पीड़ित किया फिर बड़े क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने अर्जुनको दोनों भुजा और छातीपर घायल किया । ५८ । फिर क्रोधयुक्त अर्जुन ने युद्धमें कालके समान दूसरे कालदण्डके समान नाराचनाम बाणको अश्वत्थामाके ऊपरफेंका वह बड़ातेजस्वी बाण उसब्राह्मण अश्वत्थामा के कन्धेपरगिरा।५९।तबबाणके वेगसे व्याकुलहोकर अश्वत्थामा रथके बैठनेके स्थानपर बैठगया और महाव्याकुलताको पाया । ६० । हे महाराज इसकेपीछे कर्णने अपने विजयनाम धनुषको टंकारा युद्धमें क्रोधयुक्त होकर बारम्बार;अर्जुनको देखनेवाले

Arjun come towards him, Ashwathama tried to slay ;them. Arjun discharged his arrows at Ashwathama and they entered his body like serpents in ant hills. Wounded by them, brave Ashwathama left Dhrishtadyumn and riding on his car began shooting arrows at Arjun. In the mean time, brave Sahadev took Dhrishtadyumn on his car and took him far away from the scene of action. Arjun and Ashwathama wounded each other with arrows. Arjun shot at his adversary an arrow like the staff of Yam. It fell down on his shoulder and he swooned on his seat. 60. Then Karan twanged his bow, named Vijaya, and desirous of fighting with Arjun, he took

यामो महारणे ॥ ६१॥ विह्वलं तन्तु वीक्ष्याथ द्रोणपुत्रस्य सारथिः । अपोवाह रथे नाजौ त्वरमाणो रणाजिरात् ॥ ६२ ॥ अथोत्क्रुष्टं महाराज पाञ्चालैर्जितकाशिभिः मोक्षितं पार्षतं दृष्ट्वा द्रोणपुत्रञ्च पीडितम् ॥ ६३ ॥ वादित्राणि च दिव्यानि प्रादघ्नन सहस्रशः । सिंहनादांश्च चक्रुस्ते दृष्ट्वा संख्ये तदद्भुतम् । ६४ ॥ एवं कृत्वाब्रवीत् पार्थो वासुदेवं धनञ्जयः । याहि संशप्तकान् कृष्ण कार्यमेतत् परं मम ॥ ६५ ॥ ततः प्रयातो दाशार्हः श्रुत्वा पाण्डभाषितम् । रथेनातिपताकेन मनोमारुतरंहसा ॥ ६६ ॥

इति कर्णपर्वणि द्रौण्यपयाने एकोन षष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

और अर्जुनसे युद्धमें द्वैरथ युद्ध करने के अभिलाषी कर्ण ने धनुष को टंकारकर । ६१ । युद्धभूमि में शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामाको व्याकुल देखके रथकेद्वारा युद्धभूमिसे दूर लेगया । ६२ । हे महाराज धृष्टद्युम्नको छुटाहुआ और अश्वत्थामा को अचेतता पूर्वक व्याकुल देखकर विजय से शोभायमान पांचालों ने बड़े शब्दकिये ।६३ । हजारोंदिव्य बाजेबजे और युद्धमें उसअद्भुतपनेको देखकरशूरवीरों ने सिंहनाद किये । ६४। पाण्डव अर्जुन ऐसा कर्मकरके वासुदेवजी से बोलाकि हे श्रीकृष्णजी आप संसप्तकों के सम्मुखचलो यहमेरा बड़ा कामहै । ६५ । अर्जुन के वचनकोंसुनकर श्रीकृष्णजी बड़ीपताकावालेमन और वायुकेसमान शीघ्रगामीरथकी सवारीसे चलदिये ६६ ॥

Ashwathama far away from the scene of action. Seeing Dhrishtadyumn rescued and Ashwathama removed, the Panchals cried out in glee. The cries of the warriors were mingled with the sounds of musical instruments. Having done that deed of bravery, Arjun said to Vasudev, "Take me before the Sansaptaks. My work lies with them." At this Shri Krishn drove the horses swift like the mind or wind." 66.



सञ्जय उवाच । एतस्मिन्नन्तरे कृष्णः पार्थं वचनमब्रवीत् । दर्शयन्निव कौन्तेयं धर्मराजं युधिष्ठिरम् ॥ १ ॥ एष पाण्डव ते भ्राता धार्त्तराष्ट्रैर्महाबलैः । जिघांसुभिर्महेष्वासैर्द्रुतं पार्थोऽनुसार्य्यते ॥ २ ॥ तथानुयान्ति संरब्धाः पाञ्चाला युद्धदुर्मदाः । युधिष्ठिरं महात्मानं परीप्सन्तो महाबलाः ॥ ३ ॥ एष दुर्य्योधनः पार्थ रथानीकेन दंशितः । राजा सर्वस्य लोकस्य राजानमनुधावति ॥ ४ ॥ जिघांसुः पुरुषव्याघ्र भ्रातृभिः सहितो बली । आशीविषसमस्पर्शैः सर्वयुद्धविशारदैः ॥ ५ ॥ एते जिघृक्षवो यान्ति द्विपाश्वरथपत्तयः । युधिष्ठिरं धार्त्तराष्ट्रा रत्नोत्तममिवार्थिनः ॥ ६ ॥ पश्य सात्वतभीमाभ्यां निरुद्धा विष्ठिताः पुनः । जिहीर्षवोऽमृतं दैत्याः शक्राग्निभ्यामिवावशाः ॥ ७ ॥ एते बहुत्वात्त्वरिताः पुनर्गच्छन्ति पाण्डवम् । समुद्रमिव वार्य्योघाः प्रावृट्काले

अध्याय ६० ॥

संजय बोले कि इसी अन्तरमें कुन्तीकेपुत्र धर्मराजा युधिष्ठिरको दिखातेहुये श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यह बचन कहा हे पाण्डव बड़े पराक्रमी मारने के इच्छावान महाधनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों से यह तेराभाई राजायुधिष्ठिर बड़ी शीघ्रता से पीछाकिया जाताहै । २ । वहां महादुर्मद क्रोधयुक्त पांचाल महात्मा युधिष्ठिर को चाहतेहुये पीछे चलेजाते हैं । ३ । और पृथ्वी का राजा रथसमेत सेनाओं से अलंकृत दुर्योधन राजायुधिष्ठिरके पीछे दौड़ताहै । ४ । हे पुरुषोत्तम यह पराक्रमी विषैले सर्पकेसमान स्पर्शवाले सबयुद्धों में कुशल भाइयों समेत मारने का अभिलाषी है । ५ । युधिष्ठिर के पकड़ने की इच्छा करनेवाले यह धृतराष्ट्र के पुत्र हाथी घोड़े रथ और पत्तियों समेत ऐसे जाते हैं कि जैसे कि इच्छावान् परम उत्तम मनुष्यके पास जाते हैं । ६ । यादव सात्यकि व भीमसेन से रोकेहुये युधिष्ठिरको पकड़ने के इच्छावान् यहलोग फिर ऐसे नियत हैं जैसे कि इन्द्र और अग्नि से बारंबार रुके हुये अमृत के चाहने वाले दैत्यहोते हैं । ७ । यह शीघ्रता करनेवाले

CHAPTER LX

Sanjaya said, " Pointing towards Yudhishthir, Vasudev said to Arjun, " Your brother Yudhishthir is being chased yonder by the sons of Dhritrashtra. The Panchals follow Yudhishthir, and king Duryodhan is going after Yudhishthir. With his brothers, like *poisonous serpents, he is desirous of slaying* Yudhishthir. *Desirous* of capturing him, the sons of Dhritrashtra go along with elephants and horses as if going to meet some great man. Checked by Satyaki and Bhimsen and desirous of catching Yudhishthir, they are standing like Daityas desirous of getting nectar checked by Indra and Agni. The numerous army of Kauravas is going towards Yudhishthir like rain water towards the Ocean. The brave warriors, roaring and

महारथाः ॥ ८ ॥ नदन्तः सिंहनादांश्च धमन्तश्चापि वारिजान् । बलवन्तो महे
ष्वासा विधुन्वन्तो धनूंषि च ॥ ९ ॥ मृत्योर्मुखगतं मन्ये कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम्
हुतमग्नौ च कौन्तेयं दुर्योधनवशंगतम ॥ १० ॥ यथाविधमनीकन्तु धार्त्तराष्ट्रस्य
पाण्डव । नास्य शक्रोऽपि मुच्येत सम्प्राप्तो बाणगोचरम् ॥ ११ ॥ दुर्योधनस्य वीरस्य
शरौघान् शीघ्रमस्यतः । संक्रुद्धस्यान्तकस्येव को वेगं संसहेद्रणे ॥ १२ ॥ दुर्योधनस्य
वीरस्य द्रौणेः शारद्वतस्य च । कर्णस्य चेषुवेगो वै पर्वतानपि शातयेत् ॥ १३ ॥ कर्णेन
च कृतो राजा विमुखः शत्रुतापनः बलवांल्लघुहस्तश्च कृतास्त्रो युद्धविशारदः ॥ १४ ॥
राधेयः पाण्डवश्रेष्ठं शक्तः पीडयितुं रणे । सहितो धृतराष्ट्रस्य पुत्रैः शूरैर्महाबलैः
॥ १५ ॥ तस्यैभिर्युध्यमानस्य संग्रामे शंसितारमनः । अन्यैरपि च पार्थस्य कृतं कर्म
महारथैः ॥ १६ ॥ उपवासकृशो राजा भृशं भरतसत्तम । ब्राह्मे बले स्थितो ह्येष न

महारथी बहुत होनेके कारण पाण्डव युधिष्ठिर की ओर फिर ऐसे जाते हैं जैसे कि वर्षा ऋतु में जलके प्रवाह समुद्रकी ओर जाते हैं । ८ । बड़े पराक्रमी बड़े धनुषधारी सिंहनादोंको करते शंखोंको बजाते और शत्रुओं को चलायमान करते हुये चले जाते हैं । ९ । मैं कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरको मृत्युके मुखमें वर्त्तमान मानताहूं और उस कुन्तीके पुत्रको दुर्योधनकी आधीनता में वर्त्तमानहोकर अग्नि में होमा हुआ विचार करताहूं । १० । हे अर्जुन फिर दुर्योधनकी सेना इसप्रकारकी है कि इसके बाण लक्षमें वर्त्तमान होकर इन्द्रभी नहीं बचसक्ता है । ११ । युद्ध में बाणों के समूहों को शीघ्र छोड़नेवाले यमराज के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वीर दुर्योधन के वेगको कौन सहसक्ता है । १२ । वीर दुर्योधन अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और कर्णके बाणोंका वेग पर्व्वतोंका भी तोड़नेवाला है । १३ । शत्रुओं का संतप्त करनेवाला पराक्रमी हस्तलाघवी कर्मकर्त्ता युद्धमें कुशल राजायुधिष्ठिर कर्ण के हाथसे मुखमोड़ने वाला होचुका है और वह शूरवीर धृतराष्ट्र के पुत्रों समेत कर्ण युद्धमें युधिष्ठिरको पीड़ामान करने को समर्थ है । १५ । युद्धमें लड़नेवाले प्रशंसनीय बुद्धि उस युधिष्ठिर के पराजय होनेका गुमान इन और अन्य महारथियों को भी प्राप्तहै । १६ । क्योंकि यह भरतवंशियों में श्रेष्ठ व्रत करनेवाला समर्थ राजा

blowing their conchs, are going on. I find Yudhishthir in the jaws of death. Fallen in the hands of Duryodhan, he is like a victim of sacrifice. 10. Even Indra cannot scape from the darts of Duryodhan's warriors. Who can bear the Indra like prowess of Duryodhan? Brave Duryodhan, Kripacharya and Karan can break mountains with their arrows. Yudhishthir is turning back from the encounter of Karan, who with the help of the sons of Dhrishtrashtra is too strong for him. 15. Other warriors too, are desirous of defeating him; for he is better suited to do the duties of Brahmans than those of Kshatryas. Surely he is in a great danger from Karan. I think that Yudhish-

क्षात्रे हि बले विभुः ॥ १७ ॥ कर्णेन चाभियुक्तोयं सूतपतिः शत्रुतापनः। संशयं समनु प्राप्तः पाण्डवो वै युधिष्ठिरः ॥ १८ ॥ न जीवति महाराजो मन्ये पार्थ युधिष्ठिरः। यद्भीमसेनः सहते सिंहनादममर्षणः ॥ १९ ॥ नर्दतां धार्त्तराष्ट्राणां पुनः पुनररिन्दमः। धमतांश्च महाशंखान संग्रामे जितकाशिनाम् ॥ २० ॥ युधिष्ठिरं पाण्डवेयं हतेति पुरुषर्षभ। सञ्चोदयत्यसौ कर्णो धार्त्तराष्ट्रान् महारथान्॥ २१ ॥ स्थूणाकर्णेन्द्रजालेन पार्थ पाशुपतेन च। प्रच्छादयन्ति राजानं शस्त्रजालैर्महारथाः॥ २२ ॥ आतुरो हि कृतो राजा सन्निषण्णश्च भारत। यथैनमनु सेवन्ते पाञ्चालाः सह पाण्डवैः ॥ २३ ॥ त्वरमाणस्त्वराकाले सर्वशस्त्रभृतांवराः। मज्जन्तमिव पाताले बलिनोप्युज्जिहीर्षवः ॥ २४ ॥ न केतुर्दृश्यते राज्ञः कर्णेन निहतः शरैः। पश्यतोर्यमयोः पार्थ सात्यकेश्च शिखण्डिनः ॥ २५ ॥ धृष्टद्युम्नस्य भीमस्य शतानीकस्य वा विभो। पाञ्चालानाञ्च सर्वेषां चेदीनाञ्चैव भारत ॥ २६ ॥ एष कर्णो रणे पार्थ पाण्डवानामनीकिनीम्।

युधिष्ठिर ब्राह्मणों के क्षमा आदि पराक्रमों में नियत है यह क्षत्री धर्म्मरूप पराक्रम में नियत नहीं है। १७। निश्चय करके कर्णके साथ भिड़े हुये शत्रुहन्ता युधिष्ठर बड़े संशय में प्राप्तहुआ है। १८। हे अर्जुन जोकि असहनशील भीमसेन शत्रुओं के सिंहनादों को सहरहा है इससे मैं अनुमान करताहूंकि महाराज युधिष्ठिर जीवते हुए नहीं है। १९। हे भरतर्षभ युद्धमें विजयसे शोभायमान वारंवार गर्जते औरक शंखोंको बजातेहुये। २०। यह कर्ण बड़े पराक्रमी उन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको प्रेरणा करता है कि तुम पांडव युधिष्ठिरको मारो। २१। हे अर्जुन महारथी लोग इन्द्र-जालरूप स्थूणा कर्णनाम गांधर्वअस्त्र वा पाशुपतिअस्त्र और बाणोंसे राजाको ढक रहे हैं। २२। हे भरतवंशी अर्जुन राजायुधिष्ठिर को ऐसा व्याकुल करदियाहै यह पांचालदेशी पांडवों समेत सब शूरवीर इसके पीछे हुये हैं इसीप्रकार तुमसे भी यह राजा रक्षाकरनेके योग्यहै। २३। सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ पराक्रमी शीघ्रता के समय शीघ्रता करनेवाले शूरवीर उस पातालमें डूबेहुये के समान युधिष्ठिरको निकालने की इच्छा कररहे हैं। २४। राजाकी ध्वजानहीं दिखाई देती है हेअर्जुन वह राजा नकुल, सहदेव, सात्यकी और शिखण्डी के देखतेहुये कर्णके बाणों से मारागया। २५। हे भरतवंशी समर्थ अर्जुन वह राजाधृष्टद्युम्न भीमसेन, शतानीक

thir is no more, because valiant Bhim is silently hearing the roars of the hostile warriors. Roaring and blowing their conchs, Karan is urging the sons of Dhritrashtra to slay Yudhishthir. 21. The network of enemy's arrows has covered the king. Yudhishthir is in great trouble and the Panchals and Pandavas follow him. You too, must protect the king. Our warriors are trying to extricate him from trouble. I donot see the king's banner: he is slain by Karan in the presence of Nakul, Sahadev, Satyaki and Shikhandi.25. He is slain in spite of Dhrishtadyumn, Bhim, the Panchals and the Chanderis.

शरैर्विध्य क्षयति वै नलिनीमिव कुञ्जरः ॥ २७ ॥ एते द्रवन्ति रथिनस्त्वदीया पाण्डुनन्दन । पश्य पश्य यथा पार्थ गच्छन्त्येते महारथाः ॥ २८ ॥ एते भारत मातङ्गाः कर्णेनाभिहता रणे । आर्त्तनादान् विकुर्वाणा विद्रवन्ति दिशो दश ॥ २९ ॥ रथानां द्रवते वृन्दमेतच्चैव समन्ततः । द्राव्यमाणं रणे पार्थ कर्णेनामित्रकर्षिणा ॥ ३० ॥ हस्तिकक्षां रणे पश्य चरन्तीं तत्र तत्र ह । रथस्थं सूतपुत्रस्य केतुं केतुमतां वर ॥ ३१ ॥ असौ धावति राधेयो भीमसेनरथं प्रति । किरन् शरशतान्येवं विनिघ्नं स्तव वाहिनीम् ॥ ३२ ॥ एतांश्च पश्य पाञ्चालान् द्राव्यमाणान् महारथान् । शक्रेणेव यथा दैत्यान् हन्यमानान्महाहवे ॥ ३३ ॥ एष कर्णो रणे जित्वा पाञ्चालान् पाण्डुसृञ्जयान् । दिशो वै प्रेक्षते सर्वास्त्वदर्थमिति मे मतिः ॥ ३४ ॥ पश्य पार्थ धनुःश्रेष्ठं विकर्षन् स धु शोभते । शत्रुं जित्वा यथा शक्रो देवसंघैः समावृतः ॥ ३५ ॥ एते नर्दन्ति

और सब पांचाल वा चंदेरीदेशियों के देखतेहुये मारागया । २६ । हे अर्जुन यह कर्ण बाणों से पांडवोंकी सेनाको ऐसे माररहाहै जैसे कि कमलके वनोंको हाथी मारताहै । २७ । हे पांडुनन्दन यह आपके रथी भागते हैं हे अर्जुन देखो २ यह महारथी जाते हैं । २८ । हे भरतवंशी यह हाथी कर्ण के बाणों से घायल और पीड़ित होकर शब्दोंको करतेहुये दशों दिशाओंको भागते हैं । २९ । हे अर्जुन शत्रुओंके पराजय करनेवाले कर्ण से युद्धमें भगायेहुये यह रथों के समूह चारों ओरसे भागते चलेजाते हैं । ३० । हे ध्वजाधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन कर्णके रथपर नियत हाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली और जहां तहां युद्धमें घूमने वाली ध्वजाको देखो । ३१ । यह कर्ण हजारों बाणों को बरसाता तुम्हारी सेना को मारता हुआ भीमसेनके रथपर दौड़ताहै । ३२ । इन भगायेहुये महारथी पांचालोंको ऐसा देखो जैसे कि महायुद्धमें इन्द्रसे भगायेहुये दैत्यहोते हैं । ३३ । यह कर्ण युद्धमें पांचाल पांडव और सृञ्जियों को विजय करके तेरेनिमित्त सब दिशाओंको देखताहै यहमेरा पक्काअनुमान है । ३४ । हे अर्जुन यहकर्ण उत्तम धनुषको खैंचता हुआ ऐसा शोभायमानहै जैसे कि देवगणोंसे व्याप्त शत्रुओं को विजयकरके इन्द्र शोभायमान होताहै । ३५ । यह सब कौरव कर्ण के पराक्रमको देखकर गर्जते

Karan is destroying the army of the Pandavas as an elephant does a forest of lotus. Look at the warriors who are running away. The elephants wounded by Karan's arrows are running away, in all directions. Routed by Karan, the lines of cars are being broken.30. Look at the standard of Karan having the device of elephant's rope, moving here and there. Showering thousands of arrows over your army, Karan attacks Bhim. Look at the routed Panchals like Daityas routed by Indra. Having conquered the Srinjayas and Panchals, Karan is looking for you in all directions. Drawing his bow, Karan looks glorious like Indra after dispersing the Daityas. 35. All the

कौरव्या दृष्ट्वा कर्णस्य विक्रमम् । त्रासयन्तो रणे पाण्डून् सृञ्जयांश्च समन्ततः ॥ ३६॥ एष सर्वात्मना पाण्डूंस्त्रासयित्वा महारणे । अभिभाषति राधेयः सर्व सैन्यानि मानद ॥ ३७॥ अभिद्रवत भद्रं वो द्रुतं द्रवत कौरवाः । यथा जीवन् वः कश्चिन्मुच्येत युधि सृञ्जयः ॥ ३८ ॥ तथा कुरुत संयत्ता वयं यास्याम पृष्ठतः । एवमुक्त्वा गतोह्येष पृष्ठतो विकिरञ्छरान् ॥ ३९ ॥ पश्य कर्णं रणे पार्थ श्वेतच्छत्रविराजितम् । उदयं पर्वतं यद्वत् शशाङ्केनोपशोभितम् ॥ ४० ॥ पूर्णचन्द्रनिकाशेन मूर्ध्नि छत्रेण भारत । ध्रियमाणेन समरे श्रीमच्छतशलाकिना ॥ ४१ ॥ एष त्वां प्रेक्षते कर्णः सकटाक्षं विशाम्पते । उत्तमं जवमास्थाय ध्रुवमेष्यति संयुगे ॥ ४२ ॥ पश्य ह्येनं महाबाहो विधुन्वानं महद्धनुः । शरांश्चाशीविषाकारान् विसृजन्तं महारणे ॥ ४३ ॥ असौ निवृत्तो राधेयो दृष्ट्वा ते वानरध्वजम् । प्रार्थयन् समरं पार्थ त्वया सह परन्तप । वधाय

हुये शब्दोंको करते हैं और युद्धमें चारोंओर से पांडव और सृंजियों को डराते हैं । ३६ । हे प्रशंसा देनेवाले यह कर्ण युद्धमें सब आत्मासे पांडवोंको भयभीत करके सब सेनाके मनुष्यों से बोलताहै । ३७ । हे कौरव्य तुम्हारा कल्याणहो तुम शीघ्र चलकर सम्मुखताकरो जिससे कि कोई सृंजी युद्धमें तुम्हारे हाथसे जीवता बचकर न जावे ३८ । तुम शस्त्रोंको धारणकिये सावधानीसे युद्धकरो और हमपीछे की ओरसे चलते हैं यह कर्ण इसरीतिसे कहकर पीछेकी ओरसे बाणों को मारता हुआ चलागया । ३९ । हे अर्जुन श्वेतछत्रसे शोभायमान कर्णको देखो यह ऐसा मालूम होता है जैसे कि चन्द्रमा से शोभायमान उदयाचल पर्वतहोता है ४० हे भरतवंशी अर्जुन पूर्ण चन्द्रमा के समान शोभायमान सौ शलाका रखनेवाले मस्तकपर धारण किये हुये छत्रसमेत । ४१ । यह कर्ण तुमको सकटाक्ष देखता है निश्चय करके यह बड़ी तीव्रता में नियत होकर युद्धमें आवेगा ।४२। हेमहाबाहु बड़े युद्धमें दृढ़ धनुषको चढ़ानेवाले विषैले सर्पोंके समान बाणोंके छोड़ने वाले इस कर्णको देखो । ४३ । हे शत्रुसंतापी अर्जुन यह कर्ण तुम से युद्ध करनेकी इच्छा करताहुआ तेरी वानरीध्वजाको देखकर लौटा यह अपने मरने के लिये ऐसे आता

Kauravas roar with joy at the sight of Karan's prowess and terrify the Pandavas and Panchals. Terrifying all the warriors of the Pandavas, Karan thus addressed his men, "Fight with the Srinjayas, O Kauravas, so that none of them can scape you. Fight carefully and we shall follow you." Having said this, Karan goes on showering arrows. Look at the white umbrella of Karan who looks like Udayachal with the moon over it." 40. Having an umbrella, bright like the moon, over him, he throws side glances at you. Surely, he will come upon you in great fury. Look at Karan drawing his huge bow and discharging arrows like venomous snakes. Desirous of fighting with you, he turns back at the sight of your monkey standard. He

ह्यात्मनोऽभ्येति दीप्तास्यं शलभो यथा ॥ ४४ ॥ कर्णमेकाकिनं दृष्ट्वा रथानीकेन
भारत । रिरक्षिषुः सुसंयत्तो धार्त्तराष्ट्रो निवर्त्तते । सचः सहैभिर्दुष्टात्मा वध्यताम्
प्रयत्नतः ॥ ४६ ॥ त्वया यशश्च राज्यञ्च सुखञ्चोत्तममिच्छता । अन्योन्यार्थिनस्तयो
र्वीतत्वयमानयोः ॥ ४७ ॥ देवासुरे पार्थ मृधे देवदानवयोरिव ॥ ४८ ॥ त्वाञ्च दृष्ट्वा
तिसंरब्धं कर्णञ्च भरतर्षभ । असौ दुर्य्योधनः क्रुद्धो नोत्तरं प्रतिपद्यते ॥ ४९ ॥
आत्मनश्च कृतात्मानं समीक्ष्य भरतर्षभ । कृतागसञ्च राधेयं धर्मात्मनि युधिष्ठिरे
॥ ५० ॥ प्रतिपद्यस्व कौन्तेय प्राप्तकालमनन्तरम् । आर्य्यां युद्धे मतिं कृत्वा प्रत्याहि
रथयूथपम् ॥ ५१ ॥ पञ्च ह्येतानि मुख्यानां रथानां रथसत्तम । शतान्यायान्ति समरे
बलिनां तिग्मतेजसाम् ॥ ५२ ॥ पञ्च नागसहस्राणि द्विगुणा वाजिनस्तथा । अभिसं
हत्य कौन्तेय पदातिप्रयुतानि च ॥ ५३ ॥ अन्योन्यरक्षितं वीर ! बलं त्वामभिवर्त्तते ।
सूतपुत्रं महेष्वासं दर्शयात्मानमात्मना । उत्तमं जवमास्थाय प्रत्येहि भरतर्षभ ॥ ५४ ॥

है जैसे कि शलभनाम पत्नी प्रकाशमान अग्निके के मुखमें जाता है ।४४। हे भरतवंशी रथकी सेनासमेत रक्षाकरनेका अभिलाषी दुर्योधन अकेले कर्णको देखकर लड़ता है इन सब समेत इसदुष्ट अन्तःकरणवाले दुर्योधनको बड़े विचार पूर्वक उपायोंसे मारनाचाहिये । ४६ । हे उच्चाभिलाषी शास्त्रोंको अच्छीरीति से जानने वाले युद्धाभिलाषी यश राज्य और उत्तमसुखको चाहनेवाले तेरे हाथसे मारनेके योग्यहै । ४७ । हे राजा जैसे कि देवासुरों के युद्धमें देवता और दानवोंकेयुद्धहोते हैं इसीप्रकार हे भरतर्षभ अत्यन्त क्रोधयुक्त तुमको और कर्णको देखकर यह क्रोधयुक्त दुर्योधन अपनेको बुद्धिमान् विचारकर उत्तरको नहीं पाता है । ४९ । हे कुंतीकेपुत्र तुम धर्मात्मा युधिष्ठिरकेसाथ अपराध करनेवाले आसन्नमृत्यु कर्णके सम्मुख शीघ्रहीजाओ और बुद्धिको प्रबल करके इस महारथी के सम्मुख चलो । ५१ । हे रथियोंमें श्रेष्ठ यह पांच महापराक्रमी और तेजस्वी उत्तम पांच हजार हाथी और दशहजार घोड़ों समेत हजारों शूरवीरोंको साथलिये प्रयुतों पदातियोंसे युक्तहोकर आते हैं । ५३ । हे वीर परस्परमें रक्षित सेना तेरे सम्मुख आती है हे भरतर्षभ तुम आप चलकर इस बड़े धनुषधारी कर्ण को दर्शन दो और बड़ी तीव्रता में नियत होकर सम्मुख जाओ । ५४ । यह अत्यन्त क्रोध

comes to seek his death like an insect at fire. 44. Seeing Karan fight alone, Duryodhan, with his army, fights to protect him. You should take care to destroy the bad-natured prince and his followers. You must slay him, clever warrior, if you wish for fame, greatness, kingdom and happiness. Seeing you and Karan fight like gods and asurs, enraged Duryodhan will not be able to give you any reply. Go at once to encounter Karan who has sinned against Yudhishthir. 50. The five warriors, with five thousand elephants, ten thousand horse and numberless foot soldiers, are coming against you. You must

असौ कर्णः सुसंरब्धः पाञ्चालानभिधावति । केतुमस्य हि पश्यामि धृष्टद्युम्नरथं प्रति ॥ ५५ ॥ समुच्छेत्स्यति पाञ्चालानिति मे धीयते मतिः । आचक्षे च प्रियं पार्थ सवेदं भरतर्षभ ॥ ५६ ॥ राजा जीवति कौरव्यो धर्मराजो युधिष्ठिरः । असौ भीमो महाबाहुः सन्निवृत्तश्चमूमुखे । वृतः सृञ्जयसैन्येन सात्यकेन च भारत ॥ ५७ ॥ वध्यन्त एते समरे कौरवा निशितैः शरैः ॥ ५८ ॥ भीमसेनेन कौन्तेय पाञ्चालैश्च महात्मभिः । सेना हि धार्त्तराष्ट्रस्य विमुखा विद्रवद्रणा । विप्रधावति वेगेन भीमस्य निहता शरैः ॥ ५९ ॥ विपन्नसस्येव मही रुधिरेण समुक्षिता । भारतीभरतश्रेष्ठ सेना कृपणदर्शना ॥ ६० ॥ निवृत्तं पश्य कौन्तेय भीमसेनं युधाम्पतिम् । आशीविषमिव क्रुद्धं द्रावयन्तं वरूथिनीम् ॥ ६१ ॥ पीतरक्तासितसितास्ताराचन्द्रार्कमण्डिताः । पताका विप्रकीर्य्यन्ते छत्राण्येतानि चार्जुन ॥ ६२ ॥ रथेभ्यः प्रपतन्त्येते रथिनो विगतासवः । नानावर्णैर्हता बाणैः पाञ्चालैरपलायिभिः ॥ ६३ ॥ निर्मनुष्यान् गजानश्वान्रथांश्चैव धनञ्जय । समा

युक्त होकर कर्ण पांचालोंके सम्मुख दौड़ता है मैं इसकी ध्वजाको धृष्टद्युम्न के रथ पर देखताहूं ।५५। हे शत्रुसंतापी मैं अनुमान करताहूं कि यह पांचालाके सम्मुख जाताहै हे अर्जुन अब मैं उस तेरी अभीष्ट प्रियवार्ता को कहताहूं । ५६ । कि यह श्रीमान् धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर आनन्द पूर्व्वक कुशल से है यह महाबाहु भीमसेन सेनाके मुखसे निवृत्तहुआ लौटाहै । ५७ । और वह भरतवंशी सृंजियों की सेना सात्यकि से युक्त है । ५८ । यह कौरव युद्धमें तीक्ष्णधार बाणों से मर रहे हैं हे अर्जुन महात्मा पांचालों से और भीमसेन के हाथ से दुर्योधनकी सेना युद्ध में मुखोंको मोड़मोड़कर भीमसेनके बाणोंसे घायल होकर बड़ी शीघ्रता से भागताहै । ५९ । और टूटे कवच रुधिरसे लिप्त शरीरवाली महादुखी भरतवंशियों की सेना दिखाईदेताहै । ६० । हे भरतर्षभ अर्जुन इस शूरवीरों के स्वामी भीमसेनको देखो कि यह विषैले सर्पकी समान क्रोधयुक्त सेनाका भगानेवाला है ।६१। हे राजन् यह लालपीले काले और श्वेत सूर्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से शोभायमान् अलंकृत पताका और छत्र गिरते हैं । ६२ । मुख न मोड़नेवाले और नाना प्रकार के वर्णवाले पांचालों के बाणों से घायल और निर्जीव होकर यह रथी अपने २

steadily face that great archer. Enraged *Karan is rushing against* the Panchals; his banner is seen against the car of Dhrishtadyumn. I believe that he will attack the Panchals. I shall now tell you a piece of good news. 56. Prince Yudhishthir is safe and sound; for brave Bhim is standing at the entrance of the army and Satyaki is with the Srinjayas. The Kauravas are dying fast of sharp arrows. Bhimsen and the Panchals have routed the Kaurav army. They have lost their armours and are seen with bleeding bodies. 60 Look how enraged Bhim is putting them to flight. There fall the banners

द्रवन्ति पांचाला धार्त्तराष्ट्रांस्तरस्विनः ॥ ६५ ॥ विमृद्नन्ति नरव्याघ्रो भीमसेनबलाश्रयात् । बलं परेषां दुर्द्धर्षास्त्यक्त्वा प्राणानरिन्दम ॥ ६६ ॥ एते नर्दन्ति पांचाला ध्मापयन्ति च वारिजान् । अभिद्रवन्ति च रणे मृद्नन्तः सायकैः परान् ॥ ६७ ॥ पश्यस्वैषाञ्च माहात्म्यं पांचाला हि पराक्रमात् । धार्त्तराष्ट्रान् विनिघ्नन्ति क्रुद्धाः सिंहा इव द्विपान् ॥ ६८ ॥ शस्त्रमाच्छिद्य शत्रूणां सायुधानां निरायुधाः । तेनैवैतानमोघाक्षानि घ्नन्ति च नदन्ति च ॥ ६९ ॥ शिरांस्येतानि पात्यन्ते शत्रूणां बाहवोपि च । रथनागहया वीरा यशस्याः सर्व एव च ॥ ७० ॥ सर्वतश्चाभिपन्नैषां धार्त्तराष्ट्रमिहाचमूः । पाञ्चालैर्मानसादेत्य हंसैर्गंङ्गेव वेगितैः ॥ ७१ ॥ सुभृशंच पराक्रान्ताः पांचालानां निवारणे । कृपकर्णादयो वीरा ऋषभाणामिवर्षभाः ॥ ७२ ॥ सुनिमग्नांश्च भीमास्त्रैर्धार्त्तराष्ट्रान् महारथान् । धृष्टद्युम्नमुखा वीरा घ्नन्ति शत्रून् सहस्रशः ॥ ७३ ॥ पांचा

रथों से गिरतेहैं । ६३ । हे अर्जुन वेगवान् पांचाल मनुष्य हाथी घोड़े और रथों से जुदे धृतराष्ट्रके पुत्रोंके सम्मुख जाते हैं और नरोत्तम भीमसेन से रक्षित होकर वह अजय पांचाललोग अपनेरप्राणोंकी आशा छोड़ शत्रुओंको मर्दन करतेहैं।६६।हे शत्रुविजयी यह सब पांचाल प्रसन्नहो होकर शंखोंको बजातेहैं और युद्धमें बाणोंसे शत्रुओं का मर्दन करतेहुये दौड़तेहैं।६७।इन अपने शूरवीरोंके साहसको देखो कि पांचालदेशी शूर अपने पराक्रमोंसे धृतराष्ट्रकेपुत्रोंको ऐसे मारतेहैंजैसेकि क्रोधयुक्तसिंह हाथियोंको मारतेहैं । ६८। शस्त्रों से रहित शूरवीर शस्त्रधारी शत्रुओं के शस्त्रको काटकर उसीसे इन अमोघ शस्त्रधारियों को मारतेहुये गर्जनाओं को करते हैं । ६९ । शत्रुओं के शिर और भुजाभी गिरायीजाती हैं रथ हाथी घोड़े और युद्ध के सब वीरलोग शूरताके उत्पन्न करने वाले शब्दों को कररहे हैं । ७० । और यह दुर्य्योधन की की बड़ी सेना सब ओर को पांचालों के सम्मुख ऐसे वर्त्तमान है जैसेकि वेगवान् हसों से चारोंओर को व्याप्त श्री गंगाजी होती हैं, श्रेष्ठों में भी अतिश्रेष्ठ वीर कृपाचार्य्य और कर्ण आदि यह सब पांचालों के रोकने में कठिन पराक्रम करने वाले हुये । ७२ । और भीमसेन के अस्त्रों से पराजित महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखो । और शत्रुओं के हाथसे पांचालों के पराजय होनेपर निर्भय होकर गर्जने

and umbrellas of various bright colours. Wounded by the arrows of the Panchals, the warriors are falling dead. The Panchals rush against the sons of Dhritrashtra who are destitute of cars and beasts. Fearless of their own lives and led by Bhimsen, they slay the foes. The Panchals blow their conchs gleefully and rush against the foes to slay them with their arrows. Look at the bravery of your own warriors, who are slaying the Kauravas as lions do elephants. Deprived of weapons, they make the enemies weaponless and roar loudly. The heads and arms of the enemies are being cut. The warriors and their beasts utter sounds indicative of bravery. The great army of Duryodhan is facing the Panchals and looks like a flight of swans

लेष्वभिभूतेषु द्विपद्भिरपभीर्नदन्। शत्रुपक्षमवस्कन्य शरानस्यति मारुतिः॥ ७४॥ विपणभूयिष्ठतरा धार्तराष्ट्री महाचमूः। रथाश्चैभाः सुचिरस्ता भीमसेनभयार्दिताः॥ ७५॥ पश्य भीमेन नाराचैर्भिन्ना नागाः पतन्त्यमा। वज्रवेगहतानीव शिखराणि धराभृताम्॥ ७६॥ भीमसेनस्य निर्भिन्ना बाणैः सन्नतपर्वभिः। स्वान्यनीकानि मृद्नन्तो द्रवन्त्येते महागजाः॥ ७७॥ नाभिजानासि भीमस्य सिंहनादं सुदुःसहम्। नदतोऽर्जुन संग्रामे भैरवं जितकाशिनः॥ ७८॥ एष नैषादिरभ्येति द्विपमुख्येन पाण्डवम्। जिघांसुस्तोमरैः क्रुद्धो दण्डपाणिरिवान्तकः॥ ७९॥ सतोमरावस्य भुजौ छिन्नौ भीमेन गर्जतः। तीक्ष्णैरग्निरविप्रख्यैर्नाराचैर्दशभिर्हतः॥ ८०॥ हत्वैनं पुनरायाति नागानन्यान् महारिणः॥ ८१॥ पश्य नालाम्बुदनिभान् महामात्रैरधिष्ठितान्। शक्ति

वाले धृष्टद्युम्न आदि वीरहजारों शत्रुओं को मारते हैं वायुका पुत्र भीमसेन शत्रुओं के पक्षों को मथाकर बाणों की वर्षाकरता है। ७४। और धृतराष्ट्र कीबड़ी सेना महाव्याकुल है और यह रथी भी भीमसेन के भयसे अत्यन्त पीड़ामान होकर भयभीतहैं ७५देखो भीमसेनके नाराचोंसे घायल होकर यहहाथी ऐसे गिरतेहैं जैसे कि इन्द्रके बज्रसे टूटेहुये पर्वतों के शिखर गिरते हैं भीमसेन के गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से घायल यह बड़े हाथी अपनी सेनाओंको कुचलते दवाते हुये इधर उधरको भागते हैं, भीमसेन का सिंहनाद बड़े दुःखसे सहनेके योग्यजानो हे राजन दण्डधारी यमराज के समान क्रोधयुक्त तोमरों से भीमसेनके मारनेकी इच्छासे यह निषादकापुत्र इस युद्धमें गर्जनेवाले और विजय से शोभायमान वीरके भीमसेन के सम्मुख जाता है। ७९। इसकी दोनों भुजाओं को उस गर्जने वाले भीमसेन ने तोमर से काट डाला और देदीप्य अग्नि और सूर्य्य के समान प्रकाशित दशबाणों से माराडाला इसको मारकर अब प्रहार करने वाले दूसरे हाथियों के सम्मुख आता है। ८१। सवारों समेत सवारियों को और नीले बादलों के समान हाथियों को शक्ति और

falling on the Ganges. Kripacharya and Karan, the best of warriors are trying their best against the Panchals. Look at the sons of Dhritrashtra routed by the weapons of Bhimsen. Seeing the Panchals rounted by the foes, Dhrishtadyumn and other warriors slay the enemies. Bhimsen is sending forth a flight of arrows over the foes and the army of Dhritrashtra is hard pressed. They run away from fear of Bhim.75. Wounded by Bhim's arrows the elephants fall down like mountains struck down by vajra and run away here and there, trampling down the warriors. The roar of Bhim is unbearable The Nishad's son is rushing on to slay Bhim with tomars like the staff of Yam. Now Bhim cuts down both his arms and kills him with ten bright arrows. Having slain him, he advances towards the line of elephants. Look at Bhim slaying riders, beasts and elephants

तोमरसंघातैर्विनिघ्नन्तं वृकोदरम् ॥ ८२॥ सप्तसप्त च नागास्तान् वैजयन्तांश्च सध्वजाः निहत्य निशितैर्बाणैश्छिन्ना: पार्थाग्रजेन ते ॥ ८३ ॥ दशाभिर्दशाभिश्चैको नाराचैर्निहतो गजः। न चासौ धार्त्तराष्ट्राणां श्रूयते निनदस्तथा। पुरन्दरसमे युद्धे निवृत्ते भरतर्षभ ॥ ८४ ॥ अक्षौहिण्यस्तथा तिस्रो धार्त्तराष्ट्रस्य संहताः। क्रुद्धेन नरसिंहेन भीमसेनेन वारिताः ॥ ८५ ॥ संजय उवाच। भीमसेनेन तत् कर्म कृतं दृष्ट्वा सुदुष्करम्। अर्जुनो व्यधमच्छिष्टानहितान्निशितैः शरैः ॥ ८६ ॥ ते वध्यमानाः समरे संशप्तकगणाः प्रभो। प्रभग्नाः समरे भीता दिशो दश महाबलाः। शक्रस्यातिथितां गत्वा विशोका ह्यभवंस्तदा ॥ ८७ ॥ पार्थश्च पुरुषव्याघ्र शरैः सन्नतपर्वभिः। जघान धार्त्तराष्ट्रस्य चतुर्विधबलां चमूम् ॥ ८८ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे षष्टितमोऽध्याय ६०

तोमरों से मारने वाले भीमसेन को देखो। ८२। हे राजन् तीक्ष्णधार वाले बाणों से उन सात२हाथियोंकी वैजयन्ती ध्वजाओंको काटकर तेरे बड़ेभाईभीमसेनने मारडाला। ८३। दश२ नाराचों से एक २ हाथी मारागया इसीसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंके शब्द नहींसुनेजाते हैं हे भरतर्षभ इसीप्रकार युद्धमें इन्द्रके समान भीमसेन के लौटने पर क्रोधयुक्त नरोत्तम भीमसेनके हाथसे दुर्योधनकी तीनअक्षौहिणी सेना घायल और रोकीगई. संजय बोले कि भीमसेन के उन कठिनकर्मों को देखकर अर्ज्जुनने शेष बचहुये शत्रुओं को तीक्ष्णधार बाणों से छिन्न करदिया। ८६। हे प्रभु वह संसप्तकों के समूह युद्धमें घायल और भयभीतहोकर दशों दिशाओं में विभागित होकर भागे और इन्द्रके आतिथ्यको पाकर शोक से रहित हुये। ८७। पुरुषोत्तम अर्ज्जुनने टेढ़े पर्ववाले बाणों से दुर्योधन की चतुरंगिणी सेनाकोमारा

---

like blue clouds 82. He has cut and killed seven garlanded elephants bearing banners He has slain each elephant with ten arrows and the cries of the sons of Dhritrashtra are no longer heard. Bhim has wounded and destroyed three akshauhinis of the Kaurav army." Sanjaya continued, "Seeing Bhim's bravery Arjun dispersed the rest of the army with his sharp arrows. Wounded and terrified battle, the Sansaptaks ran away and were sent to the region of Indra. Arjun slew the army of the sons of Dhritrashtra," 88.

धृतराष्ट्र उवाच । निवृत्ते भीमसेने तु पाण्डवे च युधिष्ठिरे । वध्यमाने बले चापि मामके पाण्डुसृञ्जयैः ॥ १ ॥ द्रवमाने बलौघे च निरानन्दे मुहुर्मुहुः । किम कुर्वन्त कुरवस्तन्ममाचक्ष्व संजय ॥ २ । संजय उवाच । दृष्ट्वा भीमं महा बाहुं सूतपुत्र प्रतापवान् । क्रोधरक्तेक्षणो राजन् भीमसेनमुपाद्रवत् ॥ ३ ॥ तावकन्तु बलं दृष्ट्वा भीमसेनात् परांगमुखम् । यत्नेन महता राजन् पर्यवस्थापयद्बली ॥ ४ ॥ व्यवस्थाप्य महाबाहुस्तव पुत्रस्य वाहिनीम् । प्रत्युद्ययौ तदा कर्णः पाण्डवान् युद्धदुर्मदान् ॥ ५ ॥ प्रत्युद्ययुस्तु राधेयं पाण्डवानां महारथाः । धुन्वानाः कार्मुकाण्याजौ विक्षिपन्तश्च सायकान् ॥ ६ ॥ भीमसेनः शिनेर्नप्ता शिखण्डी जनमेजय धृष्टद्युम्नश्च बलवान् सर्वे चापि प्रभद्रकाः ॥ ७ ॥ पांचालाश्च नरव्याघ्राः समन्तात्तव वाहिनीम् । अभ्यद्रवन्त संक्रुद्धाः समरे जितकाशिनः ॥ ८ ॥ तथैव तावका राजन् पाण्डवानामनीकिनीम् । अभ्यद्रवन्त त्वरिता जिघांसन्तो महारथाः ॥ ९ ॥

अध्याय ६१ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि पाण्डव भीमसेन और युधिष्ठिरके लौटने और पांडव वा सृंजियों कहायसे मेरी सेनाके मरने । १ । अथवा अप्रसन्नता पूर्वक सेनाकेसमूहों के वारम्वार भागने पर हे संजय मुझको समझाकर कहो कि कौरवोंने क्याकिया २ संजय बोले कि हेराजन् क्रोधसे रक्त नेत्रवाला प्रतापवान् कर्ण महा बाहु भीमसेन को देखकर उसके सम्मुख गया । ३ । और उस पराक्रमी भीमसेन से मुख फेरी हुई आपके पुत्रकी सेनाको देखकर बड़ी युक्ति और उपायसे नियत किया । ४ । वह महाबाहु कर्ण आपके पुत्रकी सेनाको नियत करके युद्ध मे दुर्मद पाण्डवों के सम्मुख गया । ५ । फिर युद्धभूमि में धनुषों को चढ़ाकर सायकों को छोड़ते पाण्डवोंके महारथी लोग कर्ण के सम्मुख उये । ६ । उनके नाम यहहैं भीमसेन सात्यकि शिखण्डी जनमेजय पराक्रमी धृष्टद्युम्न और सब प्रभद्रक नरोत्तम पांचाल मारनेकी इच्छासे अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धके शोभादेनेवाले आपकी सेनाके सम्मुख गये । ८ । हे राजा इसीप्रकार मारनेके इच्छावान् शीघ्रता करने वाले आपकेभी महारथी पाण्डवों की सेनाके सम्मुखगये । ९ । हे पुरुषोत्तम रथ हाथी घोड़े

CHAPTER LXI

Dhritrashtra said, " What did the Kauravas do after the coming back of Bhim and Yudhishthir and destruction of our armies ? " Sanjaya said, " With eyes red in anger, brave Karan faced Bhim and rallied the armies routed by him. Having rallied the armies, Karan opposed the Pandavas. 5. The Pandav warriors went against Karan discharging their arrows. Bhim, Satyaki, Shikhandi Janamejaya, Dhrishtadyumn and the Prabhadraks opposed your army. Your warriors too, opposed the Pandav armies. The armies, full of elephants, horse, foot and banners were wonderful to behold. 10.

रथनागाश्वकलिलं पत्तिध्वजसमाकुलम् । बभूव पुरुषव्याघ्र सैन्यमद्भुतदर्शनम् ॥ १० ॥ शिखण्डी तु ययौ कर्णं धृष्टद्युम्नः सुतं तव । दुःशासनं महाराज महत्या सेनया वृतः ॥ ११ ॥ नकुलो वृषसेनन्तु चित्रसेनं युधिष्ठिरः । उलूकं समरे राजन् सहदेव समभ्ययात् ॥ १२ ॥ सात्यकिं शकुनिश्चापि द्रौपदेयाश्च कौरवान् । अर्जुनश्च रणे यत्तो द्रोणपुत्रो महारथः ॥ १३ ॥ युधामन्युं महेष्वासं गौतमोऽभ्यपतद्रणे । कृतवर्मा च बलवानुत्तमौजसमाद्रवत् ॥ १४ ॥ भीमसेनः कुरून् सर्वान् पुत्रांश्च तव मारिष । सहानीकान्महाबाहुरेक एव न्यवारयत् ॥ १५ ॥ शिखण्डी तु ततः कर्णं विचरन्तमभीतवत् । भीष्महन्ता महाराज वारयामास पत्रिभिः ॥ १६ ॥ प्रतिरुद्धस्ततः कर्णो रोषात् प्रस्फुरिताधरः । शिखण्डिनं त्रिभिर्बाणैर्भ्रुवोर्मध्येऽभ्यताडयत् ॥ १७ ॥ धारयंस्तु स तान्

पति और ध्वजाओं से युक्त वह सेना अपूर्व देखने में आई । १० । हे महाराज शिखण्डी कर्ण के सम्मुख गया धृष्टद्युम्न उस आपके पुत्र दुश्शासन के सम्मुख गया जो कि बड़ी सेनाको साथलिये हुयेथा । ११ । हे राजन् नकुल वृषसेनके युधिष्ठिर चित्रसेनके और सहदेव उलूकके सम्मुख गया ।१२। सात्यकि शकुनि के द्रौपदीके पुत्र कौरवोंके और युद्धमें कुशल अश्वत्थामा अर्जुन के सम्मुख गया । १३ । कृपाचार्य्य युद्धमें बड़े धनुषधारी युधामन्यु के और पराक्रमी कृतवर्मा उत्तमौजाके सम्मुख गया । १४ । हे श्रेष्ठ फिर महाबाहु अकेले भीमसेन ने सब कौरवों समेत सेनाकोसाथ रखनेवाले आपके पुत्रोंको रोका ।१५। हेमहाराज इसके अनन्तर भीष्मजी के मारनेवाले शिखण्डी ने उस निर्भयके समान घूमनेवाले कर्णको रोका । १६ । उसके पीछे रुकेहुये और क्रोधसे चलायमान ओष्ठवाले कर्ण ने शिखण्डीको तीन बाणोंसे दोनों भृकुटियों के मध्यमें घायल किया१७ वह शिखण्डी उन बाणों को धारण कियेहुये ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखरों से उंठ हुये सुवर्ण के पर्वत होते हैं । १८ । युद्धमें कर्ण के हाथ से अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी शिखण्डीने तीक्ष्णधारवाले नव्वे बाणों से कर्ण को

Shikhandi opposed Karan and Dhrishtadyumna opposed Dushasan and his army. Nakul met Vrishasen; Yudhishthir opposed Chitrasen and Uluk opposed Sahadev. Satyaki met Shakuni, the sons of Draupadi opposed the Kauravas and Ashwathama met Arjun. Kripacharya faced Yudhamanyu and Kritvarma met Uttamauja. Bhimsen alone opposed all your sons. 15. Snikhandi the slayer of Bhishm opposed Karan. Enraged Karan wounded Shikhandi with three arrows in the midst of brows and the latter looked glorious like a three peaked mountain. Wounded by Karan, Shikhandi wounded him with

बाणान् शिखण्डी बहुधशोभत । राजतः पर्वतो यद्वाग्निभिः शृङ्गैरिवोच्छ्रितैः ॥ १८ ॥ सोतिविद्धो महेष्वासः सूतपुत्रेण संयुगे । कर्णं विव्याध समरे नवत्या निशितैः शरैः ॥ १९ ॥ तस्य कर्ण हयान् हत्वा सारथिञ्च त्रिभिः शरैः । उन्ममाथ ध्वजञ्चास्य क्षुरप्रेण महारथः ॥ २० ॥ हताश्वात्तु ततो यानादवप्लुत्य महारथः । शक्तिं चिक्षेप कर्णाय संक्रुद्धः शत्रुतापनः ॥ २१ ॥ तां छित्वा समरे कर्णस्त्रिभिर्भारत सायकैः । शिखण्डिनमथाविध्यन्नवभिर्निशितैः शरैः ॥ २२ ॥ कर्णचापच्युतान् बाणान् वर्जयंस्तु नरोत्तमः । अपयातस्ततस्तूर्णं शिखण्डी भृशविक्षतः ॥ २३ ॥ ततः कर्णो महाराज पाण्डुसैन्यान्यपातत् । तूलराशिं समासाद्य यथा वायुर्महाबलः ॥ २४ ॥ धृष्टद्युम्नो महाराज तव पुत्रेण पीडितः । दुःशासनं त्रिभिर्बाणैः प्रत्यविध्यत् स्तनान्तरे ॥ २५ ॥ तस्य दुःशासनो बाहुं सव्यं विव्याध मारिष । शितेन रुक्मपुङ्खेन भल्लेनानतपर्वणा ॥ २६ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु निर्विद्धः शरं घोरममर्षणः । दुःशासनाय संक्रुद्धः प्रेषयामास भारत ॥ २७ ॥ आपतन्तं महावेगं धृष्टद्युम्नसमीरितम् । शरैश्चिच्छेद पुत्रस्ते त्रिभिरेव

पीड़मानकिया ।१९। फिर महारथी कर्णने तीनबाणोंसे घोड़ों और सारथीको मारकर छुरमसे उसकी ध्वजाको काटा । २० । शत्रुओं के संतप्त करनेवाले महारथी शिखंडी ने मृतक घोड़ों के रथसे उतरकर अपनी शक्तिको कर्णके ऊपर फेंका । २१ । हे भरतवंशी फिर कर्णने तीनशायकोंसे उसशक्तिको काटकर तीक्ष्णनौ बाणोंसे शिखण्डीको घायल किया । १२ । इसके पीछे अत्यन्त व्याकुल शिखण्डी कर्णके धनुष से निकलेहुये बाणोंको रोकताहुआ शीघ्रही हटगया । २३ । हेमहाराज इसके पीछे कर्णने पांडवी सेनाको ऐसा भिन्न २ करादिया जैसे कि बड़ा पराक्रमी वायु रुईके ढेरोंको तिर बिर करदेता है । २४ । फिर आपके पुत्रके हाथसे पीड़ामान धृष्टद्युम्न ने तीनबाणों से दुश्शासनको छातीपर छेदा । २५ । फिर दुश्शासन ने उसकी बाईं भुजा को छेदा हे भरतवंशी सुनहरीपुंख टेढ़ेपर्ववाले भल्लसे घायल २६ क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने घोरबाणको दुश्शासनके ऊपर फेंका ।२७। हे राजन् आपके पुत्रने धृष्टद्युम्न के चलाये हुये बड़े वेगवान् बाणको तीनबाणों से काटकर । २८ ।

ninety arrows. At this, Karan slew his horses and driver and cut his standard. 20. Shikhandi the destroyer of foes came down from his car and hurled his spear at Karan; but the latter cut it down and wounded the former with nine sharp arrows. 22. Having checked the arrows for some time, Shikhandi withdrew from Karan's encounter. Then Karan routed the Pandav army as the wind disperses a heap of cotton. Wounded by your son, Dhrishtadyumn wounded Dushasan on the breast. 25. Dushasan then pierced his left arm. Wounded by that arrow enraged Dhrishtadyumn shot a dreadful arrow at Dushasan. The latter cut it down into three and wounded the former with seventeen arrows on the breast and arms. Enraged Dhrishta-

विशाम्पते ॥ २८ ॥ अथापरैः सप्तदशैर्भल्लैः कनकभूषणैः । धृष्टद्युम्नं समासाद्य बाह्वोरुरसि चार्पयत् ॥ २९ ॥ ततः स पार्षतः क्रुद्धो धनुश्चिच्छेद मारिष । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन तत उच्चुक्रुशुर्जनाः ॥ ३० ॥ अथान्यद्धनुरादाय पुत्रस्ते प्रहसन्निव । धृष्टद्युम्नं शरव्रातैः समन्तात् पर्यवारयत् ॥ ३१ ॥ तव पुत्रस्य ते दृष्ट्वा विक्रमं सुमहात्मनः । व्यस्मयन्त रणे योधाः सिद्धाश्चाप्सरसस्तथा ॥ ३२ ॥ धृष्टद्युम्नमदृश्याम घटमानं महाबलम् । दुःशासनेन संरुद्धं सिंहेनेव महाद्विपम् ॥३३॥ ततः सरथनागाश्वाः पाञ्चालाः पाण्डुपूर्वज । सेनापतिं परीप्सन्तो रुरुधुस्तनयं तव ॥ ३४ ॥ ततः प्रववृते युद्धं तावकानां परैः सह । घोरं प्राणभृतां काले भीमरूपं परन्तप ॥ ३५ ॥ नकुलं वृषसेनस्तु विद्ध्वा पञ्चभिरायसैः । पितुः समीपे तिष्ठन् वै त्रिभिरन्यैरविध्यत ॥ ३६ ॥ नकुलस्तु ततः शूरो वृषसेनं हसन्निव । नाराचेन सुतीक्ष्णेन विव्याध हृदये भृशम ॥ ३७ ॥

सुनहरे अंगवाले सत्रह भल्लों से धृष्टद्युम्न को दोनों भुजा और छातापर घायल किया । २९ । इसके पीछे उस क्रोधभरे धृष्टद्युम्नने अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रसे दुश्शासन के धनुषको काटा तबतो मनुष्य पुकारे ।३०।इसके पीछे हँसतेहुये आपके पुत्रने दूसरे धनुषको लेकर बाणों के समूहोंसे धृष्टद्युम्नको चारोंओर से रोका ।३१। वह सब शूरवीर और सिद्धोंसमेत अप्सराओं के समूह आपके पुत्रके पराक्रमको देखकर युद्धमें आश्चर्यसा करनेलगे । ३२ । उपाय करनेवाले बड़े पराक्रमी दुश्शासन से रुकेहुये धृष्टद्युम्नको ऐसे नहीं देखा जैसेकि सिंहसे रुकेहुये बड़े हाथीको नहीं देखते ।३३। हे पांडुके बड़े भाई इसके पीछे सेनापतिके चाहने वाले पांचालों ने रथ हाथी और घोड़ोंसमेत आपके पुत्रको रोका ।३४। हे शत्रुसन्तापी इसकेपीछे आपके शूरवीरों का युद्ध दूसरोंके साथ होनेलगा वह युद्ध महाघोर भयानकरूप और समयपर प्राणों का हरनेवाला था । ३५ । पिताके सम्मुख नियत वृषसेन ने पांच लोहे के बाणों से और तीन अन्यबाणों से नकुल को छेदा । ३६ । इसके पीछे हँसते हुये शूरवीर नकुल ने अत्यन्त तीक्ष्ण नाराच से वृषसेनको हृदय पर कठिन पीड़ामान किया । ३७ । पराक्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल उस शत्रुओं के पराजय करने वाले ने बीसबाणों से शत्रुको पीड़ामान किया और उसने भी उसको पांचबाणोंसे

dyumn then cut Dushasan's bow and the people cried out in dismay 30. Your son smilingly took up another bow and checked his adversary with the flights of his arrows. All the warriors, with the Sidhas and apasras, wondered at the prowess of your son. Hidden under arrows, Dhrishtadyumn became invisible and was checked like an elephant by a lion. Then other warriors helped Dhrishtadyumn by checking Dushasan with the army of elephants and horses. Then the battle of the two armies was dreadful. 35. In the presence of his father, Vrishasen wounded Nakul with eight arrows. Nakul with a smile, wounded Vrishasen with arrows. The latter again wound-

सोऽतिविद्धो बलवता शकुना शत्रुमर्दनः । शकुनिं विव्याध विंशत्या स च तं पञ्चभिः शरैः ॥ ३८ ॥ ततः शरसहस्रेण तावुभौ पुरुषर्षभौ । आच्छादयेतामन्योन्यमथाभज्यत वाहिनी ॥ ३९ ॥ दृष्ट्वा तु द्रुतां सेनां धार्त्तराष्ट्रस्य सूतजः । निवारयामास बलाद् नुद्रम्य विशाम्पते ॥ ४० ॥ निवृत्ते तु ततः कर्णे नकुलः कौरवान् ययौ । कर्णपुत्रस्तु समरे हित्वा नकुलमेव तु ॥ ४१॥ जुगोप चक्रं त्वरितो राधेयस्यैव मारिषाउलूकस्तु रणे क्रुद्धः सहदेवेन वारितः॥४२॥तस्याश्वांश्चतुरो हत्वा सहदेवः प्रतापवान्। सारथिं प्रेषयामास यमस्य सदनं प्रति ॥ ४३ ॥ उलूकस्तु ततो यानादवप्लुत्य विशाम्पते । त्रिगर्त्तानां बलं तूर्णं जगाम पितृनन्दनः ॥ ४४ ॥ सात्यकिः शकुनिं विद्ध्वा विंशत्या निशितैः शरैः । ध्वजं चिच्छेद भल्लेन सौवलस्य हसन्निव ॥ ४५ ॥ सौवलस्तस्य समरे क्रुद्धो राजन् प्रतापवान् । विदार्य्य कवचं भूयो ध्वजं चिच्छेद काञ्चनम् ॥ ४६ ॥ अथैनं निशितैर्वाणैः सात्यकिः प्रत्यविध्यत । सारथिञ्च महाराज त्रिभिरेव समार्पयत् ।

व्यथित किया । १८ । उसके पीछे उनदोनों पुरुषोत्तमों ने हजारों वाणोंसे परस्पर ढक दिया तदनन्तर सेना छिन्नभिन्न होगई । ३९ । हे राजन् कर्णने दुर्य्योधनकी भागी हुई सेनाको देखकर उनको पीछे से जाकर रोका। ४० । इसके पीछे कर्ण के लौटने पर नकुल कौरवोंकी ओरचला फिर कर्णके पुत्रने युद्धमें नकुलको छोड़कर । ४१ । फिर शीघ्रता से कर्णकीही सेनाको रक्षित किया वहां क्रोधयुक्तउलूक को युद्धमें प्रतापवान सहदेवने रोककर उसके चारों घोड़ों को मार सारथीको यमलोक में पहुंचाया । ४३ । हे राजन् इसके पीछे पिताको प्रसन्नकरने वाला उलूक रथसे उतरकर शीघ्रही त्रिगर्त्तदेशियों की सेनामें गया । ४४ । और हँसतेहुये सात्यकिने तेज धारवाले वीसवाणों से शकुनिको छेदकर एकवाणसे उसकी ध्वजा को काटा । ४५ । हे राजन् फिर क्रोधयुक्त प्रतापवान शकुनी ने युद्ध में कवच को चीरकर उसकी सुनहरी ध्वजाको काटा । ४६ । इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले सात्यकि ने वाणोंसे उसके सारथी और घोड़ोंको यमलोकमें पहुँचाया । ४७ । हे भरतर्षभ फिर शकुनी अकस्मात् रथसे कूदकर शीघ्रही महात्मा उलूकके रथपर

ed the former with twenty arrows and was wounded in return by five arrows. Then the two best of men hid each other with thousands of arrows and the armies were dispersed. Seeing Duryodhan's army put to flight, Karan checked the flying warriors from behind. 40. At the return of Karan, Nakul advanced towards the Kauravas. Karan's son left Nakul and protected the army. Having checked in battle, Sahadev slew his horses and driver. Uluk came down from the car and entered the army of Trigartas to please his father. Having pierced Shakuni with twenty sharp arrows, Satyaki cut his standard too, with a smile. Glorious Shakuni pierced his adversary's armour and cut down his golden standard. 46. Satyaki soon sent

अथास्य वाहांस्त्वरितः शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ ४७ ॥ ततोवप्लुत्य सहसा शकुनिर्भरतर्षभ । आरुरोह रथं तूर्णमुलूकस्य महारथः । अपोवाहाथ शीघ्रं स शैनेयाद्युद्धशालिनः ॥ ४८ ॥ सात्यकिस्तु रणे राजंस्तावकानामनीकिनीम् । अभिदुद्राव वेगेन ततोनीकमभज्यत ॥ ४९ ॥ शैनेयशरसंछन्नं तव सैन्यं विशाम्पते । भेजे दश दिशस्तूर्णं न्यपतच्च गतासुवत् ॥ ५० ॥ भीमसेनं तव सुतो वारयामास संयुगे । तन्तु भीमो मुहूर्त्तेन व्यश्वसूतरथध्वजम् ॥ ५१ ॥ चक्रे लोकेश्वरं तत्र तेनातुष्यन्त वै जनाः ॥ ततोपायान्नृपस्तत्र भीमसेनस्य गोचरात् ॥ ५२ ॥ कुरुसैन्यं ततः सर्वं भीमसेनमुपाद्रवत् । तत्र नादो महानासीद्भीमसेनं जिघांसताम् ॥ ५३ ॥ युधामन्युः कृपं विध्वा धनुरस्याशु चिच्छेद अथान्यद्धनुरादाय कृपः शस्त्रभृतांवरः ॥ ५४ ॥ युधामन्योर्ध्वजं सूतं छत्रञ्चापातयत् क्षितौ । ततोपायाद्रथेनैव युधामन्युर्महारथः ॥ ५५॥ उत्तमौजाश्च हार्दिक्यं भीमं भीम

सवारहुआ तब युद्धको शोभा देनेवाले सात्यकिने उसको शीघ्रही हटाया । ४८ । हे राजन् फिर सात्यकि आपकी सेनाके सम्मुखगया और सेना भिन्नभिन्नहोगई । ४९ । सात्यकिके बाणोंसे ढकीहुई आपकी सेनाके लोग शीघ्रही दशों दिशाओं में भागकर निर्जीवों के समान गिरपड़े । ५० । फिर आपके पुत्रने युद्धमें भीमसेन को रोका तब भीमसेनने एकमुहूर्त्त भरमेंही वहां उस पृथ्वी के राजा दुर्य्योधनको घोड़े रथ सारथी और ध्वजासे रहित करदिया उस कर्मसे सब मनुष्य प्रसन्नहुये इसके पीछे राजा दुर्य्योधन भीमसेनके आगे से हटगया । ५२ । फिर सब कौरवी सेनाने भीमसेनको घेरा वहां भीमसेनके मारनेके इच्छावान् शूरवीरोंके बड़े शब्दहुये । ५३ । युधामन्युने कृपाचार्यको छेदकर शीघ्रही उनके धनुषको काटा इसकेपीछे शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्यने दूसरे धनुषको लेकर । ५४ । युधामन्युकी ध्वजा सारथी और छत्रको पृथ्वीपर गिराया इसकेपीछे महारथी युधामन्यु रथकी सवारी से हटगया । ५५ । उत्तमौजाने भयानकरूप और भयानक पराक्रमवालेकृतवर्माको बाणोंसे अकस्मात् ऐसा ढकदिया जैसे कि बादलपानीकी वर्षासे पर्व्वतकोढकदता

his horses and driver to the region of Yam. Shakuni came down from the car and mounted that of Uluk. He was put to flight by Satyaki. Then Satyaki routed your army. Your warriors hid by Satyaki's arrows, dispersed in all directions or fell down dead. 50. Your son checked Bhim; but the latter soon deprived him of horses, car and driver, and the lookers on were pleased. Then Duryodhan removed himself from the presence of Bhim. The Kaurav warriors then surrounded Bhim with loud cries. Yudhamanyu wounded Kripacharya and cut down his bow. Kripacharya took up another bow and cut down his adversary's banner, driver and umbrella and made him slink away. Uttamauja, all of a sudden, hid Kritvarma of dreadful prowess with arrows as clouds hide a hill. I had never

पराक्रमम् । छादयामास सहसा वृष्ट्या मेघइवाचलम् ॥ ५६ ॥ तद्युद्धं सुमहच्चासीद्घोररूपं परन्तप । यादृशं न मया युद्धं दृष्टपूर्वं विशाम्पते ॥ ५७ ॥ कृतवर्मा ततो राजन्नुत्तमौजसमाहवे । हृदि विव्याध सहसा स रथोपस्थ आविशत् ॥ ५८ ॥ सारथिस्तमपोवाह रथेन रथिनां वरम् । कुरुसैन्यं ततः सर्वं भीमसेनमुपाद्रवत् ॥५९॥ दुःशासनः सौबलश्च गजानीकेन पाण्डवम् । महता परिवार्य्यैव क्षुद्रकैरभ्यताडयत् ॥ ६० ॥ ततो भीमः शरशतैर्दुर्योधनममर्षणम् । विमुखीकृत्य तरसा गजानीकमुपाद्रवत् ॥ ६१ ॥ तमापतन्तं सहसा गजानीकं वृकोदरः । दृष्ट्वैव सुभृशं क्रुद्धो दिव्यमस्त्रमुदैरयत् । गजैर्गजानभ्यहनद्वज्रेणेन्द्र इवासुरान् ॥ ६२ ॥ ततोऽन्तरीक्षं बाणौघैः शलभैरिव पावकम् । छादयामास समरे गजान्निघ्नन् वृकोदरः ॥ ६३ ॥ ततः कुञ्जरयूथानि समेतानि सहस्रशः । व्यधमत्तरसा भीमो मेघसङ्घा निवानिलः ॥ ६४ ॥ सुवर्णजालपिहिता मणिजालैश्च कुञ्जराः । रेजुरभ्यधिकं सङ्ख्ये विद्युत्वन्त इवाम्बुदाः

है । ५६ । हे शत्रुसंतापी राजा धृतराष्ट्र वह महाघोर युद्ध ऐसा बहुत बड़ाहुआ जैसाकि मैंने पहले कभी न देखाथा । ५७ । इसकेपीछे कृतवर्माने युद्धमें उत्तमौजस को हृदयपर पीड़ामान किया तब वह अकस्मात् रथके अगार बैठगया । ५८ । फिर सारथी रथके द्वारा उस महारथीको दूरलेगया इसकेपीछे सब कौरवी सेना भीमसेनके ऊपरचढ़आई । ५९ । दुश्शासन और शकुनीने हाथियोंकी सेना समेत भीमसेनको घेरकर क्षुरप्र नाम बाणोंसे घायल किया । ६० । तबक्रोधयुक्त भीमसेन सैकड़ों बाणों से क्रोधयुक्त दुर्य्योधनको विमुख करके बड़ी तीव्रतासे हाथियों की सेनापर आटूटा । ६१ । वहां अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने उस अकस्मात् आने वाली हाथियों सेनाको देखकर दिव्यअस्त्रको प्रकट किया हाथियों को हाथियों से ऐसमारा जैसे कि वज्रसे इन्द्र असुरों को मारताहै । ६२ । इसकेपीछे युद्धमें हाथियों को मारतेहुये भीमसेननने बाणों के समूहों से आकाशको ऐसा ढकदिया जैसे कि टीड़ियों से वृक्ष ढकजाताहै इसकेपीछे भीमसेनने मिलेहुये हाथियों के हजारोंझुण्डों को बड़े बेगसे ऐसे छिन्नभिन्न करादिया जैसे कि बादलों के समूहों को वायु तितिर बितिर करदेताहै । ६४ । सुवर्ण और मणियों के जालों से ढकेहुयेहाथी युद्धमें ऐसे अधिक शोभायमान हुये जैसे कि बिजली रखनेवाले बादल । ६५ । हे राजन भीम-

seen such a dreadful battle before. Then Kritvarma wounded Uttamaujas on the breast and the latter sat down on his car and was removed by the driver far away. Then all the Kaurav army attacked Bhim and wounded him with arrows. 60. With thousands of arrows, Bhim put Duryodhan to flight and charged the line of elephants. Enraged Bhim, seeing the army of elephants before him, used a celestial weapon and slew them as Indra slays asurs with vajra. Slaying the elephants, Bhim covered the air with his arrows like the flights of locusts and dispersed them as the wind does the clouds. Covered by golden arrows, the elephants looked glorious like clouds.

नृपः । शरवर्षेण महता प्रत्यवारयदागतान् ॥ ९ ॥ शरौघान् विसृजन्तस्ते प्रेरयन्तश्च तोमरान् । न शक्नुवंस्तथन्तोऽपि राधेयं प्रतिवीक्षितुम ॥ १० ॥ तांश्च सर्वान्महेष्वासान् सर्वशस्त्रास्त्रपारगः महता शरवर्षेण राधेयः प्रत्यवारयत् ॥ ११ ॥ दुर्योधनन्तु विंशत्या शीघ्रमस्त्रमुदीरयन् । अविध्यत्तूर्णमभ्येत्य सहदेवो महात्मनाः ॥ १२ ॥ स विद्धः सहदेवेन रराजाचलसन्निभः । प्रभिन्न इव मातङ्गो रुधिरेण परिप्लुतः ॥ १३ ॥ दृष्ट्वा तव सुतं तत्र गाढ़ विद्धं सुतेजनैः । अभ्यधावत संक्रुद्धो राधेयो रथिनां वरः ॥ १४ ॥ दुर्योधनं तथा दृष्ट्वा शीघ्रमस्त्रमुदीर्य सः । तेन यौधिष्ठिरं सैन्यं जघान पार्षतं तथा ॥ १५ ॥ ततो यौधिष्ठिरं सैन्यं वध्यमानं महात्मना । सहसा प्राद्रवद्राजन् सूतपुत्रशरार्दितम ॥ १६ ॥ विविधा विशिखास्तत्र संपतन्तः परस्परम् फलैः पुंखान् समाजग्मुः सूतपुत्रधनुश्च्युताः ॥ १७ ॥ अन्तरीक्षे शरौघाणां पतताञ्च परस्परम् । संघर्षाञ्च महाराज पावकः समजायत ॥ १८ ॥ ततो दश

धनुषधारियों को वाणोंकी वर्षासे रोका और वाणोंकी वर्षाकरते तोमरो को चलाते वह उपायकरने वाले लोगभी कर्ण की ओर देखने को समर्थ नहीं हुये । १० । फिर कर्णने उन सब शस्त्रकुशल बड़े धनुषधारियों को बड़ी वाणोंकी वर्षा करके रोका । ११ । और शीघ्र अस्त्र के प्रकट करनेवाले प्रतापी सहदेव ने दुर्योधन के सम्मुख होकर शीघ्रही बीसवाणों से छेदा । १२ । सहदेवके हाथसे घायल पर्व्वतके समान राजा दुर्योधन मदोन्मत्त हाथीके समान रुधिरसे लिप्तहुआ । १३ । फिर वहां वाणोंसे घायल हुये आपके पुत्रको देखकर रथियों में श्रेष्ठ कर्ण क्रोधित होकर दौड़ा । १४ । तब दुर्योधनको देखकर शीघ्रही अस्त्रको प्रकटकिया उस अस्त्रसे युधिष्ठिरकी सेनासमेत धृष्टद्युम्नको घायल किया । १५ । इसके पीछे महात्मा कर्ण के हाथसे घायल और पीड़ामान युधिष्ठिरकी सेना अकस्मात् भागी । १६ । हे राजन् वहां नाना प्रकारके वाण परस्पर में फेंकेगये कर्ण के धनुष से निकले हुये वाणोंने भल्लोंसे पुंखोंको काटा । १७ । हे राजन अन्तरिक्ष में परस्पर गिरनेवाले वाण समूहोंकी घिसावट से अग्नि उत्पन्न हुई । १८ । इसके पीछे कर्णने चलने वाली टीड़ियों के समान शत्रुके शरीर में प्रवेश कर जानेवाले वाणोंसे बड़े वेगयुक्त

the coming warriors with arrows and tomars and none could look him in the face. 10. Then Karan checked all those clever warriors with the shower of arrows. Sahadev pierced Duryodhan with twenty arrows. The huge body of the king bled profusely like that of an elephant. Seeing your son wounded, Karan ran on in rage to his help. Duryodhan at once took up arms at the sight of Karan and wounded Yudhishthir and his army. 15. The Pandav army wounded by Karan, ran away all of a sudden. Karan cut down the arrows shot at him and there was fire produced from the concussion of arrows in the air. Then he filled all the directions with his sharp arrows like the

प्रहसन्निषतं कर्णः कङ्कपत्रैः शिलाशितैः । उरस्यविध्यद्राजानं त्रिभिर्भल्लैश्च पाण्डवम् ॥ २९ ॥ स पीड़ितो भृशं तेन धर्मराजो युधिष्ठिरः । उपविश्य रथोपस्थे सूतं याहीत्यचोदयत् ॥ ३० ॥ प्राक्रोशन्त ततः सर्वे धार्त्तराष्ट्राः सराजकाः । गृह्णीध्वमिति राजानमभ्यधावन्त सर्वशः ॥ ३१ ॥ ततः शताः शतदश केकयानां प्रहारिणाम् । पाञ्चालैः सहिता राजन् धार्त्तराष्ट्रानवारयन् ॥३२॥ तस्मिंस्तु तुमुले युद्धे वर्त्तमाने महाभये । दुर्योधनश्च भीमश्च समेयातां महाबलौ ॥ ३३ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि युधिष्ठिरापयाने त्रिषष्ठोऽध्यायः ६३

संजय उवाच । कर्णोऽपि शरजालेन केकयानां महारथान् । व्यधमत् परमेष्वासान् अग्रतः पर्यवस्थितान् ॥ १ ॥ स तेषां यतमानानां राधेयस्य निवारणे । रथान् पञ्च

युधिष्ठिरने उसको सुनहरी पुंखवाले सौ बाणों से घायल किया फिर हँसतेहुये कर्णने तीक्ष्ण कंकपत्र से जटित तीनभल्लों से उस युधिष्ठिर को छातीपर घायल किया । २९ । उससे अत्यन्त पीड़ामान राजा युधिष्ठिर रथके अगपर बैठकरसारथी से कहनेलगा कि, चल । ३० । तदनन्तर सब धृतराष्ट्र के पुत्र और राजा लोग पुकारे कि राजाको पकड़ो यहकहकर सबदौड़े । ३१ । उसकेपीछे प्रहार करनेवाले केकय देशियों के एकहजार सातसौ रथियों ने पांचालों समेत धृतराष्ट्रकेपुत्रों को रोका । ३२ । और मनुष्योंके नाशकारी उसकठिन युद्धके जारीहोनेपर बड़ेपराक्रमी भीमसेन और दुर्योधन परस्परमें सम्मुखहुये ३३ ॥

अध्याय ६३ ॥

संजय बोले कि कर्णने आगे नियत होनेवाले महारथी केकयदेशियोंको अपने बाणजालों के छिन्नभिन्न करदिया रोकनेमेंही उन केकयदेशियों के पांचसौ रथों

asked the driver to take him away. Then the warriors and sons of Dhritrashtra cried out, "Seize the king." and chased him. Seventeen hundreds of Kaikaya warriors, with the Panchals, opposed them. Durring that battle Bhim and Duryodhan came face to face,"33.

CHAPTER LXIII

Sanjaya said, "Karan dispersed the Kaikaya warriors and destroedi five hundred cars. Unable to withstand Karan, they went to Buym

शतानि कर्णः प्राहिणोद्यमसादनम् ॥ २ ॥ अविषह्यं ततो दृष्ट्वा राधेयं युधि योधिनः भीमसेनमुपागच्छन् कर्णबाणप्रपीड़िताः ॥ ३ ॥ रथानीकं विदार्य्यैव शरजालैरनेकधा कर्ण एकरथेनैव युधिष्ठिरमुपाद्रवत् ॥ ४ ॥ सेनानिवेशमाच्छन्तं मार्गणैः क्षतविक्षतम् यमयोर्मध्यगं धीरं शनैर्यान्तं विचेतसम् ॥ ५ ॥ समासाद्य तु राजानं दुर्योधनहिते स्थितः। सूतपुत्रस्त्रिभिस्तीक्ष्णैर्विव्याध परमेषुभिः ॥ ६ ॥ तथैव राजा राधेयं प्रत्यविध्यत् स्तनान्तरे । शरैस्त्रिभिश्च यन्तारं चतुर्भिश्चतुरो हयान् ॥ ७ ॥ चक्ररक्षौ तु पार्थस्य माद्रीपुत्रौ परन्तपौ । तावप्यधावतां कर्णं राजानं मा वधीदिति ॥ ८ ॥ तौ पृथक् शरवर्षाभ्यां राधेयमभ्यवर्षताम् । नकुलःसहदेवश्च परमं यत्नमास्थितौ ॥ ९ ॥ तथैव तौ प्रत्यविध्यत् सूतपुत्रः प्रतापवान् ।भल्लाभ्यां शितधाराभ्यां महात्मानावरिन्दमौ ॥ १० ॥ दन्तवर्णांस्तु राधेयो निजघान मनोजवान् । युधिष्ठिरस्य संग्रामे कालवालान् हयोत्तमान् ॥ ११ ॥ ततोऽपरेण भल्लेन शिरस्त्राणमपातयत् । कौन्तेयस्य महे

को कर्णने यमलोकको भेजा । २ ।। इसके पीछे शूरवीरलोग नियतहुये कर्णकोरोकने को असमर्थ होकर उसके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर भीमसेन के पासगये ।३। फिर कर्ण एकही रथकेद्वारा बाणोंके बलसे रथकी सेनाओं को चीरताहुआ युधिष्ठिरके पासगया । ४ । अपने डेरेको जानेवाले बाणोंसे घायल शरीर धीरे चलनेवाले अचेतहुये नकुल और सहदेवके मध्यवर्त्तीवीर । ५ । राजाको दुर्य्योधन की प्रसन्नताकी इच्छासे कर्णने तीक्ष्ण धारवाले तीन उत्तम बाणों से पीड़ामान किया और इसीप्रकार युधिष्ठिरनेभी कर्णको छातीपर घायल करके तीन बाणोंसे सारथीको और चारबाणों से घोड़ोंको पीड़ामानकिया । ७ । फिर शत्रुसंतापी नकुल सहदेव जो कि अर्ज्जुन की सेनाके रक्षकथे वहसब कर्णकी ओर इसनिमित्त दौड़े कियह कहीं राजा को न मारे । ८ । उनदोनों नकुल सहदेव ने कर्णके ऊपर बाणों की वर्षाकरी और बड़ेउपाय में प्रवृत्तहुये।९।इसीप्रकारप्रतापवान् कर्ण जेभी उन शत्रुओं के विजयी महात्मा दोनोंनकुल और सहदेवको बड़े तीक्ष्ण भल्लों से घायल किया । १० । फिर कर्णने धर्मराजके दन्तवर्ण कालेबाल और चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ोंको भी मारा । ११ । इसके पीछे बड़े धनुषधारी हँसतहुये

for refuge. Karan alone penetrated the Pandav army and approchaed Yudhishthir. Finding Yudhishthir wounded and ready to go to his camp with Nakul and Sahadev, Karan wounded him with three arrows in the middle of chest, to please Duryodhan. Yudhishthir too, wounded Karan the driver and the horses with three and four arrows respectively. Nakul and Sahadev who guarded Yudhishthir ran on to rescue the king. They showered their arrows at Karan and tried their utmost. Karan too, wounded Nakul and Sahadev with his arrows.10. He slew the white horses of Yudhishthir, having black hair and swift of pace, and with another low

मानितो भवान् । तं पार्थं जहि राधेय किन्ते हत्वा युधिष्ठिरम् ॥ २१ ॥ शङ्खयोः ध्मातयोः शब्दः सुमहानेष कृष्णयोः । श्रूयते चापघोषोयं प्रावृषीवाम्बुदस्य ह ॥२२॥ असौ निघ्नन्रथोदारानर्जुनः शरवृष्टिभिः । सर्वा ग्रसति नः सेनां कर्ण पश्यैनमाहवे ॥ २३ ॥ पृष्ठरक्षौ च शूरस्य युधामन्यूत्तमौजसौ । उत्तरञ्चास्य वै चक्रं रक्षति सात्यकिः॥२४॥धृष्टद्युम्नस्तथा चास्य चक्रं रक्षति दक्षिणम्।भीमसेनस्तु वै राजा धार्त्तराष्ट्रेण युध्यते॥२५॥ यथा न हन्यात्तं भीमः सर्वेषां नोऽद्य पश्यताम् । तथा राधेय क्रियतां राजा मुच्येत नो यथा॥२६॥पश्यैनं भीमसेनेन ग्रस्तमाहवशालिना। यदि त्वासाद्य मुच्येत विस्मयः सुमहान् भवेत् ॥ २७ ॥ परित्राह्येनमभ्येत्य संशयं परमं गतम् । किन्नु माद्रीसुतौ हत्वा राजानं वा युधिष्ठिरम् ॥ २८ ॥ इति शल्यवचः श्रुत्वा राधेयः पृथिवीपते । दृष्ट्वा दुर्योधनञ्चैव भीमग्रस्तं महाहवे ॥ २९ ॥

मारो युधिष्ठिरके मारनेसे तरा क्या लाभहोगा । २१ । श्रीकृष्ण और अर्जुनकेबड़े शंखों के यह बड़े शब्द और धनुष का यह शब्द ऐसा सुना जाताहै जैसे कि वर्षा ऋतुमें बादलोंके शब्द होते हैं । २२ । यह अर्जुन बाणों की वर्षा से महारथियों को मारताहुआ हमारी सब सेनाको निगले जाताहै हे कर्ण इसको तुम युद्धमें देखो । २३ । उसशूरके पृष्ठकेरक्षक युधामन्यु और उत्तमौजसहैं और इसकी उत्तरीय सेनाका सात्यकि रक्षकहै । २४ । इसीप्रकार धृष्टद्युम्नउसकी दक्षिणीसेनाका रक्षकहै और भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रों से युद्ध करताहै । २५ । सो अबहम सबके देखतेहुये वह भीमसेन जैसे उस दुर्योधन को नहीं मारे और जिसप्रकार से वह छूटजाय हे कर्ण उसीप्रकार तुमको करना चाहिये । २६ । युद्धको शोभा देनेवाले और भीमसेन से निगलेहुये इस दुर्योधनको देखो जो कदाचित् तुमको पाकर यह छूटजाय तो बड़ा आश्चर्य होय । २७ । इस बड़े संशय में पड़ेहुये दुर्योधन को बचाओ माद्रीके पुत्र नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर के मारने से क्या लाभहै । २८ । हे राजा कर्ण ने शल्य के इन वचनों को सुनकर और महायुद्धमें भीमसेन से पराजित दुर्योधन को देखकर । २९ । राजाका अत्यन्त चाहनेवाला

trying to slay Yudhishthir ? 21. The sounds of the huge conchs of Shri Krishn and Arjun as well as that of Arjun's bow are heard like thunder. Killing the warriors with arrows, Arjun is swallowing all our army. Look at him, Karan. Yudhamanyu and Uttamauja protect him on the back. Satyaki protects the left wing of his army and Dhrishtadyumn the right one. Bhimsen is fighting with the sons of Dhritrashtra. 25. You must try, O Karan, to rescue the Prince from Bhim and not to let him slay Duryodhan. Look at Duryodhan fallen in the jaws of Bhim. I wonder if you can rescue him. Save *him* from danger; what is the use of your slaying Nakul, Sahadev and Yudhishthir ? " Hearing these words of Shalya, Karan

ध्वजः प्रहसन्निव सूतजः ॥ १२ ॥ तथैव नकुलस्यापि हयान् हत्वा प्रतापवान् ईषां धनुश्च चिच्छेद माद्रीपुत्रस्य धीमतः ॥ १३ ॥ तौ हताश्वौ हतरथौ पाण्डवौ भृशविक्षतौ । भ्रातरावारुरुहतुः सहदेवरथं तदा ॥ १४ ॥ तौ दृष्ट्वा मातुलस्तत्र विरथौ परवीरहा । अभ्यभाषत राधेयं मद्रराजोऽनुकम्पया ॥ १५ ॥ योद्धव्यमद्य पार्थेन फाल्गुनेन त्वया सह । किमर्थं धर्मराजेन युध्यसे भृशरोषित ॥ १६ ॥ क्षीणशस्त्रास्त्रकवचः क्षीणबाणो विबाणधिः । श्रान्तसारथिवाहश्च छन्नोऽस्त्रैररिभिस्तथा । पार्थमासाद्य राधेय उपहास्यो भविष्यसि ॥ १७ ॥ एवमुक्तोऽपि कर्णस्तु मद्रराजेन संयुगे । तथैव कर्णः संरब्धो युधिष्ठिरमताडयत् ॥ १८ ॥ शरैस्तीक्ष्णैः पराविध्यन्माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । प्रहस्य समरे कर्णश्चकार विमुखं शरैः ॥ १९ ॥ ततः शल्यः प्रहस्येदं कर्णं पुनरुवाच ह । रथस्थमतिसंरब्धं युधिष्ठिरवधे धृतम् ॥ २० ॥ यदर्थं धार्तराष्ट्रेण सततं

कर्णने दूसरे भल्लसे युधिष्ठिर के छत्रको गिराया । १२ । इसीप्रकार प्रतापी बुद्धिमान् कर्णने नकुलकेभी घोड़ोंको मारकर उसकेरथके ईशा और धनुषको काटा । १३ । तब मृतक घोड़े और टूटे रथवाले अत्यन्त घायल वह दोनों भाई सहदेव के रथपर सवार हुये । १४ । वहां शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला मामा शल्य उन दोनोंको विरथ देखकर करुणाकरके कर्ण से बोला । १५ । कि हे कर्ण तुमको पाण्डव अर्जुन से लड़ना चाहिये तू अत्यन्त क्रोधरूप होकर धर्मराजके साथ क्यों लड़ताहै शस्त्र अस्त्र कवच बाण और तूणीरसे रहित । १६ । थकेहुये रथके सारथी और घोड़ेवाला होकर तुम अर्जुनको पाकर हास्यके योग्य होगे । १७ । इसरीतिके शल्यके वचनको सुनकर क्रोधयुक्त कर्ण ने वैसी दशामें भी युधिष्ठिर को घायल किया । १८ । और पांडव नकुल और सहदेवको तीक्ष्णबाणों से छेदा फिरकर्ण ने हँसकर बाणों से उनका मुख फेरदिया । १९ । इसकेपीछे उस क्रोधयुक्त युधिष्ठिर के मारने में प्रवृत्त कर्ण को शल्य ने हँसकर फिर यह वचन कहा कि हे कर्ण आपको दुर्योधनने जिस प्रयोजनकेलिये प्रतिष्ठित कियाहै । २० । उस अर्जुनके

cut down his umbrella. He also slew Nakul's horses and cut down his car. The two brothers, much wounded and deprived of horses, mounted Sahadevas's car. Seeing them destitute of cars, their uncle Shalya said to Karan." You have to fight with Arjun. Why do you fight with Yudhishthir? Having wasted your weapons and tired your driver and horses, you will be laughed at when you come to encounter with Arjun." 17. Having heard Shalya's words, Karan was much enraged and wounded Yudhishthir again. He wounded Nakul and Sahadev too, till they turned back. Seeing Karan intent on slaying Yudhishthir Shalya again said, "Slay Arjun for whose death you are deputed by Duryodhan. 20. What is the use of your

मानितो भवान् । तं पार्थ जहि राधेय किन्ते हत्वा युधिष्ठिरम् ॥ २१ ॥ शङ्खयोर्ध्मातयोः शब्दः सुमहानेव कृष्णयोः । श्रूयते चापघोषश्च प्रावृषीवाम्बुदस्य ह ॥२२॥ असौ निघ्नञ्छरौघेणाराननर्जुनः शरवृष्टिभिः । सर्वां ग्रसति नः सेनां कर्ण पश्यैनमाहवे ॥ २३ ॥ पृष्ठरक्षौ च शूरस्य युधामन्यूत्तमौजसौ । उत्तरञ्चास्य वै चक्रं रक्षति सात्यकिः॥२४॥धृष्टद्युम्नस्तथा चास्य चक्रं रक्षति दक्षिणम्।भीमसेनस्तु वै राजा धार्त्तराष्ट्रेण युध्यते॥२५॥ यथा न हन्यात्तं भीमःसर्वेषां नोऽद्य पश्यताम् । तथा राधेय क्रियतां राजा मुच्येत नो यथा॥२६॥पश्यैनं भीमसेनेन ग्रस्तमाहवशालिना। यदि त्वासाद्य मुच्येत विस्मयः सुमहान् भवेत् ॥ २७ ॥ परित्राह्येनमभ्येत्य संशयं परमं गतम् । किन्नु माद्रीसुतौ हत्वा राजानं वा युधिष्ठिरम् ॥ २८ ॥ इति शल्यवचः श्रुत्वा राधेयः पृथिवीपते । दृष्ट्वा दुर्योधनञ्चैव भीमग्रस्तं महाहवे ॥ २९ ॥

मारो युधिष्ठिरके मारनेसे तरा क्या लाभहोगा । २१ । श्रीकृष्ण और अर्जुनकेबड़े शंखों के यह बड़े शब्द और धनुष का यह शब्द ऐसा सुना जाताहै जैसे कि वर्षा ऋतुमें बादलोंके शब्द होते हैं । २२ । यह अर्जुन बाणों की वर्षा से महारथियों को मारताहुआ हमारी सब सेनाको निगले जाताहै हे कर्ण इसको तुम युद्धमें देखो । २३ । उसशूरके पृष्ठकेरक्षक युधामन्यु और उत्तमौजसहैं और इसकी उत्तरीय सेनाका सात्यकि रक्षकहै । २४ । इसीप्रकार धृष्टद्युम्नउसकी दक्षिणसेनाका रक्षकहै और भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रों से युद्ध करताहै । २५ । सो अवश्य सबके देखतेहुये वह भीमसेन जैसे उस दुर्य्योधन को नहीं मारे और जिसप्रकार से वह छूटजाय हे कर्ण उसीप्रकार तुमको करना चाहिये । २६ । युद्धको शोभा देनेवाले और भीमसेन से निगलेहुये इस दुर्य्योधनको देखो जो कदाचित् तुमको पाकर यह छूटजाय तो बड़ा आश्चर्य होय । २७ । इस बड़े संशय में पड़ेहुये दुर्य्योधन को बचाओ माद्रीके पुत्र नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर के मारने से क्या लाभहै । २८ । हे राजा कर्ण ने शल्य के इन वचनों को सुनकर और महायुद्धमें भीमसेन से पराजित दुर्य्योधन को देखकर । २९ । राजाका अत्यन्त चाहनेवाला

trying to slay Yudhishthir ? 21. The sounds of the huge conchs of Shri Krishn and Arjun as well as that of Arjun's bow are heard like thunder. *Killing the warriors with arrows, Arjun is swallowing* all our army. Look at him, Karan. Yudhamanyu and Uttamauja protect him on the back. Satyaki protects the left wing of his army and Dhrishtadyumn the right one. Bhimsen is fighting with the sons of Dhritrashtra. 25. You must try, O Karan, to rescue the Prince from Bhim and not to let him slay Duryodhan. Look at Duryodhan fallen in the jaws of Bhim. I wonder if you can rescue him. Save *him* from danger; what is the use of your slaying Nakul, Sahadev and Yudhishthir ? " *Hearing these words* of Shalya, Karan

राजगृद्धी भृशंश्चैव शल्यवाक्यप्रचोदितः । अजातशत्रुमुत्सृज्य माद्रीपुत्रौ च
पांडवौ ॥ ३० ॥ तव पुत्रं परित्रातुमभ्यधावत वीर्यवान् । मद्रराजप्रयुक्तैस्तु हयैराकाश
गैरिव ॥ ३१ ॥ गते कर्णे तु कौन्तेयः पांडुपुत्रो युधिष्ठिरः । अपायाज्जवनैरश्वैः सहदेव
स्यमारिष ॥ ३२ ॥ ताभ्यां स सहितस्तूर्णं व्रीडन्निव नरेश्वरः । प्राप्यसेनानिवेशंच मा
र्गणैः क्षतविक्षतः ॥ ३३ ॥ अवतीर्णो रथात्तूर्णमाविशच्छयनं शुभम् । अपनीतशल्यः
सुभृशं हृच्छल्याभिनिपीडितः ॥ ३४ ॥ सोऽब्रवीद्भ्रातरौ राजा माद्रीपुत्रौ महारथौ ।
अनीकं भीमसेनस्य पाण्डवावाशु गच्छतम् ॥ ३५ ॥ जीमूत इव नर्दस्तु युध्यते स
वृकोदरः ॥ ३६ ॥ ततोऽन्य रथमास्थाय नकुलो रथपुङ्गवः । सहदेवश्च तेजस्वी
भ्रातरौ शत्रुकर्षणौ ॥ ३७ ॥ तुरगैरग्र्यरंहोभिर्यात्वा भीमस्य युध्मिनौ । अनीक
सहितौ तत्र भ्रातरौ पर्यवस्थितौ ॥ ३८ ॥

और शल्यके वचनसे चलायमान वड़ा पराक्रमी कर्ण अजातशत्रु युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव को छोड़कर । ३० आपके पुत्रकी रक्षा करनेको दौड़ा हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र राजा मद्रकी प्रेरणासे और मानो आकाशगामी घोड़ोंके द्वारा ३१ कर्णके चलेजाने पर कुन्तीका पुत्र युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा दूर चलेगये । ३२ । वह लज्जायुक्त राजायुधिष्ठिर बाणोंसे घायल उनदोनों भाइयों समेत शीघ्रही डेरेको पाकर । ३३ । बहुतशीघ्र रथसेउतरा वहां जिसके भल्ल निकाले गये वह राजा युधिष्ठिर हृदयके भालोंसे महापीड़ामान होकर अपने शुभ शयन पर जाकर लेटगया । ३४ । और लेटकर अपने महारथी दोनों भाई नकुल और सहदेवसे बोला हे पाण्डव तुम दोनों बहुतशीघ्र भीमसेनकी सेनामेंआओ । ३५ । यहभीमसेन बादलकेसमान गर्जताहुआ लड़ताहै इसकेअनन्तर बड़ेभाईकी आज्ञापाकर शत्रुओंकेपीड़ा देनेवाले महातेजस्वी रथियोंमें श्रेष्ठपराक्रमी दोनो भाई नकुल और सहदेव दूसरे रथपर सवार होकर । ३७ । उत्तम वेगवाले घोड़ों के द्वारा भीमसेनकी सेनाको पाकर दोनों भाई अपनी सेनाओं समेत वहां नियत हुये ३८ ॥

saw Duryodhan pressed by Bhim. Bearing a great love for the Prince and urged by Shalya, Karan left Yudhishthir, Nakul and Sahadev. 30. He made haste to go to the help of your son. Driven by Shalya, the horses at once took him far away and Yudhishthir, with Nakul and Sahadev, went away in their swift car. On reaching their camp, Yudhishthir came down from the car. Arrows were extracted from his body and he lay down on bed in great pain. Then he asked his brave brothers, Nakul and Sahadev, to go at once into the army of Bhim who was fighting and roaring like thunder. By the order of their elder brother, Nakul and Sahadev mounted another car and with their swift horses soon reached the place where Bhim was fighting. " 38.

सञ्जय उवाच । द्रौणिस्तु रथवंशेन महता परिवारितः । आपतत् सहसा राजन् यत्र पार्थो व्यवस्थितः ॥ १ ॥ तमापतन्तं सहसा शूरः शौरिसहायवान् । दधार सहसा पार्थो वेलेव मकरालयम् ॥ २ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । अर्जुनं वासुदेवञ्च छादयामास सायकैः ॥ ३ ॥ अवच्छन्नौ ततः कृष्णौ दृष्ट्वा तत्र महारथाः विस्मयं परमं गत्वा प्रैक्षन्त कुरवस्तथा ॥ ४ ॥ अर्जुनस्तु ततो दिव्यं मस्त्रं चक्रे हसन्निव । तदस्त्रं ब्राह्मणो युद्धे वारयामास भारत ॥ ५ ॥ यद्यद्धि व्याक्षिपद्युद्धे पाण्डवोऽस्त्रं जिघांसया । तत्तदस्त्रं महेष्वासो द्रोणपुत्रो व्यशातयत् ॥ ६ ॥ अस्त्रयुद्धे ततो राजन् वर्त्तमाने भयावहे । अपश्याम रणे द्रौणिं व्यात्ताननमिवान्तकम् ॥ ७ ॥ स दिशः प्रदिशश्चैव छादयित्वा ह्यजिह्मगैः । वासुदेवं त्रिभिर्बाणैरविध्यद्दक्षिणे भुजे ॥ ८ ॥ ततोऽर्जुनो हयान् हत्वा सर्वांस्तस्य महात्मनः ॥ चकार

अध्याय ६४ ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे रथकी सेनाके बड़े समूहों समेत अश्वत्थामा जी अकस्मात् वहां पहुंचे जहां अर्जुन स्थित था । १ । श्रीकृष्णजी को साथ रखनेवाले शूरवीर अर्जुन ने अकस्मात् आनेवाले अश्वत्थामा को तत्क्षण ऐसे रोका जैसे कि मर्यादा समुद्रको रोकती है । २ । हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामा ने शायकों से श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को दकदिया । ३ । इसके पीछे वहांपर महारथी कौरवों ने श्रीकृष्ण अर्जुन को दका हुआ देखकर बड़ा आश्चर्य किया । ४ । इसके अनन्तर हे भरतर्षभ हंसते हुये अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों को प्रकटकिया तब अश्वत्थामा ने उस अस्त्रको रोका । ५ । फिर अर्जुन ने मारनेकी इच्छासे जिस २ अस्त्रको चलाया उस २ अस्त्रको बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने नाशकरदिया । ६ । इसके पीछे बड़े भयकारी अस्त्रोंका युद्ध वर्त्तमान होनेपर युद्ध में हमने अश्वत्थामा को मुखफाड़े हुये कालके समान देखा । ७ । उसने बाणों से दिशों विदिशाओं को आच्छादित करके तीनबाणों से वासुदेवजीको दाहिनी भुजापर छेदा । ८ । इसके पीछे अर्जुन ने उस महात्मा के सब

CHAPTER LXIV.

Sanjaya said, "Then Ashwathama, accompanied by a large army, reached the place where Arjun was. Arjun accompanied by Vasudev, checked Ashwathama as the coast checks the ocean. The latter covered Krishn and Arjun with arrows to the amazent of the Kauravas. Arjun, with a smile, discharged celestial weapons, but was checked by Ashwathama. 5. Whatever weapons Arjun used to slay Ashwathama were destroyed by the latter. During that dreadful battle we saw Ashwathama like Death with gaping mouth. Covering the directions with arrows, he wounded Vasudev with three arrows on the right arm. Arjun slew all his horses and

द्रौणिरायम्य पत्त्रिणा । वक्षोदेशे पृषत्केन ताडयामास निर्दयम् ॥ १७ ॥ सोऽतिविद्धो रणे तेन द्रोणपुत्रेण भारत । १८ । गाण्डीवधन्वा प्रसभं शरवर्षैर्महायशाः । संछाद्य समरे द्रौणिं चिच्छेदास्य च कार्मुकम् ॥ १९ ॥ स छिन्नधन्वा परिघं वज्रस्पर्शसमं युधि । आदाय चिक्षेप तदा द्रोणपुत्रः किरीटिने ॥ २० ॥ तमापतन्तं परिघं जाम्बूनदपरिष्कृतम् । चिच्छेद सहसा राजन् प्रहसन्निव पाण्डवः ॥ २१ ॥ स पपात तदा भूमौ निकृत्तः पार्थसायकैः । विकीर्णः पर्वतो राजन् यथा वज्रेण ताडितः ॥ २२ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज द्रोणपुत्रो महारथः । ऐन्द्रेण चास्त्रवेगेन बीभत्सुं समवाकिरत् ॥ २३ ॥ तस्येन्द्रजालावततं समीक्ष्य पार्थो राजन् गाण्डिवमाददानः । ऐन्द्रं जालं प्रत्यहनत्तरस्वी वरास्त्रमादाय महेन्द्रसृष्टम् ॥ २४ ॥ विदार्य तज्जालमथेन्द्रयुक्तं पार्थस्ततो द्रौणिरथं क्षणेन । प्राच्छादयामास तथाऽप्युपेत्य द्रौणिस्तदा पार्थशराभिभूतः ॥ २५ ॥ विगाह्य तां पाण्डव बाणवृष्टिं शरैः परं नाम ततः प्रकाश्य । शतेन कृष्णं सहसाऽभ्यविध्यत्त्रिभिः शतैरर्जुनं क्षुद्रकाणाम् ॥ २६ ॥ ततोऽर्जुनः सायकानां शतेन गुरोः सुतं मर्मसु निर्बिभेद । अश्वां

। १७ । हे भरतवंशी उस अश्वत्थामा के हाथसे युद्धमें अत्यन्त घायल । १८ । गांडीव धनुषधारी बड़े बुद्धिमान् अर्जुन ने बाणोंकी वर्षा से अश्वत्थामा को ढककर उसके धनुषको काटा । १९ । तब उस टूटे धनुषवाले अश्वत्थामा ने युद्धमें वज्रके समान स्पर्शवाली परिघको लेकर अर्जुन के ऊपर फेंका । २० । हे राजा उस स्वर्णमयी आते हुये परिघको हँसतेहुये पांडुनन्दन अर्जुनने अकस्मात् काटडाला २१ फिर अर्जुन के शायकों से वह टूटा हुआ परिघ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे घायल टूटेहुये पहाड़ गिरते हैं । २२ । हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी अश्वत्थामाने इंद्रास्त्र के वेगसे अर्जुनको ढकादिया । २३ । तब उस वेगवान् पांडव अर्जुन ने उसके फैलेहुये इन्द्रजालको देखकर अपने गांडीव धनुषको लिया । २४ । और महाइन्द्रके उत्पन्न किये उत्तम अस्त्रको लेकर इन्द्रजालको दूरकरके अर्जुन ने महाइन्द्रकी शक्ति से युक्त उस जालको फाड़कर एक क्षणभर में अश्वत्थामा के रथको ढकादिया इसके अनन्तर अर्जुनके बाणों से दबेहुये अश्वत्थामा ने समीप में आकर । २५ । अर्जुनकी उस बाण वृष्टिको सहके और अपने बाणोंसे शत्रुकी वृष्टिके सम्मुख करके सौबाणों से अकस्मात् श्रीकृष्णजी को घायल करता हुआ तीन सौ क्षुद्रकनाम बाणोंसे अर्जुनको घायल किया । २६ । इसकेपीछे अर्जुन

Arjun. 20. Arjun cut the golden club coming towards him and it fell down on earth like a hill struck down by Vajra. Then Ashwathama covered Arjun by Indrastra. Seeing this, Arjun took up the Gandiv bow and cutting asunder that network with his arrows and spear, he hid Ashwathama's car. The latter approached Arjun's car and wounded Shri Krishn with a hundred arrows and Arjun with three. Arjun pierced his adversary with a hundred arrows and destroyed his armour, bow and driver in the presence of all your war-

श्व सूतञ्च तथा धनुर्वर्मचाकिरत् पश्यतां तावकानां ॥ २७ ॥ स विद्ध्वा मर्मसु
मर्माणि पाण्डवः परवीरहा । सारथिञ्चास्य भल्लेन रथनीडादपातयत् ॥ २८ ॥ स सं
गृह्य स्वयं वाहान् कृष्णौ प्राच्छादयच्छरैः । तत्राद्भुत मपश्याम द्रौणे राशु पराक्रमम्
॥ २९ ॥ प्रायच्छत्तुरगान् यच्च फाल्गुनञ्चाप्य योधयत् । तदस्य समरे राजन् सर्वे
योधा ह्यपूजयन् ॥ ३० ॥ ततः प्रहस्य बीभत्सु द्रौणपुत्रस्य संयुगे । क्षिप्रं रश्मीनथा
श्वानां क्षुरप्रैश्चिच्छिदे जयः ॥ ३१ ॥ प्राद्रवंस्तुरगास्ते तु शरवेग प्रपीड़िताः ततोऽभू
न्निनदो घोरस्तव सैन्यस्य भारत ॥ ३२ ॥ पाण्डवास्तु जयं लब्धा तव सैन्यं समाद्रवन्
समन्ता न्निशितान् वाणान् विमुञ्चन्तो जयैषिणः ॥ ३३ ॥ पाण्डवैस्तु महाराज धा
र्त्तराष्ट्री महाचमूः । पुनः पुनरथो वीरैरभञ्जि जितकाशिभिः ॥ ३४ ॥ पश्यतां ते
महाराज पुत्राणां चित्रयोधिनाम । शकुनेः सौवलेयस्य कर्णस्य च विशाम्पतेः॥ ३५ ॥
वार्य्यमाणा महासेना पुत्रै स्तव जनेश्वर । नावातिष्ठत संग्रामे पीडयमाना समन्ततः

ने सौशायकोंसे गुरुके पुत्रको मर्मस्थलों पर छेदा और आपके शूरवीरोंके देखतेहुये घोड़े सारथी कवच और धनुषको काटा । २७ । फिर उस शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुनने मर्मस्थलों में छेदकर भल्लों से उसके सारथीको रथकी नीड़से गिरादिया । २८ । फिर उसने आप घोड़ोंको थांभकर वाणोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुन को ढकदिया वहां हमने अश्वत्थामाके इस शीघ्रपराक्रमको देखा । २९ । कि जिसने घोड़ोंकोभी थांभा और अर्जुन से भी युद्धकिया हे राजा युद्धमें सब शूरवीरों ने उसके उसकर्मकी बड़ी प्रशंसाकरी । ३० । इसके पीछे अर्जुनने हँसकर अपने तुरमनाम वाणों से शीघ्रही अश्वत्थामाके घोड़ोंकी वागको काटा । ३१ । फिर वाणके वेगसे पीड़ामान होकर वह घोड़े भागे हे भरतवंशी इसकेपीछे आपकी सेनाका घोरयुद्धहुआ । ३२ । फिर चारोंओरसे तीक्ष्ण वाणों को छोड़ते विजयाभिलाषी पाण्डव विजयको पाकर आपकी सेनापर दौड़े । ३३ । हे महाराज युद्ध में विजयसे शोभायमान वीर पाण्डवों के हाथसे दुर्य्योधनकी वड़ी सेना वारम्वार छिन्नभिन्न हुई । ३४ । तब अपूर्व युद्ध करनेवाले आपके पुत्र और सुवलके पुत्र शकुनी और कर्ण के देखते हुये सब भागे । ३५ । उससमय चारोंओरसे पीड़ा

riors. 27, Then Aajun made his driver fall down from the car. Ashwathama held the reins of the horses and at the same time covered both Arjun and Shri Krishn with arrows. There we saw the prowess of Ashwathama in doing both works and the warriors praised his work. 30. Then Arjun cut the traces of his horses and wounded with arrows they became unruly. Then there was a great cry raised from your warriors. The Pandavas, being victorious, rushed upon your army and dispersed it again and again in the presence of your sons, Shakuni and Karan. 35. Your army would not

॥ ३६ ॥ ततो योधैर्महाराज पलायद्भिः समन्ततः । अभवद्व्याकुलं भीतं पुत्राणां ते महद्बलम ॥ ३७ ॥ तिष्ठ तिष्ठेतिच ततः सूतपुत्रस्य जल्पतः । नावातिष्ठतसा सेना वध्यमाना महात्मभिः ॥ ३८ ॥ तथोत्कृष्ट महाराज पाण्डवैर्जितकाशिभिः । धार्त्त राष्ट्रबलंदृष्ट्वा विद्रुतंवै समन्ततः ॥ ३९ ॥ ततो दुर्य्योधनः कर्ण मब्रवीत् प्रणयादिव पश्य कर्ण यथा सेना पाण्डवै र्दिता भृशम ॥ ४० ॥ त्वयि तिष्ठति संग्रामात् पला यमपरायणा । एतज्ज्ञात्वा महाबाहो कुरु प्राप्तमरिन्दम ॥ ४१ ॥ सहस्राणि च योधानां त्वामेव पुरुषोत्तम । क्रोशन्ति समरे वीर द्राव्यमाणानि पाण्डवैः ॥ ४२ ॥ एतच्छ्रुत्वा तुराधेयो दुर्योधनवचो महत् । मद्रराजमिदं वाक्यमब्रवीत् प्रहसन्निव ॥ ४३ ॥ पश्य मे भुजयो र्वीर्य्यं मस्त्राणाञ्च जनेश्वर । अद्य हन्मि रणे सर्वान् पाञ्चालान पाण्डु भिः सह । वाहयाश्वा नरव्याघ्र भद्रे णैव न संशयः ॥ ४४ ॥ एव मुक्त्वा महाराज सूतपुत्रः प्रतापवान् । प्रगृह्य विजयं वीरो धनुः श्रेष्ठं पुरा

मान आपके पुत्रोंसे रोकीहुई बड़ी सेना युद्धमें नियत नहीं हुई । ३६ । हे महा राज उसके पीछे आपके पुत्रों की बड़ी सेना चारों ओरसे भागनेवाले शूरवीरों के कारण व्याकुल और भयभीत होगई । ३७ । तदनन्तर ठहरो इसप्रकार से कर्ण के कहने परभी महात्माओं के हाथसे घायल हुई वह सेना नियत नहीं हुई । ३८ । हे महाराज इसके पीछे दुर्य्योधन की सेना को चारों ओर से भागी हुई देखकर विजय से शोभायमान पाण्डवों ने बड़े शब्द किये । ३९ । तब दुर्य्योधन बड़ी नम्रता पूर्व्वक कर्ण से बोला हे कर्ण देखो पांचालों के हाथसे बड़ी सेना अत्यन्त पीड़ित होगई है । ४० । तेरे नियत होनेपर भी भागी हेशत्रुविजयी महाबाहो इस बात को समझकर उचितकर्म करो । ४१ । हे पुरुषोत्तम वीर पाण्डवोंके हाथसे भगाये हुये हजारों शूरवीर युद्ध में तुझी को पुकारतेहैं । ४२ । दुर्य्योधनके इस बड़े वचनको सुनकर हँसताहुआ कर्णभी मद्र देशके राजा से यह वचनबोला ।४३। हे राजा अस्त्रों समेत मेरी दोनों भुजाओं के पराक्रमको देखो अबमैं युद्धमें पाण्डवों समेत सब पांचालोंको मारताहूँ हे नरोत्तम अब तुम कल्याणके निमित्त घोड़ोंको निस्सन्देहचलाओ ।४४। हे महाराज प्रतापीकर्णने इसवचनको कहकर विजयनाम उत्तम और प्राचीन धनुषको लेकर प्रत्यंचा समेत बड़ी दृढ़तासे पकड़कर सच्चेप्रकारसे शूरवीरों

stay in spite of the exertions of your sons and ran away in terror. Karan tried to stop them, but they would not hear him. The Pandavas cried out in glea at the flight of your army. Then Duryodhan humbly said to Karan, "See, the Pandavas have routed my army. 40. Seeing that the army is running in your presence, you should do what is needful. Routed by the Pandavas, the warriors call you for help Hearing this from Duryodhan, Karan said, "You will see the prowess of my arms, king of Madra. I shall slay the Pandavas and Panchals. Drive the horses without hesitation." Having said this,

तनम् ॥ ४५ ॥ सज्यं कृत्वा महाराज संमृज्य च पुनः पुनः । संनिवार्य्य च योधान् स सत्येन शपथेन च । प्रायोजयदमेयात्मा भार्गवास्त्रं महाबलः ॥ ४६ ॥ ततो राजन् सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च । कोटिशश्च शरास्तीक्ष्णा निरगच्छन्महामृधे ॥ ४७ ॥ ज्वलितैस्तैः शरैर्घोरैः कङ्कबर्हिणवाजितैः । सञ्छन्ना पाण्डवी सेना न प्राज्ञायत किंचन ॥ ४९ ॥ हाहाकारो महानासीत् पांचालानां विशाम्पते । पीडितानां बलवता भार्गवास्त्रेण संयुगे ॥ ५० ॥ निपतद्भिर्गजै राजन्नश्वैश्चापि सहस्रशः । रथैश्चापि महाराज नरैश्चापि समन्ततः ॥ ५१ ॥ प्राकम्पत मही राजन्निहतैस्तैस्ततस्ततः । व्याकुलं सर्वमभवत् पाण्डवानां महद्बलम् ॥ ५२ ॥ कर्णस्त्वेको युधां श्रेष्ठो विधूम इव पावकः । दहन् शत्रून् नरव्याघ्रः शुशुभे स परन्तपः ॥ ५३ ॥ ते वध्यमानाः कर्णेन पाञ्चालाश्चेदिभिः सह । तत्र तत्र व्यमुह्यन्त वनदाहे यथा द्विपाः चुक्रुशुश्च नरव्याघ्र यथा व्याघ्रा नरोत्तमाः ॥ ५४ ॥ तेषान्तु क्रोशतामासीद्भीतानां रणमूर्द्धनि । धावताञ्च दिशो राजं

को रोक कर उसशूर पराक्रमी और साहसीने भार्गव अस्त्रको धनुषपर चढ़ाया ।४६। इसकेपीछे उस महायुद्धमें लाखों मयुतों और अर्बुदों तीक्ष्णवाण धनुषसे निकले।४७। उन अग्निरूप घोरकंक और मोरके पंखों से जटित बाणों से पाण्डवी सेना ऐसी ढकगई कि कुछ भी नहीं जानपड़ताथा । ४९ । हे राजा युद्ध में भार्गव अस्त्रसे पीड़ामान पराक्रमी पांचालोंका बड़ाहाहाकार हुआ । ५० । हेनरोत्तम राजा धृतराष्ट्र चारोंओरसे गिरतेहुये हजारों हाथी घोड़े रथ और चारोंओरसे मृतकहुये।५१। मनुष्योंसे पृथ्वी कम्पायमान हुई और सब पाण्डवी सेना व्याकुल हुई । ५२ । हे नरोत्तम शत्रुओंका तपानेवाला अकेलाकर्ण शत्रुओंको भस्म करता हुआ निर्धूम अग्नि के समान शोभायमान हुआ । ५३ । कर्ण के हाथ से घायल वह पाञ्चाल चन्देरी क्षत्रियों समेत जहां तहां ऐसे अचेत होगये जैसे कि वन के भस्म होने में हाथी अचेत होजाते हैं हे नरोत्तम वह उत्तम पुरुष व्याघ्रों के समान पुकारे । ५४ । इसकेपीछे युद्धमें उन भयभीत पुकारनेवाले और चारोंओरसे दौड़नेवालों से ऐसे बड़े शब्द उत्पन्नहुये जैसे कि महाप्रलयमें जीवों के शब्द होते

Karan took up his bow known as Vijaya and put the weapon of Bhargav on the string. 46. Thousands of arrows came out from the bow and spread throughout over the Pandav army Wounded by those arrows, the Panchals cried out in dismay. 50. The earth shook with the fall of men and beasts. Destroying the foes, Karan alone looked glorious like smokeless fire. Wounded by Karan's arrows, the warriors of Panchal and Chanderi fell down senseless here and there like elephants surrounded by a burning forest. The warriors reared like lions and the sounds of the warriors who were running away were like those of pralaya. Birds and beasts were

ग्रस्तानाश्च समन्ततः । आर्त्तनादो महांस्तत्र भूतानामिव संप्लवे ॥ ५५ ॥ वध्यमानांस्तु तान् दृष्ट्वा सूतपुत्रेण मारिष । वित्रेसुः सर्वभूतानि तिर्य्यग्योनिगतान्यपि ॥५६॥ ते वध्यमानाः समरे सूतपुत्रेण सृञ्जयाः । अर्जुनं वासुदेवञ्च क्रोशन्ति स्म मुहुर्मुहुः ॥ ५७ ॥ प्रेतराजपुरे यद्वत् प्रेतराजं विचेतसः ॥ ५८ ॥ श्रुत्वा तु निनदं तेषां वध्यतां कर्णसायकैः । अथाब्रवीद्वासुदेवं कुन्तीपुत्रो धनंजयः ॥ ५९ ॥ भार्गवास्त्रं महाघोरं दृष्ट्वा तत्र समीरितम् ॥ ६० ॥ पश्य कृष्ण महाबाहो भार्गवास्त्रस्य विक्रमम् । नैतदस्त्रं हि समरे शक्यंहन्तुंकथञ्चन ॥ ६१ ॥ सूतपुत्रंच संरब्धं पश्यकृष्ण महारणे। अन्तकप्रतिमं वीर्य्ये कुर्वाणं कर्म दारुणम् ॥ ६२ ॥ अभीक्ष्णं चोदयन्नश्वान् प्रेक्षते मां मुहुर्मुहुः । न च पश्यामि समरे कर्णस्य प्रपलायितुम् ॥ ६३ ॥ जीवन् प्राप्नोति पुरुषः संख्ये जयपराजयौ । मृतस्य तु हृषीकेश वध एव कुतोऽजयः ॥ ६४ ॥ एवमुक्तस्तु पार्थेन कृष्णो मतिमतांवरम् । धनंजयमुवाचेदं प्राप्तकालं रिन्दमः ॥ ६५ ॥ कर्णेन हि

हैं । ५५ । हे श्रेष्ठ फिर कर्ण के हाथसे घायल उन जीवोंको देखकर पशु पक्षी जीवभी भयभीत होगये । ५६ । युद्धमें कर्णके हाथसे घायल वह सृंजय अर्जुन और वासुदेवजी को वारम्वार ऐसेपुकारतेथे । ५७ । जैसे कि यमपुरी में दुःखीजीव यमराजको पुकारतेहैं । ५८ । कर्णके शायकोंसे घायल होनेवालोंके शब्दोंको सुनकर कुन्तीकापुत्र अर्जुन वहांपर छोड़ेहुये भार्गवास्त्रको देखकर वासुदेवजीसेबोला ।६०। हेमहाबाहो श्रीकृष्णजी भार्गवास्त्रके पराक्रमको देखो यह अस्त्र युद्धमें किसीके नाश करनेके योग्य नहींहै । ६१ । श्रीकृष्णजी युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले पराक्रम में यमराज के समान क्रोधयुक्त कर्णकोदेखो।६२।यह कर्ण, घोड़ोंको चला चलाकर प्रतिपद वारंवार मुझको देखता है मैं युद्धमें कर्ण से भागने वाला नहीं हूं । ६३ । सजीव मनुष्य युद्धमें विजय और पराजय दोनों पाता है हे शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी मृतक मनुष्यकी तो पराजयही होती है विजय कैसे होसक्ती है । ६४ । अर्जुनके इस वचन को सुनकर श्रीकृष्ण जीने बुद्धिमानों में श्रेष्ठ अर्जुनसे समयके अनुसार यह वचन कहा। ६५ । कि कर्ण के हाथ से राजा युधिष्ठिर अत्यन्त घायल हुआ

terrified to see the warriors wounded by Karan. 56. The Srinjayas wounded in battle called Arjun and Vasudev for help like the denizens of the region of Yam calling on Yam. On hearing the cries of the Srinjayas wounded by the Bhargav weapon, Arjun said to Vasudev, "See the force of the Bhargav weapon which none can withstand. 61. Look at Karan of dreadful prowess, like Yam in rage. He looks at me again and again from his car and I shall withstand him. Living men are subject to victory and defeat; how can he, who is dead, gain victory? 64. At this Shri Krishn said to Arjun these words proper for the occasion:—" Yudhishthir has

स संशयं गमितः पाण्डवाग्र्यः कर्णेन संख्येय महानुभावः । ज्ञातुं प्रयाह्याशु तमद्य भीम स्थास्याम्यहं शत्रु गणान्निरुध्य ॥ ७ ॥ भीम उवाच । त्वमेव जानीहि महानुभाव राज्ञः प्रवृत्तिं भरतर्षभस्य । अहं हि यद्यर्जुन यामि तत्र वक्ष्यन्ति मां भीत इति प्रवीराः ॥ ८ ॥ ततोऽब्रवीदर्जुनो भीमसेनं संशप्तकाः प्रत्यनीकावस्थिता मे । एतानहत्वा तु मया न शक्यमितोऽपयातुं रिपुसङ्घगोष्ठात् ॥ ९ ॥ अथाब्रवीदर्जुनं भीमसेनः स्ववीर्यमास्थाय कुरुप्रवीर । संशप्तकान् प्रतियोत्स्यामि संख्ये सर्वानहं याहि धनंजय, त्वम् ॥ १० ॥ संजय उवाच । तद्भीमसेनस्य वचो निशम्य सुदुर्वचं भ्रातुरमित्रमध्ये । द्रष्टुं कुरुश्रेष्ठमभिप्रयास्यन् प्रोवाच वृष्णिप्रवरं तदानीम । ११ ॥ अर्जुन उवाच । चोदयाश्वान् हृषीकेश विगाह्यैतद्बलार्णवम । आजातशत्रुं राजानं द्रष्टुमिच्छामि केशव ॥१२॥
सञ्जय उवाच । ततो हयान् सर्वदाशार्हमुख्यः प्रचोदयन् भीममुवाच चेदम् ।

रोककर नियतहूंगा । ७ । भीमसेन बोले हे महानुभाव तुमही उस भरतर्षभ युधिष्ठिर के वृत्तान्तको जानो और हे अर्जुन जो मैं यहां से चलाजाऊंगा तो बड़े शूरवीर शत्रुसमूहको अपने से भयभीत हुआ कहेंगे । ८ । तब अर्जुन ने भीमसेन से कहा कि संसप्तक मेरी सेनाके सम्मुख नियत हैं अब उनको विनामारे इन शत्रु समूहों के स्थान से जाना योग्य नहीं है । ९ । हे कौरवों मे बड़े वीर तब भीमसेन अपने पराक्रमको पाकर अर्जुन से बोले कि मैं संसप्तकों के सम्मुख युद्ध करनेंको जाऊंगा हे अर्जुन तुम चलेजाओ । १० । शत्रुओं के मध्य में भाई भीम सेन के कठिनतासे होनेके योग्य वचन को सुनकर कौरवों में श्रेष्ठ भाई युधिष्ठिर के देखनेकी इच्छासे उन वृष्णिवंशियों में श्रेष्ठ श्रीनारायणजीसे बोला । ११ । कि हे इन्द्रियों के स्वामी इस समुद्ररूप सेनाको त्यागकर घोड़ोंको चलाइये हे केशवजी अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको मैं देखना चाहताहूं । १२ । संजय बोला कि तदनन्तर घोड़ों को चलायमान करतेहुये सब यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी भीमसेन से यहबात बोले कि हे भीमसेनअब यह तेरा कर्म कुछ अपूर्व नहीं है

wounded by Karan. You must hasten to see him, Bhim, and I shall keep the enemy in check during your absence." Bhim said, "You should go to ascertain the state of Yudhishthir; for if I move from my post, the enemies will think that I am terrified. Then Arjun said to Bhim, "The Sansaptaks are standing before my army; it is not well for me to go away without slaying them." Bhim, relying on his own prowess, said to Arjun, "I shall keep the Sansaptaks in check. You may go away. 10. Hearing these words of Bhim, Arjun desirous of seeing Yudhishthir, said to Vasudev, "Leave this ocean like army and drive the horses. I wish to see Yudhishthir." Sanjaya said, "Driving the horses, Sari Krishn the best of Yadavas said to Bhim, "It is no wonder for you to do such deeds. I believe that

नैतच्चित्रं तव कौन्तेय भीम यास्याम्यहं जहि पार्थारिसङ्घान् ॥ १३ ॥ ततो ययौ हृषीकेश यत्र राजा युधिष्ठिरः । शीघ्राच्छीघ्रतरं राजन् वाजिभिर्गरुडोपमैः ॥ १४ ॥ प्रत्यनीके व्यवस्थाप्य भीमसेन मरिन्दमम । सन्दिश्यचैनं राजेन्द्र युद्धंप्रति वृकोदरम ॥ १५ ॥ ततस्तु गत्वा पुरुषप्रवीरौ राजानमासाद्य शयान मेकम । रथादुभौ प्रत्यवरुह्य तस्माद्ववन्दतु क्षेमं राजस्य पादौ ॥ १६ ॥ तं दृष्ट्वा पुरुषव्याघ्रं क्षेमिणं पुरुषर्षभम । मुदाभ्युपगतौ कृष्णा वश्विनाविव वासवम ॥ १७ ॥ तावभ्यनन्दद्राजापि विवस्वान श्विनाविव । हते महासुरे जम्भे शक्रविष्णू यथागुरुः ॥ १८ ॥ मन्यमानो हतं कर्णं धर्मराजो युधिष्ठिरः । हर्षगद्गदया वाचा प्रीतः प्राह परन्तपः ॥ १९ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि अर्जुनस्य युधिष्ठिरसमीप गमने पंचषष्टोऽध्यायः ॥ ६५ ॥



मैं जाताहूं तुम बाणों के समूहों से शत्रुओं के समूहोंको मारो । १३ । हे राजा इसके पीछे श्रीकृष्णजी गरुड़के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा बड़ी शीघ्रता से जहां राजायुधिष्ठिर था वहांगये । १४ । हे राजेंद्र उस शत्रुविजयी भीमसेनको युद्धके विषय में समझाकर सेनाके सम्मुख नियतकरके । १५ । फिर पुरुषों में बड़े वीर दोनों श्रीकृष्ण अर्ज्जुन युधिष्ठिर के समीप गये और वहां अकेलेही सोतेहुये राजा को पाकर दोनों ने रथसे उतरकर धर्मराज के चरणोंको नमस्कार किया श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन उस पुरुषोत्तमको कुशलपूर्वक देखकर ऐसे प्रसन्न हुये जैसे कि इन्द्रको देखकर अश्विनीकुमार प्रसन्न होते हैं । १७ । फिर राजाने भी उनको ऐसा प्रसन्न किया जैसे कि इन्द्र अश्विनीकुमारों को और जैसे महाअसुर जम्भके मरने पर बृहस्पतिजी ने इन्द्र और विष्णु को कियाथा । १८ । संजय बोले कि इसके पीछे शत्रुसन्तापी राजा युधिष्ठिर कर्णको मृतक मानता हुआ बड़ी प्रसन्नता पूर्वक मन्दमुसकानसेश्रीकृष्ण अर्ज्जुनको बड़ीमृदुता और मिष्टवाणीसे प्रसन्न किया

---

you will slay the enemies." Then Shri Krishn drove his horses fast to the place where Yudhishthir was. Having advised Bhim the destroyer of foes what to do, both Krishn and Arjun went to Yudhishthir, and finding him sleeping alone, they bowed down at his feet. Both were pleased to find him alive as Aswinikumars are at the sight of Indra. The king congratulated them as Indra does the Aswins or as Vrihaspati had welcomed Indra and Vishnu at the death of Jambh. Then Yudhishthir hoping that Krishn and Arjun had slain Karan, smiled with joy and talked to them in sweet words. 19.

भवेत् ॥ १७ ॥ जाग्रत् स्वपंश्च कौन्तेय कर्णमेव सदा ह्यहम् । पश्यामि तत्र तत्रैव कर्णभूतमिदं जगत् ॥ १८ ॥ यत्र यत्र हि गच्छामि कर्णाद्भीतो धनञ्जय । तत्र तत्र हि पश्यामि कर्णमेवाग्रतः स्थितम् ॥ १९ ॥ सोऽहं तेनैव वीरेण समरेष्वपलायिना । सहयः सरथः पार्थ जित्वा जीवन् विसर्जितः ॥ २० ॥ को नु मे जीवितेनार्थो राज्येनार्थो भवेत् पुनः । ममैवं धिक्कृतस्याद्य कर्णेनाहवशोभिना ॥ २१ ॥ न प्राप्तपूर्वं यद्भीष्मात् कृपाद्द्रोणाच्च संयुगे । तत् प्राप्तमद्य मे युद्धे सूतपुत्रान्महारथात् ॥ २२ ॥ स त्वां पृच्छामि कौन्तेय यथाद्य कुशलं तथा । तन्ममाचक्ष्व कार्त्स्न्येन यथा कर्णो हतस्त्वया ॥ २३ ॥ शक्रतुल्यबलो युद्धे यमतुल्यः पराक्रमे । रामतुल्यस्तथास्त्रेण स कथं वै निसूदितः ॥ २४ ॥ महारथः समाख्यातः सर्वयुद्धविशारदः । धनुर्धराणां प्रवरः सर्वेषामेकपूरुषः ॥ २५ ॥ पूजितो धृतराष्ट्रेण सपुत्रेण विशाम्पते । त्वदर्थमेव राधेयः स कथं निहतस्त्वया ॥ २६ ॥ धार्तराष्ट्रो हि युद्धेषु सर्वेष्वेव सदार्जुन । तवमृत्युं रणे

योग्य होय । १७ । हे अर्जुन मैं जागते सोते उठते बैठते चलते फिरते जहां तहां हरसमय कर्णहीको देखताहूं सब संसार मुझको कर्णहीरूप दीखता है ।१८। हे अर्जुन मैं कर्ण से ऐसा भयभीत होरहाहूं कि जहां जहां जाताहूं वहां वहां कर्ण कोही नियत देखताहूं । १९ । हे श्रीकृष्ण अर्जुन उस युद्धसे कभी न हटनेवाले वीर कर्णने मुझको घोड़े और रथ समेत विजय करके जीवता त्यागकियाहै ।२०। अब मुझ कर्ण के हाथसे पराजय पानेवालेका इस संसारमें जीवना व्यर्थहै । २१ । पूर्वमें भीष्मजी द्रोणाचार्य व कृपाचार्य से भी ऐसा दुःख मैंने नहीं पायाथा जैसा कि अबयुद्ध में इसमहारथी कर्ण से पाया है । २२ । हे अर्जुन अबमैं तुझसेयह पूछताहूं कि किसरीति से निर्विघ्नता पूर्वक तेरे हाथ से कर्ण मारागया उस सब वृत्तान्तको यथावस्थित ब्यौरे समेत मुझसे वर्णन करो । २३ । पराक्रममें यमराज और पुरुषार्थ में इंद्रके समान और अस्त्रों में परशुरामजी के समान वह कर्ण युद्धमें कैसे मारागया । २४ । महारथी और सब युद्धोंमें कुशल धनुर्धारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और सबमें अकेला पुरुषार्थी । २५ । वह कर्ण तेरही निमित्त पुत्रों समेत धृतराष्ट्रसे स्तुति कियागयाथा वह तेरे हाथसे कैसे मारागया । २६ । हे पुरुषोत्तम

that I see him in all things. 19. Having conquered me in battle, invincible Karan has spared my life. It is not proper for me to live any longer under such circumstances. 21. I was never so hard pressed by Bhishm, Drona and Kripacharya as by Karan. Pray let me know how you were successful in slaying Karan. Like Yam and Indra in prowess and bravery, like Parashuram in the use of weapons, how it was that Karan was slain by you. The skilful warrior, best of archers and unrivalled warrior, Karan was praised by the sons of Dhritrashtra for your sake alone; how was he slain by you? Duryodhan always boasted that Karan would kill Arjun; how was he slain

कर्णं मन्यते पुरुषर्षभ ॥ २७ ॥ सत्वया पुरुषव्याघ्र कथंयुद्धे निसूदितः । तन्ममाचक्ष्व कौन्तेय यथा कर्णो हतस्त्वया ॥ २८ ॥ युध्यमानस्य च शिरः पश्यतां सुहृदां हृतम् । त्वया पुरुषशार्दूलशार्दूलेन यथारुरुः॥२९॥ य पर्य्युपासीत् प्रदिशा दिशश्च त्वां सूतपुत्रः समरे परीप्सन् । दित्सुः कर्णः समरे हस्तिषड्गवं स इदानीं कङ्कपत्रैः सुतीक्ष्णैः । त्वयारणे निहतः सूतपुत्रः कच्चिच्छेते भूमितले दुरात्मा ॥ ३० ॥ प्रियङ्च मे परमो वै कृतोऽयं त्वयारणे सूतपुत्रं निहत्य ॥ ३१ ॥ यः सर्वतःपर्य्यपतत्त्वदर्थे मदान्वितोगर्वितः सूतपुत्रः । स शूरमानी समरे समेत्य कच्चित्त्वया निहतः संयुगेऽसौ ॥ ३२ ॥ रौक्मं वरं हस्तिगवाश्वयुक्तं रथं प्रदित्सुर्यः परेभ्यस्त्वदर्थे । सदा रणे स्पर्द्धते यः स पापः कच्चित्त्वया निहतस्तात युद्धे ॥ ३३ ॥ योऽसौ त्वदा शूरमदेन मत्तो विकत्थते संसदि कौरवाणाम् । प्रियोऽत्यर्थं तस्यसुयोधनस्य कच्चित् स पापो निहतस्त्वयाद्य ॥ ३४ ॥

अर्जुन वह दुर्योधन सदैव सब शूरों के मध्य में कर्णहीको तेरा मारनेवाला मानताथा वह कर्ण तेरे हाथ से कैसे मारागया । २८ । और तुमने उसके शुभचिन्तकों के देखते हुये उस युद्ध करनेवाले का शिर ऐसे काटडाला जैसे कि रुरु नाम मृग का शिर सिंह काटता है । २९ । छः हाथी दान करने का इच्छावान युद्धमें तुझ को चाहनेवाले जिस कर्ण ने दिशा और विदिशाओं को सेवन किया वह दुरात्मा कर्ण क्या अब तेरे अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से युद्ध में मराहुआ पृथ्वी पर सोताहै । ३० । युद्ध में तैंने कर्ण को मारकर मेरा बड़ा भारी अभीष्ट किया । ३१ । जो कर्ण सदैव पूजित और अहंकारयुक्त होकर तेरेनिमित्त सबओर को दौड़ा वह अपने को शूर माननेवाला तुझको युद्ध में पाकर अब क्या मारा गया ।३२। हे तात जोकि तेरे निमित्त हाथी घोड़ों समेत उत्तम सुनहरी रथों से दूसरे लोगों को देने की इच्छा कररहाथा और सदैव युद्ध में ईर्षा करनेवालाथा वह पापात्मा क्या युद्ध में तेरे हाथसे मारागया । ३३ । जो बल पुरुषार्थ में दुर्मद सदैव कौरवों की सभा में निरर्थक वार्तालाप करताथा और उस दुर्योधन का अत्यन्त प्रियथा अब वह दुष्टात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया । ३४ । सम्मुखहोकर

by you ? In the presence of all his wellwishers you cut off his head as a lion does that of a deer. He who promised to give six bulls like elephants to the person who should point you out to him, is he lying on earth slain by your arrows ? 30. You have done me a great service by slaying him. Have you slain Karan who was seeking you to fight ? Have you slain Karan who wished to give golden cars to the person that should discover you to him. Have you slain Karan, the dear friend of Duryodhan, who used to boast of his prowess in the court of the Kauravas and was the dear friend of Duryodhan ? Is he lying on earth with body bleeding by your far reaching arrows ?

भवेत् ॥ १७ ॥ जाग्रत् स्वपंश्च कौन्तेय कर्णमेव सदा ह्यहम् । पश्यामि तत्र तत्रैव कर्णभूतमिदं जगत् ॥ १८ ॥ यत्र यत्र हि गच्छामि कर्णाद्भीतो धनञ्जय । तत्र तत्र हि पश्यामि कर्णमेवाग्रतः स्थितम् ॥ १९ ॥ सोऽहं तेनैव वीरेण समरेष्वपलायिना । सहयः सरथः पार्थ जित्वा जीवन् विसर्जितः ॥ २० ॥ को नु मे जीवितेनार्थो राज्येनार्थो भवेत् पुनः । ममैवं धिक्कृतस्याद्य कर्णेनाहवशोभिना ॥ २१ ॥ न प्राप्तपूर्वं यद्भीष्मात् कृपाद्द्रोणाच्च संयुगे । तत् प्राप्तमद्य मे युद्धे सूतपुत्रान्महारथात् ॥ २२ ॥ स त्वां पृच्छामि कौन्तेय यथाद्य कुशलं तथा । तन्ममाचक्ष्व कार्त्स्न्येन यथा कर्णो हतस्त्वया ॥ २३ ॥ शक्रतुल्यबलो युद्धे यमतुल्यः पराक्रमे । रामतुल्यस्तथास्त्रेण स कथं वै निसूदितः ॥ २४ ॥ महारथः समाख्यातः सर्वयुद्धविशारदः । धनुर्धराणां प्रवरः सर्वेषामेकपूरुषः ॥ २५ ॥ पूजितो धृतराष्ट्रेण सपुत्रेण विशाम्पते । त्वदर्थमेव राधेयः स कथं निहतस्त्वया ॥ २६ ॥ धार्तराष्ट्रो हि युद्धेषु सर्वेष्वेव सदार्जुन । तवमृत्युं रणे

योग्य होय । १७ । हे अर्जुन मैं जागते सोते उठते बैठते चलते फिरते जहां तहां हरसमय कर्णहीको देखताहूं सब संसार मुझको कर्णहीरूप दीखता है ।१८। हे अर्ज्जुन मैं कर्ण से ऐसा भयभीत होरहाहूं कि जहां जहां जाताहूं वहां वहां कर्ण कोही नियत देखताहूं । १९ । हे श्रीकृष्ण अर्जुन उस युद्धसे कभी न हटनेवाले वीर कर्णने मुझको घोड़े और रथ समेत विजय करके जीवता त्यागकियाहै ।२०। अब मुझ कर्ण के हाथसे पराजय पानेवालेका इस संसारमें जीवना व्यर्थहै । २१ । पूर्वमें भीष्मजी द्रोणाचार्य व कृपाचार्य से भी ऐसा दुख मैंने नहीं पायाथा जैसा कि अबयुद्ध में इसमहारथी कर्ण से पाया है । २२ । हे अर्जुन अबमें तुझसेयह पूछताहूं कि किसरीति से निर्विघ्नता पूर्वक तेरे हाथ से कर्ण मारागया उस सब वृत्तान्तको यथावस्थित ब्यौरे समेत मुझसे वर्णन करो । २३ । पराक्रममें यमराज और पुरुषार्थ में इंद्रके समान और अस्त्रों में परशुरामजी के समान वह कर्ण युद्धमें कैसे मारागया । २४ । महारथी और सब युद्धोंमें कुशल धनुर्द्धारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और सब में अकेला पुरुषार्थी । २५ । वह कर्ण तेरही निमित्त पुत्रों समेत धृतराष्ट्रसे स्तुति कियागयाथा वह तेरे हाथसे कैसे मारागया । २६ । हे पुरुषोत्तम

that I see him in all things. 19. Having conquered me in battle, invincible Karan has spared my life. It is not proper for me to live any longer under such circumstances. 21. I was never so hard pressed by Bhishm, Drona and Kripacharya as by Karan. Pray let me know how you were successful in slaying Karan. Like Yam and Indra in prowess and bravery, like Parashuram in the use of weapons, how it was that Karan was slain by you. The skilful warrior, best of archers and unrivalled warrior Karan was praised by the sons of Dhritrashtra for your sake alone; how was he slain by you ? Duryodhan always boasted that Karan would kill Arjun; how was he slain

कर्णं मन्यते पुरुषर्षभ ॥ २७ ॥ सत्वया पुरुषव्याघ्र कर्थयुद्धे निमूदितः । तन्ममाचक्ष्व कौन्तेय यथा कर्णो हतस्त्वया ॥ २८ ॥ युध्यमानस्य च शिरः पश्यतां सुहृदां हृतम् । त्वया पुरुषशार्दूलशार्दूलेन यथारुरुः॥२९॥ य पर्युपासीत् प्रदिशो दिशश्च त्वां सूतपुत्रः समरे परीप्सन् । दित्सुः कर्णः समरे हस्तिषड्गवं स इदानीं कङ्कपत्रैः सुतीक्ष्णैः । त्वयारणे निहतः सूतपुत्रः कच्चिच्छेते भूमितले दुरात्मा ॥ ३० ॥ प्रियङ्च मे परमो वै कृतोऽयं त्वयारणे सूतपुत्रं निहत्य ॥ ३१ ॥ यः सर्वतःपर्यपतत्त्वदर्थे मदान्वितोगर्वितः सूतपुत्रः । स शूरमानी समरे समेत्य कच्चित्त्वया निहतः संयुगेऽसौ ॥ ३२ ॥ रौक्मं वरं हस्तिगवाश्वयुक्तं रथं प्रदित्सुर्यः परेभ्यस्त्वदर्थे । सदा रणे स्पर्द्धते यः स पापः कच्चित्त्वया निहतस्तात युद्धे ॥ ३३ ॥ योऽसौ सदा शूरमदेन मत्तो विकत्थते संसदि कौरवाणाम् । प्रियोऽत्यर्थं तस्यसुयोधनस्य कच्चित् स पापो निहतस्त्वयाद्य ॥ ३४ ॥

अर्जुन वह दुर्योधन सदैव सब शूरों के मध्य में कर्णहीको तेरा मारनेवाला मानताथा वह कर्ण तेरे हाथ से कैसे मारागया । २८ । और तुमने उसके शुभचिन्तकों के देखते हुये उस युद्ध करनेवाले का शिर ऐसे काटडाला जैसे कि रुरु नाम मृग का शिर सिंह काटता है । २९ । छः हाथी दान करने का इच्छावान युद्धमें तुझ को चाहनेवाले जिस कर्ण ने दिशा और विदिशाओं को सेवन किया वह दुरात्मा कर्ण क्या अब तेरे अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से युद्ध में मराहुआ पृथ्वी पर सोताहै । ३० । युद्ध में तैंने कर्ण को मारकर मेरा बड़ा भारी अभीष्ट किया । ३१ । जो कर्ण सदैव पूजित और अहंकारयुक्त होकर तेरेनिमित्त सवओर को दौड़ा वह अपने को शूर माननेवाला तुझको युद्ध में पाकर अब क्या मारा गया । ३२ । हे तात जोकि तेरे निमित्त हाथी घोड़ों समेत उत्तम सुनहरी रथों से दूसरे लोगों को देने की इच्छा कररहाथा और सदैव युद्ध में ईर्षा करनेवालाथा वह पापात्मा क्या युद्ध में तेरे हाथसे मारागया । ३३ । जो बल पुरुषार्थ में दुर्मद सदैव कौरवों की सभा में निरर्थक वाचालाप करताथा और उस दुर्योधन का अत्यन्त मित्रथा अब वह दुष्टात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया । ३४ । सम्मुखहोकर

by you ? In the presence of all his well-wishers you cut off his head as a lion does that of a deer. He who promised to give six bulls like elephants to the person who should point you out to him, is he lying on earth slain by your arrows ? 30. You have done me a great service by slaying him. Have you slain Karan who was seeking you to fight ? Have you slain Karan who wished to give golden cars to the person that should discover you to him. Have you slain Karan, the dear friend of Duryodhan, who used to boast of his prowess in the court of the Kauravas and was the dear friend of Duryodhan ? Is he lying on earth with body bleeding by your far reaching arrows ?

कच्चित् गाण्डीवधनुः प्रमुक्तैस्त्वत्प्रेरितैर्लोहिताङ्गैर्विहङ्गैः । शेते सपापः सुविभिन्नगात्रः कच्चिद्भग्नौ धार्तराष्ट्रस्य बाहू ॥ ३५ ॥ योऽसौ सदा श्लाघते राजमध्ये दुर्योधनं हर्षयन् दर्पपूर्णः । अहं हन्ता फाल्गुनस्येति मोहात् कच्चित्तस्य न वै तथा तत् ॥ ३६ ॥ नाहं पादौ धावयिष्ये कदाचित् यावत् स्थितः पार्थ इत्यल्पबुद्धेः । व्रतं तस्यैतत् सर्वदा शक्रसूनो कच्चित्त्वया निहतः सोऽद्य कर्णः ॥ ३७ ॥ योऽसौ कृष्णामब्रवीद्दुष्टबुद्धिः कर्णः सभायां कुरुवीरमध्ये । किं पाण्डवांस्त्वं न जहासि कृष्णे सुदुर्बलान् पतितान् हीनसत्त्वान् ॥ ३८ ॥ योऽसौ कर्णः प्रत्यजानात्त्वदर्थे नाहत्वाहं सह कृष्णेन पार्थम् । इहोपयातेति स पापबुद्धिः कच्चिच्छेते शरसंभिन्नगात्रः ॥ ३९ ॥ कच्चित् संग्रामो विदितो वै तवायं समागमे सृञ्जयकौरवाणाम् । यत्रावस्थामीदृशीं प्रापितोऽहं कच्चित्त्वया सोऽद्य हतः समेत्य ॥ ४० ॥ कच्चित्त्वया तस्य सुमन्दबुद्धेर्गाण्डीवमुक्तैर्विशिखैर्ज्वलद्भिः । सकुण्डलं भानुमदुत्तमाङ्गं कायात् प्रकृत्तं युधि सव्यसाचिन् ॥ ४१ ॥ यत्त-

तेरे चलाये हुये रक्तांग आकाशचारी बाणों से शरीर में अत्यन्त घायल वा वह पापीकर्ण क्या अब सोता है दुर्योधन की भुजा ढीली और निर्बल हुई ।३५। जो यह कर्ण अपने अज्ञान से राजाओं के मध्य में दुर्योधन को प्रसन्न करता हुआ अहंकार में भराहुआ सदैव अपनी यह प्रशंसा करताथा कि मैं अर्जुन का मारनेवालाहूं क्या उसका वह वचन ठीक नहीं हुआ ।३६। कि मैं तबतक कभी पदाती रूप से नहीं दौडूंगा जबतक कि अर्जुन नियत होकर वर्तमान है उस निर्बुद्धि का सदैव यही व्रतथा हे इन्द्र के पुत्र अर्जुन वह कर्ण क्या अब तेरे हाथसे मारागया । ३७ । जिस दुष्टबुद्धि कर्ण ने सभा में कौरववीरों के मध्य में द्रौपदी से यह कहाथा कि हे कृष्णा तू इन अत्यन्त निर्बल और नाशहुये पुरु पार्थ रहित पांडवोंको क्योंनहीं त्यागकरती है ।३८। और वही कर्ण ने तेरे विषय में प्रतिज्ञा करीथी कि मैं श्रीकृष्ण समेत अर्जुनको बिना मारेहुये यहां नहीं आऊंगा वह पापबुद्धि तेरे बाणोंसे घायल हुआ अब क्या सोरहाहै ।३९। सृञ्जियों और कौरवों के इस युद्धको क्या तुम जानते हो जिस में कि मेरी यहदशा होगई है अब वह दुरात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया । ४० । हे अर्जुन तुमने युद्धमें अपने गाण्डीव धनुष से छोड़हुये अग्निरूप बाणों से उस अत्यन्त निर्बुद्धि कर्ण

Is Duryodhan's arm broken by his death ? 35. Have Karan's boasts of slaying you in battle proved false? 36, Have you slain Karan who had vowed not to walk on foot without slaying you ? Does he sleep in death, Karan who said to Draupadi in the court of the Kauravas that she should give up the weak and unmanly Pandavas and who said that he would not return without slaying Krishn and Arjun ? Do you know of the battle between the Kauravas and Srinjayas in which I was reduced to this condition ? Have you slain the wretch, 40. Have you severed with your sharp arrows the

मया बाणसमर्पितेन ध्यातोऽसि कर्णस्य वधाय वीर । तन्मे त्वया कच्चिदमोघमद्य ध्यानं कृतं कर्णनिपातनेन ॥ ४२ ॥ यद्दर्पपूर्णः स सुयोधनोऽस्मानुदीक्षते कर्णसमाश्रयेण कच्चित्त्वया सोऽद्य समाश्रयोऽस्य भग्नः पराक्रम्य सुयोधनस्य ॥ ४३ ॥ यो नः पुरा षण्ढतिलानवोचत् सभामध्ये कौरवाणां समक्षम् । सुदुर्मतिः कच्चिदुपेत्य संख्ये त्वया हतःसूतपुत्रोऽत्यमर्षी ॥ ४४ ॥ यः सूतपुत्रः प्रहसन् दुरात्मा पराब्रवीत् निर्जितां सौबलेन । स्वयं प्रसह्यानय याज्ञसेनीमपीह कच्चित् स हतस्त्वयाद्य ॥ ४५ ॥ यः शस्त्रभृत् श्रेष्ठतमं पृथिव्यां पितामहं व्याक्षिपदल्पचेताः । संख्यायमानो ऽर्द्धरथः स कच्चित्त्वया हतो ह्याधिरथिर्महात्मन् ॥ ४६ ॥ अमर्षजं निकृतिसमीरणेरितं हृदि स्थितं ज्वलनमिमं सदा मम । हते मया सोऽद्य समेत्य कर्ण इति ब्रुवन् प्रशमय

का कुण्डलों समेत देदीप्यमान सिर क्या शरीर से काटडाला है ।४१। हे वीर जो मुझ बाणों से घायल ने तुमको कर्ण के मारनेके निमित्त ध्यान कियाहै अब तुमने कर्ण के मारने से क्या वह मेरा ध्यान सफल किया । ४२ । जो दुर्योधनो कर्ण के आश्रित होकर हमको देखता है अब तुमने क्या उस दुर्योधनके रक्षक को पराजय किया । ४३ । पूर्व समय में जिसने सभा के मध्यवर्ती होकरकौरवों के सम्मुख हमको थोथेतिल और नपुंसक कहा वह दुर्बुद्धि क्रोध से भरा हुआ कर्ण सम्मुख होकर क्या युद्ध में तेरे हाथ से मारा गया । ४४ । पूर्वकाल में जिस हँसते हुये दुरात्मा कर्ण ने शकुनी से जीती हुई द्रौपदी को बड़ी हठसे कहा था कि इस द्रौपदीको यहां लाओ वह कर्ण क्या अब तेरे हाथ से मारागया । ४५ । और जिस निर्बुद्धी ने विख्यात शस्त्रधारी महात्मा पितामहकी निन्दा की है अर्जुन वह अर्द्धरथी क्या तेरे हाथसे अब मारागया । ४६ । हे अर्जुन अब तुम इसबातको कहकर कि वह कर्ण युद्ध में मेरे हाथसे मारागयाहै मेरे हृदयकी जलती हुई अग्नि को बुझाओ क्योंकि वह अग्नि अमर्ष जनित वायु से प्रेरित मेरे हृदय में प्रदीप्त होकर सदैव नियत रहती है । ४७ । सो हे अर्जुन तेरे हाथसे कर्ण कैसे मारागया है उस मेरे दुष्प्राप्य मनोरथ को वर्णन करो हे बड़े वीर

beautiful head of Karan adorned with earrings. I was thinking of you as long as Karan wounded me. Have you fulfilled my hope by slaying him? Have you killed Karan the protector of Duryodhan who, relying on him, looked down upon us. Have you slain Karan, who called us husks of sesamum in the court of the Kauravas? Have you slain Karan who insisted on Draupadi being brought into the court at the time of Shakuni's winning her ? 45. Have you slain Karan who insulted Bhishm the famous warrior? Quench the fire of my breast by saying that you have slain Karan. The fire is burning me always. How was Karan slain by you? Pray tell me all about it, Arjun.

श्वावित्समरूपो बभूव समर्दितो मद्विसृष्टैः पृषत्कैः ॥ १० ॥ स विक्षरन्रुधिरं सर्वगात्रै रथानीकं सूतसूनोर्विवेश । भयाविभूतान् सैनिकानां प्रबर्हान्सौ प्रपश्यन्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ११ ॥ ततोऽभिभूतं युधि वीक्ष्य सैन्यं वित्रस्तयोधं द्रुतवाजिनागम् । पञ्चाशता रथमुख्यैः समेत्य कर्णस्त्वरन्मामुपायात् प्रमाथी । तान् सूदयित्वाहमुपास्य कर्णं द्रष्टुं भवन्तं त्वरयाभिजातः ॥ १२ ॥ सर्वे पाञ्चाला ह्युद्विजन्ते स्म कर्णाद्गन्धाद्गाव केशरिणो यथैव । मृत्योरास्यं व्यात्तमिवाभ्यपद्यन् प्रभद्रकाः कर्णमासाद्य राजन् ॥ १३ ॥ रथांस्तु तान् सप्तशताभिमग्नां स्तदा कर्णः प्राहिणोन्मृत्युसद्म न चाप्यभूत् क्लान्तमनाः स राजन् यावन्नास्मान् दृष्टवान् सूतपुत्रः ॥ १४ ॥ श्रुत्वा तु त्वां तेन दृढं समेतमश्वत्थाम्ना पूर्वतरं क्षतञ्च । मन्ये कालमपयानस्य राजन्

पलमात्रमेंही वज्रके समान तीक्ष्णबाणों से उसको पीड़ामान किया फिर मेरे पृषत्क नाम बाणों से पीड़ित होकर वह अश्वत्थामा क्षणमेंही श्वावित के समान रूप वाला होगया । १० । सब अंगों से रुधिर को डालता हुआ वह अश्वत्थामा मुझ से पराजित होकर सेनाके बड़े श्रेष्ठ मनुष्यों को अपने रुधिर भरेहुये शरीर से देखता हुआ कर्ण के रथों की सेनामेंचलागया । ११ । उसके पीछे मारने वाला कर्ण युद्धमें सेना को भयभीत और हाथी घोड़े और रथों को भगाता हुआ देखकर पचास उत्तम रथियों को साथ में लिये हुये बड़ी शीघ्रता करता हुआ मेरे सम्मुख आया मैं उनको मारकर युद्धका भार भीमसेन के सपुर्द करके और कर्ण को छोड़कर आपके देखने को बडे वेगसे शीघ्रता करके आयाहूं ।१२। सब पांचाल लोग कर्ण को देखकर ऐसे भयभीत हुये जैसे कि केशरी सिंहको देखकर गौवें भयभीत होतीहैं हे राजा प्रभद्रक नाम क्षत्री मृत्यु के फैले हुये मुखकोप्राप्त करके और कर्णको पाकर युद्ध करनेवालेहुये । १३ तब कर्णनेमृत्यु रूपी नदीमें डूबेहुये उन सातसौ रथियों को मृत्युलोक में भेजा हे राजा वह कर्ण भी तबतक चित्तसे पीड़ामान और क्लांत चित्तहीरहा जबतक कि उसने हमलोगों को नहींदेखा ।१४। फिर तुमको उस से भिड़ाहुआ और अश्वत्थामा से पहिले बहुत

with my arrows sticking to his body. 10, Bleeding profusely from all the parts of his body, and defeated in battle, he left me and entered Karan's army in the presence of all the warriors. Then Karan came on towards me terrifying the warriors and routing the lines of elephants, horses and cars. He was accompanied by fifty warriors whom I slew, and leaving all the burden of war on Bhim, I came to see you in haste, The Panchals were terrified at the sight of Karan as cows are at the sight of a lion. The Prabhadraks encountering Karan, fell down in the jaws of death. Karan slew seven hundreds of those warriors and was very anxious in his mind as long as he had not seen us, Hearing that you were wounded by Ashwathama and

क्रूरात् कर्णात्तेऽद्दमाचिन्त्यकर्मन् ॥ १५ ॥ मया कर्णस्यास्त्रमिदं पुरस्ताद्युद्धे दृष्टं पांडव चित्ररूपम् ॥ १६ ॥ न ह्यन्ययोद्धा विद्यते सृञ्जयानां महारथं योऽद्य सहेत कर्णम् । शैनेयो मे सात्यकिश्चक्ररक्षो धृष्टद्युम्नश्चापि तथैव राजन् ॥ १७ ॥ युधामन्युश्चोत्तमौजाश्च शूरौ पृष्ठतो मां रक्षतां राजपुत्रौ । रथप्रवीरेण महानुभाव द्विषत्सैन्ये वर्त्तता दुस्तरेण ॥ १८ ॥ समेत्याहं सूतपुत्रेण संख्ये वृत्रेण वज्रीव नरेन्द्रमुख्य । योत्स्याम्यहं भारत सूतपुत्रमस्मिन् संग्रामे यदि वै दृश्यतेऽद्य ॥ १९ ॥ आयान्ति पश्य त्वं युयुत्समानं मां सूतपुत्रञ्च रणे जयाय । महर्षभस्येव मुखं प्रपन्नाः प्रभद्रकाः कर्णमभिद्रवन्ति ॥ २० ॥ षट्साहस्रा भारत राजपुत्राः स्वर्गाय लोकाय रणे निमग्नाः । कर्णं न चेदद्य निहन्मि राजन् सबान्धवं युध्यमानं प्रसह्य । प्रतिश्रुत्य कुर्वतां वै गतिर्या कष्टां यातां तामहं राजसिंह ॥ २१ ॥ आमन्त्रये त्वां ब्रूहि रणे जयं मे पुरा हि

घायल हुआ सुनकर मैं कर्ण से हटजानेका आपका समय मानता हूं हे ध्यान से वीरोंके कर्म करनेवाले राजा युधिष्ठिर मैंने कर्णका यह अपूर्वरूपवाला अस्त्र देखा । १६ । सृंजियों में कोई ऐसा शूरवीर नहीं वर्त्तमान है जो उस महारथी कर्णका सामना करसके हे राजा मेरी सेनाका रक्षक धृष्टद्युम्न, सात्यकिहो और युधामन्यु उत्तमौजस यह दोनों राजकुमार भी पीछेकी ओरसे मेरी रक्षाकरें । १७ । हे महानुभाव में कठिनतासे पारहोनेके योग्य महावीर और रक्षापूर्वक शत्रुकी सेना में वर्त्तमान उस सूतपुत्र कर्ण से अपने सहायकों समेत सम्मुख होकर युद्धमें ऐसे युद्ध करूंगा जैसे कि वज्रधारी अपने वज्रसे युद्धकरताहै हे राजाओं में श्रेष्ठ भरतवंशी अब जो वह इस युद्धमें दिखाई देता है । १९ । उस सूतपुत्रका और मेरा युद्ध जयके निमित्त आप देखोगे प्रभद्रक कर्ण के सम्मुख ऐसे जाते हैं जैसे कोई बैलके सम्मुख जाय । २० । छःहजार राजकुमार स्वर्गके अर्थ रण में डूबे इस से हे राजा अब जो मैं हठकरके बांधवों सहित उस लड़नेवाले कर्णको नहीं मारूँ तो प्रतिज्ञाके न करनेवाले की जो घोरगतिहै उसको मैं पाऊँ मैं आपसे पूँछताहूं आप युद्धमें मेरी विजयको कहिये और मेरे आगे भीमसेन धृतराष्ट्रके

retreated from Karan's encounter, I thought that you must have gone to take rest. I have seen the wonderful weapon of Karan and think that no Srinjaya warrior can withstand him in battle. Let Dhrishtadyumn and Satyaki protect my army and let Yudhamanyu and Uttamaujas protest my rear. Then encountering Karan and his warriors, I shall fight with him like Indra the wielder of vajra. You will see my battle with Karan. The Prabhadraks are encountering him as one encounters an angry bull. Six thousand princes are fighting for the sake of heaven. May I get the punishment of those who break their promise, if I donot slay Karan to day. I ask your bless-

विक्रमेऽयं सर्वान् शूरान् शात्रवान् अप्यनीति ॥ १० ॥ अयं जेता खाण्डवे देवसंघान् सर्वाणि भूतान्यपि चोत्तमौजाः । अयंजेतामद्रकलिङ्गकेकयानयं कुरूनराजमध्ये निहन्ता ॥ ११ ॥ अस्मात् परो न भविता धनुर्द्धरो नैनं भूत किञ्चन जातु जेता । इच्छन्नयं सर्वभूतानि कुर्य्याद्वशे वशी सर्वसमाप्तविद्यः ॥१२॥ कान्त्या शशाङ्कस्य जवेन वायोः स्थैर्य्येण मेरोः क्षमया पृथिव्याः । सूर्य्यस्य भासा धनदस्य लक्ष्म्या शौर्य्येण शक्रस्य बलेन विष्णोः ॥ १३ ॥ तुल्यो महात्मा तव कुन्ति पुत्रो जातोऽदितेर्विष्णुरिवारिहन्ता । स्वेषां जयाय द्विषतां वधाय ख्यातोऽमितौजाः कुलतन्तुकर्त्ता ॥ १४ ॥ इत्यन्तरिक्षे शतशृङ्गमूर्द्धिन तपस्विनां शृण्वतां वागुवाच । एवंविधं तच्च नाभूत्तथा ते देवापि नूनमनृतं वदन्ति ॥ १५ ॥ तथापरेषामृषिसत्तमानां श्रुत्वा गिरः पूजयतां सदा त्वाम् ।

निर्बुद्धि के उत्पन्न होनेके सातदिन पीछे अन्तरिक्षमें यह आकाशवाणी हुईथी कि यहपुत्र इन्द्रके समान पराक्रमी उत्पन्नहुआ है यह शत्रुरूप शूरवीर मनुष्यों को विजय करेगा । १० । और मद्र कलिंग और केकय देशियोंका भी विजय करके राजाओं के मध्य में सबकौरवोंको मारेगा । ११ । इससे उत्तम कोई धनुषधारीनहीं होगा कोई जीवधारी इसको कभी विजय नहीं करसकेगा यह जितेन्द्री और सब विद्याओं में पूर्ण होकर अपनी इच्छासे सब जीवमात्रों को अपनेआधीन करेगा १२ हे कुन्ती यह तेरापुत्र कांति और शोभामें चन्द्रमाके समान तीव्रता और शीघ्रतामें वायुके सदृश और स्थिरतामें मेरु पर्व्वतके समान क्षमा करने में पृथ्वी के तुल्य तेजमें सूर्यके समान लक्ष्मी में कुबेरके शूरता में इन्द्रके पराक्रममें विष्णुके समान यह महात्मा ऐसा उत्पन्न हुआ है । १३ । जैसे कि शत्रुओं के मारनेवाले दिति के पुत्र विष्णुजी अपने लोगों के विजय और शत्रुओं के मारनेके निमित्त सब जगत में विख्यात महातेजस्वी धनुष चलानेवाले उत्पन्न हुये हैं । १४ । शत शृंग के मस्तकपर अन्तरिक्ष में यह सब तपस्वी लोगों के सुनते हुये आकाश वाणी ने कहाहै सो वह जैसा कहाथा वैसा नहीं हुआ इससे निश्चय करके देवताभी मिथ्या बोलते हैं । १५ । और इसीप्रकार सदैव तेरी प्रशंसा करनेवाले अन्य अन्य उत्तम

but you have sunk us all in hell. On the seventh day from your birth we heard a heavenly voice say about you, "The child will be of Indra like prowess and will destroy the bravest enemies. 10. He will conquer Madra, Kaling and Kaikaya and will destroy the Kauravas. He will be a matchless archer invincible by all. Having control over his organs and possessing all sorts of knowledge, he will conquer all. This son of Kunti will be beautiful like the moon, like the wind in agility, like Meru in firmness, like the earth in forgiveness, like the Sun in glory, Like Kuber in wealth, like Indra in bravery and like Vishnu in prowess. He will conquer and destroy foes like Vishnu the famous son of Diti." This was heard by the rishis all over Shatshring; but

॥ सत्यतिष्ठेति सुयोधनस्य न त्वां जानाम्याधिरथेर्भयार्त्तम् ॥ १६ ॥ त्वष्ट्रा कृतं वाहम कूजनाक्षं शुभं समास्थाय कपिध्वजं त्वम् । खड्गं गृहीत्वा हेमपट्टावनद्धं धनुश्चेदं गाण्डिवं तालमात्रम् । स केशवेनोह्यमानः कथं त्वं कर्णाद्भीतो व्यपयातोऽसि पार्थ ॥ १७ ॥ धनुश्चैतत् केशवाय प्रदाय यन्ताभविष्यस्त्वं रणे चेद्दुरात्मन् । ततोऽहनिष्यत् केशवः कर्णमुग्रं मरुत्पतिर्वृत्रमिवात्तवज्रः ॥ १८ ॥ राधेयमेवं यदि नाद्य शक्तश्चरन्तमुग्रं प्रतिबाधनाय । देह्यन्यस्मै गाण्डिवमेतदस्य त्वत्तो योऽस्त्रैरभ्यधिको नरेन्द्रः ॥ १९ ॥ नास्मानेवं पुत्रदारैर्विहीनान् सुखाद्भ्रष्टान्राज्यनाशाच्च भूयः । द्रष्टा लोकः पतितानप्यगाधे पापैर्जुष्टे नरके पाण्डवेय ॥ २० ॥ मासेऽपतिष्यः पञ्चमे त्वं सुकृच्छ्रे न वा गर्भेऽप्यभविष्यः पृथायास्तत्ते श्रेयो राजपुत्राभविष्यन्न चेत्संग्रामादपयातुं दुरात्मन्

ऋषियों के वचनों का सुनकर दुर्योधनके शिष्टाचार को अंगीकार नहीं करता हूं और कर्ण के भयसे पीड़ामान तुझको नहीं जानताहूं । १६ । हे अर्जुन त्वष्टा देवता के बनाये हुये निश्शब्द पहियेवाले हनुमानजी की ध्वजा रखने वाले उस शुभरथ पर सवार होकर और स्वर्णमयी वेष्टन से अलंकृत खड्गको और ताल वृक्षके समान इस गांडीव धनुषको लेकर केशवजी के साथ रथपर सवार होकर तुम कर्ण से भयभीत होकर कैसे हटआये । १७ । अब उस धनुषको केशव जी को दो और तुम युद्धमें केशवजी के सारथी बनो तब केशवजी उस उग्र कर्णको ऐसे मारेंगे जैसे कि वज्रधारी इन्द्र ने वृत्रासुरको मारा । १८ । जो तू अब इस घूमनेवाले उग्रकर्णके मारने में समर्थ नहीं है तो जो राजा अस्त्रविद्या में तुझ से अधिकहो उसको यह गाण्डीव धनुष देदो ।१९। हे पाण्डव अब यह लोकपुत्र स्त्रियोंसे रहित और राज्यके नाशकरनेके हेतुसे आनन्द और कुशलतासे रहित हमलोगों को उस पापियों से सेवित अगाध और घोर नरक में पड़ाहुआ देखेगा । २० । जो तू कुन्तीके गर्भमें न पैदाहोता वा पांचवे महीने गर्भ पात होजाता तो तेरा कल्याण होजाता जो तू युद्ध से हटकर न आता । २१ ।

it appears that even gods tell lies as those words are not proved true .15. Having heard the same words from rishis, I thought that Duryodhan would not gain victory. I never thought that you were afraid of Karan. Possessing Twashta's car with noiseless wheels, Hanuman's banner, golden sword, and huge Gandiv bow, and accompanied by Krishn, you should not be afraid of Karan. You should give up your Gandiv bow to Krishn and change places with him. He will slay Karan as Indra slew Vritrasur. Give your Gandiv bow to some other warrior better than yourself, if you cannot slay Karan. The world will now see us destitute of sons, wives, happiness, kingdom and peace and fallen in bottomless perdition. It would have been better if thou hadst never been born in the womb of Kunti, or had come out in

।२२। धिक् गाण्डीवं धिक् च ते बाहुवीर्य्यमसंख्येयान् बाणगणांश्च धिक्ते । धिक्ते केतुं केसरिणः सुतस्य कृशानुदत्तञ्च रथञ्च धिक् ते ॥ २२ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि युधिष्ठिरवाक्ये अष्टषष्टोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

सञ्जय उवाच । युधिष्ठिरेणैवमुक्तः कौन्तेयः श्वेतवाहनः । असिं जग्राह संक्रुद्धो जिघांसुर्भरतर्षभम् ॥ १ ॥ तस्य कोपं समुद्वीक्ष्य चित्तज्ञः केशवस्तदा । उवाच किमिदं पार्थ गृहीतः खड्ग इत्युत ॥ २ ॥ न हि पश्यामि योद्धव्यं त्वया किञ्चिद्धनञ्जय । ते ग्रस्ता धार्त्तराष्ट्रा हि भीमसेनेन धीमता ॥ ३ ॥ अपयातोऽसि कौन्तेय राजा द्रष्टव्य

गाण्डीव धनुषको और तेरे भुजबलको धिक्कार है और तेरे असंख्य बाणों कोभी धिक्कार है और हनुमान रूप धारण करनेवाली तेरी ध्वजाको भी धिक्कार और अग्निके दियेहुये तेरे रथ को धिक्कार है २२ ॥

अध्याय ७० ॥

सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ युधिष्ठिर के इन बाणरूप निन्दित वाक्योंको सुनकर महाक्रोधरूप होकर कुन्ती के पुत्र अर्जुनने मारनेकी इच्छा करके हाथमें खड्गको लिया । १ । तब अन्तर्यामी सब के मनकी जाननेवाले श्रीकृष्णजी ने उसके क्रोधको देखकर कहा कि हे अर्जुन यह क्या बात है जो खड्गको हाथ में लिया है अर्जुन तुम्ह के लड़ने के योग्य मैं किसी को नहीं देखताहूं बुद्धिमान् भीमसेन ने उन धृतराष्ट्र के पुत्रोंको घेरलियाहै । ३ । राजा को देखने के लिये तू

the fifth month an abortion than to have thus come back from battle. Fie on the Gandiv, fie on the strength of your arms, fie on thy banner having the gigantic ape on it and fie on the car given by Agni." 22.

CHAPTER LXIX

Sanjaya said, " On hearing the insulting language of Yudhishthir, Arjun drew up his sword in order to slay him. Then Shri Krishn who knew what passed within the mind of all persons, seeing him enraged, thus addressed Arjun, " Why have you taken up your

इत्यपि । स राजा भवता दृष्टः कुशली च युधिष्ठिरः ॥ ४ ॥ स दृष्ट्वा नृपशार्दूलं शार्दूलसमविक्रमम् । हर्षकाले च संप्राप्ते किमिदं मोहकारितम् ॥ ५ ॥ न तं पश्यामि कौन्तेय यस्ते वध्यो भविष्यति । प्रहर्त्तुमिच्छसे कस्मात् किं वा ते चित्तविभ्रमः ॥ ६ ॥ कस्माद्भवान् महाखड्गं परिगृह्णाति सत्वरः । तत्त्वां पृच्छामि कौन्तेय किमिदं ते चिकीर्षितम् । परामृशसि यत् क्रुद्धः खड्गमद्भुतविक्रम ॥ ७ ॥ एवमुक्तस्तु कृष्णेन प्रेक्षमाणो युधिष्ठिरम् । अर्जुनः प्राह गोविन्दं क्रुद्धःसर्प इव श्वसन् ॥ ८ ॥ अन्यस्मै देहि गाण्डीवमिति मां योऽभिचोदयेत् । छिन्द्यामहं तस्य शिरः इत्युपांशुव्रतं मम ॥ ९ ॥ तदुक्तं मम चानेन राज्ञामितपराक्रम । समक्षं तव गोविन्द न तत् क्षन्तुमिहोत्सहे ॥ १० ॥ तस्मादेनं वधिष्यामि राजानं धर्मभीरुकम् । प्रतिज्ञां पालयिष्यामि हत्वैनं नर

युद्धसे हट आयाहै हे अर्ज्जुन उस राजाको तुमने कुशल पूर्व्वक देखा । ४ । सो तुम उस राजाओं में श्रेष्ठ शार्दूलके समान पराक्रमी अपनेभाई राजा युधिष्ठिरको देखकर और प्रसन्नताका समय वर्त्तमान होनेपरजो भूलसे यहकर्म होगया तो क्या हुआ । ५ । हे कुन्ती के पुत्र मैं ऐसा किसी को नहीं देखताहूं जो तुझको मारने के योग्यहोय किस हेतु से तू प्रहारकरना चाहताहै तेरे चित्तकी भ्रान्ति क्याहै ।६। तुम किस कारण शीघ्रतासे बड़े खड्ग को पकड़तेहो हे कुन्ती के पुत्र अब मैं तुझ से पुछताहूं कि तेरी कौनसे कर्म्म करने की इच्छाहै जो महाक्रोधित होकर इस बड़ेभारी खड्गको पकड़ताहै ।७। फिर श्रीकृष्णजीके वचनों को सुनकर युधिष्ठिर को देखताहुआ सर्पके समान श्वासलेता क्रोध युक्त होकर अर्ज्जुन श्रीगोविन्दजीसे बोला । ८ । कि आप इस गाण्डीव धनुष को किसी दूसरेको देदो जो मुझको इस रीतिसे प्रेरणा करेमैं उसके शिरको काटूंगा । ९ । यहमेरा अप्रगुप्तव्रतहै अर्थात् गुप्तव्रतहै हेअतुलबल पराक्रमवाले गोविन्दजी जैसा कि इस राजानेआपके सम्मुखमुझ से कहा उसके सहनेको मैं इस उत्साह नहीं करसक्ताहूं ।१०। इस हेतुसे उस धर्म्मसे

sword, Arjun ? I see none here to fight with you. Wise Bhimsen has assailed the sons of Dhritrashtra. You came here to see the king and you have seen him safe. You should be pleased to see your valiant brother. What folly are your going to commit ? 5. I see *none that should be able to slay you. Whom are you going to* attack by your folly ? Why have you taken up your large sword ? What do you intend to do with this huge sword ?" Having heard the words of Krishn and looking towards Yudhishthir with deep sighs, Arjun said to Govind, "I shall cut off the head of him who says that I should give up the *Gandiv* bow to some one else, This is my secret vow. I can not bear the language as used by the king. 10. I shall slay him to fulfil my vow and have

सत्तमम् ॥ ११ ॥ तदर्थं मया खड्गो गृहीतो यदुनन्दन । सोऽहं युधिष्ठिरम् हत्वा सत्यस्यानृण्यतांगतः ॥ १२ ॥ विशोको विज्वरश्चापि भविष्यामि जनार्दन ॥ १३ ॥ किंवात्वं मन्यसे प्राप्तमस्मिन् काले समुत्थिते । त्वमस्य जगतस्तात वेत्थ सर्वं गतागतम् । तत्तथा प्रकरिष्यामि यथा मां वक्ष्यसे भवान् ॥ १४ ॥ सञ्जय उवाच । धिग्धिगित्येव गोविन्दः पार्थमुक्त्वाब्रवीत् पुनः ॥ १५ ॥ कृष्ण उवाच । इदानींपार्थ जानामि न वृद्धाः सेवितास्त्वया । अकाले पुरुषव्याघ्र संरम्भं यन्नवानगात् ॥ १६ ॥ न हि धर्मविभागज्ञः कुर्यादेवं धनञ्जय । यथा त्वं पाण्डवाद्येह धर्मभीरुरपण्डितः ॥ १७ ॥ अकार्य्याणां क्रियाणाञ्च संयोगं यः करोति वै । कार्य्याणामक्रियाणाञ्च स पार्थ पुरुषाधमः ॥ १८ ॥ अनुसृत्य तु ये धर्मं कथयेयुरुपास्थिताः । समासविस्तरविदां न तेषां वेत्थनिश्चयम् ॥ १९ ॥ अनिश्चयज्ञो हि नरः कार्य्याकार्य्यविनिश्चये । अवशो मुह्यते पार्थ यथा त्वं मूढएव तु ॥ २० ॥ न हि कार्य्यमकार्य्यं वा सुखं ज्ञातुं कथञ्चन ।

भयभीत राजाको मारूंगा इस नरोत्तम को मारकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा । ११ । हे यदुनन्दन मैंने इसी निमित्त खड्गको पकड़ाहै हे जनार्दनजी सो मैं युधिष्ठिरको मारकर सत्यसंकल्प होकर शोक और ज्वरसे निवृत्त होऊंगा । १३ । अथवा ऐसे समयके वर्त्तमान होनेपर आप क्या उचित आज्ञा देते हैं जिसको मैं योग्य समझ कर करूं हे जगतपिता और सब की गति मैं आपकी जो आज्ञा होगी उसीको करूंगा । १४ । संजय बोले कि इस बातको सुनकर गोविन्दजी ने बड़ी धिक्कारियां देकर अर्जुन से कहा । १५ । हे अर्ज्जुन मैं निश्चय जानताहूं कि तुमने वृद्धलोगों का सेवन नहीं कियाहै पुरुषोत्तम जो तुमको क्रोधहुआ है यह क्रोध समयके समान नहींहै ।१६। हेअर्ज्जुन धर्म्मके प्रकारों का ज्ञातापुरुष ऐसा नहीं करसक्ताहै जैसेकि अब यहां तुमधर्म्मसे भयभीतहोकर निर्बुद्धिसेहोरहहो।१७।जोमनुष्य करने क अयोग्य कर्मों को और योग्य कर्मों को एककरताहै हे अर्जुन वह अधम पुरुष कहाजाताहै । १८ । पण्डित लोग जो धर्मपर आरूढ़ होकर विधानकरते हैं उसको तुम नहीं जानते । १९ । हे अर्जुन योग्यायोग्य कर्मोंके निश्चय में दृढ़ता रखनेवाला मनुष्य विवशहोकर ऐसाही अज्ञानी होजाताहै जैसे कि तुम होगयेहो । २० । उचित और अनुचित कर्म किसीप्रकारसे भी आनन्द पूर्वक जानने के

therefore seized the sword. My anger and vow will be satisfied by slaying him. I shall however act upon your advice, for you are the father and refuge of the world." Sanjaya said that Govind, on hearing those words, reproached Arjun. 15. He said, " I know for certain that you are *rude to your elders. Your anger is out of place. No* virtuous man will do so, He who mixes deeds and misdeeds is very low in the scale of being. You do not know the ways of the virtuous. *He who mixes* deeds and misdeeds, becomes a *fool* like you. It is hard to know the propriety and otherwise of things. All the religious

श्रुतेन ज्ञायते सर्वं तच्च त्वं नावबुध्यसे ॥ २१ ॥ अविज्ञानाद्भवान् यच्च धर्मं रक्षति धर्मवित्। प्राणिनां त्वं वधं पार्थ धार्मिको नावबुध्यसे ॥ २२ ॥ प्राणिनामवधस्तात सर्वज्यायान्मतो मम। अनृतां वा वदेद्वाचं न तु हिंस्यात् कथञ्चन ॥ २३ ॥ स कथं भ्रातरं ज्येष्ठं राजानं धर्मकोविदम्। हन्याद्भवान् नरश्रेष्ठ प्राकृतोऽन्यः पुमानिव ॥ २४ ॥ अयुध्यमानस्य वधस्तथा शत्रोश्च भारत। पराङ्मुखस्य द्रवतः शरणं चाभिगच्छतः ॥ २५ ॥ कृताञ्जलेः प्रपन्नस्य प्रमत्तस्य तथैव च। न वधः पूज्यते सद्भिस्तच्च सर्वं गुरौ तव ॥ २६ ॥ त्वया चैव व्रतं पार्थ बालेनैव कृतं पुरा। तस्मादधर्मसंयुक्तं मौढ्यात् कर्म व्यवस्यसि ॥ २७॥ स गुरुं पार्थ कस्मात्त्वं हन्तुकामोऽभिधावसि। असंप्रधार्य धर्माणां गतिं सूक्ष्मां दुरत्ययाम् ॥ २८ ॥ इदं धर्मरहस्यञ्च तव वक्ष्यामि पाण्डव। यद्ब्रूयात्तव भीष्मो हि धर्मज्ञो वा युधिष्ठिर ॥ २९॥

अयोग्य नहीं है यह सब शास्त्र कहते हैं तुम उसका विचार नहीं करतेहो। २१। तुम पूरे बुद्धिमान नहींहो जिस बुद्धिके द्वारा धर्मज्ञ होकर धर्मकी रक्षा करताहै हे अर्जुन जो धर्मके अभ्यासी होकर भी पाप पुण्यकारी कर्म नहीं जानतेहो।२२। हे तात जीवों का न मारनाही उत्तम धर्महै यह मेरा मतहै चाहे मिथ्या वचन किसी समय कहदे परन्तु हिंसा कभी न करे। २३। सो हे नरोत्तम तुम इस धर्ममें पंडित होकर अपने बड़े भाई राजा युधिष्ठिर को कैसे मारने को प्रवृत्तहो जैसे कि कोई साधारण मनुष्य होताहै। २४। हे प्रशंसा देनेवाले सुन कि युद्ध न करनेवाले वा युद्धसे मुखमोड़नेवाले वा भागनेवाले और घरमें आश्रय लेनेवाले शत्रु अथवा हाथ जोड़नेवाले वा शरणागत और मदोन्मत्तों के मारनेको उत्तमलोग नहीं प्रशंसा करते हैं वह सब गुण तेरे गुरुरूप बड़ेभाई युधिष्ठिर में हैं। २६। हे अर्जुन पूर्व समय में तुमने बाल्यावस्था से ऐसा व्रत कियाथा इसीहेतुसे अपनी अज्ञानता करके अधर्म युक्त कर्म को निश्चय करते हो। २७। हे अर्जुन धर्मोंकी कठिनता से मिलनेवाली सूक्ष्मगति को अच्छे प्रकारसे धारण न करके तू किसहेतु से अपने गुरुरूप बड़े के मारनेकी इच्छासे दौड़ता है। २८। हे पांडव धर्मकी उस गुप्तवार्त्ता को तुमसे कहूंगा जिसको भीष्मजी वा पांडव युधिष्ठिर। १९। विदुरजी और

books say so, but you donot know this. 21. You are a fool as you know no distinction between right and wrong. One should never injure living beings, though one may tell a lie on certain occasions. Why are you ready to strike your elder brother like a vulgar fellow? It is wrong to slay those who donot fight, who run away, take refuge, supplicate and are mad; your elder brother Yudhishthir possesses all the good qualities. You observed this vow in your younger days, but should not foolishly stick to it now. 27. Not knowing the subtle ways of dharm, how are you going to attack your younger brother. I shall tell you the secret of dharm as disclosed by Bhishm,

विदुरेण वा तथा क्षत्ता कुन्त्यापि च यशस्विनी । तत्ते वक्ष्यामि तत्त्वेन निबोधेदं धनञ्जय ॥ ३० ॥ सत्यस्य वचनं साधु न सत्याद्विद्यते परम । तत्त्वेनैव सुदुर्ज्ञेयं पश्य सत्यमनुष्ठितम ॥ ३१ ॥ भवेत् सत्यमवक्तव्यं वक्तव्यमनृतं भवेत् । यत्रानृतं भवेत् सत्यं सत्यञ्चाप्यनृतं भवेत् ॥ ३२ ॥ प्राणात्यये विवाहेच वक्तव्यमनृतं भवेत् । सर्वस्वस्याप हारेच वक्तव्यमनृतं भवेत् ॥ ३३ ॥ विवाहकाले रतिसंप्रयोगे प्राणात्यये सर्वधनापहारे । विप्रस्य चार्थे ह्यनृतं वदेत पञ्चानृतान्याहुरपातकानि ॥ ३४ ॥ तत्रानृतं भवेत् सत्यं सत्यञ्चाप्यनृतं भवेत् ॥ ३५ ॥ तादृशं मन्यते बालो यस्य सत्यमनुष्ठितम । सत्यानृते विनिश्चित्य ततो भवति धर्मवित् ॥ ३६ ॥ किमाश्चर्यं कृतप्रज्ञः पुरुषोऽपि सुदारुणः । सुमहत् प्राप्नुयात् पुण्यं बलाकोऽन्धवधादिव ॥ ३७ ॥ किमाश्चर्यं पुनर्मूढो धर्मकामो

यशस्विनीकुन्तीने कहाथा हेअर्जुन इसकोमैं मूलसमेत कहूंगा तुम चित्तसेसुनना॥३०॥सत्य बोलनेवाला साधुहै सत्य से अच्छी कोई चीज नहीं है बड़े दुःख से जानेनेके योग्य अभ्यास करीहुई सत्यताको मूलसमेत देखो॥३१। सत्यताकहनेके योग्यनहीं होतीहैपरन्तु जबसत्यतामें मिथ्या पनहोताहै तबवह सत्यताभी मिथ्या कहनेके योग्य होतीहै।।३। विवाहके समय वाविषयभोग करनेके समय वाप्राणोंके नाशमें वासबधनके चोरीहोने मेंऔरब्राह्मणके मनोरथसिद्धहोनेमें मिथ्या बोलना इनपांचों स्थानोंमें मिथ्या बोलनेका कोईपापनहीं होताहै सबधनके जातेजानेमें मिथ्याबोलना योग्यहोताहै ऐसे स्थानमें सत्यभीमिथ्याहोताहै।३५।बुद्धिमान् सावधानपुरुष इसरीतिसेदेखताहै अभ्यासकरीहुई सत्यताको देखो कि सत्यता दोषलगाने के योग्यनहीं है और अभ्यास करीहुई कहने के योग्य नहीं मथय सत्य और मिथ्याको अच्छी रीति से जानकर निश्चय धर्म का ज्ञाताहोता है । ३६ । क्या अद्भुत कर्म देखने में आताहै कि बड़ाज्ञानी मनुष्य भी बहुत बड़े पुण्य को भयकारीकर्मसे ऐसे प्राप्त करता है । ३७ । जैसे कि बलाक नाम बधिकने व्याघ्र के मारडालने से पुण्यप्राप्त किया

Yudhishthir, Vidur and Kunti, 30. Truth is the best of virtues, though it is hard to practise. Truth mixed with falsehood turns into the latter. It is allowable to tell lies in the matter of marriages women, life and death and when all the wealth is at stake as well as for the good of Brahmana. *It is good to tell a lie when you are in danger of losing all your wealth,* 35. A wise and learned man should speak after distinguishing between truth and untruth. It is a wonder that a wise man may obtain great merit by doing a cruel deed as fell to the lot of a hunter, named Balak, by slaying a tiger. Th.. is no wonder, if a foolish man, meaning to practise dharm should ' committing a great sin like Kaushik living by the side of a river." A.; un asked Krishn to tell him all about Balak and Kaushik. Vasude said, " There was a hunter, named Balak, in the days of yore. H

ह्यपण्डितः । सुमहत् प्राप्नुयात् पापमापगास्विव कौशिकः ॥ ३८ ॥ अर्जुन उवाच । आचक्ष्व भगवन्नेतत् यथा विद्यामहं तथा । बलाकस्याभि सम्बन्धं नदीनां कौशिकस्य च ॥ ३९ ॥ वासुदेव उवाच । मृगव्याधोऽभवत् कश्चित् बलाको नाम भारत । यात्रार्थं पुत्रदारस्य मृगान् हन्ति न कामतः ॥ ४० ॥ वृद्धौ च मातापितरौ बिभर्त्यन्यांश्च संश्रितान् । स्वधर्मनिरतो नित्यं सत्यवागनसूयकः ॥ ४१ ॥ स कदाचिन्मृगं लिप्सुर्नान्वविन्दत् प्रयत्नवान् । अथः पिबन्तं ददृशे श्वापदं घ्राणचक्षुषम् ॥ ४२ ॥ अदृष्टपूर्वमपि तत् सत्वं तेन हतं तदा । अन्वेव हते तस्मिन्नन्तरिक्षात् पुष्पवर्षं पपात च ॥ ४३ ॥ अप्सरोगीतवादित्रैर्नादितञ्च मनोरमम् । विमानमागमत् स्वर्गात् मृगव्याध निनीषया ॥ तद्भूतं सर्वभूतानामभावाय किलार्जुन । तपस्तप्त्वा वरं प्राप्तं कृतमन्धं स्वयम्भुवा ॥ ४५ ॥ तद्धत्वा सर्वभूतानामभावकृतनिश्चयम् । ततो बलाकः स्वरगादेवं धर्मः सुदु

फिर क्या आश्चर्य है कि अज्ञानी और मूर्ख धर्मका अभिलाषी पुरुष बहुत बड़े पापको प्राप्तकरे जैसे कि नदियों के समीप कौशिकने प्राप्त कियाथा । ३८ । अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी इस बलाकनदी और कौशिक संबंधी कथाको ऐसे विचार से कहिये जिस में मैं समझूं । ३९ । वासुदेवजी बोले हे भरतवंशी पूर्व समय में बलाकनाम एक बधिक हुआ वह सदैव अपने स्त्री पुत्रादिकों के पोषणके अर्थ मृगों को माराकरताथा अपनी इच्छासे नहीं मारताथा । ४० । अपने वृद्ध माता पिता और अन्य आश्रित लोगों की पालना करताथा और अपने धर्म में प्रीतिवान होकर सत्यवक्ता और किसीके गुणमें दोष नहीं लगाताथा । ४१ । एक समय उस मृगाकांक्षीको कोई मृग नहीं मिला तब बहुत खोज करते २ एक जल पीताहुआ नाकही जिसकी नेत्र रूप थी ऐसे श्वापद व्याघ्र को उसने देखा । ४२ । ऐसे रूपका जीव उसने पहले नहीं देखाथा इसी हेतुसे उसको भी अपूर्व दर्शन जानकर मारा उस अन्धे श्वापद के मारनेपर आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई । ४३ । और उत्तमगीत बाजोंसमेत अप्सरा नाचीं और उस बधिकके लेजानेकेलिये स्वर्ग से विमान आया।४४। हेअर्जुन निश्चय करके उस श्वापदजीव ने सब जीवों के नाशके लिये तपस्याकरके वरदानपायाथा इसीसे ब्रह्माजीने उसका अन्धाकरदिया । ४५ । सबजीवों के नाशमें निश्चय करनेवाले

killed deer to feed his wife and children and not for the sake of pleasure. 40. He fed his aged parents and retainers and passed a life of truth and virtue never finding fault in the good qualities of others. One day he found no game and while he was in search of it, he came upon a beast of prey who had his nose to supply the defect of his eyes. He had never seen such an animal before but he slew him at once. At the death of that animal a shower of flowers fell down from the sky; the apsaras sang and danced and a celestial car came down from heaven to receive the hunter. The beast of prey had got

संधे। पश्चाच्चापं सूतपुत्रेण घोर शरैर्भृशं ताडितोऽयुध्यमानः ॥ ७६ ॥ अतस्त्वमेतेन सरोषमुक्तो दुःखान्वितेनेदमयुक्तरूपम्। आकोपितो ह्येष यदि स्म संख्ये कर्ण निहन्या इति चाब्रवीत्वाम् ॥ ७७ ॥ जानाति तं पाण्डव एष चापि पापं लोके कर्णमसह्य मन्यः। ततस्त्वमुक्तो भृशरोषितेन राज्ञा समक्षं परुषाणि पार्थ ॥ ७८ ॥ नित्योद्युक्ते सततञ्चाप्रसह्ये कर्णे द्यूतं ह्यद्य रणे निबद्धम। तस्मिन् हते कुरवो निर्जिताः स्युरेव बुद्धिः पार्थिवे धर्मपुत्रे ॥ ७९ ॥ ततो वधं नार्हति धर्मपुत्रस्त्वया प्रतिज्ञार्जुन पालनीया। जीवन्नयं येन मृतो भवेद्धि तन्मे निबोधेह तवानुरूपम् ॥ ८० ॥ यदा मानं लभते माननार्हस्तदा स वै जीवति जीवलोके। यदावमानं लभते महान्तं तदा जीवन्मृत इत्युच्यते सः ॥ ८१ ॥ सम्मानितः पार्थिवोऽयं सदैव त्वया च भीमेन तथा यमाभ्याम। वृद्धैश्च लोके पुरुषैश्च शूरैस्तस्यापमानं कलया प्रयुंक्ष्व ॥ ८२ ॥

से राजा युधिष्ठिर महाघायल दुःखी थकावटसेयुक्त वारंवारयुद्ध करनेमें कर्णके बाणोंसे विदीर्ण होगया है । ७६ । इस हेतुसे इसने महादुखी होकर ऐसे अयोग्य वचन तुमसे कहे जिससे कि तुम क्रोधयुक्त होकर युद्धमें कर्णको मारो इसी कारण से वारंवार तुझमें क्रोध बढ़ाने के लिये कहाहै कि तू युद्धमें क्रोधरूप होकर कर्णको मारे । ७७ । यह युधिष्ठिर भी इस लोक में उस पापी कर्णके समान अथवा उसके सम्मुखता करनेवाला तेरे सिवाय किसी दूसरेको नहीं समझताहै हे अर्जुन इसी हेतुसे मेरे सम्मुख अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजानेतुमसे यहकठोर वचन कहेहैं । ७८ । युद्धमें सदैव सन्नद्ध दूसरे के सहनेको अयोग्य कर्णमेंही अब युद्ध रूपी द्यूत बांधागयाहै उसीके मरनेपर कौरव लोग विजयहोंगे ऐसीबुद्धि राजा युधिष्ठिर में है । ७९ । इस कारण से धर्मपुत्र युधिष्ठिर मारने के योग्य नहींहै हे अर्जुन तुझको अपने प्रणको पूरा करना योग्य है और अपनेयोग्य उस बातको तूमुझसे समझ जिससे कि यह जीवता हुआ भी मृतक के समान होजाय । ८० । जब प्रतिष्ठा के योग्य मनुष्यको प्रतिष्ठा प्राप्तहोतीहै तभी वह इसजीव लोकमें जीवता रहताहै और जबप्रतिष्ठितपुरुष अपमानको पाताहै तबवह जीवताहुआभीमृतककेसमान यहकहाजाताहै।८१।राजायुधिधिष्ठिरसदैवसे भीमसेन नकुल सहदेव और तुझसे अच्छी रीतिसे प्रतिष्ठा कियागयाहै और लोकमें वृद्ध वाशूरवीरलोगोंनेभी इसकीप्रतिष्ठाकीहै इसीप्रकार तुमभी वार्तो कही द्वारा इसका अपमान करो ।८२। हेकुन्तीके बेटे उसके

thus prepared you to slay Karan. Yudhishthir too, thinks that none except you can cope with Karan, and therefore he used those harsh words. The game of battle has Karan for its stake: Yudhishthir thinks that the Kauravas would lose at the death of Karan. Yudhishthir the just does not merit death. You should keep your vow. I shall direct you to say to him words that would kill him while alive. 80, A man is alive as long as he is respected by the world; he is like one dead as soon as he loses respect. Yudhishthir has ever been respected

एवमाचर कौन्तेय धर्मराजे युधिष्ठिरे। अधर्मयुक्तं संयोगंकुरुष्वैवं कुरुद्वह॥८३॥अथर्वाङ्गिरसी ह्येषा श्रुतीनामुत्तमा श्रुतिः। अविचार्यैवकार्यैषा श्रेयस्कामैर्नरैः सदा ॥८४॥ अवधेन वधःप्रोक्तो यद्गुरुस्त्वमिति प्रभुः.तद्ब्रूहि त्वं यन्मयोक्तं धर्मराजस्य धर्मवित ॥ ८५ ॥ वधं ह्ययं पाण्डव धर्मराजस्त्वत्तो युक्तं वेत्स्यते चैवमेषः। ततोऽस्य पादावभिवाद्य पश्चात् समं ब्रूयाः सान्त्वयित्वा च पार्थम् ॥ ८६ ॥ भ्राता प्राज्ञस्तव कोपं न जातु कुर्य्याद्राजा कथन पाण्डवेयः। मुक्तोऽनृतात् भ्रातृवधाच्च पार्थ हृष्ट कर्णं त्वं जहि सूतपुत्रम् ॥ ८७ ॥

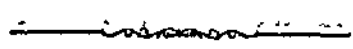
इति श्री कर्णपर्वणि कृष्णार्जुनसंवादे एकोनसप्ततितमोध्यायः ॥६९॥



साथ ऐसा कर्म करके अधर्मयुक्त कर्म को कर । ८३ । यह अथर्वाङ्गिरसी नाम श्रुति है कल्याणके चाहनेवाले पुरुषों को सदैव इस श्रुतिको काममें लाना योग्यहै यही विनामारे हुये मारना कहा जाता है और यही समर्थ गुरुतम कहाजाता है हे धर्मज्ञ तुम इस मेरे कहेहुये वचनको धर्मराजसे कहो । ८५ । हे पाण्डव यह धर्मराज तेरे हाथसे इसरीतिपर मरनेको अयोग्यजानताहै इसके पीछे इसके चरणोंको दंडवत करके बड़े मीठे वचनों से इससे शुभचिन्तकता की बातें कहो । ८६ । बुद्धिमान् तेराभाई राजा युधिष्ठिरभी धर्म को विचारकर फिर कभी तुझपर क्रोध न करेगा हे अर्जुन भाई के मिथ्या मारनेसे अलग होकर तुम बड़ेहर्षसे युक्तहोके इससूत के पुत्र कर्णको मारो ८७ ॥



by Bhim, Nakul, Sahadev and you as well as by the great warriors of the world; but you may insult him though the thing is improper. People desirous of their welfare should keep the hymn of Atharvangiras in view. It will be a death in life to Yudhishthir, if you say to him the words as I shall instruct you. Having said those words, you may conciliate him by falling at his feet and *speaking to him* sweet words. Your brother too, who knows dharm, will not be angry with you and you will scape from the sin of slaying him." 87.



एवं यन्मां वाग्भिरभिक्षिणोषि त्वत्तः सुखं न वयं विद्म किञ्चित् ॥ १३ ॥ मामावमत्य द्रौपद्यास्तल्पस्थो महारथान्। प्रतिहंसि त्वदर्थे । तेनाभिशङ्की भारत निष्ठुरोऽसि त्वत्त सुखं नाभिजानामि किञ्चित् ॥ १४ ॥ प्रोक्तः स्वयं सत्यसन्धेन मृत्युस्तव प्रियार्थं नरदेव युद्धे । वीरः शिखण्डी द्रौपदोऽसौ महात्मा मयाभिगुप्तेन हतश्च तेन ॥ १५ ॥ न चाभिनन्दामि तवाधिराज्यं यतस्त्वमक्षेष्वहिताय सक्तः । स्वयं कृत्वा पापमनार्यजुष्टमस्माभिर्वै तर्तुमिच्छस्यरींस्त्वम् ॥ १६ ॥ अक्षेषु दोषा बहवो विधर्माः श्रुतास्त्वया सहदेवोऽब्रवीद्यान् । तांश्चैव त्यक्तुमसाधुजुष्टांस्तेन स्म सर्वे निरयं प्रपन्नाः ॥ १७ ॥ सुखं त्वत्तो नाभिजानीम किञ्चिद्यतस्त्वक्षैर्देवितुं संप्रवृत्तः । स्वयं कृत्वा व्यसनं पाण्डव त्वं भूयस्तीक्ष्णाः श्रावयस्यद्य वाचः ॥ १८ ॥ शेतेऽस्माभिर्निहता शत्रु

चित्तका प्रियकरनेको सदैव प्रवृत्त रहताहूं इसपरभी जो तू मुझको वचनरूपी बाणों से भेदकर मारता है हम तुझसे उस सुखको नहीं जानते । १३ । तू द्रौपदी की शय्यापर नियत होकर मेरा अपमान मतकर मैं तेरेही निमित्त महारथियोंको मारताहूं हे भरतवंशी इस हेतुसे तुम शंकाकरने वाले होकर महानिष्ठुर प्रकृतिहो मैंने तुझ से कभी सुखको नहींपाया । १४ । हे नरदेव युद्धमें सत्य संकल्प भीष्मजी ने अपनेआप तेरेही अभीष्टके लिये अपनी मृत्युको तुझसे कहा द्रुपदका पुत्र शिखंडीवीर महात्मा है उसीने मेरे आश्रय में होकर उनको मारा । १५ । जोकि तुम पाशोंकी बाजी में कार्य्यों के बिगाड़ने में प्रवृत्तहुये इस हेतुसे मैं तेरे राज्यकी प्रशंसा नहीं करताहूं तुम नीचों से सेवित अपने आप पापोंको करके हमारे द्वारा शत्रुओंको विजय करना चाहतेहो । १६ । तुमने पांशोंकी बाजी में धर्मके विपरीत बहुतसे दोषोंको जिनको कि सहदेवने वर्णनकिया तुम नीचोंसे सेवित उन दोषों के त्याग करनेकी इच्छा नहीं करतेहो इसीकारणसे हम सब दुःखों में पड़ेहुये हैं । १७ । किसी प्रकारकाभी सुख तुम से हमको नहीं हुआ क्योंकि तुम पांशों के खेल में बड़े मतवालेहो हे पाण्डव तुम आप दुःखको उत्पन्न करके अब हमको कठोर वचन सुनातेहो । १८ ।

prowess of Brahmans lies in words and that of kshatryas in arms. You are strong only in words and know my prowess. I am ever engaged, heart and soul, in doing you good, yet you always speak harsh words to me. You should insult me no longer by lying on the bed of Draupadi. I slay warriors for your sake, but you are careless and cruel. Truthful Bhishm himself pointed you out the means of his death and Shikhandi slew him with my assistance. You lost all in the game of dice and therefore your career was not praiseworthy. You lose in gambling and wish to win again by our bravery. 16. Sahadev pointed out many faults of dice, yet you did not abandon the wicked habit and threw us all in difficulty. We never received any happiness from you, because you are mad after dice, Having

सेना छिन्नगात्रैर्भूमितले नदन्ती । त्वया हि तत् कर्म कृतं नृशंसं यस्माद्भयः कौरवाणां वधश्च ॥१९॥ हता उदीच्या निहताः प्रतीच्या नष्टाः प्राच्या दाक्षिणात्या विशस्ताः । कृतं कर्माप्रतिरूपं महद्भिस्तेषां योधैरस्मदीयैश्च युद्धे ॥२०॥ यं देविता त्वत्कृतं राज्यनाशस्त्वत्संभवं नो व्यसनं नरेन्द्र । मास्मान् क्रूरैर्वाक्प्रतोदैस्तुदंस्त्वं भूयो राजन् कोपयेस्त्वल्पभाग्यः ॥ २१ ॥ सञ्जय उवाच । एता वाचः परुषाः सव्यसाची स्थिरप्रज्ञः श्रावयित्वातिरूक्षाः । बभूवासौ विमना धर्मभीरुः कृत्वा प्राज्ञः पातकं किञ्चिदेवम् ॥ २२ ॥ ततोऽनुतेपे सुरराजपुत्रो विनिश्वसंश्चाप्यसिमुद्ववर्ह । तमाह कृष्ण किमिदं पुनर्भवान् विकोषमाकाशनिभं करोत्यसिम् ॥ २३ ॥ प्रब्रूहि मां त्वं पुनरुत्तरं वचस्तथा प्रवक्ष्याम्यहमर्थसिद्धये । इत्येवमुक्तः पुरुषोत्तमेन सुदुःखितः केशवमर्जुनोऽब्रवीत् ॥ २४ ॥

हमारे हाथसे अंगभंगधारी हुई शत्रुओंकी सेना पृथ्वीपर सोतीहुई पुकारती है तुमने ऐसा निर्दयकर्म किया जिसके दोषसे कौरवों का मरण उत्पन्न हुआ । १९ । उत्तर के रहनेवाले मारे पश्चिमी लोगोंका नाशकिया और पूर्वी वा दाक्षिणी भागगये युद्धमें हमारे और उनके शूरवीरों ने वह अपूर्व और अद्भुतकर्म किया । २० । तुम द्यूतके खेलनेवाले हो तुम्हारेही कारण से राज्यका नाशहुआ है नरेन्द्र हमारा दुःख तुझसे पैदा होनेवाला है हे राजा हम लोगों को वचनरूपी चाबुकों से पीड़ा देनेवाले तुम दुर्भागी फिर हमको क्रोधयुक्त मत करना । २१ । संजय बोले कि वह स्थिरबुद्धि धर्म से भयभीत महाज्ञानी अर्जुन इन कठोर अप्रतिष्ठित वचनों को सुनाकर कुछ पाप किया हुआ समझ कर उदास होगया वह इन्द्रकापुत्र बारम्बार श्वासलेताहुआ पीछेसे महादुखी हुआ और फिर खड्गको निकाल लिया तब श्रीकृष्णजी बोले आप इस आकाशरूप खड्गको फिरकिस निमित्त म्यानसे अलग करतेहो । २३ । इसका हमको उत्तर दोगे तब मैं तुम्हारे कल्याण और प्रयोजन के सिद्ध होनेको कुछ कहूंगा पुरुषोत्तमजी के इसवचनको सुनकर अर्जुन बड़ा दुखी होकर केशवजी से बोला कि जो मैंने अप्रियरूपी पापकर्म्म किया है इससे अपने शरीर को नाश करूंगा धर्मधारियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुन के इस वचनको सुनकर यह वचन

youself created dfficultees you speak harsh words to me. The Kaurav warriors, slain by us, are lying dead on the ground. All this destruction has been caused by your own fault. The warriors of both sides have done wonderful deeds of bravery in slaying the armies of the four quarters, 20. You lost the kingdom in the game of dice and caused us grief. You should never smart us by the whip of your tannts." Sanjaya said, "Having said those words of cruel taunts, Arjun became silent and dejected. Sighing again and again he became very sorrowful and drew out his sword. Seeing this, Shri Krishn asked him the reason of again taking out the sword, saying that on hearing him he would advise him for his good. At this Arjun said

अहं हनिष्ये स्वशरीरमेव प्रसह्य येनाहितमाचरं वै। निशाम्य तत् पार्थवचोऽब्रवीदिदं धनञ्जयं धर्मभृतां वरिष्ठः ॥ २५ ॥ राजानमेनं त्वमितीदमुक्त्वा किं कश्मलं प्राविशः पार्थ घोरम। त्वञ्चात्मानं हन्तुमिच्छस्यरिघ्न नेदं साद्भिः सेवितं वै किरीटिन् ॥ २६ ॥ धर्मात्मानं भ्रातरं ज्येष्ठमद्य खड्गेन चैनं यदि हन्या नृवीर। धर्मा द्भीतस्तत् कथं नाम ते स्यात् किञ्चोत्तरं वाकरिष्यस्त्वमेव ॥ २७ ॥ सूक्ष्मो धर्मो दुर्विदश्चापि पार्थ विशेषतोऽज्ञैः प्रोच्यमानं निबोध। हत्वात्मानमात्मना प्राप्नुयास्त्वं वधाद्भ्रातुर्नरकञ्चातिघोरम ॥ २८ । ब्रवीहि वाचाद्य गुणानिहात्मनस्तथा हतात्मा भवितासि पार्थ यथास्तु कृष्णेत्यभिनन्द्य तद्वचो धनञ्जयः प्राह धनुर्विनाम्य ॥ २९ ॥ युधिष्ठिरं धर्मभृतां वरिष्ठं शृणुष्व राजन्निति शक्रसूनुः। न मादृशोन्यो नरदेव विद्यते धनुर्द्धरो देवमृते पिनाकिनम ॥ ३० ॥ अहं हितेनानुमतो महात्मना क्षणेन हन्या

वाले कि । २५ । हे अर्जुन तुम इस राजा से ऐसे वचन कहकर घोर दुःख में क्यों प्रवृत्त हुये हे शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन जोतुम अपघात करना चाहतेहो यह कर्म सत्पुरुषों का नहीं है । २६ । हे नरवीर जो तुम अब इस धर्मात्मा बड़े भाईको खड्ग से मारोगे तो तुम धर्मसे डरने वालेकी कीर्त्ति किस प्रकारकी होगी इसका तुम क्या उत्तर दोगे । २७ । हे अर्जुन धर्म बड़ा सूक्ष्म होकर कठिनता से जानने के योग्यहै तुम बड़े बुद्धिमानों के कहेहुये धर्मको समझो तुम आप अपना अपघात करके वा भाई के मारने से महाघोर नरक में पड़ोगे । २८ । हे अर्जुन अब तुम यहां अपने वचनसे अपनेही गुणोंको वर्णन करो जिससेकि तुम हतात्मा होजाओ इस वचनको इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने पसन्द किया कि हे श्रीकृष्णजी ऐसाहीहो ।२९। फिर धनुष को चलाकर धर्मधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर से बोला कि हे राजा सुनो कि महादेवजी के सिवाय मुझसा धनुषधारी कोई नहीं है । ३० । मैं तुम महात्मा की आज्ञासे एक क्षणभरमेंही सब स्थावर जंगमजीवों समेत संसारभरेको मारसक्ताहूं हे राजा मैंने दिग्पालों समेत सब दिशाओं को विजय करके तेरे आधीनकर दी । ३१ । वह पूर्ण दक्षिणायुक्त राजसूययज्ञ और आपकी वह दिव्यसभा मेरेही पराक्रम से हुई और मेरेहाथों में तीक्ष्णधारवाले बाणहैं और बाणोंसे युक्त प्रत्यंचावाला

---

to Krishn very sorrowfully, "Having committed this heinous sin, I wish to commit suicide." Shri Krishn said, "Why did you say such harsh words to the king. Your attempt to commit suicide is not good. If you will slay your elder brother, you will commit sin. Dharm is very subtle and hard to know. You will fall into hell, if you kill your brother and commit suicide. You must speak out your own praise so that you may mortify your own soul." Arjun approved this method, and banding his bow, he said to Yudhishthir, "I have no equal among the warriors, except Mahadev. 30. By your permission, I can destroy all the movables and immovables of the

सचराचरं जगत । मयाद्दि राजन सादिगीश्वरा दिशो विजित्य सर्वा भवतः कृता वशे ॥ ३१ ॥ स राजसूयश्च समाप्तदक्षिणः सभा च दिव्या भवतो ममौजसा । पाणौ पृषत्का निशिता ममैव धनुश्च सज्यं विहितं सवाणम ॥ ३२ ॥ पादौ च मे सरथौ सध्वजौ च न मादृशं युद्धगतं जयन्ति । हता उदीच्या निहताः प्रतीच्याः प्राच्या निरस्ता दाक्षिणात्या विशस्ताः ॥ ३३ ॥ संसप्तकानां किञ्चिदेवावशिष्टं सर्वस्य सैन्यस्यहत मयार्द्धम् । शेतेमया निहता भारतीया चमूराजन देवचमूप्रकाशा ॥ ३४ ॥ ये चास्त्रज्ञास्तानहं हन्मि चास्त्रैस्तस्माल्लोकान्नेह करोमि भस्मसात् । जैत्रं रथं भीममास्थाय कृष्ण यावः शीघ्रं सूतपुत्रं निहन्तुम ॥ ३५ ॥ राजा भवत्वद्य सुनिर्वृतोऽयं कर्णं रणे नाशयितास्मि बाण ॥ ३६ ॥ अद्यापुत्रा सूतमाता भविश्री कुन्ती वाथो मया वा तेन वापि । सत्यं वदाम्यद्यन कर्णमाजौ शरैरहत्वा कवचं विमोक्ष्ये ॥ ३७ ॥ सञ्जय उवाच । इत्येवमुक्त्वा पुनरेव पार्थो युधिष्ठिरं धर्मभृतां

कम्पायमान धनुषहै । ३२ । और मेरेचरण रथ और ध्वजा समेत हैं और युद्धमें वर्त्तमान होकर मुझको कोई शूरबीर विजय नहीं करसक्ता है मैंने पूर्व्वीय पाश्चिमीय उत्तरीय और दाक्षिणीय राजा लोगों को मारा । ३३ । संसप्तकों का कुछ शेष बाकी है इसरीतिसे सब सेनाका आधाभाग मार डाला है राजा देवसेना के समान यह भरतवंशियों की सेना मेरे हाथसेही मारी हुई पृथ्वीपर सोरही है । ३४ । जो अस्त्रों के जाननेवाले हैं उनको मैं अस्त्रोंही से मारता हूं इसी हेतुसे यह अस्त्र लोकों के भस्म करनेवाले हैं हे श्रीकृष्णजी भयके उत्पन्न करने वाले इस विजयी रथपर सवार होकर कर्ण के मारने को चलें । ३५ । अब यह राजा युधिष्ठिर सुखी होजाय मैं युद्धमें अपने बाणों से कर्ण को मारूंगा ऐसा कहकर अर्जुन ने धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर से यह वचन कहा । ३६ । कि अब कर्ण की माता अपने पुत्र से रहित होगी अथवा कुन्ती मुझ से पृथक्‌होगी मैं सत्य २ कहता हूं कि अब युद्धभूमि में कर्ण को बाणों से मारे विना मैं अपने कवचको नहीं उतारूंगा । ३७ । संजय बोले कि अर्जुनने युधिष्ठिरसे ऐसा कहकर फिरभी शस्त्रोंको

world. I conquered all the directions and brought them under your rule. The Rajsuya sacrifice, with large donations, and the divine court house of yours were the results of my prowess. I possess sharp arrows and long bow, and when I am seated on my bannered car no warrior can overcome me. I slew the warriors of East, West, North and South. A small portion of the Sansaptaks remains. I have slain nearly half the Kaurav army. The godlike army of the Kauravas, slain by me, lies on the field of battle. I slay skilful warriors with my weapons which can destroy the world. Let Shri Krishn ride the dearful car to slay Karan. 35. Let king Yudhishthir be cheerfu, for, with my arrows, I shall slay Karan." Having said this, Arjun

वरिष्ठम् । विमुच्य शस्त्राणिधनुर्विसृज्य कोषे च खड्गं विनिधाय तूर्णम् ॥ ३८ ॥ स व्रीडया नम्रशिराः किरीटी युधिष्ठिरं प्राञ्जलिरभ्युवाच । प्रसीद राजन् क्षमयच मयोक्तं कालेभवान् वेतस्यति तन्नमस्ते ॥ ३९ ॥ प्रसाद्य राजानममित्रसाहं स्थितोऽब्रवीच्चैव पुनः प्रवीरः । नेदं चिरात् क्षिप्रमिदं भविष्यत्यावर्त्ततेऽसावभिमाभि चैनम् ॥ ४० ॥ यास्येष भीमं समरात् प्रमोक्तुं सर्वात्मना सूतपुत्रञ्च हन्तुम् । तव प्रियार्थं मम जीवितंहि ब्रवीमि सत्यं तदवेहि राजन् ॥ ४१ ॥ इति प्रयास्यन्नुपगृह्य पादौसमुत्थितो दीप्ततेजाः किरीटी ॥४२ ॥ एतच्छ्रुत्वा पाण्डवो धर्मराजो भ्रातुर्वाक्यं परुषं फाल्गुनस्य । उत्थाय तस्माच्छयना दुवाच पार्थं ततो दुःखपरीतचेताः ॥ ४३ ॥ कृतं मया पार्थ यथा न साधु येन प्राप्तं व्यसनं वः सुघोरम् । तस्माच्छिरश्छिन्धि ममेदमद्य कुलान्तकस्याधमपूरुषस्य ॥ ४४॥ पापस्य पापव्यसना न्वितस्य विमूढबुद्धे

उतार धनुष छोड़ बड़ी शीघ्रता से खड्ग को म्यानमें रखकर । ३८ । बड़ी लज्जा से नीचा शिरकिये हाथ जोड़कर युधिष्ठिर से कहा कि हे राजा प्रसन्न हूजिये और मेरे कहेहुये को क्षमा करिये आप समय पाकर जानेंगे अब आपको नमस्कार है । ३९ । इस रीति से अप्रसन्न राजाको प्रसन्नकरके फिर यह वचन बोला कि इस कार्य्य में विलम्ब नहोगी बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक यह कार्य्य होगा मैं इस लौटते हुये के सम्मुख जाता हूं । ४० । अब मैं सर्वात्मभाव से भीमसेनको युद्ध से छुटाने और कर्णको मारनेको जाताहूं मेरा जीवन केवल आपके अभीष्ट के ही निमित्त है हे राजा मैं आपसे सत्य २ कहताहूं आप मुझको आज्ञादीजिये । ४१ । यह कहकर बड़ा तेजस्वी अर्जुन चलने के समय भाई के चरणों को पकड़कर उठा । ४२ । फिर पांडव धर्मराज ने अपने भाई अर्जुन के इस कठोर वचन को सुनकर महादुःखी हो अपने उस शयनस्थान से उठकर अर्ज्जुनसे कहा । ४३ । हे अर्ज्जुन मैंने यह महादुष्ट कर्म किया जिसके कारण तुमको ऐसा महाघोर दुःखप्राप्त हुआ इसकारण से मुझकुल के नाशक महापापी दुःखों से युक्त अज्ञानबुद्धि आलसी भयभीत वृद्धों के अपमान करनेवाले इस नीच पुरुषके शिरको काटडालो । ४४ ।

addressed Yudhishthir the just, saying, "Either Karan's mother or Kunti will be childless today, I say truly that without slaying Karan I shall not put off my armour." Having said this to Yudhishthir, *Arjun laid aside his bow and arrows and putting the sword into* the scabbard, he shamefully cast down his head, and with joined palms, he said to Yudhishthir," Be cheerful, king, and pardon me. You will know all in time, I salute you. Thus cheering the dejected king, he again said, "I shall work with all possible haste. I am going away to encounter Karan who is returning.40. I am going with all my heart to relieve Bhim and to slay Karan. I tell you truly, king, that I live for your sake. Now bless me before I go

रलसस्य भीरोः । वृद्धावमन्तुः परुषस्य चैव किन्तेचिरं मे ह्यनुसृत्य रूक्षम् ॥ ४५ ॥ गच्छाम्यहं वनमेवाद्य पापः सुखं भवान् वर्त्ततां मद्विहीनः । योग्यो राजा भीमसेनो महात्मा क्लीवस्य वा मम किं राजकृत्यम् ॥ ४६ ॥ न चास्मि शक्तः परुषाणि सोढुं पुनस्तवेमानि रुषान्वितस्य । भीमोस्तु राजा मम जीवितेन न कार्य्यमद्यावमतस्य वीर ॥ ४७ ॥ इत्येऽवमुक्त्वा सहसोत्पपात राजा ततस्तच्छयनं विहाय । इयेष निर्गन्तुमथो वनाय तं वासुदेवः प्रणतोऽभ्युवाच ॥ ४८ ॥ राजन् विदितमेतत्ते यथा गाण्डीवधन्वनः प्रतिज्ञा सत्यसन्धस्य गाण्डीवं प्रति विश्रुता ॥ ४९ ॥ ब्रूयाद्य एनं गाण्डीवं देह्यन्यस्मै त्वमित्युत । वध्योऽस्यस पुमांल्लोके त्वया चोक्तोऽयमीदृशम् ॥ ५० ॥ ततः सत्यां प्रतिज्ञां तां पार्थेन प्रतिरक्षता। मच्छन्दादवमानोऽयं कृतस्तव महीपते। गुरूणामव मानोहि वध इवाभिधीयते॥५१॥तस्मात्वं वैमहाबाहोमम पार्थस्य चोभयोः । व्यतिक्रममिमंराजन्

तेरे रूखे वचनोंके सुननेसे मेरा कोई प्रयोजन नहीं है अब मैं महापापी वनकेही जाने के योग्यहूं मैं अवश्य वनहीको जाऊँगा और आप मुझसे पृथक् होकर सुखसे राज्य को करो महात्मा भीमसेन राजाहोनेके योग्य है मुझ नपुंसकका राज्य में क्याकाम है । ४३ । और तुझ क्रोधयुक्त के इनकठोर वचनों के सहनेकोभी मैं समर्थ नहीं हूं हे वीर मुझ अपमानवाले के जीवन के कारण से फिर भीमसेन राजाकरने के योग्य न होगा । ४७ । इस रीतिके वचनोंको कहकर राजा युधिष्ठिर अपने शयन स्थान को छोड़कर उछला और वनके जाने की इच्छाकरी तब तो वासुदेवजी ने बड़े नम्रहोकर युधिष्ठिरसे कहा । ४८ । हे राजा यह आप समझिये कि जैसे सत्यप्रतिज्ञ गांडीव धनुषधारी की प्रतिज्ञा सुनी गई अर्थात् जो कोई कि ऐसा कहे कि गांडीव धनुष दूसरे के देने के योग्य है वह पुरुषलोक में उसके हाथ से मारने के योग्य है और यह तुमने उससे कहा । ५० । इस हेतु से अर्जुन ने उस अपनी सत्य प्रतिज्ञाकी रक्षाकरी है हे राजा यह तेरा अपमान मेरी इच्छा से कियागया क्योंकि गुरुओं का अपमानही मारने के समान कहाजाता है । ५१ ।

away." *Having said this, glorious Arjun* touched the feet of his elder brother. Hearing the harsh words of Arjun, Yudhishthir *with a dejected mind* rose *from* his seat, and said, "I have done a heinous deed and thrown you into trouble. You may cut off my *head, because I am the destroyer of my family, sinful, foolish, lazy,* terrified and rude towards my elders. I wish no more to hear your harsh words. *I must go* into exile. *May you reign happily* when I am gone. Mighty Bhim is fit to be a king; what have I to do with a kingdom as I am a cowardly man? 46. I am unable to bear your harsh words. Bhim will not reign as long as I am alive." Having said this, Yudhishthir jumped up *from his seat* and desired to go to the forest. Then Vasudev humbly said to Yudhishthir,"

ससंरक्षार्जुने प्रति ॥ ५२ ॥ शरणं त्वां महाराज प्रपन्नौ स्व उभावपि । क्षन्तुमर्हसि
मे राजन् प्रणतस्याभियाचतः ॥ ५३ ॥ राधेयस्याद्य पापस्य भूमिः पास्यति शोणि
तम । सत्यं ते प्रतिजानामि हतं विद्धयद्य सूतजम । यस्येच्छसि वधं तस्य गत
मद्यद्य जीवितम् ॥ ५४ ॥ इति कृष्णवचः श्रुत्वा धर्मराजो युधिष्ठिरः । ससम्भ्रमं
हृषीकेशमुत्थाप्य प्रणतं तदा ॥ ५५ ॥ कृताञ्जलिस्ततो वाक्यमुवाचानन्तरं वच ।
एवमेव यथात्थत्वमस्त्वेषोऽतिक्रमो मम ॥ ५६ ॥ अनुनीतोऽस्मि गोविन्द तारि
तश्चास्मि माधव । मोक्षिता व्यसनाद्घोरादृयमद्य त्वयाच्युत ॥ ५७ ॥ भवन्तं
नाथमासाद्य आवां व्यसनसागरात् घोरादद्य समुत्तीर्णावुभावज्ञानमोहितौ ॥ ५८ ॥

हे महाबाहो राजा युधिष्ठिर इस हेतुसे सत्यकी रक्षा के निमित्त मेरी और अर्जुन की अनम्रताको आप क्षमा करिये। ५२ । हे महाराज हम दोनों आपकी शरणमें वर्त्तमान हैं हे राजा मुझ प्रणतरूप प्रार्थना करनेवालेका अपराध क्षमाकरिये । ५३ । अब यहपृथ्वी उस पापात्मा कर्णके रुधिरको पानकरेगी यह मैं तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं कि अब तुम कर्णको मराहुआही जानो जिसको तू मारनाचाहता है अब उसकी अवस्था जीवन की भी समाप्त हुई । ५४ । तब श्रीकृष्णजी के वचन को सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने भ्रान्तीसे युक्त झुकेहुये श्रीकृष्णजी को उठाकर । ५५ । हाथजोड़कर श्रीकृष्णजी से यह वचनकहा कि हे श्रीकृष्णजी जैसा आपने कहाहै वैसाही है । ५६ । कि इसमें मेरी अमर्य्यादा होय हेमाधव गोविन्दजी मैं आपके समझाने से समझगयाहूं हे अविनाशी अवहम तुम्हारे कारणसे घोर दुःख से छूटे । ५७ । और अपनी अज्ञानतासे अचेत हम दोनों आपरूप स्वामीकोपाकर इस घाररूप दुःख समुद्र से पारहुये । ५८ । हम सब अपने मन्त्रियों समेत आपकी बुद्धिरूपी नौकाको पाकरदुःख और शोकरूपी नदी से पारहुये हे अविनाशी हम

"You know already the vow of the bearer of the Gandiv that he would slay him who says to him to give up the bow to another, and you said this. He has kept his word and insulted you by my instigation; for an insult to an elder is equal to slaying him. The rudeness was to keep the vow and therefore you will pardon me and Arjun for the insulting language 52. Both of us are ready to obey you and ask your pardon The earth will now drink the blood of wicked Karan. You may take him up for dead on my word. He whom you wish to slay, has his days numbred." Hearing the words of Krishn, Yudhishthir raised him up from the supplicatory position and with joined palms, said, "You are right, Krishn. I understand the meaning of Arjun's conduct. I am now free from anxiety and both of us are made happy by you. You are a boat to us for

त्वद्बुद्धिप्लवमासाद्य दुःखशोकार्णवाद्वयम् । समुत्तीर्णाः सहामात्याः सनाथाः स्म त्वयाच्युत ॥ ५९ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि युधिष्ठिरमर्षोयने सप्ततितमोध्यायः ॥ ७० ॥

सञ्जय उवाच। इति स्म कृष्णवचनात् प्रत्युच्चार्य्य युधिष्ठिरम्। बभूव विमनाः पार्थः किञ्चित्कृत्वेव पातकम् ॥ १ ॥ ततोऽब्रवीद्वासुदेवः प्रहसन्निव पाण्डवम् ॥ २ ॥ कथं नाम भवेदेतद्यदि त्वं पार्थ धर्मजम्। असिना तीक्ष्णधारेण हत्वा धर्मे व्यवस्थितम् ॥ ३ ॥ त्वमित्युक्त्वाथ राजानमेवं कश्मलमाविशः। हत्वा तु नृपतिं पार्थ अकरिष्यः किमुत्तरम्। एवं हि दुर्विदो धर्मो मन्दप्रज्ञैर्विशेषतः ॥ ४ ॥ स भवान् धर्मभीरुत्वात् ध्रुवमेष्यत्महत्तमः। नरकं घोररूपञ्च भ्रातुर्ज्येष्ठस्य वै वधात् ॥ ५ ॥ स त्वं धर्मभृतांश्रेष्ठं राजानं धर्मसंहितम्। प्रसादय कुरुश्रेष्ठमेत

तुमसे सनाथहैं ५९ ॥

अध्यायः ७१ ॥

संजय बोले कि अर्जुन इसरीतिसे श्रीकृष्णजी के वचन से युधिष्ठिर को कठोर वचन कहकर उदास हुआ जैसे कि कुछ पापको करके उदास होते हैं तब हँसतेहुये वासुदेवजी उस पाण्डवसे बोले । २ । कि हे अर्जुन यह कैसे होसक्ता है जो उसधर्मनिष्ठ धर्मकेपुत्रको तीक्ष्णधारवाले खड्गसे मारे तुमराजासे यह कहकर एक पापमें पड़े । ३ । हे अर्जुन राजाको मारकर पीछेसे तुम क्या करते इसरीतिसे अल्प बुद्धियों वड़ी कठिनता पूर्वक धर्मजानने के योग्य है सो आपधर्मके भयसे बड़े भाईके मारने के द्वारा बहुत बड़े घोर नरकमें अवश्य पड़े । ५ । सो तुम धर्म

crossing the ocean of anxiety and we find a protector in you." 59.

CHAPTER LXXI

Having said harsh words to Yudhishthir by the instigation of Krishn, Arjun stood dejected like one who has committed a sin. Then Vasudev said to him with a smile, " How could you dare say to the king that you would cut off his head ? What would be your state after slaying him. The ways of dharm are hard to know. You have committed a heinous sin by attempting the murder of your brother. 5

दत्र मतं मम ॥ ६ ॥ प्रसाद्य भक्त्या राजानं प्रीते चैव युधिष्ठिरे। प्रयावस्त्वरितो
यद् सूतपुत्ररथं प्रति ॥ ७ ॥ हत्वा तु समरे कर्णं त्वमद्य निशितैः शरैः। विपुलां
प्रीतिमाधत्स्व धर्मपुत्रस्य मानद ॥८॥ एतदत्र महाबाहो प्राप्तकालं मतं मम। एवंकृते कृत
ञ्चैव तव कार्य्यं भविष्यति ॥ ९ ॥ ततोऽर्जुनो महाराज लज्जया वै समन्वितः। धर्म
राजस्य चरणौ प्रपद्य शिरसा नतः ॥ १० ॥ उवाच भरतश्रेष्ठं प्रसीदेति पुनः
पुनः। क्षमस्व राजन् यत् प्रोक्तं धर्मकामेण भीरुणा ॥ ११ ॥ सञ्जय उवाच।
दृष्ट्वा तु पतितं पद्भ्यां धर्मराजो युधिष्ठिरः। धनञ्जयममित्रघ्नं रुदन्तं भरतर्षभ
॥ १२ ॥ उत्थाप्य भ्रातरं राजा धर्मराजो धनञ्जयम्। समाश्लिष्य च सस्नेहं प्ररु
रोद महीपतिः॥ १३ ॥ रुदित्वा तु चिरं कालं भ्रातरौ सुमहाद्युती। कृतशौचौ
महाराज प्रीतिमन्तौ बभूवतुः ॥१४॥ तत आश्लिष्य तं प्रेम्णा मूर्ध्नि चाघ्राय पाण्डवः।
प्रीत्या परमया युक्तः प्रस्मयंश्चाब्रवीज्जयम् ॥ १५ ॥ कर्णेन मे महाबाहो सर्वसै

धारियोंमें श्रेष्ठ धर्मकेसंग्रह कौरवों में श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरको प्रसन्नकरो यहीमेरा
मतहै। ६। अपनी भक्तिसे राजाको प्रसन्नकरो फिर उस युधिष्ठिर के प्रसन्न
होनेपर शीघ्रही युद्धके निमित्त कर्णके रथके समीप चलेंगे। ७। हे बड़ाई देनेवाले
अब तुम युद्धमें अपने तीक्ष्णधारवाले बाणों से कर्णको मारकर धर्मराजकी बड़ी
प्रसन्नताको प्राप्त करो। ८। हे महाबाहो यहां यह वार्त्तासमयके अनुसारहै यह
मेरामतहै ऐसा करनेपर तेराकियाहुआ कार्य सिद्धहोगा। ९। हे महाराज इसके
पीछे लज्जायुक्त अर्जुन धर्मराज के दोनों चरणोंको पकड़कर शिरसे झुकगया
। १०। और उस भरतर्षभ से वारम्वार विनयकरने लगा कि हेराजा जो मुझसब
कामों से डरेहुये ने आपके सम्मुख असभ्य वचन कहे उनको आप क्षमाकरिये
। ११। हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र तब तो धर्मराज युधिष्ठिर ने उस शत्रुसंहारी रोतेहुये
और गिरेहुये अर्जुन को देखकर। १२। उस संसारको लक्ष्मी के विजय करने
वाले भाईको उठाकर बड़ी प्रीति से हृदयसे लगाकर अति रोदन किया। १३।
हे महाराज वह महातेजस्वी शुद्ध अंतःकरणवाले दोनों भाई बहुत विलंबतक रोदन
करके प्रसन्नहुये। १४। फिर पाण्डव धर्मराज बड़े प्रेमसे मिल कर उसके मस्तक
को सूंघ के बड़ी प्रीतियुक्त मन्दमुसकान करते हुये उस बड़े धनुषधारी से बोले

You must please him by your respectful conduct and let us go to fight after pleasing him. You will please him more by slaying Karan with your arrows. You must do this now. Your good lies in doing so." Then Arjun held the feet of Yudhishthir with both his hands and laid his head on them. 10. He said to him again and again to pardon him for the rude words. Seeing Arjun fallen at his feet and weeping, Yudhishthir lifted him up and embraced him. Both the brothers wept long and were happy. Yudhishthir then joyfully smelt Arjun's forehead and said, 15. "Karan the great archer

न्यस्य पश्यतः । कवचञ्च ध्वजञ्चैव धनुः शक्तिर्हयाः शराः । शरैः कृत्ता महेष्वास यतमानस्य संयुगे ॥ १७ ॥ सोऽहं ज्ञात्वा रणे तस्य कर्म दृष्ट्वा च फाल्गुन । व्यथसीदामि दुःखेन न च मे जीवितं प्रियम् ॥ १८ ॥ न चेदद्य हि तं वीरं निहनिष्यसि संयुगे । प्राणानेव परित्यक्ष्ये जीवितार्थो हि को मम ॥ १९ ॥ एवमुक्तः प्रत्युवाच विजयो भरतर्षभ ॥ २० ॥ सत्येन ते शपे राजन् प्रसादेन तथैव च । भीमेन च नरश्रेष्ठ यमाभ्यां च महीपते ॥ २१ ॥ यथाद्य समरे कर्णं हनिष्यामि हतोऽपि वा । महीतले पतिष्यामि सत्येनायुधमालभे ॥ २२ ॥ एवमाभाष्य राजानमब्रवीन्माधवं वचः । अद्य कर्णं रणे कृष्ण सूदयिष्ये न संशयः । तव बुद्ध्या हि भद्रं ते वधस्तस्य दुरात्मनः ॥ २३ ॥ एवमुक्तोऽब्रवीत् पार्थं केशवो राजसत्तम । शक्तोऽसि भरतश्रेष्ठ हन्तुं कर्णं महाबलम् ॥ २४ ॥ एष चापि हि मे कामो नित्यमेव महारथ । कथं भवान्रणे

। १६ । हे महाबाहो बड़े धनुषधारी कर्ण ने युद्ध में सब सेना के देखते हुये मुझ उपाय करनेवाले को कवच, ध्वजा, धनुष, शक्ति घोड़े और बाणों को अपने बाणों से काटकर पराजयकिया । १७ । हे अर्जुन सो मैं युद्ध में उसको जानके और उसके कर्मको देखकर महादुःखी होताहूं और जो युद्धमें उस वीर शत्रुको नहीं मारेगा तो मुझको जीवन प्यारा न होगा । १८ । अर्थात् अपने प्राणोंको त्यागकरूंगा फिर जीने से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है हे भरतर्षभ इस प्रकार के युधिष्ठिरके बचनों को सुनकर अर्जुनने उत्तरदिया । १० । हे नरोत्तम महाराज मैं आपकी सत्यता वा प्रसन्नता वा भीमसेन नकुल और सहदेवकी शपथ करताहूं । २१ । मैं जिसप्रकारसे अब कर्णको मारूंगा वा आप मरकर पृथ्वीपर गिरूंगा मैं सत्यतासे उसशस्त्रको प्राप्त करताहूं । २२ । ऐसा राजासे कहकर फिर माधवजीसे बोला कि हे श्रीकृष्णजी अब मैं निस्संदेह युद्धमें कर्णको मारूंगा आपका कल्याणहोय यहसब आपही के विचारसे है उस दुरात्माका मरणहोगा । २३ । हे राजाओं में श्रेष्ठ यहवचन सुनकर केशवजी अर्जुन से बोले हे भरतर्षभ तुम बड़े पराक्रमी होकर कर्ण के मारने को समर्थ हो । २४ । हे महारथी मेरीभी

cut my armour, banner, bow, spear, horses and arrows with his own and vanquished me. Seeing his prowess and having an experience of him, I am much grieve d. My life will not be sweet to me as long as you donot slay him. I shall commit suicide." Having heard the words of Yudhishthir, Arjun said, " I swear by the truth and pleasure of yourself, Bhim Nakul and Sahadev that either I shall slay Karan or be slain by him. I hold my weapon for that purpose." Having said this to the king, he again addressed Krishn, saying, "I will slay Karan by your grace. He shall die. "On hearing this Shri Krishn said to Arjun, " You have sufficient prowess to slay Karan. I have allways been thinking of how you will slay him." 25.

संजय उवाच । प्रसाद्य धर्मराजानं प्रहृष्टेनान्तरात्मना । पार्थः प्रोवाच गोविन्दं सूतपुत्रवधोद्यतः ॥ १ ॥ कल्प्यतां मे रथो भूयो युज्यन्तां च हयोत्तमाः । आयुधानि च सर्वाणि सज्यन्तां वै महारथे ॥ २ ॥ उपावृत्ताश्च तुरगाः शिक्षिताश्चाश्वसादिभिः । रथोपकरणैः सज्जा उपायान्तु त्वरान्विताः । प्रयाहि शीघ्रं गोविन्द सूतपुत्रजिघांसया ॥ ३ ॥ एवमुक्तो महाराज फाल्गुनेन महात्मना । उवाच दारुकं कृष्णः कुरु सर्वं यथाब्रवीत् । अर्जुनो भरतश्रेष्ठः श्रेष्ठः सर्वधनुष्मताम् ॥ ५ ॥ आज्ञप्तस्त्वथ कृष्णेन दारुको राजसत्तम । योजयामास स रथं वैयाघ्रं शत्रुतापनम् । सज्जं निवेदयामास पाण्डवस्य महात्मनः ॥ ६ ॥ युक्तन्तु तं रथं दृष्ट्वा दारुकेण महात्मना । आपृच्छ्य धर्मराजानं ब्राह्मणान् स्वस्तिवाच्य च । सुमङ्गलं स्वस्त्ययनमारोह रथोत्तमम् ॥ ८ ॥ तस्य राजा महाप्राज्ञो धर्मराजो युधिष्ठिरः । आशिषोऽयुङ्क्त

अध्याय ७२ ॥

संजय बोले कि कर्ण के मारने को उपस्थित अर्ज्जुन अत्यन्त प्रसन्न चित्त होकर धर्मराजको प्रसन्न करके गोविन्दजी से बोला । १ । कि मेरारथ फिर तैयार करिये और उत्तम घोड़ों को जोतो और उसी मेरे कल्याणरूपी रथपर सब अस्त्र शस्त्रोंकोधरो । २ । अश्वसवारोंसे शिक्षित और पृथ्वी के लोटने से गत परिश्रम और रथके सब सामानों से अलंकृत शीघ्रता युक्त चंचल घोड़े बहुत शीघ्र सन्मुख लायेजायें हे गोविन्दजी कर्णके मारने की इच्छा से अब शीघ्रचलो । ४ । हे महाराज महात्मा अर्जुन के इस वचनको सुनकर श्रीकृष्णजी दारुक सारथी से बोले कि वह सबकरो जिसप्रकार इस भरतर्षभ और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने कहाहै । ५ । हे राजाओं में श्रेष्ठ इसके पीछे श्रीकृष्णजी की आज्ञापातेही उस दारुकने शत्रुसंतापी व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुये उत्तम रथको जोड़ा और रथ को तैयार करके महात्मा पांडव अर्जुनके आगे निवेदन किया कि रथ तैयारहै । ६ । तब महात्मा दारुक के तैयार किये हुये रथको देखकर धर्मराज से आज्ञाले ब्राह्मणों से स्वस्ति वाचन कराके बड़े मंगल और स्वस्त्ययन के साथ रथपर सवार हुआ । ८ । उस समय बड़ेज्ञानी धर्मराज राजायुधिष्ठिर ने उसको आशीर्वाद दिया इस

CHAPTER LXXII

Sanjaya said, "Having pleased the king, Arjun cheerfully said to Govind, "Have my car prepared, harness the horses and put the weapons on the car. Let my well-trained horses which have taken rest by lying down on the earth, be brought here soon. Let us hasten to slay Karan." Having heard the words of Arjun, Shri Krishn ordered Daruk the driver to do all that was directed to be done by Arjun. 5. By the order of Shri Krishn, Daruk prepared the car lined by tiger's hide and informed Arjun that it was ready. Seeing the car ready, Arjun, permitted by Yudhishthir and blessed

स ततः प्रायाद्‌ कर्णरथं प्रति ॥ ९ ॥ तं प्रयान्तं महेष्वासं दृष्ट्वा भूतानि भारत
निहतं मेनिरे कर्णं पाण्डवेन महात्मना ॥ १० ॥ बभूवुर्विमनाः सर्वा दिशो राजन्
समन्ततः । चाषाश्च शतपत्राश्च क्रौञ्चाश्चैव जनेश्वर । प्रदक्षिणमकुर्वन्त तदा वै
पाण्डुनन्दनम् ॥ १२ ॥ बहवः पक्षिणो राजन् पुन्नामानः शुभाः शिवाः ।
त्वरयन्तोऽर्जुनं युद्धे हृष्टरूपा ववाशिरे ॥ १३ ॥ कङ्का गृध्रा
बकाः श्येनाः वायसाश्च विशाम्पते । अग्रतस्तस्य गच्छन्ति भक्ष्यहेतोर्भयानकाः
॥ १४ ॥ निमित्तानि च धन्यानि पाण्डवस्य शशंसिरे । विनाशमरिसैन्यानां
कर्णस्य च वधं प्रति ॥ १५ ॥ प्रयातस्याथ पार्थस्य महान् स्वेदो व्यजायत । चिन्ता
च विपुला जज्ञे कथन्त्वेदं भविष्यति । ततो गाण्डीवधन्वानमब्रवीन्मधुसूदनः । दृष्ट्वा
पार्थं तदा व्यस्तं चिन्तापरिगतं तदा ॥ १६ ॥ वासुदेव उवाच । गाण्डीवधन्वन्
संग्रामे ये त्वया धनुषा जिताः । न तेषां मानुषो जेता त्वदन्य इह विद्यते ॥ १७ ॥

के पीछे वह कर्ण के रथके पछिचला । ९ । हे भरतवंशी सब जीवों ने उस बड़े
धनुषधारी अर्जुन को आता देखकर महात्मा पांडव के हाथसे कर्णको मराहुआ
माना । १० । हे राजा सर्वदिशा चारोंओर से निर्मलहुई उस समय चाषशतपत्र
और क्रौंचनाम पक्षियों ने पांडुनन्दन अर्जुनको दक्षिणाकिया । ११ । हे राजा
मंगल या कल्याणरूप और प्रसन्न रूप अर्जुन को युद्धमें प्रेरणा करते बहुत से नर
पक्षी भी शब्द करनेलगे । १३ । और हे राजा भयानकरूप कंक गिद्ध बक बाज
और काक यह सब मांसखाने के लिये उसके आगे चले । १४ । उन्होंने अर्जुन के
मंगलकारी शकुनों को इसरीतिसे वर्णन किया कि शत्रुओं की सेना का और
कर्णका नाश होगा । १५ । इसके पीछे यात्रा करनेवाले अर्जुन को बड़ा खेद
उत्पन्न हुआ और बड़ी चिन्ता उत्पन्नहुई कि यह कैसेहोगा इसके अनन्तर
मधुसूदनजी चिंताग्रसित गांडीव धनुषधारी से बोले । १६ । हे गांडीव धनुषधारी
युद्धमें जो तेरे धनुषसे विजयकियेगये उनका विजयकरनेवला दूसरामनुष्य इसपृथ्वी
परनहींहै ।१७। इन्द्रके समान भी अनेक पराक्रमी देखे उन शूरोंनेभी युद्धको पाकर

by Brahmans, took his seat on the car. Yudhishthir blessed him and he went on after Karan. Those who saw him thus coming, thought that Karan was sure to be slain. 10, The directions became clear and birds of good omen flew to his right. Many male birds led him to fight. Dreadful birds of prey flew in his van with the *prospect of flesh.* They predicted *destruction* to the enemies, Arjun on his way to the field of battle was dejected and grieved and wondered about what was going to happen, Krishn, seeing Arjun thus dejected, said, "None could conquer the warriors whom you have conquered. Warriors of Indra like prowess were conquered by you, Dronacharya, Bhishm, Bhagdatta, Vind, Anuvind, the warriors of

दृष्ट्वा द्विषद्भः शूराः शक्रतुल्यपराक्रमाः । त्वां प्राप्य समरे शूरं ये गताः परमां गतिम् ॥ १८ ॥ को हि द्रोणञ्च भीष्मञ्च भगदत्तञ्च मारिष । विन्दानुविन्दावावन्ती काम्बोजञ्च सुदक्षिणम् ॥ १९ ॥ श्रुतायुधं महावीर्यमयुतायुधमेव च । प्रत्युद्गम्य भवेत् क्षेमी यो न स्यात् त्वमिव प्रभो ॥ २० ॥ तव ह्यस्त्राणि दिव्यानि लाघवं बलमेव च । असम्मोहश्च युद्धेषु विज्ञानस्य च सन्ततिः । वेधः पातश्च लक्ष्येषु योगश्चैव तथार्जुन ॥ २१ ॥ भवान् देवान् सगन्धर्वान् निहन्यात सचराचरान् । पृथिव्यां हि रणे पार्थ न योद्धा त्वत्समः पुमान् ॥ २२ ॥ धनुर्ग्रहा हि ये केचित् क्षत्रिया युद्धदुर्मदाः । आदेवात् त्वत्समं तेषां न पश्यामि शृणोमि वा ॥ २३ ॥ ब्रह्मणा च प्रजाः सृष्टा गाण्डीवञ्च महद्धनुः । येन त्वं युध्यसे पार्थ तस्मान्नास्ति त्वया समः ॥ २४ ॥ अवश्यन्तु मया वाच्यं यत् पथ्यं तव पाण्डव । मावमंस्था महाबाहो कर्णमाहवशोभिनम् ॥ २५ ॥ कर्णो हि बलवान् दृप्तः कृतास्त्रश्च महारथः । कृती च चित्रयोधी

परमगतिको प्राप्तकिया । १८ । इन द्रोणाचार्य भीष्म, भगदत्त, विन्द, अनुविन्द, अवन्तिदेश के राजालोग, कांबोज, सुदक्षण । १९ । बड़ेपराक्रमी श्रुतायुध और अयुतायु के सम्मुख जाकर जो तेरे पास दिव्य अस्त्र वा हस्तलाघवता वा पराक्रम वा युद्धोंमें मोह न होता वा विज्ञानरूपी नम्रता न होती तो तेरे सिवाय किस दूसरे की सामर्थ्यथी जो इनके आगे कुशल रहता और वेधचिह्न युक्तयोगभी तुझ को प्राप्त है । २१ । आप गंधर्व और संसार के जड़ चैतन्यों समेत देवताओं कोभी मारसक्तेहो हे अर्जुन इस पृथ्वी पर तेरे समान कोई शूरवीर पुरुष नहीं है । २२ । और जो कोई क्षत्री युद्ध में दुर्मद बड़े धनुषधारीहैं उनके मध्यमें तेरे समान देवताओं तकमें किसी को नहीं देखताहूं न सुनताहूं । २३ । ब्रह्माजीने सृष्टिकी उत्पत्ति करके गांडीव धनुषको उत्पन्न कियाहै हे अर्जुन जो कि तुम उस धनुष के द्वारा लड़तेहो इसी कारण से तुम्हारे समान कोई नहीं है । २४ । हे पांडव मैं उस बात को अवश्य कहूंगा जिसमें तेरा कल्याण होगा हे महाबाहो युद्ध के शोभा देनेवाले कर्ण कोतू मत अपमानकर । २५ । यह महारथी

Avanti and Camboj, Sudakshin, Shrutayudh and Ayutayu, who came before you, were conqnered by you. Who except you could be safe before them. You possess matchless weapons, dexterity and humility. 21. You can destroy the gandharvas as well as all the movables and immovables of the world. There is no warrior equal to you in the world. I find no archer equal to you even among the gods. Brahma created the Gandiv bow in the beginning of the world and there is no archer equal to you in the world, because yon possess that bow. 24. I shall tell you what is needful; you should not think Karan to be weaker than you. He is full of prowess, proud, clever in the use of arms, matchless warrior and working in due

च देशकालस्य कोविदः ॥ २६ ॥ बहुनात्र किं मुक्तेन संक्षेपाच्छृणुपांडव । त्वत्समं त्वद्विशिष्टं वा मन्ये कर्णं महारथम् । परमं यत्नमास्थाय त्वया वध्यो महाहवे ॥ २८ ॥ तेजसा वह्निसदृशो वायुवेगसमोजवे । अन्तकप्रतिमः कोपे सिंहसंहननो बली ॥ २९ ॥ अष्टरत्निर्महाबाहुर्व्यूढोरस्कः सुदुर्जयः । अभिमानी च शूरश्च प्रवीरः प्रियदर्शनः ॥ ३० ॥ सर्वैर्योधगुणैर्युक्तो मित्राणामभयङ्करः । सततं पाण्डवद्वेषी धार्तराष्ट्रहिते रतः ॥ ३१ ॥ सर्वैरवध्यो राधेयो देवैरपि सवासवैः ऋते त्वामिति मे बुद्धिस्तदद्य जहि सूतजम् ॥ ३२ ॥ देवैरपि हि संयत्तैर्बिभ्रद्भिर्मांसशोणितम् । अशक्यः स रथो जेतुं सर्वैरपि युयुत्सुभिः ॥ ३३ ॥ दुरात्मानं पापवृत्तं नृशंसं दुष्टप्रज्ञं पाण्डवेयेषु नित्यम् । हीनस्वार्थं पाण्डवेयैर्विरोधे हत्वा कर्णं निश्चितार्थो भवाद्य ॥ ३४ ॥ तं सूतपुत्रं रथिनां वरिष्ठं

कर्ण पराक्रमी अहंकारी अस्त्रज्ञ कर्मकर्त्ता व अपूर्व युद्धकर्त्ता होकर देशकाल का जाननेवालाहै । २६ । यहां अब बहुत कहनेसे क्या लाभहै हे पांडव अब इसका संक्षेप सुनो मैं महारथी कर्णको तेरे समान वा तुझ से अधिक मानताहूं वह तुमसे बड़े उपाय पूर्वक युद्धमेंस्थिरहोकर मरनेके योग्यहै ।२८। तेजमें अग्निके सदृश वेगमें वायु के समान क्रोध में यमराज की मूरत सिंह के समान दृढ़ शरीर महा पराक्रमी । २९ । और शरीर की लम्बाई में आठहाथ बड़ी भुजाओं से युक्त दृढ़वक्षस्थल वाला बड़ी कठिनता से विजय होने वाला महा अभिमानी शूर और बड़ा वीर है अपूर्व दर्शन । ३० । सब शूरवीरों के समूहों से युक्त मित्रों को निर्भय करनेवाला सदैव पांडवों का शत्रु दुर्य्योधन के मनोरथ सिद्ध करनेमें तत्पर । ३१ । तेरेसिवाय इन्द्र समेत सब देवताओं से भी मारने के अयोग्यहै यह मेरा मत है कि तुम उस सूतपुत्र को मारो । ३२ । सावधान रुधिर मांस के धारण करनेवाले मनुष्यों समेत युद्धाभिलाषी सब देवताओं सेभी यह महारथी कर्ण विजय करने के योग्य नहीं है । ३३ । उस दुरात्मा पाप से अहंकारी निर्दयी सदैव पांडवों से दुष्टबुद्धि रखनेवाले और पाण्डवों से निरर्थक विरोध करनेवाले कर्णको मारकर अब तुम अपने मनोरथ को सिद्धकरो । ३४ । अब तुम उस रथियोंमेंश्रेष्ठ अजेय सूतपुत्र को कालके वशमें

place and time. 26. I shall tell all about him in a few words: I think that Karan is equal to or even greater than you. You should fight with him very carefully. Like Agni in glory, like Vayu in velocity, like Yam in anger, like a lion in the strength of body, eight cubits high, of long arms and large breast, hard to conquer, proud warrior, of hahdsome face, making the friends fearless, enemy of the Pandavas and friend to Duryodhan, he is inconquerable even by gods. You alone can kill that son of Sut. 32. All the gods and cannibal rakshases cannot vanquish Karan. You will be successful in slaying ill natured Karan who bears enmity with Pandavas. You may now try

निष्कालिक कालवशं नयाद्य। सर्वावजानाति हि पाण्डुपुत्रानसौ दर्पात् सूतपुत्रो दुरात्मा ॥ ३५ ॥ आत्मानं मन्यते वीरं येन पापः सुयोधनः। तमद्य मूलं पापानां जहि सौतिं धनञ्जय ॥ ३६ ॥ खड्गजिह्वं धनुरास्यं शरदंष्ट्रं तरस्विनम्। दृप्तं पुरुषशार्दूलं जहि कर्णं धनञ्जय ॥ ३७ ॥ अहं त्वामनुजानामि वीर्येण च बलेन च। जहि कर्णं रणे शूरं मातङ्गमिव केशरी ॥ ३८ ॥ यस्य वीर्येण वीर्यं ते धार्त्तराष्ट्रोऽवमन्यते। तमद्य पार्थ संग्रामे कर्णं वैकर्त्तनं जहि ॥ ३९ ॥

इति श्री कर्णपर्वणि कृष्णार्जुनसंवादे द्विसप्ततितोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

करो और रथियों में श्रेष्ठ सूतपुत्रको मारकर धर्मराज में प्रीतिकरो। ३५। और जिसके द्वारा पापी दुर्य्योधन अपने को वीर मानता है हे अर्जुन अब उस पापों के मूल रूप सूतपुत्र को मारो। ३६। हे अर्जुन खड्गके समान जिह्वा धनुषके समान मुख और बाणरूप दाढ़ रखने वाले उस वेगवान् अहङ्कारी पुरुषोत्तम कर्णको मारो। ३७। मैं तुझको आज्ञादेता हूं कि युद्धमें उस शूरवीर कर्णको ऐसे मारो जिस प्रकार केसरी सिंह हाथी को मारताहै। ३८। दुर्य्योधन जिसके पराक्रम से तेरे पराक्रम को अपमान करता है हे अर्जुन उस कवच और कुण्डल से रहित कर्णको अब युद्धमें मारो। ३९।

to slay the son of Sut and thus please Yudhishthir, You will slay Karan on whose help Duryodhan relies and who is the root of all evil. His mouth is like a bow, his teeth like arrows and he is full of prowess and proud. I give you permission to slay brave Karan as a lion slays an elephant. Slay Karan who is now destitute of armour and ear rings and on account of whose help Duryodhan disregards your prowess" 39.



सञ्जय उवाच। ततः पुनरमेयात्मा केशवोऽर्जुनमब्रवीत् । कृतसङ्कल्पमायान्तं वधे कर्णस्य भारत ॥ १ ॥ अद्य सप्तदशाहानि वर्त्तमानस्य भारत । विनाशस्यातिघोरस्य नरवारणवाजिनाम् ॥ २ ॥ भूत्वा हि विपुला सेना तावकानां परैः सह । अन्योन्यं समरं प्राप्य किञ्चिच्छेषा विशाम्पते ॥ ३ ॥ भूत्वा हि कौरवाः पार्थ प्रभूतगजवाजिनः । त्वां वै शत्रुं समासाद्य विनष्टा रणमूर्द्धनि ॥ ४ ॥ एते तु पृथिवीपालाः सृञ्जयाश्च समागताः । त्वां समासाद्य दुर्द्धर्षं पाण्डवाश्च व्यवस्थिताः ॥ ५ ॥ पाञ्चालैः पाण्डवैर्मत्स्यैः कारूषैश्चेदिभिः सह । त्वया गुप्तैरमित्रघ्न कृतः शत्रुगणक्षयः ॥ ६ ॥ को हि शक्तो रणे जेतुं कौरवांस्तात सङ्गतान् । अन्यत्र पाण्डवान् युद्धे त्वया गुप्तान् महारथान् ॥ ७ ॥ शक्तस्त्वं हि रणे जेतुं ससुरासुरमानवान् । त्रीँल्लोकान् समरे युक्तान् किं पुनः कौरवं बलम् ॥ ८ ॥ भगदत्तञ्च राजानं कोऽन्यः शक्तस्त्वया विना

अध्याय ७३ ॥

हे भरतवंशी इसके पीछे बड़े बुद्धिमान् केशवजी कर्ण के मारने में संकल्प करके यात्रा करनेवाले अर्जुन से फिर बोले। १। हे भरतवंशी अब मनुष्य घोड़े हाथी आदिके घोर नाशके होने को सत्रह दिन व्यतीत हुये।२। हे राजा शत्रुओं के समूहों से आपके शूरवीरोंकी सेना बड़ीहोकर परस्पर युद्ध करती हुई कुछ बाकी रहगई है। ३। हे अर्जुन निश्चय करके कौरव लोग बहुत हाथी घोड़े वाले होकर तुझ शत्रुको पाकर सेनाके मुखपर नाशवान् होगये। ४। यह राजालोग और सृञ्जय इकट्ठे हैं और सब पांडव लोगभी तुझ अजेयको पाकर वर्त्तमान हैं। ५। तुझ से रक्षित शत्रुओं के मारनेवाले पांचाल पांडव मत्स्य और कारूष देशियोंने चंदेरी देशियों समेत शत्रुओं के समूहों का नाशकिया। ६। हे तात युद्धमें तुझसे रक्षित महारथी पांडवों के सिवाय कौन मनुष्य युद्धमें कौरवोंके विजय करने को समर्थ होसक्ता है। ७। तुम युद्धमें देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्धमें तत्पर होकर तीनोंलोकों के विजय करने को समर्थहो फिर कौरवी सेना के विजयकरने को क्यों न होगे। ८। हे पुरुषोत्तम तेरे बिना दूसरा कौन मनुष्य इन्द्रके समान

CHAPTER LXXIII

Sanjaya says that Vasudev, desirous of getting Karan killed, again said to Arjun, "The destruction of men, horses and elephants has continued for seventeen days. A small portion of both armies remains, numerous elephants and horses of the enemy have been slain by the army led by you. The united warriors of the Srinjayas and the Pandavas are ready to help you. 5. Protected by you, the Panchals, Pandavas, Matsyas, Karushas and Chanderis have destroyed the enemies. Who, except the Pandavas protected by you, could conquer the Kauravas? You can destroy the three worlds, it is not difficult for you to conquer the Kauravas. Who

जेतुं पुरुषशार्दूल योऽपि स्याद्वासवोपम ॥ ९ । तथेमां विपुलां सेनां गुप्तां पार्थ त्वयानघ न शेकुः पार्थिवाः सर्वे चक्षुर्भिरपि वीक्षितुम् ॥१०॥ तथैव सततं पार्थ रक्षिताभ्यां त्वया रणे । धृष्टद्युम्नशिखण्डिभ्यां भीष्मद्रोणौ निपातितौ ॥ ११ ॥ को हि शक्तो रणे पार्थ भारतानां महारथौ । भीष्मद्रोणौ युधा जेतुं शक्रतुल्यपराक्रमौ ॥ १२ ॥ को हि शान्तनवं भीष्मं द्रोणं वैकर्तनं कृपम् । द्रौणिञ्च सौमदत्तिञ्च कृतवर्माणमेव च ॥ १३ ॥ सैन्धवं मद्रराजानं राजानञ्च सुयोधनम् । वीरान् कृतास्त्रान् समरे सर्वानेवानिवर्त्तिनः ॥ १४ ॥ अक्षौहिणीपतीनुग्रान् संहतान् युद्धदुर्मदान् । त्वामृते पुरुषव्याघ्र जेतुं शक्तः पुमानिह ॥ १५ ॥ श्रेणयश्च बहुलाः क्षीणाः प्रकीर्णाश्वरथद्विपाः । नानाजनपदाश्चोग्राः क्षत्रियाणाममर्षिणाम् ॥ १६ ॥ गोपालसदासमीयानां वशातीनाञ्च भारत । प्राच्यानां वाटधानानां भोजानाञ्चाभिमानिनाम् ॥ १७ ॥ उदीर्णाश्वगजा सेना ब्रह्मक्ष

बल पराक्रमी भी राजाभगदत्त के विजय करनेको समर्थ है ।९। हे निष्पाप अर्जुन इसीप्रकार सब राजालोगभी तुझसे रक्षित इस बड़ी सेनाके देखनेको भी समर्थ नहीं हैं । १० । हे अर्जुन इसीप्रकार युद्धमें तुझसे सदैव रक्षित धृष्टद्युम्न और शिखण्डीके हाथों से द्रोणाचार्य और भीष्म मारेगये ।११। हे अर्जुन कौन मनुष्य युद्धमें इन्द्रके समान पराक्रमी और भरतवंशियों के महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य को लड़ाई में विजय करने को समर्थ था । १२ । हे पुरुषोत्तम इसलोक में तेरे सिवाय कौन पुरुष युद्ध में मुख न मोड़नेवाले महाअस्त्रज्ञ अक्षौहिणी सेनाओं के स्वामी अतिउग्र परस्पर मिलेहुये युद्ध में दुर्मद इन भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य सोमदत्त अश्वत्थामा कृतवर्म्मा जयद्रथ शल्य और राजा दुर्योधन के विजय करने को समर्थ है । १५ । बहुत से सेनाओं के समूह जो नाशहुये घोड़े रथ वा हाथी पराजित और मारेगये हे भरतवंशी क्रोधयुक्त नानादेशों के क्षत्री और गोपालदास, मीयान, वशाती पूर्व्वीय राजालोग, वाटधान, अभिमानी भोजवंशी और ब्राह्मण क्षत्रियों की बड़ी सेना घोड़े हाथी और नानादेशों के वासी यह

could conquer Bhagdatta of Indra like prowess ? No warrior can cope with the army protected by you. 10. Protected by you, Dhrishtadyumn and Shikhandi slew Drona and Bhishm. Who except you, could slay Bhishm and Drona in battle ? 12. Who except you could conquer the invincible warriors and leaders of armies like Bhishm, Drona, Kripa, Somdatta, Ashwathama, Kritvarma, Jayadrath, Shalya and Duryodhan ? 15. You and Bhim have slain numerous warriors, including the Gopals, Dases, Myans, Vashatis, Easterners, Vatudhans, proud Bhojes, Brahmans, kshatryas, and armies of horses and elephants of different climes. The dreadful warriors of Tushars, Yavans, Khash, Darv, Abhisar, Darad, powerful Mothars, Tangans, Andhraks, Pulinds, Kiratas, Mlechas, hillmen and

न्नस्य भारत । त्वां समासाद्य निधनं गता भीमञ्च भारत ॥ १८ ॥ उग्राश्च भीमकर्मा णस्तुखारा यवनाः खशाः । दार्वाभिसारा दरदाः शकाः रमठतङ्गनाः ॥ १९ ॥ अन्ध्र काश्च पुलिन्दाश्च किरातश्चोग्रविक्रमाः । म्लेच्छाश्च पार्वतीयाश्च सागरानूपवासिनः ॥ २० ॥ संरम्भिणो युद्धशौण्डा बलिनो दण्डपाणयः । एते सुयोधनस्यार्थे संरब्धाः कुरुभिः सह । न शक्या युधि निर्जेतुं त्वदन्येन परन्तप ॥ २१ ॥ धार्त्तराष्ट्रमुदग्रं हि व्यूढ दृष्ट्वा महद्बलम । यदि त्वं न भवेस्त्रोता प्रतीयात् को नु मानवः ॥ २२ ॥ तत् सागरमिवोद्धूतं रजसा संवृतं बलम । विदार्य्य पाण्डवैः क्रुद्धस्त्वया गुप्तैर्हत विभो ॥ २३ ॥ मागधानामधिपतिर्जयत्सेनो महाबलः । अद्य सप्तैव चाहानि, हतः संख्ये भिमन्युना ॥ २४ ॥ ततो दशसहस्राणि गजानां भीमकर्मणाम । जघान गदया भीमस्तस्य राज्ञः परिच्छदम ॥ २५ ॥ ततोऽन्येऽभिहता नागा रथाश्च शतशो बलात् ॥ २६ ॥ तदेवं समरे पार्थ वर्त्तमाने महाभये । भीमसेनं समासाद्य त्वाञ्च पाण्डव कौरवाः । सवाजि रथमातङ्गा मृत्युलोकमितो गताः ॥ २७ ॥ तथा सेनामुखे तत्र निहते पार्थ पाण्डवः ।

सब महा उग्ररूप तुमको और भीमसेन को पाकर नाशहोगये । १८ । महाउग्र भयकारीकर्म करनेवाले तुषार, यवन, खश, दार्व, अभिसार, दरद बड़ेसमर्थ मोठर तंगण, आंध्रक, पुलिन्द और उग्र पराक्रमी किरात म्लेच्छ, पहाड़ी, सागर और अनूप देशके रहनेवाले । २० । यह सब वेगवान् युद्धमें कुशल पराक्रमी हाथ में दंड रखनेवाले कौरवों समेत दुर्य्योधनके साथ क्रोधयुक्त । २१ । युद्धमेंतेरे सिवाय दूसरे से विजय करने के योग्यनहीं है शत्रुओं के तपानेवाले जिसके तुम रक्षक न हो वैसा कौनसा मनुष्य दुर्य्योधनकी उस बड़ी अलंकृत सेनाको देखकर सम्मुखहो सक्ताहै हेसमर्थ यह समुद्रके समान उठीहुई धूलसेयुक्त सेना तुझसे रक्षित क्रोधयुक्त पाण्डवों से चीरकर मारीगई ।२३। अब सात दिन हुये कि मगधदेशियों का राजा बड़ा पराक्रमी जयत्सेन युद्धमें अभिमन्युके हाथसे मारागया । २४ । उसके पीछे भीमसेन ने भयभीत कर्म करनेवाले दश हजार हाथियों को अपनी गदा से ही मारडाला । २५ । और जो कुछ राजाके घोड़े आदिथे उनको भी मारडाला इसके पीछे अपने पराक्रम सेही अन्य सैकड़ों हाथी और रथियों को मारा ।२६। हेपाण्डव अर्जुन इसरीति से उस बड़े भयकारी युद्धके वर्त्तमान होने पर कौरव लोग

---

the warriors, of Sagar and anup, armed with clubs, led by enraged Duryodhan, were invincible by any other warrior except you. What army, not protected by you, could face the large army of Duryodhan, rising like the ocean and enveloped in dust. 23. Seven days ago, Jayatsen, the great king of Magadh, was slain by Abhimanyu. Bhimsen slew ten thousand elephants with his mace. 25. He slew many horsemen, elephants and car-warriors by his prowess. During this dreadful war the Kaurav warriors, with their horses, cars and elephants, were destroyed by the Pandava's arrows. His piercing

भीमेन: प्राप्तवन्तुमाणि शरजालानि मारिष ॥ २८ ॥ शरैः प्रच्छाद्य निशममपतत् परमा
ऋविंस् ॥ २९ ॥ तस्य चापच्युतैर्घोरैः परदेहविदारणैः । पूर्णमाकाशमभवत् स्वर्णपुंखैः
रजिह्मगैः ॥ ३० ॥ सहस्राणि एकैकेन तु मुष्टिना । लक्षं नरद्विपान्
हत्वा समेतान् स महाबलान् ॥ ३१ ॥ गत्वा नृत्यन्वा तं गत्वा अप्रत्यक्षविषयात् ।
हित्वा नवगतीर्बुध्वाः स बाणानाहवेस्यजत् ॥ ३२ ॥ दिनानि दश भीष्मेण निघ्नता
तावकं बलम् । शून्याः कृता रथोपस्था हताश्च गजवाजिनः ॥ ३३ ॥ दर्शयित्वात्मनो
रूपं रुद्रोपेन्द्रसमं युधि । पाण्डवानामनीकानि निगृह्यासौ न्यपातयत् ॥ ३४ ॥ विनिघ्नन्
पृथिवीपालांश्चेदिपाञ्चालकेकयान् । अहनत् पाण्डवीं सेनां रथाश्वगजसंकुलाम् । मज्जन्त
मप्लवे मन्दमुज्जिहीर्षुः सुयोधनम् ॥ ३५ ॥ तथा चरन्तं समरे तपन्तमिव भास्करम् ।
पदातिकोटिसाहस्राः प्रवरायुधपाणयः । न शेकुः सृञ्जया द्रष्टुं तथैवान्ये महीक्षित

भीमसेन और तुमको पाकर घोड़े रथ और हाथियों समेत वहां से मर मरकर यमपुरको गये । २९ । हे अर्जुन इसी प्रकार वहां पांडव के हाथसे सेना मुखके मरनेपर परम अस्त्रने बाणों से ढककर सबका नाशकरादिया उसके धनुषसे निकले हुये शत्रुओं के शरीरों के चीरनेवाले सुनहरी पुंखयुक्त सीधेजानेवाले बाणों से आकाश व्याप्त होगया । ३० । वह भीमसेन एक २ घूंसे से हजारों रथियोंको मारताथा उसने बड़े पराक्रमी इकट्ठेहुये एकलाख मनुष्य और हाथियों को मारकर दशवीं गति से उन हाथी घोड़े और रथों को पाकर मारा दोनों से पूर्ण नवगतियों को त्यागकरके उसने युद्धमें बाणोंको छोड़ा । ३२ । और आपकी सेना को मारते हुये भीष्मजी ने दशदिन तक रथके आसन खाली करके घोड़े वा हाथियों को मारा । ३३ । इसने युद्ध में रुद्र और विष्णु के समान अपने रूपको दिखाकर और पांडवों की सेनाको आधीन करके मारा । ३४ । फिर चंदेरी पांचाल और केकय देशीय राजाओं को मारतेहुये बिना नौका के नदीमें डूबनेवाले अभागे दुर्य्योधन के निकालने के इच्छावान् भीष्म ने रथ हाथी और घोड़ों से व्याकुल पांडवी सेना को भस्मकिया । ३५ । युद्ध में उत्तम शस्त्र रखनेवाले हजारों करोड़ पदाती वा सृंजय वा अन्य राजालोग चलते हुये सूर्य्य के समान घूमनेवाले

arrows, fitted with gold feathers, straight going, covered the sky. With single blows, Bhim destroyed thousands of car-warriors. He a hundred thousand warriors and elephants and shot arrows in all directions. For ten days, Bhishm destroyed numerous warriors of yours. He was dreadful like Rudra or Vishnu when he destroyed the Pandav armies. killing the warriors of Chanderi, Panchal and Kaikaya and desirous of lifting up Duryodhan from the ocean of misery, Bhishm destroyed the elephants, cars and horses of the Pandavas. 35. Hundreds of foot-soldiers armed with good weapons, the Srinjayes and other warriors could not look at Bhishm who was

॥ ३६ ॥ विचरन्तं तथा तन्तु संग्रामे जितकाशिनम् । सर्वोद्योगेन महता पाण्डवाः सम
भिद्रुवन् ॥ ३७ ॥ स तु विद्राव्य समरे पाण्डवान् सृञ्जयानपि । एक एव रणे भीष्म
एकवीरत्वमागतः ॥ ३८ ॥ तं शिखण्डी समासाद्य त्वया गुप्तो महाव्रतम् । जघान
पुरुषव्याघ्र शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ३९ ॥ स एष पतितः शेते शरतल्पे पितामहः । त्वां
प्राप्य पुरुषव्याघ्र वृत्रः प्राप्येव वासवम् ॥ ४० ॥ द्रोण पञ्च दिनान्युग्रो विधम्य रिपु
वाहिनीम् । कृत्वा व्यूहमभेद्यञ्च पातयित्वा महारथान् ॥ ४१ ॥ जयद्रथस्य समरे कृत्वा
रक्षां महारथः । अन्तकप्रतिमश्चोग्रो रात्रियुद्धेऽदहत् प्रजाः ॥ ४२ ॥ दग्ध्वा योधाञ्छरैर्वीरो
भारद्वाजः प्रतापवान् । धृष्टद्युम्नं समासाद्य सगतः परमां गतिम् ॥ ४३ ॥ यदि चाद्य
भवान् युद्धे सूतपुत्रमुखान्रथान् । नावारयिष्यत् संग्रामे न स्म द्रोणो व्यनङ्क्षत ॥ ४४ ॥
भवता तु बलं सर्वं धार्तराष्ट्रस्य वारितम् । ततो द्रोणो हतो युद्धे पार्षतेन धनञ्जय
॥ ४५ ॥ क एवान्यो रणे कुर्य्यात्त्वदन्यः क्षत्रियो युधि । यादृशं ते कृतं पार्थ जयद्रथ

युद्ध में विजय से शोभायमान जिन भीष्मजी के देखने को भी समर्थ नहीं हुये । ३६ । ऐसा प्रतापी भीष्म भी बड़े उपाय से पांडवों के सन्मुखगया वहां अकेले भीष्मने पांडव और सृंजियों को भगाकर सब वीरों में प्रतिष्ठा को पाया । ३८ । फिर तुमसे रक्षित शिखण्डीने उस महाव्रतनाम भीष्म को पाकर शुभ ग्रन्थीवाले वाणों से मारा । ३९ । वह भीष्मपितामह तुझ पुरुषोत्तम को पाकर गिराहुआशर शय्यापर ऐसे सोताहै जैसे कि इन्द्रको पाकर वृत्रासुर सोयाथा । ४० । उग्ररूप भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने पांचदिन तक शत्रुओं की सेनाको छिन्न भिन्न करके अभेद्य व्यूहको अलंकृत करके बड़े बड़े महारथियों को गिराते हुये युद्धमें जयद्रथकी रक्षा करके उस उग्ररूप ने यमराज के समान रूप धारण करके रात्रिके युद्ध में प्रजाको भस्मकर दिया । ४२ । फिर शूरवीरों को बाणोंसे मारकर धृष्टद्युम्न को पाकर परमगति को पाया । ४३ । अब जो तुम कर्णआदि रथियों को नहटाते तो द्रोणाचार्य्य युद्धमें न मारेजाते । ४४ । तुमने दुर्य्योधन की सब सेना रोकी उस कारणसे द्रोणाचार्य्य युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये । ४५ । हे अर्जुन तेरे

glorious like the Sun. He tried his best to slay the Pandavas and Srinjayas, routed them again and again, and was respected by the warriors. Protected by you, Shikhandi encountered Bhishm and slew him. Slain by you, he lies on the bed of arrows like Vritrasur slain by Indra. Having destroyed the foes for five days, Drona who arrayed the army into an impregnable array, protected Jayadrath and slew our warriors like Yam. 42 Having slain the warriors with his arrows, he at last met Dhrishtadyumn and died. Drona could not be slain in battle, if you had not checked Karan and other warriors. You checked all the army of Duryodhan and therefore Drona was slain by Dhrishtadyumn. 45 Who except you could do

वधं प्रति ॥ ४६ ॥ निवार्य्य सेनां महतीं हत्वा शूरांश्च पार्थिवान् । निहतः सैन्धवो राजा त्वयाश्रयलतेजसा ॥ ४७ ॥ आश्चर्य्यं सिन्धुराजस्य वधं जानन्ति पार्थिवाः । अनाश्चर्यं हि तत्वत्तस्त्वं हि पार्थं महारथः ॥ ४८ ॥ त्वां हि प्राप्य रणे क्षत्रमेकाहादिति भारत । नश्यमानमहं युक्तं मन्ये यमिति मे मतिः ॥ ४९ ॥ एवं पार्थ चमूर्घोरा धार्त्तराष्टस्य संयुगे । हतसर्वं रथवीराहि भीष्मद्रोणौ यदाहतौ ॥ ५० ॥ शीर्णप्रवरयोधाद्य हतवाजिरथद्विपा । हीना सूर्य्येन्दु नक्षत्रैर्द्यौरिवाभाति भारती ॥ ५१ ॥ विध्वस्ता हि रणे पार्थ सेनेयं भीमविक्रम । आसुरीव पुरा सेना शक्रस्येव पराक्रमैः ॥ ५२ ॥ तेषां हतावशिष्टास्तु सन्ति पञ्च महारथाः अश्वत्थामा कृतवर्मा कर्णो मद्राधिपः कृपः ॥ ५३ ॥ तांस्त्वमद्य नरव्याघ्र हत्वापञ्च महारथान् । हतामित्रः प्रयच्छोर्वीं राज्ञे सद्वीपपत्तनाम्

सिवाय दूसरा कौन सा क्षत्री ऐसे कर्मको करसक्ताहै जैसा कि तुमने जयद्रथ के मारने में कियाथा । ४६ । अर्थात् बड़ीभारी सेना को रोककर बड़े बड़े शूरवीरों को मारकर राजा जयद्रथ को तूने अपने तेज और बलसे मारा । ४७ । सब राजा लोग जयद्रथके मारने को आश्चर्य्य और अद्भुत मानतेहैं हेअर्ज्जुन तुम महारथी हो इससे उसका मरना आश्चर्य्य युक्त नहीं है । ४८ । हे भरतवंशी मैं तुझको युद्धमें पाकर एकही दिन में क्षत्रियों के समूहों का नाशहोना मानता हूं यह मेरा पूर्ण विश्वास है । ४९ । सो हे अर्ज्जुन यह दुर्य्योधन की घोर सेना युद्धमें सब शूरवीरों समेत मृतक रूप है जब कि भीष्म और द्रोणाचार्य सरीखे मारेगये । ५० । वह भरतवंशियोंकी सेना जिसके अत्यन्त शूरवीर मारेगये और घोड़े रथ और हाथी भी मारेगये अब ऐसी दिखाई देती है जैसे कि सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से रहित आकाश होता है । ५१ । हे भयानक पराक्रमी अर्ज्जुन यह सेना युद्धमें ऐसे नष्ट होगई जैसे कि पूर्व्व समयमें इन्द्रके पराक्रमसे असुरोंकी सेना नाश होगईथी ५२ इस सेनामें मरनेसे बाकी बचेहुये पांचमहारथी हैं अश्वत्थामा कृतवर्मा, कर्ण, शल्य, कृपाचार्य्य । ५३ । हे नरोत्तम अब तुम इनपांचों महारथियों को मारकर शत्रुओं से रहित जानकर द्वीप, नगर, आकाश तल, पाताल, पर्व्वत और महावनों समेत

such deeds as you did in slaying Jayadrath? Having checked the lage army and slain great warriors, you slew Jayadath. All the kings wondered at the strange death of Jayadrath. You are a great warrior and therefore nothing is strange for you to do I believe that you can slay all the warriors in a day. I take up all the warriors for dead, when Bhishm and Drona are slain. 50. The army of the Bharats, destitute of warriors, horses, cars and elephants, looks like the sky without the moon and stars. The army has been destroyed like that of asurs destroyed by Indra in the days of yore. Only five of their great warriors, remain, namely, Ashwathama, Kritvarma, Karan, Shalya and Kripacharya. Having slain these five, you may

पांचालाः कथञ्चित्स्युः पराङ्मुखाः । न हि मृत्युं महेष्वासा गणयन्ति महारणे ॥ ९९ ॥
य एकः पाण्डवीं सेनां शरौघैः समवेष्टयत् । तं समासाद्य पाञ्चाला भीष्मं
नासन् पराङ्मुखाः ॥ १०० ॥ तथा ज्वलन्तमस्त्राग्निं गुरुं सर्वधनुष्मताम् ॥
निर्दहन्तञ्च समरे दुर्द्धर्षं द्रोणमञ्जसा ॥ १०१ ॥ ते नित्यमुदिता जेतुं
मृधे शत्रून् नरिन्दम । न जात्वाधिरथेर्भीताः पाञ्चालाः स्युः पराङ्मुखाः ॥ १०२ ॥
तेषामापततां शूरः पाञ्चालानां तरस्विनाम् । आदत्तेऽसून् शरैः कर्णः पतङ्गानामिवानलः
॥ १०३ ॥ तांस्तस्याभिमुखान् वीरान् मित्रार्थे त्यक्तजीवितान् । क्षयं नयति राधेयः
पांचालाञ्छतशो रणे ॥ १०४ ॥ तन्भारत महेष्वासानगाधे मज्जतोऽप्लवे । कर्णार्णवे
प्लवो भूत्वा पाञ्चालांस्त्रातुमर्हसि ॥ १०५ ॥ अस्त्रं हि रामात् कर्णेन भार्गवादृषिसत्त
मात् । यदुपात्तं महाघोरं तस्य रूपमुदीर्यते ॥ १०६ ॥ तापनं सर्वसैन्यानां घोररूपं

मोड़ते और बड़े युद्धमें मृत्युकोभी नहीं गिनते हैं । ९९ । जिस अकेले ने बाणों के समूहों से पाण्डवी सेनाको ढकदिया ऐसे भीष्मजी कोभी पाकर वह पांचाल देशी नहीं मुड़े । १०० । हे शत्रुओं के विजय करनेवाले इसीप्रकार युद्ध में सदैव अग्निके समान प्रकाशित शस्त्ररूपी अग्नि रखनेवाले सब धनुषधारियों के गुरू युद्ध में अपने तेजसेही भस्म करनेवाले अजेय द्रोणाचार्य्य को । १०१ । और सब शत्रुओं के विजय करने में प्रवृत्तहुये पांचालदेशी कभी कर्ण से भयभीत और मुख मोड़नेवाले नहीं हुये हैं । १०२ । उन शूरवीर पांचालों के प्राणों को कर्ण ने बाणों के द्वारा ऐसे हरलिया जैसे कि पतंगों के प्राणों को अग्नि हरलेताहै । १०३ । युद्धमें इसरीति से सम्मुख अपने मित्रके निमित्त जीवनका त्यागनेवाले कर्ण उन हजारों शूरवीर पांचालों को नाश कररहाहै । १०४ । सो तुम हे भरतवंशी नौकारूप होकर उस कर्ण रूपी नौका रहित अथाह समुद्रमें डूबतेहुये बड़े धनुषधारी पांचालों की रक्षा करने के योग्यहो । १०५ । कर्ण ने जो महाघोर अस्त्र महात्मा भार्गव परशुरामजी से लियाहै उसका रूप प्रसिद्धयुक्त है । १०६ । वह सबसेनाओं

plaintive cries of the Panchals wounded by Karan's arrows. The brave Panchals never turn back from any danger and are not afraid of death in any form. They were not afraid of Bhishm who alone covered the Pandav army with his arrows. 100. The Panchals were never so much afraid of Dronacharya (the preceptor of all the archers, burning all in his glory, and conquering the warriors) as they are of Karan. He has destroyed the Panchals as fire destroys insects. He has slain thousands of the Panchal warriors in battle. You must protect them like a boat from drowning in a bottomless ocean. Karan possesses a strange weapon given him by Parashuram, which has spread its glory over all the army. The arrows shot by Karan are

सुदारुणम् । स्वनावृत्य महासेनां ज्वलितं स्वेन तेजसा ॥१०७॥ एते चरन्ति संग्रामे कर्णचापच्युताः शराः । भ्रमराणामिव व्राताम्ता पयन्तिस्म तावकान्॥ १०८॥ एते द्रवन्ति पाञ्चाला दिक्षु सर्वासु भारत । कर्णाह्वे समरे प्राप्य दुर्निवार्य मनात्मभिः ॥ १०९॥ एष भीमो दृढक्रोधो वृत्तः पार्थ समन्ततः । सृञ्जयैर्योधयन् कर्णं पीड्यते निशितैः शरैः ॥ ११०॥ पाण्डवान् सृञ्जयांश्चैव पाञ्चालांश्चैव भारत । हन्यादुपेक्षितः कर्णो रोगो देहमिवागतः ॥ १११ ॥ नान्यं त्वत्तो हि पश्यामि योधं यौधिष्ठिरे वले । यः समासाद्य राधेयं स्वस्तिमाना व्रजेद्गृहं ॥ ११२॥ तमद्य निशितैर्वाणैर्विनिहत्य नरर्षभ । यथाप्रतिज्ञं पार्थ त्वं कृत्वा कीर्तिमवाप्नुहि ॥ ११३॥ त्वं हि सक्तो रणे जेतुं स कर्णानपि कौरवान् । नान्योयुधि युधां श्रेष्ठ सत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ ११४॥ एतत्

का तपानेवाला घोररूप बड़ा भयानक बड़ी सेनाको ढककर अपने तेजसे प्रकाश मानहै । १०७ । कर्ण के धनुषसे निकलेहुये यह वाण युद्धमें घूमते हैं और भ्रमरों के समूहों के समान उन वाणोंने आपके पुत्रों को तपायाहै । १०८ । हे भरतवंशी यह पाञ्चाल युद्ध में अज्ञानी मनुष्यों से कष्ट से हटाने के योग्य कर्ण के शस्त्र को पाकर सब दिशाओंको भागते हैं । १०९ । हे अर्जुन कठिन क्रोध में भरा चारों ओरको राजा और सृञ्जियों से घिराहुआ यह भीमसेन कर्णसे युद्धकरताहुआ उसके तीक्ष्णधारवाले वाणों से पीड़ामान होता है । ११० । हे भरतवंशी विचार न किया हुआ कर्ण पाण्डव सृञ्जी और पाञ्चालों को ऐसे माररहा है जैसे कि उत्पन्नहुआ रोग शरीरको मारडालता है । १११ । मैं युधिष्ठिर की सेना भर में तेरे सिवाय किसी दूसरे शूरवीर को नहीं देखता हूं जो कर्णके सम्मुख होकर जीता हुआ अपने घरको आवे । ११२ । हे नरोत्तम अर्जुन अब तुम अपने तीक्ष्णवाणों से उसको मारकर अपनी प्रतिज्ञा के समान कर्मको करके कीर्तिको पावो । ११३ । हे शूरवीरोंमें श्रेष्ठ तुमहीं युद्धमें कर्णसमेत कौरवोंके विजयकरनेको समर्थ हो दूसराकोई नहीं है यह तुमसे मैं सत्यसत्य कहताहूं । ११४ । हे नरोत्तम अर्जुन उस बड़े कर्मको करके और उस महारथी कर्णको मारकर सफल अस्त्रयुक्त

spread over all the field of battle like bees and are giving trouble to your warriors. The Panchals, unflinching warriors on other occasions, are running away from the presence of Karan. Bhimsen, full of rage, surrounded by the Srinjayas and Panchals, is fighting with Karan. 110. Karan slays the Pandavas, the Srinjayas and the Panchals as a sickness destroys the body. I see none among our warriors fit to oppose Karan, without loss to his own life. You should now fulfil your promise by slaying Karan and should gain fame. You alone can vanquish Karan and the Kauravas, and this is the truth. You must slay Karan to obtain the fruit of your great skill in archery and to be

॥ १४ ॥ अद्य कुन्तीसुतो राजा हते सूतसुते मया । सुप्रहृष्टमनाः प्रीतिश्चिरं सुखमवाप्स्यति ॥ १५ ॥ अद्य चाहमनाधृष्यं केशवाप्रतिमं शरम् । उत्स्रक्ष्यामीह यः कर्णं जीविताद्भ्रंशयिष्यति ॥ १६ ॥ यस्यैतद्व्रतं मह्यं वधे किल दुरात्मनः । पादौ न धावये तावत् यावद्धन्यां न फाल्गुनम् ॥ १७ ॥ मृषा कृत्वा व्रतं तस्य पापस्य मधुसूदन । पातयिष्ये रथात् कायं शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ १८ ॥ योऽसौ रणे नरं नान्यं पृथिव्यामभिमन्यते । तस्याद्य सूतपुत्रस्य भूमिः पास्यति शोणितम् ॥ १९ ॥ अपतिरसि कृष्णेति सूतपुत्रो यदब्रवीत् । धृतराष्ट्रमते कर्णः श्लाघमानः स्वकान्गुणान् ॥ २० ॥ अनृतं तत्करिष्यन्ति मामका निशिताः शराः । आशीविषा इव क्रुद्धास्तस्य पास्यन्ति शोणितम् ॥ २१ ॥ मया हस्तवता मुक्ता नाराचा वैद्युतत्विषः । गाण्डीवसृष्टा दास्यन्ति कर्णस्य परमां गतिम् ॥ २२ ॥ अद्य तप्स्यति राधेयः पांचालीं यत्तदाब्रवीत् । सभामध्ये वचः क्रूरं कुत्सयन् पाण्डवान् प्रति ॥ २३ ॥ ये

राजा युधिष्ठिर के कठिन जागरण को दूरकरूंगा । १४ । अब मेरे हाथसे कर्णके मरने पर राजा युधिष्ठिर प्रसन्न चित्त होकर बहुत कालतक आनन्दों को पावेगा । १५ । हे केशवजी अब मैं ऐसे अजय और अनुपम बाणोंको छोडुंगा जोकि कर्णको जीवन से नष्टकरके गिरावेंगे । १६ । निश्चय करके जिस दुरात्माका यह व्रत मेरे मारने में है कि जबतक अर्जुनको न मारलूंगा तबतक अपने चरणों से न चलूंगा । १७ । हे मधुसूदनजी उस पापी के व्रतको मिथ्या करके ग्रन्थी वाले बाणों से उसको रथसे गिराऊंगा । १८ । जो यह पृथ्वीपर अपने समान दूसरेको नहीं मानता है इसी से इस सूतपुत्र के रुधिरको पृथ्वी पानकरेगी । १९ । हे कृष्णा तू विना पतिकी है इस प्रकार से अपनी प्रशंसा करते हुये कर्णने जो धृतराष्ट्रके मत से कहा है उसको विषैले सर्पकी समान तीक्ष्णधार वाले मेरे बाण मिथ्या करके उसके रुधिरको पियेंगे । २१ । मुझ हस्तलाघवी से छोड़े गाण्डीव धनुषसे निकले हुये बिजलीके समान प्रकाशमान नाराच कर्णको परमगति देंगे । २२ । अबवह कर्ण महादुःखी होगा जिसने पांडवों के निन्दक कौरवोंकी सभामें कुत्सितवचनोंको कहाहै । २३ । निश्चय करके जो वहां मिथ्यावादी घोर हास्य करनवालेथे वहसव

happy for many days to come 15. I shall discharge matchlessly effective arrows which will deprive Karan of life. Surely, the ill-natured one who has made a vow that he would not walk on the field of battle without killing me, shall fall by my arrows and his vow annulled. The earth will drink the blood of him who thinks there is no warrior like him on the face of the earth. My sharp edged arrows, like serpents, will drink the blood of him who said to Draupadi that she was a widow. 21. My arrows, dexterously shot from Gandiv, bright like lightning, will bring about Karan's fall. Karan who said harsh words in the court of the Kauravas, shall fall in trouble. Those

ये चैव तिलास्तत्र भविताराऽद्य ते तिलाः। हते वैकर्त्तने कर्णे सूतपुत्रे दुरात्मनि॥२४॥
अहं यः पाण्डुपुत्रेभ्यस्त्रातेति यदब्रवीत्। धृतराष्ट्रसुतान् कर्णः श्लाघमानोऽत्मनो गुणान्॥
अनृतं तत् करिष्यन्ति मामका निशिताः शराः ॥ २५ ॥ हन्ताहं पाण्डवान् सर्वान्
स पुत्रानिति योऽब्रवीत्। तमद्य कर्णं हन्तास्मि मिषतां सर्वधन्विनाम् ॥ २६ ॥ तस्य
वीर्य्ये समाश्वस्य धार्त्तराष्ट्रो महामनाः। अवामन्यत दुर्बुद्धिर्नित्यमस्मान् दुरात्मवान्
तमद्य कर्णं राधेयं हन्तास्मि मधुसूदन ॥ २७ ॥ अद्य कर्णे हते कृष्ण धार्त्तराष्ट्राः
सराजकाः। विद्रवन्तु दिशो भीताः सिंहत्रस्ता मृगा इव ॥ २८ ॥ अद्य दुर्योधनो
राजा आत्मानमनुशोचताम्। हते कर्णे मया संख्ये सपुत्रे ससुहृज्जने ॥ २९ ॥ अद्य
कर्णं हतं दृष्ट्वा धार्त्तराष्ट्रोऽत्यमर्षणः। जानातु मां रणे कृष्ण प्रवरं सर्वधन्विनाम्
॥ ३० ॥ सपुत्रपौत्रं सामात्यं सभृत्यञ्च निराशयम्। अद्य राज्ये करिष्यामि धृतराष्ट्रं
जनेश्वरम् ॥ ३१ ॥ अद्य कर्णस्य चक्राङ्गाः क्रव्यादाश्च पृथग्विधाः। शरैश्छिन्नानि
गात्राणि विहरिष्यन्ति केशव ॥ ३२ ॥ अद्य राधासुतस्याहं संग्रामे मधुसूदन। शिरे

लोगभी अवइस सूतपुत्रके मरनेपर शोक युक्त होंगे अपनी प्रशंसा करनेवाले कर्ण
ने धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे जो यह वचन कहाहै कि मैं तुमको पाण्डवों से बचाऊंगा
उसके उसवचनको भी मेरे तीक्ष्णधारवालेवाण मिथ्या करेंगे, और जिसने यहभी
कहाहै कि मैं बेटों समेत सब पांडवोंको मारूंगा उस कर्णको अब मैं सब धनुष
धारियोंके देखतेहुयेही मारूंगा। २६। बड़साहसी दुरात्मा दुर्बुद्धी दुर्योधन ने जिस
के पराक्रमका आश्रय लेकर सदैव हमारा अपमान किया है श्रीकृष्णजी अब कर्ण
के मरनेपर भयभीत धृतराष्ट्रके पुत्र राजाओं समेत दिशाओं को ऐसे भागेंगे जैसे
कि सिंह से भयभीत होकर मृगभागते हैं। २८। अब युद्धमें मेरे हाथसे पुत्र मित्र
आदि समेत कर्ण के मरनेपर राजा दुर्योधन अपनेको शोच। २९। हे श्रीकृष्ण
जी अब अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन कर्णको मृतक देखकर मुझको सब धनुष
धारियों में श्रेष्ठ जानेगा। ३०। मैं राजा धृतराष्ट्र को पुत्र पौत्र सुहृद्‌मंत्री राज्य
और सेवकों से निराश। ३१। हे केशव जी अब अनेकप्रकारके मांसभक्षी चक्रांग
नामजीव मेरे बाणों से टूटेहुये कर्णके अंगों को भक्षण करेंगे। ३२। हे मधुसूदन

false men who laughed at us then, will be grieved at the death of Karan who had promised to save the sons of Dhritrashtra from the Pandavas. I shall prove his words false with my arrows. I shall, in the presence of all the archers, slay Karan who said that he would destroy the Pandavas and their sons. Like deer terrified of a lion, the sons of Dhrishtrashtra will run away in all directions at the fall of Karan on account of whom ill-natured Duryodhan has insulted us. 28. Duryodhan will be sorrowful at the fall of Karan and his son by my arrows and shall believe me to be the best of archers. 30. I shall make king Dhritrashtra lose all hope of sons, grandsons, friends,

छेत्स्यामि कर्णस्य मिषतां सर्वधन्विनाम् ॥ ३३ ॥ अद्यतीक्ष्णैर्विपाठैश्च क्षुरैश्च मधुसूदन । रणे छेत्स्यामि गात्राणि राधेयस्य दुरात्मनः ॥ ३४ ॥ अद्य राजा महत्कृच्छ्रं सन्त्यक्ष्यति युधिष्ठिरः । सन्तापं मानसं दीर्घं संभृतमात्मनः ॥ ३५ ॥ अद्य केशव राधेयमहं हत्वा सबान्धवम् । नन्दयिष्यामि राजानं धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ ३६ ॥ अद्याहमनुगान् कृष्ण कर्णस्य कृपणान् युधि । हन्ता ज्वलनसङ्काशैः शरैः सर्पविषोपमैः ॥ ३७ ॥ अद्याहं हेमकवचैर्गार्ध्रपत्रै रजिह्मगैः । संस्तरिष्यामि गोविन्द वसुधां वसुधाधिपैः ॥ ३८ ॥ अद्याभिमन्योः शत्रूणां सर्वेषां मधुसूदन । प्रमथिष्यामि गात्राणि शिरांसि च शितैः शरैः ॥ ३९ ॥ अद्य निर्धार्तराष्ट्रां च भ्रात्रे दास्यामि मेदिनीम् । निरर्जुनां वा पृथिवीं केशवानुचरिष्यसि ॥ ४० ॥ अद्याहमनृणः कृष्ण भविष्यामि धनुर्भृताम् । क्रोधस्य च कुरूणां च शराणां गाण्डिवस्य च ॥ ४१ ॥ अद्य दुःखमहं मोक्ष्ये त्रयोदशसमार्जितम् । हत्वा कर्णं रणे कृष्ण शम्बरं मघवानिव ॥ ४२ ॥ अद्य

जी अवमैं युद्धमें राधाके वेटे कर्णके शिरको सब धनुषधारियों देखतेहुयेही काटूंगा । ३३ । और अब तीक्ष्ण विपाठ क्षुरप्रनामवाणों से दुरात्मा राधेय के गात्रों को रणमें छेदूंगा । ३४ । तबराजा युधिष्ठिर बहुत कालसे धारणकिये हुये अपने चित्त के शोकको दूरकरेगा । ३५ । हे केशव अब मैं बांधवोंसमेत राधाकेपुत्र को मारकर धर्म्मपुत्र राजायुधिष्ठिरको अत्यन्त प्रसन्न करूंगा । ३६ । और कर्ण के दुःखी सब सहायकोंको अग्निके समान प्रकाशमान सर्पके समानवाणोंसे मारकर सुवर्ण जटित गृध्रपक्षयुक्त सीधेचलनेवाले वाणोंसे पृथ्वीको राजाओं समेत ढकूंगा । ३८ । और अभिमन्युके सबशत्रुओंके अंग और शिरोंको अपने तीक्ष्णवाणों से मथन करूंगा । ३९ । और धृतराष्ट्रके पुत्रों से रहित इसपृथ्वी कोअपने बड़ेभाईको दूंगा अथवा हे केशवजी आप अर्जुनसे रहित पृथ्वीपर घूमोगे । ४० । हे यदुनाथ अबमें धनुषधारियोंका वा कौरवों के क्रोध वा गांडीव धनुषके वाणों से उऋण होऊंगा । ४१ । अबमें तेरहवर्षके इकट्ठे कियेहुये दुःखोंको त्यागूंगा युद्धमेंकर्णको मारकर जैसे कि इन्द्रने संवर दैत्यको माराथा । ४२ । उसीप्रकार हेकेशवजी अब

---

advisers, kingdom and attendants. The birds of prey will eat the flesh of Karan, whose head I will cut off with my arrows in the presence of all the warriors. With my sharp arrows, I shall cut off the parts of his body. I shall relieve Yudhishthir of his long standing grief. 35. I shall please Yudhishthir by slaying the son of Radha and his kin. I shall slay Karan's unhappy allies with my sharp arrows bright like fire and fatal like serpents. With my arrows I shall slay the enemies of Abhimanyu. Having slain the sons of Dhritrashtra, I shall give the kingdom to Yudhishthir, or, you will lose Arjun, O Keshav. With the arrows shot from Gandiv, I shall remove the rage of the Kaurav warriors. The thirteen years of

कर्णे हते युद्धे सोमकानां महारथाः । कृतं कार्यंच मन्यन्तां मित्रकार्येप्सवो युधि ॥ ४३ ॥ न जाने च कथं प्रीतिः शैनेयस्याद्य माधव । भविष्यति हते कर्णे मयि चापि जयाधिके ॥ ४४ ॥ अहं हत्वा रणे कर्णं पुत्रञ्चास्य महारथम् । प्रीतिं दास्यामि भीमस्य यमयोः सात्यकस्य च ॥ ४५ ॥ धृष्टद्युम्नशिखण्डिभ्यां पांचालानाञ्च माधव । अद्यानृण्यं गमिष्यामि हत्वा कर्णं महाहवे ॥ ४६ ॥ अद्य पश्यन्तु संग्रामे धनञ्जयमर्षणम् । युध्यन्तं कौरवान् सङ्ख्ये पातयन्तञ्च सूतजम् ॥ ४७ ॥ भवत्सकाशे वक्ष्ये च पुनरेवात्मसंस्तवम् ॥ ४८ ॥ धनुर्वेदे मत्समो नास्ति लोके पराक्रमे वा मम कोऽस्ति तुल्यः । को वाप्यन्यो मत्समोऽस्ति क्षमायांस्तथा क्रोधे सदृशोऽन्यो न मेऽस्ति ॥ अहं धनुष्मानसुरान् सुरांश्च सर्वाणि भूतानि च सङ्गतानि स्वबाहुवीर्याद्गमये पराभवं मत्पौरुषं विद्धिपरं परेभ्यः ॥ ५० ॥ शरार्चिषा गाण्डिवेनाहमेकः सर्वान् कुरून् बाह्लिकांश्चाभिपत्य।हिमात्यये कक्षगतो यथाग्निस्तथा दहेयं

युद्धमें कर्ण के मरनेपर युद्धमें अभीष्ट चाहनेवाले मित्र सोमकों के महारथीकारको प्राप्तहुआ मानो । ४३ । हे माधवजी अब मेरी और सात्यकि की कैसी प्रीति होगी और कर्ण के मरने व मेरी विजय होनेपर कैसी प्रसन्नताहोगी । ४४ । मैं युद्धमें उसके महारथी पुत्रसमेत कर्णको मारकर भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकि को प्रसन्नकरूंगा । ४५ । हे माधवजी अबमैं युद्धमें कर्ण को मारकर धृष्टद्युम्न शिखण्डी और पांचालोंकी अऋणताको पाऊंगा । ४६ । अब युद्धमें क्रोधयुक्त कौरवों से युद्धकरनेवाले और युद्धमें कर्ण के मारनेवाले अर्जुन को देखो । ४७ । इसके पीछे मैं अपनी प्रशंसा आपके सम्मुख करूंगा । ४८ । इस पृथ्वीपर धनुर्वेद विद्यामें आपमेरे समान कोई नहीं है और पराक्रम में भी मेरे समान कौन होसक्ता है न मेरे समान कोई क्षमावानहै और इसीप्रकार क्रोधमें भी मेरे समान नहीं हूं । ४९ । मैं धनुषधारी अपने भुजाओं के बलसे इकट्ठेहोनेवाले देवता असुर और मनुष्यों आदिजीवोंको पराजय करसक्ताहूं मेरे पराक्रम और पुरुषार्थको अद्वितीयजानो । ५० । मैं अकेलाही बाणरूप अग्नि रखनेवाले गांडीव धनुषसे सब कौरव और बाह्लीकों को विजयकरके बड़े हटसे समूहोंसमेत इसरीति

misery will come to an end when I shall slay Karan as Indra had slain Samvar. With the fall of Karan, I shall please the Somaks. How much shall I please Satyaki by slaying Karan ! I shall please Bhim, Nakul, Sahadev and Satyaki by slaying Karan and his brave son. 45. I shall satisfy the debt of Dhrishtadyumn, and Shikhandi of Panchal by slaying Karan. The enraged Kaurav warriors will now see Arjun the slayer of Karan. I shall be able to say to you that there is no archer equal to me on the face of the earth, that in prowess, mercy and anger I am my own equal and that I can destroy the assembled gods, asurs and men. 50. Having conquered the Kauravas and

श्रुतश्रवा द्रोणसुतेन् सार्द्धयुधामन्युश्चित्रसेनेन सार्द्धम् ॥ ८ ॥ कर्णस्य पुत्रन्तु रथी सुषेणं समागतं सृञ्जयश्चोत्तमौजाः । गान्धारराजं सहदेवः क्षुधार्त्तोमहर्षभं सिंह इवाऽभ्यधावत् ॥ ९ ॥ शतानीको नाकुलिः कर्णपुत्रं युयुधानो वृषसेनं शरौघैः । समार्पयत् कर्णपुत्रश्च शूरः पाञ्चालेयं शरवर्षेरनेकैः ॥ १० ॥ रथर्षभः कृतवर्मा समार्च्छन्माद्रीपुत्रो नकुलश्चित्रयोधी । पांचालानामधिपो याज्ञसेनिः सेनापतिं कर्ण मार्च्छत् ससैन्यम् ॥ ११ ॥ दुःशासनो भारत भारती च संशप्तकानां पृतना समृद्धा । भीमं रणे शस्त्रभृतां वरिष्ठं भीमं समार्च्छत्तमसह्यवेगम् ॥ १२ ॥ कर्णात्मजं तत्र जघान शूरस्तथाच्छिनच्चोत्तमौजाः प्रसह्य । तस्योत्तमाङ्गं निपपात भूमौ निनादयद्वां निनदेन खञ्च ॥ १३ ॥ सुषेणशीर्षं पतितं पृथिव्यां विलोक्य कर्णोऽथ तदार्त्तरूपः । क्रोधाद्धयांस्तस्य रथं ध्वजञ्च बाणैः सुधारैर्निशितैरछन्तत् ॥ १४॥

शिखण्डी युद्ध में सम्मुख हुये सात्यकि दुर्य्योधन के सम्मुखगया श्रुत श्रवा अश्वत्थामा के साथ और युधामन्यु चित्रसेन के साथ में युद्ध करनेलगा ।८। फिर रथी सृंजय और उत्तमौजा कर्ण के पुत्र सुषेण के सम्मुख हुआ और सहदेव राजागांधार के सम्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि क्षुधासे पीड़ित सिंहबड़े बैलकी ओर दौड़ताहै । ९ । नकुलके पुत्र शतानीकने कर्ण के पुत्रको सात्यकिने वृषसेन को बाणोंके समूहों से घायलकिया और बड़े शूरवीर कर्ण के पुत्रने बाणोंकी अतिवर्षा से पांचाल देशी को घायलकिया । १० । रथियों में श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले माद्रीनन्दन नकुलने कृतवर्मा को मोहितकिया और पांचाल देशियों को राजा सेनापति धृष्टद्युम्नने सब सेना समेत कर्ण को घायल किया हे भरतवंशी दुश्शासन और भरतवंशियोंकी सेना और संसप्तकोंकी वृद्धिमान सेनाने युद्धमें शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ असह्य वेगवाले भयकारी रूपवाले भीमसेनको मोहितकिया । १२ । वहां इस प्रकार से घायल शूरवीर उत्तमौजाने बड़े हठकरके कर्ण के पुत्रको माराऔर उसका शिर पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करता पृथ्वीपर गिरपड़ा । १३ । तब पीड़ामानरूप कर्ण ने सुषेण के शिरको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर क्रोधयुक्त हो पृथ्वीपर उसके घोड़े रथ और ध्वजा को अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे काटा । १४ । फिर उस उत्तमौजाने भी अपने प्रकाशित खड्ग से कर्ण को पीड़ामान*

Shrutshrama fought with Ashwathama and Yudhamanyu, with Chitrasen. Brave Uttamauja engeged with Sushen and Shadev rushed upon Shakuni like a hungry lion upon a bull. Nakul's son, Shatanik wounded Karan's son; Satyaki wounded Vrishasen and the brave son of Karan covered the Panchals with his arrows, 10. Nakul the son of Madri, best of warriors, made Kritvarma insensible. Dhrishtadyumn the warrior king of Panchal and commander of the Pandav army wounded Karan and his army. Dushasan and his brave Sansaptak warriors made Bhim insensible. Uttamauja, though wound-

स तूत्तमौजा निशितैः पृषत्कैर्विव्याध खड्गेन च भास्वरेण । पार्ष्णिं हयांश्चैव कृपस्य हत्वा शिखण्डिवाहं स ततोऽध्यरोहत् ॥ १५ ॥ कृपन्तु दृष्ट्वा विरथं रथस्थो नैच्छच्छरैस्ताडयितुं शिखण्डी । तं द्रौणिराचार्य रथं कृपस्य समुज्जहे पङ्कगतां यथा गाम् ॥ १६ ॥ हिरण्यवर्मा निशितैः पृषत्कैस्तवात्मजानामनिलात्मजो वै। अतापयत् सैन्यमतीव भीमः काले शुचौ मध्यगतो यथार्कः ॥ १७ ॥

इति कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे पंचसप्ततोऽध्यायः ७५ ॥

किया तदनन्तर वहकृपाचार्य्यके पीछे चलनेवालों ओर घोड़ोंको मारकर शिखण्डी के रथपर सवारहुआ । १५ । फिर रथारूढ़ शिखंडी ने रथस रहित कृपाचार्य्य को देखकर बाणों से घायल करना नहीं चाहा फिर अश्वत्थामाने कृपाचार्य्य को चारों ओरसे आड़ में करके ऐसे छुटाया जैसे कि कीचमें फँसीहुई गौको निकालते हैं । १६ । वायु के पुत्र सुवर्णमयी कवचवाले भीमसेन ने आपके पुत्रोंकी सबसेना को अपने तीक्ष्ण बाणों से ऐसे संतप्त किया जैसे कि उष्णऋतु:में आकाशमें वर्त्त-मान सूर्य सबको संतप्त करदेताहै १७ ॥

ed, slew Karan's son and his head fell down on earth with a crash. 13. Seeing Sushen's head fallen on the ground, Karan destroyed his adversary's car, banner and horses with his sharp arrows. Uttamauja too, wounded Karan with his sword and having slain the guards and horses of Kripacharya, he rode the car of Shikhandi. 15. Seeing Kripacharya deprived of car, Shikhandi did not wound him. Ashwathama protected Kripacharya and rescued him like a cow stuck in mud. Bhim, in his golden armour, heated your son's army like the summer sun. 17.



सञ्जय उवाच । अथ रिपुघ्नी तुमुले विमर्दे द्विषद्भिरेको बहुभिः समावृतः । महारणे सारथि मित्युवाच भीमश्चमूं वाहय धार्त्तराष्ट्रीम । १ । त्वं सारथे याहि जवेन वाहैर्नयाम्येतान् धार्त्तराष्ट्रान् यमाय । सञ्चोदितो भीमसेनेन चैवं स सारथिः पुत्रबलं त्वदीयम । प्रायात्ततः सत्वरमुग्रवेगो यतो भीमस्तद्बलं हन्तुमैच्छत् । ततोऽपरे नागरथाश्वपत्तिभिः प्रत्युद्ययुस्तं कुरवः समन्तात् ॥ २ ॥ भीमस्य वाहाग्र्यमुदारघोषं समन्ततो बाणगणैर्निजघ्नुः ॥ ३ ॥ ततः शरानापततो महात्मा चिच्छेद बाणैस्तपनीयपुङ्खैः । तेवै निपेतुस्तपनीयपुङ्खा द्विधा त्रिधा भीमशरैर्निकृत्ताः ॥ ४ ॥ ततो राजन् नागरथाश्वयूनां भीमाहतानां वरराजमध्ये । घोरो निनादः प्रबभौ नरेन्द्र वज्राहतानामिव पर्वतानाम् ॥ ५ ॥ ते वध्यमानाश्च नरेन्द्रमुख्या निर्भिद्यन्तो भीमसेनप्रवेकैः भीमं समन्तात् समरेऽभ्यरोहन् वृक्षं शकुन्ता इव जातपक्षाः ॥ ६ ॥ ततोऽभिपाते तव सैन्ये

अध्याय ७६ ॥

संजयबोले कि इसके पीछे कठिन युद्धमें बहुतसे शत्रुओंसे घिराहुआ अकेला भीमसेन उस युद्धमें अपने सारथी से यह वचन बोला कि अब तुम दुर्य्योधन की सेनामेंचलो । १ । हे सारथी तुमघोड़ोंके द्वारा बड़ी शीघ्रतासेचलोमैं इन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको यमपुर पहुंचाऊंगा उसकी आज्ञापातेही वह बड़ावेगवान् सारथी आपके पुत्रकी सेनामें भीमसेनको ले पहुंचा । २ । जिसपर कि भीमसेनने उस सेनामेंजाना चाहा वहां दूसरे कौरव रथ हाथी घोड़े और पतियोंसमेत उसके सम्मुखगये । ३ । और चारोंओरसे भीमसेन के बड़े दृढ़रथको अपने बाणों के समूहों से घायलकिया तब भीमसेन ने अपने सुनहरी पुंखवाले बाणों से उन सबके छोड़ेहुये आतेहुये बाणों को काटा भीमसेन के बाणों से टूटेहुये वह सुनहरी पुंखवाले बाण दोदो चार चार खण्ड होकर गिरपड़े । ४ । हे राजा इसके पीछे उत्तम राजाओंके मध्य में भीमसेन के हाथसे मारेहुये हाथी घोड़े रथ औरशूरलोगों के घोरशब्दऐसे प्रकटहुये जैसे कि वज्रसे टूटेहुये पर्वतोंके शब्दहोते हैं । ५ । भीमसेनके उत्तमबाण जालों से घायलहुये उत्तम राजाओंने युद्धमें भीमसेन के ऊपर चारोंओर से ऐसे चढ़ाई करी जैसे कि फूलके निमित्त पक्षी वृक्षपर चढ़ाई करते हैं । ६ ।

CHAPTER LXXVI

Sanjaya said, "Surrounded by many enemies and alone, Bhim said to his driver, " Take me into the army of Duryodhan. Make haste, for I shall destroy the sons of Dhritrashtra." At his order the driver took him within the army. The Kauravas opposed his entrance with the help of their cars, elephants, horse and foot. They showered their hard arrows over the car of Bhim and the latter cut their arrows into two and three parts. 4. Slain by Bhim's arrows, the elephants, horse and car warriors made a tremendous noise. Wounded by his arrows, the warriors attacked him on all sides like birds falling on trees. Then

स भीमः प्रादुश्चक्रे वेगमनन्तवेगः । यथान्तकाले क्षमयन् दिधक्षुर्भूतान्तकृत् काल
इवात्तदण्डः ॥ ७ ॥ तस्यातिवेगस्य रणेऽतिवेगं नाशक्नुवन् वारयितुं त्वदीयाः । व्या
त्ताननस्यापततो यथैव कालस्य काले हरतः प्रजा वै ॥ ८ ॥ ततो बलं भारत भारतानां
प्रदह्यमानं समरे महात्मना । भीतं दिशोऽकीर्यत भीमनुन्नं महानिलेनाभ्रगणो यथैव
॥ ९ ॥ ततो धीमान् सारथिमब्रवीद्बली स भीमसेनः पुनरेव हृष्टः । सूताभिजानीहि
स्वकान् परान् वा रथान् ध्वजांश्चापततः समेतान् ॥ १० ॥ युध्यन् ह्यहं नाभिजानामि
किञ्चिन्मा सैन्यं स्वं छादयिष्ये पृषत्कैः । अरीन् विशोकाभि निरीक्ष्य सर्वतो रथान्
ध्वजाग्राणि धुनोमि वै भृशम् ॥ ११ ॥ राजातुरो नागमद्यत्किरीटी बहूनि दुःखान्यभि
यातोऽस्मि सूत । एतद्दुःखं सारथे धर्मराजो यन्मां हित्वा यातवान् शत्रुमध्ये । नैनं
जीवं नापि जानाम्यजीवं बीभत्सुं वा तन्ममाद्यातिदुःखम् ॥ १२ ॥ सोऽहं द्विषत्सै

इसकेपीछे आपकी सेनाके सम्मुख जानेपर उस अत्यन्त वेगवान भीमसेनने अपने
वेगको ऐसा प्रकट किया जैसे कि प्रलयकाल में सबके मारनेका अभिलाषी दंड-
धारी जीवोंका नाशककाल जीवोंको मारताहै । ७ । तब आपके सब शूरवीर युद्ध
में उस वेग वान के वेगके सहनेको ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि समय पर सबके
भक्षण करनेवाले कालके वेगको सब सृष्टिके जीव नहीं सहसक्ते हैं । ८ । हे
भरतवंशी इसके पीछे भरतवंशियों की सेना युद्धमें उस महात्मा भीमसेन के हाथसे
भस्मीभूत भयभीत और महाघायल होकर चारों दिशाओं में ऐसे विह्वल होकर
भागी जैसे कि वायुसे बादलों के समूह पलायमान होते हैं । ९ । इसके पीछे
बुद्धिमान् भीमसेन प्रसन्न होकर सारथी से फिर बोले हे सारथी तुम अपने और
दूसरों के शूरवीरों के भिड़े और गिरते हुये रथ और ध्वजाओं को जानो । १० ।
मैं युद्ध करताहुआ कुछभी नहीं जानताहूं क्योंकि मैं भ्रांतिसे कहीं अपनी सेनाको
ही पृषत्क नाम बाणोंसे न छादूं हे विशोक सब ओरसे शत्रुओंको देख कर मेरारथ
ध्वजाकी नोकको अधिक कंपायमान करताहै । ११ । विदित होताहै कि राजा
रोगमें ग्रसित होगयाहै जो अबतक अर्जुन नहीं आया है सूत मैंने बड़े२ कष्टोंको
पायाहै हे सारथी यहबड़ा दुःखहै जो धर्मराज मुझको शत्रुओं के मध्यमें छोड़कर

Bhim destroyed the opposing warriors like Yam the wielder of staff. They could not resist him like the all-destroying Death. Wounded, fallen and terrified, your warriors scattered in all directions as clouds are dispersed by the wind, Wise Bhim was pleased at this and again said to the driver, " Have an eye on the falling banners and cars. 10. I have no idea of friends and foes in the fury of the fight. See that I donot shower my arrows over my own army. The point of my banner is trembling excessively in the midst of enemies, I think the king is taken up with disease. Arjun has not returned and I have suffered much since Yudhishthir left me in the midst of

न्यमुद्ग्रकल्पं निनाशयिष्ये परमप्रतीतः । एवं निहत्याजिमध्ये समेतं प्रीतो भविष्यामि सह त्वयाद्य ॥ १३ ॥ सर्वास्तूणान् सायकानामवेक्ष्य किं शिष्टं स्यात् सायकानां रथेमे। का वा जातिः किं प्रमाणञ्च तेषां ज्ञात्वा व्यक्तं तन्ममाचक्ष्व सूत ॥ १५ ॥ विशोक उवाच । षण्मार्गणानामयुतानि वीर क्षुराश्च भल्लाश्च तथायुताख्याः । नाराचानां द्वे सहस्रे च वीर त्रीण्येव च प्रदराणां स्म पार्थ ॥ १६ ॥ अस्त्यायुधं पाण्डवेयावशिष्टं न यद्वहेच्छकटं षड्गवीयम् । एतद्विद्वन् मुञ्च सहस्रशोऽपि गदासिबाहुद्रविणञ्च तेऽस्ति ॥ । १७ ॥ प्रासाश्च खड्गाः शक्तयस्तोमराश्च मा भैषीस्त्वं संक्षयाद्वायुधानाम ॥ १८ ॥ भीम उवाच । सूताद्येमं पश्य भीमप्रमुक्तैः संछिन्दाद्भिः पार्थिवानाशुवेगैः । छन्नं बाणैराहवं घोररूपं नष्टादित्यं मृत्युलोकेन तुल्यम् ॥१९ ॥ अद्यैतद्वै विदितं पार्थिवानां भविष्यति ह्याकुमारञ्च सूत । निमग्नो वा समरे भीमसेनो

चलागया भव मैं उसको वा अर्जुनको जीवतानहीं जानताहूं मुझको यही बड़ाकष्टहै । १२ । सो मैं प्रसन्न चित्त उस बडी साहसी शत्रुओं की सेनाको नाश करूंगा इससे अब मैं युद्धभूमि में सम्मुख आनेवाली सेनाको मारकर तुझ समेत प्रसन्न होऊंगा । १४ । हे सूत रथमें शायकोंके सब तूणीरोंको देखकर और यह जानकर कहो कि शायक कितने बचे हैं और जो शायक बचेहैं वह किसकिस प्रकार के और संख्यामें कितने हैं । १५ । विशोक बोला हे वीर मार्गणनाम बाणोंकी संख्या सो साठ हजारहै और क्षुर वा भल्लोंकी संख्या दश हजारहै और हे वीर पांडव नाराचोंकी संख्या दो हजारहै और प्रवर नाम बाणों की संख्या तीन हजार है । १६। इतने शस्त्र वर्त्तमानहैं जिनकोछः बैलों से युक्त छकड़ाभी नेलचलहैबुद्धिमान शस्त्रों को छोड़ो और हजारों गदा खड्ग वा भुजारूपी धन आपके पास वर्त्तमान है । १७ । प्रास, मुद्गर, शक्ति और तोमर भी हैं तुम शस्त्रोंकी न्यूनता और खर्च होने का भयमतकरो । १८ । फिर भीमसेनके चलाये हुये राजाओंके छेदनेवाले बड़े वेगवान बाणों से गुप्त होने वाले युद्धमें घोररूप छिपोहुई सूर्य्यवाली संसारकी मृत्युके समान इसयुद्धभूमि देखो । १९ । हे सूत अब राजाओं के बालकों तकको भी यह मालूम होगा कि अकेला भीमसेन युद्धमें डूबगयाथाउसने कौरवोंको विजय

enemies. I donot know of the life or death of both Yudhishthir and Arjun and am therefore much grieved. 11. I shall destroy the enemy's army and shall please you and myself by doing so. Have a look at the arrows and see how many of each sort remain." 15. Vishok replied, "The margan arrows are sixty thousands in number; there are ten thousand darts; the naraches are two thousand the number of pravara is three thousands. There are more than enough weapons to be carried in a car drawn by six oxen. We have thousands of maces, swords, prases, clubs, spears and tomars. Never fear that your weapons will run short." At this Bhim covered the whole field of battle with

ह्येकः कुरून् वा समरे व्यजैषीत् ॥ २० ॥ सर्वे संख्ये कुरवो निष्पतन्तु मां वा लोका कीर्त्तयन्त्वाकुमारम् । सर्वानेकस्तानहं पातयिष्ये ते वा सर्वे भीमसेनं तुदन्तु ॥ २१ ॥ आशास्तारः कर्म चाप्युत्तमं ये तन्मे देवाः केवलं साधयन्तु । आयात्विहाद्यार्जुनः शत्रुघाती शक्रस्तूर्णं यज्ञ इवोपहूतः ॥ २२ ॥ ईक्षस्वैतां भारतीं दीर्य्यमाणामेते कस्माद्विद्रवन्ते नरेन्द्राः । व्यक्तं धीमान् सव्यसाची नराग्र्यः सैन्यं ह्येतच्छादयत्याशु बाणैः ॥ २३ ॥ पश्य ध्वजांश्च द्रवतो विशोक नागान् हयान् पत्तिसंघांश्च संख्ये । रथान् विकीर्णान् शरशक्तिताडितान् पश्यस्वैतान्रथिनश्चैव सूत ॥ २४ ॥ आपूर्य्यते कौरवी चाप्यभीक्ष्णं सेना ह्यसौ सुभृशं हन्यमाना । धनञ्जयस्याशनितुल्यवेगैर्ग्रस्ता शरैः काञ्चनबर्हिवाजैः ॥ २५ ॥ एते द्रवन्ति स्म रथाश्वनागाः पदातिसंघानवमर्दयन्तः । संमुह्यमानाः कौरवाः सर्व एव द्रवन्ति नागा इव दावभीताः ॥ २६ ॥ हाहाकृताश्चैव

किया । २० । अब सब कौरवलोग मेरे ऊपर चढ़ाईकरो और वृद्धोंसे बालक पर्य्यन्त सब लोग मेरायश बखानकरो मैं अकेलाही उन सबको मारूंगा अथवा वह सब मिलकर मुझ भीमसेन को पीड़ित करो । २१ । जो देवता कि मेरे उत्तमकर्म्म के उपदेश करनेवाले हैं वह सब केवल मेरी इतनी साधना करें कि वह शत्रुओं का मारनेवाला अर्जुन मेरे ध्यानसे शीघ्र ऐसे आजाय जैसे कि यज्ञमें बुलायाहुआ इन्द्र आताहै । २२ । भरतवंशियों की इस सेनाको छिन्न भिन्न देखो यह राजालोग किस हेतुसे भागते हैं मुझे विदित होताहै कि वह बुद्धिमान् नरोत्तम अर्जुन शीघ्रता से इस सेनाको ढकता चलाआता है । २३ । हे विशोक युद्धमें ध्वजाओं को और भागतेहुये हाथी घोड़े और पत्तियों के समूहोंको देखो हे सूत बाण और शक्ती से घायल उन रथियों को और फैलेहुये रथों को देखो । २४ । यह कौरवी सेना भी महाघायल और वज्र के समान वेगयुक्त सुनहरी परवाले अर्जुन के बाणों से बराबर गुप्त । २५ । यह रथ घोड़े और हाथी पदातियों के समूहोंको मर्दन करतेहुये भागते हैं और सब कौरवलोग भी महा मोहितहुये ऐसे भागे जाते हैं जैसे कि वन दाहसे भयभीत होकर हाथी भागते हैं । २६ । हे विशोक युद्ध में हाहाकार करनेवाले

his pierceing arrows. The posterity of the warriors will know that Bhim was left alone among the enemies and conquered them. 20. Let all the Kauravas attack me; I shall slay them all and the old and young will talk of my fame. I pray the gods, who lead me in doing good, to grant me that Arjun the destroyer of foes may come at my need like Indra invoked at a sacrifice. Look at the dispersing army of the Kauravas. Why are they running away? I think wise Arjun is coming this way covering the enemy with his arrows. Look at the banners of the dispersing elephants, horse and foot. Look at the wounded car-warriors and the dispersing foot soldiers. The Kaurav army, wounded by the vajra like arrows of Arjun, is running away crushing the cars, horses, elephants and foot soldiers. They fly like elephants in a burning forest. 26. The elephants are shrieking with

च पाञ्चजन्यं महार्हमेतद्विजराजवर्णम्। कौन्तेय वक्षस्यसि कौस्तुभञ्च आज्वल्यमानं विजया स्रजञ्च ॥ ३५ ॥ ध्रुवं रथाग्र्यः समुपैति पार्थो विद्रावयन् सैन्यमिदं परेषाम्। सिताभ्रवर्णैरसितप्रयुक्तैर्हयैर्महार्हैं रथिनां वरिष्ठः ॥ ३६ ॥ रथान् हयान् पत्तिगणांश्च सायकैर्विदारितान् पश्य पतन्त्यमी यथा। तवानुजेनामरराजतेजसा महावनानीव सुपर्णवायुना ॥ ३७ ॥ चतुः शतान् पश्य रथानिमान् हतान् सवाजिसूतान् समरे किरीटिना। सप्तभिः सप्तशतानि दन्तिनां पदातिसादांश्च हतान्नेकशः ॥ ३८ ॥ अयं समभ्येति तवान्तिकं बली निघ्नन् कुरूंश्चित्र इव ग्रहोऽर्जुनः। समृद्धकामोऽसि हतास्त्वाहिता बलं तवायुश्च चिराय वर्द्धताम् ॥ ३९ ॥ भीम उवाच। ददानि ते ग्रामवरांश्च

से कटीहुई पृथ्वीपर गिरती हैं और उस अर्जुन के हाथके बाणों से सवारों समेत हाथी ऐसे मारेगये जैसे कि वज्रों से पर्वत चूर्ण कियेजाते हैं। ३४। इसीप्रकार श्रीकृष्णजी के उस महा उत्तम चन्द्रमा के समान वर्णवाले बड़ों के योग्य पांचजन्य शंखको देखो और हृदय में शोभायमान कौस्तुभमणि और वैजयन्तीमालाको भी देखो। ३५। निश्चयकरके रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन शत्रुओंकी सेनाको भगाता श्वेत बादलों के रंग श्रीकृष्णजी से युक्त बड़ों के योग्य घोड़ों के द्वारा सम्मुख आताहै। ३६। देवराज के समान तेजस्वी आपके छोटे भाई के शायकों से कटेहुए रथ घोड़े और पत्तियों के समूहों को देखो कि यह ऐसे गिररहे हैं जैसे कि गरुड़जी के परोंकी वायुसे महावन गिरते हैं। ३७। युद्धमें अर्जुन के हाथसे घोड़े और सारथियों समेत मारेहुये इन चारसौ रथोंको देखो और बड़े बाणोंसे मरेहुये इन सातसौ हाथी पदाती अश्वसवार और अनेक रथियों को देखो। ३८। यह महाबली अर्जुन कौरवों को मारताहुआ तेरे सम्मुख ऐसे आता है जैसे कि बड़ाचित्र ग्रह आता है तुम अभीष्टसिद्ध हो आपके सब शत्रु मारेगये आपका बल पराक्रम

reins of Arjun's horses. The trunks of the huge elephants, cut down by Arjun's arrows, fall like trees and the elephants with their riders are crushed by his arrows like a mountain by vajra. Look at Panchjanya the white conch of Krishn and the Kaustubh jewel and Vaijayanti garland shining on his breast. 35. Surely Arjun the best of warriors is coming on destroying the foes from his car drawn by white horses, driven by Shri Krishn. Look at the cars, horses and foot destroyed by the arrows of your younger brother of Indra's glory. They are falling down like trees broken by the wind of garur's wings. Look at the four hundred cars whose horses and drivers are slain by Arjun. Look at the seven hundreds of large elephants, with numerous horse, foot and car warriors slain by him. Killing the Kauravas, brave Arjun is coming towards you like a large meteor. Your wish is accomplished; for all your enemies are

तुर्द्दश ग्रामान्याने सारथे सुप्रपन्नः । दासीशतञ्चापि रथांश्च विंशति यदर्जुनं वेदयसे विशोक ॥ ४० ॥

इति कर्णपर्वणि विशोकसंवादे षट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सञ्जय उवाच । श्रुत्वा च रथनिर्घोषं सिंहनादञ्च संयुगे । अर्जुनः प्राह गोविन्दं शीघ्रं चोदय वाजिनः ॥१॥ अर्जुनस्य वचः श्रुत्वा गोविन्दोऽर्जुनमब्रवीत् । एष गच्छामि सुक्षिप्रं यत्र भीमो व्यवस्थितः ॥ २ ॥ तं यान्तमश्वैः हिमशङ्खवर्णैः सुवर्णमुक्ता मणिजालनद्धैः । जम्भं जिघांसुं प्रगृहीतवज्रं जयाय देवेन्द्र मिवोग्रमन्युम् ॥ ३ ॥ रथाश्वमा

और आयुर्दा चिरकाल पर्यन्त वृद्धि को पावे । ३९ । भीमसेन बोले हे विशोक सारथी मैं अत्यन्त प्रसन्न होकर तुमको चौदह गांव सौ दासी और बीसरथदेताहूं जो अर्जुनके विषयकी प्रसन्नतावाली बातें मुझसे कहताहै । ४० ॥

अध्याय ॥ ७७ ॥

संजय बोले कि युद्धमें सिंहनाद और रथके शब्दको सुनकर जीते बोला कि हे गोविन्दजी शीघ्रही आप घोड़ोंको हांकिये । १ । गोविन्दजी से अर्जुन के वचनको सुनकर कहनेलगे कि अब मैं वहींपर शीघ्र पहुंचताहूं जहां भीमसेन नियत है । २ । तुषार और शंखके रंगवाले सुवर्ण मोती और मणि जटित जालों से अलंकृत घोड़ों के द्वारा जंभ के मारने के इच्छावान् वज्रधारी क्रोधयुक्त इन्द्र जैसे जाताहै उसीप्रकार जानेवाले उस अर्जुनको । ३ । रथ घोड़े

slain; may your life, prowess and greatness be of long standing." Bhim said, "I shall give you fourteen villages, a hundred female slaves and twenty cars, because you have given me the pleasant news of Arjun's arrival." 40.

CHAPTER LXXVII

Sanjaya said, "Hearing the leonine roars and the sounds of car-wheels, Arjun said to Govind, "Drive the horses faster." At this, Govind said, "I shall soon take you to the place where Bhim is." Bhim then saw Arjun on the car drawn by snow white horses, wit gold trappings, resounding with the twangs of the bow and the

रथपदातिसङ्घा बाणनेमिखुरस्वनैश्च । संनादयन्तो वसुधां दिशश्च क्रुद्धा नृसिंहा
जयमभ्युदीयुः ॥ ४ ॥ तेषाञ्च पार्थस्य च मारिषासीद् देहासुपापक्षपणं सुयुद्धम् ।
त्रैलोक्यहेतोरसुरैर्यथासीद्देवस्य विष्णोर्जयतां वरस्य ॥ ५ ॥ क्षुरार्धचन्द्रैर्निशितैश्च
भल्लैः शिरांसि तेषां बहुधा च बाहून् ॥ ६ ॥ छत्राणि वालव्यजनानि केतूनश्वान् रथान्
पत्तिगणान् द्विपांश्च । ते पेतुरुर्व्यां बहुधा विरूपा वातप्रभग्नानि यथा वनानि ॥ ७ ॥
सुवर्णजालावतता महागजाः सवैजयन्तीध्वजयोधकल्पिताः । सुवर्णपुङ्खैरिषुभिः समा
चिताश्चकाशिरे प्रज्वलिता यथाचलाः ॥ ८ ॥ विदार्य नागाश्वरथान् धनञ्जयः शरोत्त
मैर्वासववज्रसन्निभैः । द्रुतं ययौ कर्णजिघांसया तथा यथा मरुत्वान् बलभेदने पुरा
॥ ९ ॥ ततः स पुरुषव्याघ्रस्तव सैन्यमरिन्दमः । प्रविवेश महाबाहुर्मकरः सागरं यथा
॥ १० ॥ तं दृष्ट्वा तावका राजन्रथपत्तिसमन्विताः । गजाश्वसादिबहुलाः पाण्डवं

हाथी पदातियों के समूह और बाणनेमी वा घोड़ों के शब्दोंसे पृथ्वी और दिशाओं को शब्दायमान करतेहुय क्रोधरूप नराचमने सम्मुख पाया॥४॥ हे श्रेष्ठ उन्होंका और अर्जुन का युद्ध शरीर और प्राणों के पापोंका हरनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि त्रिलोकी के निमित्त महाविजयी विष्णुजी और असुरोंका हुआथा । ५ । अकेले अर्जुनने उन्होंके चलाये हुये सबछोटेबड़े शस्त्रोंको काटकर क्षुरअर्द्धचंद्र और तीक्ष्ण भल्लोंसे उनके शिर और भुजाओंको अनेक प्रकारसे काटा । ६ । चित्र विचित्र वाले व्यजन ध्वजा घोड़े रथ हाथी और पतियोंके समूहोंको भी काटा इसके पीछे वह अनेक प्रकारके रूपांतर होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायुके वेगसे वन गिरपड़ते हैं । ७ । फिर सुनहरी जाल युक्त वैजयन्ती ध्वजाओं समेत शूरवीरों से अलंकृत बड़े हाथी सुनहरी पुंखवाणों से विचित्र प्रकाशमान पर्वतों के समान प्रकाशमान हुये । ८ । अर्जुन इन्द्रके वज्रकी समान उत्तम बाणोंसे हाथी घोड़े और रथों को मारकर कर्ण के मारनेकी इच्छासे इसरीति से शीघ्र चला जैसे कि पूर्व समय में राजाबलि के मारनेको इन्द्र चलाथा । ९ । हे शत्रुसंहारी उस के पीछे वह महाबाहु पुरुषोत्तम ऐसे आपहुंचा जैसे कि समुद्र में मगर घुस आता है । १० ।

rumbling of car wheels. Arjun destroyed the sins of body and soul and fought as Vishnu had done during his conquest of Asurs. Alone he cut their weapons, and with his arrows cut off their heads and arms. He destroyed fans, standards and horses, cars and elephants in large numbers. They fell down on earth like trees struck down by lightning. The huge elephants, decked with gold nets, garlands, banners and warriors, studded with the arrows of golden feathers, looked like burning mountains. Having slain elephants, horses and cars with his vajra like arrows, Arjun advanced to slay Karan as Indra had done to slay Bali. He then entered the army as an alligator enters the ocean. 10. Your army composed of horse, foot, elephants and

समुपाद्रवन् ॥ ११ ॥ तेषामापततां पार्थमारावः सुमहानभूत । सागरस्येव क्षुब्धस्य यथा स्यात् सलिलस्वनः ॥ १२ ॥ ते तु तं पुरुषव्याघ्रं व्याघ्रा इव महारथाः । अभ्यद्रवन्त संग्रामे त्यक्त्वा प्राणकृतं भयम् ॥ १३ ॥ तेषामापततां तत्र शरवर्षाणि मुञ्चताम् । अर्जुनो व्यधमत् सैन्यं महावातो घनानिव ॥ १४ ॥ तेऽर्जुनं सहिताः भूत्वा रथवंशैः प्रहारिणः । अभियाय महेष्वासा विव्यधुर्निशितैः शरैः ॥ १५ ॥ ततोऽर्जुनः सहस्राणि रथवारणवाजिनाम् । प्रेषयामास विशिखैर्यमस्य सदनं प्रति ॥ १६ ॥ ते वध्यमानाः समरे पार्थचापच्युतैः शरैः । तत्र तत्र स्म लीयन्ते भयजाते महारथाः ॥ १७ ॥ तेषां चतुःशतान् वीरान् यतमानान् महारथान् । अर्जुनो निशितैर्बाणैरनयद्यमसादनम् ॥ १८ ॥ ते वध्यमानाः समरे नानालिङ्गैः शितैः शरैः अर्जुनं समभित्यज्य दुद्रुवुर्वै दिशो दश ॥ १९ ॥ तेषां शब्दो महानासीत् द्रवतां वाहिनीमुखे । महौघस्येव जलधेर्गिरि

हे राजा रथ और पतियों से संयुक्त अनेक हाथी घोड़े और सवारों समेत बड़े प्रसन्नचित्त आपके शूरवीर इस पांडवके सम्मुख गये अर्जुन की ओर दौड़नेवाले उनलोगोंके ऐसे बड़े शब्दहुये जैसे कि अपनी उन्मत्तता में आनेवाले समुद्र के शब्द होते हैं । १२ । फिर व्याघ्रों के समान वह सब महारथी युद्ध में अपने प्राणोंकी आशाको त्यागकर उसपुरुषोत्तम के सम्मुख गये वहां अर्जुन ने उन बाणोंकी वर्षा करते हुये आनेवाले शूरवीरों की सेनाको ऐसा छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि बड़ा वायु बादलोंको तितिर बितिर करदेताहै । १५ । उनप्रहार करनेवाले बड़े धनुषधारियोंने रथ समूहों समेत उसके सम्मुख जाकर तीक्ष्णबाणों से अर्जुनको घायल किया । १९ । इसके पीछे अर्जुनने विशिखों से हजारों रथ हाथी और घोड़ोंको यमलोकमें भेजा ।१६।युद्धमें अर्जुनके धनुषके निकलेहुये बाणोंसे घायल वह महारथी भयके उत्पन्नहोनेपर जहांतहां छिपगये । १७ । अर्जुनने उनकेमध्यमें उपाय करनेवाले चार सौ बड़े महारथी शूरवीरों को बाणोंके द्वारा यमलोकमें पहुंचाया ।१८।नानाप्रकारके रूपवाले युद्धमें तीक्ष्णबाणोंसे घायल होकर वह शूरवीर अर्जुनके सम्मुख जाकर दशोंदिशाओं को भागे । १९ । युद्धमें से भागनेवाले उनलोगों के ऐसे महाशब्दहुये जैसे कि पर्वतकोपाकर फटनेवाले बड़े नदीके प्रवाहके शब्दहोते

car warriors, cheerfully opposed the Pandav with a tremendous noise like that of a stormy sea. Disregarding all fear for their lives, they rushed like tigers against Arjun, who dispersed them with his arrows as the wind disperses the clouds. They wounded him with their sharp arrows. 15. Arjun sent thousands of cars, horses and elephants, to the region of Yam with his arrows. Terrified with Arjun's arrows, they slunk away in all directions He sent four hundred of the best warriors to the region of Yam. The warriors wounded by his arrows flew in all directions. They made a noise in their flight like a stream

मासाद्य प्रद्ध्वंसतः ॥ २० ॥ तान्तु सेनां भृशं त्रस्तां द्रावयित्वार्जुनः शरैः । प्रायादभि
मुखः पार्थः सूतानीकाय मारिष ॥ २१ ॥ तस्य शब्दो महानासीत् परानभिमुखस्य वै ।
गरुडस्येव पततः पन्नगार्थे यथा पुरा ॥ २२ ॥ तन्तु शब्दमभिश्रुत्य भीमसेनो महाबलः ।
बभूव परमप्रीतः पार्थदर्शनलालसः ॥ २३ ॥ श्रुत्वैव पार्थमायान्तं भीमसेनः प्रतापवान् ।
त्यक्त्वा प्राणान् महाराज सेनां तव ममर्द ह ॥ २४ ॥ स वायुवीर्यप्रतिमो वायुवेग
समो जवे । वायुवद्व्यचरद्भीमो वायुपुत्रः प्रतापवान् ॥ २५ ॥ तेनार्द्यमाना राजेन्द्र सेना
तव विशाम्पते । व्यभ्राम्यत महाराज भिन्ना नौरिव सागरे ॥ २६ ॥ तान्तु सेनां तदा
भीमो दर्शयन् पाणिलाघवम् । शरैरवचकर्तोग्रैः प्रेषयिष्यन् यमक्षयम् ॥ २७ ॥ तत्र
भारत भीमस्य बलं दृष्ट्वातिमानुषम् । व्यत्रस्यन्त रणे योधाः कालस्येव युगक्षये
॥ २८ ॥ तथार्दितान् भीमबलान् भीमसेनेन भारत । दृष्ट्वा दुर्योधनो

है। २० । हे श्रेष्ठ फिर अर्जुन बाणों से उस सेनाको खूब छेदकर और भगाकर कर्ण के सम्मुखगया । २१ । वहां उसशत्रुजेता अर्जुनका ऐसा महाशब्दहुआ जैसे कि पूर्वसमय में सर्पके खानेको आनेवाले गरुड़का शब्दहोताहै । २२ । अर्जुन के देखनेका अभिलाषी महाबली भीमसेन उस अर्जुनके शब्दको सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ । २३ । हे महाराज उस प्रतापवान भीमसेनने आतेहुये अर्जुनको सुनकर अपनेप्राणों की आशा छोड़कर आपकी सेनाका मर्दनकिया । २४ । पराक्रम में वायु के समान शीघ्रचलने में वायुकी तीव्रताके सदृश वायुका पुत्र प्रतापी भीमसेन वायुके समान घूमनेलगा । २५ । हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उससे घायल और पीड़ितहोकर आपकी सेना ऐसे गिरपड़ी जैसेकि टूटीहुई नौका सागरमें गिरती है । २६ । फिर अपनी हस्तलाघवताको दिखाते सबको यमलोक में पहुंचाते हुये उसभीमसेनने बारम्बार उग्र बाणोंकी वर्षाकरके उस सेनाको काटा ।२७ । हे भरतवंशी उसयुद्धमें महाबली भीमसेनके अद्भुत आश्चर्यकारी पराक्रमको देखकर सब लोग ऐसे चक्कर मारनेलगे जैसे कि प्रलयकालमें कालके पराक्रमको देखकर सब भयभीतहोकर फिरते हैं । २८ । हे भरतवंशी इसप्रकार भीमसेनके हाथसे पीड़ामान

flowing through a mountain crevice. 20. Having routed the large army, Arjun encountered Karan. The noise at the coming of Arjun was like that of garur at his coming down to eat serpents. Desirous of seeing Arjun, mighty Bhimsen was much pleased to hear that noise. Hearing the sound of Arjun's arrival, Bhimsen, without any fear for his own life, began destroying your army. Bhim the son of Vayu, like the latter in prowess and velocity, began to roam like him. 25. Wounded by his weapons, your warriors fell down like a boat broken in the midst of water. Showing the dexterity of his hand, he cut and killed them with his arrows. Seeing the prowess of Bhim, the

समुपाद्रवन् ॥ ११ ॥ तेषामापततां पार्थमारावः सुमहानभूत् । सागरस्येव क्षुब्धस्य यथा स्यात् सलिलस्वनः ॥ १२ ॥ ते तु तं पुरुषव्याघ्रं व्याघ्रा इव महारथाः । अभ्य द्रवन्त संग्रामे त्यक्त्वा प्राणकृतं भयम् ॥ १३ ॥ तेषामापततां तत्र शरवर्षाणि मुञ्च ताम् । अर्जुनो व्यधमत् सैन्यं महावातो घनानि व ॥ १४ ॥ तेऽर्जुनं सहिता भूत्वा रथ वंशैः प्रहारिणः । अभियाय महेष्वासा विव्यधुर्निशितैः शरैः ॥ १५ ॥ ततोऽर्जुनः सह स्राणि रथवारणवाजिनाम् । प्रेषयामास विशिखैर्यमस्य सदनं प्रति ॥ १६ ॥ ते वध्य मानाः समरे पार्थचापच्युतैः शरैः । तत्र तत्र स्म लीयन्ते भयजाते महारथाः ॥ १७ ॥ तेषां चतुः शतान् वीरान् यतमानान् महारथान् । अर्जुनो निशितैर्बाणैरनयद्यमसादनम् ॥ १८ ॥ ते वध्यमानाः समरे नानालिङ्गैः शितैः शरैः अर्जुनं समभित्यज्य दुद्रुवुर्वै दिशो दश ॥ १९ ॥ तेषां शब्दो महानासीत् द्रवतां वाहिनीमुखे । महौघस्येव जलधेर्गिरि

हे राजा रथ और पत्तियों से संयुक्त अनेक हाथी घोड़े और सवारों समेत बड़े महसाचित्त आपके शूरवीर इस पांडवके सम्मुख गये अर्जुन की ओर दौड़नेवाले उनलोगोंके ऐसे बड़े शब्दहुये जैसे कि अपनी उन्मत्तता में आनेवाले समुद्र के शब्द होते हैं । १२ । फिर व्याघ्रों के समान वह सब महारथी युद्ध में अपने प्राणोंकी आशाको त्यागकर उसपुरुषोत्तम के सम्मुख गये वहां अर्जुन ने उन बाणोंको वर्षा करते हुये आनेवाले शूरवीरों की सेनाको ऐसा छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि बड़ा वायु बादलोंको तिर बिर करदेताहै । १५ । उसप्रकार करनेवाले बड़े धनुषधारियोंने रथ समूहों समेत उसके सम्मुख जाकर तीक्ष्णबाणों से अर्जुनको घायल किया । १५ । इसके पीछे अर्जुनने विशिखों से हजारों रथ हाथी और घोड़ोंको यमलोकमें भेजा ।१६।युद्धमें अर्जुनके धनुषके निकलेहुये बाणोंसे घायल वह महारथी भयके उत्पन्नहोनेपर जहांतहां छिपगये । १७ । अर्जुनने उनकेमध्यमें उपाय करनेवाले चार सौ बड़े महारथी शूरवीरों को बाणोंके द्वारा यमलोकमें पहुंचाया ।१८।नानाप्रकारके रूपवाले युद्धमें तीक्ष्णबाणोंसे घायल होकर वह शूरवीर अर्जुनके सम्मुख जाकर दशोंदिशाओं को भागे । १९ । युद्धमें से भागनेवाले उनलोगों के ऐसे महाशब्दहुये जैसे कि पर्वतकोपाकर फटनेवाले बड़े नदीके प्रवाहके शब्दहोते

car warriors, cheerfully opposed the Pandav with a tremendous noise like that of a stormy sea. Disregarding all fear for their lives, they rushed like tigers against Arjun, who dispersed them with his arrows as the wind disperses the clouds. They wounded him with their sharp arrows. 15. Arjun sent thousands of cars, horses and elephants, to the region of Yam with his arrows. Terrified with Arjun's arrows, they slunk away in all directions He sent four hundred of the best warriors to the region of Yam. The warriors wounded by his arrows flew in all directions. They made a noise in their flight like a stream

मासाद्य दीर्यतः ॥ २० ॥ तान्तु सेनां भृशं त्रस्तां द्रावयित्वार्जुनः शरैः । प्रायादभि
मुखः पार्थः सूतानीकाय मारिष ॥ २१ ॥ तस्य शब्दो महानासीत् परानभिमुखस्य वै ।
गरुडस्येव पततः पन्नगार्थे यथा पुरा ॥ २२ ॥ तन्तु शब्दमभिश्रुत्य भीमसेनो महाबलः ।
बभूव परमप्रीतः पार्थदर्शनलालसः ॥ २३ ॥ श्रुत्वैव पार्थमायान्तं भीमसेनः प्रतापवान् ।
त्यक्त्वा प्राणान् महाराज सेनां तव ममर्द ह ॥ २४ ॥ स वायुवीर्यप्रतिमो वायुवेग
समो जवे । वायुवद्व्यचरद्भीमो वायुपुत्रः प्रतापवान् ॥ २५ ॥ तेनार्द्यमाना राजेन्द्र सेना
तव विशाम्पते । व्यभ्राम्यत महाराज भिन्ना नौरिव सागरे ॥ २६ ॥ तान्तु सेनां तदा
भीमो दर्शयन् पाणिलाघवम् । शरैरवचकर्त्तोग्रैः प्रेषयिष्यन् यमक्षयम् ॥ २७ ॥ तत्र
भारत भीमस्य बलं दृष्ट्वातिमानुषम् । व्यत्रस्यन्त रणे योधाः कालस्येव युगक्षये
॥ २८ ॥ तथार्दितान् भीमबलान् भीमसेनेन भारत । दृष्ट्वा दुर्योधनो

हैं । २० । हे श्रेष्ठ फिर अर्जुन बाणों से उस सेनाको खूब छेदकर और भगाकर कर्ण के सम्मुखगया । २१ । वहां उसशत्रुजेता अर्जुनका ऐसा महाशब्दहुआ जैसे कि पूर्वसमय में सर्पके खानेको आनेवाले गरुड़का शब्दहोताहै । २२ । अर्जुन के देखनेका अभिलाषी महाबली भीमसेन उस अर्जुनके शब्दको सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ । २३ । हे महाराज उस प्रतापवान् भीमसेनने आतेहुये अर्जुनको सुनकर अपनेप्राणों की आशा छोड़कर आपकी सेनाका मर्दनकिया । २४ । पराक्रम में वायु के समान शीघ्रचलने में वायुकी तीव्रताके सदृश वायुका पुत्र प्रतापी भीमसेन वायुके समान घूमनेलगा । २५ । हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उससे घायल और पीड़ितहोकर आपकी सेना ऐसे गिरपड़ी जैसेकि टूटीहुई नौका सागरमें गिरती हैं । २६ । फिर अपनी हस्तलाघवताको दिखाते सबको यमलोक में पहुंचाते हुये उसभीमसेनने बारम्बार उग्र बाणोंकी वर्षाकरके उस सेनाको काटा ।२७ । हे भरतवंशी उसयुद्धमें महाबली भीमसेनके अद्भुत आश्चर्यकारी पराक्रमको देखकर सब लोग ऐसे चक्कर मारनेलगे जैसे कि प्रलयकालमें कालके पराक्रमको देखकर सब भयभीतहोकर फिरते हैं । २८ । हे भरतवंशी इसप्रकार भीमसेनके हाथसे पीड़ामान

flowing through a mountain crevice. 20. Having routed the large army, Arjun encountered Karan. The noise at the coming of Arjun was like that of garur at his coming down to eat serpents. Desirous of seeing Arjun, mighty Bhimsen was much pleased to hear that noise. Hearing the sound of Arjun's arrival, Bhimsen, without any fear for his own life, began destroying your army. Bhim the son of Vayu, like the latter in prowess and velocity, began to roam like him. 25. Wounded by his weapons, your warriors fell down like a boat broken in the midst of water. Showing the dexterity of his hand, he cut and killed them with his arrows. Seeing the prowess of Bhim the

राजा इदं वचनमब्रवीत् ॥ २९ ॥ सैनिकांश्च महेष्वासान् योधांश्च भरतर्षभ। समादिशद्रणे सर्वान् हत भीममिति स्म ह । तस्मिन् हते हतं सर्वं पाण्डुसैन्यमशेषतः ॥ ३० ॥ प्रतिगृह्य च तामाज्ञां तव पुत्रस्य पार्थिवाः। भीमं प्रच्छादयामासुः शरवर्षैः समन्ततः ॥ ३१ ॥ गजाश्च बहुला राजन् नराश्च जयगृद्धिनः । रथा हयाश्च राजेन्द्र परिवव्रुर्वृकोदरम् ॥ ३२ ॥ स तैः परिवृतः शूरैः शूरो राजन् समन्ततः शुशुभे भरतश्रेष्ठो नक्षत्रैरिव चन्द्रमाः ॥ ३३ ॥ परिवेषी यथा सोमः परिपूर्णो विराजते ॥ ३४ ॥ स रराज तथा सङ्ख्ये दर्शनीयो नरोत्तमः निर्विशेषं महाराज यथा हि विजयस्तथा ॥ ३५ ॥ तस्यते पार्थिवाः सर्वे शरवृष्टीः समासृजन् । क्रोधरक्तेक्षणाः क्रूरा हन्तुकामा वृकोदरम् ॥ ३६ ॥ तां विदार्य महासेनां शरैः सन्नतपर्वभिः । निश्चक्राम रणाद्भीमो मत्स्यो जालादिवाम्भसि ॥ ३७ ॥

भयानक पराक्रम वाले बड़े शूरवीरों को देखकर राजा दुर्य्योधन इसवचनको बोला । २९ । कि हे महाबली शूरवीर लोगो तुम भीमसेन को मारो इसी भीमसेन के मरनेपर मैं सब पांडवोंकी सेनाकोभी मृतकरूपही मानताहूं । ३० । तब तो सब राजाओं ने आपके बेटेकी आज्ञाको अंगीकार किया और भीमसेन को चारोंओर से बाणोंकी वर्षासे आच्छादित करदिया ।३१। हे राजा बहुत से हाथी घोड़े और विजयाभिलाषी रथारूढ़ मनुष्यों ने भीमसेन को घेरलिया । ३२ । तब उनशूरों से चारोंओर को घिराहुआ वह पराक्रमी भीमसेन महा शोभायमान हुआ जैसे कि नक्षत्रों में शोभायमान चन्द्रमा पूर्णमासी के दिन अपने मण्डल से युक्त होकर शोभित होताहै । ३४ । उसीप्रकार वह दर्शनीय नरोत्तम भीमसेन भी युद्ध में शोभायमान हुआ हे महाराज जैसा अर्जुनहै वैसाही वहभीहै इसमें भेदनहींहै ।३५। क्रोधसे रक्तनेत्र भीमसेन के मारनेके उत्सुक उनसब शूरवीर राजाओंने बाणोंकी वर्षाउस के ऊपरकरी । ३६ । भीमसेन टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे उस बड़ी सेनाको चीर कर युद्धभूमि से ऐसे निकलगया जैसाकि जलकी मछली जलके जालमें से निकल जाती है । ३७ । हे भरतवंशी भीमसेन ने मुख न मोड़नेवाले दशहजार हाथी

warriors were afraid of him as if he were Death at pralaya. Seeing his great warriors wounded by Bhim, Daryodhan said, "Brave warriors, slay Bhim. I think that you will be able to destroy all the Pandav army, if you can slay him." 30. All the kings obeyed his orders and covered Bhim with arrows from all sides. Surrounded by them, mighty Bhimsen looked glorious like the moon surrounded by stars. He is surely as brave as Arjun. 35. With eyes red in anger, the warriors desirous of slaying Bhim showered their arrows at him; but he broke through their lines and came out like a fish from the meshes of a net. 37. He slew ten thousands of elephants, two

हत्वा दशसहस्राणि गजानाममितौजसाम् । नृणां शतसहस्रे द्वेद्वेशते चैव भारत ॥ ३८॥ पञ्च चाश्वसहस्राणि रथानां शतमेव च । हत्वा प्रास्यन्दयद्भीमो नदीं शोणितवाहिनीम् ॥ ३९ ॥ शोणितोदां रथावर्त्तां हस्तिग्राहसमाकुलाम् । नरमीनाश्वनक्रान्तां केशशैवलशाद्वलाम् ॥ ४०॥ संछिन्नभुजनागेन्द्रां बहुरत्नापहारिणीम् । ऊरुग्राहां मज्जपङ्कां शीर्षोपलसमावृताम् ॥ ४१ ॥ शरचापप्लवां भीमां गदापरिघपन्नगाम् । हंसछत्रध्वजोपेतामुष्णीषवरफेनिलाम् ॥ ४२ ॥ हारपद्माकराञ्चैव भूमिरेणूर्मिमालिनीम् । आर्य्यवृत्तवतां संख्ये सुतरां भीरुदुस्तराम् ॥ ४३ ॥ योधग्राहवतीं संख्ये वहन्तीं पितृसादनम् । क्षणेन पुरुषव्याघ्रः प्रावर्त्तयत निम्नगाम् ॥ ४४॥ यथा वैतरणीमुग्रां दुस्तरामकृतात्मभिः । तथा दुस्तरणीं घोरां भीरूणां भयवर्द्धनीम् ॥ ४५ ॥ यतो यतः पाण्ड

दोलाखदोसौ मनुष्य । ३८ । पांचहजार घोड़े और सौ रथियोंको मारकर रुधिर के प्रवाहवाली नदीको जारीकिया । ३९ । जिसमें रुधिररूप जल रथरूप भ्रमर चक्र हाथीरूप ग्राहों से भयानक मनुष्य रूपमछली घोड़ेरूप नक्र और बालरूप शैवल और शाद्वलये । ४० । और बहुतरत्नों की हरनेवाली सूंड़कटे हाथियों से व्याप्त जंघारूप ग्राहों से भयानक मज्जारूपी पंक और शिररूप पत्थरों से संयुक्त थी । ४१ । धनुष, चाबुक, तूणीर, गदा, परिघ, ध्वजा, छत्ररूपी हंसों से युक्त और उष्णीष अर्थात् पगड़ीरूप झागवाली । ४२ । हाररूपी कमलों के वन रखने वाली और पृथ्वी की धूलीरूप तरंगों की रखनेवाली युद्ध में उत्तम पुरुषों के चलन रखनेवाले पुरुषोंसे सुगमतासे पार होनेके योग्य भयभीतोंको दुर्गम । ४३ । शूरवीर रूप ग्राहोंसे पूर्ण युद्ध में पितृलोक की ओरको बहनेवालीथी ऐसी उग्र अद्भुत नदीको इसपुरुषोत्तम भीमसेनने एक क्षणमात्रही में जारी करादिया । ४४ । जैसे कि अशुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों से महादुस्तर रूप वैतरणी कहातीहै उसीप्रकारइसकोभी महाघोर दुःख और भयकी करनेवाली कहा । ४५ । बहुरथियोंमेंश्रेष्ठ

hundred thousands of men, five thousand horse and a hundred car-warriors, and caused a river of blood to flow on the field, having blood for water, cars for eddies, elephants for crocodiles, men for fish, horses for alligators and hair for weeds. 40. It carried with it jewels, trunks of elephants and thighs, and had fat for mud and heads for stones. It was full of bows, whips, quivers, maces, clubs and standards. Shades floated over it like flights of swans and head gears were like foam. Having garlands for the forest of lotuses, the dust of earth for currents, easy to be crossed by the virtuous and difficult to the timid, full of warrior alligators and leading to the region of the dead, the wonderful river was created by mighty Bhim in an instant. It was difficult to be crossed by the ill-natured like the famous Vaitarni. 45. That brave warrior killed thousands in what

क्षेपः प्रांदशो रथसत्तमः । ततस्ततोपातयत योधान् शतशोऽथसहस्रशः ॥ ४६ ॥ एवं दृष्ट्वा
कृतं कर्म भीमसेनेन संयुगे । दुर्य्योधनो महाराज शकुनिं वाक्यमब्रवीत् ॥ ४७ ॥
जय मातुल संग्रामे भीमसेनं महाबलम् । अस्मिन् जिते जितं मन्ये पाण्डवेयं महाब-
लम् ॥ ४८ ॥ ततः प्रायान्महाराज सौबलेयः प्रतापवान् । रणाय महते युक्तो भ्रातृभिः
परिवारितः ॥ ४९ ॥ स समासाद्य संग्रामे भीमं भीमपराक्रमम् । वारयामास तं वीरो
वेलेव मकरालयम् ॥ ५० ॥ सन्न्यवर्तत तं भीमो वार्य्यमाणः शितैः शरैः । शकुनिस्तस्य
राजेन्द्र वामपार्श्वे स्तनान्तरे । प्रेषयामास नाराचान् रुक्मपुंखान् शिलाशितान् ॥ ५१ ॥
वर्म भित्त्वा तु ते घोराः पाण्डवस्य महात्मनः न्यमज्जन्त महाराज कङ्कबर्हिणवाससः
॥ ५२ ॥ सोतिविद्धो रणे भीमः शरं रुक्मविभूषितम् । प्रेषयामास सहसा सौबलं प्रति
भारत ॥ ५३ ॥ तमायान्तं शरं घोरं शकुनिः शत्रुतापनः । चिच्छेद सप्तधा राजन् कृत
हस्तो महाबलः ॥ ५४ ॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ भीमः क्रुद्धो विशाम्पते । धनुश्चिच्छेद

पांडवाजेस जिस ओरहोकर निकाला उस ओरके लाखोंही शूरवीरोंको मारा ।४६।
हेमहाराज इसरीतिसे युद्धमें भीमसेनके कियेहुये कर्मको देखकर दुर्योधन शकुनीसे
यह वचन बोला । ४७ । कि हे मामाजी इस बड़े पराक्रमी भीमसेन को युद्धमें तुम
विजयकरो इसके विजय होनेपर मैं सब पांडवी सेनाको विजय कियाहुआही
मानताहूं । ४८ । हे महाराज इसके अनन्तर भाइयों समेत बड़ेभारी युद्ध करनेको
उत्सुक प्रतापवान् शकुनी चला । ४९ । उस वीरने युद्धमें भयानक पराक्रमी भीम
सेन को पाकर उस को ऐसे रोका जैसे कि समुद्रकी मर्य्यादा समुद्रको रोकलेती है
। ५० । तीक्ष्णवाणों से रोकाहुआ भीमसेन उसकी ओर को लौटा और शकुनीने
उस के हाथ और छातीपर सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार नाराचोंको चलाया । ५१ ।
फिर वह कंकपक्ष से जटित घोर बाण महात्मा पांडव भीमसेन के कवच को
काटकर शरीर में घुसगये । ५२ । फिर युद्ध में अत्यन्त घायल उस भीमसेन ने
क्रोधयुक्त होकर सुवर्ण जटित बाण को शकुनी के ऊपर चलाया । ५३ । हे राजा
शत्रुसंतापी हस्तलाघवी महाबली शकुनी ने उस आतेहुये घोर बाण को सातखण्ड
करादिया । ५४ । हे राजा उस बाण के पृथ्वी में गिरनेपर क्रोधयुक्त हँसतेहुये

ever direction he went. Seeing the prowess of Bhim, Duryodhan said to Shakuni, "Conquer mighty Bhim, uncle. I think that all the Pandav army will be easy of conquest when you have conquered him." At this, brave Shakuni, with his brothers, went on to fight. Having found Bhim of dreadful prowess, he checked him as the coast checks the Ocean. 50. Checked by sharp arrows, Bhim turned towards him, and Shakuni discharged his sharp arrows at his arms and breast. The dreadful arrows, fitted with Kank feathers pierced the armour of Bhim and entered his body. Exceedingly wounded, Bhim discharged a gold-decked arrow at Shakuni; but the latter cut

भल्लेन सौबलस्य हसन्निव ॥ ५५ ॥ तदपास्य धनुश्छिन्नं सौबलेयः प्रतापवान् । अन्यदादाय वेगेन धनुर्भल्लांश्च षोडश ॥ ५६ ॥ तैस्तस्य तु महाराज भल्लैः सन्नतपर्वभिः । द्वाभ्यां स सारथिं ह्याच्छत् भीमं सप्तभिरेव च ॥ ५७ ॥ ध्वजमेकेन चिच्छेद छत्रं द्वाभ्यां विशाम्पते । चतुर्भिश्चतुरो वाहान् विव्याध सुबलात्मजः ॥ ५८ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज भीमसेनः प्रतापवान् । शक्तिं चिक्षेप समरे रुक्मदण्डामयस्मयीम् ॥ ५९ ॥ सा भीमभुजनिर्मुक्ता नागजिह्वेव चञ्चला । निपपात रणे तूर्णं सौबलस्य महात्मनः ॥ ६० ॥ ततस्तामेव संगृह्य शक्तिं कनकभूषणाम् । भीमसेनाय चिक्षेप क्रुद्धरूपो विशाम्पते ॥ ६१ ॥ सा निर्भिद्य भुजं सव्यं पाण्डवस्य महात्मनः । निपपात तदा भूमौ यथा विद्युन्नभश्च्युता ॥ ६२ ॥ अथोत्क्रुष्टं महाराज धार्तराष्ट्रैः समन्ततः । न तु तं ममृषे भीमः सिंहनादं तरस्विनाम् ॥ ६३ ॥ अन्यद्गृह्य धनुः सज्यं त्वरमाणो महाबलः । मुहूर्तादिव राजेन्द्र छादयामास सायकैः । सौबलस्य बलं संख्ये त्यक्त्वात्मानं महाबलः

भीमसेनने भल्लसे शकुनी के धनुषकोकाटा । ५५ । फिर प्रतापवान् शकुनीने उसधनुष को डालकर वेगसे दूसरे धनुष और सोलह भल्लोंको लेकर उन टेढ़े भल्लोंमें से दो भल्लों से उसके सारथी को और सात भल्लों से भीमसेन को घायल किया फिर एकसे ध्वजा को और दो भल्लों से छत्रको काटकर सौबलने चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल किया । ५८ । इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने युद्धमें सुनहरी दण्डवाली शक्ति को फेंका । ५९ । भीमसेन की भुजासे छोड़ी हुई वह सर्पकी जिह्वा के समान चंचल शक्ति युद्धमें शीघ्रही महात्मा शकुनीके ऊपर गिरी । ६० । इसके पीछे क्रोधरूप शकुनी ने उस सुवर्ण से अलंकृत शक्ति को लेकर भीमसेन के ऊपरफेंका । ६१ । तब वह महात्मा पाण्डवकी बामभुजा को छेदकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि आकाश से गिरी हुई बिजली होती है । ६२ । इसके पीछे धृतराष्ट्र के लड़कों ने चारों ओरसे बड़ा शब्द किया फिर उन वीरों के सिंहनाद को न सहकर बड़े भारी अलंकृत धनुष को लेकर अपने जीवन की आशा को त्यागकरके युद्ध में एक मुहूर्त मेंही शकुनी की सेना को शायकोंसे ढक

it down into seven parts. At the fall of that arrow, Bhim, smiling in rage, cut asunder Shakni's bow. He dropped the broken bow and taking up another, with sixteen darts, wounded the driver with two, Bhim with seven, his standard with one and having cut his umbrella with two, wounded his horses with four arrows. Then mighty Bhim, much enraged, hurled his spear with the golden handle. The sharp spear, like a serpent's tongue, discharged by Bhim, fell down upon Shakuni. 60. The latter seized it in his hand and sent it back towards Bhim, and piercing Bhim's arm, it fell down on earth like lightning. At this, the sons of Dhritrashtra cried with joy. Bhim could not bear their leonine roars and covered Shakuni's army with

वेगः प्रविष्टो रथसत्तमः । ततस्ततोऽपातयत योधान् शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ४६ ॥ एवं दृष्ट्वा
कृतं कर्म भीमसेनेन संयुगे । दुर्योधनो महाराज शकुनिं वाक्यमब्रवीत् ॥ ४७ ॥
जय मातुल संग्रामे भीमसेनं महाबलम् । अस्मिन् जिते जितं मन्ये पाण्डवेयं महाब
लम् ॥ ४८ ॥ ततः प्रायान्महाराज सौबलेयः प्रतापवान् । रणाय महते युक्तो भ्रातृभिः
परिवारितः ॥ ४९ ॥ स समासाद्य संग्रामे भीमं भीमपराक्रमम् । वारयामास तं वीरो
वेलेव मकरालयम् ॥ ५० ॥ न्यवर्तत ततो भीमो वार्यमाणः शितैः शरैः । शकुनिस्तस्य
राजेन्द्र वामपार्श्वं स्तनान्तरे । प्रेषयामास नाराचान् रुक्मपुङ्खान् शिलाशितान् ॥ ५१ ॥
वर्म भित्त्वा तु ते घोराः पाण्डवस्य महात्मनः । न्यमज्जन्त महाराज कङ्कबर्हिणवाससः
॥ ५२ ॥ सोऽतिविद्धो रणे भीमः शरं रुक्मविभूषितम् । प्रेषयामास सहसा सौबलं प्रति
भारत ॥ ५३ ॥ तमायान्तं शरं घोरं शकुनिः शत्रुतापनः । चिच्छेद सप्तधा राजन् कृत
हस्तो महाबलः ॥ ५४ ॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ भीमः क्रुद्धो विशाम्पते । धनुश्चिच्छेद

पांडवजित जिस ओरहोकर निकाला उस ओरके लाखोंही शूरवीरोंको मारा ।४६। हेमहाराज इसरीतिसे युद्धमें भीमसेनके कियेहुये कर्मको देखकर दुर्योधन शकुनीसे यह वचन बोला । ४७ । कि हे मामाजी इस बड़े पराक्रमी भीमसेन को युद्धमें तुम विजयकरो इसके विजय होजानेपर मैं सब पांडवी सेनाको विजय कियाहुआही मानताहूं । ४८ । हे महाराज इसके अनन्तर भाइयों समेत बड़ेभारी युद्ध करनेको उत्सुक प्रतापवान शकुनी चला । ४९ । उस वीरने युद्धमें भयानक पराक्रमी भीमसेन को पाकर उस को ऐसे रोका जैसे कि समुद्रकी मर्य्यादा समुद्रको रोकलेती है । ५० । तीक्ष्णबाणों से रोकाहुआ भीमसेन उसकी ओर को लौटा और शकुनीने उस के हाथ और छातीपर सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार नाराचोंको चलाया । ५१ । फिर वह कंकपक्ष से जटित घोर बाण महात्मा पांडव भीमसेन के कवच को काटकर शरीर में घुसगये । ५२ । फिर युद्ध में अत्यन्त घायल उस भीमसेन ने क्रोधयुक्त होकर सुवर्ण जटित बाण को शकुनी के ऊपर चलाया । ५३ । हे राजा शत्रुसंतापी हस्तलाघवी महाबली शकुनी ने उस आतेहुये घोर बाण को सातखण्ड करादिया । ५४ । हे राजा उस बाण के पृथ्वी में गिरनेपर क्रोधयुक्त हँसतेहुये

ever direction he went. Seeing the prowess of Bhim, Duryodhan said to Shakuni, "Conquer mighty Bhim, uncle. I think that all the Pandav army will be easy of conquest when you have conquered him." At this, brave Shakuni, with his brothers, went on to fight. Having found Bhim of dreadful prowess, he checked him as the coast checks the Ocean. 50. Checked by sharp arrows, Bhim turned towards him, and Shakuni discharged his sharp arrows at his arms and breast. The dreadful arrows, fitted with Kank feathers pierced the armour of Bhim and entered his body. Exceedingly wounded, Bhim discharged a gold-decked arrow at Shakuni; but the latter cut

भल्लेन सौबलस्य हसन्निव ॥ ५५ ॥ तदपास्य धनुश्छिन्नं सौबलेयः प्रतापवान् । अन्य दादाय वेगेन धनुर्भल्लांश्च षोडश ॥ ५६ ॥ तैस्तस्य तु महाराज भल्लैः सन्नतपर्वभिः । द्वाभ्यां स सारथिं ह्याच्छंत् भीमं सप्तभिरेव च ॥ ५७ ॥ ध्वजमेकेन चिच्छेद छत्रं द्वाभ्यां विशाम्पते । चतुर्भिश्चतुरो वाहान् विव्याध सुबलात्मजः ॥ ५८ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज भीमसेनः प्रतापवान् । शक्तिं चिक्षेप समरे रुक्मदण्डामयस्मयीम् ॥ ५९ ॥ सा भीमभुजनिर्मुक्ता नागजिह्वेव चञ्चला । निपपात रणे तूर्णं सौबलस्य महात्मनः ॥ ६० ॥ ततस्तामेव संगृह्य शक्तिं कनकभूषणाम् । भीमसेनाय चिक्षेप क्रुद्धरूपो विशां पते ॥ ६१ ॥ सा निर्भिद्य भुजं सव्यं पाण्डवस्य महात्मनः । निपपात तदा भूमौ यथा विद्युन्नभश्च्युता ॥६२॥ अथोत्क्रुष्टं महाराज धार्तराष्ट्रैः समन्ततः । न तु तं ममृषे भीमः सिंहनादं तरस्विनाम् ॥ ६३ ॥ अन्यद्गृह्य धनुः सज्यं त्वरमाणो महाबलः । मुहूर्तादिव राजेन्द्र छादयामास सायकैः । सौबलस्य बलं संख्ये त्यक्त्वात्मानं महाबलः

भीमसेनने भल्लसे शकुनी के धनुषको काटा । ५५ । फिर प्रतापवान् शकुनीने उसधनुष को डालकर वेगसे दूसरे धनुष और सोलह भल्लोंको लेकर उन टेढ़े भल्लोंमें से दो भल्लों से उसके सारथी को और सात भल्लों से भीमसेन को घायल किया फिर एकसे ध्वजा को और दो भल्लों से छत्रको काटकर सौबलने चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल किया । ५८ । इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने युद्धमें सुनहरी दण्डवाली शक्ति को फेंका । ५९ । भीमसेन की भुजासे छोड़ी हुई वह सर्पकी जिह्वा के समान चंचल शक्ति युद्धमें शीघ्रही महात्मा शकुनीके ऊपर गिरी । ६० । इसके पीछे क्रोधरूप शकुनी ने उस सुवर्ण से अलंकृत शक्ति को लेकर भीमसेन के ऊपरफेंका । ६१ । तब वह महात्मा पाण्डवकी वामभुजा को छेदकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि आकाश से गिरी हुई बिजली होती है । ६२ । इसके पीछे धृतराष्ट्र के लड़कों ने चारों ओरसे बड़ा शब्द किया फिर उन वीरों के सिंहनाद को न सहकर बड़े भारी अलंकृत धनुष को लेकर अपने जीवन की आशा को त्यागकरके युद्ध में एक मुहूर्त मेंही शकुनी को सेना को शायकोंसे ढक

it down into seven parts. At the fall of that arrow, Bhim, smiling in rage, cut asunder Shakni's bow. He dropped the broken bow and taking up another, with sixteen darts, wounded the driver with two, Bhim with seven, his standard with one and having cut his umbrella with two, wounded his horses with four arrows. Then mighty Bhim, much enraged, hurled his spear with the golden handle. The sharp spear, like a serpent's tougue, discharged by Bhim, fell down upon Shakuni. 60. The latter seized it in his hand and sent it back towards Bhim, and piercing Bhim's arm, it fell down on earth like lightning. At this, the sons of Dhritrashtra cried with joy. Bhim could not bear their leonine roars and covered Shakuni's army with

॥ ६५ ॥ तस्याश्वांश्चतुरो हत्वा सूतं चैव विशाम्पते । ध्वजं चिच्छेद भल्लेन त्वर माणः पराक्रमी ॥ ६६ ॥ हताश्वं रथमुत्सृज्य त्वरमाणो नरोत्तमः । तस्थौ विस्फार यंश्चापं क्रोधरक्तेक्षणः श्वसन् ॥ ६७ ॥ शरैश्च बहुधा राजन् भीममाच्छेत् समन्ततः । प्रतिहत्य तु वेगेन भीमसेनः प्रतापवान् । धनुश्चिच्छेद संक्रुद्धो विव्याध च शितैः शरैः ॥ ६८ ॥ सोतिविद्धो बलवता शत्रुणा शत्रुकर्षणः । निपपात ततो भूमौ किञ्चित्प्राणो नराधिप ॥ ६९ ॥ ततस्तं विह्वलं ज्ञात्वा पुत्रस्तव विशाम्पते । अपोवाह रथेनाजौ भीम सेनस्य पश्यतः ॥ ७० ॥ रथस्थे तु नरव्याघ्रे धार्त्तराष्ट्राः पराङ्मुखाः । प्रदुद्रुवुर्दिशो भीता भीमाज्जाते महाभये ॥ ७१ ॥ सौबले निर्जिते राजन् भीमसेनेन धन्विना । भयेन महताविष्टः पुत्रो दुर्य्योधनस्तव ॥ ७२ ॥ अपायाज्जवनैरश्वैः सापेक्षो मातुलं प्रति ॥ ७३ ॥ पराङ्मुखन्तु राजानं दृष्ट्वा सैन्यानि भारत । विप्रजग्मुः समुत्सृज्य द्वैरथानि

दिया । ६५ । हे राजा फिर शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेन ने उसके चारों घोड़ों समेत सारथीको मारकर भल्लसे उसकी ध्वजा को भी काटा । ६६ । फिर वह नरोत्तम भी शीघ्रताकरके मृतक घोड़ोंके रथको त्यागकर धनुषको टंकार क्रोधमें लालनेत्र करके सम्मुख नियत हुआ । ६७ । और भीमसेन को चारोंओर से बाणों के द्वारा मोहित किया फिर अत्यन्त प्रतापवान् भीमसेन ने बड़े वेग से उनको निष्फल करके धनुषको काटकर तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे महापीड़ितकिया । ६८ । पराक्रमी शत्रुसे अत्यन्त घायलहुआ वह शत्रुविजयी शकुनी कुछ प्राणशेष होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ६९ । हे राजा इसके पीछे आपका पुत्र उसको अचेत जानकर भीमसेन के देखतेहुये युद्धभूमि से रथकी सवारीमें बैठाकर हटालेगया ।७०। फिर उस नरोत्तम के रथपर सवार होने और भीमसेन को बड़ाभय उत्पन्न होनेपर और धनुषधारी भीमसेन के हाथसे शकुनी के विजय होनेपर धृतराष्ट्र के पुत्र मुख मोड़ मोड़कर भयभीत होकर दशों दिशाओं को भागे । ७२ । बड़े भय से पूर्ण अपने मामाका चाहनेवाला आपका पुत्र दुर्य्योधन शीघ्रगामी घोड़ों के द्वाराहटगया । ७३ । हे भरतवंशी सेनाके सबलोग राजाको मुखफरकर हटाहुआ देख कर

arrows from his great bow. 65. Then he killed his horses and driver and cut down his standard. Shakuni left his car, and with eyes red in anger, opposed Bhim, twanging his bow. He made Bhim insensible by his arrows. The latter then cut down his arrows and bow and wounded him with sharp arrows. Exceedingly wounded by him, Shakuni the destroyer of foes, fell down on earth, nearly dead. Seeing him insensible, your son removed him to a distant place. 70. When Shakuni had thus been carried away wounded and defeated by Bhim, the sons of Dhritrashtra turned back and flew in all directions. Your son terrified and fearing for the life of his uncle Shakuni, went away from the field of battle. Other warriors too,

समन्ततः ॥ ७४ ॥ तान् दृष्ट्वा विद्रुतान् सर्वान् धार्त्तराष्ट्रान् पराङ्मुखान् । जवेनाऽभ्यपतद्भीमः किरन् शरशतान् बहून् ॥ ७५ ॥ ते वध्यमाना भीमेन धार्त्तराष्ट्राः पराङ्मुखाः कर्णमासाद्य समरे स्थिता राजन् समन्ततः ॥ ७६ ॥ स हि तेषां महावीर्यो द्वीपोभूत् सुमहाबलः । भिन्ननौका यथा राजन् द्वीपमासाद्य निर्वृताः ॥ ७७ ॥ भवन्ति पुरुषव्याघ्र नाविकाः कालपर्यये । तथा कर्णं समासाद्य तावका भरतर्षभ ॥ ७८ ॥ समाश्वस्ताः स्थिता राजन् संप्रहृष्टाः परस्परम् । समाजग्मुश्च युद्धाय मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ७९ ॥

इति कर्णपर्वणि शकुनिपराजयेसप्तसप्ततोऽध्यायः ७७ ॥

चारोंओर से द्वैरथियों को छोड़कर भागे । ७४ । तब भीमसेनने उन घायल भय भीत मुख मोड़करभागनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखकर सैकड़ों बाणोंकी वर्षा करताहुआ वेगसे उन सबके सम्मुख दौड़ा । ७५ । हे राजा भीमसेन के हाथ से घायल चारोंओर से मुख मोड़नेवाले वह धृतराष्ट्रकेपुत्र कर्णको पाकर युद्ध में नियत हुये । ७६ । वह बड़ा पराक्रमी बलवान कर्ण उनका ऐसे रक्षकहुआ जैसे कि टूटीहुई नौका टापू को पाकर नियत होजाती है । ७७ । हे पुरुषोत्तम समय के लौट पौट होनेपर जैसी दशावाली पतवार होती है वैसेही आपके शूर वीर लोगभी पुरुषोत्तम कर्णको पाकर उसी दशावाले हुये । ७८ । हे राजा वह परस्पर में विश्वास युक्त अत्यन्त प्रसन्न नियतहुये और मृत्युको हथेली पर रख कर युद्ध के निमित्त गये । ७९ ।

fled away at the flight of their king and were chased by Bhim and his dreadful arrows. 75. Chased by Bhim, the sons of Dhritrashtra stood by Karan, who protected them as an island does those who are wrecked in a storm. They turned to Karan for protection like a boat and regardless of their life, they began fighting, relying on mutual help," 79.



धृतराष्ट्र उवाच । तथा भग्नेषु सैन्येषु भीमसेनेन संयुगे । दुर्योधनोऽब्रवीत् किन्नु सौबलो वापि सञ्जय ॥ १ ॥ कर्णो वा जयतां श्रेष्ठो योधा वा मामका युधि । कृपो वा कृतवर्मा वा द्रौणिर्दुःशासनोऽपि वा ॥ २ ॥ अत्यद्भुतमहं मन्ये पाण्डवस्य विक्रमम् यदेकः समरे सर्वान् योधयामास मामकान् । ३ । यथाप्रतिज्ञं योधानां राधेयः कृतवानपि । कुरूणामपि सर्वेषां कर्णः शत्रुनिषूदनः । शर्म वर्म प्रतिष्ठा च जीविताशा च सञ्जय । ४ । तत् प्रभग्नं बलं दृष्ट्वा कौन्तेयेनामितौजसा । राधेयो ह्याधिरथिः कर्णः किमकरोद् युधि ॥ ५ ॥ पुत्रा वा मम दुर्धर्षा राजानो वा महारथाः । एतन्मे सर्वमाचक्ष्व कुशलो ह्यसि सञ्जय ॥ ६ ॥ सञ्जय उवाच । अपराह्णे महाराज सूतपुत्रः प्रतापवान् । जघान सोमकान् सर्वान् भीमसेनस्य पश्यतः ॥ ७ ॥ भीमोऽप्यति बलं सैन्यं

अध्याय ॥ ५८ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तब युद्ध में भीमसेन के हाथसे सेनाके पराजय होने पर दुर्योधन ने वा शकुनीने क्या कहा । १ । विजय करनेवालों में श्रेष्ठ कर्ण वा मेरे शूरवीर कृपाचार्य कृतवर्मा अश्वत्थामा और दुश्शासन इन सब ने युद्ध में क्या क्या कहा मैं पांडव भीमसेन के पराक्रम को अत्यन्त अद्भुत और अपूर्व मानता हूं कि उस अकेलेनेही युद्ध में मेरे सब शूरवीरों से युद्धकिया । ३ । और राधा के पुत्र शत्रुहन्ता कर्ण ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सब शूरवीरों समेत कौरवों को कल्याण रक्षा स्थिरता वा जीवन की आशा को निष्फल किया । ४ । हे सञ्जय बड़े तेजस्वी भीमसेन के हाथसे छिन्न भिन्न होजानेवाली उस सेनाको देखकर । ५ । अधिरथी कर्ण मेरे पराजित पुत्र और बड़ेमहारथी राजाओंने युद्धमें क्या किया यह सब मुझसे कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर और सावधानहो । ६ । संजय बोले हे महाराज प्रतापवान् कर्ण ने तीसरे पहरमें भीमसेन के देखतेहुये सब सोमकों को मारा । ७ । और भीमसेनने भी दुर्योधन की बड़ी पराक्रमी सेना को सबके देखतेहुये मारा इसके पीछे कर्ण ने शल्यसे कहा कि मुझको पांचालों के समीप पहुँचाओ । ८ । अर्थात् अद्भुत पराक्रमी भीमसेन के हाथसे सेनाको

आस्तराद्दं स्थपोथयत् । अथ कर्णोऽब्रवीच्छल्यं पाञ्चालान् प्रापयस्व माम् ॥ ८ ॥ द्रोणस्य मार्गं धलं स्पष्ट्वा भीमसेनेन धीमता । यन्ताऽमब्रवीत् कर्णः पाञ्चालानेव मां वह ॥ ९ ॥ मद्रराजस्ततः शल्यः श्वेतानश्वान् मनोजवान् । प्राहिणोच्चेदि पाञ्चालान् कारूषांश्च महाबलः ॥ १० ॥ प्रविश्य च महत् सैन्यं शल्यः परबलार्दनः न्ययच्छत्तुरगान् हृष्टो यत्र यत्र च्छन्दवर्णी: ॥ ११ ॥ तं रथं मेघसङ्काशं वैयाघ्रपरिवारणम् । संदृश्य पाण्डुपाञ्चाला त्रस्ता आसन् विशाम्पते ॥ १२ ॥ ततो रथस्य निनदः प्रादुरासीन्महारणे । पर्जन्यसमनिर्घोषः पर्वतस्येव दीर्यतः ॥ १३ ॥ ततः शराशतैस्तीक्ष्णैः कर्ण आकर्णनिःसृतैः । जघान पाण्डवबलं शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १४ तं तथा समरे कर्म कुर्वाणमपराजितम परिवव्रुर्महेष्वासाः पाण्डवानां महारथाः ॥ १५ ॥ तं शिखण्डी च भीमश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । नकुलः सहदेवश्च द्रौपदेयाश्च सत्यकिः ॥ १६ ॥ परिवव्रुर्जिघांसन्तो राधेयं शरवृष्टिभिः ॥ १७ ॥ सात्यकिस्तु तदा कर्णं विंशत्या निशितैः शरैः । अताडयद्रणे शूरो जत्रु

आगाहुआ देखकर कर्णने अपने सारथी शल्यसे कहा कि मुझको पांचालों के सम्मुख लेचलो । ९ । इसके पीछे बड़े बलवान् मद्रदेश के राजा शल्यने बड़े शीघ्रगामी श्वेतघोड़े को चंदेरी पांचाल और कारूष्य देशियों के सम्मुख पहुँचाए । १० । शत्रु की सेना के मर्दन करनेवाले शल्यने उस बड़ी सेनामें प्रवेश कर के घोड़ों को वहां चलाया जहां उस सेनापति कर्णने चाहाथा । ११ । हे राजा पाण्डव और पाञ्चाल उस बादल के रूप व्याघ्रचर्म से मढ़हुये रथको देखकर भयभीत हुये । १२ । इसके अनन्तर उस बड़े युद्ध में उस रथ का शब्द बादल के गर्जने के समान ऐसा प्रकट हुआ जैसे कि फटतेहुये पर्वत का शब्द होता है । १३ । इसके पीछे कर्ण ने कानतक खैंचहुये धनुष के छोड़े हुये बाण समूहों से पाण्डवी सेनाके हजारों मनुष्यों को मारा । १४ । पाण्डवों के महारथी बड़ेधनुषधारियों ने युद्ध में ऐसे कर्म करने वाले उस अजेय कर्ण को घेरलिया । १५ । शिखण्डी भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव द्रौपदी के पुत्र और सात्यकि । १६ । बाणोंकी वर्षा से कर्ण के मारने के अभिलाषी इन सब शूरवीरों ने जब कर्ण को

Panchals." Shalya the king of Madra at once drove the car into the army of Panchal and Karushya. 10. Shalya the destroyer of foes drove the car to the places directed by Karan. The Pandavas and *Panchals were terrified to see that car lined by tiger's hide.* The rumbling of its wheels was like thunder or the breaking through of a mountain. Then Karan slew thousands of the Pandav warriors with his well-aimed arrows. The great Pandav archers surrounded Karan. 15. Shikhandi, Bhim, Dhrishtadyumn, Nakul, Sahadev, the sons of Draupadi and Satyaki, desirous of slaying Karan with their arrows, surrounded him. Satyaki wounded him with twenty arrows. Shikhandi, Dhrishtadyumn, the sons of Draupadi, Sahadev and

देशे नरोत्तमः ॥ १८ ॥ शिखण्डी पञ्चविंशत्या धृष्टद्युम्नस्तु सप्तभिः । द्रौपदेयाश्चतुः षष्ट्या सहदेवश्च सप्तभिः । नकुलश्च शतेनाजौ कर्णं विव्याध सायकैः ॥ १९ ॥ भीमसेनस्तु राधेयं नवत्या नतपर्वणाम् । विव्याध समरे क्रुद्धो जत्रुदेशे महाबलः ॥ २० ॥ अथ प्रहस्याधिरथिर्विक्षिपन् धनुरुत्तमम् । मुमोच निशितान् बाणान् पीडयन् सुमहाबलः । तान् प्रत्यविध्यद्राधेयः पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः ॥ २१ ॥ सात्यकेस्तु धनुश्छित्वा ध्वजं च भरतर्षभ । तथैव नवभिर्बाणैराजघान स्तनान्तरे ॥ २३ ॥ भीमसेनं ततः क्रुद्धो विव्याध त्रिंशता शरैः । सहदेवस्य भल्लेन ध्वजं चिच्छेद मारिष । सारथिं च त्रिभिर्बाणैराजघान परन्तपः ॥ २४ ॥ विरथान् द्रौपदेयांश्च चकार भरतर्षभ । अक्ष्णोर्निमेषमात्रेण तदद्भुतमिवाभवत् ॥ २५ ॥ विमुखीकृत्य तान् सर्वान् शरैः सन्नतपर्वभिः । पञ्चालानहनत् शूरश्चेदीनाञ्च महारथान् ॥ २६ ॥ ते वध्यमानाः समरे चेदिमत्स्या विशाम्पते । कर्णमेकमभिद्रुत्य शरसंघैः समार्पयन् ॥ २७ ॥ तान् जघान शिते

घेरलिया तब नरोत्तम शूर सात्यकिने तीक्ष्णधारवाले बीस बाणों के कर्ण को युद्धमें जत्रुस्थान पर घायल किया १८ । शिखण्डी ने पच्चीस बाणोंसे धृष्टद्युम्न ने सात बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रों ने चौसठ बाणों से सहदेवने सात बाणों से नकुल ने सौ बाणोंसे उस कर्ण को पीड़ामान किया । १९ । और बड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने युद्धमें टेढ़े पर्ववाले नव्वे बाणोंसे कर्णको जत्रुआदि अंगोंपर पीड़ित किया । २० । इसके पीछे बड़े बली कर्णने बहुत हँसकर अपने धनुष को टंकारकर बाणोंको छोड़ा हे भरतर्षभ कर्णने उन सबको पांच २ बाणोंसे व्यथित किया । २२ । और सात्यकि के धनुष ध्वजाको काटकर नौ बाणोंसे उसको छातीपर घायल किया । २१ । फिर उस क्रोधयुक्तने तीनसौ बाणोंसे भीमसेन को पीड़ामान किया और भल्ल से सहदेव की ध्वजा को काट उस शत्रुसंतापी ने तीन बाणों से उसके सारथी को मारा । २४ । और एक पलमात्रमें ही द्रौपदी के पुत्रों को विरथ कर दिया यह बड़ा आश्चर्यता हुआ । २५ । टेढ़े पर्ववाले बाणों से उन सबका मुख मोड़कर पांचाल और चंदेरीदेशके बड़े महारथी शूरवीरों को मारा । २६ । हे राजा युद्धमें घायल उन चंदेरी देशियों ने अकेले कर्णके सम्मुख जाकर उसको

Nakul wounded him with twenty five, seven, sixtyfour, seven and hundred arrows respectively. Mighty Bhimsen, in his rage, wounded Karan with ninety arrows. 20. Then mighty Karan, with a smile, twanged his bow and discharged five arrows at each of them. He wounded Satyaki with nine arrows and cut his standard. He wounded Bhim with three hundred arrows and having cut down the standaad of Sahadev, slew his driver with three arrows. He made the sons of Draupadi carless to the amazement of all. 25. Having defeated the above-named warriors, he destroyed the brave men of Panchal and Chanderi. The warriors of Chanderi surrounded Karan and wounded

र्णैः सूतपुत्रो महारथः। एतदत्यद्भुतं कर्म दृष्टवानस्मि भारत। यदेकः समरे शूरान् सूतपुत्रः प्रतापवान् ॥ २८ यतमानान् परं शक्त्या योधयंस्तांश्च धन्विनः। पाण्डवेयान् महाराज शरैर्वारितवान्रणे ॥ २९ ॥ तत्र भारत कर्णस्य लाघवेन महात्मनः। तुतुषुर्देवताः सर्वाः सिद्धाश्च सह चारणैः ॥ ३० ॥ अपूजयन्महेष्वासा धार्त्तराष्ट्रा नरोत्तम। कर्णं रथवरश्रेष्ठं श्रेष्ठं सर्वधनुष्मताम्। ततः कर्णो महाराज ददाह रिपुवाहिनीम्। कक्षमिद्धो यथा वह्निर्निदाघे ज्वलितो महान् ॥ ३१ ॥ ते वध्यमानाः कर्णेन पाण्डवेयास्ततस्ततः। प्राद्रवन्त रणे भीताः कर्णं दृष्ट्वा महारथम् ॥ ३२ ॥ तत्राक्रन्दो महानासीत् पाञ्चालानां महारणे। वध्यतां सायकैस्तीक्ष्णैः कर्णचापवरच्युतैः ॥३३॥ तेन शब्देन वित्रस्ता पाण्डवानां महाचमूः कर्णमेकं रणे योधं मेनिरे तत्र शात्रवाः ३४ ॥ तत्राद्भुतं पुनश्चक्रे राधेयः शत्रुकर्षणः। यदेनं पाण्डवाः सर्वे न शेकुरभिवीक्षितुम् ॥ ३५ ॥ यथौघः पर्वतश्रेष्ठमासाद्याभिदीर्य्यते। तथा तत् पाण्डवं सैन्यं कर्णमासाद्य दीर्य्यते ॥ ३६ ॥ कर्णोऽपि समरे राजन् विधूमोऽग्निरिव ज्वलन्। दहंस्तस्थौ महा

बाणों के समूहों से घायल किया। २७। हे महाराज जो अकेले प्रतापी कर्ण ने युद्धमें बड़ी सामर्थ्य से उपाय करनेवाले धनुषधारी शूर युद्धकर्त्ता पाण्डवों को बाणों से रोका वहां महात्मा कर्ण की हस्तलाघवता से सिद्ध चारणों समेत सब देवता प्रसन्न हुये। २९। और बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों ने उस महारथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ कर्णकी प्रशंसाकरी। ३०। हे महाराज इसके पीछे कर्णने शत्रुओंकी सेनाका ऐसा नाशकरदिया जैसे कि ऊष्म ऋतु में बड़ा प्रज्वलित दावाग्नि वनको जलाता है। ३१। उस प्रचण्डअग्नि के समान कर्ण से घायल हुये वह सब पाण्डव महारथी कर्ण को देखकर इधर उधर भयभीत होकर भागे। ३२। वहां उस बड़े युद्धमें कर्ण के उत्तम धनुषसे निकले हुये तीक्ष्ण शायकोंसे घायल पांचाल लोगोंके बड़ेभारी शब्दहुये। ३३। उन शब्दोंसे पाण्डवों की बड़ीसेना अत्यन्त भयभीत हुई वहां शत्रुओंके मनुष्योंने युद्धमें अकेले कर्णकोही शूरवीर युद्धकर्त्ता माना। ३४। तब शत्रुओंके पीड़ा करनेवाले कर्णने फिरभीअद्भुत कर्मकिया कि कोई पाण्डव उसकी ओर देखने कोभी समर्थ नहीं हुआ। ३५। जैसे कि जलका प्रवाह उत्तम पर्वत को पाकर रुकजाता है उसीप्रकार वह पाण्डवी सेना कर्णको पाकर छिन्नभिन्न होगई। ३६। हे राजा युद्धमें महाबाहु कर्णभी

him with their sharp arrows. The Sidhas and gods were pleased with the dexterity of Karan, who alone checked all the Pandav warriors. The sons of Dhritrashtra prrised him. 30. Then Karan destroyed the Pandav army, as fire destroys a forest in summer. ; Wounded by his weapons the warriors fled away in all directions. wounded by the arrows discharged from Karan's excellent bow, the Panchals cried out in dismay to the great fear of the Pandavas. The enemies thougt that Karan was the only warrior there. That destroyer of foes did a

बाहुः पाण्डवानां महाचमूम् ॥ ३७ ॥ शिरांसि च महाराज कर्णांश्चैव सकुण्डलान् ।
बाहूंश्च वीरो वीराणां चिच्छेद लघु चेषुभिः ॥ ३८ ॥ हस्तिदन्तत्सरून् खड्गान्
ध्वजाञ् शक्तीर्हयान् गजान् । रथांश्च विविधान्राजन् पताका व्यजनानि च ॥ ३९ ॥
अक्षांश्च युगयोक्त्राणि चक्राणि विविधानि च । चिच्छेद बहुधा कर्णो योधव्रतमनुष्ठितः
॥ ४० ॥ तत्र भारत कर्णेन निहतैर्गजवाजिभिः । अगम्यरूपा पृथिवी मांसशोणितकर्दमा ॥ ४१ ॥ विषमञ्च समञ्चैव हतैरश्वपदातिभिः । रथैश्च कुञ्जरैश्चैव न प्राज्ञायत
किञ्चन ॥ ४२ ॥ नापि स्वे न परे योधाः प्राज्ञायन्त परस्परम् । घोरे शरान्धकारे तु
कर्णास्त्रे च विजृम्भिते ॥ ४३ ॥ राधेयचापनिर्मुक्तैः शरैः काञ्चनभूषणैः । संछादिता
महाराज पाण्डवानां महारथाः ॥ ४४ ॥ ते पाण्डवेयाः समरे राधेयेन पुनः पुनः ।
अभज्यन्त तदा राजन् यतमाना महारथाः ॥ ४५ ॥ मृगसंघान् यथा क्रुद्धः सिंहो द्राव
यते वने । पाञ्चालानां रथश्रेष्ठान् द्रावयञ्छात्रवांस्तथा ॥ ४६ ॥ कर्णस्तु समरे योधां

निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान पाण्डवों की बड़ी सेनाको भस्मकरताहुआ नियत
होकर । ३७ । उस शूरवीर ने युद्ध करनेवाले वीरों के कुंडल धारण कियेहुये
शिरोंको और भुजाओं को बड़ी तीव्रतासे अपने बाणों के द्वारा काटडाला । ३८ ।
हे राजा युद्ध व्रतधारी कर्णने हाथीदांत के कब्जा रखनेवाले खड्ग ध्वजा और
शक्तियोंको घोड़े हाथी वा अनेक प्रकार के रथ पताका व्यजन अक्षयुग योक्त्र
और बहुत रूपके चक्रोंको बहुत प्रकारों से काटा । ४० । हे भरतवंशी वहां कर्णके
हाथसे मारेहुये हाथी घोड़ों के कारण से वह पृथ्वी रुधिर मांसकी पंकवाली होकर
महाअगम्य होगई । ४१ । मृतक घोड़े पदाती रथ और हाथियों के हेतुसे पृथ्वीकी
समता और असमता नहीं जानीगई । ४२ । अपने और दूसरों के शूरवीरभी
परस्पर में नहीं जानेगये हे महाराज कर्णके अस्त्र और बाणोंसे घोर अन्धकार
होजानेपर उसके धनुषसे छूटेहुये सुवर्ण जटित बाणों से पाण्डवों के महारथी ढक
गये । ४४ । और वह सब कर्णसे लड़नेवाले पाण्डवों के महारथी वारम्वार कर्ण
से पराजित हुये । ४५ । और जैसे कि वनमें मृगोंके समूहों को सिंह भगाता है
उसीप्रकार पाञ्चालों के उत्तमरथी और शत्रुओं के मनुष्यों को भगाते और युद्धमें

woderful deed and none of the Pandavas could look him in the face. 35. The Pandav army dispersed before Karan as the waters of a river coming i contact with a mountain. Standing in battle like a smokeless fire, he cut off with arrows the heads of warriors adorned with ear-rings. He cut off swords having ivory handles, standards, spears, horses, elephants cars, fans, yokes and wheels. 40. The ground covered with the bodies of elephants, and horses, had a mire of flesh and blood. The unevenness of the ground disappeared on acconht of the dead bodies. The warriors of the two sides were mixed together. Karan's arrows darkened the air and covered the Pandav warriors. The latter were

त्रस्त तत्र महायशाः । कालयामास पाण्डूनां यथा पशुगणान् वृकः ॥ ४७ ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डवीं सेनां धार्त्तराष्ट्राः पराङ्मुखीम् । अभिजग्मुर्महेष्वासा रुवन्तो भैरवान्रवान् ॥ ४८ ॥ दुर्योधनो हि राजेन्द्र मुदा परमया युतः । वादयामास संहृष्टो नानावाद्यानि सर्वशः ॥ ४९ ॥ पाञ्चालापि महेष्वासा भग्नास्तत्र नरोत्तमाः । न्यवर्त्तन्त यथा शूरं मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ५० ॥ तान्निवृत्तान्रणे शूरान् राधेयः शत्रुतापनः । अनेकशो महाराज बभञ्ज पुरुषर्षभः ॥ ५१ ॥ तत्र भारत कर्णेन पाञ्चाला विंशती रथाः । निहताः सावकैर्योधाश्चेदयश्च परः शताः ॥ ५२ ॥ कृत्वा शून्यान् रथोपस्थान् वाजिपृष्ठांश्च भारत । निर्मनुष्यान् गजस्कन्धान् पादातांश्चैव विद्रुतान् ॥ ५३ ॥ आदित्य इव मध्याह्ने दुर्निरीक्ष्यः परन्तपः । कालान्तकवपुः शूरः सूतपुत्रो व्यराजत ॥ ५४ ॥ एवमेतन्महाराज नरवाजिरथद्विपान् । हत्वा तस्थौ महेष्वासः कर्णोऽरिगणसूदनः ॥ ५५ ॥ यथा भूतगणान् हत्वा कालस्तिष्ठेन्महाबलः । तथा स सोमकान्हत्वा तस्थावेको महा

शूरवीरों को डराते बड़ेयशस्वी कर्णने उस सेनाको ऐसे भगाया जैसे कि भेड़िया पशुओं के समूहों को भगाता है । ४७ । फिर बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्र पाण्डवी सेनाको मुख मुड़ाहुआ देखकर भयानक शब्दोंको करतेहुये वहां आये । ४८ । और अत्यन्त प्रसन्नचित्त दुर्योधनने अनेकप्रकार के सब बाजों को बजवाया ।४९ । वहांपर पराजितहुये नरोत्तम पांचाल देशी भी शरीरकीआशा छोड़कर शूरों के समान लौटे ।५० । हेमहाराज फिर कर्ण ने उन लौटहुये शूरवीरों को बहुतप्रकारसे पराजयकिया । ५१ । उस युद्धमें क्रोधयुक्त कर्ण के बाणों से पांचालों के बीस रथी और सैकड़ों चंदेरी के वासी मारेगये । ५२ । फिर वह शत्रुसंतापी कर्ण रथोंको रथकी बैठक और उत्तम घोड़ों की पीठ और हाथियों के कन्धों को सवारों से रहितकर पदातियों को भगाता मध्याह्न के सूर्य्य के समान कठिनतासे दर्शनकेयोग्य मृत्यु वा कालके समान शरीरको धारणकिये शोभायमान हुआ । ५५ । हे महाराज इसरीति से शत्रुओं के समूहों को मारनेवाला बड़ा धनुषधारी कर्ण मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को मारकर ऐसे नियतहुआ जैसे कि बड़ा पराक्रमी काल जीवों के समूहों को मारकर नियत होता है इसी प्रकार वह अकेला महारथी सोमकोंको मारकर नियतहुआ । ५६ । वहांपर हमने पांचालों

again and again routed by the former. He routed the Panchal warriors as a lion does a herd of deer or as a wolf terrifies animals. 47. The sons of Dhritrashtra, seeing the Pandavas routed, came on with dreadful yells, Duryodhan in his joy ordered musical instruments to to be sounded. The Panchal warriors, losing all hope of life, turned back. 50. Karan routed them again. He slew twenty warriors of the Panchals and hundreds of Chanderis. That destroyer of foes made the seats on cars, horseback and elephants' shoulders destitute of riders. Putting the foot soldiers to flight, he shone like the sun at noon and was dreadful

महारथाः । एते रक्षन्ति राजानं सूतपुत्रेण रक्षिताः । अवध्यमानास्तेऽस्माभिः पातयि
ष्यन्ति सोमकान् ॥ १० ॥ एष शल्यो रथोपस्थे रश्मिसंचारकोविदः । सूतपुत्ररथं
कृष्ण वाहयन्वहु शोभते ॥ ११ ॥ तत्र मे बुद्धिरुत्पन्ना वाहयात्र महारथम् । नाहत्वा
समरे कर्णं निवर्तिष्ये कथञ्चन ॥ १२ ॥ राधेयोऽप्यन्यथा पार्थान् सृञ्जयांश्च महार
थान् । निःशेषान्समरे कुर्यात् पश्यतो नो जनार्दन ॥ १३ ॥ ततः प्रायाद्रथेनाशु केश
वस्तव वाहिनीम् । कर्णं प्रति महेष्वासं द्वैरथे सव्यसाचिना ॥ १४ ॥ प्रयातश्च महा
बाहुः पाण्डवानुज्ञया हरिः । आश्वासयन्रथेनैव पाण्डुसैन्यानि सर्वशः ॥ १५ ॥ उद्
घोषः स संग्रामे पाण्डवेयस्य संबभौ । वासवाशनितुल्यस्य महौघस्येव मारिष ॥ १६ ॥
महता रथघोषेण पाण्डवः सत्यविक्रमः । अभ्ययादप्रमेयात्मा निर्जयंस्तव वाहिनीम् ॥ १७ ॥

शोभित होरहाहै । ८ । महारथी अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य । ९ । यह सबभी कर्ण से रक्षितहोकर राजाकी रक्षाकरते हैं वह हम सबसे अवध्य सोमकोंको मारेंगे । १० । और हे श्रीकृष्णजी रथवानों में कुशल यह शल्य रथके ऊपर बैठा हुआ कर्णके रथको अत्यन्त शोभित कररहाहै । ११ । वहां मैं चाहताहूं कि आप मेरे रथको लेचलो मैं युद्धमें कर्णको मारे विना किसीप्रकार से नहीं लौटूंगा ।१२। हे जनार्दनजी दूसरी दशामें यहकर्णहमारे देखतेहुये महारथी पाण्डव और सृंजियों का नाशकरेगा । १३ । इसके पीछे केशवजी अर्जुन समेत रथकी सवारीके द्वारा शीघ्रही द्वैरथ युद्ध में बड़े धनुषधारी कर्ण और आपकी सेना के सम्मुख गये ।१४। महाबाहु श्रीकृष्णजी अर्जुन के कहने से सब पांडवी सेनाको रथपरसेही विश्वास युक्त करतेहुये चले । १५ । उस भयकारी युद्ध में अर्जुन के रथका शब्द ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र वज्रके समान बड़े जल के वेगका शब्द होता है । १६ । सत्य पराक्रमी महासाहसी पांडव अर्जुन रथके बड़े शब्द समेत आपकी सेनाको विजय करताहुआ सम्मुख गया । १७ । मद्रका राजा शल्य श्वेत

crossed such a river, Arjun again said to Vasudev, "Yonder is seen the banner of Karan, and Bhim and other warriors are fighting with him. The Panchals are afraid of him and run away, Duryodhan who has white umbrella on his head, looks very beautiful as he puts to flight the Panchals defeated by Karan. Brave Ashwathama, Kritvarma and Kripacharya, protected by Karan, guard the king and will destroy the invincible Somaks. 10. Shalya, seated on the car to drive the horses, skilful in driving horses, looks very glorious. I request you to drive my car there, for I shall not return without slaying him. If not checked by us, he will destroy the Pandavas and Srinjayas." At this Keshav drove the car in your army to face Karan. He went on encouraging the Pandav army from his car. 15. The sound of Arjun's car wheels was dreadful like that of Indra's vajra,

कृष्ण सारथी द्वौ सहितस्य च ॥ २६ ॥ सिंहकेतुरथः पार्थस्त्वामभ्येति परन्तपः । क्रोधरक्तेक्षणः क्रुद्धो जिघांसुः सर्वपार्थिवान् ॥ २७ । त्वरितोऽभिपतत्यस्मां स्त्यक्त्वा सैन्यान्यसंशयम् । तं कर्ण प्रतियाहि त्वं नास्त्यन्यो हि धनुर्धरः । ॥ २८ ॥ न तं पश्यामि लोकेऽस्मिंस्त्वत्तो ह्यन्यं धनुर्धरम् । अर्जुनं समरे क्रुद्धं यो वेलामिव धारयेत् ॥ २९ ॥ न चास्य रक्षां पश्यामि पार्श्वतो न च पृष्ठतः । एक एवाभियाति त्वां पश्य साफल्यमात्मनः ॥ ३० ॥ त्वं हि कृष्णौ रणे शक्तः संसाधयितु माहवे । तवैष भारो राधेय प्रत्युद्याहि धनञ्जयम् । ३१ ॥ समानो ह्यसि भीष्मेण द्रोण द्रौणिकृपैरपि । सव्यसाचिनमायान्तं निवारय महारणे ॥ ३२ ॥ लेलिहानं यथा सर्पं गर्जन्तं मृषभं यथा । वनाश्रयं यथा व्याघ्रं जहि कर्ण धनञ्जयम् । ३३ ॥एते द्रवन्ति समरे धार्त्तराष्ट्रा महारथाः । अर्जुनस्य भयात्तूर्णं निरपेक्षा नराधिपाः ॥ ३४ ॥

इन दोनां वार भाइयोंको घायल देखिकर शत्रुओंका तपानेवाला अकेला रथी अर्जुन अकस्मात् तेरे सम्मुख आताहै वह क्रोध से रक्त नेत्र रोप में भरा सब राजाओंके मारनेका अभिलाषी शीघ्रतासे सेनाओंको त्यागताहुआ निस्सन्देह हमारे सम्मुख आताहै । २७ । हे कर्ण तुम शीघ्रही उसके सम्मुख चलो तेरे सिवाय इसलोक में दूसरे ऐसे धनुषधारी को नहीं देखताहूं । २८ । जो कि युद्धमें क्रोधयुक्त अर्जुन को मर्य्यादा के समान रोककर धारणकरे । २९ । मैं पीछे और दोनों दाहें बायें उसकी रक्षाको नहीं देखताहूं वह अकेलाही तेरे सम्मुख आताहै तुम अपने स्थानको देखो । ३० । हे राधा के पुत्र तुम्हीं युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन को अपने स्वाधीन करने को समर्थ हो यह तेराही भाररूप कार्य्य है तू अर्जुन के सम्मुख चल । ३१ । तुम भीष्म द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा और कृपाचार्य के समानहो इसहेतुसे महायुद्ध में इस आतेहुये अर्जुन को रोको । ३२ । हे कर्ण सर्प की समान होठों के चाबनेवाले वृषभ के समान गर्जनेवाले वनवासी व्याघ्र के समान अर्जुन को मारो । ३३ । यह महारथी धृतराष्ट्र के पुत्र और अन्य राजालोग युद्धमें अर्जुनके भय से बड़ी शीघ्रतासे भागते हैं । ३४ । हे सूतनन्दन

That destroyer of foes is coming directly against you. With eyes red in anger, Arjun the 'destroyer of foes,' comes against us, leaving all other warriors. 27. You must face him, for I see no other warrior in the world capable of resisting him. I see no guards on his right, left or back He is coming alone to seek you. Look at him. You alone can overpower Krishn and Arjun. The burden of doing so lies on you You are equal to Bhishm, Drona, and Ashwathama and should therefore check Arjun. Slay Arjun who is biting his lips, roaring like a bull and ferocious like a wild tiger. The sons of Dhritrashtra and other warriors are flying away for his fear. There is no warrior

द्रवतामथ तेषान्तु नान्योस्ति युधि मानवः । अपहा यो भवेद्वीरस्त्वामृते सूतनन्दन ॥ ३५ ॥ एते त्वां कुरव सर्वे द्वीपमासाद्य संयुगे । धिष्ठिताः पुरुषव्याघ्र त्वत्तः शरण काङ्क्षिणः ॥ ३६ ॥ वैदेहाम्बष्ठकाम्बोजास्तथा नग्नजितस्त्वया । गान्धाराश्च यया धृत्या जिताः संख्ये सुदुर्जयाः । तां धृतिं कुरु राधेय ततः प्रत्येहि पाण्डवम् ॥ ३७ ॥ वासुदेवञ्च वार्ष्णेयं प्रीयमाणंकिरीटिनाप्रत्युद्याहिमहाबाहोपौरुषेमहतिस्थितः॥३८॥कर्ण उवाच।प्रकृतिस्थोसिमेशल्यइदानींसम्मतस्तथाप्रतिभासिमहाबाहोविभीश्चैवधनञ्जयात् ॥३९॥पश्यबाह्वोर्बलं मेद्यशिक्षितस्यचपश्यमेएकोद्यनिहनिष्यामिपाण्डवानांमहाचमूम ॥ ४० ॥ कृष्णौ च पुरुषव्याघ्रौ तच्च सत्यं ब्रवीमि ते । नाहत्वा युधि तौ वीरौ व्यप यास्ये कथञ्चन । शिष्ये वा निहतस्ताभ्यामनित्यो हि रणे जयः ॥४१॥ कृतार्थोवा भवि ष्यामि हत्वा ताबथवा हतः । शल्य उवाच । अजय्यमेनं प्रवदन्ति युद्धे महारथाः

वीर कर्ण तेरे सिवाय अब दूसरा कोई ऐसा मनुष्य नहींहै जोकि उन भागेहुओं के भयको निवृत्तकरे । ३५ । हे पुरुषोत्तम यह सब कौरव युद्धमें तुझ रक्षकको पाकर तेरी रक्षा में आश्रित होनेकी इच्छा से नियत हैं । ३६ । वैदेह काम्बोज अम्बष्ठ नग्नजित और युद्ध में बड़ी कठिनतासे विजयहोनेवाले गान्धारदेशी जिस तेरे धैर्यमें विजय कियेगये हे राधाके पुत्र उस धैर्यको करके फिर पाण्डवों के सम्मुख चल । ३७ । हे महाबाहो बड़ीशूरतामें नियतहोकर उन यादव वासुदेव जीके सम्मुख चलो जोकि अर्जुनके साथ अत्यन्त प्रीति रखनेवाले हैं । ३८ । कर्ण बोला हेशल्य तुम अपने स्वभाव में नियत होजाओ हे महाबाहो अब तुम मुझको अंगीकृत विदितहोतेहो तुम अर्जुन से भयभीत मतहो । ३९ । अब मेरे भुजाओं के बलको और पाईहुई शिक्षाको देखो मैं अकेलाही इस पाण्डवोंकी बड़ी सेनाको मारूंगा । ४० । इसके अनन्तर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारूंगा यह तुम से सत्यही सत्य कहताहूं कि इनदोनों वीरोंको विना मारेहुये कभी न हटूंगा अथवा चाहे उन्हीं के हाथसे मरकर शयन करूंगा क्योंकि युद्धमें सदैवही विजय नहींहुआ करती है । ४१ । अथवैं उनको मारकर वा उनके हाथसे मरकर अपने मनोरथको सिद्ध करूंगा शल्य बोला हे कर्ण महारथी लोग युद्ध में इसरथियों में बड़े वीर

except you capable of encouraging them. 35. All the Kauravas are desirous of seeking your protection. Vaideh, Camboj, Amvasht, Nagnjit and Gandhar were conquered by you and you should call up once more that same energy to face Arjun. 37. Standing in your bravery, face Vasudev the dear friend of Arjun. " Karan said to Shalya, " Be steady: you appear now well-disposed towards me. Donot be afraid of Arjun. You will now see my strength and training in arms. Alone, I shall destroy the Pandav army and then I shall destroy Krishn and Arjun. I say truly that I shall never re turn without slaying them or shall lie down slain by

कर्णं रथमधीगम । एकाकिनं किमु कृष्णाभिगुप्तं विजेतुमेनं क इहोत्
सहेत ॥ ४२ ॥ कर्ण उवाच । नैतादृशो जातु बभूव लोके रथोत्तमो यावदुपश्रुतं
नः । तमीदृशं प्रतियोत्स्यामि पार्थं महाहवे पश्य च पौरुषं मे ॥ ४३ ॥ रणे चरत्येष
रथप्रवीरः सितैर्हयैः कौरवराजपुत्रः । स वाद्य मां नेष्यति कृच्छ्रमेतत् कर्णस्यान्तादेव
स्तः स्थ सर्वे ॥ ४४ ॥ अस्वेदिनौ राजपुत्रस्य हस्तावचेपमानौ जातकिणौ बृहन्तौ ।
दृढायुधः कृतिमान् क्षिप्रहस्तो न पाण्डवेयेन समोऽस्ति योधः ॥ ४५ ॥ गृह्णात्यनेकानपि
कङ्कपत्रानेकं यथा तान् प्रतियोज्य चाशु । ते क्रोशमात्रे निपतन्त्यमोघाः कस्तेन
योधोऽस्ति समः पृथिव्याम् ॥ ४६ ॥ अतोषयत् खाण्डवे यो हुताशं कृष्णद्वितीयोऽतिर
थस्तरस्वी । लेभे चक्रं यत्र कृष्णो महात्मा धनुर्गाण्डीवं पाण्डवः सव्यसाची ॥ ४७ ॥

अर्जुनको सबसे अजेय कहते हैं फिर हे कर्ण ऐसा कौनसा मनुष्य है जो इस
श्रीकृष्णसे रक्षित अर्जुनको विजय करनेका उत्साहकरे । ४२ । कर्ण बोला कि
लोकमें ऐसा उत्तम रथी जहांतक हमनेसुना कभी कोई नहीं हुआ ऐसे प्रतापी
प्रसिद्ध कीर्तिवाले अर्जुन के सम्मुख होकर युद्धको करूंगा उस महायुद्ध में मेरी
वीरताको देखो । ४३ । यह रथियों में बड़ा वीर कौरवराज का पुत्र युद्धभूमि में
श्वेत घोड़ो के द्वारा घूमताहै अब वह मुझको बड़ेदुःख से मिलता है और कहताहै
कर्णकेही विजयमें मेरीविजय और कर्णकेही नाशमें मेराभी नाश है । ४४ । राज
कुमारके प्रस्वेद और कंपसे रहित दोनों हाथ चिन्हों से युक्त होकर बुद्धिमान हैं वह
दृढ़शस्त्र अर्जुन बड़ा कर्मी और हस्तलाघवी है इस पांडव के समान कोई युद्धकर्ता
नहीं है । ४५ । बहुत बाणों को भी लेताहै और उन सबको एकही बाणके
समान धनुषपर चढ़ाकर छोड़ताहै फिर सकल बाण एक कोशपर गिरतेहैं
उसके समान इस पृथ्वीपर कौन शूरवीरहै । ४६ । श्रीकृष्ण को साथ रखनेवाले
जिस वेगवानअतिरथी अर्जुनने खाण्डव वनमें अग्निको तृप्तकिया वहांही महात्मा
श्रीकृष्णजी ने चक्रको और पाण्डव अर्जुन ने गांडीव धनुषको पाया । ४७ ।

---

them; for one cannot get victory in each case. I shall gain my object by slaying him or shall be slain by him." Shalya said, "Brave warriors say that Arjun is invincible in battle. Who can conquer him when he is assisted by Krishn?" Karan said, "We have heard of no warrior like Arjun, yet I shall fight with that famous warrior. See my bravery in battle. The great warrior is roaming on his white horses. He is trying to see me and thinks his own victory complete after conquering me or to die in the attempt. Both his hands are engaged in shooting arrows. He is very dexterous and has no warrior to match him. He takes up many arrows at a time and discharges them like one. His arrows fall down at the distance of a mile. What warrior is equal to him on the face of the earth. He gratified Agni in the Khandav forest

श्वेताश्वयुक्तं च सुघोषमुग्रं रथं महाबाहुरदीनसत्वः । महेषुधी चाक्षये दिव्यरूपे शस्त्राणि दिव्यानि च हव्यवाहात् ॥ ४८ ॥ तथेन्द्रलोके निजघान दैत्यानसंख्येयान् कालकेयांश्च सर्वान् । लेभे शंखं देवदत्तं स्म तत्र को नाम तेनाभ्यधिकः पृथिव्याम् ॥ ४९ ॥ महादेवं तोषयामास यो वै साक्षात् सुयुद्धेन महानुभावः । लेभे ततः पाशुपतं सुघोरं त्रैलोक्यसंहारकरं महास्त्रम् ॥ ५० ॥ पृथक् पृथक् लोकपालाः समेता ददुरस्त्राण्यप्रमेयाणि यस्मै । यैस्तान् जघानाशु रणे नृसिंहः स कालकञ्जानसुरान् समेतान् ॥ ५१ ॥ तथा विराटस्य पुरे समेतान् सर्वानस्मानेकरथेन जित्वा । जहार तद्गोधनमाजिमध्ये वस्त्राणि चादत्त महारथेभ्यः ॥ ५२ ॥ तमीदृशं वीर्यगुणोपपन्नं कृष्णद्वितीयं परमं नृपाणाम् । समाह्वयन् साहसमुत्तमं वै जाने स्वयं सर्वलोकस्य शल्य ॥ ५३ ॥ अनन्तवीर्येण च केशवेन नारायणेनाप्रतिमेन गुप्तः । वर्षायुतैर्यस्य गुणा न

अर्थात् बड़े पराक्रमी महाबाहुने अग्निसेही बड़ा शब्दायमान श्वेतघोड़ों से युक्त रथको वा दो अक्षय तूणीरों को और दिव्य शस्त्रोंको पाया । ४८ । इसीप्रकार इन्द्रलोकमें युद्धकरके असंख्य कालकेयनाम दैत्यों का मारा और देवदत्तनाम शंख को पाया इसपृथ्वीपर उस से अधिक कौनहोसक्ताहै । ४९ । इस महानुभावने उत्तम युद्धसे अस्त्रों के द्वारा साक्षात् महादेवजी को प्रसन्न किया और उनसे तीनोंलोकोंका नाश करनेवाला बड़ाघोर पाशुपतनाम महाअद्भुत अस्त्रपाया । ५० । सब लोकपालों ने इकट्ठे होकर युद्धमें पृथक् २ बड़े२ अस्त्रों को दिया जिन अस्त्रों के द्वारा इस नरोत्तम ने युद्धमें इकट्ठे होनेवाले कालकेय नाम असुरों को बड़ी शीघ्रतासे मारा । ५१ । इसीप्रकार इस अकेले अर्जुनने राजा विराटके पुरमें कौरवों समेत हम सब मिलेहुओं को एकही रथके द्वारा विजय कर युद्धभूमि में उस गोधनको हरण करके उनसब महारथियों के वस्त्रोंको भी छीन लिया । ५२ । हे शल्य इस प्रकारके पराक्रमी और गुणवाले श्रीकृष्णको साथमें रखनेवाले सबलोक और राजाओं में श्रेष्ठ इस अर्जुनको अपने साहससे बुलाताहूं । ५३ । वह महा

with the help of Krishn. There he found the Gandiv and Krishn got the discus. He also got from Agni the divine car and two inexhaustible quivers He slew innumerable Kalkeya asurs in heaven, and got *Devadatta*. He gratified Mahadev himself in fighting and got from him the Pashupat weapon that can destroy the three worlds.50

50. The lokpals separately gave him weapons by means of which he was able to slay the Kalkeyas. He alone conquered all *of us*, Kauravas, at Viratnagar and having rescued the cattle, he made us insensible and deprived us of clothes. Yet I challenge Arjun the best of warriors, assisted by Shri Krishn as he is. He is protected by Narayan of immense strength, whose qualities cannot be described by all the world in thousands of years. None can describe the

शक्या वक्तुं समेतैरपि सर्वलोकैः ॥ ५४ ॥ महात्मनः शङ्खचक्रासिपाणेर्विष्णोर्जिष्णो वसुदेवात्मजस्य । भयञ्च मे जायतेसाध्वसञ्च दृष्ट्वा कृष्णावेकरथे समेतौ ॥ ५५ ॥ अतीव पार्थो युधि कार्मुकिभ्यो नारायणश्चाप्रति चक्रयुद्धे । एवंविधौ पाण्डववासुदेवौ चलेत् स्वदेशाद्धिमवान्न कृष्णौ ॥ ५६ ॥ उभौ हि शूरौ कृतिनौ दृढास्त्रौ महारथौ संहननोपपन्नौ । एतादृशौ फाल्गुनवासुदेवौ कोन्यः प्रतीयान्मदृते तु शल्य ॥ ५७ ॥ मनोरथो यस्तु ममाद्य तस्य मद्रेश युद्धं प्रति पाण्डवस्य । नैवं चिरादाशु भविष्यतीदमत्यद्भुतं चित्रमतुल्यरूपम् । एतावहं वा युधि पातयिष्ये मां वापि कृष्णौ निहनिष्यतोऽद्य ॥ ५८ ॥ इति ब्रुवन् शल्यमित्रहन्ता कर्णो रणे मेघ इवोन्ननाद । अभ्येत्य पुत्रेण तवाभिनन्दितः समेत्य चोवाच कुरुप्रवीरम् ॥ ६९ ॥ कृपञ्च भोजञ्च महाभुजावुभौ तथैव

पराक्रमी अनंत वीर्य वाले नारायणसे रक्षित है सब संसार इकट्ठा होकर हजारों वर्षतक भी जिसके गुणों का वर्णन न करसके । ५४ । ऐसे शंखचक्र गदा पद्मधारी वसुदेवजी के पुत्र महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुनके गुणों के कहनेको कोई समर्थ नहीं है एक रथपर बैठहुये श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर मुझको महाभय उत्पन्न होताहै । ५५ । अर्जुन युद्धमें सब धनुषधारियों से श्रेष्ठ तर है और नारायणजीभी युद्धमें अद्वितीय हैं ऐसे अर्जुन और वासुदेवजी हैं हे शल्य चाहे हिमाचल अपने स्थानसे चलायमान होजाय परन्तु अर्जुन और श्रीकृष्ण चलायमान नहींहोसक्ते । ५६ । यहदोनों दृढ़ शस्त्रधारी शूरवीर महारथी बड़ेकठोर शरीरवाले हैं हे शल्य ऐसे दोनों अर्जुन और वासुदेवजी के सम्मुख मेरे सिवाय दूसरा कौनजासक्ताहै यह अत्यन्त अद्भुत वा अद्वितीय उनका और मेरायुद्ध शीघ्रही होगा मैं युद्धमें इनदोनोंको गिराऊँगा वा श्रीकृष्ण और अर्जुनही मुझको गिरावेंगे । ५८ । शत्रुओंका मारनेवाला कर्ण युद्धमें शल्यसे ऐसे २ वचनोंको कहताहुआ बादल के समानगर्जा फिर आपके पुत्रके पास जाकर बड़े प्रेम से मिला उसने भी इसको अनेक प्रकार से प्रसन्न किया।५९ । फिर वहां

qualities of Arjun and Vasudev the wielder of conch, discus, mace and lotus. I am afraid to see Arjun and Krishn seated on the same car. 55. Arjun is the best of archers and Narayan is a matchless warrior. They cannot be moved back although, the Himalayas move from their place. Both these warriors have strong bodies and powerful weapons. Who except myself can withstand them. My battle with them shall be wonderful. Either I shall slay them or they will slay me." Having said these words to Shalya, Karan the destroyer of foes, roared like thunder. Then he embraced your son with affection and pleased him in various ways. He then cheerfully addressed the great Kaurav warriors, Duryodhan, Kripacharya Kritvarma, Shakuni and his younger brother as well as Ashwathama

गान्धारपतिं सहासमजम् । गुरोः सुतञ्चापरश्चन्तथात्मनः पदातिनोथ द्विपसादिनश्च तान् ॥ ६० ॥ निरुन्धताभिद्रवताच्युतार्जुनौ श्रमेण संयोजयताशु सर्वशः । यथा भवार्द्र भृशविक्षताबुभौ सुखेन हन्यामहमद्य भूमिपाः ॥ ६१ ॥ तथेति चोक्ता त्वरिता स्म तेऽर्जुनं जिघांसवो धीरतमाः समाहृययुः । शरैश्च जघ्नुर्युधितं महारथा धनञ्जयं कर्णनिदेशकारिणः ॥ ६२ ॥ नदीनदान् भूरिजलो महार्णवो यथा तथा तान् समर्जुनोऽग्रसत् ॥ ६३ ॥ न सन्दधानो न तथा शरोत्तमान् प्रमुञ्चमानो रिपुभिः प्रदृश्यते । धनञ्जयास्तैस्तु शरैर्विदारिता हता निपेतुर्नरवाजिकुञ्जराः ॥ ६४ ॥ शरार्चिषं गाण्डिवचारुमण्डलं युगान्तसूर्य्यप्रतिमानतेजसम् । न कौरवाः शेकुरुदीक्षितुं जयं यथा रविं व्याधितचक्षुषो जनाः ॥ ६५ ॥ शरोत्तमान् स प्रहितान् महारथै

प्रसन्न होकर कौरवों में बड़ेवीर दुर्योधन कृपाचार्य्य कृतवर्मा राजा गान्धार समेत उसके छोटेभाई इनसबसे वा अश्वत्थामा वा अपने पुत्र और उन: पदाती हाथी और अश्व सवारों से बोला । ६० । कि श्रीकृष्ण और अर्जुनको रोको प्रथम उनके सम्मुख आकर शीघ्रही उनको सब प्रकारसे थकाओ जिससे कि हे राजा लोगो आपलोगों से अत्यन्त घायलहुये इनदोनों को मैं सुखपूर्वक मारूं । ६१ । वह बड़े सब महावीर बहुतअच्छा ऐसा कहकर अर्जुन के मारने के अभिलाषी होकर बड़ी शीघ्रतासे उन के सम्मुख गये कर्ण के आज्ञाकारी महारथियों ने बाणों से उस अर्जुन को घायल किया । ६२ । फिर अर्जुन ने युद्ध में उनको ऐसा निगला जैसे कि बड़ा जल समूह रखनेवाला समुद्र नदनदियों को निगल जाता है । ६३ । वह अर्जुन अपने उत्तम बाणों को चढ़ाता और छोड़ता हुआ शत्रुओं को दिखाई भी नहीं पड़ा फिर अर्जुन के चलायेहुये बाणोंसे घायल और मृतक हुये सब मनुष्य हाथी और घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े । ६४ । सब कौरव उस बाणरूप अग्नि और गांडीव रूप सुन्दर मण्डल रखनेवाले प्रलय कालीन सूर्य के समान महातेजस्वी अर्जुन की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि नेत्ररोगी मनुष्य सूर्यके दर्शन करने को असमर्थ होता है । ६५ । हँसतेहुये गांडीव धनुष रूप पूर्ण

his own son and other soldiers of the four denominations, "Check Arjun and Vasudev and tire them well, so that I may find them an easy prey." 61. All those warriors, obeying his orders, went forward to slay Arjun and wounded him with their arrows; but the latter swallowed them up as the ocean does the small and large rivers. He was not seen putting up and discharging his arrows. Wounded by Arjun's arrows, men, elephants and horses fell down in large numbers. The Kauravas could not look at Arjun, who had his arrows for fire and his bow moving in a circle for the Sun. 65. He cut down their arrows as the Summer sun soaks water. With his arrows, Arjun destroyed your army. Kripacharya proceeded against him,

चिच्छेद पार्थः प्रहसञ्छरौघैः । भूयश्च तानहनद्बाणसंघान् गाण्डीवधन्वायतपूर्णमण्डलः
॥ ६६ ॥ यथोग्ररश्मिः शुचिशुक्रमध्यगो सुखं विवस्वान् हरते जलौघान् । तथार्जुनो
बाणगणान्निरस्य ददाह सेनां तव पार्थिवेन्द्र ॥ ६७ ॥ तमभ्यधावद्विसृजन् कृपः शरान्
तथैव भोजस्तव चात्मजः स्वयम् । महारथो द्रोणसुतश्च सायकैरवाकिरंस्तोयधरा यथा
ऽचलम् ॥ ६८ ॥ जिघांसुभिस्तान् कुशलैः शरोत्तमान् महाहवे संप्रहितान् प्रयत्नतः ।
शरैः प्रचिच्छेद स पाण्डवस्त्वरन् पराभिनद्वक्षसि चैषां त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ६९ ॥ स गाण्डीव
व्यायतपूर्णमण्डलस्तपन्रिपूनर्जुनभास्करो बभौ । शरोग्ररश्मिः शुचिशुक्रमध्यगो यथैव
सूर्यः परिवेषवांस्तथा ॥ ७० ॥ अथाग्र्यबाणैर्दशभिर्धनञ्जयं पराभिनद्द्रोणसुतो
ऽच्युतं त्रिभिः । चतुर्भिरश्वांश्चतुरः कपिं ततः शरैश्च नाराचवरैरवाकिरत् ॥ ७१ ॥
तथापि तं प्रस्फुरदात्तकार्मुकं त्रिभिः शरैर्यन्तृशिरः क्षुरेण ह । हयांश्चतुर्भिश्चतुरस्त्रिभि

मंडलवाले अर्जुन ने उन महारथियों के चलायेहुये बाण जालों को ऐसे काटा जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़ में उग्र किरण रखनेवाला सूर्य जल समूहों को सुख पूर्वक सोखलेता है हे महाराज फिर अर्जुन ने बाणों के समूहों को छोड़ कर आपकी सेनाको भस्म करदिया । ६७ । फिर कृपाचार्यजी बाणोंको छोड़ते हुये उस के सम्मुख गये उसीप्रकार कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्योधनभी दौड़ा और महारथी अश्वत्थामा ने शायकों से ऐसे ढकादिया जैसे कि बादल पहाड़ को ढकदेता है । ६८ । उस समय कुशलबुद्धि शीघ्रता करनेवाले पांडव अर्जुन ने उस बड़े युद्ध बड़े उपाय से मारने के इच्छावान् वीरों के चलायेहुये उत्तम बाणों को अपने बाणोंसे काटकर तीन तीन बाणों से उनको छातीपर घायल किया । ६९ । गांडीव रूप बड़े पूर्ण मंडलवाला बाणरूपी उग्र किरणों से युक्त अर्जुन रूपी सूर्य शत्रुओं को संतप्त करताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़ में पाश्र्व मंडल से युक्त सूर्य वर्त्तमान होता है । ७० । इसके पीछे अश्वत्थामा ने दशउत्तम बाणों से अर्जुन को तीनबाणों से श्रीकृष्णजी को चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल करके नाराचनाम उत्तम बाणों से ध्वजास्थ हनुमानजी को ढकदिया । ७१ । तौभी अर्जुन ने उस धनुषधारी अश्वत्थामा को तीनही बाणों से कंपायमान करके क्षुरसे

discharging his arrows and Kritvarma as well as your son rushed against him. Ashwathama covered him with arrows like clouds. Wise Arjun then cut down their arrows and wounded them with three arrows each on the breast. Moving the Gandiv like the Sun and having arrows for rays, Arjun looked glorious in destroying the foes like the summer sun. 70. Then Ashwathama shot Arjun with ten arrows, Shree Krishn with three and the four horses with four, and covered the monkey standard with sharp arrows. The great archer, Arjun shook Ashwathama with three arrows, cut his driver's

ध्वजं धनञ्जयो द्रौणिरथादपातयत् ॥ ७२ ॥ स रोषपूर्णो मणिवज्रहाटकैरलंकृतं तक्षक
भोगवर्चसम् । महाधनं कार्मुकमन्यदाददे यथा महाहिवरं गिरेस्तटात् ॥ ७३ ॥
स्वमायुधञ्चोपनिकीर्य भूतले धनुश्च कृत्वा सगुणं गुणाधिकः समाद्रयत्तावजितौ
नरोत्तमौ शरोत्तमैर्द्रौणिरभिप्रयन्निकात् ॥ ७४ ॥ कृपश्च भोजश्च तथात्मजश्च ते
शरैरनेकैर्युधि पाण्डवर्षभम् । महारथाः संयुगमूर्द्धनि स्थितास्तमोनुदं वारिधरा इवा
पतन् ॥ ७५ ॥ कृपस्य पार्थः सशरं शरासनं हयान् ध्वजान् सारथिमेव पत्रिभिः ।
सहस्रबाहुसदृशविक्रमस्तथा यथा वज्रधरः पुरा बलेः ॥ ७६ ॥ स पार्थबाणैर्विनि
पातितायुधो ध्वजावमर्दे च कृते महाहवे । कृतः कृपो बाणसहस्रयन्त्रितो यथापगेयः
प्रथमं किरीटिना ॥ ७७ ॥ शरैः प्रचिच्छेद तवात्मजस्य च ध्वजं धनुश्च प्रचकर्त

सारथी के शिरको चारवाणों से घोड़ों को और तीन वाणों से अश्वत्थामा की
ध्वजा को रथसे गिराया । ७२ । फिर क्रोध युक्त अश्वत्थामा ने हीरे मणि और
सुवर्ण से जटित तक्षकके फणके समान प्रकाशित बड़े मूल्यके दूसरे धनुषको ऐसे
उठाया जैसे कि अत्यन्त उत्तम बड़े सर्पको पर्वत के किनारेसे कोई उठालेवे । ७३ ।
उस बड़ेगुणी अश्वत्थामा ने अपने शस्त्रको निकालकर घोड़े और सारथी से रहित
पृथ्वी के समान रथपर अपने धनुषको प्रत्यंचा समेत करके समीपसे आकर उनदोनों
अजेय नरोत्तमों को उत्तम बाणों के द्वारा पीड़ामान किया । ७४ । युद्धके शिरपर
नियत वह महारथी कृपाचार्य कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्योधन युद्ध में अनेक
वाणों समेत अर्जुन के ऊपर ऐसे आकर गिरे जैसे कि बादल सूर्यको घेरलेते हैं
। ७५ । फिर सहस्रबाहु के समान पराक्रमी अर्जुन ने कृपाचार्य के धनुषबाण
घोड़े ध्वजा और सारथीको बाणों से ऐसे घायल करदिया जैसे कि पूर्व समय में
राजा बलिको वज्रधारी इन्द्रने घायल कियाथा । ७६ । वह कृपाचार्य अर्जुन के
बाणोंसे अस्त्रों से रहित होगये और उस बड़े युद्धमें ध्वजाके टूटने पर हजारों
बाणों से ऐसे छेदेगये जैसे कि पूर्वमें अर्जुन के हाथसे भीष्मजी छेदे गयेथे
। ७७ । इसके पीछे प्रतापवान् अर्जुन ने गर्जते हुये आपके पुत्रकी ध्वजा और
धनुषको बाणोंसे काटकर कृतवर्मा के उत्तम घोड़ों को मार ध्वजाको भी काटडाला

head with one arrow, killed the four horses with four and cut down the standard with three, Then enraged Ashwathama took up another jewelled bow, like the hood of Takshak as one takes up a snake from the side of a hill, From his driver-and-horseless car, clever Ashwathama pierced those two warriors with his sharp arrows, Brave Kripacharya, Kritvarma and your son Duryodhan covered Arjun with their arrows as the clouds hide the sun. 75. Like Sahasravahu in prowess, Arjun hit the bow, arrows, horses and standard of Drona as Indra had wounded Bali, Arjun deprived Kripacharya of weapons, and wounded him with arrows as he had wounded Bhishm. Then,

चैर्विमलैरपि । गात्राणि प्राच्छिनोत् पार्थः शिरांसि च चकर्त ह ॥ ५ ॥ छिन्नगात्रैर्विक
वचैर्विशिरस्कैः समन्ततः । पतितैश्च पतद्भिश्च योधैरासीत् समावृता ॥ ६ ॥ धनञ्जय
शराभ्यस्तैः स्यन्दनाश्वनरद्विपैः । संछिन्नभिन्नविध्वस्तैर्व्यङ्गाङ्गावयवैः क्षता ॥ ७ ॥
सुदुर्गमा सुविषमा घोरात्यर्थं सुदुर्दृशा । रणभूमिरभूद्राजन् महावैतरणी यथा ॥ ८ ॥
ईषाचक्राक्षभग्नैश्च व्यश्वैः साश्वैश्च युध्यताम् । ससूतैर्हतसूतैश्च रथैः स्तीर्णाभवन्
मही ॥ ९ ॥ सुवर्णवर्णसन्नाहैर्योधैः कनकभूषणैः । आस्थिताः कृतवर्माणो भद्रा
नित्यमदा द्विपाः ॥ १० ॥ क्रुद्धाः क्रूरैर्महामात्रैः प्राष्ण्यङ्गुष्ठप्रचोदिताः । चतुःशताः शर
वर्षौघैर्हताः पेतुः किरीटिना । पर्य्यस्तानीव शृङ्गाणि ससत्त्वानि महागिरेः ॥ ११ ॥ धनञ्ज
यशराभ्यस्तैः स्तीर्णा भूर्वरवारणैः । समन्ताज्जलदप्रख्यान् वारणान्मदवर्षिणः ॥ १२ ॥
अभिपेदेऽर्जुनरथो घनान् भिन्दन्निवांशुमान् ॥ १३ ॥ हतैर्गजमनुष्याश्वैर्भग्नैश्च बहुधा
रथैः । विशस्त्रपत्रकवचैर्युद्धशौण्डैर्गतासुभिः । अपविद्धायुधैर्मार्गः स्तीर्णोऽभूत् फाल्गु

ने निर्मलभल्ल क्षुरप्र और नाराचों से अंगों को छेदनकर शिरोंको काटा । ५ । कटे हुवे अङ्ग और कवचों से रहित वह शिर चारोंओर से गिरे उन गिरनेवाले शूरवीरों से पृथ्वी आच्छादित होगई । ६ । अर्जुनके बाणों से मृतक अंग भंग चूर्ण नाशहुवे अंगों से रहित हाथी घोड़े रथी और रथों से पृथ्वी व्याप्तहोगई । ७ । हे राजा युद्धभूमि बड़ीदुर्गम विषम महाघोर दुःख से देखने के योग्य वैतरणीनदी के समान होगई । ८ । शूरवीरों के घोर सारथी रखनेवाले मृतक घोड़े वा सारथी समेत रथोंसे और ईषा रथ चक्र अक्ष और भल्लोंसे पृथ्वी महाचित्रितसी होगई।९। कवचों से अलंकृत सेना के सेनापति सुनहरी कवच सुनहरी भूषण रखनेवाले शूरवीरों समेत नियतहुये । १० । कठोर महावतवाले सवारों की एँड़ी और अंगुष्ठों से प्रेरित क्रोधयुक्त चारसौहाथी अर्जुनके बाणों से ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्र से बड़े पर्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं । ११ । रत्नों से पूर्ण पृथ्वीपर अर्जुनके बाणों से नाश होकर गिरेहुवे उत्तम हाथियोंसे पृथ्वी आच्छादितहोगई अर्जुनके रथने बादल के समान मद डालनेवाले हाथियों को चारोंओर से ऐसे भगाडाला जैसे कि सूर्य्य बादलों को नाश करता है मृतक हाथी घोड़े मनुष्य अनेक प्रकार के टूटे रथ शस्त्र सारथी वा कवचों से रहित युद्धमें मतवाले मृतक मनुष्यों से और बड़े भयानक

the ground. 6. Dead and wounded by his arrows, the elephants, horses and car-warriors lay dead on the ground. The battle field was dreadful to behold like the Baitarni. It was full of the horses and drivers slain as well as of the parts of the cars, darts and other weapons. The leaders of the armies stood at the head of their forces. Urged by the toes and heels of the drivers, the four hundred elephants fell down by Arjun's arrows, like mountain peaks struck by vajra, and covered the field. 12. His car was surrounded by elephants like the Sun with clouds. The dying elephants, horses, men, broken

नेन वै ॥ १४ ॥ स्वहफूर्जयच्च गाण्डीवं सुमहद्भैरवं स्वनम् । घोरजविनिष्पेषः स्तन यित्नोरिवाम्बरे ॥ १५ ॥ ततः प्राद्रीर्य्यत चमूर्धनञ्जयशराहता । महावात समाविद्धा महानौरिव सागरे ॥ १६ ॥ नानारूपाः प्राणहराः शरा गाण्डीव चोदिताः । अलातोल्काशनिप्रख्यास्तव सैन्यं विनिर्दहन् ॥ १७ ॥ महा गिरौ वेणुवनं निशि प्रज्वलितं यथा । तथा तव महासैन्यं प्रास्फुरच्छरपीडितम् ॥ १८ ॥ संपिष्टदग्धविध्वस्तं तव सैन्यं किरीटिना । कृतं प्रविहतं वाणैः सर्वतः प्रद्रुतं दिशः ॥ १९ ॥ महावने मृगगणा दावाग्निग्रासिता यथा । कुरवः पर्य्यवर्त्तन्त निर्दग्धा सव्यसाचिना ॥ २० ॥ उत्सृज्य हि महाबाहुं भीमसेनं तथा रणे । बलं कुरूणामुद्विग्नं सर्वमासीत् पराङ्मुखम् ॥ २१ ॥ ततः कुरुषु भग्नेषु बीभत्सुरपराजितः । भीमसेनं समासाद्य मुहूर्त्तं सोऽभ्यवर्त्तत ॥ २२ ॥ समागम्य च भीमेन मन्त्रयित्वा च फाल्गुनः ।

शब्दवाले गांडीव धनुषको टंकारते अर्जुन के हाथसे टूटेहुये शस्त्रों से युद्धभूमि का मार्ग आच्छादित होगया, जैसे कि आकाशमें घोर वज्रसे विनिष्पेष स्तनयित्नु होता है । १५ । उसी प्रकारवाला धनुष का शब्दथा उसके पीछे अर्ज्जुन के बाणों से घायल होकर सेना ऐसे पृथकहोकर छिन्नभिन्न होगई जैसे कि समुद्र में बड़ेवायुके वेग से चलायमान नौका होती है । १६ । नानाप्रकार के रूपवाले प्राणों के हरने वाले गांडीव धनुषसे छोड़ेहुये उल्का और बिजली के रूपवाले बाणों ने आपकी सेनाको ऐसे भस्म करादिया जैसे कि सायंकाल के समय बड़े पर्व्वतपर प्रचण्ड अग्नि बांसों के वनको भस्म करदेता है इसी प्रकार बाणों से पीड़ित आपकी बड़ी सेनाभी महा व्याकुल होकर चलायमान हुई । १८ । और अर्ज्जुन के हाथ से मर्दित और भस्मीभूत सेना नाशको प्राप्तहुई बाणोंसे करीहुई वा घायलहोकर वह सेना सब ओरको ऐसे भागी जैसे कि दावानल अग्निसे भयभीत होकर बड़े मृगों के समूह भागतेहैं इसीप्रकार अर्जुनके हाथसे भस्महुये । २० । कौरव उस महाबाहु भीमसेनको छोड़कर चारों ओरको भागे इस रीतिसे कौरवों की सब सेना व्याकुल होकर मुख मोड़ २ कर भागी । २१ । इसके पीछे कौरवोंके छिन्नभिन्न होनेपर वह अजेय अर्जुन भीमसेन को पाकर एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त समीप वर्त्तमान रहा १२

cars, weapons drivers, armourless warriors and the weapons broken by the Gandiv bow filled the ground like mountains struck by vajra. 15. *The sound of the bow was tremendous. The army, pierced by Arjun's* arrows, went astray like a boat in a storm. The bright arrows, like *lightning, discharged from Gandiv, consumed the army* as fire destroys a forest of bamboos, and the army was dispersed and destroyed. Wounded by his arrows, the warriors fled in all directions like the deer afraid of a burning forest. The soldiers destroyed by Arjun, left Bhim and fled in all directions. Thus the whole army of Kauravas turned back. 21. At the dispersion of the Kauravas, Arjun approached Bhim and stayed with him for a short time. Having given him

श्चैर्विमलैरपि । गात्राणि मार्गणोत्पार्थः शिरांसि च चकर्त्त ह ॥ ५ ॥ छिन्नगात्रैर्विकवचैर्विशिरस्कैः समन्ततः । पतितैश्च पतद्भिश्च योधैरासीत् समावृता ॥ ६ ॥ धनञ्जयशराभ्यस्तैः स्यन्दनाश्वनरद्विपैः । संछिन्नभिन्नविध्वस्तैर्व्यङ्गाङ्गावयवैः स्तृता ॥ ७ ॥ सुदुर्गमा सुविषमा घोरात्यर्थं सुदुर्दृशा । रणभूमिरभूद्राजन् महावैतरणी यथा ॥ ८ ॥ ईषाचक्राक्षभग्नैश्च व्यश्वैः साश्वैश्च युध्यताम् । ससूतैर्हतसूतैश्च रथैः स्तीर्णाभवन्मही ॥ ९ ॥ सुवर्णवर्मसन्नाहैर्योधैः कनकभूषणैः । आस्थिताः कृतवर्माणो भद्रा नित्यमदा द्विपाः ॥ १० ॥ क्रुद्धाः क्रूरैर्महामात्रैः पार्ष्ण्यङ्गुष्ठप्रचोदिताः । चतुः शताः शरवर्षैर्हताः पेतुः किरीटिना । पर्य्यस्तानीव शृङ्गाणि ससत्वानि महागिरेः ॥ ११ ॥ धनञ्जयशराभ्यस्तैः स्तीर्णा भूर्वरवारणैः । समन्तात्पाण्डवः प्राप्तान् वारणान्मदवर्षिणः ॥ १२ ॥ अभिपेदेऽर्जुनरथो घनान् भिन्दन्निवांशुमान् ॥ १३ ॥ हतैर्गजमनुष्याश्वैर्भिन्नैश्च बहुधा रथैः । विशस्त्रयन्त्रकवचैर्युद्धशौण्डैर्गतासुभिः । अपविद्धायुधैर्मार्गः स्तीर्णोऽभूत् फाल्गु

ने निर्मलभल्ल क्षुरम और नाराचों से अंगों को छेद२कर शिरोंको काटा ।५। कटे हुये अङ्ग और कवचों से रहित वह शिर चारोंओर से गिरे उन गिरनेवाले शूरवीरों से पृथ्वी आच्छादित होगई । ६ । अर्जुनके बाणों से मृतक अंग भंग चूर्ण नाशहुये अंगों से रहित हाथी घोड़े रथी और रथों से पृथ्वी व्याप्तहोगई । ७ । हे राजा युद्धभूमि बड़ीदुर्गम विषम महाघोर दुःख से देखने के योग्य वैतरणीनदी के समान होगई । ८ । शूरवीरों के घोर सारथी रखनेवाले मृतक घोड़े वा सारथी समेत रथोंसे और ईशा रथ चक्र अक्ष और भल्लोंसे पृथ्वी महाचित्रितसी होगई।९। कवचों से अलंकृत सेना के सेनाधिप सुनहरी कवच सुनहरी भूषण रखनेवाले शूरवीरों समेत नियतहुये । १० । कठोर प्रकृतिवाले सवारों की एँड़ी और अंगुष्ठों से प्रेरित क्रोधयुक्त चारसौहाथी अर्जुनके बाणों से ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्र से बड़े पर्व्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं । ११ । रत्नों से पूर्ण पृथ्वीपर अर्जुनके बाणों से नाश होकर गिरेहुये उत्तम हाथियोंसे पृथ्वीआच्छादितहोगई अर्जुनके रथने बादल के रूपमद डालनेवाले हाथियों को चारोंओर से ऐसे प्राप्तकिया जैसे कि सूर्य्य बादलों को प्राप्त करता है मृतक हाथी घोड़े मनुष्य अनेक प्रकार के टूटे रथ शस्त्र सारथी वा कवचों से रहित युद्धमें मतवाले मृतक मनुष्यों से और बड़े भयानक

the ground. 6. Dead and wounded by his arrows, the elephants, horses and car-warriors lay dead on the ground. The battle field was dreadful to behold like the Baitarni. It was full of the horses and drivers slain as well as of the parts of the cars, darts and other weapons. The leaders of the armies stood at the head of their forces. Urged by the toes and heels of the drivers, the four hundred elephants fell down by Arjun's arrows, like mountain peaks struck by vajra, and covered the field. 12. His car was surrounded by elephants like the Sun with clouds. The dying elephants, horses, men, broken

मेन वै ॥ १४ ॥ व्यस्फूर्जयच्च गाण्डीवं सुमहद्भैरवं स्वरम् । घोरवज्रविनिष्पेषः स्तन
यित्नोरिवाम्बरे ॥ १५ ॥ ततः प्राद्रीर्यत चमूर्धनञ्जयशराहता । महावात
समाविद्धा महानौरिव सागरे ॥ १६ ॥ नानारूपाः प्राणहराः शरा गाण्डीव
चोदिताः । अलातोल्काशनिप्रख्यास्तव सैन्यं विनिर्दहन् ॥ १७ ॥ महा
गिरौ वेणुवनं निशि प्रज्वलितं यथा । तथा तव महासैन्यं प्रास्फुरच्छरपीडितम्
॥ १८ ॥ संपिष्टदग्धविध्वस्तं तव सैन्यं किरीटिना । कृतं प्रविद्धतं बाणैः सर्वतः प्रद्रुतं
दिशः ॥ १९ ॥ महावने मृगगणा दावाग्निग्रासिता यथा । कुरवः पर्यवर्तन्त निर्दग्धाः
सव्यसाचिना ॥ २० ॥ उत्सृज्य हि महाबाहुं भीमसेनं तथा रणे । बलं कुरूणामुद्विग्नं
सर्वमासीत् पराङ्मुखम् ॥ २१ ॥ ततः कुरुषु भग्नेषु बीभत्सुरपराजितः । भीमसेनं
समासाद्य मुहूर्तं सोऽभ्यवर्तत ॥ २२ ॥ समागम्य च भीमेन मन्त्रयित्वा च फाल्गुनः ।

शब्दवाले गांडीव धनुषको टंकारते अर्जुन के हाथसे टूटेहुये शस्त्रों से युद्धभूमि का मार्ग आच्छादित होगया जैसे कि आकाशमें घोर वज्रसे विनिष्पेष स्तनयित्नु होता है । १५ । उसी प्रकारवाला धनुष का शब्दथा उसके पीछे अर्ज्जुन के बाणों से घायल होकर सेना ऐसे पृथकहोकर छिन्नभिन्न होगई जैसे कि समुद्र में बड़ेवायुके वेग से चलायमान नौका होती है । १६ । नानाप्रकार के रूपवाले प्राणों के हरने वाले गांडीव धनुषसे छोड़ेहुये उल्का और बिजली के रूपवाले बाणों ने आपकी सेनाको ऐसे भस्म करादिया जैसे कि सायंकाल के समय बड़े पर्वतपर प्रचण्ड अग्नि बांसों के वनको भस्म करदेता है इसी प्रकार बाणों से पीड़ित आपकी बड़ी सेनाभी महा व्याकुल होकर चलायमान हुई । १८ । और अर्ज्जुन के हाथ से मर्दित और भस्मीभूत सेना नाशको प्राप्तहुई बाणोंसे करीहुई वा घायलहोकर वह सेना सब ओरको ऐसे भागी जैसे कि दावानल अग्निसे भयभीत होकर बड़े मृगों के समूह भागतेहैं इसीप्रकार अर्जुनके हाथसे भस्महुये । २० । कौरव उस महाबाहु भीमसेनको छोड़कर चारों ओरको भागे इस रीतिसे कौरवों की सब सेना व्याकुल होकर मुख मोड़ २ कर भागी । २१ । इसके पीछे कौरवोंके छिन्नभिन्न होनेपर वह अजेय अर्जुन भीमसेन को पाकर एक मुहूर्त पर्यन्त समीप वर्त्तमान रहा १२

cars, weapons drivers, armourless warriors and the weapons broken by the Gandiv bow filled the ground like mountains struck by vajra. 15. The sound of the bow was tremendous. The army, pierced by Arjun's arrows, went astray like a boat in a storm. The bright arrows, like lightning, discharged from Gandiv, consumed the army as fire destroys a forest of bamboos, and the army was dispersed and destroyed. Wounded by his arrows, the warriors fled in all directions like the deer afraid of a burning forest. The soldiers destroyed by Arjun, left Bhim and fled in all directions. Thus the whole army of Kauravas turned back. 21. At the dispersion of the Kauravas, Arjun approached Bhim and stayed with him for a short time. Having given him

विशल्यमरुजं चास्मै कथयित्वा युधिष्ठिरम् ॥ २३ ॥ भीमसेनाभ्यनुज्ञातस्ततः प्रायाद्धनञ्जयः । नादयन्रथघोषेण पृथिवीं द्यां च भारत ॥ २४ ॥ ततः परिवृतो वीरैर्दशभिर्योधपुङ्गवैः । दुःशासनादवरजैस्तव पुत्रैर्धनञ्जयः ॥ २५ ॥ ते तमभ्यर्दयन् बाणैरुल्काभिरिव कुञ्जरम् । आततेष्वसनाः शूरा नृत्यन्त इव भारत ॥२६॥ अपसव्यांस्तु तांश्चक्रे रथेन मधुसूदनः । नियुक्तान् हि स तान्मेने यमायाशु किरीटिना ॥ २७ ॥ ततस्तेप्राद्रवञ्छूराः पराङ्मुखरथेऽर्जुने ॥ २८ ॥ तेषामापततां केतूनश्वांश्चापानि सायकान् । नाराचैरर्धचन्द्रैश्च क्षिप्रं पार्थो न्यपातयत् ॥ २९ ॥ अथान्यैर्दशभिर्भल्लैः शिरांस्येषां न्यपातयत् । रोषसंरक्तनेत्राणि सन्दष्टौष्ठानि भूतले ॥ ३० ॥ तानि वक्त्राणि विबभुः कमलानीव भूरिशः । तांस्तु भल्लैर्महावेगैर्दशभिर्दश कौरवान् । रुक्माङ्गदान् रुक्मपुङ्खैर्हत्वा प्रायादमित्रहा ॥ ३१ ॥ इति कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे अशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

वहां भीमसेनसे युधिष्ठिर का सब वृत्तान्त और आनन्द से होने का समाचार कहकर भीमसेन से आज्ञा लेकर अर्जुन फिर चलागया हे भरतवंशी वह रथके शब्दसे पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करताहुआ गया । २४ । इसके पीछे शूरवीरों में श्रेष्ठ प्रतापी अर्जुन दुश्शासनसे छोटे आपके दश पुत्रों से घेरागया । २५ । उन्होंनेभी उसको बाणोंसे ऐसे पीड़ामान किया जैसे कि उल्काओं से हाथीको पीड़ित करते हैं हे भरतवंशी धनुषको मण्डलाकार करनेवाले शूरवीर नर्त्तकों के समान दिखाई दिये । २६ । उनको मधुसूदनजी ने अपने रथके द्वारा दक्षिण किया और अर्जुनके हाथसे मरकर उनको यमराजके पास जानेवाला अनुमान किया । २७ । उसकेपीछे अर्जुनके रथके मुड़ने पर उनशूरोंने चढ़ाई करी । २८ । अर्जुनने उन सम्मुख आनेवालों के घोड़े रथ सारथी और ध्वजा समेत धनुष और शायकों को शीघ्रही अपने नाराच और अर्द्धचन्द्र नाम बाणोंसे गिराया । २९ । पीछेसे दूसरे दश भल्लोंसे उनकेउन शिरोंको पृथ्वीपर गिराया जोकि बहुत काल से रक्त नेत्रकर कर ओठोंको काटते थे । ३० । वह बहुत से कमलरूपी मुखोंसमेत शिर बड़े शोभायमान हुये फिर वह शत्रुओं का मारनेवाला सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाला सुनहरी पुंखवाले दशभल्लोंसे बड़े वेगवान् दशों कौरवों को मारकर चलदिया ३१ ॥

the news of Yudhishthir's welfare, he proceeded onwards, resounding the earth and air with his car wheels. Then Arjun the best of warriors was surrounded by the ten brothers younger than Dushasan. 25 They wounded him with their arrows, and moving their bows in circles, they looked like dancers. Krishn moved his car round them to the region of Yam. Other warriors attacked Arjun, but the latter destroyed them along with their horses, cars, drivers, standards, bows and arrows. Then he cut off their heads with biting lips and red eyes. Those lotus like heads, fallen down on the ground looked beautiful Having slain the ten Kauravas with his arrows, he went onward. 31.

सञ्जय उवाच । तं प्रयान्तं महावेगैरश्वैः कपिवरध्वजम् । युद्धायाभ्यद्रवन् वीराः कुरूणां नवती रथाः ॥ १ ॥ कृत्वा संशप्तका घोरं शपथं पारलौकिकम् । परिवव्रुर्नरव्याघ्रा नरव्याघ्रं रणेऽर्जुनम् ॥२॥ कृष्णः श्वेतान् महावेगानश्वान्काञ्चनभूषणान् । मुक्ताजालप्रतिच्छन्नान् प्रैषीत्कर्णरथंप्रति॥३॥ततः कर्णरथं यान्तमरिघ्नंतं धनञ्जयम् । बाणवर्षैरभिघ्नन्तः संशप्तकरथा ययुः ॥ ४ ॥ त्वरमाणांस्तु तान् सर्वान् ससूतेष्वसनध्वजान् । जघान नवतिं वीरानर्जुनो निशितैः शरैः ॥ ५ ॥ ते पतन्त हता बाणैर्नाना रूपैः किरीटिना । सविमाना यथा सिद्धाः स्वर्गात् पुण्यक्षये तथा ॥ ६ ॥ ततः सरथनागाश्वाः कुरवः कुरुसत्तमम् । निर्भया भरतश्रेष्ठमभ्यवर्तन्त फाल्गुनम् ॥ ७ ॥ तदा यत्तमनुष्याश्वमुदीर्णवरवारणम् । पुत्राणान्ते महासैन्यं समरौत्सीद्धनञ्जयम् ॥ ८ ॥ शक्त्यृष्टितोमरप्रासै गदानिस्त्रिंशसायकैः । प्राच्छादयन्महेष्वासाः कुरवः कुरुनन्दनम्

अध्याय ८१ ॥

संजय बोले कि कौरवों के बड़े वेगवान् नव्वे रथी घोड़ों के द्वारा उस आने वाले कपिध्वज अर्जुन के सम्मुख गये । १ । और नरोत्तम संसप्तकों ने परलोक सम्बन्धी घोर शपथको खाकर युद्ध में पुरुषोत्तम अर्ज्जुन को घेरलिया । २ । और श्रीकृष्णजी ने बड़े वेगवान सुवर्ण भूषणों से अलंकृत मोतियों के जालों से ढके हुये श्वेत घोड़ोंको कर्ण के रथपर हांका । ३ । इसके पीछे संसप्तकों के रथ बाणों की वर्षा से प्रहार करते कर्णकी ओरको जानेवाले उस अर्ज्जुन के सम्मुख गये ।४। अर्ज्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणों से शीघ्रता करनेवाले उन सब नव्वे वीरों को सारथी धनुष और ध्वजा समेत मारा । ५ । अर्ज्जुन के नानारूप के बाणों से घायलहोकर वह शूरवीर ऐसे गिरपड़े जैसे कि तपके क्षीण होनेपर सिद्धलोग अपने विमान समेत स्वर्गसे गिरते हैं । ६ । इसके पीछे कौरवलोग बड़ी निर्भयतासे रथ हाथी और घोड़ों समेत उस वीर अर्ज्जुन के सम्मुख आये । ७ । तीव्रता युक्त मनुष्य घोड़े और उत्तमहाथी वाली उस आपकी बड़ी सेनाने अर्जुन को घेर लिया । ८ । वहां बड़े धनुषधारी कौरवों ने शक्ति, दुधारा खड्ग, तोमर, प्रास, गदा, खड्ग

CHAPTER LXXXI

Sanjaya said, "Ninety great warriors of the Kauravas faced Arjun the possessor of monkey standard. The Sansapatak warriors took a dreadful oath concerning the next world and besieged Arjun Shri Krishn drove the swift horses adorned with gold ornaments and pearls, towards the car of Karan. The Sansaptak warriors checked him on his way towards Karan; but he slew all the ninety warriors and cut down their drivers, bows and standards. Wounded by his arrows, the warriors fell down from their cars like sidhas, at the expiry of their merits. Then the Kauravas attacked Arjun with their horses and elephants and the large army surrounded him. The

॥ ९ ॥ तामन्तरीक्षे विततां शस्त्रवृष्टिं समन्ततः । व्यधमत् पाण्डवो बाणैस्ततः सूर्य्य इवांशुभिः ॥ १० ॥ ततो म्लेच्छाः स्थितैर्मत्तैस्त्रयोदशशतैर्गजैः । पार्श्वतो व्यहनन् पार्थं तव पुत्रस्य शासनात् ॥ ११ ॥ कर्णिनालीकनाराचैस्तोमरप्रासशक्तिभिः । कम्पनै भिन्दिपालैश्च रथस्थं पार्थमार्दयन् ॥ १२ ॥ तां शस्त्रवृष्टिमतुलां द्विपहस्तैः प्रवेरिताम्। चिच्छेद निशितैर्भल्लैरर्द्धचन्द्रैश्च फाल्गुनः ॥ १३ ॥ अथ तान् द्विरदान् सर्व्वान्नाना लिङ्गैः शरोत्तमैः । सपताकध्वजारोहान गिरीन् वज्रैरिवाहनत् ॥ १४ ॥ ते हेमपुङ्खैरिषुभिरर्द्दिता हेममालिनः हताः पेतुर्महानागाः साग्निज्वाला इवाद्रयः ॥ १५ ॥ ततो गाण्डीवनिर्घोषो महानासीद्विशाम्पते । स्तनतां कूजताञ्चैव मनुष्यगजवाजिनाम् ॥ १६ ॥ कुञ्जराश्च हता राजन् दुद्रुवुस्ते समन्ततः । अश्वाश्च पर्य्यधावन्त हतारोहा दिशो दश ॥ १७ ॥ रथा हीना महाराज रथिभिर्वाजिभिस्तथा । गन्धर्व्वनगराकारा

और शायकों से कौरवनन्दन अर्जुनको ढकादिया । ९ । फिर अर्जुन ने चारों ओर से अन्तरिक्ष में फैलीहुई उस बाणोंकी वर्षाको अपने बाणों से ऐसा छिन्न भिन्न करादेया जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से अँधेरे को तिर बिर करदेता है । १० । इसके पीछे मतवाले तेरहसौ हाथियों समेत नियतहुये म्लेच्छोंने आपके पुत्रोंकी आज्ञासे अर्जुनको पार्श्वभागकी ओरसे घायल किया । ११ । और कर्णि, नालीक, नाराच, तोमर, प्रास, शक्ति, कम्पन और भिन्दिपालों से रथ में सवार अर्जुनको पीड़ामान किया । १२ । अर्जुन ने उन हाथीके सवारों से छोड़ेहुये बड़े बाण जालों को अपने तीक्ष्णधार भल्ल और अर्द्धचन्द्रबाणों से काटा । १३ । इसके पीछे नाना रूपके उत्तम बाणों से उन सब हाथियों को पताका ध्वजा और सवारों समेत ऐसे मारा जैसे कि वज्रों से पर्व्वतों को मारते हैं । १४ । वह स्वर्णमय मालाधारी बड़े हाथी सुनहरी पुंखवाले बाणों से पीड़ित और मृतक होकर ऐसे गिरपड़े जैसे कि ज्वालामुखी पर्व्वत गिरपड़ते हैं । १५ । हे राजा इसके पीछे हाथी घोड़े समेत मनुष्योंको पुकारते और चिंघाड़ते हुये गाण्डीव धनुषका बड़ा शब्द हुआ । १६ । और वह घायल हाथी चारोंओर मृतक सवारों समेत भागे । १७ । हे महाराज

great Kaurav warriors covered him with their weapons, but he destroyed the shower of their arrows as the Sun destroys darkness. 10. Then the mlechas, with thirteen hundred elephants, attacked Arjun from behind by your son's order and wounded him in his car with various sorts of weapons. He destroyed their weapons with his arrows and killed them and their bannered elephants as lightning destroys mountains. The elephants adorned with gold garlands, wounded by gold-feathered shafts, fell down dead like burning mountains. 15. Then there was a tremendous noise from the wounded elephants, horses and men, mingled with the twangs of Gandiv bow. The elephants, whose riders were dead, fled in all

दृश्यन्तेस्म सहस्रशः ॥ १८ ॥ अश्वारोहा महाराज धावमानास्ततस्ततः । तत्र तत्रैव
दृश्यन्ते निहताः पार्थसायकैः ॥ १९ ॥ तस्मिन् क्षणे पाण्डवस्य बाह्वोर्बलमदृश्यत ।
यत् सादिनो वारणांश्च रथांश्चैकोऽजयद्युधि ॥ २० ॥ ततस्त्र्यङ्गेण महता बलेन भरतर्षभ
दृष्ट्वा परिवृतं राजन् भीमसेनः किरीटिनम् ॥ २१ ॥ हतावशेषानुत्सृज्य त्वदीयान्
कतिचिद्रथान् । जवेनाभ्यद्रवद्राजन् धनञ्जयरथं प्रति ॥ २२ ॥ ततस्तत् प्राद्रवत्
सैन्यं हतभूयिष्ठमातुरम् । दृष्ट्वार्जुनं तदा भीमो जगाम भ्रातरं प्रति ॥ २३ ॥ हताव
शिष्टांस्तुरगानर्जुनेन महाबलान् । भीमो व्यधमदभ्रान्तो गदापाणिर्महाहवे ॥ २४ ॥
कालरात्रिमिवात्युग्रां नरनागाश्वभोजनाम् । प्राकाराट्टपुरद्वारदारणीमतिदारुणाम् ।
ततो गदां नृनागाश्वेष्वाशु भीमोऽव्यवासृजत् । २५ ॥ सा जघान बहूनश्वा नश्वारो
हांश्च मारिष ॥२६ ॥ कार्ष्णायसतनुत्राणान्नरानश्वांश्च पाण्डवः । पोथयामास गदया
सशब्दं तेपतन् हताः ॥ २७ ॥ दन्तैर्दशन्तो वसुधां शेरते क्षतजोक्षिताः । भग्नमूर्द्धास्थि

रथियों औरघोड़ों सें रहित हजारों रथ गन्धर्वनगर के रूप दिखाई पड़े। १८। और इधर उधरसे दौड़ने वाले अश्व जहां तहां अर्जुन के शायकों से मृतक दिखाई दिये । १९ । उस युद्ध में पाण्डव अर्जुनकी भुजाओं का पराक्रम देखा गया जो अकेलेनेही युद्ध में अश्वसवार हाथी और रथों को विजय किया । २० । हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे भीमसेन तीन अंगरखने वाली बड़ी सेना से घिराहुआ अर्जुनको देखकर । २१ । मरने से शेष बचेहुये आपके थोड़े रथियोंको छोड़कर वेगसे अर्जुन के रथकी ओरको दौड़ा ।२२। इसके पीछे बहुतमृतक और दुःखी सेना भागी तब भीमसेन अपने भाई अर्जुन के पास गये बड़े युद्धमें थकावट से रहित गदाको लियेहुये भीमसेन ने अर्जुनसे बचेहुये शेषपराक्रमी घोड़ोंको मारा । २४। इसके पीछे भीमसेन ने कालरात्रिके समान बड़े उग्र हाथी घोड़े और मनुष्यों की खानेवाली नगरके कोटोंकी तोड़नेवाली महाभयानक गदा को मनुष्य हाथी और घोड़ोंपर छोड़ा । २५ । हे राजा उस गदा ने बहुतसे हाथी घोड़े और अश्वसवारों को मारकर लोहे के कवचधारी मनुष्य और घोड़ों को मारा और वह मनुष्य मृतकहोकर शब्द करतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े । २७। दांतों से पृथ्वी को

---

directions. Many cars, destitute of horses and riders, looked like the city of Gandharvas, and horsemen, bit by Arjun's arrows, were seen lying dead here and there. By his prowess, Arjun alone conquered horses, elephants and cars. 20. Seeing Arjun Surrounded by the army, Bhim left the remnant of your army and sped towards him. Then the army dispersed. Bhim approached Arjun and with his mace destroyed the rest of the horsemen. He hurled his dreadful mace at men, elephants and horses. 25. The mace destroyed many and they fell down dead with a crash. Tearing the earth with their teeth, they fell down, with their heads and bones broken, to be eaten

चरन्ता क्रव्यादगणभोजनाः ॥ २८ ॥ मेदोवसावसामिश्र तृप्तिमभ्यागता गदा । अस्थी
न्यप्यश्नती तस्थौ कालरात्रिव दुर्दशा ॥ २९ ॥ सहस्राणि दशाश्वानां हत्वा पत्तींश्च
भूयसः । भीमोऽभ्यधावत् संक्रुद्धो गदापाणिरितस्ततः ॥ ३० ॥ गदापाणिं ततो भीमं
दृष्ट्वा भारत तावकाः । मेनिरे समनुप्राप्तं कालदण्डोद्यतं यमम् ॥ ३१ ॥ स मत्त इव
मातङ्गः संक्रुद्धः पाण्डुनन्दनः । प्रविवेश गजानीकं मकरः सागरं यथा ॥ ३२ ॥ विगाह्य
च गजानीकं प्रगृह्य महतीं गदाम् । क्षणेन भीमः संक्रुद्धस्तन्निन्ये यमसादनम् ॥ ३३ ॥
गजान् सकङ्कटान् मत्तान् सारोहान् सपताकिनः । पततः समपश्याम सपक्षानिव
पर्वतान् ॥ ३४ ॥ हत्वा तु स गजानीकं भीमसेनो महाबलः । पुनः स रथमास्थाय पृष्ठ
तोऽर्जुनमन्वयात् ॥ ३५ निहतं प्रामुखप्रायं निरुत्साहं परं बलम् । व्यालम्बत महाराज

काटते रुधिर में भरे टूटे मस्तक हाड और चूर्णहोकर मांस भक्षी जीवों का भक्षणार्थ मृत्यु वशहुये । २८ । तब गदानेभी रुधिर मांस और मज्जा से तृप्तहोकर शीत लताको पाया कालरात्रि के समान दुख से देखने के योग्य हाड़ों कोभी खाती हुई निपत हुई । २९ । अत्यन्त क्रोधयुक्त गदा हाथ में लिये भीमसेन दशहजार घोड़े और अनेक पत्तियों को मारकर इधर उधरको दौड़ा । ३० । हे भरतवंशी इसके पीछे आपके शूरवीरोंने गदाधारी भीमसेनको देखकर कालदण्ड के उठाने वाले यमराजको ही सम्मुख आयाहुआ माना । ३१ । मतवाले हाथी के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह पाण्डुनन्दन हाथियों की सेना में ऐसे पहुंचा जैसे कि समुद्र में मगर पहुँचता है । ३२ । वहां अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेन से बड़ी गदाको लेकर हाथियोंकी सेनाको मथाकर वा मथकर क्षणमात्रमें ही यमलोक में पहुँचाया । ३३ । घण्टों समेत वा ध्वजा पताकाधारी सवारों से युक्त मतवाले हाथियोंको ऐसे गिरताहुआ देखा जैसे कि पक्षधारी पर्वत गिरते हैं । ३४ । बड़े पराक्रमी भीमसेन उस हाथियों की सेनाको मारकर अपने रथपर सवार होकर अर्जुन के पीछे चले । ३५ । हे महाराज शत्रुओंकी बहुतसी सेनामारी गई और बहुधा

by the birds of prey. The mace, fed by flesh and blood, became cool and devoured bones too, like the night of Death. Having slain ten thousand horse and foot, Bhim rushed here and there. 30. Seeing Bhim and his mace, the Kaurav warriors took him for Yam the wielder of staff. Enraged like a wild elephant, Bhim entered the army as a crocodile enters the sea. With his huge mace, he crushed and killed that army of elephants in a moment. 33. We saw there mad elephants, adorned with bells and standards, fall down with their riders like winged mountains. Having slain these elephants, Bhim mounted his car and followed Arjun. 35. A large portion of the enemies was slain; a part flew and many, covered with weapons, sought protection. Seeing that insensible army seek protection, Arjun

प्रायशः शास्त्रयोधितम् ॥ ३६ ॥ विलम्बमानं तत् सैन्यमप्रगल्भमवस्थितम् । दृष्ट्वा प्राच्छादयद्बाणैरर्जुनः प्राणतापनैः ॥ ३७ ॥ नराश्वनरमातङ्गा युधि गाण्डीवधन्वना । शरव्रातैश्चिता रेजु कदम्बा इव केशरैः ॥ ३८॥ ततः कुरूणामभवदार्त्तनादो महान्नृप । नराश्वनागासुहरैर्वध्यतामर्जुनेषुभिः ॥ ३९ ॥ हाहाकृतं भृशं त्रस्तं लीयमानं परस्परम् । अलातचक्रवत् सैन्यं तदाभ्रमत तावकम् ॥ ४० ॥ ततस्तद्युद्धमभवत् कुरूणां सुमहद्बलैः । न ह्यत्रासीदनिर्भिन्नो रथः सादी हयो गजः ॥ ४१ ॥ आदीप्तमिव तत् सैन्यं शरैश्छिन्नतनुच्छदम् । आसीत् स्वशोणितक्लिन्नं फुल्लाशोकवनं यथा ॥ ४२॥ तं दृष्ट्वा कुरवस्तत्र विक्रान्तं सव्यसाचिनम् । निराशाः समपद्यन्त सर्वे कर्णस्य जीविते ॥ ४३॥ अविषह्यन्तु पार्थस्य शरसम्पातमाहवे । दृष्ट्वा न्यवर्त्तन् कुरवो जिता गाण्डीवधन्वना ॥ ४४ ॥ ते हित्वा समरे कर्णं वध्यमानाश्च सायकैः । प्रदुद्रुवुर्दिशो भीताश्चुक्रुशुश्चापि

सेनाके लोग मुखफेरेहुये निरुत्साह और वहु तेरे शस्त्रों से दकेहुये शरणमें आये ।३६। अर्जुन ने उसशरण में आईहुई अचेतसेनाको देखकर प्राणों के तपानेवाले वाणों से दकदिया । ३७ । उस युद्धमें गांडीव धनुषधारी के वाणों से छिदेहुये मनुष्य घोड़े रथ और हाथी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि केशरों करके कदम्ब का वृक्ष शोभित होता है । ३८ । हे राजा इसके पीछे मनुष्य घोड़े और हाथियों के प्राणोंके हरने वाले अर्जुन के वाणों से घायल हुये कौरवों के वड़े पीड़ावान शब्द हुये । ३९ । तव हाय हाय करने वाली आपकी सेना अत्यन्त भयभीत होकर परस्पर में गुप्त होनेवाले अलातचक्र अर्थात् वनेटीके समान भ्रमण करनेलगी ।४०। इसके अनन्तर वह कौरवों का युद्ध बड़े पराक्रमियों के साथ हुआ जहां रथ अश्वसवार घोड़े और हाथियों में कोई भी विना घायल हुये नहीं रहा । ४१ । वह सेना चारोंओर से अग्नि रूप वाणों से विदीर्ण रुधिर और चर्म से भरे शरीर फूले हुये अशोक वृक्ष के वनके समान होगई । ४२ । वहां सब कौरव इस पराक्रमी अर्जुनको देखकर कर्ण के जीवन में निराश हुये । ४३ । गांडीव धनुषधारी से मारेहुये कौरव युद्धमें अर्जुन के वाणोंकी वर्षा को असह्य मानकर लौटे । ४४ । शायकों से घायल हुये

covered them with his fatal arrows. Pierced by the arrows of Gandiv, men, horses, cars and elephants looked glorious like a kadamb tree, with thistles. There were heard tremendous cries of the Kauravas wounded with the fatal arrows of Arjun. Your army moved in a circle, crying out to hide themselves. 40. In that battle none of the Kaurava warriors, cars, horsemen, horses and elephants, escaped unwounded. Wounded by the fiery arrows, the warriors looked like asok trees in bloom. At the sight of Arjun's prowess, the Kauravas became hopeless of Karan's life. Shot by the arrows of the wielder of Gandiv, the Kauravas unable to with stand him, turned back. The Kauravas wounded by arrows, left Karan to fly in all directions, some calling

सूतजम् ॥ ४५ ॥ अभ्यद्रवत तान् पार्थः किरञ्छरशतान् बहून् । हर्षयन् पाण्डवान् योधान् भीमसेनपुरोगमान् ॥ ४६ ॥ पुत्रास्तु मे महाराज जग्मुः कर्णरथं प्रति । अगाधे मज्जतां तेषां द्वीपः कर्णोभवत्तदा ॥ ४७ ॥ कुरवो हि महाराज निर्विषा पन्नगा इव । कर्णमेवोपलीयन्त भयाद्गाण्डीवधन्वनः ॥ ४८ ॥ यथा सर्वाणि भूतानि मृत्योर्भीतानि मारिष । धर्ममेवोपलीयन्ते कर्मवन्ति हि यानि च ॥ ४९ ॥ तथा कर्णं महेष्वासं पुत्रास्तव नराधिप । उपालीयन्त संत्रासात् पाण्डवस्य महात्मनः ॥ ५० ॥ ताञ्छोणित परिक्लिन्नान् विषमस्थाञ्छरातुरान् । मा भैष्टेत्यब्रवीत् कर्णो ह्यभितो मामितेति च ॥ ५१ ॥ प्रभग्नं हि बलं दृष्ट्वा बलात् पार्थेन तावकम् । धनुर्विस्फारयन् कर्णस्तस्थौ शत्रुजिघांसया ॥ ५२ ॥ तान् विद्रुतान् कुरून् दृष्ट्वा कर्णः शस्त्रभृतांवरः । सञ्चिन्तयित्वा पार्थस्य वधे दध्रे मनःश्वसन् ॥ ५३ ॥ विस्फार्य सुमहच्चापं तत आधिरथि

वह कौरव कर्णको त्यागकर भयभीत होकर चारोंओर को भागे और कर्ण को भी पुकारे । ४५ । उस समय अर्जुन हजारों बाणों को छोड़ताहुआ और भीमसेन आदि युद्धकर्त्ता पाण्डवोंको प्रसन्न करता हुआ उनके सम्मुख गया । ४६ । हेमहाराज फिर आपके पुत्र कर्ण के रथके पासगये तब उन अथाह समुद्र में डूबेहुये आपके पुत्रादिकों को आश्रयरूप टापू होगया । ४७ । हेराजा निर्विष सर्प के समान सब कौरव अर्जुनके भयसे कर्णके पास गुप्तहोकर छिपगये । ४८ । जैसे कि कर्म कर्त्ता लोग मृत्युसे भयभीत होकर अपनेही धर्म में आश्रित होते हैं उसीप्रकार आपके पुत्रभी महात्मा पांडव अर्जुनके भयसे बड़े धनुषधारी कर्ण के पास शरणागत रूप हुये । ५० । उन रुधिर से भरे बाणों से पीड़ामान बड़ी आपत्ति में फँसे हुये लोगों को देखकर कर्ण ने कहा कि भय मतकरो और मेरेहीपास नियत रहो । ५१ । फिर अर्जुनके पराक्रम से अत्यन्त छिन्नभिन्न और व्याकुल आपकी सेना देखकर वह कर्ण शत्रुओं के मारने की इच्छासे धनुष टंकारताहुआ । ५२ । उस शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्वास लेनेवाले कर्ण ने उन भागेहुये कौरवों को देखकर चिन्तापूर्व्वक अर्जुनके मारने में चित्त किया । ५३ । इसके पीछे

out the name of Karan. 47. Discharging thousands of arrows, Arjun faced them, cheering Bhim and other Pandavas. 'Your sons approached' Karan's car for protection. Like venomless serpents, the Kauravas afraid of Arjun, sought protection of Karan. They went to Karan for protection like worldly men engaging in the practice of virtue for fear of Death. 50. Seeing his men fallen in trouble, Karan said, " Have no fear, stay with me. Seeing the army routed by Arjun, Karan stood there twanging his bow, and seeing the state of his men, with sighs, he resolved to slay Arjun. Twanging his huge bow, Karan rushed again at the Panchals in the presence of Arjun. The warriors, with red eyes, showered their arrows at Karan like rain fall

ष्टंषः । पाञ्चालान् पुनराधावत् पश्यतः सव्यसाचिनः ॥ ५४ ॥ ततः क्षणेन क्षितिपाः क्षतजप्रतिमेक्षणाः । कर्णं ववर्षुर्बाणौघैर्यथा मेघा महीधरम् ॥ ५५ ॥ ततः शरसहस्राणि कर्णमुक्तानि मारिष । व्ययोजयत पाञ्चालान् प्राणैः प्राणभृतांवर ॥ ५६ ॥ ततशब्दो महानासीत् पाञ्चालानां महामते । वध्यतां सूतपुत्रेण मित्रार्थेमित्रगृद्धिना ॥ ५७ ॥

इति कर्णपर्वणि संकुलयुद्धएकाशीतितोऽध्यायः ८१ ॥

सञ्जय उवाच । ततः कर्णः कुरुषु प्रद्रुतेषु वरूथिना श्वेतहयेन राजन् । पाञ्चालपुत्रान् व्यधमत् सूतपुत्रो महेषुभिर्वात इवाभ्रसंघान् ॥ १ ॥ सूतं रथादञ्जलिकेन निपात्य

कर्ण बहुत बड़ेभारी धनुषको टंकारकर अर्जुन के देखतेहुये फिर पांचालों की ओर को दौड़ा । ५४ । उससमय रक्तनेत्र राजाओं ने एक क्षणभरमेंही कर्ण के ऊपर ऐसी बाणवर्षा करी जैसे कि पर्वतपर बादल वर्षा करते हैं । ५५ । हे जीवधारियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे कर्णके छोड़हुये हजारों बाणों ने पांचालों को प्राणों से रहित करदिया । ५६ । हे बड़े ज्ञानी वहां मित्रको चाहनेवाले कर्ण के हाथ से मित्रों केही निमित्त घायल होनेवाले पांचालों के बड़े शब्द हुये । ५७ ।

अध्याय ८२

संजय बोले कि हे राजा इसके अनन्तर कवच और श्वेत घोड़ेवाले अर्जुन के हाथसे कौरवों के भागजानेपर सूतके पुत्र कर्ण ने बड़े बाणों से राजा पांचाल के पुत्रों को ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसे कि बादलोंके समूहों को वायु तिरे बिरे करदेताहै ।१। अंजलिक नाम बाणों के द्वारा रथसे सारथीको गिराकर घायल

over a mountain. Karan's arrows deprived thousands of the Panchals of their lives. For the sake of his friend, Karan slew the Panchals *who fought for their friends,*" 57,

CHAPTER LXXXII

Sanjaya said, "At the flight of the Kauravas from Arjun, Karan dispersed the Panchal princes as the wind does the clouds. He slew -drivers and horses, and having covered Shatanik and Shrutsom with arrows, he cut their bows. Then he wounded Dhrishtadyumn with

जघान् चाश्वान् जनमेजयस्य । शतानीकं सुतसोमञ्च भल्लैरथाकिरद्धनुषी चाप्य
कृन्तत् ॥ २ ॥ धृष्टद्युम्नं निर्विभेदाथ षड्भिर्जघान चाश्वांस्तरसा तस्य संख्ये ।
हत्वा चाश्वान् सात्यकेः सूतपुत्रः कैकयपुत्रं न्यवधीद्विशोकम् ॥ ३ ॥ तमभ्यधावन्नि
हते कुमारे कैकयसेनापतिरुग्रकर्मा । शरैर्विधुन्वन् भृशमुग्रवेगैः कर्णात्मजं चाभ्यहनत्
प्रसेनम् ॥ ४ ॥ तस्यार्द्धचन्द्रैस्त्रिभिरुच्चकर्त प्रसह्य बाहू च शिरश्च कर्णः । स स्यन्द
नाद्गामगतासुः पपात परश्वधैः शाल इवावरुग्णः ॥ ५ ॥ हताश्वमञ्जोगतिभिः प्रसेनः शिनि
प्रवीरं निशितैः पृषत्कैः । प्रच्छाद्य नृत्यन्निव कर्णपुत्रः शैनेयबाणाभिहतः पपात । ६ ॥
पुत्रे हते क्रोधपरीतचेताः कर्णः शिनीनामृषभं जिघांसुः । हतोसि शैनेय इति ब्रुवन् स
व्यवासृजद्बाणममित्रसाहम् ॥ ७ ॥ तमस्य चिच्छेद शरं शिखण्डी त्रिभिस्त्रिभिश्च प्रतु

कियेहुये घोड़ों को मारा और शतानीक वा श्रुतसोम को भल्लोंसे ढककर उनके धनुषोंको भी काटा ।२। इसके पीछे छः बाणों से धृष्टद्युम्न को छेदके बड़े वेगसे उसके घोड़ोंको भी मारा। फिर सूतपुत्रने सात्यकी के घोड़ों को मारकर कैकेय के विशोकनाम पुत्रको मारा । ३ । कुमार के मरनेपर कैकेय का सेनापति जो कि महा भयानक कर्म करनेवाला था वह अपने उग्रबाणों से सेना को छिन्न भिन्न करता हुआ उसके सम्मुख दौड़ा और कर्ण के पुत्र प्रसेनको घायल किया । ४ । कर्ण ने हँसकर तीन अर्द्धचन्द्र बाणों से उसकी भुजा और शिरको काटा तब वह मृतक होकर रथमे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसे से काटाहुआ सालका वृक्षहोता है । ५ । कर्णका पुत्र प्रसेन मृतक घोड़ेवाले सात्यकि को अपने कानतक खैंचे हुये पृषत्क नाम बाणोंसे ढककर नाचताहुआ सात्यकि के हाथसे घायल होकर गिर पड़ा । ६ । पुत्र के मरने से क्रोधयुक्त चित्त करके सात्यकि के मरने की इच्छा करते हुये मारा है इस प्रकार बोलतेहुये कर्णने सात्यकी के ऊपर शत्रुघाती बाण को छोड़ा । ७ । उसके उस बाणको शिखण्डीने काटकर तीनबाणों से कर्णको

six arrows and slew his horses. Then he slew Satyaki's horses and Vishok the Kaikaya prince. At the death of the prince, the commander of the armies, a dreadful warrior, came on dispersing the army and wounded Prasen the son of Karan. With a smile, Karan cut his head and arms with three arrows and he *fell down* like a sal tree cut down by an axe. Prasen the son of Karan, having covered Satyaki with his arrows, fell down wounded with the arrows of Satyaki. Enraged at the death of his son, Karan, desirous of slaying Satyaki, shot a fatal arrow at the latter, saying, "I have slain!" Shikhandi cut that arrow and wounded Karan with three arrows. Having cut Karan's bow and standard, Shikhandi's arrows fell down on the ground. Then brave *Karan wounded him with ten arrows* and cut down the head of Dhrishtadyumna's son and wounded Shrutsom

सोढ् कर्णम । शिखण्डिनः कार्मुकं स ध्वजञ्च छित्वा क्षुराभ्यां व्यधमत् सूतजातः ॥८॥ शिखण्डिनं षड्भिरविध्यद्यो धार्ष्टद्युम्नेः स शिरश्चाप्यचकर्त्त । अथाभिनत् सुत सोमं शरेण सुसंशितेनाधिरथिर्महात्मा । अथाक्रन्दे तुमुले वर्त्तमाने धार्ष्टद्युम्ने निहते तत्र कृष्णः । अपाञ्चाल्यं क्रियते याहि पार्थ कर्णं जहीत्यब्रवीद्राजसिंह ॥ १० ॥ ततः प्रहस्याशु नरप्रवीरो रथं रथेनाधिरथेर्जगाम । भये तेषां त्राणमिच्छन् सुबाहुरभ्याहतानां रथयूथपेन ॥ ११ ॥ विस्फार्य गाण्डीवमथोग्रघोषं ज्यया समाहत्य तले भृशाञ्च बाणान्धकारं सहसैव कृत्वा जघान नागाश्वरथध्वजांश्च ॥ १२ ॥ प्रतिश्रुतः प्राचरन्नन्तरीक्षे गुहा गिरिणामपतन् वयांसि । यन्मण्डलज्येन विजृम्भमाणो रौद्रे मुहूर्तेऽभ्यपतत् किरीटी ॥ १३ ॥ तं भीमसेनोऽनुययौ रथेन पृष्ठे रक्षन् पाण्डवमेकवीरः । तौ राजपुत्रौ त्वरितौ रथाभ्यां कर्णाय यातावरिभिर्विपक्तौ ॥ १४ ॥ तत्रान्तरे सुमहत् सूतपुत्रश्चक्रे

पीडितकिया ।फिर शिखण्डी के बाण कर्णकि ध्वजा और धनुषको काटकर पृथ्वी में गिरपड़े ।८। तब उग्ररूप महात्मा अधिरथि कर्णने शिखण्डी को छः बाणों से घायल करके धृष्टद्युम्न के लड़के के शिरको काटा और इसी प्रकार बड़े तीक्ष्ण बाणों से श्रुतसोम को घायल किया ।९। हे राजाओंमें श्रेष्ठ वहां प्रबल शूरवीरके वर्तमान होने और धृष्टद्युम्नके पुत्रके मरनेपर श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से कहा कि यह कर्ण इस लोकको पांचलों से रहित किये देताहै हे अर्जुन अब चलकर कर्णको मार ।१०। उसके पीछे नरोंमें बड़े वीर सुन्दर भुजावाले भयके स्थानमें महारथी से घायल इनलोगों की रक्षा करने के इच्छावान अर्जुनने हँसकर शीघ्रही रथके द्वारा कर्णके रथको पाया । ११ । और महाकठोर उग्र गांडीव धनुषको चढ़ाकर हथेलीपर प्रत्यंचाका शब्द करके अकस्मात् बाणोंका अन्धकार उत्पन्न करके ध्वजारथ घोड़े और हाथियों को मारा अन्तरिक्ष में बहुतसे शब्द घूमनेलगे और पक्षीलोग पर्वतों की गुफाओं में गिरे और एक वीर भीमसेन रथके द्वारा अर्जुन को पीछेकी ओरसे रक्षाकरता हुआ चला शत्रुओंसे घिरहुये वह दोनों राजकुमार रथोंके द्वारा शीघ्रही कर्ण के सम्मुखगये । १४ । वहांपर अन्तरिक्ष में कर्णके सोमकलोगों को घेरकर उस महायुद्धके नियत रथ घोड़े और हाथियों के

with his arrows. Seeing Karan's prowess and the death of Dhrishtadyumna's son, Shri Krishn said to Arjun, "Karan is clearing the world of all the Panchals. You must slay him at once. 10. Then the best of warriors, wishing to protect his army, approached Karan with a smile, and with a tremendous twang of his bow, he produced a darkness with his arrows, slaying elephants, horses and car-warriors There was a great noise in air, the birds fell down in mountain caves Bhimsen followed Arjun, protecting the rear. Surrounded by enemies, the two princes soon came face to face with Karan. They slew the horses and elephants of the Somak warriors of Karan and covered the

युद्धे सोमकान् संप्रमृद्नन् । रथाश्वमातङ्गगणान् जघान प्रच्छादयामास शरैर्दिशश्च ॥ १५॥ तमुत्तमौजा जनमेजयश्च क्रुद्धो युधामन्युशिखण्डिनौ च । कर्णं विभेदुः सहिताः पृषत्कैः संनर्दमानाः सह पार्षतेन ॥१६॥ ते पञ्च पञ्चालरथप्रवीरा वैकर्तनं कर्णमभिद्रवन्तः । तस्माद्रथाच्च्यावयितुं न शेकुर्धैर्यात् कृतात्मानमिवेन्द्रियार्थाः ॥ १७ ॥ तेषां धनूंषि ध्वजवाजिसूतांस्तूर्णं पताकाश्च निकृत्य बाणैः । तान् पञ्चभिः स त्वभ्यहनत् पृषत्कैः कर्णस्ततः सिंह इवोन्ननाद ॥ १८ ॥ तस्यास्यतस्तानभिनिघ्नतश्च ज्याबाणहस्तस्य धनुःस्वनेन । साद्रिद्रुमा स्यात् पृथिवी विशीर्णेत्यतीव मत्वा जनता व्यषीदत् ॥ १९ ॥ स शक्रचापप्रतिमेन धन्वना भृशायतेनाधिरथिः शरान् सृजन् । बभौ रणे दीप्तमरीचिमण्डलो यथांशुमाली परिवेषवांस्तथा ॥ २० ॥ शिखण्डिनं द्वादशभिः पराभिनच्छितैः शरैः षड्भिरथोत्तमौजसम् । त्रिभिर्युधामन्युमविध्यदाशुगैस्त्रिभिः सोमकपार्षतात्मजौ ॥ २१ ॥ पराजिताः पञ्च महारथास्तु ते महाहवे सूतसुतेन

सपूहों को मारा और बाणों से सब दिशाओं को ढकदिया । १५ । उत्तमौजा, जनमेजय, क्रोधयुक्त युधामन्यु, शिखंडी और धृष्टद्युम्न इन सबने अपने २ पृषत्कों से कर्णको छेदा वह पांचाल देशी रथियों में बड़ेवीर पांचों कर्णके सम्मुख दौड़े धैर्य से बड़े सावधान कर्णका यह सबलोग रथसे गिरानेको ऐसेसमर्थ नहींहुये जैसे कि शान्त और जितेन्द्री पुरुष को इन्द्रियों के विषय नहीं गिरासके । १७ । कर्ण ने बाणों से उन्होंके धनुष ध्वजा घोड़े सारथी और पताकाओं को शीघ्रता से काटकर पांच पृषत्कों से उनको घायलकरके सिंहनाद किया । १८ । उन बाणों को छोड़ते और चारोंओर से मारते उस प्रत्यंचा और बाण रखनेवाले कर्ण के धनुषके घोरशब्द से पर्वत वा वृक्षादिसमेत पृथ्वी कंपायमानहोगी ऐसाजानकर मनुष्यों के समूह पीड़ामान हुये । १९ । वहकर्ण इन्द्रधनुषके समान अपनेबड़े धनुष से बाणों को छोड़ता युद्ध में ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रकाशित ज्योतियों का मण्डल और किरणों के समूहोंका रखनेवाला पार्श्व मण्डलसे घिराहुआ सूर्य होताहै । २० । शिखंडीको तीक्ष्णबारह बाणों से उत्तमौजसको छः बाणोंसे युधामन्युको शीघ्रगामी तीनबाणों से और सोमकधृष्टद्युम्नके पुत्रोंको तीन२बाणोंसे छेदा

directions with arrows. 15. Uttamauja, Janmejaya, enraged Yudhamanyu, Shikhandi and Dhrishtadyumn pierced Karan with their sharp darts. The five great Panchal warriors attacked Karan but could not overpower him as the senses cannot overpower a man who has control over them. He cut down their bows, standards, horses, drivers and banners and roared after wounding them. Seeing the directions resounding with his hard arrows, the warriors were much terrified. Discharging arrows from his huge bow like that of Indra he looked glorious like a circle of fire, with bright rays. 20. He wounded Shikhandi with twelve sharp arrows, Uttamauja with six,

मारिष । निरुद्यमास्तस्थुरमित्रनन्दना यथेन्द्रियार्थात्मवता पराजिताः ॥ २२ ॥ निमज्ज
तस्तानथ कर्णसागरे विपन्ननावो वणिजो यथार्णवे । उद्दध्रिरे नौभिरिवार्णवाद्रथैः
सुकल्पितैर्द्रौपदिजाः स्वमातुलान् ॥ २३ ॥ ततः शिनीनामृषभः शितैः शरैर्निकृत्य कर्ण
प्रहितानिषून् बहून् । विदार्य कर्णं निशितैरयस्मयैस्तथात्मजं ज्येष्ठमविध्यदष्टभिः ॥ २४ ॥
कृपोऽथ भोजश्च तवात्मजस्तथा स्वयं च कर्णो निशितैरताडयत् । स तैश्चतुर्भिर्युयुधे
यदूत्तमो दिगीश्वरैर्दैत्यपतिर्यथा तथा ॥ २५ ॥ समाततेनेष्वसनेन कूजता भृशायतना
मितवाणवर्षिणा । बभूव दुर्धर्षतरः स सात्यकिः शरन्नभोमध्यगतो यथा रविः ॥ २६ ॥
पुनः समारुह्य रथान् सुदंशिताः शिनिप्रवीरं जुगुपुः परन्तपाः । समेत्य पाञ्चालमहा
रथा रणे मरुद्गणाः शक्रमिवारिनिग्रहे ॥ २७ ॥ ततोऽभवद्युद्धमतीव दारुणं तवाहितानां

। २१ । हे श्रेष्ठ फिर युद्धमें कर्णके हाथसे पराजित शत्रुओं के प्रसन्न करनेवाले पांचों महारथी कर्म रहितहोकर ऐसे नियतहुये जैसे कि ज्ञानी से जीतेहुये इन्द्रियोंके विषय होते हैं । २२ । जैसे कि नौकासे रहित व्यापारी लोग समुद्रमें डूबतेहैं इसी प्रकार कर्णरूपी समुद्रमें डूबनेवाले उन अपने मामाओं को द्रौपदीके पुत्रोंने अच्छे अलंकृत रथरूप नौकाओं के द्वारा उस समुद्रसे निकाला । २३ । उसके पीछे सात्यकिने कर्णके चलायेहुयेबहुतबाणोंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे काटकर और तीक्ष्ण लोहे के बाणों से कर्ण को घायल करके आठ बाणों से आपके बड़े बेटेको छेदा । २४ । इसकेपीछे कृपाचार्य्य कृतवर्मा दुर्योधन और आप कर्णने तीक्ष्णबाणों से घायल किया वह श्रेष्ठ यादव इनचारोंके साथ ऐसे युद्ध करनेलगा जैसे कि दैत्यों का स्वामी दिग्पालोंके साथ लड़ता है । २५ । बड़े उच्चशब्दवाले बहुत लम्बे असंख्यबाण वर्षानेवाले बड़े धनुषसे वह सात्यकि उनपर ऐसा प्रबलहुआ जैसे कि शरद्‌ऋतु में आकाशमें वर्तमान सूर्य प्रबल होताहै । २६ । शत्रुसंतापी बड़े अलंकृत शस्त्रधारी पांचाल देशी महारथियोंने फिर रथोंपर सवारहोकर सात्यकिको ऐसे रक्षितकिया जैसे कि शत्रुओं के मारने में मरुद्गणलोग इन्द्रको रक्षित करतेहैं । २७।

Yudhamanyu with tree and the sons of Dhrishtadyumn with three arrows each. Defeated by Karan, the five great warriors stood motionless like the senses kept under control by a wise man. Drowning like merchants in the ocean of Karan, they were rescued by the sons of their sister Draupadi. Then Satyaki cut down many of Karan's arrows and wounded him and his son with bright arrows. Then Kripacharya, Kritvarma, Duryodhan and Karan fought with Satyaki as the guardians of the directions fight with the lord of daityas. 25. Shooting long arrows from his huge bow, he overpowered them as *the Sun overpowers cold.* The *Panchal warriors, riding* new cars, protected Satyaki as Marutas protect Indra. The battle from both sides was dreadful and destructive of elephants like that of *gods* and

तथ सैनिकैः सह । नराश्वमातंगविनाशनं तथा यथा सुराणामसुरैः पराभवत्
॥ २८ ॥ रथद्विपा वाजिपदातयस्तथा भ्रमन्ति नानाविधशस्त्रवेष्टिताः ।
परस्परेणाभिहताश्च चस्खलुर्विनेदुरार्त्ता व्यसवोपतंस्तथा ॥ २९ ॥ तथागते भीममभी
त्नवात्मजः ससार राजावरजः किरञ्छरैः । तमभ्यधावत्त्वरितो वृकोदरो महारुरुं
सिंह इवाभिपेदिवान् ॥ ३० ॥ ततस्तयोर्युद्धमतीवदारुणं प्रदीव्यतोः प्राणदुरोदरं द्वयोः ।
परस्परेणाभिनिविष्टरोषयोर्यथा पुरा शम्बरशक्रयोरभूत् ॥ ३१ ॥ शरैः शरीरान्तिकरैः
सुतेजनैर्निजघ्नतुस्तावितरेतरं भृशम । सकृत् प्रभिन्नाविव वासितान्तरे महागजौ मन्म
थसक्तचेतसौ ॥ ३२ । तवात्मजस्याथ वृकोदरस्त्वरन् धनुः क्षुराभ्यां ध्वजमेव चाच्छि
नत् । । ललाटमप्यस्य बिभेद पत्रिणा शिरश्च कायात् प्रजहार सारथेः ॥ ३३ ॥ स
राजपुत्रोन्यदवाप्य कार्मुकं वृकोदरं द्वादशभिः पराभिनत् । स्वयं नियच्छंस्तुरगानजि
ह्मगैः शरैश्च भीमं पुनरप्यवीवृषत् ॥ ३४ । ततः शरं सूर्यमरीचिसप्रभं सुवर्णवज्रोत्त

इसकेपीछे आपकी सेनाओंके साथ शत्रुओंका वहयुद्ध महाभयकारी हुआ जो कि उनरथ घोड़े और हाथियोंका विनाशकारीथा जैसे कि पूर्वसमयमें देवताओंका युद्ध दैत्योंके साथहुआ । २८ । उसीप्रकार रथहाथी घोडेऔर पदातियों समेत सबसेना शस्त्रोंसे ढकगई और परस्पर शब्दों को करतेहुये मृतकहोकर गिरपड़े । २९ । उस दशामें राजा दुर्योधन से छोटा आपका पुत्र दुश्शासन बाणों से भीमसेन को ढकता सम्मुखगया भीमसेनभी बड़ी शीघ्रतासे उसके सम्मुखगया और उसको ऐसे सम्मुखपाया जैसे कि सिंह बडे रुरुको सम्मुख पाताहै । ३० । इसकेपीछे प्राणोंका द्यूतखलनेवाले परस्पर क्रोधभरे हुये उन दोनोंका ऐसा महाभारी युद्धहुआ जैसे कि बड़े साहसी संबरदैत्य और इन्द्रकाहुआथा । ३१ । उनदोनोंने शरीरको पीड़ित करनेवाले सुन्दर नोकवाले बाणों से परस्पर में ऐसाकठिन घायल किया जैसे कि हथिनियों के मध्यमें कामदेवसे प्रवृत्तचित्तवारंवार घायलहुये दो बड़े हाथी लड़ते हैं । ३२ । इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने आपके पुत्रके ध्वजा और धनुष को दो क्षुरप्रों से काटा और उसके ललाटको बाणसे छेदकर सारथी के शिर को

Daityas in the days of yore. 28. The armies were covered by arrows, and men and beasts fell down dead. Then Dushasan, the younger brother of Duryodhan, faced Bhim as a large deer faced a lion. 30. Playing a game of life, both the warriors fought furiously with like Sambar and India. They wounded each other with their arrows like two mad elephants for the sake of females. Then Bhim cut the bow and standard of your son with two arrows and having wounded him on the head, cut off the head of his driver. He wounded Bhim with twelve arrows, and himself driving the horses, sent forth other arrows at him. Then he discharged bright arrows, studded with gold and jewels and swift like lightning to pierce the body of Bhim. Wounded by that arrow, Bhim fell down like one dead and held the

मरममूर्च्छितम् । महेन्द्रवज्राशनिपातदुःसहं मुमोच भीमांगविदारणक्षमम् ॥ ३५ ॥ स तेन निर्भिन्नतनुर्वृकोदरो निपातितः स्रस्ततनुर्गतासुवत् । प्रसार्य बाहू रथवर्य्यमाश्रितः पुनः स संज्ञामुपलभ्य चानदत् ॥ ३६ ॥

इति कर्णपर्वणि भीम दुश्शासनयुद्धे द्व्यशीतितोऽध्यायः ८२ ॥

सञ्जय उवाच । तत्राकरोद्दुष्करं राजपुत्रो दुःशासनस्तुमुलं युध्यमानः चिच्छेद भीमस्य धनुः शरेण षड्भिः शरैः सारथिमप्यविध्यत् ॥ १ ॥ स तत् कृत्वा राजपुत्रस्तरस्वी विव्याधभीमं नवभिः पृषत्कैः ततोऽभिनद्बहुभिः क्षिप्रमेव वरेषुभिर्भीमसेनं महात्मा ॥२॥ ततः क्रुद्धो भीमसेनस्तरस्वी शक्तिंघोरां प्राहिणोत्ते सुताय तामापतन्तीं सहसातिघोरां

शरीरसे पृथक् करादिया । ३३ । उस राजकुमार ने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेनको वाणदवाण से छेदा और आपही घोड़ों को चलाताहुआ भीमसेनपर वाणोंकी वर्षा करनेलगा । ३४ । इसके पीछे सूर्यकी किरणके समान प्रकाशमान सुवर्ण हीरेआदि उत्तम रत्नों से अलंकृत महाइन्द्रके वज्ररूप बिजली के गिरने के समान कठिनता से सहनेके योग्य भीमसेन के अगों के चीरनेवाले बाणको छोड़ा । ३५ । उस बाण से घायल शरीर व्यथितरूप भीमसेन निर्जीवके समान गिरा और दोनों भुजाओंको फैलाकर उत्तम रथपर आश्रितहुआ और थोड़ेही काल में सचेतहोकर गर्जा । ३६ ।

अध्याय ८३

संजय बोले कि उस युद्धमें कठिन युद्धकरने वाले राजकुमार दुश्शासन ने ऐसा कठिन कर्मकिया कि एकबाणसे तो भीमसेनके धनुषको काटा और छै बाणों से सारथीको छेदा । १ । उस वेगवान् राजकुमार ने उस कर्म को करके भीमसेनको नौ पृषत्कों से पीड़ितकिया इसके पीछे बड़ी शीघ्रता करके उत्तम बाणों से फिर भीमसेनको छेदा । २ । फिर महाक्रोधरूप भीमसेनने आपके पुत्रपर उग्रशक्तिको चलाया तब आपके पुत्रने उस जलतीहुई उग्र शक्तिको अकस्मात् आतेहुये देखकर

car with both hands outstretched; but he soon regained consciousness." 36.

CHAPTER LXXXIII

Sanjaya said, "Fighting severely, Prince Dushasan did a brave deed. He cut the bow of Bhim with one arrow and pierced the driver with six. Having done that deed, he wounded Bhim with ar-

दृष्ट्वा सुतस्ते ज्वलितामिवोल्काम् । आकर्णपूर्णैरिषुभिर्महात्मा चिच्छेद पुत्रो दशभिः
पृषत्कैः ॥ ३ ॥ दृष्ट्वा तु तत् कर्म कृतं सुदुष्करं प्रापूजयन् सर्वयोधाः प्रहृष्टाः ।
अथाशु भीमञ्च शरेण भूयो गाढं स विव्याध सुतस्त्वदीयः ॥ ४ ॥ चुक्रोध भीमः
पुनराशु तस्मै भृशं प्रजज्वाल रुषाभिवीक्ष्य । विद्धोऽस्मि वीराशु भृशं त्वयाद्य सहस्व
भूयोपि गदाप्रहारम् ॥ ५ ॥ उक्त्वैवमुच्चैः कुपितोथ भीमो जग्राह तां भीमगदां वधाय
उवाच चाद्याहमहं दुरात्मन् पास्यामि ते शोणितमाजिमध्ये ॥ ६ ॥ अथैवमुक्तस्तनय
स्तवोग्रां शक्तिं वेगात् प्राहिणोन्मृत्युरूपाम् । आविध्य भीमोपि गदां सुघोरां विचि
क्षिपे रोषपरीतमूर्त्तिः ॥ ७ ॥ सा तस्य शक्तिं सहसा विरुज्य पुत्रं तथाजौ ताडयामास
मूर्द्धि । स विस्फुरन्नाग इव प्रभिन्नो गदामस्मै तुमुलं प्राहिणोद्वै ॥ ८ ॥ तयाहरद्दश
धन्वन्तराणि दुःशासनं भीमसेनः प्रसह्य । तया हतः पतितो वेपमानो दुःशासनो
गदया वेगवत्या ॥ ९ ॥ हयाः समग्रा निहता नरेन्द्र चूर्णीकृतश्चास्य रथः पतत्सा ।

कानतक खैंचेहुये दश पृषत्क बाणोंसे काटा । ३ । उस समय सब शूरवीरोंने प्रसन्न चित्त होकर उसकी प्रशंसाकरी इसके अनन्तर शीघ्रही आपके पुत्रने भीमसेनको फिर कठिन पीड़ित किया । ४ । तब भीमसेन उसपर अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसको देखकर क्रोधसे अत्यन्त कोपयुक्त होकर कहनेलगा कि हे वीर मैं तेरे बाणसे घायलहूं अब तुम मेरी गदाको सहो । ५ । तब क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़े शब्दसे यह कहकर उस भयानक रूप गदाको मारने के निमित्त लिया और कहा कि अरे दुरात्मा अब मैं इस युद्धभूमि मेंही तेरे रुधिरको पानकरूंगा । ६ । यह वचन सुनकर आपके पुत्रने मृत्युरूप उग्रशक्तिको अकस्मात् फेंका तब क्रोध में पूर्ण भीमसेन ने भी बड़ी उग्ररूपगदाको घुमाकर फेंका उसगदा ने उसकी शक्तिको अकस्मात् तोड़कर आपके पुत्रको मस्तकपर घायल किया । ८ । मदझाड़ने वाले हाथी के समान रुधिरको गिरातेहुये उस दुश्शासनपर फिर भीमसेन ने उस कठिनगदा को चलाया उस गदाके द्वारा भीमसेन ने बड़े हठपूर्वक दुश्शासन को दश धनुपकी दूरीपरडाला । ९ । अर्थात् उस वेगवान गदासे घायल और कंपितहोकर

rows again and again. Bhim much enraged, discharged a dreadful spear at him. Seeing it come towards him, Dushasan cut it down with sharp arrows. All the warriors, much pleased, praised him. He again wounded Bhim. The latter was much enraged and said, "I have been much wounded by your arrows, you must bear my mace. Bhim took up his mace of dreadful aspect to slay him, and crying out loudly, said, "I shall drink your blood to day in the field of battle." At this your son hurled at him his dreadful spear. Bhim hurled his mace. It broke the spear and wounded your son on the head. Dropping blood like a mad elephant, Dushasan was attacked by Bhim's mace, which sent him away at a distance of ten bows. Wound-

विध्वस्तवर्माभरणाम्बरस्रग्विचेष्टमानो भृशवेदनातुरः ॥ १० ॥ ततः स्मृत्वा भीमसेनस्त रस्वैरं यत्परमं यत् प्रयुक्तं सुतैस्ते । तस्मिन् घोरे तुमुले वर्त्तमाने प्रधानभूयिष्ठतरैः समन्तात् ॥ ११ ॥ दुःशासनं तत्र समीक्ष्य राजन् भीमो महाबाहुरचिन्त्यकर्मा । स्मृत्वा च केशग्रहणञ्च देव्या वस्त्रापहारञ्च रजस्वलायाः ॥ १२ ॥ अनागसो भर्तृपराङ्मुखाया दुःखानि दत्तान्यपि विप्रचिन्त्य । जज्वाल कोपादथ भीमसेन आज्यप्रसिक्तो हि यथा हुताशः ॥ १३ ॥ तत्राह कर्णञ्च सुयोधनञ्च कृपं द्रौणिं कृतवर्माणमेव । निहन्मि दुःशासनमद्य पापं संरक्ष्यतामद्य समस्तयोधाः ॥ १४ ॥ इत्येवमुक्त्वा सहसाऽभ्यधाव न्निहन्तुकामोऽतिबलस्तरस्वी ॥ १५ ॥ तथा तु विक्रम्य रणे वृकोदरो महागजं केशरी वोग्रवेगः । निगृह्य दुःशासनमेकवीरः सुयोधनस्याधिरथेः समक्षम् ॥ १६ ॥ रथादव

दुश्शासन गिरपड़ा हे महाराज गिरतीहुई गदासे सारथी समेत घोड़े मारेगये और इसका रथभी चूर्णहोगया टूटेकवच भूषण और पोशाकवाला फड़कताहुआ दुश्शासन कठिन पीड़ा से दुःखी हुआ । १० । वह शत्रुता जो आपके पुत्रोंकी ओर से की गईथी उसको स्मरण करके हे राजा चारों ओरसे उत्तम पुरुषों समेत उस घोर और कठिन युद्धके वर्त्तमान होनेपर । ११ । वहांबुद्धि से बाहर कर्मवाला महाबाहु भीमसेन दुश्शासन को देखकर देवी द्रौपदी के केशका पकड़ना और उसी रजस्वलाके वस्त्रोंका पृथक् करना इन दोनों बातोंको स्मरण करता हुआ । १२ । उस निरपराधिनी पतियों से जुदीहुई को दुःखोंके देनेको शोचकर फिर भीमसेन क्रोधसे ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि घृत सींचाहुआ अग्नि प्रज्वलित होता है । १३ । ऐसा होकर उसने उस स्थानपर खड़ाहोकर कर्ण दुर्योधन, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा से कहा कि अब मैं इस पापी दुश्शासन को मारता हूं अब सब युद्ध करनेवाले शूरवीर इसको रक्षाकरनेको आवो ।१४ । ऐसाकहकर मारनेको उत्सुक महापराक्रमी और वेगवान भीमसेन सम्मुख दौड़ा । १५। इसरीति से भीमसेन ने युद्ध में पराक्रम करके जैसे कि केशरी सिंह हाथी को पकड़ना

ed by that mace, Dushasan fell down quivering. The mace killed the driver and horses and broke the car. Dushasan's armour, ornaments and clothes were destroyed and he lay quivering with wounds. 10. Remembering the old enmity contracted by your sons, in that dreadful battle, in the midst of warriors, Bhimsen the wonder worker saw Dushasan lying there. He remembered that *Draupadi* was dragged by the hair and her clothes removed while she was in her monthly course. He remembered her wrongs and became enraged like fire over which libations are poured forth. Standing there, he said to Karan, Duryodhan, Kripacharya, Ashwathama and Kritvarma, "I shall now slay this wretch, let all the warriors protect him." Having said this, he rushed on to slay him. 15. Bhim did

लुत्य गतः स भूमौ यत्नेन तस्मिन् प्रणिधाय चक्षुः। असिं समुद्गृह्य शितं सुधारं कण्ठे पदाक्रम्य च वेपमानम् उत्कृत्य वक्षः पतितस्य भूमावथापिबच्छोणितमस्य कोष्णम् ॥ १७ ॥ ततो निपात्यास्य शिरोपकृत्य तेनासिना तव पुत्रस्य राजन्। सत्यां चिकीर्षुर्मतिमान प्रतिज्ञां भीमोपिबच्छोणितमस्य कोष्णम् ॥ १८ ॥ आस्वाद्य चास्वाद्य च वीक्षमाणः क्रुद्धो हि चैनं निजगाद वाक्यम् ॥ १९ ॥ स्तन्यस्य मातुर्मधुसर्पिषोर्वा माध्वीकपानस्य च सत्कृतस्य। दिव्यस्य वा तोयरसस्य पानात् पयोदधिभ्यां मथिताच्च मुख्यात् ॥ २० ॥ अन्यानि पानानि च यानि लोके सुधामृतस्वादुरसानि तेभ्य। सर्वेभ्य एवाभ्यधिको रसोयं मतोममाद्याहितलोहितस्य ॥ २१ ॥ अथाह भीमः पुनरुग्रकर्मा दुःशासनं क्रोधपरीतचेताः। गतासुमालोक्य विहस्य सुस्वरं किं वा कुर्यां मृत्युना रक्षितोसि ॥ २२ ॥ एवं ब्रुवाणं पुनराद्रवन्तमास्वाद्य रक्तं तमतिप्रहृष्टम्। ये

चाहताहै उसीप्रकार वह अकेला भीमसेन वीर दुर्य्योधन और कर्णके समक्ष में दुश्शासनको पकड़नेकी इच्छाकरके।१७। बड़े उपायसे उसमें दृष्टीको लगा रथसे कूद पृथ्वीपर गया और सुन्दर धारवाले उत्तम खड्गको उठाकर उस कँपते हुये पृथ्वीपर पड़ेहुये कंठको दबा छातीको और जंघाको काटकर थोड़ासा गरम रुधिर पिया उसके पीछे गिराकर उसके शिरको भी काटने की इच्छासे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये उस बुद्धिमान भीमसेन ने फिर थोड़ासा गरमलोहु पिया।१८। और उस रुधिरके स्वादुको लेकर महा क्रोधित होकर सबके सम्मुख यह वचन कहा।१९। कि माता के स्तन्य मधु घृत अच्छी बनीहुई दिव्य माध्वी मदिरा अथवा दुग्ध दधि व दुग्ध दधिको मथकर जो तक्रहोताहै इनके सिवाय जो इस संसारमें सुधा अमृतके स्वादुयुक्त पानकरनेवाले रसहैं उन सब पदार्थों से अब इस शत्रुके रुधिरमें मुझको अधिक स्वाद आताहै। २१। इसके पीछे महाघोर कर्मा क्रोधमें भराहुआ भीमसेन बड़े शब्दसे हँसा और दुश्शासन को निर्जीव देखकर यह वचन बोला कि मैं क्या करूं तू मृत्युसे रक्षित है। २१। उससमय

a deed of a prowess and as a lion rushes on an elephant, he rushed on in the presence of Duryodhan and Karan. Looking carefully at him, Bhim came down from his car and taking up his good sword, he cut the breast and thigh of Dushasan, drinking the hot blood coming out from the wounds. Then wishing to cut off his head, he again drank his blood to fulfil his vow. He was much enraged and after tasting the blood, he said, " Neither milk nor its compounds or honey and other things found in the world are so delicious as the blood of this enemy of mine. 21. Then that dreadful warrior, Bhim, seeing Dushasan lifeless, said with a laugh, " I can do nothing, for you are protected by death. " Whoever saw Bhim thus talking, running, tasting blood and expressing joy, ran away in fear. Those who remained, standing,

भीमसेनं दहशुस्तदानीं भयेन तेपि व्यथिता निपेतुः ॥ २३ ॥ ये चापि तत्रापतिता मनु
ष्यास्तेषां करेभ्यः पतितं हि शस्त्रम् । भयाच्च सञ्चुक्रुशुस्वरैस्ते निमीलिताक्षा ददृशुश्च
तं ततः ॥ २४ ॥ ये तत्र भीमं ददृशुः समन्ताद्दौःशासनं तद्रुधिरं पिबन्तम् । सर्वेपला
यन्त भयाभिपन्ना नायं मनुष्य इति भाषमाणाः ॥ २५ ॥ युधामन्युः प्रद्रुतं चित्रसेनं
सहानीकस्त्वभ्ययाद्राजपुत्रः । विव्याध चैनं निशितैः पृषत्कैर्व्यपेतभीः सप्तभिराशुमुक्तैः
॥ २६ ॥ संक्रान्तभोग इव लेलिहानो महोरगः क्रोधविषं सिसृक्षुः । निवृत्य पाञ्चाल
ममृष्यविध्यत्त्रिभिः शरैः सारथिमस्य षड्भिः ॥ २७ ॥ ततः सुपुंखेन सुधवितेन सुसं
शिताग्रेण शरेण शूरः । आकर्णमुक्तेन समाहितेन युधामन्युस्तस्य शिरो जहार ॥ २८ ॥
तस्मिन् हते भ्रातरि चित्रसेने क्रुद्धः कर्णः पौरुषं दर्शयानः । व्यद्रावयत् पाण्डवानाम
नीकं प्रत्युद्यातो नकुलेनामितौजाः ॥ २९ ॥ भीमोपि हत्वा तत्रैव दुःशासनममर्षणम् ।
पूरयित्वाञ्जलिं भूयो रुधिरस्योग्रनिस्वनः । शृण्वतां लोकवीराणामिदं वचनमब्रवीत्

जिन जिन लोगोंने इसप्रकार से बोलनेवाले वा दौड़नेवाले स्वादुलेनेवाले अत्यंत प्रसन्न होनेवाले उस भीमसेनको देखा वह सब महाभयभीत होकरभागे । २३ । और जो लोग कि दृढ़तासे नहीं भागे उनके हाथों से शस्त्र गिरपड़े और बहुतेरे आंखोंको बन्द करके भयके कारण धीरेसे पुकारे और चारों ओरको देखकर । २४ । कहनेलगे कि यह मनुष्य नहीं है कोई उग्रराक्षस है इस प्रकार कहकर भयभीत होकरभागे । २५ । और राजपुत्र युधामन्यु अपनी सेना समेत उस भागेहुये चित्रसेन के सम्मुखगया और बड़ी निर्भयतासे तीक्ष्ण धारवाले सात पृषत्कों से उसको पीड़ामान किया । २६ । ऊंचाफल करनेवाले जिह्वा के चाटनेवाले क्रोधरूप विषके छोड़ने को अभिलाषी बड़े सर्पके समान चित्रसेनने लौटकर उस युधामन्युको तीन बाणोंसे और उसके सारथी को छःबाणों से छेदा । २७ । इसके पीछे शूरबीर युधामन्युने सुन्दर पुंख और नोकवाले अच्छे प्रकार धनुषपर चढ़ायेहुये कानतक खैंचेहुये बाणसे उसके शिरको काटा । २८ । उसभाई चित्रसेन के मरनेपर बड़े तेजस्वी शूरताको दिखलाते क्रोधयुक्त कर्णने पाण्डवीसेना को भगाया और नकुलके सम्मुखगया । २९ । वहां परभीमसेन भी दुश्शासनको मारकर बड़ा क्रोधयुक्त कठोर शब्द करता अपनी रुधिरकी अंज-

let their weapons drop; many shut their eyes, cried with fear, and looking round, said, " He is not a man; he must be a rakshas " Thus saying, they ran away. 25. Prince Yudhamanyu, with his army, faced Chitrasen and wounded him with sixty. sharp arrows. Chitrasen came round, biting his lips and enraged like a serpent, and wounded him with three and the driver with six arrows. Then with a well-discharged arrow, Yudhamanyu cut down Chitrasen's head. At the death of Chitrasen, Karan, much enraged, routed the Pandav army and faced Nakul. 29. Bhimsen too, having slain Dushasan

॥ ३१ ॥ यच मे रुधिरं कण्ठात् पिबामि पुरुषाधम । ब्रूहिदानीं सुसंहृष्टः पुनर्गौरिति गौरिति ॥ ३२ ॥ ये तदास्मान् प्रनृत्यन्ति पुनर्गौरिति गौरिति । तान् वयं प्रति नृत्यामः पुनर्गौरिति गौरिति ॥ ३३ ॥ प्रमाणकोट्यां शयनं कालकूटस्य भोजनम् । दंशनञ्च अहिभिः कृष्णैर्दाहश्च जतुवेश्मनि ॥ ३४ ॥ द्यूतेन राज्यहरणमरण्ये वसतिश्च या । द्रौपद्याः केशपक्षस्य ग्रहणञ्च सुदारुणम् ॥ ३५ ॥ इष्वस्त्राणि च संग्रामे सुखानि च वेश्मनि । विराटभवने यश्च क्लेशोऽस्माकं पृथग्विधः ॥ ३६ ॥ शकुनेर्धार्त्तराष्ट्रस्य राधेयस्य च मन्त्रिते । अनुभूतानि दुःखानि तेषां हेतुस्त्वमेव हि ॥ ३७ ॥ दुःखान्येतानि जानीमो न सुखानि कदाचन । धृतराष्ट्रस्य दौरात्म्यात् सपुत्रस्य सदा वयम् ॥ ३८ ॥ इत्युक्त्वा पुनर्वै राजन् जयं प्राप्य वृकोदरः । पुनराह महाराज स्मयंस्तौ केशवार्जुनौ ॥ ३९ ॥ असृग्दिग्धो विस्रवल्लोहितास्यः क्रुद्धोऽत्यर्थं भीमसेनस्तरस्वी । दुःशासने यद्रणे संश्रुतं मे तद्वै सत्यं कृतमद्यैव वीरौ ॥ ४० ॥ अत्रैव दास्याम्यपरं द्वितीयं दुर्योधनं यज्ञपशुं

लीको पूर्णकर । ३० । सब लोकोंके वीरोंको सुनाकर यह वचन बोला । ३१ । कि हे नीच पुरुष मैं इस तेरे रुधिरको कण्ठसे पीताहूं अवतुम अत्यन्त प्रसन्नहोकर फिर कहो कि हे गौ हे गौ । ३२ । उससमय जो जो लोग हमको देखकर नाचते थे वह हे गौ हे गौ इस शब्दको फिर कहें हम उनके सम्मुख नाचतेहैं वह फिर कहें कि हे गौ हे गौ । ३३ । प्रमाणकोटीनाम स्थानमें सोना कालकूटनाम विषका भोजन काले सर्पोंसे कटना लाक्षागृह में भस्महोना । ३४ । द्यूतविद्या से राज्यका हरना वनमें निवास द्रौपदीके केशोंका भयानक पकड़ना । ३५ । और युद्धमें वाण अस्त्र और स्थानपर अत्यन्त दुःख विराट भवनमें नवीन प्रकारके दुःख जो हमको हुये । ३६ । और जो ऐसा कि शकुनि दुर्योधन और कर्णके मतसेहुये उनसब कारणों का हेतुरूप तुही है । ३७ । हमने इन दुःखों के सिवाय कभी सुख को नहीं पाया पुत्रसमेत धृतराष्ट्रकी दुर्बुद्धीसे हमलोग सदैव दुःखीहुये । ३८ । हे महाराज राजाधृतराष्ट्र यह कहकर विजयको पाकर भीमसेन अर्जुन और केशवजीसे बोला । ३९ । किहे वीरो युद्धमें दुश्शासन के साथजो प्रतिज्ञाकरी थी वह यहांअब मैंने सत्य २ करके पूरीकरी । ४० । इस स्थानपरयज्ञ पशुरूप दुर्योधनको मारकर

and filled his hand with his blood in great rage, said within hearing of all the warriors:-" I drink thy blood, wretch. Say again, " Cow, cow. " Those who danced before, saying " Cow, cow, " let them say again. We dance in their presence and say ' Cow, cow. !" You are the root of all evil: my sleep at Pramanakoti, poisoning, the biting of black serpents, burning in the house of lac, the deprivation of our kingdom in gambling, our exile, the dragging of Draupadi by the hair, this great war, our troubles at Viratnagar and other injuries caused by Shakuni, Duryodhan and Karan. 35. We never got any good from you except trouble. Having said this and got victory, Bhim said

विदारय । छिरो मृदिता च पश्य दुरात्मनः शान्तिं लप्स्ये कौरवाणां समक्षम ॥ ४१ ॥
एतावदुक्त्वा वचनं प्रहृष्टो ननाद चोच्चैः रुधिरार्द्रगात्रः । ननर्द चैवातिबलो महात्मा,
वृत्रं निहत्येव सहस्रनेत्रः ॥ ४२ ॥

इति कर्णपर्वणि दुःशासनवधे त्र्यशीतोऽध्यायः ८३ ॥

सञ्जय उवाच । दुःशासनेतु निहते पुत्रास्तव महारथाः । महाक्रोधविषा वीरा
समरेष्वपलायिनः । दश राजन् महावीर्य्या भीमं प्राच्छादयञ्छरैः ॥ १४ निषङ्गी कवची
पाशी दण्डधारो धनुर्धरः अलोलुपः सहः षण्ढो वातवेगसुवर्च्चसौ ॥ २ ॥ एते समेत्य

मैं अपनी दूसरी प्रतिज्ञाको भी पूरीकरूंगा जब कौरवों के समक्षमें इसके शिरको
काटूंगा तभी मैं शान्तीको पाऊंगा । ४१ । फिरवह रुधिरसे डूबाहुआ प्रसन्नमन
चित्त भीमसेन इस वचनको कहकर बड़े शब्दसे ऐसा गर्जा जैसे कि सहस्रास इन्द्र
वृत्रासुरको मारकर प्रसन्नतासे गर्जाथा ४२ ॥

अध्याय ८४ ॥

संजय बोले कि हे राजा फिर दुश्शासन के मरनेपर क्रोधरूपी बड़े विष के
रखनेवाले युद्धोंमें मुख नफेरनेवाले महापराक्रमी आपके सूरवीर दश पुत्रोंने बाणोंसे
भीमसेनको ढकदिया उनके नाम यहहैं निषंगी कवची, पाशी, दण्डधार, धनुर्धर,
अलोलुप, सह, षण्ड, वातवेग सुवर्चस । २ । भाई के दुःखसे पीड़ावान इनदशों ने

to Arjun and Keshav, "I have today fulfilled my vow regarding Dushasan; having slain Duryodhan like a victim of sacrifice, I shall fulfil my second vow. I shall get peace of mind after cutting off his head. Having said this with a cheerful mind, Bhim, with his blood-stained body, roared as Indra had done after slaying Vritrasur." 42.

CHAPTER LXXXIV

Sanjaya said, "At the death of Dushasan ten of your warlike sons covered Bhim with their arrows. They were Nishangi, Kavachi, Pashi, Dandadhar, Dhanurdhar, Alolup, Saha, Shand, Vatavega and Suvarchas. Afflicted with the grief of their brother, they checked mighty Bhim. Checked with their arrows, with eyes red in anger,

सहिता भ्रातृव्यसनकर्षिताः । भीमसेनं महाबाहुं मार्गणैः समवारयन् ॥ ३ ॥ स वार्य्यमाणो विशिखैः समन्तात्तैर्महारथैः । भीमः क्रोधाग्निरक्ताक्षः क्रुद्धः काल इवाबभौ ॥ ४ ॥ तांस्तु भल्लैर्महावेगैर्दशभिर्दश भारतान् । रुक्माङ्गदान्रुक्मपुङ्खैः पार्थो निन्ये यमक्षयम् ॥ ५ ॥ हतेषु तेषु वीरेषु प्रदुद्राव बलं तव । पश्यतः सूतपुत्रस्य पाण्डवस्य भयार्दितम् ॥ ६ ॥ ततः कर्णं महाराज प्रविवेश महद्भयम् । दृष्ट्वा भीमस्य विक्रान्तमन्तकस्य प्रजास्विव ॥ ७ ॥ तस्य त्वाकारभावज्ञः शल्यः समितिशोभनः । उवाच वचनं कर्णं प्राप्तकालमरिन्दमम् ॥ ८ ॥ मा व्यथां कुरु राधेय नैतत्त्वय्युपपद्यते । एते द्रवन्ति राजानो भीमसेनभयार्दिताः ॥ ९ ॥ दुर्य्योधनश्च संमूढो भ्रातृव्यसनकर्षितः । दुःशासनस्य रुधिरे पीयमाने महात्मना ॥ १० ॥ व्यापन्नचेतसश्चैव शोकोपहतमन्यवः । दुर्य्योधनमुपासन्ते परिवार्य्य समन्ततः । कृपप्रभृतयः कर्ण हतशेषाश्च सोदराः ॥ १२ ॥ पाण्डवा

मिलकर महाबाहु भीमसेनको रोका । ३ । फिर चारोंओरसे उन महारथियों के बाणों से रोकाहुआ क्रोधअग्नि से रक्तनेत्र वह भीमसेन क्रोध भराहुआ कालके समान शोभायमानहुआ । ४ । उस समय पाण्डव भीमसेन ने सुनहरी पुंखवाले दश भल्लों से उनसुनहरी बाजूबन्द रखनेवाले दशों भाई भरतवंशियों को यमलोक में पहुँचाया । ५ । उन वीरोंके मरनेपर भीमसेनके भयसे पीड़ित आपकी सेना कर्णके देखते हुये भागी । ६ । हे महाराज इसके अनन्तर कर्ण मनुष्योंपर पराक्रम करने वाले काल मृत्युके समान भीमसेनके पराक्रमको देखकर बड़ा भयभीत हुआ । ७ । उसके रूपान्तर से वृत्तान्त के जाननेवाले युद्ध में शोभायमान राजा शल्य ने उस शत्रुविजयी कर्ण से समयके अनुसार यह वचन कहा । ८ । कि हे राधा के पुत्र पीड़ा मतकर तुमको ऐसी पीड़ा करना उचित नहीं है भीमसेन के भय से पीड़ामान होकर यह राजालोग भागतेहैं । ९ । और भाईके दुःखसेपीड़ामान दुर्योधन अचेत होरहाहै बड़े साहसीसे दुश्शासनका रुधिरपीनेपर । १० । अचेत और शोकसेघायल चित्त कृपाचार्य्य आदि और मरनेसे बाकी बचेहुये सगेभाई चारों ओरसे दुर्योधन के पास बैठे नियतहैं । १२ । और लक्षभेदी शूरवीर पाण्डव जिनमें अग्रगामी

enraged Bhimsen looked like Death. With ten sharp arrows, he sent the ten brothers to the region of Yam. 5. At the death of those warriors your army fled away for the fear of Bhim. Karan himself was terrified at the prowess of Bhim. Knowing the state of his mind from his altered looks, Shalya said to him, "Donot be grieved, son of Radha. You should not be grieved. These warriors are running away from Bhim and Duryodhan is insensible for the grief of his brother. Insensible and grieved at the drinking of blood by that warrior, Kripacharya and the remaining sons of Dhritrashtra, have come round Duryodnan. 12. The Pandav marksmen, led by Arjun, are ready to fight with you. You should bravely face Arjun. 'Dur-

लब्धलक्ष्याश्च धनञ्जयपुरोगमाः । त्वामेवाभिमुखाः शूरा युद्धाय समुपस्थिताः ॥१३॥ स त्वं पुरुषशार्दूल पौरुषे महति स्थितः । क्षत्रधर्मं पुरस्कृत्य प्रत्युद्याहि धनञ्जयम् ॥१४॥भारोहि धार्त्तराष्ट्रेण त्वयि सर्वःसमर्पितः।तमुद्वहमहाबाहो यथाशक्ति यथाबलम् ॥ १५ ॥ जयेस्याद्विपुला कीर्त्तिर्ध्रुवः स्वर्गः पराजये । वृषसेनश्च राधेय संक्रुद्धस्तनय स्तव । त्वयि मोहं समापन्ने पाण्डवानभिधावति ॥ १७ एतच्छ्रुत्वा तु वचनं शल्य स्यामिततेजसः ।हृदि चावश्यकं भावं चक्रे युद्धाय सुस्थिरम् ॥ १८ ॥ ततः क्रुद्धो वृषसेनोऽभ्यधावदग्रथितः स्वरथे पाण्डवं तम् । वृकोदरं कालमिवात्तदण्डं गदाहस्तं पोथयन्तं त्वदीयान् ॥ १९ ॥ अथाऽभ्यधावन्नकुलः प्रवीरो रोषादमित्रं प्रतुदन् पृषत्कैः । कर्णस्य पुत्रं समरे प्रहृष्टो जिष्णुर्जिघांसुर्मघवेव जम्भम् ॥ २० ॥ ततो ध्वजं स्फाटिक विन्दुचित्रं चिच्छेद वीरो नकुलः क्षुरेण । कर्णात्मजस्येष्वसनञ्च चित्रं भल्लेन जाम्बूनदपट्टनद्धम ॥ २१ ॥ अथान्यदादाय धनुः सुशीघ्रं कर्णात्मजः पाण्डवमभ्यविध्यत् ।

अर्ज्जुनहै वह युद्धके लियेतेरे सम्मुख वर्त्तमानहै । १३ । हे पुरुषोत्तम, इससे अब तुम शूरवीरतासे नियत होकर क्षत्री धर्मको आगे करके अर्ज्जुन के सम्मुख जावो । १४ ।राजा दुर्य्योधन ने सब युद्धकाभार तुझीपर नियत किया है हे महाबाहो उस भारको तुम अपने बल और पराक्रम मे उठावो । १५ । विजय करने में तो अतुल्य कीर्ति होगी और पराजय में निश्चय स्वर्ग है हे राधाके पुत्र अत्यन्त क्रोध-युक्त तेरा पुत्र वृषसेन तेरे मोहित होनेपर पांडवों के सम्मुख दौड़ता है ।१७ । वह तेजस्वी शल्य के इस वचनको सुनकर कर्ण नेयुद्ध करनेका दृढ़ विचार अपने हृदय में नियत किया।१८।उसकपीछेक्रोधयुक्तवृषसेन उससन्मुखवर्त्तमान भमिसेनके सम्मुख दौड़ा जोकि दण्डधारी कालकेसमान गदा धारण करनेवाला आपकेशूरोंसे युद्धकर रहाथा।१९।और बड़ाभारी नकुल पृषत्कोंसे शत्रुओंको पीड़ामान करता दौड़ा युद्धमें प्रसन्नचित्त उस कर्ण के पुत्र वृषसेनके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि पूर्व्वसमय में जम्भ के मारनेकी इच्छा से इन्द्र उसके सम्मुख गयाथा । २० । वहां पहुँचकर वीर नकुलने क्षुरप्रसे उसकी उस ध्वजाको काटा जोकि श्वेतरंगके अपूर्व्व कयचवाली थी और सुनहरी चित्रोंसे चित्रित अत्यन्त अद्भुत वृषसेनके धनुषको काटा।२१।तबतो

yodhan has laid the whole burden of war on you; lift it with all your might. You will secure fame in case of victory and heaven in case of defeat. Seeing you terrified, your enraged son is fighting against the Pandavas." Hearing the words of glorious Shalya, Karan resolved to fight. Then enraged Vrishasen rushed against Bhim who was fighting with your warriors and using his mace like the staff of Yam. Nakul ran on wounding the enemies with his sharp weapons. He faced Vrishasen in battle as Indra had faced Jambh in the days of yore. Nakul cut down his banner with a sharp arrow and with another, he cut his gold-decked bow. Karan's son took another bow

दिव्यैर्महास्त्रैर्नकुलं महास्त्रो दुःशासनस्यापचितिं पिपासुः ॥ २२ ॥ ततः स क्रुद्धो
नकुलो महात्मा शरैर्महोल्काप्रतिमैरविध्यत् । दिव्यैरस्त्रैरभ्यवर्षच्च सोऽपि कर्णस्य
पुत्रो नकुलं कृतास्त्रः ॥ २३ ॥ शराभिघाताच्च यथा राजन् स्वया च
भासास्त्रसमीरणाच्च । जज्वाल कर्णस्य सुतोऽतिमात्रमिद्धो यथाज्या
हुतिभिर्हुताशः ॥ २४ ॥ कर्णस्य पुत्रो नकुलस्य राजन् सर्वानश्वानक्षि
णोदुत्तमास्त्रैः । वनायुजान् सुकुमारस्य शुभ्रानलंकृतान् जातरूपेण चित्रान् ॥ २५ ॥
ततो हताश्वादवरुह्य यानादादाय चर्मामलरुक्मचन्द्रम् । आकाशसङ्काशमसिं गृहीत्वा
पोप्लूयमानः खगवच्चचार ॥ २६ ॥ ततोऽन्तरिक्षे नृवराश्वनागांश्छिच्छेद मार्गान्विचर
न्विचित्रान् । ते प्रापतन्नसिना गां विशस्ता यथाश्वमेधे पशवः शमित्रा ॥ २७ ॥ द्विसा
हस्रा विदिता युद्धशौण्डा नानादेश्याः सुभृताः सत्यसन्धाः । एकेन शीघ्रं नकुलेन

कर्णके पुत्रने शीघ्रही दूसरे धनुषको लेकर नकुलको छेदा दुश्शासन का बदला लेने के अभिलाषी कर्णके पुत्र वृषसेनने दिव्य महा अस्त्रोंसे नकुलको घायल किया । २२ । उस के पीछे क्रोधयुक्त महात्मा नकुलने बड़ी उल्काके समान बाणोंसे उसको छेदा फिर अस्त्रज्ञ कर्णका पुत्र दिव्य अस्त्रों से नकुलपर वर्षा करनेलगा । २३ । हे राजा वह कर्णका पुत्र बाणोंके प्रहार वा क्रोध वा अपने तेज अथवा अस्त्रोंके चलानेसे ऐसा अत्यन्त क्रोधरूप हुआ जैसे कि घृतकी आहुतियों से बढ़ी हुई अग्निहोती है हे राजा कर्णके पुत्रने अपने उत्तम अस्त्रों से नकुलके उन सब घोड़ों कोमारा जो कि श्वेतरूप बड़े ऊंचे सुनहरी जालों से अलंकृत वनायुज नाम के थे । २५ । उसके पीछे मृतक घोड़ेवाले रथसे उतरकर सुवर्णमयी चन्द्रमावाली निर्म्मल ढालको लेकर आकाशरूप खड्गको पकड़कर चलायमान पक्षीके समान घूमा । २६ । उस समय अपूर्व युद्ध करनेवाले नकुलने शीघ्रतासे अन्तरिक्षमें रथ घोड़े और हाथियों को मारा खड्गसे कटकर वह सब पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि अश्वमेध यज्ञ में मारनेवाले के हाथसे यज्ञपशु गिरपड़ताहै । २७ । नानादेशों में उत्पन्न होनेवाले अच्छी जीविका पानेवाले सत्यसंकल्पी दोहजार शूरवीर गिर पड़े युद्धमें विजयाभिलाषी चन्दनसे युक्त शरीर उत्तम शूरवीरलोग अकेले

and wounded Nakul. Wishing to be revenged for Dushasan's death, Vrishasen wounded Nakul. Nakul wounded him in return. Karan's son, clever in the use of arms, discharged divine weapons at Nakul In his anger and glory, he was enraged as fire poured over by libations. He slew all the horses of Nakul which were white, decked with gold ornaments and of Banayuj breed. 25. Coming down from the car of which the horses were dead, with his mooned shield and huge sword, he roamed like a bird. He slew car-warriors, horses and elephants. Cut by his sword they fell down on the ground like victims of sacrifice. He slew two thousands of the best warriors

वर्षास्तान् हृदीकश्च वीरान् शूराः शरवर्षैस्ताडयन्तोऽभ्यरुन्धन् । अथाचलद्युसवर्णैर्द
स्तिभिस्तानद्रीयुर्गिरिशिखरनिकाशैर्भीमवेगैः कुलिन्दाः ॥ ४ ॥ सुकल्पिता हैमवता
मदोत्कटा रणाभिकामैः कृतिभिः समास्थिताः । सुवर्णजालावतता बभुर्गजास्तथा
यथा खे जलदाः सविद्युतः ॥ ५ ॥ कुलिन्दपुत्रो दशभिर्महायसैः कृपं ससूताश्वमपीड
यद्भृशम् । ततः शरद्वतसुतसायकैर्हतः सहैव नागेन पपात भूतले ॥ ६ ॥ कुलिन्दपुत्रा
वरजस्तु तोमरैर्दिवाकरांशुप्रतिमैरयोमयैः । रथञ्च विक्षोभ्य ननाद नर्दतस्ततोऽस्य
गान्धारपतिः शिरोऽहरत् ॥ ७ ॥ ततः कलिङ्गेषु हतेषु तेष्वथ प्रहृष्टरूपास्तव ते महा
रथाः । भृशं प्रदध्मुर्लवणाम्बुसम्भवान् परांश्च बाणासनपाणयोऽभ्ययुः ॥ ८ ॥ अथाभ

अत्यन्त उत्तम बाणों से घायल करते कुलिन्ददेशी बादल और पर्व्वतके शिखरों समान भयानक वेगवाले हाथियों समेत उनके सम्मुख गये । ४ । और अच्छे प्रकारसे अलंकृत मदसेमत्तवाले युद्धाभिलाषी कर्मकर्त्ता पुरुषोंसे युक्त सुनहरी जालों से अलंकृत हाथी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि आकाश में बिजली रखनेवाले बादल होते हैं । ५ । वहां कलिन्दके पुत्रने दशलोहे के बाणों से कृपाचार्य्यको सारथी और घोड़ों समेत अत्यन्त घायल किया इसके पीछे कृपाचार्य्य के बाणोंसे वह माराहुआ कलिन्दका पुत्र हाथी समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा । ६ । तब उसका छोटा भाई सूर्य्यकी किरणके समान प्रकाशित लोहके तोमरोंसे रथको कंपायमान करके गर्जा इसके पीछे राजा गान्धार ने इस गर्जनेवाले के शिरको काटा । ७ । तदनन्तर उन कलिंग देशियों के मरने पर अत्यन्त प्रसन्न रूप आपके उन महा रथियों ने शंखोंको बड़ी ध्वनियों से बजाया और धनुषको हाथमें रखनेवाले होके शत्रुओं के सम्मुखगये । ८ । इसके पीछे सृञ्जियों समेत पाण्डव और कौरवों का

Sutavrish, Krath and Devavridh, your warriors came on with their cars and elephants thundering like clouds and checked the eleven warriors with their arrows. The warriors of Kulind, with their dreadful elephants like mountain clouds, encountered them. The elephants, decked with gold trappings and mounted by brave warriors, looked glorious like clouds charged with lightning. Kulind's son wounded Kripacharya and his driver and horses, with ten arrows, and fell down dead on earth, with elephants pierced by the arrows of Kripacharya. Shaking the car with bright iron tomars like the rays of the Sun, his younger brother roared a loud roar; but his head was cut off by the king of Gandhar. At the death of the Kaling men, your warriors sent forth blasts from their conchs in great glee and faced the enemies with their bows.8. Then the Srinjayas and Pandavas fought with the Kauravas a dreadful battle which was destructive to the lives of men, horses and elephants Then thousands of cars, horses, elephants and foot fell down

बभूव युद्धमतीव दारुणं पुनः कुरूणां सह पाण्डुसृञ्जयैः । शरासिशक्त्यृष्टिगदापरश्वधैर्
नराश्वनागासु हर भृशाकुलम् ॥ ९ ॥ रथाश्वमातङ्ग पदातिभिस्ततः परस्पर
विप्रहताः पतन् क्षितौ । यथा सविद्युत्स्तनिता बलाहकाः समाहता दिग्भ्य
इवोग्रमारुतैः ॥ १० ॥ ततः शतानीकमतान्महागजांस्तथा रथान् पत्तिगणांश्च तान्
बहून् । जघान भोजस्तु हयानथापतन् क्षणाद्विशस्ताः कृतवर्मणः शरैः ॥ ११ ॥ अथा
परे द्रौणिशराहता द्विपास्त्रयः ससर्वायुधयोधकेतनाः । निपेतुरुर्व्यां व्यसवः प्रपाति
तास्तथा यथा वज्रहता ॥१२॥ कुलिन्दराजावरजस्तदा स्तनान्तरे पत्रिवरैरताडयत्
तवात्मजं तस्य तवात्मजः शरैः शितैः शरीरं विभिदे द्विपश्च तम् ॥१३॥ स नागराजः सह
राजसूनुना पपात रक्तं बहु सर्वतः क्षरन् । शचीशवज्रप्रहतोऽम्बुदागमे यथा जलं गैरिक
पर्वतस्तथा ॥ १४ ॥ कुलिन्दपुत्रप्रहितोऽपरो द्विपः शकं ससूतावरथं व्यपोथयत् । ततो

महाघोर भयकारी वह युद्ध फिर हुआ जाकि बाण खड्ग शक्ति कुधारे खड्ग गदा और फरसों से मनुष्य हाथी और घोड़ों के प्राणोंका हरनेवाला था । ९ । इसके अनन्तर हजारों रथ घोड़े और हाथी पदातियों से परस्पर में घायल होकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि बिजली और गर्जना रखनेवाले धुयेंसेयुक्त बादल दिशाओं से गिरें । १० । उसके पीछे सैकड़ों सेना रखनेवाले हाथी रथी और पत्तियोंके समूहों को और घोड़ोंको भोजवंशी कृतवर्मा ने मारा ।११। वह सब उसके बाणों से मृतक होकर एक क्षणमेंही गिरपड़े उसके पीछे अश्वत्थामा के बाण से सब शस्त्र और ध्वजाओं समेत घायल शूरवीर और निर्जीव अन्य बड़े हाथी ऐसेपृथ्वी पर गिरपड़े जैसे कि वज्रसे ताड़ित बड़े २ पर्वत गिरते हैं । १२ । राजा कुलिन्द के छोटे भाई ने उत्तम बाणों से आपके पुत्रकको छातीपर घायल किया फिर आपकेपुत्रोंनेभी तीक्ष्ण बाणोंसे उसके शरीर समेत हाथीको मारा।१३ तब वह गजराज उस राजकुमार समेत सब ओरको रुधिर को गिराता ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बादलों के आनेमें इन्द्रके वज्रसेटूटा धातुवान् पर्वत जलको गिराता गिरपड़े । १४ । फिर कुलिन्दके पुत्रके भेजहुये दूसरे हाथीने किरात को सारथी

wounded on earth by thousands like clouds with smoke and lightning. 10. Then Kritvarma slew numerous elephants, car-warriors, horsemen and foot soldiers. They fell down in an instant wounded by his arrows. The warriors wounded by his arrows and the elephants fell down dead like hills struck by lighting. The younger brother of Kulind wounded your son on the breast with his good arrows. Your sons too, killed him and his elephant with sharp arrows The bleeding elephant, with the Prince on it, fell down like a hill, with its waters, struck by lighting. Another elephant sent by Kulind's son, killed Kirat with the driver and horses. The elephant with his rider, fell down wounded by arrows like a hill. 15. The invincible Kirat king, with his elephant

॥ २१ ॥ तदस्य कर्मातिमनुष्यकर्मणः समीक्ष्य हृष्टाः कुरवोऽभ्यपूजयन् । पराक्रमज्ञास्तु धनञ्जयस्य ये हुतोयमग्नाविति ते तु मेनिरे ॥ २२ ॥ ततः किरीटी परवीरघाती हताश्वमालोक्य नरप्रवीरम् । माद्रीसुतं नकुलं लोकमध्ये समीक्ष्य कृष्णं भृशविक्षतञ्च । तमभ्यधावद्वृषसेनमाहवे स सूतजस्य प्रमुखे स्थितं तदा ॥ २३ ॥ तमापतन्तं नरवीरमुग्रं महाहवे बाणसहस्रधारिणम् । अभ्यापतत् कर्णसुतो महारथो यथैव चेन्द्रं नमुचिस्तथैव तम् ॥ २४ ॥ ततो द्रुतं चैकरथेन पार्थं शरेण विध्वा युधि कर्णपुत्रः । ननाद नादं समहानुभावो विव्येध शक्रं नमुचिः पुरा वै ॥ २५ ॥ पुनः स पार्थं वृषसेन उग्रैर्बाणैरविध्यद्भुजमूले तु सव्ये । तथैव कृष्णं नवभिः समार्पन् पुनश्च पार्थं दशभिः पृषत्कैः ॥ २६ ॥ पूर्वं तथा वृषसेनेन विद्धो महाजवैः श्वेतहयः शरैस्तैः । संरम्भमीषद्

लोहे के वाणोंसे शतानीक को और तीनबाणोंसे अर्जुन को तीनसे भीमसेनको सात से नकुल को और बारहसे श्रीकृष्णजी को घायलकिया । २१ । तदनन्तर प्रसन्न चित्त कौरवों ने बुद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले कर्ण के पुत्रके उस कर्म को देखकर बड़ी प्रशंसाकरी परन्तु जो अर्जुनके पराक्रम क जाननेवाले थे उन्होंने यहमाना कि अब यह अग्निमें होमागया । २२ । इसके पीछे नरों में बड़ा शूरवीर शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अर्जुन माद्री के पुत्र नकुल को मृतक घोड़ेवाला देखकर और लोक में श्रीकृष्णजी को अत्यन्त घायल विचारकर युद्धमें वृषसेन के सम्मुख दौड़ा । २३ । तब कर्ण का पुत्र उस आनेवाले नरवीर गुरुरूप महा युद्धमें हजारों बाणधारण करनेवाले महारथी अर्जुन के सम्मुख ऐसेगया जैसे कि पूर्व समय में नमुचि महाइन्द्र के सम्मुख गयाथा । २४ । उसके पीछे कर्णका पुत्र, शीघ्रता पूर्वक बड़ेतीव्र और स्वच्छ बाणों से अर्जुन को छेदकर युद्ध में ऐसे महाशब्दसे गर्जा जैसे कि वह महानुभाव वीर नमुचि इन्द्रको छेदकर गर्जाथा । २५ । फिरउस वृषसेन ने उग्रबाणों से अर्जुन की वाम भुजा की जड़में छेदा और इसीप्रकार नौ बाणों से श्रीकृष्णजी को पीड़ामान किया इसके पीछे फिरभी अर्जुनको, दशबाणों से घायल किया । २६ । जैसे कि वृषसेन के पहले बाणों से अर्जुन घायल हुआ और कुछ क्रोधयुक्त हुआ फिर दूसरी बारके बाणोंसे उसके मारने का मनमें विचार

ed Shatnik, Bhim and Arjun with three arrows each, Nakul with seven and Krishn with twelve. The Kauravas praised the wonderful deed of Karan's son, but those who knew Arjun's prowess, thought that Karan's son was his next victim. Then Arjun the bravest of warriors and destroyer of foes, seeing Nakul destitute of horses and Shri-Krishn wounded, rushed at Vrishasen. The latter faced mighty Arjun and his thousands of arrows as Namuchi had done Indra. Karan's son wounded Arjun with his sharp arrows and roared as Namuchi had done after wounding Indra. 25. Then Vrishasen hit Arjun with sharp arrows, in the left arm, Shri Krishn with nine arrows

भितो वधाय कर्णात्मजस्याथ मनः प्रदध्रे ॥ २७ ॥ ततः किरीटी रणमूर्ध्नि कोपात् कृत्वा त्रिशाखां भ्रुकुटिं ललाटे। ससर्ज तूर्णं विशिखान्महात्मा वधाय राजन् कर्णसुतस्य संख्ये ॥ २८ ॥ विव्याध चैनं दशभिः पृषत्कैर्मर्मस्वसक्तः प्रसभं किरीटी। चिच्छेद चास्येष्वसनं भुजौ च क्षुरैश्चतुर्भिः शिर एव चोग्रैः ॥ २९ ॥ स पार्थबाणाभिहतः पपात रथाद्विबाहुर्विशिरा धरायाम्। सुपुष्पितो वृक्षवरोतिकायो वातेरितः शाल इवाद्रिशृङ्गात् ॥ ३० ॥ तं प्रेक्ष्य बाणाभिहतं पतन्तं रथात् सूतजः क्षिप्रकारी। रथं रथेनाशु जगाम रोषात् किरीटिनः पुत्रवधाभितप्तः ॥ ३१ ॥

इति कर्णपर्वणि वृषसेनवधे पञ्चाशीतोध्यायः ८५ ॥

किया। २७। फिर अर्जुन ने युद्ध मुखपर अपने क्रोधसे ललाटपर भृकुटी को तीनरेखावाली करके उस बड़े साहसीने कर्ण के पुत्रके मारने के लिये विशिखनाम बाणोंको छोड़ा। २८। हेराजा हँसतेहुये अर्जुनने दशपृषत्कोंसेवृषसेनको मर्म्मस्थलों में बेधा और क्षुरप्रनाम तीक्ष्ण चार बाणों से धनुष समेत उसकी दोनों भुजाओं समेत शिरको काटा। २९। अर्जुन के बाणों से घायल और बेशिर होकर वह कर्णका पुत्र रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बहुत लम्बा और फूलाहुआ शालका वृक्ष वायुके वेगसे पर्व्वतके शिखरसे गिरपड़े। ३०। फिर शीघ्रता करनेवाले कर्णने बाणों से मरे हुये रथसे गिरते हुये पुत्रको देखकर शीघ्रही पुत्रके मारने से अर्जुनपर क्रोध युक्त होकर अपने रथको उसके सम्मुख किया। ३१।

and Arjun again with ten. Enraged somewhat by the former arrows of Vrishasen, his wrath was enkindled by again being hit, and he thought of slaying him. Contracting his brows and showing three lines on the forehead, he discharged sharp arrows to slay Karan's son. Arjun with a smile, wounded Vrishasen on the vital parts and cut off both his arms and head. Wounded by Arjun's arrows, the headless trunk of Karan's son fell down on earth like a huge sal tree struck down by the wind from the top of a hill. Seeing his son fallen from the car, Karan, much enraged, faced Arjun in his car." 31.



सञ्जय उवाच । तमायान्तमभिप्रेक्ष्य वेलोद्वृत्तमिवार्णवम् । गर्जन्तं सुमहाकायं दुर्निवारं सुरैरपि । अर्जुनं प्राह दाशार्हः प्रहस्य पुरुषर्षभः ॥ १ ॥ अयं स रथ आयाति श्वेताश्वः शल्यसारथिः । येन ते सह योद्धव्यं स्थिरो भव धनञ्जय ॥ २ ॥ पश्य चैनं समायुक्तं रथं कर्णस्य पाण्डव । श्वेतवाजिसमायुक्तं युक्तं राधासुतेन च ॥ ३ ॥ नानापताकाकलिलं किङ्किणीजालमालिनम् । उह्यमानमिवाकाशे विमानं पाण्डरैर्हयैः ॥ ४ ॥ ध्वजञ्च पश्य कर्णस्य नागकक्षं महात्मनः । आखण्डलधनुःप्रख्यमुल्लिखन्तमिवाम्बरम् ॥ ५ ॥ पश्य कर्णं समायान्तं धार्तराष्ट्रप्रियैषिणम् । शरधाराविमुञ्चन्तं धारासारमिवाम्बुदम् ॥ ६ ॥ एष मद्रेश्वरो राजा रथाग्रे पर्य्यवस्थितः । नियच्छति हयानस्य राधेयस्यामितौजसः ॥ ७ ॥ शृणु दुन्दुभिनिर्घोषं शङ्खशब्दञ्च दारुणम् । सिंहनादांश्च विविधान् शृणु पाण्डव सर्वशः ॥ ८ ॥ अन्तर्धाय महाशब्दान् कर्णनामि

अध्याय ८६

संजय बोले कि मर्य्यादाके उलंघन करनेवाले समुद्रके समान डौल डौल युक्त उस गर्जनेवाले आये कर्णको देखकर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी हँसकर अर्जुन से बोले । २१ । यह श्वेत घोड़ेवाला शल्यको सारथी बनानेवाला अधिरथी आता है इसके साथ तुझको लड़ना चाहिये हे अर्जुन अब दृढ़ होकर नियतहो । २ । हे पाण्डव इसरथको देखो जोकि अच्छे प्रकार से बनाहुआ श्वेत घोड़ों से युक्त राधाके बेटे की सवारी से शोभित नानाप्रकार की ध्वजा पताका और क्षुद्र घण्टिकाओं के जालोंका रखनेवाला और श्वेत घोड़ेरूप आकाश में चलने वाला चित्रविचित्ररूप आकाशके विमानके समानहै।४।और महात्मा कर्णके नागकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली ध्वजाको देखो और इन्द्रके समान धनुष से मानो आकाश में लिखनेवाले दुर्योधनका अभीष्ट चाहने वाले बाणों की वर्षा से युक्त आते हुये कर्णको ऐसेदेखो जैसे कि जलकी धाराओं के छोड़ने वाले बादल को देखते हैं । ६ । रथके आगे नियत यह मद्रदेशकाराजा उस बड़े तेजस्वी कर्ण के घोड़ों को हांकताहै । ७ । दुंदुभियों और शंखों के भयानक शब्द और नानाप्रकार के सिंहनादों को सब ओर से सुनो । ८ । हे पाण्डव बड़े तेजस्वी कर्ण के द्वारा बड़े

CHAPTER LXXXVI

Sanjaya said," Seeing Karan advance, with a noise like that of the rising ocean, Shri Krishn said to Arjun with a smile, " Here comes Karan, with his white horses driven by Shalya. You must fight with him steadily. Look at his well-made car drawn by white horses, adorned with banners and bells and wonderful like a celestial car. *Look at the standard of Karan, having the device of elephant's rope.* Look at his bow, like that of Indra's bow, with which he is sending forth thousands of arrows as if he would write in the sky. That well-wisher of Duryodhan is showering arrows like rain. The

तवेजसा। दोधूयमानस्य भृशं धनुषः शृणु निस्वनम् ॥ ९ ॥ एते दीर्यन्तिसगणाः पाञ्चालानां महारथाः। दृष्ट्वा केशरिणं क्रुद्धं मृगा इव महावने ॥ १० ॥ सर्वं यत्नेन कौन्तेय हन्तुमर्हसि सूतजम्। न हि कर्णशरानान्यः सोढुम् सहते नरः ॥ ११ ॥ सदेवान् सगन्धर्वां स्त्रीँलोकान् सचरा चरान्। त्वंहि जेतुं रणे शक्तस्तथैव विदितं मम ॥ १२ ॥ भीममुग्रं महादेवं त्र्यक्षं सर्वं कपर्दिनम्। न शक्या द्रष्टुमीशानां किं पुनर्योधितुं प्रभुम् ॥ १३ ॥ त्वया साक्षान्महादेवः सर्वभूतशिवः शिवः। युद्धेनाराधितः स्थाणुर्देवाश्च वरदास्तव ॥ १४ ॥ तस्य पार्थ प्रसादेन देवदेवस्य शूलिनः। जहि कर्ण महाबाहो नमुचिं वृत्रहा यथा। श्रेयस्तेऽस्तु सदा पार्थ युद्धे जयमवाप्नुहि ॥ १५ ॥ अर्जुन उवाच। ध्रुव एव जयः कृष्ण मम नास्त्यत्र संशयः सर्वलोकगुरुर्यस्त्वं तुष्टोऽसि मे मधुसूदन ॥ १६ ॥ चोदयाश्वान् हृषीकेश रथं मम महारथ। नाहत्वा समरे कर्ण

शब्दों को गुप्तकरके कठोर कंपायमान धनुष के शब्दको सुनो। ९। यह पांचालों के महारथी अपने सेना समूहों समेत छिन्न भिन्न होकर ऐसे पृथक् होते हैं जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त केशरी सिंहको देखकर छिन्नभिन्न होकर मृग पृथक् होते हैं। १०। हे अर्जुन तुम सब उपायों से कर्ण के मारने के योग्यहो तुम्हारे सिवाय दूसरा मनुष्य कर्ण के बाण सहनेकी सामर्थ्य नहीं रखता है। ११। देवता असुरगंधर्व और जड़ चैतन्य जीवों समेत तीनोंलोक के विजय करने को तुम्हीं समर्थहो यह मैं निश्चय जानता हूं। १२। भीम उग्ररूप महात्मा त्रिनेत्र धारी कपर्दी प्रभु शिवजी के देखने को भी कोई समर्थ नहीं होसक्ता है फिर युद्ध करनेकी किसको सामर्थ्य होसक्तीहै। १३। तुमने सब जीवमात्रके कल्याण रूप साक्षात् महादेवजीकी युद्धकेही द्वारा आराधनाकरी और देवता भी तुमको वरदेनेवाले हैं। १४। हे महाबाहो अर्जुन उस देवताओं के भी देवता शूलधारी शिवजीकी कृपासे तुम कर्णको ऐसे मारो जैसेकि इन्द्रने नमुचिको माराथा हेअर्जुन सदैव तेराकल्याण होय तू युद्धमें विजयको पावेगा। १५। अर्जुनने कहा हे कृष्ण जो जो सब लोकके गुरु और स्वामी आप मेरेऊपर प्रसन्नहैं तो निश्चय करके मेरी अवश्य विजयहै इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है। १६। हे महारथी श्रीकृष्ण

king of Madra, seated on the car, is driving Karan's horses. 7. Hear the dreadful noise coming from conchs and drums and the roars of warriors. Hear the sound of his bow rising above all other noise The Panchal warriors are being routed by his arrows like dear by the presence of a lion. 10. You must slay Karan by all means. None except you can bear his arrows. The gods, asurs, gandharvas and all the movables and immovables of the world can come under your subjection. I believe that none can look three-eyed Shiv in the face; who can encounter him? But you worshipped him through fighting. You have got boons from other gods too. By the grace of Shiv the god

निर्धक्ष्यति फाल्गुनः । १७ ॥ अद्य कर्णं हतं पश्य मच्छरैः शकलीकृतम् । मां वा द्रक्ष्यसि गोविन्द कर्णेन निहितं शरैः ॥ १८ ॥ उपस्थितमिदं घोरं युद्धं त्रैलोक्यमोहनम् । यज्जनाः कथयिष्यन्ति यावद्भूमिर्धरिष्यति ॥ १९ ॥ एवं ब्रुवंस्तदा पार्थः कृष्णमक्लिष्टकारिणम् । प्रत्युद्ययौ रथेनाशु गजः प्रतिगजो तथा ॥ २० ॥ पुनश्चाह महातेजाः पार्थः कृष्णमरिन्दमम् । चोदयाश्वान् हृषीकेश कालोऽयमतिवर्तते ॥ २१ ॥ एवमुक्तस्तदा तेन पाण्डवेन महात्मना ॥२२॥ जयेन सम्पूज्य स पाण्डवं तदा प्रचोदयामास हयान्मनोजवान् । स पाण्डुपुत्रस्य रथो महाजवः क्षणेन कर्णस्यरथाग्रतोऽभवत् ॥ २३॥

इति कर्णपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये षडशीतोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

जी मेरे रथ और घोड़ों को चलायमान करो अब अर्ज्जुन कर्णको विना मारेहुये युद्धसे नहीं लौटेगा । १७ । हे गोविन्दजी अब मेरे वाणोंसे कर्ण को मृतक और खण्ड २ देखोगे अथवा कर्ण के वाणों से मुझको मृतक और खण्ड २ देखोगे । १८ । यह तीनोंलोकों का मोहनेवाला घोरयुद्ध अब वर्त्तमानहुआ जिसको पृथ्वी जबतक रहैगी तबतक मनुष्य वर्णनकरेंगे । १९ । तब सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी से ऐसा कहताहुआ अर्ज्जुन रथकी सवारी के द्वारा ऐसी शीघ्रतासे सम्मुखगया जैसे कि हाथी हाथीके सम्मुख जाताहै । २० । तेजस्वी अर्ज्जुन फिरभी शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी से बोला कि हे हृषीकेशजी आप शीघ्र घोड़ों को तीव्रकरो यह समय व्यतीत हुआ जाताहै । २१ । उस महात्मा अर्ज्जुन के इस वचन के कहतेही श्रीकृष्णजी ने उसको विजयका आशीर्वाद देकर चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ोंको तीक्ष्ण किया चित्तके समान शीघ्रगामी यह अर्जुनका रथ क्षणमात्रमेंही कर्णके रथसे आगे होगया २३ ॥

of gods and bearer of trident you will slay Karan as Indra had slain Namuchi. May you be happy, Arjun! You will gain victory." 15. "I must win," said Arjun, "when you, lord of the world, are kind to me. Pray drive my horses. Arjun will not return without slaying Karan. You will now see Karan cut into pieces by my arrows, or you will see me killed by him. 18. A dreadful battle has come about which will be the talk of the world as long as the Earth exists." Having said this, brave Arjun faced Karan as an elephant faces another. 20. Glorious Arjun again addressed Shri Krishn, saying, "Drive the horses fast, Hrishikesh. Time is flying fast." At this Shri Krishn predicted his victory and drove the horses fast like the mind, and brought his car soon near that of Karan." 23.

सञ्जय उवाच। वृषसेनं हतं दृष्ट्वा शोकामर्षसमन्वितः। पुत्रशोकोद्भवं वारि नेत्राभ्यां समवासृजत् ॥ १ ॥ रथेन कर्णस्तेजस्वी जगामाभिमुखो रिपुम्। युद्धाया-ह्वयमानस्तु ताम्राक्षः समाद्रवः धनञ्जयम् ॥ २ ॥ तौ रथौ सूर्य्यसङ्काशौ वैयाघ्रपरिवारणौ। समेतौ ददृशुस्तत्र द्वाविवार्कौ समागतौ ॥ ३ ॥ श्वेताश्वौ पुरुषादित्यावास्थितावरि-मर्दनौ। शुशुभाते महात्मानौ चन्द्रादित्यौ यथा दिवि ॥ ४ ॥ तौ दृष्ट्वा विस्मयं जग्मुः सर्वभूतानि मारिष। त्रैलोक्यविजये यत्ताविन्द्रवैरोचनाविव ॥ ५ ॥ रथज्यातलनिर्घोषबाणशङ्खरवैरपि। तौ रथावभिधावन्तौ समालोक्य महीक्षिताम् ॥ ६ ॥ ध्वजौ च दृष्ट्वा संयुक्तौ विस्मयः समपद्यत। हस्तिकक्ष्याञ्च कर्णस्य वानरञ्च किरीटिनः ॥७॥ तौ रथौ सम्प्रयुक्तौ तु दृष्ट्वा भारत पार्थिवाः। सिंहनादरवांश्चक्रुः साधुवादांश्च पुष्कलान् ॥ ८ ॥ दृष्ट्वा च द्वैरथं ताभ्यां तत्र योधाः सहस्रशः। चक्रुर्बाहुस्वनांश्चैव

अध्याय ८७ ॥

संजय बोले कि वृषसेनको मृतक देखकर शोक संतापसे युक्त कर्ण ने पुत्रके शोकसे उत्पन्न होनेवाले जलको नेत्रों से छोड़ा। १। फिरक्रोधसे रक्तनेत्र तेजस्वी कर्ण युद्धके निमित्त अर्जुन को बुलाता रथकी सवारी के द्वारा शत्रु के सम्मुखगया। २। सूर्य्य के समान प्रकाशमान व्याघ्रचर्मसे मढ़ेहुये वह दोनों और दोनोंके रथ मिलेहुये ऐसे दिखाईदिये जैसे कि आकाशमें वर्त्तमान दो सूर्य्य होयँ। ३। वह शत्रुओं के मर्दन करनेवाले दिव्यपुरुष श्वेत घोड़ेवाले दोनों महात्मा युद्धभूमि में नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्ग में चन्द्रमा और सूर्य्य शोभादेते हैं। ४। हे श्रेष्ठ तीनोंलोक के विजय करने में उपाय करनेवाले इन्द्र और वैरोचन असुरके समान उनदोनोंको देखकर सबसेनाके मनुष्यों को बड़ा आश्चर्यसा हुआ। ५। रथ कवच प्रत्यंचा और बाणों के शब्द और इसी प्रकार सिंहनादों समेत सम्मुख दौड़नेवाले उन रथियों को देखकर। ६। और मिलीहुई ध्वजाओं को भी देखकर राजाओं को आश्चर्य्य उत्पन्न हुआ गजकी रस्साके चिह्न वाली कर्णकी ध्वजा और हनुमानजी के रूपको धारण करनेवाली अर्जुन की ध्वजा थी। ७। हे भरतवंशी फिर सब राजाओं ने उन मिलेहुये रथियों को देखकर

CHAPTER LXXXVII

Sanjaya said, "Seeing Vrishasen dead, Karan dropped tears of grief for his son. With eyes red in anger, glorious Karan challenged Arjun to fight. Bright like the Sun, lined with tiger hide, both the warriors and their cars looked glorious like two Suns in the sky. The two great warriors, divine heroes, with white horses, standing in the field of battle, looked glorious like the Sun and the moon. Seeing the two warriors, capable of conquering the three worlds, like Indra and Virochan, the people of the army were filled with wonder. 5. The sounds of cars, armours, bowstrings and arrows were mixed with

तथा चैलावधूननम् ॥ ९ ॥ आजघ्नुः कुरवस्तत्र वादित्राणि समन्ततः । कर्णं प्रहर्षयिष्यन्तः शंखान् दध्मुश्च पुष्कलान् ॥ १० ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे हर्षयन्तो धनञ्जयम् । तूर्यशंखनिनादेन दिशः सर्वा व्यनादयन् ॥ ११ ॥ क्ष्वेडितास्फोटितोत्क्रुष्टैस्तुमुलं सर्वतोऽभवत् । बाहुशब्दैश्च शूराणां कर्णार्जुनसमागमे ॥ १२ ॥ तौ दृष्ट्वा पुरुषव्याघ्रौ रथस्थौ रथिनां वरौ । प्रगृहीतमहाचापौ शरशक्तिध्वजायुधौ ॥ १३ ॥ वर्मिणौ बद्धनिस्त्रिंशौ श्वेताश्वौ शंखशोभितौ । कृष्णशल्यरथोपेतौ तुल्यरूपौ महारथौ ॥ १४ ॥ सिंहस्कन्धौ दीर्घभुजौ रक्ताक्षौ हेममालिनौ ॥ १५ ॥ सिंहस्कन्धप्रतीकाशौ व्यूढोरस्कौ महाबलौ ॥ १६ ॥ अन्योन्यवधिनौ राजन्नन्योन्यस्य वधैषिणौ । अन्योन्यमभिधावन्तौ गोष्ठेष्विव महर्षभौ ॥ १७ ॥ प्रभिन्नाविव मातङ्गौ सुसंरब्धाविवाचलौ । आशी

सिंहनाद पूर्वक बड़ी प्रशंसाकरी॥८॥वहां हजारों शूरवीरोंने उनदोनोंके साथमें द्वंद्व युद्धको देखकर भुजाके शब्द अर्थात् खम्भोंको फटकार कर दुपट्टों को घुमाया । ९ । और कर्णके प्रसन्न करने को कौरव लोगोंने चारोंओर से बाजों को बजाकर सबने शंखों को बजाया । १० । इसी प्रकार अर्जुन की प्रसन्नताके लिये सब पाण्डवों ने तुरी और शंख के शब्दों से सब दिशाओं को शब्दायमान किया । ११ । सिंहनाद तालोंकाठोंकना शूरोंकापुकारना और शूरोंकी भुजाओंके महाकठोर शब्द अर्जुन और कर्णकी सम्मुखतामें सब ओरकोंहुये । १२ । हेराजा उन रथपर नियत रथियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी बाण शक्ति ध्वजासे युक्त ।१३। चमर और व्यजनों से युक्त श्वेत छत्रोंसे शोभित श्रीकृष्ण और शल्यका सारथी रखनेवाले एकसे रूप महारथी । १४ । सिंहके समान स्कन्ध लम्बी भुजा रक्तनेत्र सुवर्ण की मालाओं से भूषित । १५ । सिंहके समान शरीर बड़ेहृदय और पराक्रम वाले । १६ । परस्पर एक दूसरेकामरण चाहनेवाले दोनोंपरस्पर विजयाभिलाषी गोशाला में उत्तमबली बैलों के तुल्य परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले । १७ । मतवाले

leonine roars. The kings wondered at their standards—that of Karan with the device of elephants's rope and that of Arjun with the figure of ape on it. Seeing those two warriors face to face, the kings praised them with leonine roars. Thousands of warriors, seeing them engaged in duel, beat their arms and furled their sheets. They beat musical instruments and sent forth blasts from their conchs to please Karan. 10. Similarly, the Pandavas filled the directions with the sounds of conchs and trumpets to please Arjun. Leonine roars, beat of arms and cries of the warriors were heard before Arjun and Karan. Standing on their cars, the two best of archers, with standards, banners, spears, fans and umbrellas, with Shri Krishn and Shalya to drive their cars, having shoulders like those of lions, long arms, red eyes, gold chaplets, with bodies like lions, large breasts, full of prowess, desirous of slaying

॥ ३६ ॥ देवदानवगन्धर्वाः पिशाचोरगराक्षसाः । प्रतिपक्षग्रहञ्चक्रुः कर्णार्जुनसमागमे
॥ ३७ ॥ द्यौरासीत् कर्णतो व्यग्रा सनक्षत्रा विशाम्पते । भूमिर्विशाला पार्थस्य माता
पुत्रस्य वै यथा ॥ ३८ ॥ सरितः सागराश्चैव गिरयश्च नरोत्तम । वृक्षाश्चौषधयश्चैव
व्याश्रयन्त किरीटिनम् ॥ ३९ ॥ असुरा यातुधानाश्च गुह्यकाश्च परन्तप । कर्णतः सम
पक्षत खेचराश्च वयांसि च ॥ ४० ॥ रत्नानि निधयः सर्वे वेदाश्चाख्यानपञ्चमाः ।
सोपवेदोपनिषदः सरहस्याः ससंग्रहाः ॥ ४१ ॥ वासुकिश्चित्रसेनश्च तक्षकोपोपतक्षकः
पर्वताश्च तथा सर्वे काद्रवेयाश्च सान्वयाः । विषवन्तो महारोषा नागाश्चार्जुनतोभवन्
॥ ४२ ॥ ऐरावताः सौरभेया वैशालेयाश्च भोगिनः । एतेभवन्नर्जुनतः क्षुद्रसर्पास्तु
कर्णतः ॥ ४३ ॥ ईहामृगा व्याडमृगा माङ्गल्याश्च मृगद्विजाः । पार्थस्य विजये राजन्
सर्वे एवाभिसंश्रिताः ॥ ४४ ॥ वसवो मरुतः साध्या रुद्रा विश्वेऽश्विनौ तथा । अग्नि

परस्पर में निन्दा स्तुति करने के शास्त्रार्थरूप वादहुये । ३६ । पिशाच सर्प और राक्षस दोनों ओर को परस्पर में चुनेगये उन सबोंने कर्ण और अर्जुनके पक्षपातों में चित्तको प्रवृत्ताकिया । ३७ । स्वर्ग उसकर्ण की ओरके पक्ष में नियत हुआ और पृथ्वी माताके समान अर्जुनकी विजय चाहनेवाली हुई।३८। इसीप्रकार पर्वत समुद्र नदीभी जलों समेत अर्जुन के पक्षपाती हुये वृक्ष और औषधियोंमें अर्जुन केही पक्षमेंहुये यह सब परस्पर दोनों ओरों को चुनेगये हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र असुर यातुधान और गुह्यक इन स्वरूपवानों ने चारों ओर से कर्ण को आश्रयकिया गरुड़, पक्षी, । ४० । रत्न सब खाने, चारोंवेद जिनमें पांचवां इतिहास है उपवेद, उपनिषद रहस्य और संग्रहसमेत । ४१ । वासुकी, चित्रसेन, तक्षक, पर्वत, सब कद्रुके पुत्र सर्प और विषैले सर्प यहसब अर्जुनकी ओरहुये । ४२ । ऐरावतवंशी, सुरभीवंशी, वैशाली, भोगीनाम, सर्प यहसब अर्जुन की ओरहुये और नीच सर्प कर्ण की ओर हुये । ४३ । ईहामृग, व्यालमृग और मंगली पशुपक्षी यहसब अर्जुनकी विजय में प्रवृत्तचित्तहुये । ४४ । आठोंवसु, ग्यारहोंरुद्र, साध्यगण, मरुद्गण, विश्वेदेवा दोनों

a discussion about the merits and demerits of the two warriors. The pishaches, serpents and rakshses talked together. They made themselves into parties for the sake of Karan and Arjun. Heaven itself was on the side of Karan, while Mother Earth wished for A. victory. Mountains, seas, rivers and lakes, with medicinal herbs and trees were on the side of Arjun. Asurs, Yatudhans and Gubyaks were for Karan. Birds of the air, jewels, the four Vedas, with History as the fifth, Upvedas, Upnishads, Vasuki, Chitrasen, Takshak, mountains, all the sons of Kadru— poisonous serpents— all these sided with Arjun. The descendants of Airavat, Surabhi, Vishali, Bhogi and other snakes were on the side of Arjun. The lower sorts of snakes were on the side of Karan. Quadrupeds and birds were

दिग्भ्रश्च सोमश्च पवनोय दिशो दश । धनञ्जयस्य ते पक्षे आदित्याः कर्णतोभवन् ॥ ४५ ॥ विशः शूद्राश्च सूताश्च ये च सङ्करजातयः। सर्वशस्ते महाराज राधेयमभजंस्तदा ॥ ४६ ॥ देवास्तु पितृभिः सार्द्धं सगणाः सपदानुगाः । यमो वैश्रवणश्चैव वरुणश्च यतोर्जुनः । ब्रह्म क्षत्रञ्च यज्ञाश्च दक्षिणाश्चार्जुनश्रिताः ॥ ४७ ॥ प्रेताश्चैव पिशाचाश्च क्रव्यादाश्च मृगाण्डजाः । राक्षसाः सह यादोभिः श्वशृगालाश्च कर्णतः ॥ ४८॥ देवब्रह्मनृपर्षीणां गणाः पाण्डवतोभवन् । तुम्बुरुप्रमुखा राजन् गन्धर्वाश्च यतोर्जुनः ॥ ४९ ॥ प्रावेयाः सह मौनेयैर्गन्धर्वाप्सरसां गणैः । ईहामृगा व्यालमृगैर्द्विपाश्च रथपत्तिभिः ॥ ५० ॥ उह्यमानास्तथा मेघैर्वायुना च मनीषिणः । दिदृक्षवः समाजग्मुः कर्णार्जुनसमागमम् ॥ ५१ ॥ देवदानवगन्धर्वा नागयक्षाः पतत्रिणः । महर्षयो वेदविदः पितरश्च स्वधाभुजः ॥ ५२ ॥ तपोविद्यास्तथौषध्यो नानारूपाम्बरस्रजः । अन्तरिक्षे महाराज विनदन्तोवतस्थिरे ॥ ५३ ॥ ब्रह्मा ब्रह्मर्षिभिः सार्द्धं प्रजापतिभिरेव च । भवेनाव

अश्विनीकुमार अग्नि, इन्द्र, चन्द्रमा, दशोंदिशा, वायु यहसब अर्जुनकी ओरहुये और बारहसूर्य्य कर्णकीओरहुये । ४५ । हे महाराज तब वैश्य शूद्र सूत और जोजो कि संकर जातिवाले हैं इन सबने कर्णको सेवनकिया । ४६ । पीछे चलनेवाले समूहों समेत पितरों से युक्त देवता यमराज और कुबेर अर्जुनकीओरहुये ब्राह्मण क्षत्री यज्ञ दक्षिणा अर्जुनकी ओरहुये । ४७ । प्रेत पिशाच मांसभक्षी राक्षस आदि पशुपक्षी और जलके जीव, श्वान शृगाल कर्णकी ओरहुये । ४८ । देवर्षि ब्रह्मर्षि और राजऋषियोंके समूह पांडवोंकी ओरहुये हे राजा और तुम्बुरु आदि गन्धर्वभी अर्जुनकी ओरहुये । ४९ । मनुके पुत्र गन्धर्व और अप्सराओं के समूह कर्णकी ओरहुये। ५० । भेड़िये आदि पशु और पक्षियों के समूह हाथी घोड़े रथ और पति इसीप्रकार मेघवायुपर आरूढ़ ऋषिलोग कर्ण और अर्जुनके युद्धके देखनेकी इच्छा से आये । ५१ । देवता दानव गन्धर्व नाग यक्ष गरुड़ आदि और वेदज्ञ महर्षिलोग स्वधाके भोजन करनेवाले पितर और अनेक प्रकारके रूप पराक्रमों से युक्त तप विद्या औषधी हे महाराज यह सब शब्दों को करतेहुये आकाश में नियतहुये । ५३ । ब्रह्मर्षि और प्रजापतियों समेतब्रह्माजी और विमानपर विराजमान शिवजी

Karan. Vasus, Rudras, Sadhyas, Marutas, Vishwedevas, Ashwini-kumars, Agni, Indra, the moon, the ten directions and Vayu were on the side of Arjun, while the suns were for Karan. 45. The Vaishyas, the Shudras and the people of mixed descent were for Karan. The pitris following the gods, Yam and Kuver were for Arjun. Brahmans, Kshatryas, Sacrifices and Donations were for Arjun, and the Pretas, the Pishaches, flesh-eating rakshasas, animals and birds, aquatic animals, dogs and jackals were for Karan. Devarishis, Brahmrishis and royal sages were on the side of the Pandavas. Tumvuru and other Gandharvas were for Arjun, while the sons of

स्थितो यानं दिव्यं तं देशमागमत् ॥ ५४ ॥ समेतौ तौ महात्मानौ दृष्ट्वा कर्णधनञ्जयौ । अर्जुनो जयतां कर्णमिति शक्रोऽब्रवीत् स्वयम् । जयतामर्जुनं कर्ण इति सूर्य्योऽभ्यभाषत । ५५ ॥ हत्वार्जुनं मम सुतः कर्णो जयतु संयुगे । हत्वा कर्णं जयत्वद्य मम पुत्रो धनञ्जयः ॥ ५६ । इति सूर्यस्य चैवासीद्विवादो वासवस्य च । पक्षतःस्थितयोस्तत्र तयोः पुरुषसिंहयोः ॥ ५७ ॥ द्वैपक्ष्यमासीद्देवानामसुराणान्तथैव च । समेतौ तौ महात्मानौ दृष्ट्वा कर्णधनञ्जयौ ॥ ५८ ॥ अकम्पन्त त्रयो लोकाः सहदेवर्षिचारणाः । सर्वे देवगणाश्चैव सर्वभूतानि यानि च ॥ ५९ ॥ यतः पार्थस्ततो देवा यतः कर्णस्ततोऽसुराः । रथयूथपयो पक्षौ कुरुपाण्डववीरयो ॥ ६० ॥ दृष्ट्वा प्रजापतिं देवाः स्वयम्भुवमचोदयन् । समोऽस्तु देव विजय एतयोर्नरसिंहयोः ॥ ६१ ॥ कर्णा

उस दिव्य देशको आये तबउन भिड़ेहुये महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर इन्द्र देवता बोले कि अर्जुन कर्णको मारकर विजयकरो और सूर्य देवताने कहा कि कर्ण अर्जुनको विजयकरो । ५५ । मेरा पुत्र कर्ण युद्धमें अर्जुन को मारकर विजयकरे और इन्द्रनकहा कि मेरा पुत्र अर्जुन कर्ण को मारकर विजय करे । ५६ । वहां देवताओं में श्रेष्ठ पक्षपातमें युक्त इनदोनों सूर्य और इन्द्रका परस्पर वादहुआ । ५७ । हे भरतवंशी देवता और असुरोंके दो पक्ष हुये भिड़ेहुये उनदोनों महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर देवता सिद्ध चारण आदिक समेत तीनोंलोक कंपायमान हुये सब देवताओं के गण और जीवमात्र जितनेहैं । ५९ । उनमें देवता अर्जुनकी ओरहुये और असुरकर्णकी ओरहुये देवताओं ने कौरव और पाण्डवों के वीर महारथियों के दोनों पक्षों को देखकर स्वयंभू ब्रह्माजी से कहा कि हे ब्रह्माजी महाराज इन कौरव और पाण्डवों के दोनोंयुद्ध कर्त्ताओंमें किसकी विजय होगी हे देव इनदोनों नरोत्तमों की वारम्वार विजय होय हे प्रभु ब्रह्माजी कर्ण और अर्जुनके विवाद युद्ध से सब जगत् संदेह युक्तहै इनदोनोंकी विजयको

Manu, Gandharvas and apsaras were for Karan. 52. Wolves and other animals and birds, elephants, horses, cars and foot, clouds, the rishis living on air came to see the battle between Karan and Arjun. The gods, danavas, Gandharvas, nagas, yakshes, garurs, the rishis acquainted with the Vedas, the pitars, living upon libations, Tap, Knowledge and Medicines were seen talking in the air. 53. Brahmrishis, Brahma with the Prajapatis, and Shiv on his celestial car came to that holy region. Seeing Arjun and Karan engaged in fight, Indra said, " May Arjun slay Karan and gain victory over him. " Then Surya said, " Let Karan gain victory over Arjun. My son Karan will slay Arjun and gain victory. " Indra again said, " My son Arjun will slay Karan and gain victory. 56. Surya and Indra, the two best of gods, discussed about the victory of the two sides. The gods

र्जुनविवादेन सा'नहपरसचिलं जगत् ।एवयस्मो ब्रूहि तद्वाक्यं समोऽस्तु विजये ऽनयो ॥ ६२ ॥ तदुपश्रुत्य मघवा प्रणिपत्यं पितामहम् । व्यज्ञापयत देवेशमिदं मतिमतां वर ॥ ६३ ॥ पूर्वं भगवता प्रोक्तं कृष्णयोर्विजयो ध्रुवः । तत्तथास्तु नमस्तेस्तु प्रसीद भगवन्मम ॥ ६४ ॥ ब्रह्मेशानावथो वाक्यमूचतु स्त्रिदशेश्वरम् । विजयो ध्रुव एवास्तु विजयस्य महात्मनः ॥ ६५ ॥ खाण्डवे येन हुतभुक् तोषितः सव्यसाचिना । स्वर्गञ्च समनुप्राप्य साहाय्यं शक्रते कृतम् ॥ ६६ ॥ कर्णश्च दानवः पक्ष अतः कार्यः पराजयः एवं कृते भवेत् कार्यं देवानामेव निश्चितम् ॥ ६७ ॥ आत्मकार्य्यञ्च सर्वेषां गरीयास्त्रि दशेश्वर । महात्मा फाल्गुनश्चापि सत्यधर्मरतः सदा । विजयस्तस्य नियतं जायते नात्र संशयः ॥ ६८ ॥ तोषितो भगवान् येन महात्मा वृषभध्वजः । कथं वा तस्य न

सत्यसत्य हमसे कहिये हेब्रह्माजी आप इसीवचन को कहिये जिस में इनदोनों की विजय समानहो । ६२ । इन वचनों को सुनकर पितामहजी को प्रणाम करके बड़े ज्ञानी इन्द्रने देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी को यह जतलाया कि प्रथम आप भगवान ने श्रीकृष्ण और अर्जुनकी पूर्ण विजय वर्णन करी वह जैसा आपने कहाहै वैसेही होय मैं आपको नमस्कार करताहूं आप मुझपर प्रसन्न हूजिये । ६४ । इसके पीछे ब्रह्माजी और शिवजी इन्द्रसे यह वचन बोले कि इस महात्मा अर्जुनकीही निश्चय विजय होगी । ६५ । जिस अर्जुन ने कि खाण्डव वनमें अग्निको प्रसन्न किया और हे इन्द्र उसने स्वर्ग में आकर तेरी सहायताकरी । ६६ । और कर्ण दानवों के पक्ष में है इस हेतुसे वह पराजय होने के योग्यहै ऐसा करने से देवताओं का कार्य्य निश्चय होताहै । ६७ । हे देवराज सबका निजकार्य्य बड़ाहै महात्मा अर्जुनभी सदैव सच्चे धर्म्म में प्रीति रखनेवालाहै इसी की अवश्य विजयहोगी। इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है । ६८ । और जिसने भगवान् महात्मा शिवजी को प्रसन्न

and asurs were divided into two parties. Seeing Karan and Arjun there, the gods, sidhas and charans of the three worlds shook. Out of all the living beings of the world, the gods were on the side of of Arjun, while the asurs were for Karan. Seeing the warriors of the Pandavas and the Kauravas, the gods said to Brahma, "Shall the Kauravas win or the Pandavas? All the world is in a state of suspense about the encounter of Karan and Arjun. Let us know the exact result of their fighting. Let their victory be equal." On hearing this, wise Indra prostrated before the grandfather and said, "You have already predicted the complete victory of Krishn and Arjun. Let it be as you have said, I bow to you. May you be pleased. Then Brahma and Shiv said to Indra, "Arjun's victory is sure. 65. He gratified Agni in the Khandav forest and helped you in heaven. Karan has friendship with the Danavas and is therefore worthy of defeat

जयो जायते शतलोचन ॥ ६९ ॥ यस्य चाक्र स्वयं विष्णुः सारथ्यं जगतः प्रभुः । मनस्वी बलवान् शूरः कृतास्त्रश्च तपोधनः ॥ ७० ॥ बिभर्ति च महातेजा धनुर्वेदमशेषतः । पार्थः सर्वगुणोपेतो देवकार्यमिदं यतः ॥ ७१ ॥ अतिक्रमेच्च माहात्म्यादिषमव्यस्य पर्ययम् । अतिक्रान्ते लोकानामभावो नियतं भवेत् ॥ ७२ ॥ न विद्यते व्यवस्थानं क्रुद्धयोः कृष्णयोः क्वचित् । स्रष्टारौ ह्यसतश्चैतौ सतश्च पुरुषर्षभौ ॥ ७३ ॥ नरनारायणावेतौ पुराणावृषिसत्तमौ । अनिर्जयौ नियन्तारावमीतौ स्म परन्तपौ ॥ ७४ ॥ नैतयोस्तु समः कश्चिद्दिवि वा मानुषेषु वा । अनुगम्य त्रयो लोकाः सह देवर्षिचारणैः ॥ ७५ ॥ सर्वे देवगणाश्चापि सर्वभूतानि यानि च । अनयोस्तु प्रभावेण वर्त्तते निखिलं जगत् ॥ ७६ ॥ कर्णो लोकानयं मुख्यान् प्राप्नोतु पुरुषर्षभः । वसूनाञ्च सलोकत्वं

किया है इन्द्र उसकी विजय कैसे न होगी अर्थात् अवश्य होगी । ६९ । जगत् के प्रभु विष्णु भगवान ने जिसकी आप रथवानी करी और जो साहसी पराक्रमी अस्त्रज्ञ तपोधन । ७० । बड़ा तेजस्वी सब गुणों से युक्त अर्जुन सम्पूर्ण धनुर्वेद को धारण करताहै इसीसे यह देवताओंका कामहोगा । ७१ । पाण्डव सदैवसे बनवास आदि से दुःखपाते हैं तपसे युक्त वह योग्य पुरुष अर्जुन अपनी प्रतिष्ठा से वांछित मनोरथों की अमर्य्यादाओं को उल्लंघन करे उसके उल्लंघन करने पर लोकोंका अवश्य नाश होजाय । ७२ । क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और अर्जुनकी पराजय कहीं नहीं वर्त्तमानहै यह दोनों पुरुषोत्तम सदैव से संसार के स्वामी हैं अर्थात् इन दोनों परमात्मा और आत्माके तेजसे सब जगत् प्रकट होताहै । ७३ । यह दोनों नरनारायण पुराण पुरुष ऋषियों में श्रेष्ठ अजेय सबके ऊपर मुख्य हैं इसी हेतु से यह दोनों शत्रुओं के संतप्त करनेवाले हैं । ७४ । स्वर्गमर्त्य पाताल इन तीनोंलोकों में इन दोनोंके समान कोई नहीं हैं । ७५ । सब देवगण और जीवोंकेगण जितनेहैं इनसब समेत सब संसार इनदोनों से मिलकर उन्हीं के प्रभावसे प्रकट होताहै ।७६।

The cause of the gods is sure to be promoted by so doing. One's own *cause is the best of causes.* Arjun is lover of dharm and therefore he is sure of victory. How shall he not win who pleased Shiva? He whose car is driven by Vishnu, the lord of the world himself, and who is courageous, full of prowess, clever in the use of arms, glorious, virtuous and best of archers, will do the work of gods. The Pandavas have suffered much in exile. The great ascetic Arjun by his greatness trangresses tho bounds and destroys the world. Shri Krishn and Arjun, when enraged, cannot suffer defeat. They are eternal lords and creators of the world. 73. Both these ancient rishis, Nar and Narayan are invincible by all and are destroyers of foes. They have no equal among the residents of heaven, earth and nether regions. All the gods and other living beings unite in them and are

मरुतां वा समाप्नुयात् ॥ ७७ ॥ सहितो द्रोणभीष्माभ्यां नाकलोके महीयताम् । वीरो वैकर्त्तनः शूरो विजयस्त्वस्तु कृष्णयोः ॥ ७८ ॥ इत्युक्तो देववेदाभ्यां सहस्राक्षो शचीपतिः । आमन्त्र्य सर्वभूतानि ब्रह्मेशानानुशासनम् ॥ ७९ ॥ श्रुतं भवद्भिर्यत् प्रोक्तं भगवद्भ्यां जगद्धितम् । तत्तथा नान्यथा तद्धि विगतध्वं गतमन्यवः ॥ ८० ॥ इति सुरेन्द्रवचनं सर्वभूतानि मारिष । विस्मितान्यभवन्राजन् पूजयाञ्चक्रिरे च तम् ॥ ८१ ॥ व्यसृजंश्च सुगन्धीनि नानारूपाणि खात्तदा । पुष्पवर्षाणि विबुधा देवतूर्याण्यवादयन् ॥ ८२ ॥ दिदृक्षवश्चाप्रतिमं द्वैरथं नरसिंहयोः । देवदानवगन्धर्वाः सर्व एवावतस्थिरे ॥ ८३ ॥ रथौ तयोः श्वेतहयौ युक्तकेतू महार्जुनौ । यौ तौ कर्णार्जुनौ राजन् प्रहृष्टावध्यतिष्ठताम् ॥ ८४ ॥ समागता लोकवीराः शंखान् दध्मुः पृथक् पृथक् । वासुदेवार्जुनौ वीरौ शल्यकर्णौ च भारत ॥ ८५ ॥ तद्भीरुत्रासजननं युद्धं समभवत्तदा ।

यह पुरुषोत्तम कर्ण उत्तम लोकों को पावे यह कर्ण वसुओं की सालोक्यता को और मरुद्गणों के स्थानों को पावे । ७७ । और द्रोण वा भीष्मपितामह के साथ स्वर्गलोक को पावे कर्णशूरवीर है परन्तु विजयश्रीकृष्ण और अर्जुनकीहोगी । ७८। देवताओंके देवताब्रह्माजी और शिवजीके इस वचनको सुनकर इन्द्रने सबजीवमात्रों को समझाकर ब्रह्माजी और शिवजीके आज्ञारूप इसवचनकोकहा । ७९। किहे सब जीवमात्रो आपसब लोगों ने सुनाजो जगत्के हितकारी भगवान् ब्रह्माजी और शिवजीने कहाहै वह वैसाही होगा इसमें अन्यथा कभी न होगा तुम निस्संदेहरहो । ८० । हेश्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र सबजीव इन्द्रके इसवचनको सुनकर आश्चर्ययुक्तहुये इन्द्रका पूजन किया और देवताओं ने प्रसन्न चित्त होकर सुगन्धित पुष्पों की वर्षाकरी और नानारूपके देवताओं के बाजों को बजाया । ८२ । इन दोनों नरोत्तमों को अनूपम द्वैरथ युद्धके देखने की इच्छा से देवता दानव और गन्धर्व सब नियतहुये । ८३ । उन दोनों महात्माओं के वह दोनों दिव्य रथ श्वेतघोड़ों से युक्त थे जिनपर यह दोनों महात्मा सवार थे । ८४ । सम्मुख आये हुये लोकों के वीरोंने अपने शंखोंको पृथक् २ बजाया हे भरतवंशी फिर वासुदेवजी अर्जुन कर्ण और शल्यने भी शंखों को बजाया ८५ । तब परस्पर ईर्षा करनेवाले दोनों वीरों

created by their greatness. Let Karan enter the regions of Vasus and Maruttas and go to heaven along with Bhishm and Drona, for he is a brave man, though the victory shall lie with Krishn and Arjun. Hearing the words of Brahma, the god of gods, and Shiv, Indra announced the order to all beings, saying, "You have heard what Brahma and Shiv said and it shall not be otherwise. 80 All the beings were amazed as they heard Indra's announcement. They worshipped Indra. The gods were pleased and showered flowers over him and beat the divine musical instruments. The gods, Donavas and gandharvas stood there to witness the battle of the two great

अन्योन्यस्पर्द्धिनोर्युद्धं शक्रशम्बरयोरिव ॥ ८६ ॥ तयोर्ध्वजौ वीतमलौ शुशुभाते रथे स्थितौ । राहुकेतू यथाकाशे उदितौ जगतः क्षये ॥ ८७ ॥ कर्णस्याशीविषनिभा रत्नसारमयी दृढा । पुरन्दरधनुःप्रख्या हस्तिकक्षा व्यराजत ॥ ८८ ॥ कपिश्रेष्ठस्तु पार्थस्य व्यादितास्यो भयङ्करः । भीषयन्नेव दंष्ट्राभिर्दुर्निरीक्ष्यो रविर्यथा ॥ ८९ ॥ युद्धाभिलाषुको भूत्वा ध्वजो गाण्डीवधन्वनः । कर्णध्वजमुपातिष्ठत् स्वस्थानाद्वेगवान् कपिः ॥ ९० ॥ उत्पत्य तु महावेगः कक्षामभ्यहनत्कपिः । नखैश्च दशनैश्चैव गरुडः पन्नगं यथा ॥ ९१ ॥ सकिङ्किणीकाभरणा कालपाशोपमायसी । अभ्यद्रवत् सुसंक्रुद्धा नागकक्षाथ तं कपिम् ॥ ९२ ॥ तयोर्घोरतमे युद्धे द्वैरथे द्यूत आहिते । प्रकुर्वाते ध्वजौ युद्धं प्रत्यहेसतां

का युद्ध भयानकों का भी भयकारी ऐसा कठिन हुआ जैसे कि इन्द्र और शंवर दैत्यका युद्ध हुआथा । ८६ । उन दोनोंकी निर्मल ध्वजा रथपर नियत होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि संसारकी प्रलय होने के समय में आकाश में उदय होने वाले राहु और केतु होते हैं । ८७ । विषवाले सर्पकी समान रत्नसार में जटित बड़ी दृढ़ इन्द्रधनुष के समान हाथीकी कक्षा के चिह्नवाली कर्ण की ध्वजा शोभा देरही थी ८८ और खुले मुखवाले यमराज के समान विकराल दंष्ट्रावाले हनुमानजी से शोभित अर्जुनकी ध्वजा ऐसी भयकारी देखने में आती थी जैसे कि सूर्य अपनी किरणोंसे दुखदेखनेके योग्य होताहै ।८९। गांडीव धनुषधारी की ध्वजा में से युद्धाभिलाषी हनुमान् जी अपने स्थान से उछलकर कर्णकी ध्वजापर नियतहुये । ९० । बड़ेवेगवान् हनुमानजीने उछलकर कर्णके ध्वजाकी नागकक्षाको अपने दांत और नखोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि सर्प को गरुड़ करताहै । ९१ । इसके पीछे क्षुद्रघंटिका और भूषण रखनेवाली कालपाश के समान अत्यन्त क्रोध रूप वह नागकी कक्षा हनुमान जी की ओर दौड़ी । ९२ । तब उन दोनों का

warriors. Both the cars of those great warriors were drawn by white horses. They sounded their conchs separately. Vasudev, Arjun Karan and Shalya sent forth blasts from their conchs. The battle between those two great warriors was dreadful like that between Indra and Samvar. The standards on their cars looked grand like Rahu and Ketu at the time of pralaya. Karan's standarad bore the device of an elephant's rope, studded with jewels, like a venomous serpent. Arjun's standard, with Hanuman having dreadful fangs like Yamraj scorched the lookers-on like the rays of the Sun. The ape on the standard of Arjun left his place and perched on that of Karan. 90. Hanuman jumped up with great force and with his teeth and nails mutilated the elephant's rope on the standard of Karan as a garur does a serpent. The rope, adorned with bells and ornaments rushed in rage at the ape. When the standards of the two warriors

हयान हयाः ॥ ९३ ॥ अविध्यत् पुण्डरीकाक्षः शल्यं नयनसायकैः । स चापि पुण्डरीकाक्षः शल्यं नयनसायकैः । सचापि पुण्डरीकाक्षं तथैवाभिसमैक्षत ॥ ९४ ॥ तत्राजयद्वासुदेवः शल्यं नयनसायकैः । कर्णश्चाप्यजयद्दृष्ट्वा कुन्तीपुत्रोधनञ्जयः ॥ ९५ ॥ अथाब्रवीत् सूतपुत्रः शल्यमाभाष्य सस्मितम् । यदि पार्थो रणे हन्यादद्य मामिह कर्हिचित् ॥ ९६ ॥ किमुत्तरं तदा ते स्यात् सखे सत्यं ब्रवीहि मे ॥९७॥ शल्य उवाच । यदि कर्ण रणे हन्यादद्य त्वां श्वेतवाहनः । उभावेकरथेनाहं हन्यां माधवफाल्गुनौ ॥९८॥ सञ्जय उवाच । एवमेव तु गोविन्दमर्जुनः प्रत्यभाषत । तं प्रहस्याब्रवीत् कृष्णः पार्थं परमिदं वचः ॥ ९९ ॥ पतेद्दिवाकरः स्थानात् शीर्य्येतानेकधा क्षितिः । शैत्यमग्निरियान्न त्वां कर्णो हन्याद्धनञ्जय ॥ १०० ॥ यदि त्वेवं कथंचित स्यात् लोकपर्य्यासनं

अत्यन्त घोररूप द्वैरथ युद्ध होनेपर उन दोनों ध्वजाओं के युद्ध करनेपर परस्पर ईर्षा करनेवाले घोड़े घोड़ो से भिड़े । ९३ । और, कमललोचन श्रीकृष्णजी ने नेत्ररूप बाणों से शल्य को छेदा इसी प्रकार शल्यने भी श्रीकृष्ण जी को देखा । ९४ । वहां वासुदेवजी ने नेत्ररूपी बाणों से शल्य को विजय किया और कुंती के पुत्र अर्जुनने भी कर्ण को देखकर विजय किया । ९५ । इस के पीछे सूतपुत्र कर्ण ने शल्य से समक्ष होकर मन्दमुसकान समेत यह वचनकहा कि अब युद्ध में किसी समयपर जो कदाचित अर्जुन मुझ को मारडाले तब हे शल्य तुम क्या करोगे यह सत्य सत्य हमसे कहो । ९७ । शल्यने कहा कि जो श्वेतघोड़े वाला अर्जुन तुझको युद्धमें मारडालेगा तो मैं एकही रथकेद्वारा उनदोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारूंगा । ९८ । संजय बोले कि इसी प्रकार अर्जुन ने गोविन्दजी से कहा तब श्रीकृष्णजी ने भी हँसकर उस अर्जुन से यह सत्य २ वचनकहा ।९ । कि हे अर्जुन चाहे सूर्य अपने स्थान से गिरपड़े और समुद्र भी सूखजाय और अग्नि शीतलताको पावे परन्तु कर्ण तुझको नहीं मारसक्ता है ।१००। जो यह किसी प्रकार से होजाय और इन लोगोंका निवास होपतो मैं कर्ण और शल्यको युद्धमें अपनी भुजाओं से ही मारडालूंगा । १०१ । श्रीकृष्ण जी के इसवचनको सुनकर

were thus engaged in Combat, there horses joined in battle with loud neighing. Lotus-eyed Shri Krishn pierced Shalya with the arrows of eyes and Shalya gazed at Krishn. Vasudev conquered Shalya with his eyes and Arjun too, vanquished Shalya with his glances. Then Karan said to Shalya with a smile, "What will you do, if I am slain by Arjun? Tell me truly." Shalya said, "If Arjun the possessor of white horses kills you, I shall singly slay both Arjun and Krishn." Sanjaya says that in the same manner Arjun put the same question to Govind and the latter said to him with a smile, "Karan cannot slay you, though the Sun fall down from his place, the ocean become dry and fire become cool. 100. However, if such a calamity happens

वधा। हत्वा कर्णं तथा शल्यं बाहुभ्यामेव संयुगे ॥ १०१ ॥ इति कृष्णवचः श्रुत्वा प्रहसन् कपिकेतनः। अर्जुनः प्रत्युवाचेदं कृष्णमक्लिष्टकारिणम् ॥ १०२ ॥ ममैव तावत् पर्य्याप्तौ शल्यकर्णौ जनार्दन। सपताकध्वजं कर्णं सशल्यरथवाजिनम् ॥१०३॥ सच्छत्र कवचञ्चैव सशक्तिशरकार्मुकम्। द्रष्टास्यद्य रणे कृष्ण शरैश्छिन्नमनेकधा ॥ १०४ ॥ अद्यैनं सरथं साश्वं सशक्तिकवचायुधम्। संचूर्णितमिवारण्ये पादपं दन्तिना यथा ॥१०५॥ अद्य राधेयभार्य्याणां वैधव्यं समुपस्थितम्। ध्रुवं स्वप्नेष्वनिष्टानि ताभिर्दृष्टानि माधव ॥ १०६ ॥ ध्रुवमद्यैव द्रष्टासि विधवाः कर्णयोषितः। न शाम्यते हि मे मन्युर्येन कृतं पुरा १०७ ॥ कृष्णां सभागतां दृष्ट्वा मूढेनादीर्घदर्शिना। अस्मांस्तदोपहसताक्षिपता च पुनः पुनः ॥ १०८ ॥ अद्य द्रष्टासि गोविन्द कर्णमुन्मथितं मया। वारणेनेव मत्तेन पुष्पितं जगतीरुहम् ॥ १०९ ॥ अद्य ता मधुरा वाचः श्रोतासि मधुसूदन।

हँसते हुये कपिध्वज अर्जुन ने उन सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी को यह उत्तरादिया कि। १०२। हे जनार्दनजी जब आपकी मेरे ऊपर ऐसी कृपा है तो कर्ण और शल्य मुझको युद्ध में विजय करने को असमर्थ हैं हे श्रीकृष्ण जी अब युद्ध में मेरे हाथ के बाणों से पताका ध्वजा शल्य रथ घोड़े छत्र कवच शक्ति बाण और धनुष सहित बहुत प्रकार से घायल हुये कर्णको देखोगे।१०४। अबही रथ घोड़े शक्ति कवच और शस्त्रों समेत ऐसे अच्छीरीति से चूर्ण होगा जैसे कि वन में हाथी से वृक्षों का चूर्ण होता है। १०५। अब कर्ण की स्त्रियों को वैधव्यता प्राप्त हुआ है माधवजी निश्चय करके उन स्त्रियों ने सोतेहुये अशुभ स्वप्नों को देखाहोगा। १०६। अभी आपकर्णकी स्त्रियोंको विधवा देखेंगे क्योंकि मेरा क्रोध शान्त नहींहोताहै जो इस प्रकार से हमको हँसकर और वारम्वार हमारी निन्दा कर के इस अज्ञानी अदीर्घदर्शी ने पूर्व समय में सभा में वर्त्तमान द्रौपदी को देखकर कर्म कियाथा। १०८। हे गोविन्दजी अब मेरे हाथसे मथन किये हुये कर्णको ऐसे देखोगे जैसे कि मतवाले हाथीसे मर्दन किया हुआ पुष्पित वृक्ष होताहै हेमधुसूदनजी अबकर्णके पछाड़नेपर उनमधुर वचनोंकोआप सुनेंगे कि हेश्रीकृष्णजी आपप्रारब्धसे विजयकरतेहो

I shall slay both Shalya and Karan with my own arms." Having heard the words of Krishn, Arjun said, "Karan and Shalya cannot conquer me when you are kind to me. You will see Karan and his standard, car, horses, umbrella, armour, spear, arrows and bow, hit by my arrows. His car, horses, spear, armours and body will be be crushed like plants under the feet of elephants. 105. Karan's wives shall be widows; surely they must have dreamed evil dreams. You will see his wives widowed. My anger does not subside, because he laughed at us and was the cause of the wrongs done to Draupadi. You will see Karan crushed by me as a flowering plant is crushed by an elephant. You will hear the pleasant news of the defeat of

बिष्ट्या जयसि वार्ष्णेय इति कर्णे निपातिते ॥ ११० ॥ अथाभिमन्युजननीमनृणः सान्त्वयिष्यसि। कुन्तीं पितृष्वसारञ्च संप्रहृष्टो जनार्दन ॥ १११ ॥ अद्य बाष्पमुखीं कृष्णां सान्त्वयिष्यसि माधव। वाग्भिरमृतकल्पाभिर्धर्मराजं युधिष्ठिरम् ॥ ११२ ॥

इति कर्णपर्वणि कर्णार्जुन द्वैरथे सप्ताशीतोऽध्यायः ८७ ॥

सञ्जय उवाच। तद्देवनागासुरसिद्धयक्षैर्गन्धर्वरक्षोऽप्सरसाञ्च संघैः। ब्रह्मर्षिराजर्षिसुपर्णजुष्टं बभौ वियद्विस्मयनीयरूपम् ॥ १ ॥ नानद्यमानं निनदैर्मनोज्ञैर्वादित्रगीतस्तुतिहासनृत्यैः। सर्वेऽन्तरिक्षं ददृशुर्मनुष्याः खस्थाश्च नाग्विस्मयनीयरूपान् ॥ २ ॥ ततः प्रहृष्टाः कुरुपाण्डवाया वादित्रशङ्खस्वनसिंहनादैः। निनादयन्तो वसुधां दिशश्च स्वनेन

॥११०हेजनार्दनजी अवभाप अत्यन्त प्रसन्नहोकर अभिमन्युकीमाताको और अपनी फूफी कुन्तीको विश्वास युक्तकरोगे ।१११। हे माधव जी अवतुम अमृत के समान वचनोंसे अश्रुओंसे पूरित मुखवाली द्रौपदीको और धर्मराज युधिष्ठिरको विश्वास युक्त करके शान्तकरोगे ११२ ॥

अध्याय ॥ ८८ ॥

संजयबोले कि आकाश देवता,नाग,असुर,सिद्ध,यक्ष,राक्षस,गन्धर्व और अप्सराओंके समूहोंसे और राजऋषि ब्रह्मऋषि और गरुड़से सेवितहोकर अपूर्वशोभित हुआ । १ । और सब मनुष्य और पक्षियोंने नाना प्रकार के बाजे गान प्रशंसा नृत्य हास और अनेक चित्तरोचक शब्दोंसे अन्तरिक्ष को अपूर्वरूपका शब्दायमान देखा ।२। तदनन्तर बाजेशंख और सिंहनादोंके शब्दोंसे पृथ्वी और दिशाओं को शब्दायमानकरते अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरवी और पाण्डवी सेना के शूरवीरों

Karan. People will say that Karan has been defeated by your fovour. You will be able to console Abhimanyu's mother and your aunt. You will also be able to console Yudhishthir and weeping Draupadi.

CHAPTER LXXXIII

Sanjaya said, " The gods, nagas, asurs, sidhas, yakshes, rakshases, gandharvas and apsaras, with royal sages and Brahmrishis beautified the sky. They filled the air with the sounds of music, praises, laughter and others pleasing to the ear. The Pandav and Kaurav warriors,

सर्वे द्विषतो निजघ्नुः ॥ ३ ॥ नराश्वमातङ्गरथायुधाकुलं गदासिशक्त्यृष्टिनिपातदुः
सहम् । अभीरुजुष्टं हततेहसंकुलं रणाजिरं लोहितमाबभौ तदा । बभूव युद्धं कुरुपा
ण्डवानां यथा सुराणामसुरैः सहाभवत् ॥ ४ ॥ तथा प्रवृत्तेऽत्यमृतां पराभवे धनञ्जय
स्याधिरथश्च सायकैः । दिशश्च सैन्यञ्च शितैरजिह्मगैः परस्परं प्रावृणुतां सुदंशितौ
॥ ५ ॥ ततस्त्वदीयाश्च परे च सायकैः कृतेन्धकारे विविदुर्न किञ्चन । भयात्तु तावेक
रथौ समाश्रयंस्तमोनुदौ खे प्रसृता इवांशवः ॥ ६ ॥ ततोऽस्त्रमस्त्रेण परस्परस्य तौ विधूय
वाताविव पूर्वपश्चिमौ । घनान्धकारे वितते तमोनुदौ यथोदितौ तद्वदतीव रेजतुः ॥७॥
न चाभिसर्त्तव्यमिति प्रचोदिताः परे त्वदीयाश्च तदावतस्थिरे । महारथौ तौ परि
वार्य सर्वतः सुरासुरा वासवशम्बराविव ॥ ८ ॥ मृदङ्गभेरीपणवानकस्वनैर्निनादितौ

ने सब शत्रुओंको मारा । ३ । तब युद्धभूमि मनुष्य घोड़ेहाथी और रथोंसे व्याप्त बाण खड्ग शक्ति और दुधारे खड्गोंके प्रहारोंसे महाअसह्य और निर्भय शूरवीरों से सेवित वा मृतक योद्धाओं से पूरित होकर रक्तवर्ण को धारण किये अत्यन्त शोभायमानहुई इसरीति से कौरव और पाण्डवोंका ऐसा युद्धहुआ जैसे कि असुरों का और देवताओं का हुआथा । ४ । इसप्रकार महा भयकारी घोर युद्धके जारी होनेपर अर्जुन और कर्णके महातीक्ष्ण सीधे चलनेवाले अच्छे अलंकृत उत्तम शायकों से दिशाओं समेत सम्पूर्ण सेना ढकगई । ५ । तदनन्तर अंधकार होजाने पर आपके और पाण्डवोंके युद्धकर्त्ताओं ने कुछभी नहीं देखा रथियों में श्रेष्ठ वह दोनों कर्ण और अर्जुन भयसे दुःखी होकर सम्मुखहुये फिर सबओरसे अपूर्व युद्धहुआ । ६ । अर्थात् पूर्वीय पश्चिमीय वायुके समान परस्पर में शस्त्रोंसे अस्त्रोंको हटाकर ऐसे शोभायमान हुये जैसेकि बादलोंसे अंधकार होजानेपर उदय होनेवाले सूर्य्य और चन्द्रमा हटना नहीं चाहते । ७ । इस नियम से प्रेरित आपके और पाण्डवों के शूरवीर लोग सम्मुख नियतहुये वह दोनों महारथी नरोत्तम सबओरे

with the sounds of music and leonine roars, slew their enemies. The field of battle, full of men, horses, elephants and cars was made red by arrows, swords, spears and double-edged swords of the warriors. The battle between the Kauravas and Pandavas was like that of gods and asura. The field of battle was spread over with the sharp and straight-going arrows of Karan and Arjun. 5. Then the darknes was intense and both sides were unable to see any thing. Both the warriors fought with wonderful skill. Like the East and West winds they repelled the weapons and looked glorious like the Sun and the moon coming out from the clouds. The Kaurav and Pandav warriors fought hard. The sounds of drums and trumpets mixed with their leonine roars were like those of gods and asurs in the war of Indra and Samvar. Moving their bows in circles, the glorious warriors shot thousands of

भारत शङ्खनिस्वनैः । तौ सिंहनादं नदतुर्नरोत्तमौ शशाङ्कसूर्याविव मेघसंप्लवे ॥ ९ ॥
महाधनुर्मण्डलमध्यगावुभौ सुवर्चसौ बाणसहस्ररश्मिनौ । दिधक्षमाणौ सचराचरं
जगत् युगान्तसूर्याविव दुःसहौ रणे ॥ १० ॥ उभावजेयावहितान्तकावुभौ
जिघांसू कृतिनौ परस्परम् । महाहवे वीरतरौ समीयतुर्महेन्द्रजम्भाविव कर्णपाण्डवौ
॥ ११ ॥ ततो महास्त्राणि महाधनुर्धरौ विमुञ्चमानाविषुभिर्भयानकैः । नराश्वनागा
नभिताभिजघ्नतुः परस्परञ्चापि महारथौ नृप ॥ १२ ॥ ततो विसस्रुः पुनरर्दिता नरा
नरोत्तमाभ्यां कुरुपाण्डवाश्रयाः । सनागपत्त्यश्वरथा दिशो दशस्तथा यथा सिंहहता
वनौकसः ॥ १३ ॥ ततस्तु दुर्योधनभोजसौबलाः कृपश्च शारद्वतसूनुना सह । महा
रथाः पञ्च धनञ्जयाच्युतौ शरैः शरीरान्तकरैरताडयन् ॥ १४ ॥ धनूंषि तेषामिषु

से घेरकर मृदंग भेरी पणव और आनकनाम बाजों के और सिंहनादों के शब्दोंके द्वारा ऐसे शब्दवालेहुये जैसे कि देवता असुर संवर और इन्द्रहुयेथे । ९ । तबयह दोनों पुरुषोत्तम बड़े धनुष मण्डलमें वर्तमान बड़े तेजस्वी बाणरूप हजारों किरणों के रखनेवाले होकर ऐसे दुस्सह हुये जैसे युगके अंतमें से चन्द्रमा और सूर्य्य होते हैं । १० । वहदोनों प्रलयकालके सूर्य्य के समान युद्धमें कठिनता पूर्वक सहने के योग्य जड़ चैतन्यों समेत संसार के भस्म करने के इच्छावान् महा अजेय शत्रुओं का नाश करनेवाले परस्परमें मारनेके अभिलाषी कर्ण और अर्जुन निर्भयता पूर्वक उस बड़े युद्धमें ऐसे सम्मुखहुये जैसे कि महाइन्द्र और जंभ सम्मुखहुयेथे । ११ । उसकेपीछे बड़े धनुषधारी भयके उत्पन्न करनेवाले बाणों के द्वारा बड़े अस्त्रोंको छोड़तेहुये दोनों महारथियों ने बहुत से मनुष्य घोड़े और हाथियों समेत परस्पर में एकने दूसरे को घायल किया हे राजन इसकेपीछे उनदोनों नरोत्तमों से पीड़ामान कौरवीय और पांडवीय मनुष्य हाथी पत्ति घोड़े और रथोंसेयुक्त ऐसे दशोंदिशा ओं में भागे जैसे कि सिंहसे घायलहुये वनवासी जीव भागते हैं । १३ । इसकेपीछे दुर्योधन, कृतवर्मा, शकुनि, कृपाचार्य्य और शारद्वतका पुत्र इनपांचों महारथियों ने शरीर के छेदनेवाले बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को पीड़ितकिया । १४ ।

arrows like the rays of the Sun. 10. Like the Sun of pralaya, desirous of burning all the movables and immovables, the two destroyers of foes encountered like Jambh and Indra. Then the two great archers, discharging dreadful arrows, wounded each other with the help of their men, horses and elephants. Wounded by their arrows, the Kaurav and Pandav armies, consisting of elephants, foot, horse and cars, ran in all directions like animals afraid of a lion. Then Duryodhan, Kritvarma, Shakuni, Kripacharya and the son of Shardwat wounded Arjun and Krishn with their sharp arrows. Arjun cut down their bows, quivers, banners, horses, cars and drivers, and pierced

नीन् हयान् गजांश्चथान् समूतांश्च धनञ्जयः शरैः । समं प्रचिच्छेदपराभिनश्च
त स्त्रुरोसमैद्वादशभिश्च सूतजम् ॥ १५ ॥ अथाभ्यधावंस्त्वरितैः शतं रथाः शतं गजाः
स्त्वर्जुनघातताविनः । शकास्तुखारा यवनाश्च सादिनः सहैव काम्बोजवरैर्जिघांसवः
सवः ॥ १६ ॥ वरायुधान् पाणिगतैः शरैः सह क्षुरैर्निकृन्तंस्त्वरितः शिरांसि च ।
हयांश्च नागांश्च रथांश्च युध्यतो धनञ्जयः शत्रुगणान् क्षितौ क्षिणोत् ॥ १७ ॥ ततोऽन्त
रीक्षे सुरतूर्यनिस्वनाः ससाधुवादा हृषितैः समीरिताः । न पेतुरप्युत्तमपुष्पवृष्टय
सुगन्धिगन्धाः पवनेरिताः शिवा॥१८॥तदद्भुतं देवमनुष्यसाक्षिकं समीक्ष्यभूतानि विसि
स्मियुर्नृप । तवात्मजः सूतसुतश्च न व्यथां न विस्मयं जग्मतुरेक निश्चयौ ॥ १९ ॥
अथाब्रवीद्द्रोणसुतस्तवात्मजं करं करेण प्रतिपीड्य सान्त्वयन् ॥ २० ॥ प्रसीद दुर्योधन

तब अर्जुनने उनके धनुष, तूणीर, ध्वजा, घोड़े, रथ और सारथियों समेत चारों ओरसे इन शत्रुओंको मथनकरके शीघ्रही उत्तम बारहबाणों से कर्णको घायल किया । १५ । इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले मारने के अभिलाषी लोग सम्मुख दौड़े और अर्ज्जुनके मारने के उत्सुक सौ रथ सौ हाथी और अश्व सवार शक, तुषार, यवन, कांबोजदेशियों समेत इन सबों ने हाथों में क्षुरप्र लेकर सब शस्त्रों को काटकर शिरोंको भी काटा उससमय वहां अनेक शिर पृथ्वीपर गिरपड़े तब उस युद्ध करनेवाले अर्जुन ने घोड़े हाथी और रथोंसमेत उन शत्रुओं के समूहोंको काटा । १७ । इसके पीछे अन्तरिक्ष में देवताओं ने इन दोनोंकी कीर्ति समेत बाजों से स्तुति करी और आकाशसे सुगन्धित पुष्पोंकी वर्षा होनेलगी । १८ । तब उस आश्चर्य्य को देखकर देवता और मनुष्यों के समक्षमें सब जीवमात्र अचम्भासा करनेलगे फिर उत्तम निश्चय रखनेवाले आपके पुत्र और कर्णने न पीड़ाकरी न आश्चर्य को पाया ।१९। इसकेपीछे मधुरभाषी अश्वत्थामाजी हाथसे हाथ को मलकर आपके पुत्रसे बोले । २० । हे दुर्योधन अब तू प्रसन्नहोकर पांडवों से सन्धिकर लड़नात्यागो और युद्धको धिक्कार है बड़े प्रसन्न ब्रह्माजी के

Karan with twelve arrows. 15. Then desirous of slaying Arjun, hundreds of elephants, cars, horsemen of Shak, Tushar and Camboj attacked him; but he cut off their weapons and heads with his arrows. Heads were seen lying here and there on earth. He slew the enemies and destroyed their horses, elephants and cars in large numbers. The gods in heaven expressed the praises of the two great warriors with the beat of their musical instruments, and showered scented flowers over them. The gods and men were amazed at the sight of their wonderful prowess. But Karan and Arjun stood resolutely. Rubbing his hands, Ashwathama said to Duryodhan in sweet words, "Cease fighting with the Pandavas. Fie on this war in which the gret preceptor, like Brahma himself, and warriors like Bhishm have been

शाम्य पाण्डवरैः विरोधेन धिगस्तु विग्रहम् । हतो गुरुर्ब्रह्मसमो महास्त्रवित्तथैव भीष्मप्रमुखा नरर्षभाः ॥ २१ ॥ अहं त्ववध्यो मम चापि मातुलः प्रशाधि राज्यं सह पाण्डवैश्चिरम् । धनञ्जयः शाम्यति वारितो मया जनार्दनो नैव विरोधमिच्छति ॥ २२ ॥ युधिष्ठिरो भूतहिते सदा रतो वृकोदरस्तद्वशगस्तथा यमौ । त्वया तु पार्थैश्च कृते च संविदे प्रजाः शिवं प्राप्नुयुरिच्छया तव ॥ २३ ॥ व्रजन्तु शेषाः स्वपुराणि पार्थिवा निवृत्तवैरास्तु भवन्तु सैनिकाः । न चेद्वचः श्रोष्यसि मे नराधिप ध्रुवं प्रतप्तासि हतोऽरिभिर्युधि ॥ २४ ॥ इदञ्च दृष्टं जगता सह त्वया कृतं यदेकेन किरीटमालिना । यथा न कुर्याद्बलभिन्न चान्तको न च प्रचेता भगवान्न यक्षराट् ॥ २५ ॥ अतोऽपि भूयांश्च गुणैर्धनञ्जयो न चातिवर्तिष्यति मे वचोऽखिलम् । तवानुयात्रञ्च सदा करिष्यति प्रसीद राजन् जगतः शिवाय वै ॥ २६ ॥ ममापि मानः परमः सदा त्वयि

समान गुरुजी और वैसेही भीष्म सरीखे प्रतापी वीर मारेगये । २१ । मैं और मेरामामाँ चिरंजीवीहैं पाण्डवोंसमेततुम बहुतकालतक राज्यकरो मुझसेनिषेध किया हुआ अर्जुन सन्धिको करता है और श्रीकृष्णजीभी शत्रुताको नहीं चाहतेहैं ।२२। युधिष्ठिर सदैव जीवधारियों के मनोरथ में प्रवृत्त है और इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेव भी मेरे स्वाधीन हैं तेरी इच्छा से पाण्डवों से और तुमसे सन्धि होनेपर प्रजालोगों का कल्याण होगा और सुखको पावेंगे बाकी बचेहुये पार्थवलोग अपने २ पुरोंको जायँ और सेनाके मनुष्यभी युद्ध करना छोड़ें हे राजन् जो मेरेवचनको नहीं सुनोगे तो निश्चय जानोकि अवश्य तुम शत्रुओं से घायल और पीड़ित होकर दुःखोंको पावोगे । २४ । तेरेसाथ सब जगत् ने देखा जो अकेले अर्जुन ने किया ऐसा कर्म न यमराज न इन्द्र न भगवान ब्रह्मा और यक्षोंका राजा कुबेरभी नहीं करसक्ताहै । २५ । अर्जुन अपने गुणोंसे इन सबसेभी अधिकहै परन्तु वह मेरे किसी वचनको भी उल्लंघन नहीं करेगा अर्थात् मेरे कहनेको अवश्य करेगा और सदैव तेरे पीछे चलेगा हे राजेन्द्रतुम प्रसन्नहोकर शांतता में युक्तहोजावो तुममें मेरासदैव बड़ामानहै इसी हेतुसेंमें बड़ी शुभचिन्तकता

slain. 21. I and my uncle are yet alive. You may rule the land for many days conjointly with the Pandavas. Forbidden by me Arjun shall fight no more and Shri Krishn too, does not like bloodished. Yudhishthir is always kind to living beings and Bhim, Nakul and Sahadev obey me. All men will be happy on your consenting to make peace with the Pandavas. Let the rest of the allies go back to their respective homes and the armies cease fighting. You will fall into great trouble and will recieve wounds, if you donot mind me. You and all the world have seen what Arjun alone did. Even, Indra, Brahma and Kuver cannot do such things. 25. Arjun is superior to them but he will do my bidding and follow you, if you make peace

भौर् ध्वजान् सङ्ग्रामान् सम्लांश्च धनञ्जयः शरैः । समं प्रचिच्छेदपराभिमन्त्र
त ऽच्छरोत्तमैर्द्वादशभिश्च सूतजम् ॥ १५ ॥ अथाश्वधारैस्त्वरितैः शतं रथाः शतं गजा
इचार्जुनमाततायिनः । शकास्तुखारा यवनाश्च सादिनः सहैव काम्बोजवरैर्जिघांसवः ॥ १६ ॥ वरायुधान् पाणिगतैः शरैः सह क्षुरैर्निकृन्तंस्त्वरितः शिरांसि च ।
हयांश्च नागांश्च रथांश्च युध्यतो धनञ्जयः शत्रुगतान् क्षितौ क्षिणोत् ॥ १७ ॥ ततोऽन्त
रिक्षे सुरतूर्यनिस्वनाः ससाधुवादा हृषितैः समीरिताः । न पेतुरप्युत्तमपुष्पवृष्टय
सुगन्धिगन्धाः पवनेरिताः शिवाः॥१८॥तदद्भुतं देवमनुष्यसाक्षिकं समीक्ष्य भूतानि विसि
स्मियुर्नृप । तवात्मजः सूतसुतश्च न व्यथां न विस्मयं जग्मतुरेक निश्चयौ ॥ १९ ॥
अथाब्रवीद्द्रोणसुतस्तवात्मजं करं करेण प्रतिपीड्य सान्त्वयन् ॥ २० ॥ प्रसीद दुर्योधन

तब अर्जुनने उनके धनुष, तूणीर, ध्वजा, घोड़े, रथ और सारथियों समेत चारों ओरसे इन शत्रुओंको मथनकरके शीघ्रही उत्तम बारहबाणों से कर्णको घायल किया। १५ । इनके पीछे शीघ्रता करनेवाले मारने के अभिलाषी लोग सम्मुख दौड़े और अर्ज्जुनके मारने के उत्सुक सौ रथ सौ हाथी और अश्व सवार शक, तुषार, यवन, कांबोजदेशियों समेत इन सबों ने हाथों में क्षुरम लेकर सब शत्रों को काटकर शिरोंको भी काटा उनसमय वहां अनेक शिर पृथ्वीपर गिरपड़े तब उस युद्ध करनेवाले अर्जुन ने घोड़े हाथी और रथोंसमेत उन शत्रुओं के समूहोंको काटा । १७ । इसके पीछे अन्तरिक्ष में देवताओं ने इन दोनोंकी कीर्ति समेत बाजों से स्तुति करी और आकाशसे सुगन्धित पुष्पोंकी वर्षा होनेलगी । १८ । तब उस आश्चर्य्य को देखकर देवता और मनुष्यों के समक्षमें सब जीवमात्र प्रशंसा करनेलगे फिर उत्तम निश्चय रखनेवाले आपके पुत्र और कर्णने न पीड़ाकरी न आश्चर्य को पाया ।१९। इसके पीछे मधुरभाषी अश्वत्थामाजी हाथसे हाथ को मलकर आपके पुत्रसे बोले । २० । हे दुर्योधन अब तू प्रसन्नहोकर पांडवों से सन्धिकर लड़नात्यागो और युद्धको धिक्कार हो बड़े प्रसन्न महाजी के

Karan with twelve arrows. 15. Then desirous of slaying Arjun, hundreds of elephants, cars, horsemen of Shak, Tushar and Camboj attacked him; but he cut off their weapons and heads with his arrows. Heads were seen lying here and there on earth. He slew the enemies and destroyed their horses, elephants and cars in large numbers. The gods in heaven expressed the praises of the two great warriors with the beat of their musical instruments, and showered scented flowers over them. The gods and men were amazed at the sight of their wonderful prowess. But Karan and Arjun stood resolutely. Rubbing his hands, Ashwathama said to Duryodhan in sweet words, "Cease fighting with the Pandavas. Fie on this war in which the great preceptor, like Brahma himself, and warriors like Bhisham have been

शस्त्र पाण्डवरं विहोधेन विपत्तु विप्रहम । हतो गुरुर्ब्रह्मसमो महास्त्रवित्तथैव भीष्मप्रमुखा नरर्षभाः ॥ २१ ॥ अहं त्ववध्यो मम चापि मातुलः प्रशाधि राज्यं सह पाण्डवैश्चिरम् । धनञ्जयः स्थास्यति वारितो मया जनार्दनो नैव विरोधमिच्छति ॥ २२ ॥ युधिष्ठिरो भूतहिते सदा रतो वृकोदरस्तद्वशगस्तथा यमौ । त्वया तु पार्थेन कृते च संविदे प्रजाः शिवं प्राप्नुयुरिच्छया तव ॥ २३ ॥ व्रजन्तु शेषाः स्वपुराणि पार्थिवा निवृत्तवैरास्तु भवन्तु सैनिकाः । न चेद्वचः श्रोष्यसि मे नराधिप ध्रुवं प्रतप्तासि हतोऽरिभिर्युधि ॥ २४ ॥ इदं च दृष्टं जगता सह त्वया कृतं यदेकेन किरीटमालिना । यथा न कुर्याद्बलभिन्न चान्तको न च प्रचेता भगवान्न यक्षराट् ॥ २५ ॥ अतोऽपि भूयांश्च गुणैर्धनञ्जयो न चातिवर्तिष्यति मे वचोऽखिलम् । तथानुयास्यत्यपि च सदा करिष्यति प्रसीद राजन् जगतः शिवाय वै ॥ २६ ॥ ममापि मानः परमः सदा त्वयि

समान गुरूजी और वैसेही भीष्म सरीखे प्रतापी वीर मारेगये । २१ । मैं और मेरामामा चिरंजीवी हैं पाण्डवोंसमेत तुम बहुत कालतक राज्यकरो मुझसेनिषेध किया हुआ अर्जुन सन्धिको करता है और श्रीकृष्णजीभी शत्रुताको नहीं चाहतेहैं ।२२। युधिष्ठिर सदैव जीवधारियों के मनोरथ में प्रवृत्त है और इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेव भी मेरे स्वाधीन हैं तेरी इच्छा से पाण्डवों से और तुमसे सन्धि होनेपर प्रजालोगों का कल्याण होगा और सुखको पावेंगे बाकी बचेहुये राजलोग अपने २ पुरोंको जायँ और सेनाके मनुष्यभी युद्ध करना छोड़ें हे राजन् जो मेरेवचनको नहीं सुनोगे तो निश्चय जानोकि अवश्य तुम शत्रुओं से घायल और पीड़ित होकर दुःखोंको पावोगे । २४ । तेरेसाथ सब जगत् ने देखा जो अकेले अर्जुन ने किया ऐसा कर्म न यमराज न इन्द्र न भगवान् ब्रह्मा और यक्षोंका राजा कुबेरभी नहीं करसक्ताहै । २५ । अर्जुन अपने गुणोंसे इन सबसेभी अधिकहै परन्तु वह मेरे किसी वचनको भी उल्लंघन नहीं करेगा अर्थात् मेरे कहनेको अवश्य करेगा और सदैव तेरे पीछे चलेगा हे राजेन्द्रतुम प्रसन्नहोकर शांतता में युक्तहोजावो तुममें मेरासदैव बड़ामानहै इसी हेतुसे मैं बड़ी शुभचिन्तकता

slain. 21. I and my uncle are yet alive. You may rule the land for many days conjointly with the Pandavas. Forbidden by me Arjun shall fight no more and Shri Krishn too, does not like bloodshed. Yudhishthir is always kind to living beings and Bhim, Nakul and Sahadev obey me. All men will be happy on your consenting to make peace with the Pandavas. Let the rest of the allies go back to their respective homes and the armies cease fighting. You will fall into great trouble and will recieve wounds, if you donot mind me. You and all the world have seen what Arjun alone did. Even, Indra, Brahma and Kuver cannot do such things. 25. Arjun is superior to them but he will do my bidding and follow you, if you make peace

प्रवीम्यतस्त्वां परमाच्च मे हात् । निवारयिष्याम्यथ कर्णमप्यहं यदा भवान् सप्रणयो भविष्यति ॥ २७ । वदन्ति मित्रं सहजं विचक्षणास्तथैव साम्ना च धनेन चार्जितम् । प्रतापतश्चोपनतञ्चतुर्विधं तदस्ति सर्वं तव पाण्डवेषु च ॥ २८ ॥ निसर्गतस्ते तव वीर बान्धवाः पुनश्च साम्ना समवाप्नुहि स्थिरम् । त्वयि प्रसन्ने यदि मित्रतामियुर्ध्रुवं नरेन्द्रेन्द्र तथा त्वमाचर ॥ २९ ॥ स एवमुक्तः सुहृदा वचो हितं विचिन्त्य निश्वस्य च दुर्मनाब्रवीत् । यथा भवानाह सखे तथैव तन्ममापि विज्ञापयतो वचः शृणु ॥ ३० ॥ निहत्य दुःशासनमुक्तवान् वचः प्रसह्य शार्दूलवत्व दुर्मतिः । वृकोदरस्तद्धृदये मम स्थितं न तत् परोक्ष भवतः कुतः शमः ॥ ३१ ॥ न चापि कर्ण प्रसहेद्रणेऽर्जुनो महागिरिं मेरुमिवोग्रमारुतः । न चैव वश्यन्ति पृथात्मजा मयि प्रसह्य वैरं, बहुशो विचिन्त्य

से अर्थात् तेरे भलेके लिये तुझसे कहताहूं जबआप मृदुहोंगे तबमैं कर्णकोभी निषेध करूंगा । २७ । पण्डित लोग साथ उत्पन्न होनेवाले को मित्र कहतेहैं इसीप्रकार प्रीति और धनके द्वारा प्राप्त होनेवाला और अपने प्रतापसे नम्रीभूत होनेवालेको मित्र कहते हैं यह चार प्रकार की मित्रताहै वहतेरी चारोंप्रकारकी मित्रतापाण्डवों में है । २८ । हे प्रभु तेरी उत्पत्ति से तो तेरे बांधवहैं प्रीति समेत उनको प्राप्तकरो और तेरी प्रसन्नता से अर्थात् आधाराज्य देने से जो मित्रताचाहें उस दशामें तेरे कारण से जगत्का बड़ाहित होगा । २९ । उस शुभचिन्तक के ऐसे हितकारी वचनों को सुनकर वह दुःखी चित्त दुर्योधन बहुत शोचसे श्वासों को लेकरबोला हे मित्र जैसा आपने कहा वह सब इसीप्रकार है परन्तु मुझजतानेवाले के भी वचनों को सुनो कि । ३० । इस दुर्बुद्धी भीमसेन ने शार्दूलके समान अपना हठकरके दुश्शासनको मारकर जो वचनकहा है वह मेरे हृदय में नियत है यह सब आपके समक्ष में ही हुआ है कैसे शान्ती होसक्ती है । ३१ । अर्जुनभी युद्धमें कर्णको ऐसे नहीं सहसकेगा जैसे कि कठोर पवन मेरुनाम पर्व्वतको नहीं सहसक्ता है कुन्ती के

with the Pandavas, I have always been respectful to you. Wishing you well, I say this to you that if you soften your heart, I shall turn Karan too from fighting. Wise men have classified friends into four sorts: those who are born together; those who are acquired by love or wealth; and those who obey your superior authority. The Pandavas are your friends in all these respects. They are your kinsmen. Win them by love and please them by giving them half the kingdom. You will thus do good to all the world." Hearing the words of his well-wisher, Duryodhan, with a distressed mind, heaving deep sighs, said, "It is true what you say, friend; but hear me.30. "Bhim, like a tiger slew Dushasan and said harsh words which rankle in my breast. You have seen all; how is peace possible? Arjun cannot withstand

॥ ३२ ॥ न चापि कर्ण गुरुपुत्र संयुगादुपारमेत्यर्हसि वक्तुमच्युत । श्रमेण युक्तो मह ताथ फाल्गुनस्तमेष कर्णः प्रसभं हनिष्यति ॥ ३३ ॥ तमेवमुक्त्वाऽप्यनुनीय चासकृत् तवात्मजः स्वाननुशास्ति सैनिकान् । विनिघ्नताभिद्रवताहितानिमान् सबाणहस्ताः किमु जोषमासत ॥ ३४ ॥

इति कर्णपर्वणि. अश्वत्थामा वाक्ये अष्टाशीतोध्यायः ८८ ॥

सञ्जय उवाच । तौ शंख. भेरी निनदे समृद्धे समीयतुः श्वेतहयौ नराग्र्यौ । वैकर्त्तनः सूतपुत्रोऽर्जुनश्च दुर्मन्त्रिते तव पुत्रस्य राजन् ॥ १ ॥ यथा गजौ हैमवतौ प्रभिन्नौ प्रवृद्धदन्ताविव वासितार्थे । तथा समाजग्मतुरुग्रवेगौ धनञ्जयश्चाधिरथिश्च

पुत्र हठकर के और बहुधा शत्रुताको शोचकर मेरा विश्वासनहीं करेंगे । ३२ । हे गुरुजी के पुत्र तुम होकर इसबातको अजेय कर्ण से कभी न कहिये कि तुम युद्ध को त्यागदो अब अर्जुन बहुत थकावटसे युक्त है इसी से यह कर्ण बड़े हठसे उस को मारेगा । ३३ । आपके पुत्रने उस से ऐसाकहकर और वारंवार समझाकर अपने सेनाके लोगोंको आज्ञादी कि तुम हाथों में बाणों को लेलेकर मेरे शत्रुओं के सम्मुख जावो क्या मौन होकर नियतहो । ३४ ।

अध्याय ८९ ॥

संजय बोले कि हे राजन् आपके पुत्रके दुर्मन्त्रित होने वा शंख और भेरी के शब्दों की अधिकतासे श्वेत घोड़े रखनेवाला नरोत्तम अर्जुन और सूर्यका पुत्र कर्ण दोनों ऐसे सम्मुख हुये जैसे कि मदझाड़ने वाले दीर्घदन्ती हिमालय पर्व्वतके

Karan in battle as the furious wind cannot withstand Meru. The sons of Kunti, remembering my long enmity with them, will not trust me. Never ask invincible Karan to leave fighting. Arjun is now much tired and Karan will easily slay him." Having said this to him, your son ordered his warriors to attack the enemy again and again, with arrows and not to stay idle." 34.

CHAPTER LXXXIX

Sanjaya said, "Through the evil policy of your son, when conchs and drums were sounding their loudest, Arjun and Karan came face to face like two mad elephants of the Himalayas, with large

चक्रमीरणाम्बरायुधे । चकम्पतुर्ध्वजिमनुत्तम विस्मयाद्विपद्गताश्चार्जुनकर्णसंयुगे ॥ ८ ॥ भुजाः स वस्त्राङ्गुलयः समुच्छ्रिताः ससिंहनादैर्हृषितैर्दिदृक्षुभिः । यदर्जुनं मत्तमिव द्विपो द्विपं समभ्ययादाधिरथिर्जिघांसया ॥ ९ ॥ उदक्रोशन् सोमकास्तत्र पार्थं त्वरस्व याह्यर्जुन भिन्धि कर्णम् । छिन्ध्यस्य मूर्धानमलं चिरेण श्रद्धाञ्च राज्याद्धृतराष्ट्रसूनोः ॥ १० ॥ तथास्माकं बहवस्तत्र योधाः कर्णं तदा याहि याहीत्यवोचन् । जह्यर्जुनं कर्ण शरैः सुतीक्ष्णैः पुनर्वनं यान्तु चिराय पार्थाः ॥ ११ ॥ ततः कर्णः प्रथमं तत्र पार्थं महेषुभिर्दशभिः प्रत्यविध्यत् । तमर्जुनः प्रत्यविध्यच्छिताग्रैः कक्षान्तरे दशभिः संप्रहस्य ॥ १२ ॥ परस्परं तौ विशिखैः सुपुङ्खैस्ततक्षतुः सूतपुत्रोऽर्जुनश्च । परस्परस्यान्तरेप्सू विमर्दे सुभीममभ्यापततुश्च हृष्टौ ॥ १३ ॥ ततोऽर्जुनः प्रामृजदुग्रधन्वा भुजावुभौ गाण्डिवं चाप्युमृज्य । नाराचनालीकवराहकर्णान् क्षुरांस्तथा साञ्जलिकार्धचन्द्रान् ॥ १४ ॥

हाथी पति घोड़े रथ और चित्रविचित्र कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रोंकी धारण करने वाली वह अपूर्व रूपवाली दोनों विस्मित सेना कंपायमान हुई उस अर्जुन और कर्णके युद्धमें वस्त्र और अँगुलियों से युक्त ऊंची २ भुजा आकाश में वर्त्तमान हुई मतवाले हाथीके समान प्रसन्नचित्त अर्जुन तमाशा देखने वालों के सिंहनादों समेत मारनेकी इच्छासे कर्णके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है । ९ । वहां आगे चलने वाले सोमक लोग अर्जुन को पुकारे कि हे अर्जुन कर्ण को छेदकर इसके मस्तक को काटो और धृतराष्ट्र के पुत्रकी श्रद्धाको राज्य से पृथक्करो इसमें विलम्ब मतकरो । १० । इसी प्रकार हमारेभी बहुत से शूरवीरों ने कर्णको प्रेरणाकरी कि चलो२ हे कर्ण अत्यंत तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को मारो और पांडव फिर बहुत कालके लिये वनको जायँ । ११ । इसके पीछे प्रथम तो कर्ण ने उत्तम दशबाणोंसे अर्जुन को छेदा और अर्जुन नेहँसकरतीक्ष्ण दशबाणों से कर्णको कुक्षमें वेधा । १२ । फिर उन दोनों कर्ण और अर्जुन ने सुन्दर पुंखवाले बाणों से परस्पर घायल किया और बड़ी प्रसन्नता से एकने दूसरे को छेदा और भयकारी रूपों से सम्मुखगये । १३ । इसके पीछे उग्र धनुषधारी अर्जुन ने दोनों भुजाओं से गांडीव धनुषको ठीक करके नाराच, नालीक, वाराहकर्ण, क्षुरप, आंजुलिक, अर्द्धचन्द्र इन बाणों को छोड़ा

elephant. The Somaks cried out, "Go Arjun. Pierce Karan and strike off his head, making Duryodhan hopeless of getting the kingdom. Lose no time." 10. Similarly, our warriors urged Karan, saying. "Go, go, slay Arjun with sharp arrows and send the Pandavas again into a long exile." Then Karan pierced Arjun with ten sharp arrows and the latter pierced the former with the same number. Both Arjun and Karan wounded each other with arrows having beautiful feathers. Then setting Gandiv right with both hands, Arjun discharged various sorts of arrows which entered Kar

॥ २८ ॥ पाञ्चालानां प्रवरांश्चापि योधान् क्रोधाविष्टः सूतपुत्रस्त्वरन्वै । बाणैर्विव्याधा
हवे सुप्रयुक्तैः प्रहस्य कृष्णौ तु नरप्रवीरः ॥ २९ ॥ ततः पाञ्चालाः सोमकाश्चापि
राजन् कर्णेनाजौ पीड्यमानाः शरौघैः । क्रोधाविष्टा विविधुस्ते समन्तात् तीक्ष्णैर्बाणैः
सूतपुत्रं समेताः ॥ ३० ॥ तांस्तांस्तैस्तैः सन्निकृत्याशु बाणान् पाञ्चालानां रथनागाश्व
संघान् । अभ्यर्द्दयद्बाणगणैः प्रसह्य विक्षोभयन् समरे सूतपुत्रः ॥ ३१ ॥ ते भिन्नदेहा
व्यसवो निपेतुः कर्णेषुभिर्भूमितले स्तनन्तः । क्रुद्धेन सिंहेन यथैव नागा महावने भीम
बलेन तद्वत ॥ ३२ ॥ पाञ्चालानां प्रवरान् सन्निहत्य संस्पर्द्धमानान् बलिनो योध
मुख्यान् । ततः स राजन् विरराज कर्णः शरान् सृजन्मेघ इवाम्बुधाराः ॥ ३३ ॥ कर्णस्य
दृष्ट्वा तु जयं त्वदीयास्तलान्निजघ्नुः सिंहनादांश्च चक्रुः । सर्वे ह्यमन्यन्त वशे कृत
तौ कर्णेन कृष्णाविति कौरवेन्द्र ॥ ३५ ॥ तथाविधं प्रेक्ष्य महारथस्य कर्णस्य वीर्यन्तु
परैरसह्यम् । दृष्ट्वा च कर्णेन धनञ्जयस्य संग्राममध्ये विहतं तदस्त्रम् ॥ ३५ ॥ ततस्तु

कर्मकिया । २८ । इसको करके फिर क्रोधयुक्त सूतके पुत्र कर्ण ने युद्धमें पांचालों के अत्यन्त उत्तम शूरवीरोंको रोककर अच्छी रीतिसेछोड़ेहुये तीक्ष्णधार सुनहरी पुंखवाले वाणोंसे पीड़ामान किया । २९ । हेराजन युद्धभूमिमें कर्णकेवाणसमूहों से पीड़ित पांचाल और सोमकोंनेभी हठकरकेप्रसन्नतासे कर्णको बाणोंसेछेदकर पीड़ामान किया । ३० । फिर कर्णने बाणोंसे पांचालों के उन रथ हाथी और घोड़ों के समूहों को मारा और मारे बाणों केसबको पीड़ित करडाला । ३१ । वह कर्ण के बाणोंसे निर्जीव होकर शब्दों को करतेहुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त भयानक सिंह से हाथीयों के समूह गिरपड़ते हैं । ३२ । हे राजन इसके पीछे वह बड़ा साहसी और बड़े उत्साहका करनेवाला कर्ण अत्यन्त उत्तम२ शूरवीरों को मार कर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें तीक्ष्ण किरणों का रखने वाला सूर्य होताहै । ३३ । हे कौरवेन्द्र फिर आपके शूरवीरों ने कर्ण की विजय को मानकर बड़ी प्रसन्नता मनाकर सिंहनादों को किया और सबने कर्णके हाथ से श्रीकृष्ण और अर्जुन को अति घायल माना । ३४ । फिर वह महारथी कर्ण के पराक्रम को दूसरोंसे असह्य जानकर और इसरीतिसे अर्जुनके उस अस्त्रको निष्फल हुआ देखकर । ३५ । क्रोधसे रक्तनेत्र असह्य कोपयुक्त वायुकेपुत्र भीमसेन श्वासों

the Panchals. The Panchals and Somaks, wounded by Karan's arrows pierced him with arrows. 30. They pierced with their arrows, his cars, elephants and horses, which fell down on earth with cries, like elephants falling down in a forest before an angry lion. Then mighty Karan, having slain good warriors, looked glorious like the Sun with his rays. Seeing that Karan was victorious, your warriors roared like lions and thought that he had mortally wounded Krishn and Arjun. Seeing Karan's *prowess unbearable* by others and *Arjun's* weapon made useless, Bhim, with eyes red in anger, rubbing his hands

मर्षी क्रोधसंदीप्तनेत्रो धाताात्मजः पाणिना पाणिमाच्छत । भीमोग्रवांद्रजनं सत्यसन्ध
ममर्षितो निश्वसन् जातमन्युः ॥ ३६ ॥ कथन्नु पापोयपेतधर्मः सूतात्मजः समत्य
प्रशाख । पाञ्चालानां योधमुख्याननेकान्निअजिनवांस्तव जिष्णा समक्षम् ॥ ३७ ॥ पूर्वं
देवैरजितं कालकेयैः साक्षात् स्थाणोर्बाहुसंस्पर्शमेत्य । कथं नु त्वां सूतपुत्रः किरीटि
न्प्रथेषुभिर्दशभिः प्रागविध्यत् ॥ ३८ ॥ त्वया क्षिप्तान्प्रसहद्बाणसंघानाश्चर्यमेतत् प्रति
भाति मेद्य कृष्णापरिक्लेशमनुस्मर त्वं यच्चाब्रवीत् षण्ढतिलानिति स्म ॥ ३९ ॥ वाक्यः
सुतीक्ष्णान्यिमिमनोदोस्राः सूनात्मजोयं गतभीर्दुरात्मा । अनुस्मृत्य तत् सर्वमिहाद्य पार्थ
जह्याशु कर्णं युधि सव्यसाचिन् ॥ ४० ॥ कस्मादुपेक्षां कुरुषे किरीटिन्नुपेक्षितुं नाय
मिहाद्य कालः । यया धृत्या सर्वभूतान्यजैषीर्ग्रासं ददद्दहनाय खाण्डवे त्वम् । तया
धृत्या सूतपुत्रं जहि त्वमहञ्चैनं गदया पातयिष्ये ॥ ४१ ॥ अथाब्रवीद्वासुदेवोपि

को लेताहुआ हाथसे हाथको मलकर सत्यसंकल्प अर्जुनसे बोला । ३६ । अवयुद्धमें
तेरे और विष्णुजी के सम्मुख किस प्रकारसे उस पापी अधर्मी सूतके पुत्र कर्णने
प्रबल होकर पांचालोंके उत्तम शूरवीरोंको मारा । ३७ । हे अर्जुन साक्षात् शिवजी
की भुजा के स्पर्श को पाकर कालकेय नाम असुरों से अजेय रूप तुझको इसकर्ण
ने प्रथम दशबाणोंसे कैसे छेदा । ३८ । और तेरे चलायेहुये बाणसमूहोंको सहगया
इससे यह कर्ण मुझको अपूर्व दिखाई देताहै तुम द्रौपदी के उन दुःखोंको स्मरण
करो कि इसने कैसे २ वचन कहेथे । ३९ । हे अर्जुन इसपाप बुद्धी दुर्मति दुष्टहृदय
सूतपुत्र ने रूखे २ अत्यन्त तीव्रवचन कहे अबतुम उनसब वचनोंको स्मरण करके
उसपापी कर्णको युद्धमें शीघ्रमारो । ४० । हे अर्जुन उसको कैसे छोड़ रक्खा है
अब यहां यह समय तेरे त्याग करने का नहीं है खांडव वनमें जिस धैर्यतासे तैंने
सबजीवों को विजय किया उसी धैर्यतासे इस दुर्मति सूतपुत्रको मारो मैं उसको
गदासे मारूंगा उसके पीछे वासुदेवजी भी बाणों से व्यथित देखकर अर्जुनसे बोले

and heaving sighs, said to Arjun, "How is it that the despeiable son of Sut was able to slay the best warriors of the Panchals in the presence of you and Vishnu? 37. Having felt a touch of Shiva's arms and slain the Kalkeya asurs, how was it that you received ten arrow wounds from Karan? He bore your arrows, this to me is wonderful. Remember the wrongs done to Draupadi and Karan's harsh words. Why do you make delay in slaying him? 40. Why have you spared his life? He should no longer be spared. Slay him with the fortitude like that shown by you in slaying all beings at the Khandav forest. I shall slay him with my mace." Then Vasudev said to Arjun "Karan has made your weapons useless by his own. Why are you lazy, Arjun! Why do you not wake up? See, the Kauravas are roaring gleefully. All the people believe that Karan's weapons are

पार्थ दृष्ट्वा रथेषूद्ध प्रतिहन्यमानान ।४२ ॥ अमर्षितस्त सर्वथा तेन कर्णो ह्यस्त्रैरस्त्रं क्षिपिद् भोः किरीटिन्। स वीर किं मुह्यसि नावधत्से नदन्त्येते कुरवः सम्प्रहृष्टाः ॥ ४३ ॥ कर्णं पुरस्कृत्य विदुर्हि सर्वे त्वयास्त्रमस्त्रैर्विनिपात्यमानम् । यथा धृत्या निहतं तामसास्त्रं युगे युगे राक्षसाश्चापि घोराः । दम्भोद्भवाश्चासुराश्चाहवेषु तथा धृत्या जहि कर्णं त्वमद्य ॥ ४४ । अनेन चास्य क्षुरनेमिनाद्य संछिन्धि मूर्धानमरेः प्रसह्य । विसृष्टेन सुदर्शनेन वज्रेण शक्रो नमुचेरिवारे ॥ ४५ ॥ किरातरूपी भगवान् यथा च त्वया महात्मा परितोषितोऽभूत् । तां त्वं धृतिं वीर पुनर्गृहीत्वा सहानुबन्धं जहि सूत पुत्रम् । ततो महीं सागरमेखलां त्वं सपत्तनां ग्रामवतीं समृद्धाम् ॥ ४७ । प्रयच्छ राज्ञे निहतारिसंघां यशश्च पार्थातुलमाप्नुहि त्वम् । स एवमुक्तोऽतिबलो महात्मा चकार बुद्धिं हि वधाय सौतेः ॥ ४८ ॥ स चोदितो भीमजनार्दनाभ्यां स्मृत्वा तथात्मान-

। ४२। कि अबइस कर्णने तेरे शस्त्रको अपने शस्त्रों से सबप्रकारसे मर्दन कियाहै हे अर्जुन यहक्या बातहै हे वीर तुम क्यों मोहित होरहेहो क्योंनहीं सचेत होतेहो देखो यह कौरव लोग अत्यन्त प्रसन्न होकर गर्जते हैं । ४३ । सबने कर्णको आगे करके तेरेअस्त्रों से गिरायाहुआ जानाहै जिस धैर्य्यतासे तैंने तामस अस्त्रका दूरकिया और युग २ में भी दंभोद्भवनाम घोर राक्षसों को युद्धों में मारा उसी धैर्यसे अब तुमकर्णको मारो । ४४ । अब हठकरके मेरे दियेहुये नेमियोंपर छुरेवाले सुदर्शन चक्रसे इसशत्रुके शिरको ऐसेकाटो जैसे कि इन्द्रने अपने शत्रु नमुचि के शिरको काटा था । ४५ । किरातरूपी भगवान् शिवजी भी तेरे धैर्यसे प्रसन्नहुये हेवीर तुम फिर उसी धैर्य्य को धारण करके कर्णको उसके उसके सब साथियों समेत मारो । ४६ । इसके पीछे तुम सागर रूप मेखला रखनेवाली नगर ग्रामों से युक्त और धन रत्नों से पूर्ण उस पृथ्वी को जिसमें कि शत्रुओंके समूह मारेगये हैं अपने राजा युधिष्ठिरके सुपुर्दकरो । ४७ । यहवचन सुनकर उस बुद्धिमान महा पराक्रमी महात्मा अर्जुन ने कर्णके मारने के निमित्त बुद्धिकरी । ४८ । भीमसेन और

more powerful than yours. Slay him with the fortitude with which you have, ages after ages, checked the weapons of darkness and slain proud and dreadful rakshases. Slay him with my razor-edged discus as Indra had done Namuchi. 45. You gratified Shiv, disguised as a hunter, with your patience. Slay Karan and his followers with the same patience and then you will be able to present the sea-girt land, with her cities, villages and wealth, to Yudhishthir." At this, wise and valiant Arjun resolved to slay Karan. Urged by Shri Krishn and Bhim, Arjun meditated within his mind, and knowing the object of his being sent by Indra into the world, said to Keshav, "I produce this weapon to slay Karan and to make the world happy. You as well as Brahma, Shiv, gods and the Veda knowing rishis give me

मवेक्ष्य सर्वम् । इदात्मनश्चा गमने विदित्वा प्रयोजनं केशवमित्युवाच ॥ ४९ ॥ प्रादुष्करोम्येष महास्त्रमुग्रं शिवाय लोकस्य वधाय सौतेः । तन्मेऽनुजानातु भवान् सुराश्च ब्रह्मा भवो ब्रह्म विदश्च सर्वे ॥ ५० ॥ इत्युच्य देवं स तु सव्यसाची नमस्कृत्वा ब्रह्मणे सोऽमितात्मा । तदुत्तमं ब्राह्ममसह्यमस्त्रं प्रादुश्चक्रे मनसा यद्विधेयम् ॥ ५१ ॥ तदस्य हत्वा विरराज कर्णो मुक्त्वा शरान्मेघ इवाम्बु धाराः । समीक्ष्य कर्णेन किरीटिनस्तु तथाजिमध्ये विहितं तदस्त्रम् ॥ ५२ ॥ ततोऽमर्षी बलवान् क्रोधदीप्तो भीमोऽब्रवीदर्जुनं सत्यसन्धम् । ननुत्वाहुर्वेदितारं महास्त्रं ब्राह्मं विधेयं परम जनास्तत् । तस्मादन्यद्योजय सव्यसाचिन्निति स्मोक्तोऽयोजयत् सव्यसाची ॥ ५३ ॥ ततोदिशश्च प्रदिशश्च सर्वाः समावृणोत् सायकैर्भूरितेजाः । गाण्डीवमुक्तैर्भुजगै रिवोग्रै र्दिवाकरांशुप्रतिमैर्ज्वलद्भिः ॥ ५४ ॥ सृष्टास्तु बाणा भरतर्षभेण शतं शतानीव सुवर्णपुङ्खाः ।

श्रीकृष्णजी से प्रेरणा कियेहुये उसअर्जुनने आपको ध्यान करके और सबबातों को विचारकर इसलोकके इन्द्र अपने आनेमें प्रयोजन को जानकर केशवजीसे यह वचन कहा । ४९ । कि हे केशवजी मैं लोकके आनन्द और कर्ण के मारने के निमित्त इस उग्र महाअस्त्रको प्रकट करताहूं सो आप ब्रह्माजी शिवजी देवता और वेदोंके सब जाननेवाले ऋषिलोग मुझको आज्ञादो । ५० । उस महासाहसी अर्जुन ने इसप्रकारसे कहके और ब्राह्मणों को नमस्कारकर के उसउग्र महाअस्त्रको प्रकटकिया जो कि असह्य और चित्त से प्रकट करने के योग्य था । ५१ । जैसे कि बादल शीघ्र जलधाराओं को छोड़ताहै उसप्रकार कर्ण बाणों से इसके उस अस्त्रको दूरकरके शोभायमान हुआ। तब क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने इस रीतिसे युद्धभूमिमें कर्णके हाथसे अर्जुनके उस अस्त्रको दूरकिया हुआ देखकर सत्यसंकल्प अर्जुन से कहा कि निश्चयकरके मनुष्यों ने तुमको बड़ा उत्तम और ब्रह्मास्त्रनाम बड़े अस्त्रका जाननेवाला कहाहै हे अर्ज्जुन इस हेतुसे अतुम दूसरे अस्त्रको चलाओ । ५३ । ऐसे कहेहुये अर्ज्जुन ने अस्त्र का प्रयोगकिया तदनन्तर बड़े तेजस्वी अर्ज्जुन ने गांडीवधनुष और भुजाओं से छोड़हुये भयकारी सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित बाणों से सर्वदिशा और विदिशाओं को ढक दिया

permission to do so. 50. Having said this and bowed down to Brahmans, Arjun produced the great weapon which was unbearable and capable of being produced by the mind. Sending forth his arrows like rain, Karan looked glorious after making Arjun's weapons furtile. Seeing Arjun's weapon cut by Karan, Bhim said to Arjun, "Surely men think you to be the greatest of warriors and possesor of Brarmastra. You should discharge another weapon." At this Arjun dircharged another weapon and filled the directions with his fiery arrows. Thousands of arrows hid Karan's car in a moment like the rays of the Sun at pralaya. Hundreds of spears, darts, axes, discuses and dreadful

प्राच्छादयत् कर्णरथं क्षणेन सुगान्तसूर्यकिरणप्रकाशाः ॥ ५५ ॥ तेनैव धानि चक्राणि नाराच शतानि चैव । निश्चक्रमुर्घोरतराणि योधांस्ततो सुतोपि ॥ ५६ ॥ छिन्नं शिरः कस्यचिदाजिमध्ये पपात योधस्य परस्य भयेन सोप्याशु पपात भूमावन्यः प्रनष्टः पतितं विलोक्य ॥ ५७ ॥ अन्यस्य पाद करवो याधस्य बाहु करिहस्ततुल्यः । अन्यस्य सव्यः सह चर्मणा च पतितो पृथिव्याम् ॥ ५८ ॥ एवं समस्तानपि योधमुख्यान् विध्वंसयामास शरैः शरीरान्तकरैः सुघोरैर्दौर्योधनं सैन्यमशेष मेव ॥ ५९ ॥ वैकर्तनेनापि मध्ये सहस्रशो बाणगणा विसृष्टाः । ते घोषिणः पाण्डवमभ्ययेयुः पर्जन्यमुक्ता वारिधाराः ॥ ६० ॥ स भीमसेनञ्च जनार्दनञ्च किरीटिनञ्चाप्यतुल्यकर्मा । त्रिभिर्त्रिभिर्बलेभिहत्य ननाद घोरं महता स्वरेण ॥ ६१ ॥ स कर्णबाणाभिहतः,

। ५४ । उस भरतर्षभ अर्जुनके छोड़ेहुये सुवर्ण पुंखवाले हजारों बाणोंने में कर्णके रथको ढकदिया वह बाण प्रलयकालके सूर्यकी किरणों के समान । ५५ । इसके पीछे सैकड़ों शूलफरसे चक्र और नाराच भी गये। भयकारी उससे बहुत से शूरवीर चारों ओर से मारेगये । ५६ । युद्धभूमि में किसीका धड़ से कटकर गिरा और कितनेही उन गिरेहुओं को देखकर भयभीत जल्दी से पृथ्वीपर गिरपड़े । ५७ । और किसी शूरवीर की हाथीकी सूंड़के भुजा टूटकर खड्ग समेत पृथ्वी पर गिरपड़ी किसीकी बाईंभुजा क्षुरमसे कटकर ढालसमेत गिरी । ५८ । अर्जुन ने इसरीति के नाश करनेवाले भयकारी बाणोंसे उन सब उत्तम २ शूरवीरों समेत दुर्योधन की सम्पूर्ण सेनाको मारा और घायल किया । ५९ । इसीप्रकार कर्णने भी युद्धभूमि में अपने धनुष से हजारों बाणों को छोड़ा वह शब्दायमान बाण अर्जुन के सम्मुख ऐसेगये जैसे कि पर्जन्य मेघसे छोड़ीहुई जलकी धारा होतीहै।६०।इसके पीछे वहअनुपम प्रभाव और भयानक रूपवाला कर्ण श्रीकृष्ण अर्जुन और भीमसेनको तीन २ बाणोंसे घायल करकेबड़े स्वरसे घोर शब्दको गर्जा । ६१ । फिर अर्जुन ने उस असह्य कर्णके बाणों से

arrows came out and slew the warriors all round. Heads were severed from trunks while others fell down with fear. Arms like the trunks of elephants fell down with swords which they hold. The left arms of others fell down with shields. With his dreadful and fatal arrows Arjun slew the army of Duryodhan. Karan too discharged thousands of arrows which fell down like a torrent of rain. 60. Having wounded Krishn, Arjun and Bhim, with three arrows each, Karan roared a loud roar. Seeing Bhim and Krishn wounded with Karan's arrow, Arjun took up eighteen arrows at once, and hit the standard with one arrow, Shalya with four and Karan with three. Then with ten well-aimed arrows, he slew Sabhapati whose body was decked

तावुत्तमौ सर्वधनुर्धराणां महाबलौ सर्वसपत्नसाही। निजघ्नतुस्ताविहतैन्यमुग्माथ श्योन्यमप्यस्त्रविदौ महास्त्रैः ॥ ६९ ॥ अथोपयातस्त्वरितो दिदृक्षुर्मन्त्रौषधिभ्यां विरुजो विशल्यः। कृतः सुहृद्भिर्भिषजां वरिष्ठैर्युधिष्ठिरस्तत्र सुवर्णवर्मा ॥ ७० ॥ तत्रोपयातं युधि धर्मराजं दृष्ट्वा मुदा सर्वभूतान्यनन्दन्। राहोर्विमुक्तं विमलं समग्रं चान्द्रं यथैवाभ्युदितं तथैव ॥ ७१ ॥ दृष्ट्वा तु मुख्यावथ युध्यमानौ दिदृक्षवः शूरवरावरिघ्नौ। कर्णञ्च पार्थञ्च नियम्य वाहान् खस्था महीस्थाश्च जना वितस्थुः ॥ ७२ ॥ स कार्मुकज्यातलसन्निपातः सुमुक्तबाणस्तुमुलो बभूव। ततोऽस्त्रपार्थोऽन्यमिपुसंघैर्धनञ्जयस्याधिरथिश्च राजन् ॥ ७३ ॥ ततो धनुर्ज्या सहसातिकृष्टा सुघोषमच्छिद्यत पाण्डवस्य तस्मिन् क्षणे सूतपुत्रस्तु पार्थं समाचिनोत् क्षुद्रकाणां शतेन ॥ ७४ ॥ निर्मुक्तसर्पप्रति

धारियों में श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी सब शत्रुओं के पराजय करनेवाले महा अस्त्रज्ञ उन दोनोंने महाअस्त्रोंसे शत्रुकी उग्रसेनाको और एकने दूसरेको घायलकिया॥६९ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला युद्धके देखनेका अभिलाषी वह युधिष्ठिर पासयाग जो कि अत्रिकुलमें उत्पन्न होनेवाली अष्टांग विद्याके आसनपर बैठनेवाले अश्विनीकुमार सुवैद्यों के मन्त्र औषधियों के द्वारा पीड़ा से रहित भालों से पृथक् शुभचिन्तक चिकित्सा करवाले उत्तम पुरुषों से मर्हम पट्टी बांधाहुआ सुवर्ण के कवचको पहिरे हुये था । ७० । इस प्रकार के रूपवाले धर्मराजको युद्धमें समीप आयाहुआ देखकर सब जीवमात्र बड़े प्रसन्न हुये जिस प्रकार राहुसे छूटेहुये निर्मल और पूर्णचन्द्रमा को देखतेहैं उसीप्रकार उदय होनेवाले उन युद्धकर्त्ता उत्तम श्रेष्ठ शत्रुओं के मारनेवाले दोनों पुरुषोत्तमों को देखकर देखने के इच्छावान् आकाश के देवता और पृथ्वी के मनुष्य कर्ण और अर्जुनको देखतेहुये नियतहुये।७२।वहां बाणोंके जालोंसे परस्पर मारनेवाले अर्जुन और कर्णके छोड़ेहुये बाणों से उस धनुष रोदा और प्रत्यंचाका गिरना कठिन हुआ इसके पीछे अच्छी, खिंची हुई अर्जुन के धनुषकी जीवा अकस्मात् शब्द करके टूटी उसी समय सूतके पुत्रने सौ क्षुद्रक बाणोंसे अर्जुनको छेदा । ७४ । और सर्प रूप तेजसे साफ गृध्रपक्षसे जटित बराबर छोड़ेहुये साठ

of war, there came Yudhishthir, whose body was cured of wounds and pain by the application of medicine and aphorisms of good physicians like Ashwinikumars and who wore gold armour over his body covered with ointments and bandages. 70. All the people who saw Yudhishthir the just there were pleased as if he were the full moon rescued from Rahu. Similarly, the gods of heaven and the people of earth stood to see the fight of Karan and Arjun the best of warriors. Striking each other with arrows, their bowstrings made a strange noise. Then Arjun's bowstring snapped with a crash and the son of Sut, finding an opportunity, pierced Arjun with a hundred arrows He pierced Vasudev with sixty arrows like poisonous serpents, well

मेश्च तीक्ष्णैस्तैलप्रधौतैः स्वर्णपत्रवाजैः । वष्ट्या बिभेदाशु च वासु देव मनन्तरं फाल्गुन
मष्टभिश्च । कृष्णं च पार्थञ्च तथा ध्वजंच पार्थानुजान्सोमकान्पातयंश्च ॥ ७५ ॥ प्राच्छा
दयंस्ते निशितैः पृषत्कैर्जीमूतसंघा नभसीव सूर्यम् । आगच्छतस्तान् विशिखैरनेकै
र्व्यष्टम्भयत् सूतपुत्रः कृतास्त्रः ॥ ७६ ॥ तैरस्त्रमस्त्रं विनिहत्य सर्वं जघान तेषां रथवा
जिनागान् । तथा तु सैन्यप्रवरांश्च राजन्नभ्यर्दयन्मार्गणैः सूतपुत्रः ॥ ७७ ॥ ते भिन्नदेहा
व्यसवो निपेतुः कर्णाभिभूमितले स्तनन्तः । क्रुद्धेन सिंहेन यथाश्वयूथा महाबला भीम
बलेन तद्वत् ॥ ७८ ॥ पुनश्च पाञ्चालवरास्तथान्ये तदन्तरे कर्णधनञ्जयाभ्याम । प्रस्कन्दतो
बलिनः साधुमुक्तः कर्णेन बाणैर्निहता प्रसह्य ॥ ७९ ॥ जयन्त मत्वा विपुलं त्वदीयास्त
लान्निजघ्नुः सिंहनादांश्च नेदुः । सर्वे ह्यमन्यन्त वशे कृतौ तौ कर्णेन कृष्णाविति ते
विमर्दे ॥ ८० ॥ ततो धनुर्ज्यामवनाश्य शीघ्रं शरानस्तानाधिपोविधन्य । ससंरम्भः कर्ण

बाणों से शीघ्रताकरके वासुदेवजी को छेदा इसके पीछे फिर आठ बाणों से अर्जुन
को छेदा तदनन्तर सूतपुत्र कर्ण ने हजार बाणों से भीमसेनको मर्मस्थलोंपर छेदा
।७५। और सोमकों को गिरातेहुये उस ने विशिख व पृषत्कनाम बाणोंसे श्रीकृष्ण
अर्जुन की ध्वजा और उनके छोटे भाइयों को बाणोंसे ऐसे ढकादिया जैसे कि
बादलों के समूह सूर्यको ढकदेते हैं । ७६ । फिर उस अस्त्रज्ञ कर्णने उन सबको
विशिखनाम बाणोंसे रोककर अपने अस्त्रों से सब अस्त्रोंको हटाकर उनके रथ घोड़े
और हाथियों कोभी मारा । ७७ । हे राजा इसी रीति से सूतपुत्रने बाणोंसे सेनाके
उत्तम शूरवीरों को पीड़ितकिया फिर कर्ण के बाणों से घायल और मृतकहोकर
शब्दोंको करते हुये पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि बड़े पराक्रमी कुत्तों के समूह
क्रोधभरे बड़े पराक्रमी सिंहसे गिरते हैं । ७८ । फिर पांचालदेशियों के उत्तम लोग
और अन्य शूरवीर इस स्थानपर कर्ण और अर्जुन के लिये चेष्टाकरने वाले उस
पराक्रमी कर्ण के अच्छरीति के छोड़े हुये बाणों से मारेगये । ७९ । और आपके
शूरोंने बड़ी विजयको मानकर तालियां बजाई और बारंवार सिंहनादको किया
उन सबोंने युद्धमें श्रीकृष्ण और अर्जुन को कर्णकी स्वाधीनता में माना । ८० ।

oiled and fitted with Kank feathers. He then wounded Arjun with eight arrows. He hit the Somaks, with Shri Krishn, Arjun, his banner and younger brothers, and hid them with arrows as the clouds hide the Sun. 76. Having checked them and their weapon with his arrows, he slew horses and elephants too. 77. Thus the son of Sut wounded good warriors of the army with his arrows and they fell down on earth with cries like a pack of dogs, falling a prey to an angry lion. Then the warriors of Panchal and other countries, exerting for Karan and Arjun, were slain by Karan's arrows. Your warriors, believing in the victory of Karan, beat their palms, roared like lions and thought that Krishn and Arjun were overpowered by

शरक्षताङ्गो रणे पार्थः कौरवान् प्रत्यगृह्णत् ॥ ८१ ॥ ततोऽस्त्रमस्त्रेणाभ्यहनच्चकार
बाणान्धकारमकरोत् क्षणेन । शल्यञ्च कर्णञ्च कुरूंश्च सर्वान् बाणैर्विव्याध युगपत्
किरीटी ॥ ८२ ॥ न पक्षिणो व्यपतन्नन्तरिक्षे क्षेपीयसास्त्रेण कृतेऽन्धकारे । वायुर्वि
यद्दिव्योऽन्तरिक्षो भूतसंघैर्ववाह दिव्यः सुरभिर्लोकगामी ॥ ८३ ॥ शल्यन्तु पार्थो दशभि
पृषत्कैर्भृशं तनुत्रं प्रहसन्नविध्यत् । ततः कर्णं द्वादशभिः सुमुक्तैर्विद्ध्वा पुनः सप्तभिरभ्य
विध्यत् ॥ ८४ ॥ स पार्थबाणासनवेगमुक्तैर्दृढाहतः पत्रिभिरुग्रवेगैः । विभिन्नगात्रः क्षत
शोणिताङ्गः कर्णो बभौ रुद्र इवात्ततेजुः । प्रक्रीडमानस्य श्मशान मध्ये रौद्रे मुहूर्त
रुधिरार्द्रगात्रः ।८५॥ ततस्त्रिभिस्तं त्रिदशाधिपोपमं शरैर्बिभेदाधिरथिर्धनञ्जयम् । शरांश्च
पञ्च ज्वलितानिवोरगान् प्रवेशयामास जिघांसुरच्युतम् ॥ ८६ ॥ ते वर्म भित्त्वा पुरु
षोत्तमस्य सुवर्णचित्रा न्यपतन् सुमुक्ताः । वेगेन गामाविविशुः सुवेगाः स्नात्वा च

फिर तो कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल शरीरवाले क्रोधयुक्त अर्जुन ने धनुषकी प्रत्यञ्चाको भयङ्कर शीघ्रतासे कर्णके उनबाणों को हटाके कौरवोंको रोका । ८१ । प्रत्यंचा को ढीलाकरके उसको नरमें दबाया और अकस्मात् बाणोंका अन्धकार उत्पन्न किया उससमय बड़े हठसे अर्जुनने बाणों के द्वारा कर्ण शल्य और सब कौरवों को छेदा । ८२ । तब महाअस्त्रसे अन्धकार उत्पन्न होजानेपर अन्तरिक्षमें पक्षीभी नहीं घूमे और आकाशवर्ती जीवों के समूहों से मैलितवायुने दिव्य सुगंधियों को फैलाया । ८३ । फिर हँसतेहुये अर्जुनने दशपृषत्कोंसे शल्यके कवचको छेदा इसकेपीछे अच्छेप्रकारसे छोड़ेहुये बारह बाणोंसे कर्णको छेदकर दुबारेभी सात बाणोंसे छेदा । ८४ । अर्जुनके धनुषसे छूटेहुये महावेगवाले बाणोंसे अत्यन्त घायल विदीर्ण और रुधिरसे भराअंग वह कर्ण जिसके कि बाण फैलरहे थे रुद्रजी केसमान शोभायमानहुआ इसकेपीछे श्मशानभूमिमें रुद्रमुहूर्त्तमें क्रीड़ाकरनेवाले रुधिर से लिप्तशरीर आधिरथी कर्णने उस देवराजके समान रूपवाले अर्जुनको तीनबाणों से छेदा फिर मारनेकी इच्छासे सर्पोंके समान अग्निरूप पांचबाणोंको श्रीकृष्णजी के शरीरमें प्रविष्टकिया । ८५ । वह सुवर्ण जटित अच्छीरीतिसे छोड़ेहुये बाण पुरुषोत्तमजी के कवचको छेदकर गिरपड़े और बड़े वेगसे पृथ्वीमें प्रवेश कराये

Karan. 80; Exceedingly wounded by arrows, Arjun was much enraged and checked Karan's arrows and the Kauravas by his arrows. He produced a darkness by his arrows and pierced Karan, Shalya and the Kauravas. Birds ceased to fly in the air on account of darkness. There was a sweet smell in the air as the denizens of the sky roamed in it. Then Arjun with a smile, pierced the armour of shalya with ten arrows and pierced Karan with twelve and seven arrows. Wounded by Arjun's arrows and bleeding from his body, Karan, looked dreadful like Rudra, He pierced Arjun with three fiery arrows like serpents and wounded Krishn with five. 86. The gold decked arrows,

कर्णाभिमुखाः प्रतीयुः ॥ ८७ ॥ तान् पंच महोल्केद्युतिभिः सुतत्कैस्त्रिधा त्रिभिः कृतांश्च कर्त । धनञ्जयस्ते न्यपतन् पृथिव्यां महाहेयतक्षकपुत्रपक्षाः ॥ ८८ ॥ ततः प्रजज्वाल किरीटमाली क्रोधेन कक्षं प्रदहन्निवाग्निः । तथा विलुब्धाग मर्मर्ध्ये कृष्णं सर्पपमि कर्ण भुजप्रसृष्टैः ॥ ८९ ॥ स कर्णमाकर्णे विकृष्टसृष्टैः शरैः शरीरान्तिकरैर्ज्वलद्भिः । मर्म स्वाविध्यत् स चचाल दुःखाद्व्यातिष्ठत्तावतिमात्रधैर्यात् ॥ ९० ॥

इति कर्णपर्वणि कर्णार्जुन द्वैरथे एकाननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

और पातालगंगा में स्नान करके फिर कर्णसे मुखफेरकर चलेगये । ८७ । इसके पीछे अर्जुन ने उनसर्पों को अच्छीरीति से छोड़ेहुये पन्द्रह भल्लोंसे तीन २ खंड करदिया उनबाणोंसे घायल तक्षकके पुत्रके साथी बड़े सर्प पृथ्वीपर आये । ८८ । फिरतो अर्जुन ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि सूखेवनको जलाताहुआ अग्नि होताहै उस अर्जुन ने कर्णकी भुजा से छोड़ेहुये बाणोंसे इसप्रकार घायल शरीर श्रीकृष्णजी को देखकर कानतक खैंचकर शरीर के नाश करनेवाले अग्निरूप बाणोंसे कर्णका मर्मस्थलों में छेदा वह दुःख से तो कम्पितहुआ परन्तु बड़ी बुद्धिसे धैर्य युक्त होकर नियत रहा ९० ॥

---

well dischargad, having pierced through Krishna's armour fell down on earth and having entered the ground, they bathed themselves in the waters of the Ganges and came back to Karan. Then Arjun, with his well discharged arrows, cut each of them into three. Wounded by those arrows, the companions of Takshak's son came down on earth and Arjun was enraged like the burning fire. Seeing Krishn wounded by Karan's arrows, Arjun pierced, Karan with fiery arrows in the vital parts. He shook with pain but stood resolutely. 90.



सञ्जय उवाच । ततोऽपयाताः शरपातम त्र मथास्थिताः कुरवो भिन्नसेनाः । विद्युत्
प्रकाशं ददृशुः समन्तात्धनञ्जयास्त्रं समुदीर्यमाणम् ॥ १ ॥ तदर्जुनास्त्रं ग्रसति स्म
कर्णो वियद्गतं घोरतरैः शरौघैः क्रुद्धेन पार्थेन भृशाभिसृष्टं वधाय कर्णस्य महाविमर्दे
। २ ॥ उदीर्यमाणं स्म कुरून दहन्तं सुवर्णपुङ्खैर्विशिखैर्विमर्द्दे । कर्णः सुघोरेष्वसनं
दृढज्य विस्फारयित्वा व्यसृजच्छरौघान् ॥ ३ । रामादुपात्तेन महामहिम्ना ह्याथर्वणे
नारिविनाशनेन । तदर्जुनास्त्रं व्यधमद्दहन्तं पार्थञ्च बाणैर्निशितैर्निजघ्ने ॥ ४ । ततो
विमर्द्दः समहान् बभूव तत्रार्जुनस्याधिरथेश्च राजन् । अन्योऽन्यमासादयतोः प्रवत्के
र्विषाणघाते द्विपयोरिवोग्रैः ॥ ५ ॥ ततोऽस्त्रसंघात समावृतं तदा बभूव दिक्चक्र
मदृश्य भास्करम । यत् कर्णपार्थौ शरजालवृष्ट्या निरन्तर चक्रतुरन्तरीक्षम ॥ ६ ॥
ततोजालं बाणमयं महान्त सर्वेऽद्राक्षुः कुरवः सोमकाश्च । नान्यत् किञ्चिददृशुः

अध्याय ९० ॥

संजय बोले इसके पीछे पृथक् २ सेनावाले एकतीर के अन्तर पर जानेवाले कौरव नियतहुये और अर्जुन के प्रकट कियेहुये अस्त्रको चारोंओर से बिजली के समान प्रकाशमान देखा । १ । तब कर्ण ने उस अर्जुन के आकाशमें वर्त्तमान महाशस्त्र को बड़े घोर बाणों से दूरकिया जो कि बड़े युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने कर्ण के मारने को छोड़ाथा । २ । उस कौरवों के भस्म करनेवाले उदय रूप अस्त्रको सुनहरी पुखवाले विशिखों से मर्दनकिया फिर दृढ़ प्रत्यंचायुक्त भफल धनुष को उठाकर बाणों के समूहों को छोड़तेहुये कर्णने । ३ । परशुरामजी से पायेहुये शत्रुओंके नाश करनेवाले अथर्ववेदसम्बन्धी मन्त्रसे अभिमंत्रित किये हुये तीक्ष्णधारवाले बाणसे उस भस्म करनेवाले अर्जुनके अस्त्रको दूरकरदिया । ४ । हे राजा इसके पीछे वहां पृषत्कों से परस्पर युद्ध करनेवाले कर्ण और अर्जुन का ऐसा घोर युद्धहुआ जैसे कि दांतों के कठिन प्रहारों से दो हाथी युद्ध करते होयँ । ५ । उस समय वहां सब ओरसे अस्त्रों के प्रहारों से बड़ा कठिन युद्धहुआ और दोनोंने अपने अपने बाण समूहों से आकाशको पूर्णकर दिया । ६ ।

CHAPTER XC

Sanjaya said. "Then Kauravas stood separate and saw Arjun' weapons shining like lightning. Then Karan checked Arjun's brie weapon with his dreadful arrows. Having destroyed th destroying weapon, he took up again his hard bow, and dischar sharp weapons received from Parashuram, he pronounced over the foe-destroying aphorisms of Samdeva and with them destroy Arjun's weapon. Fighting with sharp arrows, Karan and Arj Fought hard like two elephants with large tusks. 5. Then was a furious battle with dreadful weapons and both of them the air with their arrows. Then all the Kauravas and Somaks

सम्पतद्भि बाणान्धकारे तुमुले च तस्मिन् ॥ ७ ॥ तौ सन्धानावनिशं स्म राजन्
म-स्यन्तौ चापि शराननेकान् । सन्दर्शयन्तौ युद्धमार्गान्विचित्रान् धनुर्धराणां प्रवरौ
कृतास्त्रौ ॥ ८ ॥ तयोरेवं युध्यतो राजिमध्ये सूतात्मजोऽभूदधिकः कदाचित् । पार्थः
कदाचित्त्वधिकः किरीटी वीर्यास्त्रसम्पद्गुणलाघवैस्तु ॥ ९ ॥ दृष्ट्वा तयोस्तं युधि
संप्रहारं परस्परस्यान्तरप्रेक्षिणोस्तु । घोरं तदा दुर्विषहं रणेऽन्ये योधाः सर्वे विस्मय
मभ्यगच्छन् ॥ १० ॥ ततो भूतान्यन्तरिक्षस्थितानि कर्णार्जुनौ तौ प्रशशंसुर्नरेन्द्र ।
भोः कर्ण साध्वर्जुन साधु चेति हृष्टाः प्रोचुः सर्वशः प्रीतिमन्तः ॥ ११ ॥ तस्मिन्
विमर्दे रथवाजिनागैः भृशाभिघाते दलिते भूतले च । ततस्तु पातालतले शयानो
नागोऽश्वसेनः कृतवैरोऽर्जुनेन, ॥ १२ ॥ राजंस्तदा खाण्डवदाहमुक्तो विवेश कोपाद्
वसुधातलं यः । स नागवीरोऽथ समुत्थितोऽग्रतो मातुर्वधं संस्मरंस्तस्य वैरम् । अधोर्ध्व
वासोर्ध्वगतिः क्षयेन संदृश्य कर्णार्जुनयोर्विमर्दम् ॥ १३ ॥ अयं हि कालोऽस्य

पीछे सब कौरव और सोमकों ने बड़े बाणजालों को देखा और बाणों से अन्धकार होनेपर अन्तरिक्ष में किसी जीवमात्र को भी नहीं देखा हे राजा तब उन अनेक बाणों के छोड़ने और चढ़ानेवाले दोनों धनुषधारियों ने अनेक प्रकारकी अपनी अद्भुतताओं के साथ युद्धमें विचित्रमार्गों को दिखलाया । ८ । इसरीति से कभी अर्जुन कभी कर्ण प्रबलहोते हुये देखके । ९ । अन्य सब शूरवीरों ने युद्धभूमि में परस्पर घाव ढूंढ़नेवाले उन दोनों के असह्य और घोरयुद्ध को देखकर बड़ाई आश्चर्य किया हे नरेन्द्र इसके पीछे अन्तरिक्षवर्ती जीवों ने उन कर्ण और अर्जुन दोनों की प्रशंसाकरी कि हे कर्ण धन्यहै हे अर्जुन धन्य है धन्य है यह शब्द सब ओरसे सुनेजाते थे ।११ । तब उस युद्धमें रथ घोड़े और हाथियों के प्रहारों से पृथ्वी के धसकने पर पातालतल में विश्राम करनेवाला अर्जुन का शत्रु अश्वसेन सर्प । १२ । जो कि खाण्डववनकी अग्निसे निकलकर क्रोधयुक्त होकर पृथ्वी में घुसगयाथा वह फिर ऊर्ध्वगामी होकर कर्ण और अर्जुन का युद्ध देखकर ऊपर को आया । १३ । हे राजा उसने सोचा कि इस दुष्ट अर्जुन से अपना बदला

the network of arrows and no living being was discernible in darkness Putting and discharging their arrows, the two warriors moved in different ways showing their skill. Seeing Karan and Arjun get the upper hand at times, the warriors wondered at their skill and praised them. " Well done Karan and well done Arjun" were the words heard on all sides. Hearing the tread of horses and elephants, when the earth was being pressed down, Ashwasen, the enemy of Arjun, who having escaped the fire of Khanduv had entered the ground much enraged, came up to witness the fighting of Karan and Arjun. He thought it was time to be avenged on him, Having transformed himself into an arrow, he entered Karan's quiver. At that time the field of [illegible]

दुरात्मनो ऽथ पार्थस्य वैरमतिघातमार्थिनः । सविनय वेष प्रविवेश तूर्णं कर्णस्य राजन्
शरकपधारी ॥ १४ ॥ ततोऽस्त्रसम्पातसमाकुलं तदा बभूव आर्क कियानपि
आलम् । तौ कर्णपार्थौ शरसंघवृष्टिभिर्निरन्तरं चक्रतुरम्बरं तदा ॥ १५ ॥ ततः
जालेकमयं महान्तं सर्वेऽभवन् कुरवः सोमकाश्च । नान्यत् किंचिद् ददृशुः सम्पतद्वै
बाणान्धकारे तुमुलेऽतिमात्रम् ॥ १६ ॥ ततस्तौ पुरुषव्याघ्रौ सर्वलोकधनुर्धरौ ।
प्रेक्षमाणौ रणे धीरौ युद्धश्रममुपागतौ ॥ १७ ॥ समुत्क्षेपैर्वीज्यमानौ सिक्तौ चन्दन
वारिणा । सवालव्यजनैर्दिव्यैर्दिविस्थैरप्सरोगणैः । शक्रसूर्यकराब्जाभ्यां प्रमार्जित
मुखावुभौ ॥ १८ ॥ कर्णोऽथ पार्थं न विशेषयेद्यदा भृशाभितप्तः पार्थेन पराजितः । ततस्तु
वीरः शरविक्षताङ्गो दधे मनो ह्येकशयस्य तस्य ॥१९॥ ततो रिपुघ्नं समधत्त कर्णः सुसं
शितं सर्पमुखं ज्वलन्तम् । रौद्रं शरं संयतिशुद्धधौतं पार्थार्थमत्यर्थचिराभिगुप्तम् ॥२०॥

लेनेका यही समय है इसीहेतु से वाणरूप बनकर कर्णके तूणीर में आया इसकेपीछे
अस्त्रों के प्रहारों से संयुक्त फैलेहुये वाणों के समूह रूपी किरणोंसे पूर्ण हुआ तब
उन दोनों कर्ण और अर्जुन ने वाणों के समूहों की वर्षा से आकाश के अन्तर को
निरन्तर कर दिया उस समय वह आकाश बड़ी दूरतक वाणसमूहों से एक
सेही रूप काथा उसको देखकर सब कौरव और सोमक भयभीत हुये । १६ ।
उस वाणों के बड़े अन्धकार में दूसरा कोई जीव आताहुआ नहीं देखा तद-
नन्तर सब लोकके धनुषधारी महावीर वह दोनों पुरुषोत्तम युद्ध में वाणों के
त्याग ने वाले युद्ध के परिश्रम में प्रवृत्त । १७ । निन्दित वचनों को परस्पर
कहनेवाले हुये फिर वह देखनेवालों से व्याप्त जल चन्दन से सींचे हुये दिव्य बाल
व्यजनों की रखने वाली; स्वर्गवासिनी अप्सराओं के समूहों समेत इन्द्र और
सूर्य के करकमलों से स्वच्छ मुखवाले हुये । १८ । जब अर्जुनके वाणों से अत्यन्त
पीड़ामान कर्ण अर्जुन को न मारसका तब वाणों से अत्यन्त घायल शरीर वाले
उसवीरने उसअकेले तरकसमें रहनेवाले सर्परूप वाणके चलानेको चित्त किया।१९।
और बड़े क्रोधपूर्वक उस अच्छीरीतिसे मारनेवाले बहुतकालसे गुप्तरूप सर्प
मुखवाणको अर्जुन के वास्ते धनुषपर चढ़ाया अर्थात् बड़े तेजस्वी कर्णने उस सर्प

was full of fiery arrows so that there was no space left. Arrows only *were to be seen all over and the Kauravas and Somaks were terrified* at the sight of them. No living being was to be seen in the darkness caused by the arrows. The two famous warriors of the world, engaged in mortal combat, abused each other with words. Fanned by heavenly apsaras and sprinkled over by fragrant water, their faces were washed by Indra and Surya. When Karan was unable to slay Arjun and was wounded by his arrows he intended to discharge the serpent-arrow kept single in a quiver. He put to his bow the serpent shaped arrow which was kept long in sandal powder and gold quiver to slay Arjun. 21.

सदार्चितं चन्दनचूर्णशायिनं सुवर्णतूणीरशयं महार्चिषम् । आकर्णपूर्णं प्रविकृष्य कर्णः पार्थोन्मुखं सन्दधे तिग्ममन्युम् ॥ २१ ॥ प्रदीप्तमैरावतवंशसम्भवं शिरोजिहीर्षुं युधि फाल्गुनस्य । ततः प्रजज्वाल दिशो नभश्च उल्काश्च घोरा शतशो निपेतुः ॥ २२ ॥ तस्मिंस्तु नागे धनुषि प्रयुक्ते हाहाकृता लोकपालाः सशक्राः । न चापि तं बुबुधे सूतपुत्रो बाणे प्रविष्टं योगबलेन नागम् ॥ २३ ॥ ततोऽब्रवीन्मद्रराजो महात्मा वैकर्तनं प्रेक्ष्य हि सन्धितेषुम् । न कर्ण ग्रीवामिषुरेष लप्स्यते समीक्ष्य सन्धत्स्व शरं शिरोघ्नम् ॥ २४ ॥ अथाब्रवीत् क्रोधसंदीप्तनेत्रो मद्राधिपं सूतपुत्रस्तरस्वी । न सन्धत्ते द्विः शरं शल्य कर्णो न मादृशा जिह्मयुद्धा भवन्ति ॥ २५ ॥ इतीदमुक्त्वा विससर्ज तं शरं प्रयत्नतो वर्षगणाभिपूजितम् । हतोऽसि वै फाल्गुन इत्येवोक्तवान् स राजन् विजयार्थे मुदितः ॥ २६ ॥ स सायकः कर्णभुजाभिसृष्टो हुताशनार्कप्रतिमः सुघोषः । गुणच्युतः

से पूजित चन्दनचूरे में रहनेवाले सुवर्णके तूणीर में नियत बड़प्रकाशित वाणको कानतक खैंच अर्जुनके मुखकीओर धनुषपर चढ़ाया । २१ । अर्जुनके शिरकाटने को अभिलाषी उसऐरावतके वंश में उत्पन्नहोनेवाले अत्यन्त प्रकाशमान वाणको चढ़ातेही सबदिशा और आकाशमें अग्निज्वालितहुई और आकाशसे सैकड़ों घोररूप उल्कापातहुये । २२ । धनुषमें उस सर्परूपवाणके चढ़ाने पर इन्द्रसमेतसब लोकपाल हाहाकार करनेलगे और सूतपुत्र कर्णने योगबलसे उस बाणमें प्रवेश करनेवाले सर्प को न जाना । २३ । इसके पीछे मद्रके राजा महात्मा शल्यने उस उग्रवाण के चलानेवाले कर्णसे कहाकि हे कर्ण यहवाण अर्जुनको नहीं पावेगा इस शिरकाटने वाले बाणको तुमअच्छीरीतिसे देखकर चढ़ाओ । २४ । इसकेपीछे क्रोधसे रक्तनेत्र बड़ावेगवान कर्ण राजामद्रसे बोला कि हे शल्य कर्ण दूसरी बार बाणको नहीं चढ़ाता है मुझसे मनुष्य छलसे युद्धनहीं करते हैं । २५ । हे राजा उस शीघ्रताक रनेवाले उद्युक्त कर्णने यहकहकर विजयके निमित्त बड़े उपायसे उस बाणको छोड़ा और कहने लगा कि हे अर्जुन अबतुमको मारा है । २६ । कर्णकी भुजासे धनुष

Desirous of cutting Arjun's head, that serpent of Airavat family in the shape of an arrow, illumined all the directions when it was put to the bow and meteors fall down from the sky. Indra and other lokpals cried in dismay, when the arrow was put to the bow; but Karan did not know that the serpent had entered it by the power of yog. Then Shalya the king of Madra, seeing the arrow put to the bow, said to Karan, "This arrow will not touch Arjun. Look it well again before you discharge it." Enragod Karan, with red eyes, said to the king of Madra, "Karan does not apply an arrow to his bow a second time. People like me donot fight deceitfully." 25. Having said this he carefully discharged that arrow to gain victory, saying, "I have slain thee, Arjun." Discharged from Karan's bow and agitated by

नदन्ति भारत । तथैवद्याम्नं सुवर्णमुत्तं तदा अन्ना व्यवरपत् व्यथितान्न चलकृत् ॥ ३९ ॥
विना किरीट शुशुभे नपार्थः श्यामो युवा रोल इवोच्चशृङ्गः ततः उद्ग्रथ्य सितेन वाससा
स्वमूर्द्धजानव्ययितान्हिपत्रोऽर्जुनः ॥ ४० ॥ गोकर्णा सुमुखाकृतेन इषुणा रोपुत्रसंप्रेषिता गोपा-
ह्यात्मजमूर्ध्वं सुविहितं सुरवद्धनासुमनमप्रहरपूपागोगतकं अहारमुकुटं गोशाम्लगोलुदिवे
गोकर्णासनमर्दनस्य न ययावमाप्य मृत्योर्वशम ॥ ४१ ॥ स सायकः कर्णभुजप्रसृष्टो
हुताशनार्कप्रतिमो महार्हः । महोरगः कृतवैरोऽर्जुनेन किरीटमाहृत्य ततो व्यतीयात्
॥ ४२ ॥ तथापि दग्ध्वा तपनीय चित्रं किरीटमाकृष्य तदर्जुनस्य । इयेष गन्तुं पुनरेव,
तूर्णं दृष्टश्च कर्णेन ततोऽब्रवीदिदम् ॥ ४३ ॥ मुक्तस्त्वयाहं न समीक्ष्य कर्ण शिरो हृतं
यन्न मयार्जुनस्य । समीक्ष्य मां मुञ्च रणे त्वमाशु हन्तास्मि शत्रुं तव चात्मनश्च

पुक होकर कम्पित होते हैं उसीप्रकार वह उग्रमुकुट टकराके अत्यन्त चूर्ण हुआ
उस समय तीनोंलोकोंके बड़ेशब्दोंको मनुष्योंने सुना और सुनकर सब पीड़ताहोके
गिरपड़े । ३९ । बिना किरीटके भी बड़ेश्यामरंगवाला पार्थ ऐसा शोभायमानहुआ
जैसे कि नवीन उत्पन्नहुआ पर्वतका ऊंचा शिखर होताहै. इसके अनन्तर पीड़ा से
रहित अर्जुन अपने शिरके बालोंको श्वेतवस्त्रसे बांधकर ऐसा प्रकाशमान हुआ
जैसे कि शिरपर वर्त्तमान सूर्य्यकी किरणवाला उदयाचल पर्वतहोताहै । ४० ।
सूर्य्यके पुत्र कर्णके भेजेहुये नेत्र रूप कान रखनेवाले कुःखभेरवा करनेवाले सर्प के
पुत्र अश्वसेन सर्पने अत्यन्तपूर्व बड़ेतेजस्वी बाणरोपोंके समीप शिर रखनेवाले अर्जुन
को देखकरभी बड़ीतीव्रता से नीचेको झुकने से असामर्थ्य होकर उस इन्द्रके पुत्र
अर्जुन के मुकुटको जो कि अच्छीरीतिसे अलंकृत सूर्य्यकेसमान प्रकाशमानथा
हरणकिया और बाणकेछोड़नेसे सर्पको मर्दनकरनेवाला अर्जुन सर्पको न पाकर
मृत्युके आधीन नहीं हुआ । ४१। कर्णकी भुजासे छोड़ाहुआ अग्नि सूर्य्यरूप बड़े
शूरवीर के योग्य वह शायक और उसमें प्रवेश करनेवाला अर्जुन का शत्रु मुकुट
को धारण करके चलागया ४२। तब अर्जुन के उस सुवर्ण जटित मुकुटको लेकर

Ocean, the diadem fell down on earth and was broken into pieces. The people of the three worlds heard a crash and fell down. Deprived of the diadem, Arjun of dark colour looked glorious like a mountain crest. He tied a white cloth to his hair and then looked like mount Meru with the Sun shining over it. 40. The serpent sent with the arrow of Karan, came by Arjun's head, but being unable to touch it by leaning downwards, he took off the diadem which was bright like the Sun. Arjun was thus able to escape death. The arrow, bright as the Sun or fire, discharged by Karan, and the enemy hidden in it, took off Arjun's diadem. Having burnt the diadem and desirous of entering the quiver again, he said to Karan, "I was discharged carelessly by you and therefore could not cut off Arjun's head. Hit

॥ ४४ ॥ स एवमुक्त्वा युधि सूतपुत्रस्तमब्रवीत् क्रोधवशानुरूपः । नागोऽब्रवीद्विद्धि कृतागसं मां पार्थेन मातुर्वधजातवैरम् ॥ ४५ ॥ यदि त्वां वज्रधरोऽस्य गोप्ता तथापि याता पितृराजवेश्म । तं मावमंस्थाः कुरु मे वचोऽद्य निहन्मि शत्रुं तव मुञ्च मां द्रुतम् ॥ ४६ ॥ कर्ण उवाच । न नाम कर्णोऽद्य रणाय बाण्यबलं समास्थाय जयं बुभूषेत । न सन्दध्यां द्विः शरं चैव नाग यद्यर्जुनानां शतमेव हन्याम् ॥ ४७ ॥ तमाह कर्णः पुनरेव नागं तदाजिमध्ये रविसूनुसत्तमः । व्यालास्त्रसर्गोत्तमयत्नमन्युभिर्हन्तास्मि पार्थं सुसुखो व्रज त्वम् ॥ ४८ ॥ इत्येवमुक्तो युधि नागराजः कर्णेन रोषादसहंस्तु वाक्यम् । स्वयं प्रायात् पार्थवधाय राजन् कृत्वा स्वरूपं विजिघांसुरुग्रः ॥ ४९ ॥ कृष्णस्ततः पार्थमुवाच संख्ये महोरगं कृतवैरं जहि त्वम् । स एष

भस्मकरके उसने फिर तूणीरमें जानाचाहा और कर्णसे बोला।४३।कि हेकर्णमैं बिना विचार कियेहुये तेरे हाथसेछोड़ागया था इसीसे अर्जुनके शिरको न काटसका अब तू युद्धमें अर्जुनको अच्छेप्रकारसे लक्षकरके शीघ्रता सेमुझको छोड़ मैं अपने और तेरे शत्रु अर्जुन को अभी मारूंगा । ४४ । यह बचन सुनतेही कर्ण उससे बोला हे श्रेष्ठ तुम कौनहो सर्प ने कहा माता के मारने से मुझ शत्रुता करनेवाले को अर्जुन का शत्रु जानो । ४५ । चाहे उसका रक्षक इन्द्रभी होजाय तौभी मैं उसका यमलोक में पहुंचाऊंगा । ४६ । कर्ण बोला हे सर्प अब कर्ण युद्ध में दूसरेके बलसे अपनी विजयको नहीं चाहता है और एक बार बाणको चढ़ाकर उसको फिर दूसरी बार नहीं चढ़ाऊंगा मैं अकेलाही एक अर्जुन नहीं जो ऐसे २ सौ अर्जुनभी होयँ उनको भी मारसक्ता हूं । ४७ । यहकहकर सूर्य के पुत्रों में श्रेष्ठ कर्ण युद्धभूमि में फिरभी उस सर्पसे बोला कि हे सर्प मैं अस्त्रके वा क्रोधयुक्त किसी उत्तम उपायके द्वारा अर्जुनको मारूंगा तुम खुशी से चलेजाओ । ४८ । कर्ण के इस बचनको उस सर्प ने क्रोधयुक्त होकर नहीं सुना और अर्जुन के मारने की इच्छा से वह सर्पराज अपने निज स्वरूपको धारणकरके आपही अर्जुनके मारने काचला । ४९ । तदनन्तर श्रीकृष्णजी उस युद्ध भूमि में अर्जुन से बोले कि तुम

Arjun again with a good mark and I shall kill your enemy." Having heard this, Karan said to him, "Who are you?" To this the serpent replied, "My mother was slain by Arjun and therefore I am his enemy. 45. I shall send him to the region of Yam, even if he is protected by Indra." At this Karan remarked, "Karan does not like to gain victory with the help of others. I donot use the same arrow again. Alone I can slay hundred Arjuns." Having said this, Karan further said to him, "I shall slay Arjun with some other weapon. You may go away with pleasure. The enraged serpent did not hear Karan's words and in his natural form he went on to slay Arjun. Then Shri Krishn said to Arjun, "Slay the serpent

मुक्तो मधुसूदनेन गाण्डीवधन्वा रिपुप्रमन्था : उवाच कोन्वेष ममाद्य नागः स्वयं य आयात् गरुडस्य वक्त्रम् ॥ ५० ॥ कृष्ण उवाच । योसौ त्वया खाण्डवे चित्रभानुं संत-र्पयता धनुर्द्धरेण । वियद्गतो जननीगुप्तदेहो मत्वैकरूपं निहतास्यमाता ॥ ५१ ॥ स एव ते वैरमनुस्मरन् वै त्वामद्य चागाति वधाय पार्थ । नभश्च्युतां प्रज्वलितामिवोल्कां पश्यैनमायान्त ममित्रसाह ॥ ५२ ॥ सञ्जय उवाच । ततः स जिष्णुः परिवृत्त रोषा च्छित्वोत्कटषड्भिर्निशितैः पृषत्कैः । नागं वियत्तिर्यगिवापतन्तं स छिन्नगात्रो निपपात भूमौ ॥ ५३ ॥ हते तु तस्मिन् भुजगे किरीटिना स्वयं विभुः पार्थिव सूतलाद्रथ । समुज्जहाराशु महाभुजः स तं रथं भुजाभ्यां पुरुषोत्तमः पुनः ॥ ५४ ॥ तस्मिन्मुहूर्ते दशभिः पृषत्कैः शिलाशितैः बर्हिणबर्हवाजितैः । विव्याध कर्णः पुरुषप्रवीरं धनञ्जयं

इस शत्रुता करनेवाले बड़े सर्पको मारो श्रीकृष्णजी के इस वचनको सुनते ही शत्रुके बलका न सहनेवाला बड़ा गांडीव धनुषधारी अर्जुन यह वचन बोला कि यह सर्प मेरा कौन है जो आपने आप गरुड़ के मुखमें आया है । ५० । श्रीकृष्णजी ने कहा कि खांडववन में अग्निके तृप्तकरनेवाले तुझ धनुषधारी ने इस आकाशमें वर्त्तमान अपनी मातासेगुप्त शरीरवालेको एकरूप जानकर इसकी माताको मारा था उसीके कारण से उस शत्रुताको स्मरणकरता निश्चयकरके मारने के लिये तुझको चाहताहै हे शत्रुके हँसनेवाले तुम आकाशसे प्रज्वलित उल्कापातके समान उस आनेवाले सर्पकोदेखो । ५२ । संजय बोले कि इसके पीछे उस अर्जुनने महा क्रोधयुक्त होकर बड़े तीक्ष्ण उत्तम छःबाणों से उस सर्पको जो आकाश से तिरछा होकर आ रहाथा काटडाला फिर वह अंगों से कटाहुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा । ५३ । अर्जुन हाथसे उस सर्प के मरनेपर आप समर्थरूप पुरुषो त्तमजी ने उस गिर और घुसेहुये रथको शीघ्रही अपनी दोनों भुजाओं से ऊपरको उठाया । ५४ । उसी मुहूर्त में अर्जुनको तिरछा देखनेवाले पुरुषों में बड़ेवीर कर्ण ने उग्रपंखधारी दशपृषत्कों से फिर अर्जुन को व्यथित किया । ५५ । तब अर्जुन ने भी अच्छेप्रकार से छोड़ेहुये वराह कर्णनाम बारह तीक्ष्णबाणोंसे कर्णको घायल

which is your enemy." Arjun the destroyer of foes and bearer of the Gandiv, said, "Who is this snake to me? Why is he falling in the mouth of a garur?" To this Shri Krishn replied, "Trying to gratify Agni in the Khandav forest, you hit his mother who was hiding him. Remembening that enmity, he is coming on to slay you, Look at it coming down in air like a meteor." Sanjaya said, "Arjun in great rage, cut down the serpent with six sharp arrows, and it fell down on the ground. At the fall of the snake, Krishn raised up the car with his arms. In the meantime, brave Karan throwing side glances at Arjun, wounded him with ten sharp arrows. Arjun wounded him with twelve arrows in return and discharged another from his bow drawn

तिर्य्यगवेक्षमाणः ॥ ५५ ॥ ततोऽर्जुनो द्वादशभिः सुमुक्तै र्वराहकर्णै र्निशितैः समर्प्य । नाराचमाशीविषतुल्यवेगमाकर्णपूर्णायतमुत्ससर्ज ॥ ५६ ॥ स चित्रवर्मेषुवरो विदार्य प्राणान्निरस्यन्निव साधुमुक्तः । कर्णस्य पीत्वा रुधिरं विवेश वसुन्धरां शोणितदिग्धवाजः॥५७॥ततो वृषो बाणनिपातकोपितो महोरगो दण्डविघट्टितो यथा । तदाशुकारी व्यसृजच्छरानमान् महाविषः सर्प इवोद्वमन् विषम् ॥ ५८ ॥ जनार्दनं द्वादशभिः पराभिनन्नवैर्नवत्या च शरैस्तथार्जुनम् । शरेण घोरेण पुनश्च पाण्डवं विभिद्य कर्णो व्यनदज्जहास च ॥५९॥ स तस्य हर्षं ममृषे न पाण्डवो बिभेद मर्माणि ततोऽस्य मर्मवित् । परःशतैः पत्रिभिरिन्द्रविक्रमस्तथा यथेन्द्रो बलभोजसाहनत् ॥ ६० ॥ ततः शराणां नवतीर्नवार्जुनः ससर्ज कर्णेऽन्तकदण्डसन्निभाः । स तैर्भृशाविद्धतनुः प्रविव्यथे तथा यथा वज्रविदारितोऽचलः ॥ ६१ ॥ मणिप्रवेकोत्तमवज्रहाटकैरलंकृतं चास्य वराङ्गभूषणम् ।

करके विषवाले सर्प की समान शीघ्रगामी कानतक खैंचेहुये नाराचनाम बाणको छोड़ा । ५६ । वह अच्छीरीतिसे छोड़ाहुआ उत्तम बाण कर्ण के जड़ाऊ कवचको चीरकर मानो प्राणोंको घायल करताहुआ कर्ण के रुधिरको पीके रुधिरमें लिप्तहोके पृथ्वीमें समागया।५७।इसके पीछे बाणके आघातसे कर्ण ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि दण्डसे प्रेरित होकर महा सर्प क्रोधरूप होताहै तवतो शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने उत्तमबाणोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि विषधर सर्प अपने विषको छोड़ताहै।५८।उस समय कर्णने बारह बाणसे तो श्रीकृष्णजी को और निन्नानवे बाणों से अर्जुन को छेदा फिर कर्ण घोर बाणों से अर्जुन को घायलकरके गर्जना पूर्वक हँसा । ५९ । तब उसके उस हास्यको न सहकर उस मर्मज्ञ अर्जुन ने उसके मर्मों को छेदा इस इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने सैकड़ों बाणोंसे ऐसे वेगसे छेदा जैसेकि इन्द्र ने राजा बालिको छेदाथा । ६० । इसके अनन्तर अर्जुन ने यमराजके दण्डकी समान नब्बेबाणों को कर्ण के ऊपर छोड़ा इन अर्जुन के बाणों से विदीर्ण शरीर वहकर्ण ऐसा पीड़ामानहुआ जैसे कि वज्रसे कटाहुआ पर्व्वत पीड़ित होता है । ६१ । और अर्जुन के बाणों से टूटाहुआ इसका सुवर्ण हीरों से जटित प्रकाशमान मुकुट वा

to the ear. 56. That arrow, carefully discharged, prierced Karan's armour and wounding as if it were his very soul, drank his blood and fell down on the ground. Being hit by that arrow, Karan was enraged like a serpent hit by a stick and discharged arrows like poisonous serpents. He pierced Krishn with twelve arrows and Arjun with ninety nine. Having wounded Arjun with arrows, he laughed with a loud roar. Unable to bear his enemy's laughter, Arjun hit him with hundreds of arrows as Indra had pierced Bali. 60. Then Arjun discharged ninety arrows at Karan. Wounded by Arjun's arrows, Karan was afflicted like a mountain hit by vajra. His jewelled diadem broken down by Arjun's arrows and his well-made

प्रकर्चमुर्व्यां निपपात पार्थास्त्रैर्मनज्जयनोत्तमकुण्डलेपि च ॥ ६२ ॥ महार्घ्यं शिल्पिवरैः प्रयत्नतः कृतं तदस्योत्तमवर्म भास्वरम् । सुदीर्घकालेन ततोस्य पाण्डवः क्षणेन बाणै र्बहुधा व्यशातयत् ॥ ६३ ॥ स तं विवर्माणमथोत्तमेषुभिः शितैश्चतुर्भिः कुपितः पराभिनत् । स विव्यथेत्यर्थमरिप्रहारितो यथातुरः पित्तकफानिलज्वरैः ॥ ६४ ॥ महाधनुर्मण्डलनिःसृतैः शितैः क्रियाप्रयत्नप्रहितैर्बलेन च । ततक्ष कर्णं बहुभिः शरोत्तमैर्बिभेद मर्मस्वपि चार्जुनस्त्वरन् ॥ ६५ ॥ दृढाहतः पत्रिभिरुग्रवेगैः पार्थेन कर्णो विविधैः शिताग्रैः। बभौ गिरिर्गैरिकधातुरक्तः क्षरन् प्रपातैरिव रक्तमम्भः ॥ ६६ ॥ ततोऽर्जुनः कर्णमवक्रगैर्नवैः सुवर्णपुङ्खैः सुदृढैरयस्मयैः। यमाग्निदण्डप्रतिमैः स्तनान्तरे पराभिनत् क्रौञ्चमिवाद्रिमग्निजः ६७ ॥ ततः शरावापमपास्य सूतजो धनुश्च तच्छक्रशरासनोपमम् । ततश्च सोऽमुह्यत वरूथस्थो प्रशीर्णमुष्टिः सुभृशातुरस्तदा ॥ ६८ ॥ न चार्जुनस्तं व्यसनेषु

दोनों कुण्डल और बड़े मूल्यवाला बड़े उपायों से अच्छे कारीगरों का बनाया हुआ कवच यह तीनों कटकर पृथ्वीपर गिरे इसके पीछे फिर क्रोधभरे अर्जुन ने उस कवच रहित खाली शरीरवाले कर्णको चार तीक्ष्णबाणों से छेदा फिर शत्रु के हाथसे अत्यन्त घायल वह कर्ण ऐसा अत्यन्त पीड़ामान हुआ जैसेकि वात पित्त कफसे ग्रसित रोगीपीड़ित होताहै । ६४ । उस समय शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने बड़े धनुष मंडलसे निकलेहुये और बड़ेउपाय पूर्वक कर्मसे चलाये हुये बहुतसे उत्तम बाणों से घायल करके मर्मस्थलों कोभी छेदा । ६५ । अर्जुन के बड़े वेगवान् तीक्ष्ण नोकवाले नानाप्रकार के बाणों से अत्यन्त घायल कर्ण ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पहाड़ी धातुओं से लालवर्ण का पर्वत झरनों के प्रहारोंसे रक्त जलों को छोड़ताहुआ शोभित होताहै । ६६ । इसकेपीछे अर्जुनने सीधे चलनेवाले बड़े दृढ़रूप सुन्दरशीतिसे छोड़ेहुये लोहे के यमराज और अग्निके दण्डके समान नौबाणोंसे कर्णको ऐसे छातीपर छेदा जैसे कि अग्निके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजी ने क्रौंचपर्वत को छेदा था । ६७ । उस समय सूतपुत्र तूणीर को और इन्द्रधनुष के समान उस धनुषको त्यागकर रथके ऊपर अचेतहोकर गिरताहुआ नियत हुआ जिसकी मुट्ठी फैलगईथी और अत्यन्त घायल था । ६८ । तब उत्तम पुरुषों के व्रतमें नियत

armour and car-rings fell down on earth. He then pierced the armourless body of Karan with four arrows and afflicted him as *vat pit* and *kaf* do a sick man. 64. Arjun quickly discharged many arrows from his bow and wounded him in the vital parts. Wounded by his sharp arrows, Karan looked glorious like a mountain from which red mineral water flows. Then Arjun wounded him with nine iron arrows, like the staff of Yam or fire, on the breast, as the son of Agni had pierced Kraunch mountain. Having laid aside his quiver and bow, Karan became insensible with outstretched hands. Arjun did not like to slay his enemy in trouble. Krishn then said to him

शरैः शरीरे बहुभिः समर्पितो विभाति कर्णः समरे विशाम्पते । महीरुहैराचितसानुकन्दरो यथा गिरीन्द्रः स्फुटकर्णिकारवान् ॥ ७५ ॥ स बाणसंघान् बहुशो व्यपास्यन् विभाति कर्णः शरजालरश्मिवान् । सलोहितो रक्तगभस्तिमण्डलो दिवाकरोऽस्ताभिमुखो यथा तथा ॥ ७६ ॥ बाह्वन्तरादाधिरथेर्विमुक्तान् बाणान्महाहीनिव दीप्यमानान् । व्यध्वंसयन्नर्जुनबाहुमुक्ताः शराः समासाद्य दिशः शिताग्राः ॥ ७७ ॥ ततः स कर्णः समवाप्य धैर्यं बाणान् विमुञ्चन् कुपिताहिकल्पान् । विव्याध पार्थं दशभिः पृषत्कैः कृष्णञ्च षड्भिः कुपिताहिकल्पैः ॥ ७८ ॥ ततो महेन्द्राशनितुल्यनिस्वनं महाशरं सर्पविषानलोपमम् । अयस्मयं रौद्रमहास्त्रसम्मितं महाहवे क्षेप्तुमना धनञ्जयः ॥ ७९ ॥ कालो ह्यदृश्यस्त्वथ विप्रशापं निदर्शयन् कर्णरथं ब्रुवाणम् । भूमिश्चक्रं ग्रसतीत्यवोचद् कर्णस्य तस्मिन् वधकालेऽप्युपान्ते ॥ ८० ॥ ब्राह्मं महास्त्रं मनसि प्रनष्टं यद्भार्गवोऽस्मै प्रददौ महात्मा । वामञ्चक्रं ग्रसते मेदिनी स्म प्राप्ते तस्मिन् वधकाले नृवीर ॥ ८१ ॥

शोभायमान हुआ जैसे कि वृक्षोंसे पूर्ण वन अथवा कन्दरा और प्रफुल्लित कर्णिकार के वृक्षों से युक्त गिरिराज शोभित होता है । ७५ । वह बाण जालरूप किरणोंका रखनेवाला कर्ण बाणों के समूहों को छोड़ताहुआ ऐसा प्रकाशमान था जैसे कि अस्ताचल के सम्मुख रक्तमंडलवाला सूर्य होता है । ७६ । अर्जुनकी भुजाओं से छोड़े हुये तीक्ष्ण नोकवाले बाणों ने दिशाओं को पाकर । ७७ । कर्णकी भुजाओं से छूटेहुये सर्परूप प्रकाशित बाणों को पराजय किया इसके पीछे क्रोध युक्त सर्पों के समान बाणों को छोड़ते हुये उस कर्ण ने धैर्यको पाकर क्रोधयुक्त सर्पकी समान दशबाणों से अर्जुन को और छः बाणों से श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया । ७८ । इसके पीछे बड़ा बुद्धिमान अर्जुन कठोर शब्दयुक्त सर्प विष और अग्नि के समान लोहे के भयंकर बाणों के फेंकने में प्रवृत्तहुआ । ७९ । हे राजा फिरतो अदृष्टगुप्तरूपकाल ब्राह्मण के क्रोधसे कर्णके मरने को कहनेवाला हुआ कर्णके मरने का समय आनेपर यह वचन बोला कि पृथ्वी रथकेपहियेको निगलती है । ८० । इसके पीछे वह महात्मा परशुरामजी के उस दियेहुये अस्त्रको भी चित्तसे भूलगया है वीर धृतराष्ट्र उसके मरणका समय आनेपर उसके रथके पहियेको पृथ्वी ने पकड़ा । ८१ । तब उस उत्तम ब्राह्मणके शापसे उसका रथ घूमगया और रथका

arrows for rays, Karan was glorious tobehold like the red orb of the Sun at sunsent. Discharged from Arjun's arms, the sharp pointed arrows overcame those discharged by Karan. Discharging serpent like arrows in his rage, Karan wounded him with ten arrows and Krishn with six. Wise Arjun then dscharged hard-soundirg arrows, like serpents or fire, made of iron. An, unseen voice predicted the death of Karan by the curse of the Brahman. At the approach of Karan's death, he said, "Let the earth take hold of the wheel of Karan's car. 80. At this, Karan forgot the use of the weapon given to him by Parashuram. At

ततो रथो घूर्णितवान्नरेन्द्र शापात्तदा ब्राह्मणसत्तमस्य । सचैत्यवृक्षश्च इवातिमात्रं सुपुष्पितो भूमितले निमग्नः॥८२॥ घूर्णे रथे ब्राह्मणस्याभिशापाद्रामादुपात्तेऽप्रतिभाति चास्त्रे । छिन्ने शरे सर्पमुखे च घोरे पार्थेन तस्मिन् विषसाद कर्णः ॥ ८३ ॥ अमृष्यमाणो व्यसनानि तानि हस्तौ विधुन्वन् स विगर्हमाणः । धर्मप्रधानानभिपाति धर्म इत्यब्रुवन् धर्मविदः सदैव ॥ ८४ ॥ वयञ्च नित्यं प्रयताम धर्मं चर्तुं यथाशक्ति यथाश्रुतञ्च । स चापि निघ्नाति न पाति भक्तान्मन्ये न नित्यं परिपाति धर्मः ॥ ८५ ॥ एवं ब्रुवन् प्रचलिताश्वसूतो विचाल्यमानोर्जुनबाणपातैः । मर्माभिघाताच्छिथिलः क्रियासु पुनः पुनर्धर्ममगर्हदाजौ ॥ ८६ ॥ ततः शरैर्भीमतरैरविध्यत्त्रिभिराहवे । हस्ते कृष्णं तथा पार्थमभ्यविध्यच्च सप्तभिः ॥ ८७ ॥ ततोऽर्जुनः सप्तदश तिग्मवेगानजिह्मगान् । इन्द्रा

पहिया पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो वह कर्ण युद्धमें ऐसा व्याकुल चित्त हुआ जैसे कि अच्छेपुष्पवाला वेदिकासमेत चैत्यनाम वृक्षभूमि में डूबजाता है । ८२ । ब्राह्मण के शापसे रथके घूमने और परशुरामजी से पायेहुये अस्त्रके विस्मरण होनेपर । ८३ । और अर्जुन के हाथसे सर्प मुख प्रकाशित घोर बाण के गिरनेपर उन दुःखों को न सहनेवाला कर्ण दोनों हाथों को कंपायमान करके इसबातकी निन्दा करनेलगा कि धर्मज्ञ लोग सदैव इसबातको कहाकरते हैं कि धर्मकरने वालेका धर्म उस धार्मिक पुरुषकी सदैव रक्षाकरताहै । ८४ । और हम पराक्रमी लोग उनके कहनेके अनुसार विश्वास पूर्वक धर्मकरने में उपायोंको करते हैं सो मेरी बुद्धिमें वह कियाहुआ धर्म रक्षानहीं करता है किन्तु अवश्यमारता है किन्तु अवश्यमारता है भक्तों की रक्षा कभी नहीं करता है यह मैं मानताहूं कि धर्म सदैव रक्षा नहीं करता है । ८५ । इसरीति से घोड़े और सारथी से पृथक् और अर्जुन के बाणों से अत्यन्त चेष्टावान और मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल होने से कर्म करने में शिथिल होकर वारम्वार धर्मकी निन्दाकरी । ८६ । इसकेपीछे अत्यन्त भयकारी तीनवाणोंसे युद्ध में श्रीकृष्ण जी को हाथपर छेदा और अर्जुनको भी सातवाणों से । ८७ ।

the approach of the time of his death, the earth caught hold of the wheel of his car. By the curse of the Brahman his car reeled and the wheel went down into the earth. Beset with that calamity, Karan looked like a Chaitya tree in bloom standing on a platform. When the car had reeled by the curse of the Brahman and Karan had forgot the use of Parashuram's weapon and Arjun had slain the serpent, Karan, unable to bear the weight of calamities, waved his hands, saying, "Virtuous men always say that dharm protects. We try our best to practise dharm, but I am of opinion that dharm, instead of protecting, accelerates the death of him who practises it.85. It never protects its devotees." Thus deprived of horses and driver and exceedingly wounded by Arjun's arrows with tired limbs he again and again abused

शनिसमान् घोरानसृजत् पावकोपमान् ॥ ८८ ॥ निर्भिद्यैनं भीमवेगा न्यपतन् पृथिवीतलं । कम्पितात्मा ततः कर्णः शक्त्या चेष्टामदर्शयत् ॥ ८९ ॥ बलेनाथ स संस्तभ्य ब्रह्मास्त्रं समुदीरयत् । ऐन्द्रं ततोऽर्जुनश्चापि तद्दृष्ट्वाभ्युपमन्त्रयत् ॥ ९० ॥ गाण्डीवं ज्यां च बाणांश्च सोऽनुमन्त्र्य परन्तपः । असृजच्छरवर्षाणि वर्षाणीव पुरन्दरः ॥ ९१ ॥ ततस्तेजोमया बाणा रथात् पार्थस्य निःसृताः । प्रादुरासन्महावीर्याः कर्णस्य रथमन्तिकात् । तान् कर्णस्त्वग्रतो व्यस्तान्मोघांश्चक्रे महारथः ॥ ९२ ॥ ततोऽब्रवीद्वृष्णिवीरस्तस्मिन्नस्त्रे विनाशिते । विसृजास्त्रं परं पार्थ राधेयो ग्रसते शरान् ॥ ९३ ॥ ततो ब्रह्मास्त्रमत्युग्रं संमन्त्र्य समयोजयत् । छादयित्वा ततो बाणैः कर्णं प्रत्यस्यदर्जुनः ॥ ९४ ॥ ततः कर्णः शितैर्बाणैश्चिच्छेद ज्यां सुतेजनैः । द्वितीयां च तृतीयां च चतुर्थीं पञ्चमीं

इसके पीछे अर्जुनने कठिन वेगयुक्त सीधे चलनेवाले इन्द्र वज्रके समान घोर अग्निके समान सत्तर बाणोंको छोड़ा वह भयानक वेगवाले बाण उसको छेदकर पृथ्वी पर गिरपड़े । ८८ । तदनन्तर अपने शरीरको कम्पायमान करतेहुये कर्णने अपनी सामर्थ्यसे चेष्टाको दिखाया । ८९ । फिर बलसे अपनेको साधकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट किया फिर अर्जुनने भी उस अस्त्रको देखकर ऐन्द्रास्त्रके मन्त्रको पढ़ा फिर उस शत्रुके तपानेवाले ने गांडीवधनुष प्रत्यंचा और बाणपर मन्त्रको पढ़कर बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि इन्द्र जलकी वृष्टिको करताहै । ९१ । इसकेपीछे अर्जुन के रथसे निकलेहुये तेजरूपी पराक्रमी बाण कर्णके रथके समीपजाकर प्रकट हुये फिर महारथी कर्णने अपने छोड़ेहुये बाणों से उन बाणों को निष्फल करदिया । ९२ । इस पीछे उस अस्त्रके दूरहोनेपर वह वृष्णी वीर श्रीकृष्णजी बोले हे अर्जुन तू परम अस्त्र को छोड़ क्योंकि कर्ण बाणोंको निष्फल करदेता है । ९३ । इस के पीछे ब्रह्मास्त्र के उग्रमन्त्रको पढ़कर बाणको धनुषपर चढ़ाया और कर्णको बाणों से ढककर उसपर फिर बाणों को फेंका । ९४ । तबकर्णने सुन्दर वेतवाले तीक्ष्ण बाणों से उसकी प्रत्यञ्चाको काटकर पहली दूसरी तीसरी चौथी पांचवीं छठी सातवीं आठवीं नौमी दशवीं ग्यारहवीं प्रत्यञ्चाको काटा परन्तु वहकर्ण उसहजारों

Dharm. Then he pierced Shri Krishn with three arrows on the arms and Arjun with seven. Then Arjun discharged seventy dreadful arrows like fire, going straight like the vajra of Indra. They pierced him and fell down on the ground. With trembling body, Karan displayed his activity to the utmost of his power. Steadying himself with great exertion, he invoked the Brahmastra. Seeing this Arjun invoked the weapon of Indra, and muttering aphorisms over the arrows and bowstring of the Gandiv bow, showered his darts like rain. 91. The glorious and powerful arrows coming out of Arjun's car, appeared near that of Karan, but they were made useless by the latter. At this Shri Krishn the Vrishni warrior said, "Discharge

तथा ॥ ९५ ॥ यष्टी मथास्य विच्छेदं सन्धानस्य तथागमम्‌ [illegible]
तथा कर्णकारयौ धनुः । ज्याघातं ज्ञातसन्धानः स कर्णो नान्वबुध्यत ॥ ९६ ॥ ततो द्वाभ्य
आघान्यामनुसृज्य च पाण्डवः । शरैरवाकिरत्‌ कर्णं दीप्ताग्नेव उरगैरिव ॥ ९७ ॥ तस्य
ज्याच्छेदनं कर्णो ज्यावधानञ्च संयुगे । नान्वबुध्यत शीघ्रत्वात्‌ तदद्भुत मिवाभवत्‌
॥ ९८ ॥ अस्त्रैरस्त्राणि राधेयः प्रत्यहन्‌ सव्यसाचिनः । चक्रेऽभ्यधिकमात्मानं दर्शयं
प्रतिदर्शयन्‌ ॥ ९९ ॥ ततः कृष्णोऽर्जुनं दृष्ट्वा कर्णास्त्रेण प्रपीडितम्‌ । अभ्यस्येति
अब्रवीत्‌ पार्थमातिष्ठास्त्रमनुत्तमम्‌ ॥ १०० ॥ ततोऽन्यमग्निसदृशं पुनः सर्पविषोपमम्‌ ।
अश्मसारमयं दिव्यमनुमन्त्र्य धनञ्जयः ॥१०१॥ रौद्रमस्त्रं समाधाय क्षेप्तुकामः किरीट
वान्‌ ततोऽग्रसन्मही चक्रं राधेयस्य तदा नृप ॥ १०२ ॥ ग्रस्तचक्रस्तु राधेयः कोपादश्रू
ण्यवर्त्तयत्‌ । अर्जुनञ्चाब्रवीत्‌ कर्णो मुहूर्त्तं क्षम पाण्डव ॥ १०३ ॥ सव्यं चक्रं मही

मत्यंचा चढ़ानेवाले को नहीं जानताथा । ९६ । तदनन्तर अर्जुन ने दूसरी मत्यंचा को धनुषपर चढ़ाकर मन्त्रों से अभिमन्त्रितकर सर्पों की समान प्रकाशित बाणों से कर्णको ढकदिया । ९७ । कर्णने उसकी मत्यंचाके टूटने और चढ़ने को हस्त लाघवता के कारण नहींजाना यहभी आश्चर्यसा हुआ । ९८ । फिर कर्णने अपने शस्त्रोंसे अर्जुन के अस्त्रोंको रोककर घायलकिया और अपने पराक्रमका प्रभाव दिखाकर उसने अर्जुनसेभी अधिककर्मकिया । ९९ । इसकेपीछे श्रीकृष्णजी कर्णके अस्त्रसे अर्जुनको पीड़ामान देखकर बोले कि चलो अन्य बाणों को प्रेरित करके चलाओ । १०० । इसकेपीछे शत्रुसंतापी अर्जुन अग्नि की समान घोरसर्पके समान लोहेके दिव्य बाणोंको अभिमन्त्रित करके । १०१ । रुद्रअस्त्रको चढ़ाकर छोड़ने को उपस्थित हुआ हे राजा उसीसमय पृथ्वी ने कर्णकेरथ चक्रको निगला ।१०२। चक्र ग्रस्त कर्णने क्रोधकरके अश्रुपातों को डाला और अर्जुन से कहा किहे पांडव थोड़ी देर क्षमाकरो । १०३ । हेअर्जुन दैवयोगसे इससमेरे वामरथके चक्रको पृथ्वी

the best of your weapons, Arjun, for Karan makes your arrows fruitless." Then he uttered the mantra of Brahmastra and put an arrow to his bow. He again covered Karan with arrows. The latter cut eleven bowstrings of Arjun in succession, but each time he saw him ready with a new one.96. Then Arjun putting a new string to his *bow he covered his adversary with arrows. Karan did not know how* Arjun was able to put new strings to his bow and this was a wonder Karan again checked Arjun's weapons with his own and wounded him. He showed his prowess superior to that of Arjun. Seeing him wounded by Karan's arrows, Vasudev said, "Discharge other weapons." 100. Having uttered *mantras over his iron arrows* like venomous serpents, Arjun was ready to discharge Rudra's weapon, when the wheel of Karan's car stuck into the earth. At this Karan

शनिसमान् घोरानसृजत् पाण्डुकोपमान् ॥ ८८ ॥ निर्भिद्यतं भीमवेगा अपतन् पृथिवी तलं । कम्पयित्वा ततः कर्णः शक्त्या चेष्टामदर्शयत् ॥ ८९ ॥ बलेनाथ स संस्तभ्य ब्रह्मास्त्रं समुदैरयत् । ऐन्द्रं ततोर्जुनश्चापि तद्दृष्ट्वाभ्युपमन्त्रयत् ॥ ९० ॥ गाण्डीवं ज्यां च बाणांश्च सोनुमन्त्र्य परन्तपः । असृजच्छरवर्षाणि वर्षाणीव पुरन्दरः ॥ ९१ ॥ ततस्तेजोमया बाणा रथात् पार्थस्य निःसृताः । प्रादुरासन्महावीर्याः कर्णस्य रथमन्तिकात् । तान् कर्णस्त्वग्रतो व्यस्तान्मोघांश्चक्रे महारथः ॥ ९२ ॥ ततोऽब्रवीद्वृष्णिवीरस्तस्मिन्नस्त्रे विनाशिते । विसृजास्त्रं परं पार्थ राधेयो ग्रसते शरान् ॥ ९३ ॥ ततो ब्रह्मास्त्रमत्युग्रः संमन्त्र्य समयोजयत् । छादयित्वा ततो बाणैः कर्णं प्रत्यस्यदर्जुनः ॥ ९४ ॥ ततः कर्णः शितैर्बाणैर्ज्यां चिच्छेद सुतेजनैः । द्वितीयाञ्च तृतीयाञ्च चतुर्थीं पञ्चमीं

इसके पीछे अर्जुनने कठिन वेगयुक्त सीधे चलनेवाले इन्द्र वज्रके समान घोर अग्निके समान सत्तर बाणोंको छोड़ा वह भयानक वेगवाले बाण उसको छेदकर पृथ्वी पर गिरपड़े । ८८ । तदनन्तर अपने शरीरको कम्पायमान करतेहुये कर्णने अपनी सामर्थ्यसे चेष्टाको दिखाया । ८९ । फिर बलसे अपनेको साधकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट किया फिर अर्जुनने भी उस अस्त्रको देखकर ऐन्द्रास्त्रके मन्त्रको पढ़ा फिर उस शत्रुके तपानेवाले ने गांडीवधनुष प्रत्यंचा और बाणपर मन्त्रको पढ़कर बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि इन्द्र जलकी वृष्टिको करताहै । ९१ । इसकेपीछे अर्जुन के रथसे निकलेहुये तेजरूपी पराक्रमी बाण कर्णके रथके समीपआकर प्रकट हुये फिर महारथी कर्णने अपने छोड़ेहुये बाणों से उन बाणों को निष्फल करदिया । ९२ । इस पीछे उस अस्त्रके दूरहोनेपर वह वृष्णी वीर श्रीकृष्णभी बोले हे अर्जुन उत्तम अस्त्र को छोड़ क्योंकि कर्ण बाणोंको निष्फल करदेता है । ९३ । इस के पीछे ब्रह्मास्त्र के उग्रमन्त्रको पढ़कर बाणको धनुषपर चढ़ाया और कर्णको बाणों से ढककर उसपर फिर बाणों को फेंका । ९४ । तबकर्णने सुन्दर तेजवाले तीक्ष्ण बाणों से उसकी प्रत्यञ्चाको काटकर पहली दूसरी तीसरी चौथी पांचवीं छठी सातवीं आठवीं नौमी दशवीं ग्यारहवीं प्रत्यञ्चाको काटा परन्तु वहकर्ण उसहजारों

Dharm. Then he pierced Shri Krishn with three arrows on the arms and Arjun with seven. Then Arjun discharged seventy dreadful arrows like fire, going straight like the vajra of Indra. They pierced him and fell down on the ground. With trembling body, Karan displayed his activity to the utmost of his power. Steadying himself with great exertion, he invoked the Brahmastra. Seeing this Arjun invoked the weapon of Indra, and muttering aphorisms over the arrows and bowstring of the Gandiv bow, showered his darts like rain. 91. The glorious and powerful arrows coming out of Arjun's car, appeared near that of Karan, but they were made useless by the latter. At this Shri Krishn the Vrishni warrior said, "Discharge

तथा ॥ ९५ ॥ यद्वी मयास्य विच्छेद सत्कर्मानं तथाऽर्पितम् । महर्षा पुरा ऽऽदेव तथा विकाद्वर्शी वृषः । ज्याशतं शतसन्धानः स कर्णो नाध्यबुध्यते ॥ ९६ ॥ ततो ऽन्याम वायाभ्यामनुसृज्य च पाण्डवः । शरैरवाकिरत् कर्णं दीप्तास्यैरुरगैरिव ॥ ९७ ॥ तस्य ज्याच्छेदनं कर्णो ज्यावधानञ्च संयुगे । नान्वबुध्यत शीघ्रत्वात् तदद्भुत मिवाभवत् ॥ ९८ ॥ अस्त्रैरस्त्राणि राधेयः प्रहसन् सव्यसाचिनः । चक्रेऽभ्यधिकमात्मानं स्ववीर्यं प्रतिदर्शयन् ॥ ९९ ॥ ततः कृष्णोऽर्जुनं दृष्ट्वा कर्णास्त्रेणाभिपीडितम् । अभ्यस्योत्तम मबीत् पार्थमातिष्ठास्त्र मनुत्तमम् ॥ १०० ॥ ततोऽन्यमग्निसदृशं क्रुद्ध सर्पविषोपमम् । अश्मसारमयं दिव्यमनुमन्त्र्य धनञ्जयः ॥१०१॥ रौद्रमस्त्रं समाधाय क्षेप्तुकामः किरीट वान् ततोऽग्रसन्मही चक्रं राधेयस्य तदा नृप ॥ १०२ ॥ ग्रस्तचक्रस्तु राधेयः कोपादश्रू ण्यवर्तयत् । अर्जुनञ्चाब्रवीत् कर्णो मुहूर्तं क्षम पाण्डव ॥ १०३ ॥ सव्यं चक्रं मही

मत्यंचा चढ़ानेवाले को नहीं जानताथा । ९६ । तदनन्तर अर्जुन ने दूसरी मत्यंचा को धनुषपर चढ़ाकर मन्त्रों से अभिमन्त्रितकर सर्पों की समान प्रकाशित बाणों से कर्णको ढकदिया । ९७ । कर्णने उसकी मत्यंचाके टूटने और चढ़ाने को हस्त लाघवता के कारण नहींजाना यहभी आश्चर्यसा हुआ । ९८ । फिर कर्णने अपने शस्त्रोंसे अर्जुन के अस्त्रोंको रोककर घायलकिया और अपने पराक्रमको प्रत्यक्ष दिखाकर उसने अर्जुनसेभी अधिककर्मकिया । ९९ । इसकेपीछे श्रीकृष्णजी कर्णके अस्त्रसे अर्जुनको पीड़ामान देखकर बोले कि चलो अन्य बाणों को मेरित करके चलाओ । १०० । इसकेपीछे शत्रुसंतापी अर्जुन अग्नि की समान घोरसर्पके समान लोहेके दिव्य बाणोंको अभिमन्त्रित करके । १०१ । रुद्रअस्त्रको चढ़ाकर छोड़ने को उपस्थित हुआ हे राजा उसीसमय पृथ्वी ने कर्णकेरथ चक्रको निगला ।१०२। चक्र ग्रस्त कर्णने क्रोधकरके अश्रुपातों को डाला और अर्जुन से कहा किहे पांडव थोड़ी देर क्षमाकरो । १०३ । हेअर्जुन दैवयोगसे इसमेरे वामरथके चक्रको पृथ्वी

the best of your weapons, Arjun, for Karan makes your arrows fruitless." Then he uttered the mantra of Brahmastra and put an arrow to his bow. He again covered Karan with arrows. The latter cut eleven bowstrings of Arjun in succession, but each time he saw him ready with a new one.96. Then Arjun putting a new string to his bow he covered his adversary with arrows. Karan did not know how Arjun was able to put new strings to his bow and this was a wonder Karan again checked Arjun's weapons with his own and wounded him. He showed his prowess superior to that of Arjun. Seeing him wounded by Karan's arrows, Vasudev said, "Discharge other weapons." 100. Having uttered mantras over his iron arrows like venomous serpents, Arjun was ready to discharge Rudra's weapon, when the wheel of Karan's car stuck into the earth. At this Karan

ग्रस्तं दृष्ट्वा दैवाद्दिदं मम । पार्थ कापुरुषाचीर्णं मभिसन्धिं विसर्जय ॥ १०४ ॥ प्रकीर्णकेशे विमुखे ब्राह्मणे प्राञ्जलौ कृताञ्जलौ । शरणागते याचमाने न्यस्तशस्त्रे तथैव च ॥ १०५ ॥ अबाणे भ्रष्टकवचे भ्रष्टभग्नायुधे तथा । न विमुञ्चन्ति शस्त्राणि शूराः साधुव्रते स्थिताः ॥ १०६ ॥ त्वञ्च शूरतमो लोके साधुवृत्तश्च पाण्डव । अभिज्ञो युद्धधर्माणां तस्मात् क्षम मम क्षणात् ॥ १०७ ॥ यावच्चक्रमिदं भूमेरुद्धरामि धनञ्जय । न मां रथस्थो भूमिष्ठं मसज्जं हन्तुमर्हसि ॥ १०८ ॥ न वासुदेवात्त्वत्तो वा पाण्डवेय बिभेम्यहं । त्वं हि क्षत्रियदायादो महाकुलविवर्द्धनः । स्मृत्वा धर्मोपदेशं त्वं मुहूर्त्तं क्षम पाण्डव ॥ १०९ ॥

इति कर्णपर्वणि कर्णरथचक्रग्रासे नवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

में गड़ाहुआ देखकर नपुंसकों के युद्ध को त्यागकरो । १०४ । जो शूरवीर लोग कि साधुओं के व्रतमें नियतहैं वह केशों के फैलानेवाले शरणागत होनेवाले अस्त्रों के त्यागनेवाले अथवा प्रार्थना करनेवाले वा बाण न रखनेवाले कवच से रहित और टूटे शस्त्रवाले पर अपने अस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं । १०६ । हे पांडव तुम लोकमें बड़े शूरवीर साधुव्रतवाले युद्धके धर्म्मोंको उत्तम रीतिसे जाननेवाले हो इस लिये थोड़ीदेर क्षमाकरो । १०७ । हे महाबाहो जबतक मैं इस गड़ेहुये पाये को न निकाललूं तबतक तुम रथपर सवार होकर पृथ्वीपर नियत मुझ व्याकुल चित्त के मारनेको योग्य नहींहो । १०८ । हे अर्जुन मैंतुमसे और वासुदेवजीसे नहीं डरता हूं और तुमक्षत्री के पुत्र और बड़ेवंशके बढ़ानेवाले हो । १०९ । इसहेतुसे तुमसे मैं कहताहूं पे पांडव एकमुहूर्त्त तक ठहरजाओ ११० ॥

dropped tears in dismay and grief and asked Arjun to wait awhile, saying, "Seeing that by the disfavour of gods my wheel has stuck to earth, you should not act like a coward. Those who are firm on the path of virtue, do not strike people who ask for refuge with dishevelled hair, or who have laid down arms, or whose weapons are exhausted or broken and ask for shelter.' 106. You are the best of warriors, and knowing their duties well, are firm on your dharm, you may therefore be pleased to stay awhile. Wait till I take out the wheel. Being mounted on your car, you should not strike one who is standing on the ground. You should not slay me while I am in distress. I am not afraid of you or Vasudev and you are a noble kshastrya. I therefore request you to wait for a short time." 110.

सञ्जय उवाच । तमब्रवीद्वासुदेवो रथस्थो राधेय दिष्ट्या स्मरसीह धर्मम् । प्रायेण नीचा व्यसनेषु मग्ना निन्दन्ति दैवं कुकृतं न तु स्वम् ॥ १ ॥ यद्द्रौपदीमेकवस्त्रां सभायामानाय्य त्वं चैव सुयोधनश्च । दुःशासनः शकुनिः सौबलश्च न ते कर्ण प्रत्यभात्तत्र धर्मः ॥ २ ॥ यदा सभायां कौन्तेयमनक्षज्ञं युधिष्ठिरम् । अक्षज्ञः शकुनिर्जेता क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥ ३ ॥ यद्भीमसेनं सर्पैश्च विषयुक्तैश्च भोजनैः । आचरत्त्वन्मते राजा क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥ ४ ॥ वनवासे व्यतीते च कर्ण वर्षे त्रयोदशे । न प्रयच्छसि यद्राज्यं क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥ ५ ॥ यद्वारणावते पार्थान् सुप्तान् जतुगृहे तदा । आदीपयस्त्वं राधेय क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥ ६ ॥ यदा रजस्वलां कृष्णां दुःशासनवशे स्थिताम् । सभायां प्राहसः कर्ण क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥ ७ ॥ यदा नारीपुरे कृष्णां क्लिश्यमानाम्

अध्याय ९१ ॥

संजय बोले कि रथपर चढ़ेहुये वासुदेवजी उससे बोले हे कर्ण अब यहां तू धर्मको याद करताहै आपत्तिमें डूबेहुये नीचलोग बहुधा ईश्वरकी निन्दा किया करतेहैं परन्तु अपने दुष्ट कर्मको नहीं कहते । १ । हे कर्ण जब दुश्शासन शकुनि दुर्य्योधन और तुमने एक वस्त्र रखनेवाली द्रौपदी को सभामें बुलाया तब वहां तुमको धर्म नहीं दिखाई दिया । २ । जब शकुनी ने द्यूतविद्या न जाननेवाले राजा युधिष्ठिर को अधर्म से सभामें विजयकिया तब तेरा धर्मकहां गयाथा । ३ । जब राजा दुर्य्योधन ने तेरे मतसे भीमसेन को सर्पोंसे और विषमिले अन्न खवाने से मारना चाहा तब तेरा धर्म कहां गयाथा । ४ । हे कर्ण वनवास के व्यतीत होनेपर तेरहवें वर्षकोभी पाकर आधा राज्य नहीं दिया तब तेरा धर्म कहांगयाथा । ५ । जब कि वारणावत नगर में लाक्षागृह में सोतेहुये पाण्डवों को अग्निसे जलायातब तेराधर्म कहांगयाथा । ६ । हे कर्ण जब सभामें बैठकर दुश्शासनके आधीन हुई द्रौपदी को हँसा तब तेराधर्म कहां गयाथा । ७ । हेकर्ण जबपूर्व कालमें नीचों से

CHAPTER XCI

Sanjaya cotninued, " Vasudev from his car, said to Karan, " You are talking of dharm. People in distress are often apt to blame God and forget their own wickedness. Where was *your dharm* gone, when you, with Shakuni, Dushasan and Duryodhan, brought Draupadi, with only a single garment on her body, in the court ? Where was your dharm gone, when Shakuni the master of the art of gambling defeated Yudhishthir who did not know it ? Where was your dharm, when Duryodhan poisoned Bhim's food and caused him to be bitten by serpents by your instigation ? Was it dharm that the Pandavas were refused their kingdom even after thirteen years of exile ? 5' Where was your dharm, when fire was set to the house of lac where the Pandavas were sleeping ? Where was your dharm when

नागसाह्वये। उपप्रेक्षसि राधेय क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥ ८ ॥ विनष्टाः पाण्डवाः कृष्णे शाश्वतं नरकं गताः। पतिमन्यं वृणीष्वेति वदंस्त्वं गजगामिनीम्। उप प्रेक्षितवांस्त्वं हि क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥ ९ ॥ राज्यलुब्धः पुनः कर्ण समाह्वयसि पाण्डवान्। गान्धारराजमाश्रित्य क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥१०॥ यदाभिमन्युं बहवो युद्धे जघ्नुर्महारथाः। परिवार्य रणे बालं क्व ते धर्मस्तदा गतः ॥ ११ ॥ यद्येष धर्मस्तत्र न विद्यते हि किं सर्वथा तालुविशोषणेन। अद्येह धर्माणि विधत्स्व सूत तथापि नैवाद्य विमोक्ष्यसे हि ॥ १२ ॥ नलो ह्यक्षैर्निर्जितः पुष्करेण पुनर्यशो राज्यमवाप वीर्यात्। प्राप्तास्तथा पाण्डवा बाहुवीर्यात् सर्वे समस्ताः परिवृत्तलोभाः ॥१३॥ निहत्य शत्रून् समरे प्रवृद्धान् ससोमका राज्यमवाप्नुयुस्ते। तथा गता धार्तराष्ट्रा विनाशं धर्माभिगुप्तैः

दुःखित निरपराधिनी द्रौपदी को दुर्वाक्य कहेथे तब तेरा धर्म कहां गयाथा। ८। जब द्रौपदी से तूने यह कुत्सित अभद्र वचनकहे थे कि हे कृष्णा पाण्डवोंका नाश होगया और सनातन नरकमेंगये तुम दूसरे पतिको वरो उस हाथीके समान चलने वाली को ऐसे दुर्वाक्य कहे तबतेरा धर्म कहां गयाथा। ९। हेकर्ण फिर जब तैंने शकुनी से मिलकर राज्यका लोभी होकर पांडवों को बुलाया तबतेरा धर्म कहांथा जब बहुतसे योद्धाओंने बालक अभिमन्युको मारा तब तेराधर्म कहांगयाथा जो यहधर्म तैने धारण नहीं कियाथा तो अब गालबजाने से क्या लाभ है हे सूत अब चाहे जितना तू धर्म वर्णनकर परन्तु जीता नहीं बचसक्ता।१२। जैसे कि द्यूतमें अपने भाई पुष्करसे हारेहुये पराक्रमी नलने भाईको विजय करके फिर राज्यको पाया उसीप्रकार निर्लोभ होकर सबको जीतकर पाण्डवों ने भी अपनी भुजाओं के बलसे राज्यको पाया। १३। इन पांडवों ने युद्धमें बड़े २ बृद्धियुक्त शत्रुओं को सोमकों समेत अनेक पराक्रमोंसे मारकर राज्यको पाया और धर्मधारि तेरोसमों

Dushasan laughed at Draupadi in the court ? Where was your dharm when abusive laugnage was used to innocent Draupadi in the court ? Where was your dharm when you spoke harsh words to Draupadi and said to her that the Pandavas were dead and gone to hell and that she should choose another husband ? With the advice of Skakuni you again invited the Pandavas for the sake of getting their kingdom. Where was your dharm, when child Abhimanyu was slain by many warriors? 11. What is the use of your nonsense talk, when you disregarded dharm before ? You may talk of dharm as long as you please, but you cannot escape death. The Pandavas have regained the kingdom by the strength of their arms as Nal had obtained his kingdom, lost in gambling, from Pushkar his brother. The Pandavas have got their kingdom after slaying strong foes with the help of their allies, while the sons of Dhritrashtra have been

सततं नृसिंह: ॥ १४ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तस्तदा कर्णो वासुदेवेन भारत । लज्जयावनतो भूत्वा नोत्तरं किञ्चिदुक्तवान् ॥ १५ ॥ क्रोधात् प्रस्फुरमाणोष्ठो धनुरुद्यस्य भारत । योधयामास वै पार्थं महावेगपराक्रमः ॥ १६ ॥ ततोऽब्रवीद्वासुदेवः फाल्गुनं पुरुषर्षभम् । दिव्यास्त्रेणैव निर्भिद्य पातयस्व महाबल ॥ १७ ॥ एवमुक्तस्तु देवेन क्रोधमागात्तदार्जुनः । मन्युमभ्यविशद्घोरं स्मृत्वा तत्तु धनञ्जयः ॥ १८ ॥ तस्य क्रुद्धस्य सर्वेभ्यः स्रोतोभ्यस्तेजसोऽर्चिषः । प्रादुरासंस्तदा राजंस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ १९ ॥ तत् समीक्ष्य ततः कर्णो ब्रह्मास्त्रेण धनञ्जयम् । अभ्यवर्षत् पुनर्यत्नमकरोद्रथसज्जने ॥ २० ॥ ब्रह्मास्त्रेणैव तं पार्थो ववर्ष शरवृष्टिभिः । अस्त्रमस्त्रेण संवार्य प्रजहार च पाण्डवः ॥ २१॥ ततोऽन्यदस्त्रं कौन्तेयो दयितं जातवेदसः । मुमोच कर्णमुद्दिश्य तत्प्रजज्वाल तेजसा ॥ २२ ॥ वारुणेन ततः कर्णः शमयामास पावकम् । जीमूतैश्च दिशः

समेत दुष्टात्मा धृतराष्ट्र के पुत्रोंने पराजयको पाया । १४ । संजय बोले कि हे भरतवंशी वासुदेवजी के ऐसे २ वचनों को सुनकर कर्ण ने लज्जा से नीचा शिर करके कुछ उत्तर नहीं दिया । १५ । और क्रोधसे होठोंको चाट हाथमें धनुष लेकर उस पराक्रमी वेगवान ने फिर अर्जुन से युद्धकिया । १६ । इसके पीछे वासुदेव जीपुरुषोत्तम अर्जुन से बोले कि हे महाबली अब इसको दिव्य अस्त्र से छेदकर गिराओ । १७ । श्रीकृष्णजी के इस वचनको सुनतेही अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ उन पूर्व बातों को स्मरण करके महाक्रोधित हुआ । १८ । हे राजा तब तो क्रोधसे उसके सब शरीरके छिद्रों से तेजकी अग्नियां प्रकटहुई यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ । १९ । इसके पीछे कर्ण उसको देखकर ब्रह्मास्त्र से बाणों की वर्षा करनेलगा फिर रथको पृथ्वी से निकालने का उपाय किया । २० । तब अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र से उसपर बाणों की वर्षा करनेलगा फिर पाण्डवने कर्ण के अस्त्र को अपने अस्त्रसे रोककर दूरकिया । २१ । तब कुन्तीनन्दनने अग्निके अति प्रिय दूसरे अस्त्रको कर्ण को लक्ष बनाकर छोड़ा वह अस्त्र तेज से देदीप्य हुआ

defeated." 14. Sanjaya said that hearing Vasudeva's words, Karan hung down his head with shame and gave him no reply. Licking his lips in anger he took his bow and again fought with Arjun. Then Vasudev said to Arjun; "Pierce him down with a divine weapon." Remembering the former wrongs, Arjun was much enraged at the words of Krishn. Sparks of fire came out from the pores of his body to the amazement of all. Then Karan showered arrows with the help of Brahmastra and again tried to extricate his wheel from the ground, 20. Arjun too, discharged on him arrows with the help of Brahmastra and checked his weapon with his own. Kunti's son discharged his fiery weapon at Karan and it shone in its glory. Karan discharged the weapon of water and put out the fire with it. Covering all the directions

सार्कं कुरूणां हृदयानि चापतन् बभूव हाहेति च निस्वनो महान् ॥ ३७ ॥ दृष्ट्वा ध्वजं पातितमाशुकारिणा कुरुप्रवीरेण निकृत्तमाहवे । नाशंसिरे सूतपुत्रस्य सर्वे जयं तदा भारत येत्वदीयाः॥३८॥ अथ त्वरन् कर्णवधाय पार्थो महेन्द्रवज्रानलदण्डसन्निभं आदत्त पार्थोऽञ्जलिकं निषङ्गात् सहस्ररश्मेरिव रश्मिमुत्तमम् ॥ ३९ ॥ मर्मच्छिदं शोणितमांसदिग्धं वैश्वानरार्कप्रतिमं महार्हम् । नराश्वनागासुहरं त्र्यरत्निं षड्वाजमञ्जोगति मुग्रवेगम् ॥ ४० ॥ सहस्रनेत्राशनितुल्यतेजसम् निशासु क्रव्याद मिवातिदुःसहम् । पिनाकनारायण चक्रसन्निभं भयङ्करं प्राणभृतां विनाशनम् ॥ ४१ ॥ जग्राह पार्थः सशरं प्रहृष्टो यो देवसंघैरपि दुर्निवार्यः । संपूजितो यः सततं महात्मा देवासुरान् यो विजयेन्महेषुः ॥ ४२ ॥ तं वै प्रमृष्टं समभीक्ष्य युद्धे चचाल सर्वं सचराचरं जगत् । स्वस्ति जगत् स्यादृषयः प्रचक्रुस्तमुद्यतं प्रेक्ष्य महाहवेषु ॥ ४३ ॥ ततस्तु

और सब मनके मनोरथों सहित हृदय टूटगये और महा हाहाकार शब्दहुआ ।३७। हे भरतवंशी उससमय जोर आपके युद्धकर्त्ता शूरवीर थे उनसबोंने और कौरवोंके बड़े वीरोंने अर्जुन के हाथ से काटी और गिराई ध्वजाको देखकर कर्णके विजयी होने की आशा छोड़दी । ३८ । फिर कर्ण के मारने में शीघ्रता करनेवाले पांडव अर्जुनने महा इन्द्रके वज्र वा अग्निके दण्ड की समान हजार किरण रखनेवाले सूर्य्य की उत्तम किरण के समान आञ्जलिक नाम बाणको अपने तूणीरसे निकाला।३९। वह मर्मभेदी रुधिर मांस से लिप्त अग्नि सूर्य्यके रूप बड़ोंके योग्य मनुष्य घोड़े और हाथियोंके प्राणों का हरनेवाला तीन अरत्निनी लम्बा छः पक्ष रखनेवाला सीधा चलनवाला महा वेगयुक्त । ४० । इन्द्रवज्रके समान पराक्रमी कालकामी काल अग्निकी समान बड़ा घोर पिनाक धनुष और नारायणजी के सुदर्शन चक्र की समान भयकारी और जीवमात्र का नाश करनेवाला था । ४१ । जो देवगणोंसेभी हटाने के अयोग्य महात्माओं से सदैव पूजित देवासुरों का भी विजय करनेवाला था उसको अर्जुन ने अपने हाथमें लिया । ४२ । युद्धमें उस अर्जुन से पकड़ेहुये उस बाणको देखकर सब जड़ चैतन्य स्थावर जंगम जीवों समेत सब जगत् कंपायमान हुआ। अर्जुनको उस बाण को उठाये हुये देखकर ऋषि लोग पुकारे कि संसारका कल्याण हो । ४३ । इसके पीछे उस गांडीव धनुषधारी ने उस अचिन्त्य प्रभाव

his quiver a sharp arrow like the vajra of Indra or staff of Yam, glorious like the Sun of thousand rays. That arrow destructive of men and beasts, was three cubits long fitted with six feathers, swift going, like Indra's vajra in prowess, destroyer of even Death, dreadful like fire, dreadful like *the bow of Shiv or the discus of Vishnu, capable of* destroying all beings, irresistible by gods, worshipped by great men and capable of conquering gods and asurs. All the movables and immovables shook with fear as he took it in his hand and the rishis cried out, "God's mercy on the world." 43. The possessor of Gandiv

तं वै शरमप्रमेयं गाण्डीवधन्वा धनुषि न्ययोजयत् । युक्त्वा महास्त्रेण परेण चापं विकृष्य गाण्डीवमुवाच सत्वरम् ॥ ४४ ॥ अयं महास्त्रप्रतिमोऽस्तु मे शरः शरीरहृच्चासुहरश्च दुर्हृदः । तपोऽस्ति तप्तं गुरवश्च तोषिता मया यदिष्टं सुहृदां तथा श्रुतम् ॥ ४५ ॥ अनेन सत्येन निहन्त्वयं शरः सुसंशितः कर्णमरिं ममार्चितः । इत्यूचिवांस्तं प्रमुमोच बाणं धनञ्जयः कर्णवधाय घोरम् ॥ ४६ ॥ कृत्यामथर्वाङ्गिरसीमिवोग्रां दीप्तामसह्यां युधि मृत्युनापि । ब्रुवन् किरीटीतितिसम्प्रहृष्टो ह्ययं शरो मे विजयावहोऽस्तु । जिघांसुरर्केन्दुसमप्रभावः कर्णं मयास्तो नयतां यमाय । ४७ ॥ तेनेषुवर्य्येण किरीटमाली प्रहृष्टरूपो विजयावहेन । जिघांसुरर्केन्दुसमप्रभेण चक्रे विषक्तं रिपुमाततायी ॥ ४८ ॥ तथा विमुक्तो बलिनार्कतेजाः प्रज्वालयामास दिशो नभश्च ॥ ४९ ॥ ततोऽर्जुनस्तस्य शिरो जहार वज्रेण वृत्रस्य यथा महेन्द्रः । पार्थो पराह्णे शिर उच्चकर्त वैकर्त्तनस्याथ

वाले बाणको धनुष में लगाया और उत्तम महाअस्त्रसे संयुक्त कर गांडीव धनुषको खैंचकर शीघ्रतासे बोला । ४४ । यह महाअस्त्र से संयुक्त बड़ाबाण शत्रुके शरीर और प्राणोंका हरनेवालाहो जो मैंने तपस्या करी है वा गुरुओंको प्रसन्न करके यज्ञोंको किया है और शुभचिन्तक मित्रोंकी आज्ञाको मानाहै । ४५ । इससत्यतासे सेवित यह कठिन और उग्रबाण मेरेबड़े शत्रुकर्ण के शिरको काटो यह कहकर अर्जुनने उसघोर उग्रबाणको कर्णके मारने को छोड़ा । ४६ । और अत्यन्त प्रसन्न मन अर्जुन यह कहताहुआ किंयह अथर्वा गिरससे कृत्याके समान उग्रप्रकाशित और युद्धमें मृत्युसे भी असह्यरूप बाण मेरी विजय का करनेवाला हो कर्णके मारने का अभिलाषी सूर्य चन्द्रमाके समान प्रभाववाला अर्जुन यहबोला कि मेरा चलायाहुआ बाण कर्णकोमारकर यमपुरकोभेजे । ४७ । यहकहकर मारनेके इच्छावान शस्त्रधारी अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्जुन ने उस उत्तम विजय करनेवाले सूर्य चन्द्रमाके समान प्रकाशित बाणसे चक्रके उठाने में प्रवृत्त शत्रुको मारना चाहा । ४८ । तब उस छोड़ेहुये सूर्यकी समान प्रकाशमान बाणने आकाश और दिशाओं को अग्निरूप किया । ४९ । फिर इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने दिनके समाप्त होनेपर उसबाण से उसके शिरको ऐसे काटा जैसेकि महाइन्द्रने अपने वज्रसे वृत्रासुर के

bow put that arrow to his bow and drawing his bow, remarked. "Let this arrow take away life out of Karan's body. If I have performed ascetism or pleased my elders by sacrifices or obeyed my friends and well-wishers, then let this arrow cut off the head of Karan." Having said this, he discharged the arrow, saying "Let this glorious arrow cause my victory." Desirous of slaying Karan, glorious Arjun again said, "Let my arrow send my enemy to the region of Yam." 47. Having said this, Arjun desired to slay, with that glorious arrow, his enemy Karan who was engaged in lifting up the wheel. The glorious arrows, shining in the sky, illumined all the directions. At the close of the

महेन्द्रसूनुः। ५० ॥ तद् प्राञ्जलिकेन छिन्नमथास्य कायो निपपात पश्चात् ॥ ५१ ॥
तदुद्यतादित्यसमानवर्चसं शरन्नभोमध्यगभास्करोपमम्। वराङ्गमुर्व्यामपतच्चमू
पतेर्दिवाकरोऽस्तादिव रक्तमण्डलः ॥ ५२ ॥ ततस्य देहं सततं सुखोचितं सुरूपमत्यर्थ
मुदारकर्मणः। परेण कृच्छ्रेण शिरः समत्यजद् गृहं महर्द्धीव ससङ्गमीश्वरः ॥ ५३ ॥
शरैर्विभिन्नं व्यसु तत् सुवर्चसः पपात कर्णस्य शरीरमुच्छ्रितम्। स्रवद्व्रणं गैरिक
तोयविस्रवं गिरेर्यथा वज्रहतं शिरस्तथा ॥ ५४ ॥ देहात्तु कर्णस्य निपातितस्य तेजः
सूर्यं खं वितत्याविवेश। तदद्भुतं सर्वमनुष्ययोधाः पश्यन्ति राजन्निहते स्म कर्णे
॥ ५५ ॥ ततः शङ्खान् पाण्डवा दध्मुरुच्चैर्दृष्ट्वा कर्णं पातितं फाल्गुनेन। तथैव कृष्णश्च
धनञ्जयश्च हृष्टौ मद्रा दध्मतुराशु शंखौ ॥ ५६ ॥ तं सोमकाः प्रेक्ष्य हतं शयानं प्रीता
नादान् सह सैन्यैरकुर्वन्। तूर्याणि चाजघ्नुरतीव हृष्टा वासांसि चैवादुधुवुर्भुजांश्च

शिरको काटागया। ५०। इसके पीछे आञ्जुलिकसे कटाहुआ उसका शिर गिरपड़ा तदनन्तर उसका धड़ भी गिरपड़ा।५१। वह उदयमान सूर्य के समान तेजस्वी आकाशाध ऐसे सूर्य के समान था उसका शिरकटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्त मण्डलवाला सूर्यअस्ताचल से गिरता है।५२। तदनन्तर इसमहा कर्मी के सदैव सुखके योग्य सुन्दर शिरने अपने शरीर के रूपको बड़े कष्टसे ऐसे त्याग किया जैसे कि बड़ा धनवान अपने धन से पूर्ण घर को बड़े दुःखों से त्यागता है। ५३। उस बड़ तेजस्वी कर्ण का उन्नतशरीर बाणों से भिदाहुआ निर्जीव होकर बाणों के घावोंसे रुधिर गिराताहुआ ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्र से घायलहोकर पर्वतका बड़ाशिर रक्तधातु से युक्तजल को छोड़ता गिरताहै।५४। उसगिरेहुये कर्णके शरीरसे निकलाहुआ तेज आकाशको व्याप्तकरके सूर्यमें प्रवेश करगया कर्णके मरनेपर सब शूरवीर युद्धकर्त्ता मनुष्योंने इस आश्चर्यको देखा।५५। इसकेपीछे अर्जुनके हाथसे गिरायेहुये कर्णको देखकर पाण्डवों ने ऊंचेस्वरों से शंखों को बजाया इसीप्रकार प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुन नकुल और

day, Arjun cut Karan's head with that arrow as Indra had cut off Namuchi's head. 50. Cut off by that arrow, Karan's head and body fell down. The head of that warrior, glorious like the rising Sun, fell down on earth like the setting Sun. If left the body with great pain like a wealthy man forced to leave his house full of wealth. The huge body of Karan, pierced by arrows, fell down like a mountain crag, with its red waters, struck down by vajra. A glory coming out of Karan's body, having illumined the sky, united with that of the Sun. All the warriors saw this wonderful phenomenon at his death. 55. Seeing Karan overthrown by Arjun, the Pandavas sent forth loud blasts from their conchs. Shri Krishn, Arjun, Nakul and Sahadev sent forth blasts from the conchs. The Somaks too, seeing

॥ ५७ ॥ संवर्द्धयन्तश्च नरेन्द्रयोधा पार्थं समाजग्मू रतीव हृष्टाः ॥५८॥ बलान्विताश्चा स्त्वपरे प्रनृत्यन्नन्योऽन्यमाश्लिष्य नदन्त ऊचुः । दृष्ट्वा तु कर्णं भुवि निषन्नं हतं तथा सायकेनातिमिक्रम ॥ ५९ ॥ महानिलेनाग्नि मिवापविद्धं यज्ञावसानेऽग्निमिव प्रशान्तम् रराज कर्णस्य शिरो निकृत्तमस्तङ्गते भास्करस्येव बिम्बम् ॥ ६० ॥ शरांशु सेना मभितो दीप्तिः सरक्तमस्तिभि । बलिनार्जुन कालेन नीतोऽस्तं कर्णभास्करः ॥ ६१ ॥ अस्तं गच्छन् यथादित्यः प्रभामादाय गच्छति । एवं जीवितमादाय कर्णस्येषुर्जगाम ह ॥ ६२ ॥ अपराह्ने पराह्नस्य सूतपुत्रस्य मारिष । छिन्नमञ्जलिकेनाजौ सोत्सेध मपतच्छिरः ॥६३॥ उपर्युपरि सैन्यानां तस्य शत्रोरतद्रञ्जसा । शिरः कर्णस्य सोत्से घमिषु सोपाहरद्रुतम ॥ ६४ ॥ कर्णन्तु शूरं पतितं पृथिव्यां शराचितं शोणित दिग्ध

सहदेवनेभी शंखोंकोबजाया।५८।फिर सोमकोंने उस मरेहुये कर्णको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर सेनाओं समेत शंखोंके नादकिये और अत्यन्त प्रसन्नहोकर तूरीआदि अनेक बाजों कोभी बजवाया और वस्त्रों को हिला कर अपनी भुजाओं को ठोका और अत्यन्त प्रसन्न आशीर्वादों को देतेहुये अर्जुनके पासगये । ५८ । और अन्य २ शूरवीर लोग भी अर्जुनके हाथसे मराहुआ रथसे पृथ्वीमें पड़ा हुआ कर्णको देखकर नृत्य करनेलगे और परस्पर में गर्जना पूर्व्वक ऐसी वार्त्तालापें करनेलगे जैसे कि कठिन वायुके वेग से घायल पर्व्वत होतेहैं ।५९। उस समय वह कर्णका पृथ्वीपर पड़ाहुआ शिर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि यज्ञके अन्त में शांतहुई अग्नि अथवा जैसे कि अस्ताचलपर पहुंचाहुआ सूर्य्यका बिम्बहोताहै । ६० । वह सूर्य्यके समान तेजस्वी युद्धमें पांडवों की सेनाको अपनी बाणरूपी किरणों से अच्छी रीतिसे तपाकर अन्तको अर्जुनरूपी कालके द्वारा अस्त होगया । ६१ । सब अंगों में बाणों से छिदा रुधिर में भराहुआ कर्णका शरीर ऐसा प्रकाशित था जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से शोभित होताहै । ६२ । हे श्रेष्ठ दिवस के अन्त भागमें कर्ण के मरने के दिन कर्ण का शिर शरीर समेत आञ्जलिक बाण से जब युद्धभूमि में गिरा तब उस बाणने भी सेनाओं से पृथक् अर्जुन के शत्रुका वह शिर शरीर समेत शीघ्रता पूर्व्वक अपने वेगसे दूर किया । ६४ ।

Karan fallen down on earth, blew their conchs, trumpets and other musical instruments. They waved their garments and beat their arms and went to Arjun with benedictions. The other warriors too, seeing Karan fallen from his car danced and roared with a loud noise. Karan's head lying on the ground, looked glorious like fire at the end of a sacrifice or like the orb of the Sun at sunset reflected on the Western mountain. 60. Having heated the Pandav army well with his arrows, he set down as he came in contact with death in the shape of Arjun. Pierced with arrows in all parts of his body, he looked glorious like the Sun with his rays. About sunnest on that day, Karan's

गात्रम् । दृष्ट्वा शयानं भुवि मद्रराज श्छिन्नध्वजेनापययौ रथेन ॥ ६५ ॥ हते कर्णे कुरवः प्राद्रवन्त भयार्दिता गाढविद्धाश्च संख्ये । अवेक्षमाणा मुहुरर्जुनस्य ध्वजं महान्तं वपुषा ज्वलन्तम् ॥ ६६ ॥ सहस्रनेत्रप्रतिमानकर्मणः सहस्रपत्रप्रतिमाननं शुभम् । सहस्ररश्मिर्दिनसंक्षये यथा तथा पतत् कर्णशिरो वसुन्धराम् ॥ ६७ ॥

इति कर्णपर्वणि कर्णवधे एकनवतोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

सञ्जय उवाच । शल्यस्तु कर्णार्जुनयोर्विमर्दे बलानि दृष्ट्वा मृदितानि बाणैः । ययौ पीतो भृशमन्युनासौ रथेन संछिन्नपरिच्छदेन ॥ १ ॥ निपातितस्यन्दननागवाजिकं बलञ्च दृष्ट्वा हतसूतपुत्रम् । दुर्योधनोऽश्रुपरिपूर्णनेत्रो मुहुर्मुहुर्निःश्वसन्नार्तरूपः

फिर उसप्रकार वा वाणों से छिदेहुये रुधिर से छिन्न पृथ्वीपर गिरकर शयन करनेवाले कर्ण को देखकर राजा मद्र ध्वजावाले रथकी सवारी से चला । ६५ । और कर्णके मरनेपर भयसे पीड़ित युद्धमें अत्यन्त घायलहुये कौरव बारं बार अर्जुन के क्रोधरूपी मुखको देखतेहुये अचेत हो होकर भागे । ६६ । इन्द्रके समान कर्म करनेवाले कर्णका शिरजो कि इन्द्रकेही शुभ मुखके समानथा वह ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे कि दिनके अन्तमें सहस्रांशु सूर्य अस्त होजाताहै ।६७।

अध्याय ९२ ॥

संजय बोले कि अर्जुन के हाथसे कर्णके मरनेपरराजाशल्य सेनाको भयभीत और पीड़ामानरूप देखकर अपने साथी अधिरथी कर्ण के मरनेपर टूटे सामानवाले रथकी सवारी के द्वारा चलदिया । १ । जिसके रथघोड़े और हाथी गिराये गये वह सेनापति कर्णभी मारागया उस सेनाको देखकर अश्रुपातों से पूर्ण महादुःखित

head and body were separated by Arjun's sharp arrow. Seeing Karan's body pierced by arrows and lying on earth, the king of Madra drove away in his car. The Kauravas, wounded in battle, ran from the dreadful presence of Arjun after the death of Karan. Karan's head, of Indra like prowess and beautiful like the face of Indra, fell down like the setting sun at evening." 67.

CHAPTER XCII

Sanjaya continued, "At the fall of Karan by Arjun's arrows, Shalya, seeing the Kaurav army terrified, went away on his car of which all the parts were broken. Karan the commander was slain along with his

॥ २ ॥ कर्णन्तु शूरं पतितं पृथिव्यां शराचितं शोणितदिग्धगात्रम् । यदृच्छया सूर्य-
मिवावनिस्थं दिदृक्षवः सं परिवार्यतस्थुः ॥ ३ ॥ प्रहृष्टवित्रस्तविषण्णविस्मितास्तथापरे
शोकपरायणा भवन् । परे त्वदीयाश्च परस्परं जना यथा यथैषां प्रकृतिस्तथा भवन्
॥ ४ ॥ प्रविद्धवर्माभरणाम्बरायुधं धनञ्जयेनाभिहतं महौजसम् । निशम्य कर्णं
कुरवः प्रदुद्रुवुर्हतर्षभा गाव इवाकुला कुलाः ॥ ५ ॥ भीमश्च भीमेन महास्वनेन नादं
कृत्वा रोदसी कम्पयानः । आस्फोटयन् वल्गते नृत्यते च हते कर्णे त्रासयन् धार्त-
राष्ट्रान् ॥ ६ ॥ तथैव राजन् सोमकाः सृञ्जयाश्च शङ्खान् दध्मुः सस्वजुश्चापि सर्वे
परस्परं क्षत्रिया हृष्टरूपाः सूतात्मजे वै निहते तदानीम् ॥ ७ ॥ कृत्वा विमर्दं भृशमर्जुनेन
कर्णो हतः केसरिणेव नागः । तीर्णा प्रतिज्ञा पुरुषर्षभेण वैरस्यान्तं गतवांश्चैव पार्थः ॥ ८ ॥
मद्राधिपश्चैव विमूढचेतास्तूर्णं रथेनापहृतध्वजेन दुर्योधनस्यान्तिकमेत्य राजन् संभाष्य

पीड़ामानरूप दुर्योधन ने बराबर श्वासों को लिया ॥ २ ॥ फिर पृथ्वीपर गिर बाणों से छिदेहुये रुधिरसे भरे दैवइच्छासे सूर्यकेसमान प्रतापी पृथ्वीपर नियत कर्णकेदेखने के अभिलाषी मनुष्यकर्णको चारोंओरसे घेरेहुये ॥ ३ ॥ अत्यन्त भयभीत व्याकुलचित्तआश्चर्य युक्तहोकर शोकसेपीड़ामानहुये इनके सिवाय आपके और सबशूरवीर भीपरस्परमें वैसाही दशाको प्राप्तहुये जैसेप्रकारका कि उनका स्वभावथा । ४ । कौरवलोगबड़े तेजस्वी कर्णको अर्जुन के हाथसे टूटे कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रों से रहित देखकर और हतक सुनकर ऐसे भागे जैसे कि निर्जनवनमें मृतक बैलवाली गौवें भागती हैं । ५ । तब भीमसेन भयानक शब्दों से गर्जना करके पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करता भुजाओंको ठोकताहुआ गर्जकर उछला और कर्णके मरनेपर धृतराष्ट्रके पुत्रोंको भयभीत करता नृत्य करनेलगा । ६ । हे राजा इसी प्रकारसब सोमक और सृंजियों ने शंखोंको बजाकर एक एकसे प्रीतिपूर्वक मेल किया और अन्य क्षत्रीलोग भी कर्ण के मरनेपर परस्पर में प्रसन्नरूप हुये । ७ । सूतपुत्रकर्ण अर्जुनसे महाघोर युद्ध करके ऐसे मारागया जैसे कि केसरी सिंहके हाथसे हाथी माराजाता है पुरुषोत्तम अर्जुनने अपनी प्रतिज्ञाको पूर्णकरके शत्रुता के अन्तको पौंचा । ८ । हे राजा फिरव्याकुलचित्त मद्रदेशके राजाशल्यने भी शीघ्रही ध्वजा

horses, cars and elephants. Duryodhan dropped tears at the sight of his army and sighed with pain. People flocked in a cricle to see Karan's body lying on earth. They were filled with grief at the sight of it. All your sons were melancholy according to their nature. They fled at his fall like cows at the fall of the bull. 5. Bhim filled the air with his leonine roars and jumped and frisked with the beating of his arms. He terrified the sons of Dhritrashtra by his wild dance. The Srinjayas and Somaks sounded their conchs and embraced one another. Other warriors too were pleased at the death of Karan. He was slain in battle by Arjun like an elephant by a

दुःखार्त्त उवाच वाक्यम् ॥ ९ ॥ विशीर्णनागाश्वरथप्रवीरं बलं त्वदीयं यमराष्ट्र कल्पम् । अन्योन्यमासाद्य हतैर्महद्भिर्नराश्वनागैर्गिरिकूटकल्पैः । १० ॥ नैतादृशं भारत युद्धमासीद्यथाद्य कर्णार्जुनयोर्बभूव । ग्रस्तौ हि कर्णेन समेत्य कृष्णावन्ये च सर्वे तव शत्रवो ये ॥ ११ ॥ दैवन्तु यत्तात् स्ववशं प्रवृत्तं तत् पाण्डवान् पाति हिनस्ति चास्मान् तवार्थसिद्ध्यर्थकरास्तु सर्वे प्रसह्य वीरा निहता द्विषद्भिः ॥ १२ ॥
यानां तुल्यप्रभावास्तुपतेश्च वीराः । वीर्येण शौर्येण बलेन चैव तेजोभिः युक्ता विविधै गुणौघैः अवध्यकल्पा निहता नरेन्द्रास्तवार्थकामा युधि पाण्डवेयैः ॥ १३ ॥ तन्माशुचो भारत दिष्टमेतत् पर्य्यायसिद्धिर्न सदास्ति सिद्धिः ॥ १४ ॥ एतद्वचो मद्रपतेर्निशम्य स्वं चापनीतं मनसा निरीक्ष्य । दुर्योधनो दीनमना विसंज्ञः पुनः पुनर्न्यश्वसदार्त्तरूपः ॥ १५ ॥ इति कर्णपर्वणि शल्यवाक्ये द्विनवतोऽध्यायः ९२

रहित रथकी सवारीके द्वारा दुर्योधन के पास आकर अश्रुपातडालकर यह वचन कहा । ९ । कि आपकी सेना परस्परमें सम्मुख होकर गिरेहुये हाथी रथ घोड़े वा बड़े २ शूरवीरोंवाली यमराज के देशकी समान और बड़े मनुष्य और घोड़े पर्वत के शिखरके समान हाथियों से मारेगये । १० । हे भरतवंशी यह सबतौलड़े और मरे परन्तु ऐसायुद्ध कोई नहीं हुआ जैसा कि कर्ण और अर्जुनका हुआ है कर्णने सम्मुख होकर श्रीकृष्ण अर्जुन को और अन्य बड़े २ तेरे शत्रुओंको अपने स्वाधीन किया । ११ । निश्चय करके पाण्डवों की रक्षाकरनेवाला दैवही अर्जुन के आधीन होकर कर्मकर्त्ता है जो पाण्डवोंको बचाकर हमलोगों को मारताहै तेरे मनोरथ सिद्ध करनेवाले सब शूरवीर युद्धकरके शत्रुओं के हाथसे मारेगये । १२ । हे राजा वह उत्तमवीर कुबेर यमराज और इन्द्रके समान प्रभाववाले और पराक्रम बल और तेजमें भी इन्हीं देवताओं के समान नानाप्रकारों के गुणों से युक्तहोकर अवध्यों के समान तेरे अर्थसिद्धों के चाहनेवाले राजालोग युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारेगये । १३ । हे भरतवंशी सो तुम अब शोच मतकरो यह होनहारहै निश्चय समझो कि सदैव किसीकी विजय नहीं होती । १४ । राजा शल्यके इस वचनको सुनके और अपने अन्यायको विचारमहा दुःखीचित्त अचेत और पीड़ितरूप दुर्योधनने वारम्वार श्वासाओंकोलिया १५ ॥

tiger. Arjun fulfilled his vow and made an end of his enmity. Shalya went to Duryodhan, with tears in his eyes, and said, 10. "Your great warriors are slain and your army looks like the city of death. *No other warriors ever fought like Karan and Arjun.* Karan repeatedly vanquished Shri Krishn, Arjun and other warriors. Surely, gods protect the Pandavas and fight for Arjun. All your well wishers are slain. The good warriors, like Kuver, Indra and Yam in prowess, invincible by other warriors, have been slain by the Pandavas. Thinking that all this has been brought aboout by Fate, you should not be sorry. You must remember that victory is never on one side." Having heard the words of Shalya and thinking of his own injustice, Karan sighed again and again, 15.

धृतराष्ट्र उवाच । तस्मिंस्तु कर्णार्जुनयोर्विमर्दे दग्धस्य रौद्रेऽहनि विद्रुतस्य । बभूव रूपं कुरुसृञ्जयानां बलस्य बाणोन्मथितस्य कीदृक् ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । शृणु राजन्नवहितो यथा वृत्तो महाक्षयः । घोरो मनुष्यदेहानामाजौ नरवरक्षयः ॥ २ ॥ यत्तत्कर्णे हते पार्थः सिंहनादमथाकरोत् । तदा तव सुतान्राजन्नाविवेश महद्भयम् ॥ ३ ॥ न सन्धातुमनीकानि न च वाथ पराक्रमे । नासीद्बुद्धिर्हते कर्णे तव योधस्य कस्यचित् ॥ ४ ॥ वणिजो नावि भिन्नायामगाधे विप्लवा यथा । अपारे पारमिच्छन्तो हते द्वीपे किरीटिना ॥५॥ सूतपुत्रे हते राजन् वित्रस्ताः शरविक्षताः । अनाथा नाथमिच्छन्तो नागाः सिंहैरिवार्दिताः ॥ ६ ॥ भग्नशृङ्गा इव वृषा भग्नदंष्ट्रा इवोरगाः ॥ ६ ॥ प्रत्युपायाम सायाह्ने निर्जिताः सव्यसाचिना । हतप्रवीरा विध्वस्ता निकृत्ता निशितैः शरैः । सूतपुत्रे हते राजन् पुत्रास्ते प्राद्रवन् भयात् ॥ ७ ॥ विशस्त्रकवचाः सर्वे कान्दिशीका विचे

अध्याय ९३ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि रुद्ररूप कर्ण और अर्जुनके युद्धमें दग्धरूप बाणोंसे मथित और भागेहुये कौरव और सृंजियों की सेनाके लोगोंका रूप कैसा होगया । १ । संजय बोले कि हे राजा सावधान होकरसुनो जैसे कि युद्धभूमिमें मनुष्यों के शरीरोंका अत्यन्त घोर नाश वा राजाओंकी हानिहोजाने और कर्णके मरनेपर पाण्डवों ने सिंहनाद किये तब आपके पुत्रों में बड़ाभारी भय उत्पन्न हुआ । ३ । कर्णके मरनेपर आपके किसी शूरवीरकी भी सेनाओंकी चढ़ाई और शीघ्र पराक्रम करनेके साहस की बुद्धी नहीं हुई । ४ । जैसे कि नौका रहित अथाह जल में नौकाके टूटनपर व्यापारी लोग अपार जलके पार होनेकी इच्छा रखनेवाले होते हैं उसीप्रकार अर्जुनके हाथसे सेनापति कर्णके मरनेपर आपके लोग रक्षाके चाहनेवाले हुये । ५ । हे राजा सूतपुत्र के मरनेपर भयभीत शस्त्रों से घायल आपके अनाथ लोग नाथके ऐसे चाहनेवाले हुये जैसे कि सिंहों से पीड़ामान हाथी टूटी शाखावाले बैल और टूटी डाढ़वाला सर्प रक्षाको चाहते हैं । ६ । सायंकाल के समय अर्जुन से पराजित मृतकवीरोंवाले तीक्ष्ण बाणोंसे घायल होकर लोग हटआये । ७ । हे राजा कर्णके मरतेही यंत्र वा कवचों से रहित अचेत भयभीत और

CHAPTER LXIII

Dhritrashtra said, " Wounded and flying by the arrows of Arjun and Karan, how did the Srinjayas and the Kauravas behave ? " Sanjaya said, " Hear it carefully, king, how at the death of Karan and other warriors the Pandavas roared and the Kauravas fled for fear. None of you great warriors intended to face the Pandavas at the death of Karan. Your men sought protection after the death of Karan as merchants wish for land when their ship is wrecked in the midst of waters. 5. Terrified at the death of Karan, wounded by weapons your men wished for a protector like elephants attacked by a lion, oxen

तस्तः । अन्योन्यमवमृद्नन्तो वीक्षमाणा भयार्दिताः ॥८॥ मामेव नूनं बीभत्सुर्मामेव च वृकोदरः । अभियातीति मन्वानाः पेतुर्म्लानाश्च सम्भ्रमात्॥९॥हयानन्ये रथानन्ये गजानन्ये महारथाः । आरुह्य जवसम्पन्नाः पादाता प्राद्रवन् भयात् ॥ ११ ॥ कुञ्जरैः स्यन्दना भग्नाः सादिनश्च महारथैः । पदातिसंघाश्चाश्वौघैः पलायद्भिर्भयार्दिताः ॥ ११ ॥ व्यालतस्करसंकीर्णे सार्थहीना यथा वने । तथा त्वदीया निहते सूतपुत्रे तदा भवन् ॥ १२ ॥ हतारोहास्तथा नागाश्छिन्नहस्तास्तथा नराः । सर्वं पार्थमयं लोकं संपश्यन्तो भयातुराः ॥ १३ ॥ तान् प्रेक्ष्य द्रवतः सर्वान् भीमसेनभयार्दितान् ॥ १४ ॥ तान् दृष्ट्वा विद्रुतान् सर्वान् योधांस्तत्र सहस्रशः । दुर्य्योधनोऽथ स्वं सूतं हाहेत्युक्त्वैवमब्रवीत् ॥ १५ ॥ दुर्य्योधन उवाच । नातिक्रमिष्यते पार्थो धनुष्पाणिमवस्थितम् । जघने सर्वसैन्यानां

परस्परमें मर्दनकरनेवाले और भयसेव्याकुल होकर देखनेवाले आपकेपुत्र महाभयातुर होकरभागे ।८। और यहनिश्चय जानकर किअर्जुन औरभीमहमारेही सम्मुख आते हैं यह मानते हुये महा व्याकुलतासे गिरकर मृतक मायहोगये।९।किसी महारथीनेघोड़ों पर किसीने हाथियों पर किसीने रथोंपर चढ़कर बड़े वेगसे भयभीत होकर अपने पदातियोंको त्यागाकिया ।१०। हाथियोंसे रथ महारथियों से अश्व सवार और भयसे व्याकुल भागनेवाले घोड़ों से पदातियों के समूह मारेगये ।११। जैसे कि सर्प और चोरोंसे भरेहुये वनमें अपने संगके लोगोंसे पृथक् होकर मनुष्यों की जो दशा होती है हे राजा उसीप्रकार कर्ण के मरनेपर आपके शूरवीरों की भी वही दशाहुई ।१२। अथवा जैसे कि मृतक सवारवाले हाथी और टूटे हाथ वाले मनुष्य होते हैं इसी प्रकार आपके सब मनुष्य संसार भरेकोही अर्जुन रूप देखतेहुये भयसे पीड़ामान हुये ।१३। भीमसेन के भयसे पीड़ित होकर भागता हुआ सबको देखकर और उन हजारों शूरोंको भी भागते देखकर दुर्योधन ने बड़ा हाहाकार करके फिर अपने सारथीसे यह वचन कहा ।१५। कि अर्जुन सबसेना के मारने को मुझ धनुषधारी के होतेहुये नहीं आसकाहै इससे अपने घोड़ोंको

with broken horns or serpents with broken teeth. Wounded and defeated by Arjun's arrows, your men retreated by the evening. Deprived of arms and armour, foolishly charging one another and terrified, your sons fled in terror. Believing that Arjun and Bhim were everywhere encountering them, they were nearly dead. They rode their horses, elephants and cars and fled in terror, leaving their foot. 10. Cars, horses and men were destroyed by the flying warriors. Your men were in confusion like those who are separated from their companions in a forest full of thieves and serpents. At the death of Karan, they were like riderless elephants or men with broken arms. They thought that they saw Arjun everywhere and were confused with terror. Seeing them running away for fear of Bhim,

शनैरश्वान् प्रचोदय । १६ ॥ अघ्नन् युध्यमानं हि कौन्तेयं मां न संशयः । नोत्सहेत
व्यतिक्रान्तुं वेलामिव महोदधिः ॥ १७ ॥ अद्यार्जुनं सगोविन्दं मानिनञ्च वृकोदरम् ।
निहत्य शिष्टान् शत्रूंश्च कर्णस्यानृण्यमाप्नुयाम ॥ १८ ॥ तच्छ्रुत्वा कुरुराजस्य शूरार्य्ये
सदृशं वचः । सूतो हेमपरिच्छन्नान् शनैरश्वानचोदयत् ॥ १९ ॥ रथाश्वगजहीनास्तु
पादातास्तव मारिष । पञ्चविंशतिसाहस्रा युद्धायैव व्यवस्थिताः ॥ २० ॥ तान् भीम
सेनः संक्रुद्धो धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । बलेन चतुरङ्गेन परिक्षिप्याजघ्नतुः शरैः ॥ २१ ॥ प्रत्य
युध्यन्त ते सर्वे भीमसेनं सपार्षतम् । पार्थपार्षतयोश्चान्ये जगृहुस्तत्र नामनी । २२ ॥
अक्रुध्यत तदा भीमस्तै रणे प्रत्युपस्थितैः । सोऽवतीर्य्य रथात्तूर्णं गदापाणिरयुध्यत ॥ २३ ॥

रोको । १६ । मैं निस्सन्देह उस युद्धकरनेवाले अर्जुन को अवश्य मारूंगा
वह मुझको ऐसे उल्लंघन नहीं करसक्ता है जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्य्याद
नहीं उल्लंघन करसक्ता है । १७ । अब मैं श्रीकृष्ण जी समेत अर्जुन को वा बड़े
अहङ्कारी भीमसेनको और इसी प्रकार सब बाकी बचेहुये शत्रुओं को मारकर
कर्ण के ऋण से उद्धार हूंगा । १८ । सारथी ने कौरवों के राजा दुर्योधन के उस
वचनको जो कि शूर और श्रेष्ठ लोगोंके कहने के समान था सुनकर सुवर्ण के
सामानों से आच्छादित घोड़ोंको बड़े धीरेपने से चलायमान किया । १९ । हे श्रेष्ठ
फिर रथघोड़े और हाथियों से रहित आपके पच्चीस हजार पदाती युद्धके निमित्त
नियतहुये । २० । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्नने चतुरंगिणी
सेना समेत उन पदातियोंको घेरकर मारा । २१ । वहसब भीमसेन और धृष्टद्युम्न
के सम्मुख होकर युद्ध करनेलगे और किसी २ ने पाण्डव और धृष्टद्युम्न के
नामोंको लेकर पुकारा । २२ । तबउन सम्मुख आयेहुये पदातियों से युद्धमें
भीमसेन क्रोधरूप हुये और बड़ी शीघ्रतासे अपने रथसे उतर हाथमें गदा लेकर
युद्ध करने लगा । २३ । अपने भुजबलमें दृढ़रूप धर्मको चाहनेवाले रथमें सवार

Duryodhan said to the driver, "Arjun cannot destroy the whole army as long as I am alive, Check your horses so that I may slay Arjun. He cannot withstand me as the ocean can not pass over the coast. Having slain Shri Krishn with Arjun and the rest of the enemies, together with Bhim, I shall satisfy the debt of Karan." Hearing the warlike language of Duryodhan, the driver gently drove the gold decked horses. Destitute of horses and elephants, twenty five thousands of your warriors stood by him. 20. Then Bhim and Dhrishtadyumn, much enraged, surrounded them with their armies and slew them. They faced Bhim and Dhrishtadyumn in battle and challenged them to fight. Bhim was enraged at this and coming down from his car, he fought them with his mace. Firm on his duty and relying on the strength of his arms, he did not like to slay them from his car. Like

न तान्रथस्थो भूमिष्ठान् धर्मापेक्षी वृकोदरः । योधयामास कौन्तेयो भुजवीर्य्यसमा
श्रितः ॥ २४ ॥ जातरूपपरिच्छन्नां प्रगृह्य महतीं गदाम् । अवधीत्तावकान् सर्वान् दण्ड
पाणिरिवान्तकः ॥ २५ ॥ पदातिनोपि संरब्धास्त्यक्त्वा जीवितमात्मनः । भीममभ्य
द्रवन् संख्ये पतंगा इव पावकम् । २६ ॥ आसाद्य भीमसेनन्तु संरब्धा युद्धदुर्मदाः ।
विनेशुः सहसा दृष्ट्वा भूतग्रामा इवान्तकम् ॥ २७ ॥ श्येनवद्व्यचरन् भीमो गदाहस्तो
महाबलः । पञ्चविंशतिसाहस्रांस्तावकानामपोथयत् ॥ २८ ॥ हत्वा तत् पुरुषानीकं
भीमः सत्यपराक्रमः । धृष्टद्युम्नं पुरस्कृत्य पुनस्तस्थौ महाबलः ॥ २९ ॥ माद्रीपुत्रौतु
शकुनिं सात्यकिश्च महारथः । जवनाभ्यपतन् हृष्टा निघ्नन्तः सौबलं बलम् ॥ ३० ॥
तस्याश्वांश्च गजानाजौ विनिहत्य शितैः शरैः । तमभ्यधावंस्त्वरितास्ततो युद्धमभूत्तदा
॥ ३१ ॥ धनञ्जयोपि चाभ्येत्य रथानीकं तव प्रभो । विश्रुतं त्रिषु लोकेषु व्याक्षिपत्

कुन्तीकेपुत्र भीमसेन ने रथपर चढ़कर उन पदातियोंसे युद्ध नहीं किया ।२४। हाथ में दण्डधारी यमराज के समान भीमसेन ने सुवर्ण से मण्डित अपनी गदाको हाथमें लेकर पदाती होकर आपके सब पदातियों को मारा । २५ । फिर वह सब पदाती भी अपने प्यारे जीवनको त्याग करके युद्धमें भीमसेनके सम्मुख ऐसे गये जैसेकि अग्नि में पतंग जाते हैं । २६ । वह सबलोग युद्धमें क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेन को पाकर अकस्मात ऐसे नाशहोगये जैसे कि जीवोंके समूह मृत्युको देखकर नाशहोजाते हैं । २७ । फिर बाजकी समान गदा हाथमेंलिये घूमनेवाले भीमसेनने आपके पचीस हजार पदातियों को मारा।।२८। फिर वह महापराक्रमी अतुलबलभी मसेन उस पदातियों की सेनाको मारकर धृष्टद्युम्नको आगे करके वहांपर नियत हुआ । २९ । महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी शकुनीके सम्मुख हुये और बड़े प्रसन्न चित्त होकर दुर्योधनकी सेनाको मारते हुये बड़ी शीघ्रता से सम्मुख दौड़े । ३० । अर्थात वह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बहुतसे सवारों को मारकर शीघ्रता से उसके सम्मुख दौड़े और बड़ा युद्धहुआ । ३१ । हे प्रभु फिर अर्जुन ने भी आपकी रथवाली सेनासे सम्मुख जाकर तीनों लोकों में प्रसिद्ध अपनेगाण्डीव

Yam the wielder of staff, Bhim taking his gold mace in his hand, slew your foot soldiers. Not caring for their life, they faced Bhim as insects fall into fire. 26. They were destroyed by Bhim as if they, had faced Death himself. Roaming like a hawk, mace in hand, Bhim slew twenty five thousands of your foot. Having slain the foot soldiers, Bhim stood by Dhrishtadyumn. Nakul, Sahadev and Satyaki faced Shakuni and slew the army of Duryodhan with cheerful minds. They slew numerous horsemen and fought a hard fight. Arjun too, entered the field of battle and twanged Gandiv bow. 32. Seeing the car driven by Shri Krishn and drawn by white horses, your warriors fled away from Arjun. Destitute of cars and wounded by

गाण्डीवस्य धनुः ॥ ३२ ॥ कृष्णसारथिमायान्तं दृष्ट्वा श्वेतहयं रथम् । अर्जुनञ्चापि योद्धारं त्वदीयाः प्राद्रवन् भयात् ॥ ३३ ॥ विप्रहीणरथाश्चैव शरैश्च परिकर्षिताः । पञ्चविंशतिसाहस्राः कालमाच्छन् पदातयः ॥ ३४ ॥ हत्वा तान् पुरुषव्याघ्रः पाञ्चालानां महारथः । पुत्रः पाञ्चालराजस्य धृष्टद्युम्नो महामनाः ॥ ३५ ॥ भीमसेनं पुरस्कृत्य नाचिरात् प्रत्यदृश्यत ॥ ३६ ॥ पारावतसवर्णाश्वं कोविदारं महाध्वजम् । धृष्टद्युम्नरथं दृष्ट्वा प्राद्रवन्त भयात्तदा ॥ ३७ ॥ गान्धारराजं शीघ्रास्त्रमनुसृत्य यशस्विनौ । नाचिरात् प्रत्यदृश्येतां माद्रीपुत्रौ ससात्यकी ॥ ३८ ॥ चेकितानः शिखण्डी च द्रौपदेयाश्च मारिष । हत्वा त्वदीयं सुमहत् सैन्यं शङ्खानथाधमन् ॥ ३९ ॥ ते सर्वे तावकान् प्रेक्ष्य द्रुततोऽपि पराङ्मुखान् । अभ्यवर्त्तन्त संरब्धान् वृषान् जित्वा यथा वृषाः ॥ ४० ॥ सेनावशेषं तं दृष्ट्वा सैन्यस्य पाण्डव । व्यवस्थितं सव्यसाची चुक्रोध बलवान्नृप ॥ ४१ ॥ धनञ्जयो रथानीकमभ्यवर्त्तत वीर्यवान् । विधुतं त्रिषु लोकेषु व्याक्षिपन्

धनुष को टंकारा । ३२ । आप के युद्धकर्त्ता शूरवीर उस रथ को जिस में कि श्रीकृष्णजी सारथी और श्वेत घोडों से युक्त था देखकर और युद्ध करनेवाले अर्जुनकोभी देखकर भागे । ३३ । रथोंसे रहित और बाणों से पीड़ामान पच्चीस हजार पदातियोंने कालको पाया । ३४ । पांचालों का महारथी अत्यन्त साहसी पुरुषोत्तम श्रीमान् धृष्टद्युम्न उनको मारकर । ३५ । थोडेही कालमें भीमसेन को आगे करके दिखाई दिया । ३६ । तब आपके शूरवीर उस कपोत वर्ण घोडे और कोविदारूपी ध्वजाधारी धृष्टद्युम्न को युद्धमें देखकर भयभीत होकर भागे । ३७ । और यशस्वी नकुल और सहदेव उस शीघ्र अस्त्रों के चलानेवाले गान्धार पतिको स्मरण करके सात्यकि समेत थोडेही देरमें दृष्टिपडे । ३८ । हे श्रेष्ठ इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रोंने आपकी बड़ी सेनाको मारकर बड़े शंखोंको बजाया । ३९ । फिर वह आपके शूरवीरों को मुख मोडकर भागतेहुये देखकर ऐसे सम्मुख आकर वर्त्तमान हुये जैसे कि बैलोंको विजयकरके क्रोधयुक्त बैल वर्त्तमान होते हैं । ४० । हेराजा इसके पीछे महा पराक्रमी पाण्डव अर्जुन आपकी बाकी बचीहुई सेनाको देखकर क्रोधयुक्त हुआ । ४१ । और आपकी रथकी सेना

arrows, the twenty five thousands of foot soldiers met their death. Having slain them, the brave leader of the Panchals, Dhrishtadyumn was accompanied by Bhim. Your warriors fled at the sight of Dhrishtadyumn the possessor of pigeon-cloured horses and kobidar standard. Nakul and Sahadev, with Satyaki, hastened to face Shakuni. Similarly, Chekitan, Shikhandi and the sons of Draupadi blew their conchs after slaying your warriors. Seeing your son turn face, they stood like bulls after conquering other bulls. 40. Seeing the rest of your army before him, brave Arjun was enraged and prepared his Gandiv bow to enoounter them, He covered the whole army with

गाण्डीवं धनुः ॥ ४२ ॥ तत एनं शरव्रातैः सहसा समवाकिरत् । रजसा चोद्धतेनाथ न स्म किञ्चित्प्रदृश्यत ॥ ४३ ॥ अन्धकारी कृते लोके रजोभूते महीतले । विकलाः महाराज तावकाः प्राद्रवन् भयात् ॥ ४४ ॥ भज्यमानेषु सैन्येषु कुरुराजे विशाम्पते । परानभिमुखश्चैव सवतेः समुपाद्रवत् ॥ ४५ ॥ ततो दुर्योधन सर्वानाजुहावाथ पाण्डवान् युद्धाय भरतश्रेष्ठ देवानिव पुरा बलिः ॥ ४६ ॥ त एनमभिगर्जन्तं सहिता समुपाद्रवन् । नानाशस्त्रसृजः सर्वे भर्त्सयन्तो मुहुर्मुहुः ॥ ४७ ॥ दुर्योधनस्तं संभ्रान्तः महिजिह्मगैः शरैः । तत्रावधीत्ततः क्रुद्धः शतशोथ सहस्रशः ॥ ४८ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम तव पुत्रस्य पौरुषम् । यदेकः सहितान् सर्वान् रणेयुध्यत पाण्डवान् ॥ दुर्योधनः स्वकं सैन्यमपश्यच्छर विक्षतम् ॥ ५० ॥ ततोऽवस्थाप्य राजेन्द्र कृतबुद्धिस्तवात्मजः । हर्षयन्निव तान् योधानिदं वचनमब्रवीत् ॥ ५१ ॥ न तं देशं प्रपश्यामि पृथिव्यां पर्वतेषु

के सम्मुख वर्त्तमान हुआ और अपने विख्यात गांडीव धनुषको सबद्ध किया ।४२। बाणों को वर्षा करके उससेना को ढकादिया फिर अन्धकार होजाने पर कुछ दिखाई नहींदिया ।४३। हे महाराज लोकके हत तेज होने और पृथ्वीको धूलयुक्त होनेपर आपके सब शूरवीर भयभीत होकरभागे । ४४ । हे राजा सेनाके छिन्न भिन्न होनेपर आपका पुत्र दुर्योधन सम्मुख आनेवाले शत्रुओंकी ओरको दौड़ा । ४५ । इसके पीछे दुर्योधन ने सब पाण्डवों को युद्धके लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हे भरतर्षभ पूर्व समय में राजा बलिने देवताओं को बुलाया था । ४६ । नाना प्रकार के शस्त्रोंसे युक्त क्रोधयुक्त बारम्बार घुड़की देते और गर्जना करतेहुये एक साथही उसके सम्मुखगये । ४७ । इसकेपीछे वहां भयसे भयव्याकुल चित्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने युद्धमें अपने तीक्ष्ण बाणों से हजारों सेनाके लोगों को मारा । ४८ । उस स्थानपर हमने आपके पुत्र की अपूर्व वीरताको देखा कि अकेलाही उनसब इकट्ठे होनेवाले पाण्डवोंसे युद्धकरने लगा । ५० । इसके पीछे उस महात्माने अपनी सेनाको अत्यन्त दुखीदेखा हे राजा उससमय आपका बुद्धिमान पुत्र उन शूरवीरों को खड़ा करके उनको प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला । ५१ । कि

the shower of arrows. Nothing was to be seen in the dark. At the slaughter of their people, while the field was enveloped in dust, your warriors turned back. 44. At the dispersion of the army, your son Duryodhan rushed against the foes. He challenged the Pandavas to fight as Bali had done the gods. They came on together, daunting and roaring in anger. Intrepid in danger, Duryodhan slew thousands of warriors with his sharp arrows. We saw there the wonderful prowess of your son who alone fought with many warriors of the Pandavas. 50. Seeing his warriors in great distress, he said to them, " I see no place where you can hide yourself and be safe from the Pandavas. What is the use of your running away? Their army

च,। बल-घातान् न,वो हन्युः पाण्डवाः किं सुतेन वः ॥ ५२ ॥ अल्पञ्च बलम,तथा
कृष्णौ च प्रविक्षतौ । यदि सर्वेऽवतिष्ठामो ध्रुवं नो विजयो भवेत् ॥ ५३ ॥ विप्रथा
वालेषु नो निवाद्य पाण्डवाः कृतकिल्बिषान् ।अनुसृत्य वधिष्यन्ति श्रेयान्नः समरे वधः
॥ ५४ ॥ सत्य सांग्रामिका मृत्युः क्षत्रधर्मेण युध्यताम् । मृतो:दुःखं न जानीते प्रेत्य
चानन्त्यमश्नुते ॥ ५५ ॥ शृणुध्वं क्षत्रियाः सर्वे यावन्तः स्थ समागताः । यदा शूरश्च
भीरुश्च मारयत्यन्तको यमः ॥ ५६॥ को नु मूढो न युध्येत मादृशः क्षत्रियर्षभ ॥ ५७ ।
क्षिवतो भीमसेनस्य क्रुद्धस्य वशमेष्यथ । पितामहैराचरितं न धर्मं हातुमर्हथ ॥ ५८ ॥
न हि धर्मोऽस्ति पापीयान् क्षत्रियस्य पलायनं ।'न युद्धधर्माच्छ्रेयोऽन्यः पन्थाः स्वर्गस्य
कौरवाः । अचिरेण हता लोकं सर्वे योधाः समश्नुत ॥ ५९ ॥ सञ्जय उवाच । एवं

मैं बलदेवको नहीं देखताहूं जहांपर तुम भयसे पीड़ित होकर जाओ और वहां पाण्डवों के हाथसे बचने पाओ तुमको भागने से क्यालाभहै । ५२ । उनकी सेना बहुत कम रहगई है और श्रीकृष्ण अर्जुन अत्यन्त घायलहैं यदि तुम सबठहरो तो मेरी पूरीविजय है । ५३ । जो तुम भागोगे या पृथक्होगे तो पांडवलोग अपराधी जानकर तुमलोगों को पीछाकरके मारेंगे इस्से हमारा और तुम्हारा युद्धमेंही मरन श्रेष्ठहै । ५४ । क्षत्री धर्मसे युद्धमें लड़नेवालों की मृत्युकाहोना सुखरूप है क्योंकि मरने के दुःखों को नहीं भोगताहै शीघ्रही मरकर अविनाशी गतिको पाताहै ।५५। तुमजितने क्षत्री अब इकट्ठे हुयेहो सब चित्तलगाकर सुनो विजय नाश करनेवाला महाबली यमराजही भयभीत लोगों को मारताहै । ५६ । तो फिर मेरे समान क्षत्री व्रतका रखनेवाला कौनअज्ञानी युद्धको नहीं करेगा । ५७ । देखो भागनेसे एकतो क्रोधरूप हमारेशत्रु भीमसेनके आधीनहोगे दूसरे इस संसारमें अपकीर्तिपाकर स्वर्गवासी न होगे इसहेतुसे तुमलोगोंको अपने पूर्वजोंके कियेहुये धर्मका त्यागना उचित नहीं है । ५८ । भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्रोंका धर्म नहीं है हेकौरव लोगों युद्धसेबढ़कर क्षत्रियोंका कोई उत्तमधर्म नहीं है हे शूरवीरो जोतुमभी जाओगे तो थोड़ेही दिनोंमें शीघ्रलोकों को भोगोगे । ५९ । आपके पुत्रके इसरीति के

is exceedingly reduced in number and Krishn and Arjun are badly wounded. I can yet win a complete victory, if you stand firmly. They will chase you, if you run away or disperse. It is therefore better to die fighting. A kshatrya falling down in battle, does not feel the pangs of death and soon attains to an indestructible st t .55. Hear me attentively all the warriors here assembled : why should you not fight, when you know that powerful Yam slays those that are terrified? You should not deviate from the practice of your forefathers; for if you run away from battle, you will fall a prey to Bhim and shall forego heaven. There is no greater sin for a kshatrya than his running away from battle and no duty is more preferable to him than fighting. You

स्वङ्गैः सहेमजालैरुधिरौघसंप्लुतैः । शरावभिन्नैः पतितैश्च वाजिभिः श्वसद्भिरार्त्तं
क्षतजं वमद्भिः ॥ ४ ॥ दीनं स्तनद्भिः परिवृत्यनेत्रैर्मही दशद्भिः कृपणं नदद्भिः । तथाप
विद्धैर्गजवाजियोधैर्मन्दासुभिश्चैव गतासुभिश्च नराश्व
मातङ्ग रथैश्च मर्दितैः । मही महावैतरणीव दुर्दृशा गजैर्निकृत्तैः पतद्धस्तगात्रैः ॥ ६ ॥
उत्कम्पमानैः पतितैः पृथिव्यां विशीर्णदन्तैः क्षतजं वमद्भिः । स्फुरद्भिरार्त्तैः करुणं रणा
जिरे नतोष्ठवर्मायुधपात्रगोप्तृभिः ॥ ७ ॥ प्रकीर्णतूणीरपताककेतुभिः सुवर्णजालावतत
प्रैशाहतैः । मही बभौ ध्वजलदैरिवावृता वराहिभिर्नागरथाश्वयोधिभिः ॥ ८ ॥ पदा
तिभिश्चाभिमुखैर्हतैः परैर्विशीर्णवर्माभरणाम्बरायुधैः । शस्त्रप्रहाराभिहतैर्महाबलैश्चेष्ट
मानैः पतितैः सहस्रशः । प्रशान्तसंघैः पुनरुच्छ्वसद्भिर्महीव भूयानुगतैरिवाग्निभिः ॥ ९ ॥
कर्णार्जुनाभ्यां शरभिन्नगात्रैर्हतैः प्रवीरैः कुरुसृञ्जयानाम् । दिवश्च्युतैर्भूरतिदीप्तिमद्भि
र्नैकग्रहैर्योरमलैश्च दीप्तैः ॥ १० ॥ शराश्च कर्णार्जुनबाहुमुक्ता विदार्य नागाश्वमनुष्य

छिन्नवाणों से टूटे अंग श्वासा लेनेवाले रुधिर को वमन करनेवाले पीड़ामान पड़हुये घोड़ों सेभी भरीहुई पृथ्वी को देखो कुत्सित शब्दों को करते भग्न नेत्र पृथ्वी को काटनेवाले महादुखी गर्जते हुये हाथी घोड़े शूरवीर मनुष्य और सेनाही से घायल वीरों के समूहों से युक्त इस युद्धभूमिको देखो । ५ । निश्चय करके इसघोर युद्धमें यहपृथ्वी मन्द प्राणवाले युद्धाकर्त्ताओं से वैतरणीनदी के समान शोभायमान होरही है । ६ । कटेहुये हाथी कम्पायमान और टूटेहुये दांत रुधिर के वमन करनेवाले फड़कते पीड़ित शब्दों से दुखभोगते पृथ्वीपर पड़हुये मनुष्य वा हाथियों के शरीरों से पृथ्वीपूर्णहोरहीहै । ७ । टूटेपहिये, धान, जुये, योक्तर, वाछिदेहुये तूणीरपताका दण्डा अथवा सुवर्ण के जालों से युक्त अत्यन्त टूटहुये बड़े २ रथोंके समूहोंसे ऐसी भरीहुई है जैसेकि बादलोंसे भरीहुई होतीहै । ८ । जिनके कवच स्वर्णभूषण और शस्त्र टूटकर गिरपड़े उन सम्मुख होकर शत्रुओं के हाथसे मरे उत्तमनामा हाथी घोड़े और शूरवीर लड़ने वालों से पृथ्वी ऐसी व्याप्तहै जैसे कि शान्तरूप अग्नियोंसे व्याप्तहोती है । ९ । बाणों के प्रहारों से घायल देखनेवाले और गिरे हुये हजारों पराक्रमियों से ऐसी संयुक्तहै जैसे कि रात्रिके समय स्वर्गसे गिरेहुये अत्यन्त प्रकाशित स्वच्छ और देदीप्यमान ग्रहोंसेसंयुक्त पृथ्वी और अकाश होते हैं । १० ।

bleeding, pierced by arrows, and dropping down blood, the horses are seen lying on the ground which is covered by the shrieking elephants, horses and men of the army. 5. The field of battle looks like the Vaitarni The elephants with broken tusks and bleeding bodies, are lying on earth. The broken wheels, yokes, quivers, standards and other parts of cars fill the earth like clouds. With broken arms and armours men are lying on the ground like heaps of quenched fire Wounded by arrows, thousands of warriors are lying down like stars fallen down from the sky. 10. The arrows discharged by

॥ ३१ ॥ [illegible] वीरं शिरासने हतम् । गतासुमपि राधेयं न लक्ष्मीः प्रतिमुञ्चति
॥ ३२ ॥ निष्टप्तकनक ज्वलनार्कसमप्रभम् । जीवन्तमिव शूरञ्च सर्वभूतानि मेनिरे
॥ ३३ ॥ हतस्यापि महाराज सूतपुत्रस्य संयुगे । वित्रेसुः सर्वतो योधाः सिंहस्येवेतरे
मृगाः ॥ ३४ ॥ हतोऽपि पुरुषव्याघ्रो व्याहरन्निव दृश्यते । नाभवद्विकृतं किञ्चित्
मृतस्यापि महात्मनः ॥ ३५ ॥ चारुवेषधरं राजन् चारु मौलिशिरोधरम् । तन्मुखं
सूतपुत्रस्य पूर्णचन्द्रसमद्युति ॥ ३६ ॥ नानाभरणवान्राजं तप्तजाम्बूनदाङ्गदः । हतो
वैकर्तनः शेते पादपोऽङ्कुरवानिव ॥ ३७ ॥ कनकोत्तमसंकाशो ज्वलन्निव विभावसुः ।
स शान्तः पुरुषव्याघ्रः पार्थसायकवारिणा ॥ ३८ ॥ यथाहि ज्वलनो दीप्तो जलमासाद्य
शाम्यति । कर्णाग्निः शमितस्तद्वत् पार्थमेघेन संयुगे ॥ ३९ ॥ प्रगृह्य च यशो दीप्तं
सुयुद्धे नात्मनो भुवि । विसृज्य शरवर्षाणि प्रताप्य च दिशो दश । सपुत्रः पुरुषव्याघ्रः
संशान्तः पार्थतेजसा ॥ ४० ॥ प्रताप्य पाण्डवान् राजन् पाञ्चालान् स्वतेजसा । वर्षित्वा

। ३२ । तपाए सुवर्ण अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशमान उस शूरवीर को सब जीवोंने जीवितेहुये के समानही माना । ३३ । हे महाराज युद्धमें उस मरेहुये कर्ण से भी युद्धकर्त्ता लोग सब ओरसे ऐसे भयभीत हुये जैसे कि दूसरे मृग सिंह से भयभीत होते हैं । ३४ । क्योंकि वह मृतकहुआ भी पुरुषोत्तम जीवते के समान दिखाई देताथा मरने परभी उसमहात्माके रूपमें अन्तर नहीं हुआ । ३५ । इसीसे उस सुन्दर पोशाक मुकुट और ग्रीवा धारण करनेवाले वीर पुरुष को जीवतेके हैं समान सारा कर्णका वहमुख पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान नाना भूषण तप्त कांचनमयी बाजूबन्द धारण किये महा प्रकाशित होकर शोभासे युक्त वह सूर्य्यका पुत्र ऐसे मृतक होकर सोता है जैसे कि अंकुर रखनेवाला वृक्ष उत्तम सूर्य्य के समान प्रकाशमानहो । ३७ । वह पुरुषोत्तम कर्ण अर्ज्जुन के शायकरूपी जलसे ऐसे शान्त होगया जैसे कि प्रकाशमान देदीप्य अग्निको पाकर शान्त होजाता है । ३८ । इसीप्रकार कर्णरूप अग्नि युद्धमें अर्जुनरूप बादलसे शान्त कीहुई पृथ्वीपर उत्तम युद्धमें अपने प्रकाशित यशको प्राप्त करके बाणों की वर्षा को छोड़ दशों दिशाओं को तपाती हुई अर्जुन के तेजसे शान्तहुई । ३९ । वह सूर्य्यका पुत्रकर्ण अस्त्रोंके तेजसे सब पाण्डव और पांचालोंको तपाकर बाणोंकी वर्षासे शत्रुओंकी

living man after death and his appearance was not changed. 35. Possessed of fine clothes, diadem and neck, he was looked upon like a living man. With his face like the full moon and gold ornaments, he is glorious like the Sun in his sleep. He has become cool by Arjun's arrows as fire is quenched by a shower of rain. Karan's fire which spread its heat in all directions has been quenched by the shower of Arjun's arrows. Having wounded the Panchals and Pandavas by his arrows and terrified the world, he has been destroyed together with his son and car. 42. He was charitable to all and used to satisfy

शरवर्षेण प्रताप्य रिपुवाहिनीम् ॥ ४१ ॥ श्रीमानिव सहस्रांशु र्जगत् सर्वं प्रताप्य च । हतोऽसि कर्त्तनः कर्णः सपुत्रः सहवाहनः ॥ ४२ ॥ अर्थिनां पक्षिसंघस्य कल्पवृक्षोनिपातितः । ददानीत्येव योऽयोचन्न नास्तीत्यर्थितोर्थिभिः । ४३ ॥ सद्भिः सदा सत्पुरुष स हतो द्वैरथे वृषः । यस्य ब्राह्मणसात् सर्वं वित्तमासीन्महात्मनः । नादेयं ब्राह्मणेष्वासीद्यस्य स्वमपि जीवितम् ॥ ४४ ॥ सदा नृणां प्रियो दाता प्रियदानो प्रियंगतः । स पार्थास्त्रविनिर्दग्धो गतः परमिकां गतिम् ॥ ४५ ॥ यमाश्रित्याकरोद्वैरं पुत्रस्ते, स गतो दिवम् । आदाय तव पुत्राणां जयाशां शर्म वर्म च ॥ ४६ ॥ हते कर्णे सरितो न प्रसस्रुर्जगाम चास्तं कलयो दिवाकरः । ग्रहश्च तिर्यग्ज्वलितार्कवर्णः सोमस्य पुत्रो भ्युदियाय तिर्यक् ॥ ४७ ॥ नभः पफालेव ननाद चोर्वी ववुश्च वाताः परुषा सुघोरा दिशः सधूमाश्च भृशं प्रजज्वलु र्महार्णवाश्च सुक्षुभिरे च सस्वनाः ॥ ४८ ॥ सकाननाश्च

सेना को व्यथितकर श्रीमान् सूर्य के समान सब संसार को तपाताहुआ पुत्र और सवारी समेत मारागया । ४२ । यहकर्ण आकांक्षा करनेवाले मनुष्य और पक्षियों का कल्पवृक्ष था जो कि आकांक्षा करनेवाले सत्पुरुषों को सदैव की यथेप्सित दानदिया करताथा । ४३ । कभी किसीप्रकारकेभी याचना करनेवाले से यहवस्तु नहीं है इस वचनको नहींकहा ऐसासत्पुरुष कर्ण द्वैरथ युद्धमें मारागया जिस महात्माका सबधन ब्राह्मणों केही देनेके योग्य हुआ जिसका सबजीवन ब्राह्मणों को किसी वस्तुका अदेयरूप नहींहुआ । ४४ । सदैव स्त्रियोंके प्यारेदानी अर्जुनके अस्त्रसे मरेहुये उस महारथीने परमगतिको पाया जिसके आश्रयमें होकर आपके पुत्रने शत्रुताकरीथी । ४५ । वह आपके पुत्रोंकी विजयकी आशा प्रसन्नता और रक्षाको साथ लेकर स्वर्ग कोगया कर्णके मरनेपर नदियों ने चलना बन्द किया और सब संसार का प्रकाशक सूर्यभी अस्तहोगया तिर्यग ग्रह और अग्नि सूर्य के वर्ण समान हुये और चन्द्रमा पुत्र बुध उदयहोने के निमित्त तिरछा होगया । ४७ । आकाश चलायमान हुआ पृथ्वी शब्दायमान हुई सूक्ष्म महाभयकारी वायु चली दिशा ज्वलित रूपहुई और महा समुद्र धूम और शब्दसे युक्त होकर चलायमानहुआ काननों समेतसब पर्वतों के समूह कंपायमानहुये और सबजीवों के समूह

the desires of good men. He never told a beggar that he had nothing to give. He who dedicated all his wealth to Brahmans, has been slain in battle. He never held his property and life dear in the cause of Brahmans. He had dedicated his whole life for their sake. That generous and popular man has been slain by Arjun's arrows. He, on the strength of whose help your sons had made the Pandavas their enemies, has gone to heaven. 45. He took with him the happiness, refuge and the hope of victory to your sons. Rivers ceased to flow at his death and the Sun who gives light to the world, went down. The course of stars was oblique and Woden the

द्रिपाभा विद्रुह्रिरे प्रविव्यथुः भूतगणाश्च मारिष । बृहस्पतिं रोहिणीं,सम्परीक्ष्य बभूव चन्द्रार्क समानवर्णः ॥ ४९ ॥ हतेपि कर्णे विदिशाश्च जज्वलुः स्तमोवृता द्यौर्विचचाल भूमिः। पपात चोल्का ज्वलनप्रकाशा निशाचराश्चाप्यभवन प्रहृष्टाः॥५०॥शशिप्रकाशाननमर्जुनोग्रः क्षुरेण.कर्णस्य शिरोऽन्वपातयत् । तदान्तरिक्षे दिवि चैव राजन् बभूव हाहेति महास्वनः ॥ ५१ ॥ स देवगन्धर्वमनुष्यपूजितं निहत्य कर्णं रिपुमाहवेऽर्जुनः । रराज पार्थः परमेण तेजसा वृत्रं निहत्येव सहस्रलोचनः ॥ ५२ ॥ ततो रथेनाम्बुदवृन्दनादिनाशरन्नभोमध्यगभास्करत्विषापताकिनाभीमनिनादकेतुनाहिमेन्दुशंखस्फटिकावभासिना॥५३॥ महेन्द्रवाहप्रतिमेनतावुभौ महेन्द्रवीर्यप्रतिमानपौरुषौ। सुवर्णमुक्तामणिवज्रविद्रुमैरलंकृताचाप्रतिमेनरंहसा ॥ ५४ ॥ नरोत्तमौपाण्डवकेशिमर्दिनावुदीरिताग्नि दिवाकरोपमौ । रणाजिरे वीतभयौ विचेरतुःसमानयानाविवविष्णुवासवौ ॥५५॥

पीड़ामानहुये और हे राजा बृहस्पतिजी रोहिणीको घेरकर चन्द्रमा और सूर्य के समानहुये । ४९ । कर्णके मरनेपर विदिशा भी प्रज्वलितहोगईं आकाश अन्धकारसे युक्त हुआ अग्निके समान प्रकाशमान उल्कापातहुये राक्षसभी अत्यन्त प्रसन्नहुये । ५० । जब अर्जुनने चन्द्रमुखवाले प्रकाशमान कर्ण के शिरको अपने क्षुरसे काटा तब आकाशमें देवतालोग अकस्मात् हाय हाय ऐसाशब्द करनेलगे । ५१ । वह अर्जुन देव गन्धर्व और मनुष्यों से पूजित अपने शत्रु कर्णको युद्धमें मारकर बड़े तेजसे शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्वसमयमें वृत्रासुरको मारकर इन्द्र शोभायमान हुआथा । ५२ । इसके पीछे महाइन्द्रके समान पराक्रम करनेवाले वहदोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन बादलों के समूह के समान शब्दायमान आकाशस्थ मध्याह्न के सूर्य के समान प्रकाशित पताका और भयानकशब्दवाली ध्वजा रखनेवाले हिमचन्द्रमा और शंखके समान श्वेत उज्ज्वल महाइन्द्र रथके तुल्य अनुपम सवारी में बैठेहुये युद्धमें विष्णु और इन्द्रके समान शोभायमानहुये अर्थात् सुवर्ण मणि हीरे मोती और मूंगोंसे अलंकृत अग्नि और सूर्यके समान तेजस्वी दोनों नरोत्तम केशवजी और पाण्डव अर्जुनथे इसके पीछे उन गरुड़ध्वज और वानरध्वज

son of the moon changed its course. The sky moved; the earth was filled with noise and the wind storm was dreadful; the directions were illumined and the Ocean was full of smoke and noise. The mountains with their forests shook, and Vrihaspati, coming round Rohni, shone like the Sun and moon. The directions became bright and the sky became dark at the death of Karan. Meteors fell down like fire and the rakshasas were pleased. 50. The gods in heaven cried with grief, when Arjun cut off Karan's head with his arrows. Having slain his foe, Arjun, respected by gods, gandharvas and men, looked glorious like Indra after slaying Vritrasur. Shri Krishn and Arjun of Indra like prowess, with their standard thundering like clouds and bright like the

तथो धनुर्ज्यातलघातनिःस्वनैः प्रसह्य कृत्वा च रिपुं हतप्रभम् । संसादयित्वैव कुरून् शरौघैः कपिध्वजः पक्षिवरध्वजश्च ॥ ५६ ॥ दृष्टौ तत्तस्तावमितप्रभावौ मनांस्यरीणाम वदारयन्तौ । सुवर्णजालावततौ महास्वनौ हिमावदातौ परिगृह्य पाणिभिः । चुचुंबतुः शंखवरौ नृणांवरौ वराननाभ्यां युगपच्च दध्मतुः ॥५७॥ पाञ्चजन्यस्य निर्घोषो देवदत्तस्य चोभयोः । पृथिवीं चान्तरीक्षञ्च दिवश्च समपूरयत ॥ ५८ ॥ वित्रस्ताश्चाभवन् सर्वे कुरवो राजसत्तम । शङ्खशब्देन शूरस्य माधवस्यार्जुनस्य च ॥ ५९ ॥ तौ शङ्खशब्देन निनादयन्तौ वनानि शैलान् सरितो दिशश्च । वित्रासयन्तौ तव पुत्रसेनां युधिष्ठिरं नन्दयतां वरिष्ठौ ॥ ६० ॥ ततः प्रयाताः कुरवो जवेन श्रुत्वैव शंखस्वनमीर्य्यमाणम । विहाय मद्राधिपतिं पतिञ्च दुर्य्योधनं भारत भारतानाम ॥ ६१ ॥ महाहवे तं बहुशोभमानं धनञ्जयं भूतगणाः समेताः । तदान्वमोदन्त जनार्दनञ्च प्रभाकराविवाभ्युदितौ यथैव ॥ ६२ ॥ समाचितौ कर्णशरैः परन्तपावुभौ व्यभातां समरेच्यु

श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन ने हठ करके धनुष प्रत्यंचा और बाणों के शब्दों से शत्रुओं को प्रभा रहित करके कौरवों को उत्तम बाणों से ढककर उन प्रसन्न चित्त अतुल प्रभाव वाले शत्रुओं के मनको संदेह करनेवाले, नरोत्तमोंने सुवर्ण जालसे युक्त बड़े शब्दवाले उत्तम शंखोंको हाथ में लेकर मुखसे चुम्बनकर अकस्मात् अपने मुखों से बजाया । ५७ । उन पांचजन्य और देवदत्त नाम दोनों शंखों के शब्दोंने पृथ्वी दिशा विदिशाओं समेत आकाश को शब्दायमान किया । ५८ । हे राजाओं में श्रेष्ठ अर्जुन और माधवजीके उन शंखोंके शब्दों से सब कौरव लोग भयभीतहुये । ५९ । शंखों के शब्दों से वन पर्व्वत नदी और पर्व्वतोंकी कन्दराओं को शब्दायमान करनेवाले उन दोनों पुरुषोत्तमोंने आपके बेटेकी सेनाको भयभीत करके राजा युधिष्ठिर को प्रसन्नकिया । ६० । हे भरत वंशी इसके अनन्तर उनके शंखोंके शब्दों को सुनकरसब कौरव लोग भरतवंशियों के राजा दुर्योधन को और राजामद्रको छोड़कर बड़े बेगसे भागे तब जीवों के भागनेवाले बड़े समूहों ने उस बड़े युद्धमें बड़ेतेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन को ऐसे प्रसन्न किया जैसे कि उदय होनेवाले दो सूर्य्य को सब प्रसन्न करते

Sun, in their good car drawn by silver white horses, looked glorious like Vishnu and Indra. Decked with gold and precious stones, Keshav and Arjun looked glorious like Sun and fire. Having made the foes lose heart by the sounds of their bowstring and arrows, the two warriors covered and terrified the Kauravas with their arrows. They took their gold decked conchs in their hands and sent forth shrill notes which rang through heaven and earth. The Kauravas were terrified on hearing those blasts which echoed through hills, rivers and caves terrifying the army of your sons and pleasing that of Yudhishthir. 60. On hearing the sound of those conchs, the Kauravas fled away, leaving Duryodhan and Shalya alone. Arjun and Krishn were

नार्जुनौ । ततो विद्वस्याङ्ग्युदितौ यथामलौ शशाङ्कसूर्य्याविव रश्मिमालिनौ ॥ ६३ ॥
विहाय तान् बाणगणान्महाबलौ सुहृद्वृतावप्रतिमानविक्रमौ । सुखं प्रविष्टौ शिबिरं स्वमीश्वरौ सदस्यैनिन्द्राविव वासवाच्युतौ ॥ ६४ ॥ तौ देवगन्धर्व मनुष्यचारणैर्महर्षि यक्षमहोरगैरपि । जयाभिवृद्ध्या परयाभिपूजितौ हते तु कर्णे परमाहवे तदा ॥६५॥
यथेभिरूपं प्रतिगृह्य तानथ प्रशस्यमानावतुलैश्च कर्मभिः । ननन्दतुस्तौ ससुहृद्गणौ तदा बलिं निबध्येव सुरेशकेशवौ ॥ ६६ ॥

इति कर्णपर्वणि शिबिरप्रवेशे चतुर्नवतोध्यायः ९४ ॥

हैं । ४१ उस युद्धमें कर्णके बाणों से छिदेहुये शत्रुओं के संतप्त करनेवाले दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ऐसे प्रकाशमानहुये जैसे कि किरण समूहों करयुक्त बाले निर्मल चन्द्रमा और सूर्य्य उदयहोकर अंधकार को दूर करके प्रकाशमान होतेहैं वह अनुपम पराक्रमी दोनोंईश्वर उन बाण समूहों को छोड़कर मित्रो को साथमें लियेहुये सुख पूर्वक अपने डेरोंमें ऐसे पहुँचे जैसे कि सदस्यों के बुलायेहुये विष्णु और इन्द्रजाते हैं । ६४ । तब कर्णके मरनेपर उस बड़े युद्ध में वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन देवता गन्धर्व मनुष्य चारण महर्षि यक्ष राक्षस और महासर्पोंकेभी अपूर्व उत्तम विजय के आशीर्वादों से पूजितहुये । ६५ । फिर वह योग्य आशीर्वादोंसे युक्त दोनों अपने गुणोंसे स्तुतिमान होकर अपने मित्रोंसमेत ऐसे प्रसन्नहुये जैसे कि राजा बलिको विजय करके देवगणों समेत इन्द्र और विष्णु प्रसन्नहुये थे । ६६ ॥

pleased at their flight. Pierced by Karan's arrows, Shree Krishn and Arjun, the destroyers of foes, looked glorious like the Sun and moon the destroyer of darkness with their rays. Accompanied by their friends, they entered their tents like Vishnu and Indra. Both Shri Krishn and Arjun were blessed by gods, gandharvas, men, charans, rishis, yakshes and serpents. Having recieved their benedictions, they were pleased like Vishnu and Indra at their conquest of Bali." 65.



सञ्जय उवाच । हते वैकर्तने कर्णे कुरवो भयपीडिताः । वीक्षमाणा दिशः सर्वाः पलायन्तो स्म सर्वतः ॥ १ ॥ वीरं तु निहतं श्रुत्वा शत्रुभिः परमाहवे । सर्वे दिशोऽभ्यद्रवन्त तावका भयमोहिताः ॥ २ ॥ ततोऽवहारं चक्रुस्ते राजन् योधाः समन्ततः । वार्यमाणा भयोद्विग्नास्तव पुत्रेण भारत ॥ ३ ॥ तेषान्तु मतमाज्ञाय पुत्रस्ते भरतर्षभ । अवहारं ततश्चक्रे शल्यस्यानुमते नृप ॥ ४ ॥ कृतवर्मा रथैः सार्द्धं वृतो भारत तावकैः । हतशेषैस्सपदिः शिबिरायैव दुद्रुवे ॥५॥ गान्धाराणां सहस्रेण शकुनिः परिवारितः । हतमाधिरथिं दृष्ट्वा शिबिरायैव दुद्रुवे ॥ ६ ॥ कृपः शारद्वतो राजन् नागानीकेन संवृतः । महता मेघकल्पेन शिबिरायैव दुद्रुवे ॥ ७ ॥ अश्वत्थामा ततः शूरो विनिश्वस्य मुहुर्मुहुः । पाण्डवानां जयं दृष्ट्वा शिबिरायैव दुद्रुवे ॥ ८ ॥ संशप्तकावशेषेण बलेन महता वृतः । सुशर्मापि ययौ राजन् वीक्षमाणो भयातुरान् ॥ ९ ॥ दुर्योधनस्तु

अध्याय ९५ ॥

संजय बोले कि हे राजा कर्ण के मरनेपर भयसे पीड़ितहो सब दिशाओं को देखतेहुये कौरवलोग भागे । १ । अर्थात् घोर युद्धमें अर्जुन के हाथसे कर्णको माराहुआ देखकर आपके सब शूरवीर घायल और भयभीत होकर दिशाओं में छिन्नभिन्नहुये।२।इसके पीछे चारोंओर से व्याकुल और महा दुःखी होकर आप के उन सब शूरोंने विश्राम किया हे राजा इसके पीछे आपके पुत्र दुर्योधनने उनसब के उत्तमतको जानकर शल्यके मतसे विश्राम किया । ४ । हे भरतवंशी आपके शीघ्रगामी रथ और शेषबचीहुई नारायणी सेनासे युक्त कृतवर्मा डेरेकी ओरको चला । ५ । हजारों गन्धार देशियोंसे व्याप्तशकुनि भी कर्ण को मृतक देखकर डेरे की ओरचला । ६ । हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र शारद्वत कृपाचार्य्यजी भी बड़े बादलोंके समान हाथियों की सेनाको साथलिये डेरेकी ओरको चले । ७ । फिर बड़े शूरवीर अश्वत्थामा बारम्बार श्वासलेते पाण्डवों की विजय को देखकर डेरेकी ओरको चले । ८ । हे राजा शेष बचीहुई संसप्तकों की सेनाको साथलिये हुये सुशर्मा भी भय से पीड़ित चारोंओर को देखता हुआ चलदिया । ९ ।

CHAPTER XCV

Sanjaya said, "The Kauravas fled in all directions at the death of Karan. Seeing him wounded by Arjun's arrows, they dispersed on all sides. They went away to take rest and Duryodhan too, retired for the night by the entreaties of Shalya. Kritvarma too, went away to the camp accompanied by the rest of the army. 5. Shakuni, accompanied by the Gandhar forces went to the camp. Kripacharya, followed by the army of elephants, huge as clouds, went towards the camp. Seeing the victory of the Pandavas, Ashwathama, with deep sighs, *went to* the camp. Susharma, with the rest of the Sansaptak army went away looking in all directions. Duryodhan too, who had

नृपतिर्हतसर्वस्वभ्रातृः । ययौ शोकसमाविष्टश्चिन्तयन् विमना बहु ॥ १० ॥ हीनध्वजेन शल्यस्तु रथेन रथिनांवरः । प्रययौ शिबिरायैव वीक्षमाणो दिशो दश ॥ ११ ॥ ततोपरे सुबहवो भारतानां महारथाः । प्राद्रवन्त भयत्रस्ता ह्रियाविष्टा विचेतसः ॥ १२ ॥ असृक्क्षरन्तो भयोद्विग्ना वेपमाना भयातुराः । कुरवः प्रद्रुताः सर्वे दृष्ट्वा कर्णं निपातितम् ॥ १३ ॥ प्रशंसन्तोर्जुनं केचित् केचित् कर्णं महारथाः । व्यद्रवन्त दिशो भीताः कुरवः राजसत्तम ॥ १४॥ तेषां योधसहस्राणां तावकानां महामृधे । नासीत्तत्र पुमान् कश्चिद्योद्धुं यो मन आदधे ॥ १५ ॥ हते कर्णे महाराज निराशाः कुरवोभवन् । जीवितेष्वथ राज्येषु दारेषु च धनेषु च ॥ १६ ॥ तान् समानीय पुत्रस्ते यत्नेन महता प्रभो । निवेशाय मनोदध्रे दुःखशोकसमन्वितः ॥ १७ ॥ तस्याज्ञां शिरसा तेपि प्रतिगृह्य विशाम्पते । विवर्णवदना दीनाः न्यवर्त्तन्त महारथाः ॥ १८ ॥

इति कर्णपर्वणि कौरवपलायने पञ्चनवतोध्यायः ९५ ॥

फिर जिसके सब बांधव मारेगये वह शोकमें डूबाहुआ अनमनचित्त राजा दुर्योधन भी बड़ी चिन्ताओं करताहुआ चलदिया । १० । रथियोंमें श्रेष्ठशल्यभी दशों दिशाओं को देखता टूटी ध्वजावाले रथकी सवारीसे डेरेकी ओरको चला । ११ । इसके पीछे भरतवंशियों के बहुत से अन्य महारथीभी भयसे पीड़ित लज्जा से युक्त उदास चित्त होकरभागे । १२ । इसीप्रकार रुधिर टपकते व्याकुल कंपित महा दुःखी सब कौरव कर्णको गिराहुआ देखकरभागे । १३ । हे कौरव्य कोई कौरव तो महारथी अर्जुनकी और कोई कर्णकी प्रशंसा करतेहुए दिशाओं को भागे।१४। फिर वहां बड़े युद्धमें आपके हजारों शूरवीरों के मध्यमें कोई ऐसा मनुष्य नहींरहा जिसने कि फिर युद्धके निमित्त चित्त कियाहो । १५ । हे महाराज कर्णके मरने से कौरवलोग जीवन राज्य और स्त्रीकी आशासे भी निराश होगये । १६ । दुःख शोक से युक्त आपके समर्थ पुत्रने बड़े २ उपायोंसे उनको इकट्ठाकरके निवास के लिये चित्तकिया फिरवह रूपांतर दशावाले महारथी शूरवीर उसकी आज्ञाको शिर से अंगीकार करके ठहरे १८ ॥

lost all his kinsmen, went on with a dejected mind.10 Shalya the best of warriors, went on looking in all directions, from his car of which the standard had fallen down. The other Kaurav warriors, terrified ashamed and dejected, fled away from the field, bleeding and terror striken at the sight of Karan's fall. Some praised Arjun while others went on giving praises to Karan. Out of our thousands of warriors none desired to join again in battle. They lost all hope of their kingdom, life and women. Full of grief and sorrow, your son rallied them to go to the camp and they obeyed his orders." 18.

सञ्जय उवाच । तथा निपातिते कर्णे तव सैन्ये च विद्रुते । आश्लिष्य पार्थं दाशार्हो हर्षाद्वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ हतो वज्रभृता वृत्रस्त्वया कर्णो निपातितः । वधं वै वृत्र कर्णाभ्यां कथयिष्यन्ति मानवाः ॥ २ ॥ वज्रेण निहतो वृत्रः संयुगे भूरितेजसा । त्वया तु निहतः कर्णो धनुषा निशितैः शरैः ॥ ३ ॥ तमिमं विक्रमं लोके प्रथितन्ते यशस्करं निवेदय स्व कौन्तेय धर्मराजाय भारत ॥ ४ ॥ वधं कर्णस्य संग्रामे दीर्घकालचिकीर्षितम् । निवेद्य धर्मराजाय त्वमानृण्यं गमिष्यसि ॥ ५ ॥ वर्त्तमाने तु युद्धे वै तव कर्णस्य चोभयोः । द्रष्टुमायोधनं पूर्वमागतो धर्मनन्दनः ॥ ६ ॥ सुभृशं गाढविद्धत्वान्न शक्तः स्थातुमाहवे । ततः स्वशिबिरं यातः स राजा पुरुषर्षभः ॥ ७ ॥ तथेत्युक्तः केशवस्तु पार्थेन यदुपुङ्गव । पर्यावर्त्तयदव्यग्रो रथं रथवरस्य तम् ॥ ८ ॥ एवमुक्त्वार्जुनं कृष्ण

अध्याय ९६ ॥

संजय बोले कि इसप्रकारसे कर्णके गिराने और शत्रुओं की सेनाके भागने पर श्रीकृष्णजी अर्जुन से प्रीति पूर्व्वक मिलकर बड़े आनन्द से इस वचनकोबोले । १ । हे अर्जुन जैसे इन्द्रके हाथसे वृत्रासुर मारागया वैसेही तेरे हाथसे कर्ण मारा गया सब मनुष्य कर्ण और वृत्रासुर के घोर मरण को सदैव कहैंगे । २ । युद्ध में बड़े तेजस्वी वृत्रासुर जैसे वज्रसे मारागया उसीप्रकार तुम्हारे धनुष से छूटेहुये तीक्ष्णबाणों से कर्ण मारागया । ३ । हे कुन्ती के पुत्र लोक में विख्यात यश करनेवाले अर्जुन तेरे इस पराक्रम को उस बुद्धिमान राजा युधिष्ठिर से वर्णनकरें । ४ । युद्धमें कर्ण के मारने को बहुत दिनसे कहनेवाले धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह वचन कहकर तुम उनके ऋणसे अऋण होगे । ५ । तेरे और कर्ण के बड़े घोर और अपूर्व युद्ध होनेपर धर्मनन्दन राजायुधिष्ठिर पूर्वही युद्धभूमि देखने को आये । ६ । फिर अत्यन्त घायल होने से युद्धमें नियत होनेको समर्थ न होकर वह पुरुषोत्तम अपने डेरे में पहुँचकर नियतहुये । ७ । अर्जुन से बहुत अच्छा कहे हुए बड़े सावधान यादवेन्द्र केशवजी ने उस उत्तम रथीके श्रेष्ठ रथकोलौटाया । ८ । श्रीकृष्णजी अर्जुन से इसप्रकारकी बात कहकर सेनाके मनुष्यों से बोले कि हे उत्तम शूरवीर लोगोतुम सावधान होकर शत्रुओंके सम्मुख होकर लड़ो तुम्हारा

CHAPTER XCVI

Sanjaya said, " At the death of Karan, S'ri Krishn embraced Arjun affectionately and said, " Karan has been slain by you as Indra slew Vritrasur and this will be the talk of the world for ever. He has been slain by your arrow as Vritrasur was slain by vajra. Let us infrom Yudhishthir of your famous deed of prowess, Thus we shall be able to satisfy his long pent up desire.5. He came to see the state of affairs when your were fighting with Karan, but unable to stay long on account of his wound, he returned to his tent. " Then, with the consent of Arjun, Krishn turned back the good car. Then turning

सैनिकानिदमब्रवीत् । परानभियुक्ता यत्ता स्तिष्ठध्वं भद्रमस्तु वः ॥ ९ ॥ धृष्टद्युम्नं युधामन्युं माद्रीपुत्रौ वृकोदरम् । युयुधानञ्च गोविन्द इदं वचनमब्रवीत् ॥ १० ॥ यावदावेद्यते राज्ञे हतः कर्णोऽर्जुनेन वै । तावद्भवद्भिर्यत्तैस्तु भवितव्यं नराधिपैः ॥११॥ स तैः शूरैरनुज्ञातो ययौ राजनिवेशनम् । पार्थमादाय गोविन्दो ददर्श च युधिष्ठिरम् ॥ १२ ॥ शयानं राजशार्दूलं काञ्चने शयनोत्तमे । अगृह्णीतां च मुदितौ चरणौ पार्थिवस्य तौ ॥ १३ ॥ तयोः प्रहर्षमालोक्य प्रहारांश्चातिमानुषान् । राधेयं निहतं मत्वा समुत्तस्थौ युधिष्ठिरः ॥ १४ ॥ समुत्थाय महाबाहुः पुनः पुनररिन्दमः । वासुदेवार्जुनौ प्रेम्णा पुनश्च परिषस्वजे । वासुदेवश्च पार्थेन पप्रच्छ कुरुनन्दनः ॥ १५ ॥ ततोऽस्मै यथावृत्तं वासुदेवः प्रियंवदः । कथयामास कर्णस्य निधनं यदुनन्दनः ॥ १६ ॥ ईषदुत्स्मयमानस्तु कृष्णो राजानमब्रवीत् । युधिष्ठिरं हतामित्रं कृताञ्जलिरथाच्युतः ॥ १७ ॥ दिष्ट्या गाण्डीवधन्वा च पाण्डवश्च वृकोदरः त्वञ्चापि कुशली राजा माद्री

कल्याण होगा । ९ । गोविन्दजी, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, नकुल, सहदेव, भीमसेन और युयुधान से यह वचन बोले कि हम जबतक अर्जुन के हाथसे कर्ण का वध राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें तबतक आप सब लोगों को राजाओं समेत निवास करना योग्य है । ११ । तब उन शूरों की आज्ञा पाकर गोविन्दजी अर्जुन को साथ लेकर डेरेको गये और राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर को सुवर्ण रचित अच्छे शयन स्थान में सोताहुआ देखा तब उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ने राजा के दोनों चरणों को स्पर्शकिया । १३ । उस समय युधिष्ठिरने उन दोनों को प्रसन्न देखकर बड़ी प्रसन्नता के अश्रुपातों को डाला और कर्ण को मृतक मानकर महाबाहु शत्रुंजय राजा युधिष्ठिर उठकर वारम्वार दोनों अर्जुन और वासुदेवजी को अत्यन्त प्रेमसे मिले फिर यादवों में श्रेष्ठ वासुदेवजी ने जैसे कि अर्जुन ने युद्ध करके उस कर्णका वध किया वह सब वृत्तान्त उस से वर्णनकिया ।१६। फिर मन्द मुसकान करते अविनाशी श्रीकृष्णजी हाथ जोड़कर अजात शत्रु राजा युधिष्ठिर से यह वचन बोले हे राजा प्रारब्ध से गांडीव धनुष धारी अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और तुम कुशल पूर्वक हो अब तुम इन

to the warriors of the army, he said, "Good warriors, face the enemies bravely and you will be happy." Then turning to Dhrishtadyumn, Yudhamanyu, Nakul, Sahadev, Bhim and Satyaki, he said, "You may take rest while Arjun and I are going to inform Yudhishthir of Karan's fall" 11. Saying good night to them, Shri Krishn and Arjun entered the tent and saw Yudhishthir lying on a comfortable bed. They touched his feet. Seeing them full of cheer he shed tears of joy. Beliving that Karan was slain, he embraced Arjun and Vasudev again and again. Then Vasudev told him how Arjun had slain Karan. With joined palms he said to Yudhishthir, "It is

सञ्जय उवाच । तथा निपातिते कर्णे तव सैन्ये च विद्रुते । आश्लिष्य पार्थं दाशार्हो हर्षाद्वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ हतो वज्रभृता वृत्रस्त्वया कर्णो निपातितः । वधं वै वृत्र कर्णाभ्यां कथयिष्यन्ति मानवाः ॥ २ ॥ वज्रेण निहतो वृत्रः संयुगे भूरितेजसा । त्वया तु निहतः कर्णो धनुषा निशितैः शरैः । ३ ॥ तमिमं विक्रमं लोके प्रथितं ते यशस्करं निवेदयावः कौन्तेय धर्मराजाय धीमते ॥ ४ ॥ वधं कर्णस्य संग्रामे दीर्घकालचिकीर्षितम् । निवेद्य धर्मराजाय त्वमानृण्यं गमिष्यसि ॥ ५ ॥ वर्तमाने तु युद्धे वै तव कर्णस्य चोभयोः । द्रष्टुमायोधनं पूर्वमागतो धर्मनन्दनः ॥ ६ ॥ सुभृशं गाढविद्धत्वाच्च शक्तः स्थातुमाहवे । ततः स्वशिबिरं यातः स राजा पुरुषर्षभः ॥ ७ ॥ तथेत्युक्तः केशवस्तु पार्थेन यदुपुङ्गवः । पर्यवर्तयदव्यग्रो रथं रथवरस्य तम् ॥ ८ ॥ एवमुक्त्वार्जुनं कृष्ण

अध्याय ९६ ॥

संजय बोले कि इसप्रकारसे कर्णके गिराने और शत्रुओं की सेनाके भागने पर श्रीकृष्णजी अर्जुन से प्रीति पूर्वक मिलकर बड़े आनन्द से इस वचनकोबोले । १ । हे अर्जुन जैसे इन्द्रके हाथसे वृत्रासुर मारागया वैसेही तेरे हाथसे कर्ण मारा गया सब मनुष्य कर्ण और वृत्रासुर के घोर मरण को सदैव कहेंगे । २ । युद्ध में बड़े तेजस्वी वृत्रासुर जैसे वज्रसे मारागया उसीप्रकार तुम्हारे धनुष से छूटेहुये तीक्ष्णबाणों से कर्ण मारागया । ३ । हे कुन्ती के पुत्र लोक में विख्यात यश करनेवाले अर्जुन तेरे इस पराक्रम को उस बुद्धिमान राजा युधिष्ठिर से वर्णनकरें । ४ । युद्धमें कर्ण के मारने को बहुत दिनसे कहनेवाले धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह वचन कहकर तुम उसके ऋणसे अऋण होगे । ५ । तेरे और कर्ण के बड़े घोर और अपूर्व युद्ध होनेपर धर्मनन्दन राजायुधिष्ठिर पूर्वही युद्धभूमि देखने को आये । ६ । फिर अत्यन्त घायल होने से युद्धमें नियत होनेको समर्थ न होकर वह पुरुषोत्तम अपने डेरे में पहुँचकर नियतहुये । ७ । अर्जुन से बहुत अच्छा कहे हुए बड़े सावधान यादवेन्द्र केशवजी ने उस उत्तम रथीके श्रेष्ठ रथकोलौटाया।८। श्रीकृष्णजी अर्जुन से इसप्रकारकी बात कहकर सेनाके मनुष्यों से बोले कि हे उत्तम शूरवीर लोगोतुम सावधान होकर शत्रुओंके सम्मुख होकर खड़े तुम्हारा

CHAPTER XCVI

Sanjaya said, " At the death of Karan, Sri Krishn embraced Arjun affectionately and said, " Karan has been slain by you as Indra slew Vritrasur and this will be the talk of the world for ever. He has been slain by your arrow as Vritrasur was slain by vajra. Let us infrom Yudhishthir of your famous deed of prowess, Thus we shall be able to satisfy his long pent up desire.5. He came to see the state of affairs when your were fighting with Karan, but unable to stay long on account of his wound, he returned to his tent. " Then with the consent of Arjun, Krishn turned back the good car. Then turning

सैनिकान्ति दमब्रवीत् । परानभिमुखा यत्ता स्तिष्ठध्वं भद्रमस्तु वः ॥ ९ ॥ धृष्टद्युम्नं
युधामन्युं माद्रीपुत्रौ वृकोदरम । युयुधानञ्च गोविन्द इदं वचनमब्रवीत् ॥ १० ॥
यावदावेद्यते राज्ञे हतः कर्णोऽर्जुनेन वै । तावद्भवद्भिर्यत्तैस्तु भवितव्यं नराधिपैः ॥११॥
स तैः शूरैरनुज्ञातो ययौ राजनिवेशनम । पार्थमादाय गोविन्दो ददर्श च युधिष्ठिरम
॥ १२ ॥ शयानं राजशार्दूलं काञ्चने शयनोत्तमे । अगृह्णीताञ्च मुदितौ चरणौ
पार्थिवस्य तौ ॥ १३ ॥ तयोः प्रहर्षमालोक्य प्रहारांश्चा तिमानुषान् । राधेयं निहतं
मत्वा समुत्तस्थौ युधिष्ठिरः ॥ १४ ॥ समुत्थाय महाबाहुः पुनः पुनररिन्दमः । वासुदेवा
र्जुनौ प्रेम्णा पुनश्च परिषस्वजे । वासुदेवञ्च वार्ष्णेयं पप्रच्छ कुरुनन्दनः ॥ १५ ॥ ततो
ऽस्मै यथावृत्तं वासुदेवः प्रियम्वदः । कथयामास कर्णस्य निधनं यदुनन्दनः ॥ १६ ॥
ईषदुत् स्मयमानस्तु कृष्णो राजनमब्रवीत् । युधिष्ठिरं हतामित्रं कृताञ्जलि रथाच्युतः
॥ १७ ॥ दिष्ट्या गाण्डीवधन्वाच पाण्डवश्च वृकोदरः त्वञ्चापि कुशली राजा माद्री

कल्याण होगा । ९ । गोविन्दजी, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, नकुल, सहदेव, भीम सेन और युयुधान से यह वचन बोले कि हम जबतक अर्जुन के हाथसे कर्ण का वध राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें तवतक आप सब लोगों को राजाओं समेत निवास करना योग्य है । ११ । तब उन शूरों की आज्ञा पाकर गोविन्दजी अर्जुन को साथ लेकर डेरेको गये और राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर को सुवर्ण रचित अच्छे शयन स्थान में सोताहुआ देखा तब उन दोनों श्रीकृष्ण औरअर्जुन ने राजा के दोनों चरणों को स्पर्शकिया । १३ । उस समय युधिष्ठिर नेउन दोनों को प्रसन्न देखकर बड़ी प्रसन्नता के अश्रुपातों को डाला औरःकर्ण को मृतक मानकर महाबाहु शत्रुंजय राजा युधिष्ठिर उठकर बारम्बार दोनों अर्जुन और वासुदेवजी को अत्यन्त प्रेमसे मिले फिर यादवों में श्रेष्ठ वासुदेवजी ने जैसे कि अर्जुन ने युद्ध करके उस कर्णका वध किया वह सब वृत्तांत उस से वर्णनकिया ।१६। फिर मन्द मुसकान करते अविनाशी श्रीकृष्णजी हाथ जोड़कर अजात शत्रु राजा युधिष्ठिर से यह वचन बोले हे राजा प्रारब्ध से गांडीव धनुष धारी अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और तुम कुशल पूर्वक हो अब तुम इन

to the warriors of the army, he said, "Good warriors, face the enemies bravely and you will be happy." Then turning to Dhrishtadyumn, Yudhamanyu, Nakul, Sahadev, Bhim and Satyaki, he said, "You may take rest while Arjun and I are going to inform Yudhishthir of Karan's fall" 11. Saying good night to them, Shri Krishn and Arjun entered the tent and saw Yudhishthir lying on a comfortable bed. They touched his feet. Seeing them full of cheer he shed tears of joy. Beliving that Karan was slain, he embraced Arjun and Vasudev again and again. Then Vasudev told him how Arjun had slain Karan. With joined palms he said to Yudhishthir, "It is

पुत्रौ च पाण्डवौ ॥ १८ ॥ मुक्त्वा वीरक्षयादस्मात् संग्रामाल्लोमहर्षणात् ॥ १९ ॥ क्षिप्र
मुत्तरकालानि कुरु कार्य्याणि पाण्डव । हतो वैकर्त्तनः सूतपुत्रो महाबलः । दिष्ट्या
जयसि राजेन्द्र दिष्ट्या वर्द्धसि पाण्डव ॥ २० ॥ यस्तु द्यूतजितां कृष्णां प्राहसत्
पुरुषाधमः । तस्याद्य सूतपुत्रस्य भूमिः पिबति शोणितम् ॥ २१ ॥ शेतेऽसौ शरपूर्णाङ्ग
स्तवारिः कुरुपुङ्गव । तं पश्य पुरुषव्याघ्र विभिन्नं बहुधा शरैः, ॥२२॥ हतामित्रा मिमां
गुर्वीं मनुशाधि महाभुज । यत्तो भूत्वा सहास्माभिर्भुङ्क्ष्व भोगांश्च पुष्कलान् ॥ २३ ॥
सञ्जय उवाच । इति श्रुत्वा वचस्तस्य केशवस्य महात्मनः । युधिष्ठिरस्तु दाशार्हं
प्रहृष्टः प्रत्यपूजयत् । दिष्ट्या दिष्ट्येति राजेन्द्र वाक्यं चेदमुवाच ह ॥ २४ ॥
नैतच्चित्रं महाबाहो त्वयि देवकिनन्दन । त्वया सारथिना पार्थो यत् कुर्य्याद्द्यमद्य
नम ॥ २५ ॥ प्रगृह्य च कुरुश्रेष्ठः साङ्गदं दक्षिणं भुजम् । उवाच धर्मभृत् पार्थ उभौ

वीरों के नाश करनेवाले और रोमाच खड़े करनेवाले महा घोर युद्ध से निवृत्त
हुये । १९ । हे पाण्डव अब तू बड़ी शीघ्रता से आगे करनेवाले कर्मों को
करो हे राजा सूतका पुत्र महारथी कर्ण मारागया है राजेन्द्र तुम अपने प्रारब्ध
से विजय करतेहो और भाग्यसेही वृद्धि पातेहो । २० । और जो नीच पापात्मा
पुरुष द्यूत में हारी हुई द्रौपदी को हँसाया उस सूत के पुत्र के रुधिरको अब पृथ्वी
पान कररही है । २१ । हे कौरवोंमें श्रेष्ठ यह तेरा शत्रु बाणों से भरे हुये शरीर
से पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोता है हे पुरुषोत्तम उस बहुत बाणों से टूटे अंगवाले कर्ण
को देखो । २२। हे मृतक शत्रुवाले महाबाहो तुम इस पृथ्वीपर राज्यकरो और हम
समेत सावधान होकर उत्तम भोगों को भोगो । २३ । संजय बोले कि तब अत्यन्त
प्रसन्न चित्त धर्म पुत्र राजा युधिष्ठिर ने इन वचनोंको सुनकर उन महात्मा केशव
जी से कहा हे महाबाहु आपने जो प्रारब्धसे हुआ यह वचन कहा । २४ । सो
हे महाबाहो देवकीनन्दन यह बात आपमें कुछ अपूर्व नहीं है आपकी यह
योग्यता सदैव से चली आई है उपाय करनेवाले अर्जुनने तुम सारथी के साथहोकर
उसको मारा । २५ । यहकहकर वह धर्मधारी कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर बाजूबन्द

by good luck that Arjun, Bhim, Nakul, Sahadev, and you are safe, and sound. You have practically won this dreadful battle. Now, you may do what is next to be done, for Karan is slain. You win and grow by good fortune. 20. The despicable wretch who laughed at Draupadi lies bleeding on earth. Your enemy sleeps on earth with his body full of arrows. You will see him pierced all through, with arrows. You will now rule the earth and enjoy its blessings. Having heard these words, Yudhishthir said to Keshav, " You, say that all this has been done by Fate, but nothing is strange to, you, son of Devaki. Arjun was able to slay Karan, because you drove Arjun's car. " 25. Having said this, Yudhishthir held Vasudev by the right,

तौ केशवार्जुनौ ॥ २६ ॥ नरनारायणौ देवौ कथितौ नारदेन मे । धर्मसंरक्षणे युक्तौ
पुराणावृषिसत्तमौ ॥ २७ ॥ असकृच्चापि मेधावी कृष्णद्वैपायनो मम । कथामेतां महा
भागो दिव्यामकथयत् प्रभुः ॥ २८ ॥ तव कृष्ण प्रभावेन पाण्डवोयं धनञ्जयः ।
जितवानभिमुखः शत्रून् नासीद्विमुखः क्वचित् ॥ २९ ॥ जयश्चैव ध्रुवोऽस्माकं न
त्वस्माकं पराजयः । यदा त्वं युधि पार्थस्य सारथ्यमुपजग्मिवान् ॥ ३० ॥ इत्युक्त्वा
धर्मराजस्तु तं रथं हेमभूषितम् । दन्तवर्णैर्हयैर्युक्तं कालवालैर्मनोजवैः ॥ ३१ ॥ आस्थाय
पुरुषव्याघ्रः स्वबलेनाभिसंवृतः । कृष्णार्जुनाभ्यां वीराभ्यामनुमन्त्र्य ततः प्रियम् ।
आगतो बहुवृत्तान्तं द्रष्टुमायोधनं तदा ॥ ३२ ॥ आभाषमाणस्तौ वीरावुभौ माधव
फाल्गुनौ । ददर्श स रणे कर्णं शयानं पुरुषर्षभम् ॥ ३३ ॥ यथा कदम्बकुसुमं केसरैः
सर्वतो वृतम् । चितं शरशतैः कर्णं धर्मराजो ददर्श सः ॥ ३४ ॥ गन्धतैलावसिक्ताभिः

रक्षनेवाली दक्षिण भुजाको पकड़कर उनदोनों अर्जुन और केशवजी से बोले । २६।
कि नारदजी ने तुमदोनोंको धर्मात्मा महात्मा और प्राचीन ऋषियोंमें श्रेष्ठ नर
नारायणरूप देवता मुझसे वर्णन किया है और बुद्धिमान सिद्धान्तों के ज्ञाता
व्यासदेवजीने भी इसमहाभाग कथाको बारम्बार मुझसे कहा है । २८ । हे कृष्ण
भी इस पाण्डव अर्जुनने आपकी कृपासे सम्मुख होकर शत्रुओं को विजय किया
और किसी स्थानपर मुख नहीं फेरा । २९ । निश्चय हमारीही विजय है हमारी
पराजय नहीं होगी जबआपने अर्जुनकी रथवानी अंगीकार करी । ३० । तब पुरुषो
त्तम महाराज धर्मराज यह कहकर श्वेत वर्ण काले बाल चित्तके अनुसार शीघ्र
गामी घोड़ों से युक्त सुवर्ण भूषणसे निर्मित रथपर सवारहो अपनी सेना को साथ
लेकर युद्धभूमि के देखने को प्रवृत्तहुये और श्रीकृष्ण और अर्जुन से पूछकर
और दोनों से प्यारे मिष्ट वचनों को कहते हुये चलदिये वहाँजाकर उस राजा
युधिष्ठिर ने युद्धभूमि में शयन करते हुये कर्णको ऐसा देखा जैसे कि सब
ओरसे केसरों से युक्त कदम्बका फूलहोताहै उसधर्मराजने हजारों बाणोंसे चितहुये
कर्णको देखा । ३४ । सुगन्धित तेलोंसे सिंचेहुये और हजारों सुनहरी मशालों से

hand and thus addressed Arjun and Keshav, "Narad has informed me that you two are the ancient gods, known as Nara and Narayan. Vyas too, has often told me about you. Arjun has by your grace slain the foes without fail. We are sure always to win and never to lose since you have taken upon yourself to drive Arjun's car. 30 Then Yudhishthir was ready with his army to go and see the field of battle in his gold-decked car drawn by white horses having black hair and swift like the mind. Krishn and Arjun went on with him conversing in sweet language. There Yudhishthir saw Karan lying on earth with the body pierced through by arrows. In torch light, fed by sweet scented oil, he saw the dead body of Karan pierced by arrows and cut

जातमिवात्मानं मेने कुरुकुलोद्वहः ॥ ४४ ॥ समेत्य च महाराज कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् । हर्षयन्ति स्म राजानो हर्षयुक्ता महारथाः ॥ ४५ ॥ नकुलः सहदेवश्च पाण्डवश्च वृकोदरः । सात्यकिश्च महाराज वृष्णीनां प्रवरो रथः ॥ ४६ ॥ धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च पाण्डुपांचालसृञ्जयाः । पूजयन्ति स्म कौन्तेयं निहते सूतनन्दने ॥ ४७ ॥ ते वर्द्धयित्वा नृपतिं पाण्डुपुत्रं युधिष्ठिरम् । जितकाशिनो लब्धलक्षा युद्धशौण्डाः प्रहारिणः ॥ ४८ ॥ स्तुवन्तस्तवयुक्ताभिर्वाग्भिः कृष्णौ परन्तपौ । जग्मुः स्वशिबिरायैव मुदायुक्ता महारथाः ॥ ४९ ॥ एवमेव क्षयो वृत्तः सुमहाँल्लोमहर्षणः । तव दुर्मन्त्रिते राजंस्तत्वं किमनु शोचसि ॥ ५० ॥ वैशम्पायन उवाच । श्रुत्वैतदप्रियं राजा धृतराष्ट्रो महीपतिः । पपात भूमौ निश्चेष्टः कौरव्यः परमार्त्तवत् ॥ ५१ ॥ तथा सा पतिता देवी गान्धारी दीर्घदर्शिनी । शुशोच बहुलालापैः कर्णस्य निधनं युधि ॥ ५२ ॥ तं प्रत्यगृह्णाद्विदुरो नृपतिं सञ्जयस्तथा । पर्य्याश्वासयतांश्चैव तावुभावेव भूमिपम् । तथैवोत्थापयामासु

संजय बोले कि अर्जुन के शायकों से कर्णको मृतक देखकर उस राजा युधिष्ठिर ने अपना पुनर्जन्ममाना । ४४ । हे महाराज फिर बड़ी प्रसन्नता भरेहुये महारथियों ने कुन्तीके पुत्र राजा युधिष्ठिरको मिलकर बड़ा प्रसन्नकिया और पाण्डव नकुल सहदेव भीमसेन और वृष्णियों में बड़े श्रेष्ठरथी सात्यकि, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी पांचाल और सृञ्जियोंने कर्णके मरनेपर युधिष्ठिरकी स्तुतिकी । ४७ । फिर वह सब धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरकी स्तुतिकरके महा विजयसे शोभायमान लक्षभेदी युद्धमें कुशल सावधानी से युद्ध करनेवाले प्रशंसायुक्त उन श्रीकृष्ण और अर्जुन की कीर्त्तिगानेवाले प्रसन्नता में डूबेहुये सब महारथी अपने डेरोंको गये । ४९ । हे राजा आपके दुर्विचारों से यह बड़ाभारी घोर रोमहर्षण करनेवाला विनाशकाल जारीहुआ अब तुम किस निमित्त शोचकर तेहो । ५० । वैशम्पायन बोले कि अम्बिकाके पुत्र राजा धृतराष्ट्र इसशोक और दुःखदायी वृत्तान्तको सुनकर अचेत और निश्चेष्टहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा । ५१ । उसीप्रकार वह दूरदर्शिनीदेवी गांधारीभी गिरपड़ी और युद्धमें कर्णके मरने को बहुत विलाप करकरके शोचा । ५२ । तब विदुरजी और संजयने उसराजाको पकड़लिया और दोनोंनेराजाको विश्वास

hadev and Bhim, with Satyaki the best of Vrishnis, and Dhrishtadyumn and Shikhandi of Panchal congratulated Yudhishthir on Karan's death. 47, Having given praises to Yudhishthir, the great warriors praised Shri Krishn and Arjun and then went to their respective tents. All the destruction was caused by your evil policy, and you must not be grieved at it, Prince Dhritrashtra!" 50. Vaishampayan continued that on hearing the dreadful news, Dhritrashtra fell. down senseless on earth. Wise Gandhari too, became insensible with grief for Karan. Then Vidur and Sanjaya held the king and consoled him. Similarly, Gandhari was lifted up by the Kaurav wo-

युधि । धनञ्चेष्ठ्यादि भवन्ति वैश्याः शूद्रारोग्यं प्राप्नुवन्तीह सर्वे ॥ ६० ॥ तथैव विष्णुर्भगवान् सनातनः स चात्र देवः परिकीर्त्यते यतः । ततः स कामाल्लभते सुखी नरो महामुनेस्तस्य वचोऽर्चितं यथा ॥ ६१ ॥ कपिलानां सवत्सानां वर्षमेकं निरन्तरम् । यो दद्यात् सुकृतं तद्धि श्रवणात् कर्णपर्वणः । ६२ ॥

इति कर्णपर्वणि युधिष्ठिर हर्षे, पणवतोऽध्याय ॥ ९६ ॥

में ब्राह्मण को वेदों की प्राप्ति और युद्धमें क्षत्रियों को पराक्रम वा विजयकीप्राप्ति वैश्यों को धनकीप्राप्ति और शूद्रों को नीरोगताकी प्राप्ति होतीहै । ६० । जो कि इसमें भगवान् सनातन देवता विष्णुजीका वर्णनहै इसहेतुसे वहमनुष्य सुखी होकर मनोभीष्टों को पातेहैं । ६१ । यहउस महामुनिने वचन कहाहै कि जो इसकर्णपर्व्व को सुनताहै वह एक वर्षतक सवत्सा कपिला गौ के प्रतिदिन दान करनेके समान फलको पाताहै ६२ ॥

॥ कर्णपर्व्व समाप्तम् ॥

---

and health respectively. The *reader of this book, gains the object* of his desire because it contains an account of Vishnu in it. The great rishis say that the *reader of this book gains the fruit of giving* a mitch cow every day for a year." 92.



युधि । धनज्येष्ठश्चापि भवन्ति वैश्याः शूद्रारोग्यं प्राप्नुवन्तीह सर्वे ॥ ९० ॥ तथैव विष्णुर्भगवान् सनातनः स चात्र देवः परिकीर्त्यते यतः । ततः स कामाल्लभते सुखी नरो महामुनेस्तस्य वचोऽर्चितं यथा ॥ ९१ ॥ कपिलानां सवत्सानां वर्षमेकं निरन्तरम् । यो दद्यात् सुकृतं तद्धि श्रवणात् कर्णपर्वणः । ९२ ॥

इति कर्णपर्वणि युधिष्ठिर हर्षे पणवतोऽध्याय ॥ ९६ ॥

में ब्राह्मण को वेदों की प्राप्ति और युद्धमें क्षत्रियोंको पराक्रम वा विजयकीप्राप्ति वैश्यों को धनकीप्राप्ति और शूद्रों को नीरोगताकी प्राप्ति होतीहै । ९० । जो कि इसमें भगवान् सनातन देवता विष्णुजीका वर्णनहै इसहेतुसे वहमनुष्य सुखी होकर मनोभीष्टों को पातेहैं । ९१ । यहउस महामुनिने वचन कहाहै कि जो इसकर्णपर्व्व को सुनताहै वह एक वर्षतक सवत्सा कपिला गौ के प्रतिदिन दान करनेके समान फलको पाताहै ९२ ॥

॥ कर्णपर्व्व समाप्तम् ॥

---

and health respectively. The reader of this book, gains the object of his desire because it contains an account of Vishnu in it. The great rishis say that the reader of this book gains the fruit of giving a mitch cow every day for a year." 92.

